पीढ़ियां

अमृतलाल नागर



राजपाल एण्ड सन्ज़

अपनी बात

सन् 1983 मे एक मित्र से बातें करते हुए प्रसंगवश मेरे मन में यह बात आई कि ग़दर के बाद के अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे मध्यवर्ग की बदलती हुई मानसिकता और उसके क्रमिक विकास को देखना और समझना आवश्यक है। उसके लिए पढ़ना और आवश्यक अंशो पर निशान लगाना आरम्भ किया।

'करवट' जहा तक याद पडता है, मार्च सन् 1985 मे पूरा कर लिया था। उसमें 1854 से 1902 तक के बदलते हुए समय का चित्रण किया गया है। *28 मई, 85 को मेरी जीवन-संगिनी प्रतिभा का देहान्त हो गया। उसके बाद ही* मेरी आंखो की रोशनी भी क्रमशः कम होती गई। लिखाने का अभ्यास तो पुराना है किन्तु न पढ़ पाने के कारण बड़ी कठिनाई अनुभव करता हूं। मेरे बचपन के साथी प्रियवर ज्ञानचन्द्रजी जैन यदि मेरी सहायता न करते तो शायद यह उपन्यास पूरा न कर पाता। भाई ज्ञानचन्द ने ही मेरी पाडुलिपि टाइप हो जाने के बाद टंकित प्रतिलिपि मे भी आवश्यक संशोधन किए। ज्ञानचन्द के इस उपकार को कभी भूल नही सकता। और शब्दो मे बखानू तो वे बुरा मान जाएगे। 'करवट' और प्रस्तुत उपन्यास की पाडुलिपिया चि० कमलाशंकर त्रिपाठी को बोलकर लिखवाई। दोनो ही पाण्डुलिपियो को चि० राजेन्द्र श्रीवास्तव ने टंकित किया है। दोनो ही मेरे आशीर्वाद के सुपात्र हैं।

जैसाकि पहले लिख चुका हू कि 'करवट' मे 1854 से लेकर 1902 तक के काल का चित्रण किया गया है और प्रस्तुत उपन्यास मे सन् 1905 के स्वदेशी आन्दोलन और क्रान्तिकारी आतंकवाद से लेकर सन् 1986 के विघटनकारी आतंकवाद तक का काल अंकित है। 'करवट' मे रायसाहब बंसीधर टंडन से लेकर उनके पौत्र और सन् 1942 के शहीद जयन्त के जन्म तक की कहानी आई है। प्रस्तुत उपन्यास मे जयन्त की कहानी उनका पौत्र युधिष्ठिर टण्डन लिखता है।

उपन्यास लिखने से पहले अनेक पुस्तको को पढा था। उन सबके नाम न देकर केवल कुछ जनपदीय इतिहासो का उल्लेख अवश्य करूगा जिनसे मुझे स्वतन्त्रता संग्राम काल से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण सामग्री मिली। 'बलिया मे सन् 42 की

जनक्रान्ति' पुस्तक के लेखक श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त, 'लखनऊ जनपद का स्वतन्त्रता संग्राम' पुस्तक के लेखक श्री तवस्सुम निजामी भारतीय, 'रायबरेली का स्वतन्त्रता संग्राम' के लेखक प्रिय श्री मदनमोहन मिश्र, का विशेष रूप से कृतज्ञ हूं। ये पुस्तकें चूंकि कम पढ़ी जाती हैं, इसलिए इनका हवाला देना मैंने बहुत ही आवश्यक समझा।

अन्त में लखनऊ विश्वविद्यालय के वर्तमान कुलपति, प्रियवर डॉ० हरिकृष्ण अवस्थी, को शुभकामनाएं अर्पित करना भी अपना कर्तव्य मानता हूं। डॉ. अवस्थी सन् '42 के स्थानीय नायकों में श्रेष्ठतम थे इसलिए मैंने इनसे भी उस समय के संस्मरण मांगे। हरिकृष्ण के लम्बे पत्र से मैंने कुछ वाक्य अपने उपन्यास में जस के तस ले लिये। हम दोनों की भाषा लगभग समान थी और उसका औपचारिक एहसान मानने का झंझट भी न था। उन्हें मेरे अनेकानेक आशीर्वाद।

'करवट' की पाण्डुलिपि का पार्सल विश्वनाथ जी को भेजने के लिए स्व० प्रतिभा ने तैयार किया था। इस बार उनकी याद बहुत आ रही है।

28.12.89

—अमृतलाल नागर

एक

युधिष्ठिर अपनी मां के साथ कार मे सआदतगंज से घर लौट रहा है। लगभग एक माह से जिम समाचार ने शहर और राजनीति को अपने सच-झूठ की अफवाहों से घटाटोप ढक रखा है और जिससे एक गहरा साम्प्रदायिक तनाव इतने दिनों से क्रमश: उभर रहा है उसकी वास्तविकता के सूर्य को प्रत्यक्ष देखकर वह घर लौट रहा है। इस बात का संतोष और गर्व-भरा आनन्द तो उसके मन में है ही, परन्तु साथ-ही-साथ तरह-तरह की वैचारिक परेशानियां भी मन को मथ रही हैं।

पिताजी कहते हैं, काल अपना माया-भ्रम प्रसारित करता है, योगी उस जाल को काटकर सत्य को देखता है। पिताजी सच कहते हैं। उस वास्तविकता को जिसे हम प्रतिदिन अखबारों में उद्घाटित करते हैं, कितनी अवास्तविक और छिछली होती है। देखने मे वास्तविक और अगम गहरी होने पर भी वह पिताजी के शब्दों मे सचमुच माया है—इन्सानी दिमाग की रची हुई माया। घटना की प्रमुख नायिका श्रीमती जगदम्बा देवी मेहरोत्रा की अखबारों में प्रचारित कहानी, उसके पीछे उनके ईर्ष्यालु जेठ सेठ हरिमोहनदास और उनके चार-सौ-बीस वकील बेटे बृजमोहनदास की चालबाजियां हैं और इन सबके पीछे वह काले पहाड़-सा भूतपूर्व मुख्यमंत्री बी० पी० वर्मा जिसकी चालबाजियो ने पिताजी के मुख्यमन्त्रित्व पद को धक्का दिया था, जिसके कारण वह सहसा जीवन से विरक्त हो गये। वह कार का रास्ता रोके सडक पर खड़ा है। उसकी नज़रों को सहसा यह लगता है कि बी० पी० वर्मा की सूरत कार के सामने विशाल भूधराकार होकर खडी है। मन के बाहर भी उसे देखकर युधिष्ठिर के भीतर क्रोध और घृणा के पटाखे फूटने लगे हैं।

"अरे भैया !'''तेरा ध्यान कहा है नन्हा।"

अम्मा की घबराहट-भरी चेतावनी से लगभग एक-दो पल पहले ही विचार-मंडित कल्पना तिरोहित होकर उसकी दृष्टि बाहर की दुनिया मे लौटी थी। बी० पी० के बजाय एक भैंसा उसकी कार का रास्ता रोके खड़ा था। दाहिनी

ओर से एक बस गुज़र रही थी, कार ने झटके से ब्रेक लगाया। बस उसकी कार से लगभग दो बालिश्त दूर से गुज़र गई। युधिष्ठिर ने सड़क खाली देखकर कार को भैंसे से तनिक कतराकर आगे निकाला, किन्तु निकालते-निकालते भी जान-बूझकर भैंसे के पिछले हिस्से को धक्का दे ही दिया। अम्मा बोली: "आंख खोलकर चलाया कर रे।"

"आंखें तो खुली थीं अम्मा, मगर खयालों में भैंसे की जगह तुम्हारा वी० पी० वर्मा मुझे दिखाई दे रहा था।"

अम्मा हंस पड़ी, बोली: "सच कहा, वह कम्बख्त राजनीति का भैंसा ही है, तेरे पिताजी का दुश्मन निगोड़ा। जैसे सन्त सुभाव के तेरे पिताजी को-इसने राज-नीति में दांव देकर गिराया, वैसा ही आप भी चौपट हुआ निगोड़ा। हाय बिचारी हमारी जगदम्बा को कैसे फंसाव में फंसाया है। सत्यानास जाय मरे का।"

"सत्यानास ही नहीं, साढ़े सत्यानास होगा अम्मा। इस वी० पी० के काले मुंह को मैं और भी कालतोर लगाके बल्कि उल्टे तवे की कालिख मल के काला करूंगा।"

"पहले तू मुझे घर छोड़ दे फिर जो चाहे करना।"

हॉल में सात-आठ मेज़ें लगी हुई हैं। पास ही एक अलग खुली कमरेनुमा जगह में विभिन्न समाचार एजेंसियों की टेलीप्रिण्टर मशीनें खड़खड़ा रहीं हैं। 'मार्निंग टाइम्स' के दफ्तर में पत्र के सांध्य-संस्करण 'द ईवनिंग स्टार' का स्टाफ खबरों के प्रेतों और चुड़ैलों द्वारा नचाया जा रहा है। बरामदे के दूसरी ओर इस कमरे के समानान्तर हॉल में 'मार्निंग टाइम्स' का सम्पादकीय दफ्तर है।

मेज़ पर रखी पी० टी० आई० की चिटों में से एक को उठाकर पढ़ते हुए जगदीश अरोड़ा अपनी खरखरी आवाज़ में चहका: "भई वाह, भई वाह! अमां पाण्डेजी सुना, शाहबानो केस में राजीव गांधी की सरकार ने मुसलिम फंडामेण्ट-लिस्टों के आगे घुटने टेक दिये। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस चन्द्रचूड़ के फैसले को काटने के लिए सी० आर० पी० सी० में संशोधन किया जायेगा।"

"अरे मौलवियों के दबाव में आ गई बेचारों की सरकार, क्या करें।"

"अच्छा दबाव है, तलाकशुदा मुसलिम महिलाओं को देश के कानून के अन्तर्गत गुजारा पाने का जो हक था उससे भी महरूम करके क्या वे देश को इक्कीसवीं सदी में ले जायेंगे या मिडीवल एज में ढकेल देंगे।"

लिखते हुए ही शफीक ने कहा: "मुसलिम पर्सनल लॉ की बात है। मौलवी साहबान बेचारे वही बात कहेंगे जो शरीयत कहती है।"

विनोद पाण्डे तैश में बोले: "शरीयत क्या कहेगी। जस्टिस चन्द्रचूड़ ने उसे

भी सावधानी से देखकर फैसला दिया था।"

"अरे भाई, इनकी मुर्गी की टेढ टांग ही होती है। मौलवी कहते हैं कि हमारी शरीयत अदालतों को सुप्रीमकोर्ट से भी सुप्रीम मानो वरना इस्लाम खतरे में पड़ जायेगा।"

"इस्लाम के खतरे की धमकियां सुनते-सुनते तो यार हम बोर हो गये। इस्लाम क्या मामूली कागज का टुकड़ा है जो फूक मारने से उड़ जायेगा।"

"अमां पाण्डे, तुम तो बात को कम्यूनल ऐंगिल से देखते हो यार। यह मत भूलो कि तुम्हारे मजहबी कानून हमसे भी ज्यादह बेहूदा हैं। अभी कल ही खबर छपी थी कि खीरी के एक गांव मे तुम्हारे एक हिन्दू पण्डित ने अपने एक जिजमान मे उसकी बीवी का दान करवाके मजा लूट लिया। जहालत की हद है।"

"यह हद मुसलमानो में और भी ज्यादा है शफीक। उस पण्डित को तो गाव के जाहिल हिन्दुओ ने ही पकड़ कर पुलिस मे पहुंचा दिया मगर तुम्हारे यहा के तो पढ़े-लिखे लोग भी जाहिल मौलवियों के काबू में फस जाते हैं।" कहकर विनोद पाण्डे ने अपनी पतलून की जेब से स्टील की बनी चूने-तम्बाकू की डिबिया निकाली।

शफीकुर्रहमान ताव खा गये, बोले : "तुम दिनोदिन कम्यूनल होते जा रहे हो पाण्डे। ब्राह्मन पण्डित कलाम के होने के नाते शायद तुम अपने को सुप्रीम समझते हो।"

हथेली पर तम्बाकू गिराकर उस पर चूना थोपते हुए पाण्डे बोले : "अमां, सूप बोले तो बोले चलनी क्या बोले जिसमें बहत्तर छेद। ब्राह्मण सुप्रीम हो या न हो मगर तुम्हारे मुल्ले-मौलवी तो सुप्रीम कोर्ट से भी सुप्रीम हैं।"

शफीक ने विनोद पाण्डे को कड़ी नजरों से देखकर अपनी खसखसी दाढी खुजलायी। चपरासी शिवदीन मशीन से खबरो का नया पुलिन्दा लेकर पाण्डे की मेज पर रखने आया था, उसे खैनी मलते देखकर बोला : "परसादी हमहू का मिलै पाण्डेजी।"

तभी जावेद भी बोल पड़ा : "अमा, ये मजहबी नाबदान क्यों खोले बैठे हो तुम लोग। बर्नार्ड शॉ ने कहा है देअर इज ओनली वन रेलिजन : दो देअर आर हण्ड्रेड वर्शन्स ऑफ इट।"

"शॉ ने ऐसी कौन-सी ओरिजनल बात कह दी। हमारे स्वामी विवेकानन्द तो यह बर्षो पहले ही कह चुके हैं।"

"देखा जावेद, फिर अपने हिन्दूपने पर उतर आये ये बम्मन पाण्डे।"

शफीक की बात पर ध्यान न देकर जावेद ने कहा : "विवेकानन्द हिन्दू और मुसलमानपने दोनों ही से बहुत ऊपर उठे हुए थे। वह दोनो मजहबो की खूबियो को एक मे मिला देना चाहते थे।"

शिवदीन बोला : "अच्छा जावेद वाबू, ये हिन्दू-मुस्लिम समिस्या में हमरिऔ एक मगज़खोरी का समाधान कर देओ आप। ससुरी कल्ह से परेसान कर रही है।"

"अमां, तुम्हारी मगज़खोरियां तो लाजवाब होती हैं यार। सुनाओ अपनी लालबुझक्कड़ी।"

शिवदीन अपनी एक नज़र विनोद पाण्डे की खैंनी मलती हुई हथेली पर रखकर बोला : "साहेब, आप लोग अंग्रेजी में कहते हो कि हम इण्डियन हैं और तब आप सब पंच सिकूलर कहे जात हौ (हिन्दी में भारती कहते हो तबहूं सिकूलर, और हम ससुर जो कहें कि हम हिन्दू हैं तो आप लोग कहत हो कि तू साले कमूनल आय। ईमां कौन बात ठीक है तनिक बताव ज़रा! अरे ई देस का नाम इण्डियौ है और हिन्दुस्तानौं है और भारतौ है। तौ हम, कमूनल कैसे हुई गये।"

जावेद : "हां, यह मगज़खोरी वाज़िब है यार। हिन्दू होना कम्यूनल नहीं है। हिन्दू तो हम सभी हैं जैसे इण्डियन वैसे हिन्दू।"

शफीक तैश में आकर बोला : "मगर मुसलमान अपने को हिन्दू हरगिज़ नहीं कहेगा। हां, वह हिन्दोस्तानी मुसलमान हो सकता है।"

शफीक की बात पर जावेद हंस पड़ा। बोला : "बेखुश यानी हिन्दुस्तानी और हिन्दू लफ्ज़ों को भी अलग-अलग बांट दिया।"

"मैंने नहीं, हमारी तवारीख ने बांटा है। हिन्दू हिन्दुस्तानी हो सकता है मगर वह कम्यूनल है।"

हेल्मेट बगल में दबाये, बाएं हाथ में ब्रीफकेस लिये सफरी में जिसे सफारी सूट कहते हैं, चुस्त और टिप-टाप लगनेवाले युधिष्ठिर टण्डन ने सम्पादकीय कक्ष में प्रवेश किया। जावेद उसे देखते ही खिल उठा, बोला : "कहो बेटा, मार लाये चिड़िया कि टांय-टांय फिस।"

जावेद की मेज़ पर अपना ब्रीफकेस और हेल्मेट रखकर आंखों से धूप का चश्मा उतारते हुए उसके सामने की कुर्सी पर बैठते हुए युधिष्ठिर बोला : "अमां, चिड़िया तो तुम जैसे लोग मारते हो, मैं सदा शिकरों और बाजों का शिकार करता हूं।"

विनोद पाण्डे ने छींटा कसा : "अरे भाई, यह खत्रीवाद फैलाकर आ रहे हैं। हमारा छोटा भाई प्रमोद बतला रहा था कि सारे जर्नलिस्ट विचारे टापते ही रह गये और यह अपनी मदर के साथ जगदम्बा मेहरोत्रा के यहां अपना खत्रीवाद फैलाते हुए घुस गये।"

"खत्रीवाद नहीं गुरु, कहो कि रिश्तेदारीवाद की सेंध लगाकर घुसा और ख़बर की तिजोरी लूट लाया।" युधिष्ठिर बोला।

जगदीश अरोड़ा अपनी मेज से चहके: "अरे यार इसका फल क्या मिला तुम्हें।"

जावेद की मेज पर रखे सिगरेट केस में से एक सिगरेट निकालते हुए युधिष्ठिर टण्डन बड़े ज़ोर से हंसा, बोला: "अजी बहुत शोर सुनते थे पहलू में दिल का, जो चीरा तो बी० पी० का भूत निकल भागा।"

जावेद: "दरअसल, तो भूत पकड़ लिया तुमने।"

सिगरेट सुलगाकर एक कश लेते हुए: "नहीं, अभी तो सिर्फ भागते भूत की लंगोटी छीन लाया हूं।"

पाण्डे बोला: "अमा, खबर क्या लाये।"

"खबर यह है पाण्डेजी महाराज कि आदमनगर मजार केस अभी तक जिस एंगिल से हम लोगों के सामने पेश किया गया है और जिस पर हम अखबारवालों ने अपनी इन्टेलेक्चुअल अटकलों के चार चांद और जड़ रखे हैं वह सौ में दो सौ फीसदी झूठ है। जगदम्बाजी के मकान में न कभी कोई मजार थी, न है और अब आगे बनने का तो सवाल ही नहीं उठता।"

शफीक अपनी दृष्टि से उभरी कड़वी क्रोधभरी तीखी मुद्रा को दबाकर विनोद पाण्डे से बोला: "यार पाण्डे, तुम सब कहो हो यह अब गरीबवाद फैलायेगा। सरगनों को बचाने के लिए ये हजरत असलियत पर नकली असलियत का मुलम्मा चढ़ाने के लिए यह कोई नया प्लॉट जरूर सोच आये हैं।"

"शफीक मियां, हकीकत को हकीकत साबित करने के लिए प्लॉट सोचने की जरूरत नहीं पड़ती, उसके लिए फैक्ट्स बटोरने की अक्ल चाहिए। पाण्डे, इन फोटोग्राफ्स के ब्लाक बनवा लो और पहले पेज के दो कालम मेरे लिए रिजर्व रखना।"

एक चुटकी धनरासी सिवदीन को दे और बाकी सौंफी मुंह में डालकर रूमाल से हाथ पोंछते हुए पाण्डेजी तन गये, बोले: "पहले पेज का मेकअप हो गया है, वह शायद मशीन पर भी गया है।"

"उसे तुरन्त रुकवाओ, वर्ना पाण्डेजी पछताओगे, एडीटर की डांट खाओगे। क्या समझे बेटा। मैं एक कापी 'मार्निंग टाइम्स' के लिए भी दे जाऊंगा। जावेद, अब मैं अपने केबिन में जाता हूं।" कहकर युधिष्ठिर उठ खड़ा हुआ।

"आर यू क्वाइट श्योर टण्डन। यह बी० पी० की कान्सपिरेसी है।"

हेल्मेट बगल में दबाकर ब्रीफकेस उठाते हुए मुंह में सिगरेट दबाकर युधिष्ठिर बोला: "टू हन्ड्रेड परसेंट।" फिर सिगरेट मुंह से निकाल कर तुरन्त कहा: "काम खतम करके मेरे केबिन में आना जावेद। आइ वान्ट टू सी योर फादर टुडे।"

युधिष्ठिर ने पीठ फेरी तो शफीक बोला: "टण्डन, मेरी इस एडवाइस को

ध्यान में रखना दोस्त कि काले पहाड़ के पास वह कौन-सी मस्जिद है यार, उसके मौलवी नूरुद्दीन साहब ने मज़ार की बाबत एक पुरानी किताब का रेफरेन्स दिया है, वह झूठी नहीं हो सकती।"

युधिष्ठिर ने चलते हुए कहा : "तीन घण्टे बाद खुद ही जान जाओगे कि वह हिस्टॉरिकल रेफरेन्स वन थाउजेन्ड परसेन्ट झूठ है।"

सआदतगंज में दालों के बड़े व्यापारी और खानदानी रईस सेठ हरिमोहनदास मेहरोत्रा दो भाई थे। छोटे स्व० जगमोहनदास की विधवा पत्नी जगदम्बा देवी ने दो महीने पहले नवाब दिलशेर खां के तबाह और शराबी बेटे गुलशेर खां से उनका आलमनगर स्थित दो एकड़ का एक बाग और उसमें बनी हुई एक हवेली पांच लाख रुपये में खरीद ली थी। सौदा इतना गुप-चुप हुआ कि किसी को कानों-कान खबर तक न लग पायी। यह होशियारी दिखलाने के लिए जगदम्बा देवी ने अपने स्वामिभक्त मुख्तार मथुराबख्श को अपने बेगमगंज फार्म के पास दस बीघे जमीन का एक टुकड़ा पुरस्कारस्वरूप भेंट किया था। पिछले महीने जब हवेली और बाग की चहारदीवारी की मरम्मत होने लगी तो भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री भैरोंप्रसाद वर्मा को इसकी सूचना मिली, वह ताव खा गये। बाग के आस-पास उनकी भी लगभग तीन एकड़ ऊसर जमीन पड़ी है जिसे वह गुलशेर खां की दो एकड़ जमीन खरीद कर एक कालोनी के रूप में परिवर्तित करना चाहते थे। गुलशेर खां से उनकी बात कुछ चल भी रही थी, मगर सौदा चूंकि पटा न था और इसी बीच में जमीन जगदम्बा देवी ने हथिया ली, इसीलिए वह बेहद खौल उठे थे।

बी० पी० ने बृजमोहनदास वकील की मार्फत उनके पिता हरिमोहनदास को इस बात के लिए पटाया कि वह अपनी विधवा अनुज वधू पर दबाव डालकर वह बाग उनके हाथों बिकवा दें। जगदम्बा देवी ने अपने जेठ की बात न मानी और कहा कि मेरा बेटा मनमोहनदास जब अमरीका से लौटकर आयेगा तो वहां एक प्राइवेट नर्सिंग होम बनवायेगा। हरिमोहन चुप हो गये पर बृजमोहन और बी० पी० के काले फनों की जीभें तेजी से लपलपाने लगीं। एक नया षड्यन्त्र रचा गया जिसमें मौलवी नूरुद्दीन से यह बयान दिलवाया गया कि हाथ से लिखी एक पुरानी किताब के अनुसार अट्ठारहवीं सदी के अन्त में बसरे से एक पहुंचे हुए फकीर काले पहाड़ की ज़ियारत के लिए आये थे। वह शमशेर खां की इसी हवेली में टिके थे। यहीं उन्होंने चालीस रोज का चिल्ला खींचा और यहीं उनका नूर खुदा के नूर में मिल गया। जिस कमरे में बैठकर उन्होंने चिल्ला खींचा और जीवन-मुक्ति पाई थी, उसी कमरे में उनकी मज़ार भी बनी। मौलवी जी के दादा को ही नवाब शमशेर खां ने उस पवित्र मज़ार की देख-रेख के लिए नियुक्त किया था। वह मुसलमानों की पाक मजहबी जगह है। इसलिए न तो गुलशेर खां को

उसे बेचने का हक है और न जगदम्बा देवी को खरीदने का।

आस-पास के महल्ले के मुसलमानों की एक सभा भी की गई। उसमें सेठ हरिमोहनदास ने यह बयान दिया था कि मैं अपने बचपन से पीरबसरे की मजार का माहात्म्य सुनता आ रहा हूं। यहां मजार थी और मौलवी जी के वालिद उनके दादा के बाद उसकी देख-रेख करते थे। मौलवी जी ने भी पुरानी किताब का हवाला दिया और जोश में बहुत-सी बातें कहीं। भूतपूर्व मुख्यमंत्री और वकील बृजमोहनदास ने जोशीले लेक्चर झाड़े और मुसलमानों को उनकी यह पवित्र जगह वापिस दिलाने के लिए आन्दोलन छेड़ने का वचन दिया। अखबारों में भी इस कथा का खूब प्रचार हुआ।

इसके बाद एक दिन अचानक दो-ढाई सौ लुच्चे-लुगाड़ों की भीड़ चहार-दीवारी में घुस आयी और हवेली का फाटक जलाने की तरकीब में लगी। किन्तु श्रीमती जगदम्बा देवी ने उस मौके पर अपना साहस न खोया, बन्दूक लेकर छत पर आ खड़ी हुई और भीड़ से कहा : "खबरदार, जो भी आगे बढ़ेगा उसे मैं पहले भून दूंगी। दस-बीस को तो मार ही डालूंगी। बाद में चाहे जो हो।" छत से एक हवाई फायर भी हुआ, तब तक मुख्तार मथुराबख्श के प्रयत्नों से पुलिस भी हवेली की रक्षा करने के लिए आ गई।

भीड़ तितर-बितर हो गयी किन्तु अखबारों में खबरें-दर-खबरें जुड़ने लगीं। इसी बीच में मथुराबख्श यह टोह भी पा गये कि बी० पी० वर्मा की तीन एकड़ ऊसर जमीन वास्तव में उनकी नहीं है बल्कि उनकी किसी मौसेरी बहन कुसमा देवी की है। कुसमा देवी के पति ने मृत्यु शैय्या से एक वसीयत लिखी थी जिसमें उन्होंने अपनी मृत्यु के बाद अपने साले देशसेवक बरेली के भैरोप्रसाद वर्मा को अपनी पत्नी और एकमात्र पुत्र का संरक्षक नियुक्त किया था। श्रीमती कुसमा देवी तो अपने पति की मृत्यु के कुछ वर्षों बाद ही पति लोक सिधार गयी और लड़का शायद लखीमपुर खीरी में मौसी के पास रहता है। वर्मा जी अब उसी जमीन को अपनी पैतृक जायदाद बताते हैं।

इस रहस्योद्घाटन ने एडीशन इन्चार्ज श्री विनोद पाण्डे को भी अचानक सत्यावेश दे दिया। आम तौर पर युधिष्ठिर से मन-ही-मन खार खाने वाले विनोद पाण्डे ने युधिष्ठिर की लायी हुई इस रिपोर्ट को बड़े डिस्पले के साथ प्रकाशित किया। युधिष्ठिर अपने साथ तीन चित्र लाया था। एक चित्र उस हंगामे भरे दिन का था जब जगदम्बा देवी बन्दूक लिये छत पर खड़ी थीं। किसी पड़ोसी ने वह चित्र खींच लिया था और मुख्तार मथुराबख्श के माध्यम से उसकी एक प्रति प्राप्त की थी। दूसरा चित्र मौलवी नूरुद्दीन का था जिसमें वह युधिष्ठिर टण्डन के साथ बैठे अपना वक्तव्य टेप करा रहे थे और तीसरा चित्र उस कमरे का जिसमें पीरबसरे की तथाकथित मजार बतलाई जाती थी। पांच फिट गहरे खुदे

हुए उस कमरे में मज़ार के किसी चिह्न का अस्तित्व न था। पेज का मेकअप कराते हुए पाण्डे बड़बड़ाया : "कुछ भी कहो, है यह सच्चे बाप का बेटा।"

दो

वजीरगंज थाने से कुछ ही दूर पर बने 'मुश्ताकविला' के सामने हसन जावेद और युधिष्ठिर टण्डन के 'वेस्पा' और 'विजयसुपर' स्कूटर आकर रुके। गली में हरे-भरे लॉन और पेड़-फूलों सहित यह जगह युधिष्ठिर को अनोखी और आश्चर्य-जनक लगी। जावेद फाटक के बाहर अपना स्कूटर खड़ा कर फाटक खोलने लगा। युधिष्ठिर बोला : "जान पड़ता है इस हवेली को फिर से 'रीशेप' दिया गया है।"

"हां, अब्बू मियां ने इसे काफी हद तक नया बना दिया है। मगर ये आगे वाला हिस्सा जिसमें तुम ये लॉन व दरख्त वगैरह देख रहे हो, अस्ल में इस हवेली का हिस्सा नहीं थे। यह एक धोबी का मकान था जिसे मेरे फादर ने मुंहमांगे दाम से भी कुछ ज्यादह देकर खरीद लिया और ज़मीन चौरस करवाके उसे यह शक्ल दे दी। बड़ी बादशाह तबियत पायी है उन्होंने। और उस ज़माने में एक ताल्लुकेदार का बड़ा मुकद्दमा यहां से लेकर प्रीवीकौन्सिल तक लड़ा था, उसमें काफी दौलत कमाई थी।"

"यह तुम्हारी पुश्तैनी हवेली है?"

जावेद ने दरवाज़े की घण्टी बजाई फिर जवाब दिया : "हमारा पुश्तैनी मकान तो बरेली में है। मेरे नाना यानी अब्बू मियां के चाचा लखनऊ चले आये थे। यह हवेली उन्होंने ही खरीदी थी।" तभी गुलखैरू की मोटी अम्मा ने दरवाज़ा खोला, साथ ही उसके चार टूटे दांतों वाला खिला हुआ मुंह भी खुला।

"आज तो बड़ी जल्दी आ गये बन्ने मियां, अभी तो बेगम साहिबा अस्कूल से पढ़ा कर भी नहीं आई हैं।"

"न सही तुम तो हो बुआ, ये हमारे बड़े अज़ीज दोस्त हैं, यहां के वज़ीरे-आज़म के साहबजादे। इनको अच्छी-सी चाय पिलाओगी तो तुम्हें दो-चार गांव बख्श देंगे।"

गुलखैरू की मोटी अम्मा ने आंखें फाड़कर युधिष्ठिर टण्डन को देखा।

उसने हंसकर कहा : "इसकी बातों पर न जाइए बुआ। हां, चाय पिलाने के लिए मैं भी आपसे दरख्वास्त करूंगा और कुछ इस्कुट-बिस्कुट, डबलरोटी-केक जो भी हो ज़रा..."

मोटी अम्मा के अधपोपले मुंह से हंसी फिर फिसली। कंधों पर पड़ा दोपट्टा सम्हाला और कहा : "आप तशरीफ रखें, हम अभी हाजिर करते हैं।"

"अब्बू सो तो नहीं रहे बुआ ?"

"बड़े मालिक पढ़ रहे हैं, अपने वज़ीरेआज़म दोस्त को डिराइंग रूम में ही ले जाओ।" मोटी अम्मा खिलखिलाकर हंसती हुई भीतर चली गई।

जावेद ने युधिष्ठिर के साथ कमरे में घुसकर कहा : "अब्बू जी, ये मेरे दोस्त और 'कलीग' हैं युधिष्ठिर टण्डन। आपके शहर की पुरानी एम० एल० ए० शारदा देवी के साहबज़ादे।"

मुश्ताक साहब ने चौंक कर अपना पढ़ने वाला चश्मा उतारा, किताब में निशान का डोरा लगाकर उसे बन्द किया और खुशी से चमकती हुई आंखों से युधिष्ठिर को देखते हुए अपनी आराम कुर्सी से उठ कर खरामा-खरामा पास आए और युधिष्ठिर के दोनों कंधे गर्मजोशी से दबाये और अपने सफेद बनावटी दांतों को खिलाकर बोले : "तुम मुझे अपना मामू कह सकते हो। तुम्हें देखकर तबियत बहुत खुश हुई। तुम्हारे नाना को तो मैं चाचा साहब कहता था। तेरी वालिदा को तो मैं चपतें लगाता था। सन आफ ऐन इनसट्रूम फादर। क्या ऊंचे ख़यालात के आदमी हैं। आजकल कहां हैं तुम्हारे फादर ?"

मुश्ताक साहब युधिष्ठिर के कंधे पर हाथ रखे हुए उसे सोफे तक बढ़ा लाये।

"मेरी शारदा कैसी है बेटे। एक ही शहर में रहते हैं मगर पिछले छ-सात बरस में एक-दूसरे को देखने का मौका ही नहीं मिला। जब तुम्हारे फादर उस स्काउन्ड्रल बी० पी० की वजह से इस्तीफ़ा देने के ताव में आ गये तब एक बार मैं शारदा के ज़रिये उन्हें यह समझाने के लिए गया था कि मैं इस लकड़बग्घे को फंसाना जानता हूं, तुम रिज़ाइन मत करो। इत्तफ़ाक से शारदा भी मेरी ही तरह सोच रही थी मगर, देन ही वाज़ इन एफ्योर शंकराचार्यन मूड। कहने लगे कि बी० पी० की कमीनी हरकतों से मेरे दिल को गहरा सदमा पहुंचा है। शारदा की वजह से मैं उसे अपना नज़दीकी और खास भरोसे का आदमी समझता था। मुझसे बोले—मुश्ताक साहब, अब इस दोज़ख में अपनी ज़िन्दगी बरबाद न करूंगा। मेरे पास पालिटिक्स से भी ऊंचा एक मिशन है। उसे पूरा करूंगा, खुदा यही चाहता है और मैं यही करूंगा। फिर वो शायद अजुध्या जी चले गये।"

"जी हां, उन्होंने वहीं भरतकुण्ड के पास एक छोटी-सी काटेज बनवा ली है, वहीं रहते हैं। पहले तो दो-चार बार बीच-बीच में घर आये भी थे। अब तो चार बरस से पिताजी ने वहीं अपने किस्म का क्षेत्र संन्यास ले लिया है।"

"अपने किस्म से तुम्हारा क्या मतलब है बर्खुर्दार ?"

"जी, मेरा मतलब है गेरुआ वस्त्र पहन कर बाकायदे सन्यासी तो नहीं बने मगर अपना ज़्यादा समय दर्शन की किताबें पढ़ने और योगध्यान में ही लगाते हैं।

हमीं लोग कभी-कभी चले जाते हैं।"

"और हमारी शारदा कहां रहती है?"

"अम्मा महीने में पन्द्रह दिन यहां, पन्द्रह दिन वहां गुजारती हैं।"

बातें चल रही थीं। जावेद उस समय ड्राइंगरूम से कहीं बाहर चला गया था, एकाएक मुश्ताक साहब ने आवाज़ दी : "अरे बन्ने, कहां चले गये भाई?"

गुलखैरू की मोटी अम्मा हाथ में चाय और फलों-बिस्कुटों की ट्रे लेकर अपना अधपोपला मुंह खिलाती हुई तभी कमरे में आई और टेबुल पर ट्रे रखते हुए कहा : "बन्ने मियां गुसल कर रहे हैं हुजूर। उनको बड़ी गर्मी लग रही थी।"

"गर्मी। क्या तमाशा है, यह मार्च महीने के तीसरे पहर का वक्त—आजकल के जवानों के दिमाग ही कुछ सातवें आसमान पर रहते हैं, खैर। गुलखैरू की अम्मा इसको जानती है।"

गुलखैरू की अम्मा दुपट्टे के पल्ले से मुंह ढंककर खिलखिलाई : "जानते हैं। साहब बन्ने मियां के वजीरेआजम दोस्त।"

"दुत पगली, अरे ये नहीं इनके वालिद थे वज़ीर। ये तो मेरा भांजा है।"

"हाय अल्ला, ये तो घर के लड़के हैं और बन्ने मियां मुझ बुढ़िया को बेकूफ बना रहे थे।"

"अरे, ये बिस्कुट-विस्कुट नहीं चलेगा भाई, जा दौड़के बुलाकी की दूकान पर गर्मागर्म इमरतियां बन रही होंगी, इस वक्त, ज़रा ज्यादह-सी लाना। सब लोग खायेंगे, तू भी। और देख हिरण की चाल जाना, हिरन की चाल आना, जा भाग।"

"आप तो मामूसाहब तकल्लुफ करते हैं, ये फल वगैरह काफ़ी हैं।"

"हिश, मेरा भांजा पहली बार घर आया है। हिन्दुस्तानी तरीके से मुंह मीठा कराऊंगा।"

"प्लेट से सेब का एक टुकड़ा उठाकर युधिष्ठिर ने मुश्ताक साहब से कहा : "मैं आपको आज खासतौर से एक तकलीफ देने आया हूं, बी० पी० वर्मा के सम्बन्ध में कुछ बातें पूछूंगा।"

"मैं तुम्हें बतलाऊंगा, पूछो।"

हाथ में उठाया गया सेब का टुकड़ा जस-का-तस प्लेट में रख दिया और उठकर अपना ब्रीफकेस लाया। संयोग से लैम्पस्टैण्ड का एक प्लग प्वाइंट मुश्ताक साहब जहां बैठे थे, उसके पास ही था। युधिष्ठिर प्लग जोड़ने लगा तो बुजुर्गवार बोले : "अरे, रिकार्ड करोगे।"

युधिष्ठिर प्लग लगाते-लगाते सकुच गया, बोला : 'जी, चाहता तो यही था, अगर आप इजाजत दें तो···"

"ठीक है, बाखुशी टेप कर लो। मैं भी जी खोलके तुम्हारे सवालात के

जवाव दूंगा।"

"मामू साहब, मुझे मालूम हुआ है कि माननीय बी० पी० वर्मा साहब बहुत ही गरीब खानदान के थे, इसलिए इन्होंने आपके यहां परवरिश पाई।"

"इसका वालिद खचेड़ू कौम का तेली था। हमारी गली में म्यूनेस्पैल्टी के लैम्पों में यही मिट्टी का तेल भरता और चिमनियां वगैरह साफ करके जलाता था।"

"माफ कीजिए, आपका खानदान तो बहुत ऊंचा था फिर इनकी पहुंच आपके यहां कैसे हो गई।"

"भई ये मेरे साथ स्कूल मे पांचवें दर्जे से बराबर साथ-साथ पढ़ा है। शुरू से ही बेहद जहीन और हर सब्जेक्ट मे हमेशा फर्स्ट आता था। डिबेट में भी अच्छा बोलने वाला लड़का यही बी० पी० था। बस दोस्ती हो गई।"

"आपके बड़े बुजुर्गों को इस दोस्ती पर एतराज तो नहीं हुआ।"

"ठीक पूछा। उस जमाने मे इस बात का बहुत ख्याल रखा जाता था और मेरे वालिद को हमारी दोस्ती पर कुछ ऑब्जेक्शन भी थे। मगर एक तो मेरा रुख देखकर और दूसरे इसके बाअदब और सलीकेदार होने की वजह से उन्होंने बाद मे खामोशी इख्तियार कर ली थी।"

"इन्होंने आपके यहा से कभी कोई चीज चोरी-चोरी, मेरा मतलब है वगैर पूछे आपके यहा से कोई चीज वगैरह‥"

"नहीं-नही भाई, बी० पी० उस जमाने में बेहद आनेस्ट आदमी था। हम लोगों को पढने का शौक खूब था, बहसें भी करते थे और तुम्हारे जन्नतमकानी नाना साहब बाबू कौशलकिशोर खन्नाजी के साथ अक्सर बहसें किया करते। हम दोनो ही नेशनलिस्ट व्यूज के थे।"

जावेद तरो-ताजा होकर नये कुर्ते-पजामे मे आ पहुचा। युधिष्ठिर को रेकार्डिंग करते देखकर बोला. "सॉरी, मैंने डिस्टर्ब किया।" युधिष्ठिर ने रिकार्ड का बटन बन्द किया। सेब का एक टुकडा प्लेट से उठाते हुए मुश्ताक साहब ने एकाएक पूछा: 'मगर ये आज एकाएक मैरू की बात तुम लोगो के दिमाग मे कैसे आ गई। क्या उसके मुतल्लिक कोई नई खबर आनेवाली है।"

उत्तर मे युधिष्ठिर ने जगदम्बा देवी और आलमनगर की मजार के सम्बन्ध मे सारी कथा सुना डाली। उसने मियां नूरद्दीन का रिकॉर्ड किया हुआ बयान भी सुनवाया: "अब आपने मुझ गरीब और हकीर इन्सान को इतनी इज्जत बख्शी है हुजूर, इतनी खातिरदारी की और अब पचास रुपये भी इनायत फरमा रहे हैं, मैं झूठ नही बोलूंगा आपसे। खुदा को मुंह दिखलाना है। वह 'अहवाले जियारत पीर बसरा' पुरानी किताब नही। बी० पी० वर्मा साहब के दरबार मे एक दिन बैठा था। गुलशेर की हवेली का तजकिरा छिड़ गया। मुसम्मात जगदम्बा और उनके

मुख़्तारे आम से कैसे बदला लिया जाय। तो मैंने भी···मैंने क्या, यह चिनिया बेगम के सरूर में मैंने भी एक लंतरानी सुना दी। कहा कि मामला जब मज़हबी रंग ले लेगा तो मुसम्मात को हवेली छोड़नी पड़ जायेगी। कह दीजिए कि शमशेर अली खां के ज़माने में बसरा के पीर यहां काले पहाड़ की ज़ियारत के लिए आये थे। इसी हवेली में ठहरे और यहीं जन्नतमकानी हुए। यह उड़वा दीजिए कि मज़ार मुख़्तार ने खुदवा डाली। आप ही हंगामा खड़ा हो जायेगा। सुनकर बी० पी० साहब, उनके सिकत्तर बिरजमोहन वकील साहब फड़क उठे। वह किताब मुझसे ही लिखवाई थी और मैंने अपने दादा मरहूम का नाम दे दिया।··· इतना हंगामा खड़ा किया। मुझे सौ रुपये इनाम देने को कहा था सो एक छदाम या फूटी कौड़ी तक अभी नहीं मिली।"

जावेद ने भी पहली ही बार इस बयान को सुना था, चौंककर बोला : "उफ, किस कम्यूनल पैंतरे से इन खुदगर्जों ने जगदम्बाजी से लड़ाई लड़ने की साज़िश रची थी। निहायत ही गिरे हुए हैं यह लोग। धर्म और मज़हब भी इन लोगों के लिए महज़ खिलवाड़ ही होकर रह गये हैं।"

तभी गुलखैरू की मोटी अम्मा प्लेट भर गर्मा-गर्म इमरतियां लेकर अपने अधपोपले मुंह की हंसी बिखेरती हुई आई।

गर्म इमरतियों का स्वाद लेते हुए जावेद ने पूछा : "क्या ये रिकार्डेड स्टेटमेण्ट भी आज शाम को आ रहा है?"

"हां।"

"अमां इससे तो तूफान खड़ा हो जायेगा यार।"

"बन्ने सही कह रहे हैं टण्डन, यह भैरू नाग है काला नाग। इसके काटे का मन्तुर नहीं है बर्ख़ुरदार। यह नालायक मौलवी फिर स्टेटमेण्ट बदल देगा। हो सकता है कि इस खबर को दबाने के लिए वह छोटा-मोटा कम्यूनल दंगा भी आर्गनाइज़ करवा दे।"

युधिष्ठिर बोला : "इसके लिए इन्तज़ाम कर आया हूं मामू साहब। यह अफीमची मौलवी और उसकी आश्ना को मेरे खयाल में इस समय तक मिसेज मेहरोत्रा के मुख़्तार ने कहीं अण्डरग्राउण्ड कर दिया होगा। बी० पी० साहब पीं-पीं बजाते खोजते ही रह जायेंगे और मथुराबख़्श की सलाह से मैं खुद सआदतगंज के थाना इंचार्ज से मिल आया हूं।"

"वहां का थानेदार हिन्दू होगा मेरे खयाल में।"

"जी हां, ठाकुर है।"

जावेद ने चाय की एक चुस्की ली और एकाएक हंस पड़ा। चार सवालिया आंखें उसके चेहरे पर टंग गयीं। जावेद बोला : "हमारे यहां एक चपरासी है शिवदीन। वह बकौल ख़ुद मग्जखोरी करता है। उसने आज एक अजीब सवाल

पूछा।"

"क्या ?"

"कहने लगा कि आप इण्डियन कहें तो सिकयूलर और हिन्दू कहें तो कम्यूनल जब कि इण्डिया और हिन्दुस्तान दोनों एक देश के नाम हैं, धरम के नहीं।"

मुश्ताक साहब हंस पड़े : "अच्छा खयाल है, अभी कल ही मैंने पेपर में एक इंटरेस्टिंग कमेण्ट पढ़ा था। राइटर ने बहुत झुंझलाकर लिखा था कि आज़ादी के बाद एक अच्छे हिन्दू की पहचान यह हो गयी है कि वह हर बात में प्रोमुस्लिम और एण्टी-हिन्दू बातें करे। मैं राइटर की बहुत-सी बातों से तो एग्री नहीं कर सका पर उसकी यह बात मुझे भी ठीक लगती है। कम्यूनल नहीं कहा जा सकता खैर। तुमने कालेनाग को उसकी बांबी में हाथ डाल कर उसे पकड़ने की जुर्रत की है टण्डन। होशियार रहना।"

"मामू साहब, मैं कुछ सवाल आपसे और पूछना चाहता हूं।"

"बशौक पूछो बर्खुरदार।"

युधिष्ठिर ने अपना टेपरेकार्डर चला दिया।

"क्या आप जानते हैं कि लखनऊ में वर्मा साहब की कोई पुश्तैनी जमीन थी।"

"मेरे लिए तुम्हारी यह बात ही एक नई खबर है।"

"आपको याद है कि सन् बयालीस से पहले वर्मा साहब लखनऊ आते थे।"

"बड़ा मुश्किल सवाल किया बेटे, तुमने।"

"मुझे आज यह मालूम हुआ कि उनकी ममेरी बहन किसी कुसलो बीवी के पति ने मरने से पहले विल करके इन्हें अपने इकलौते लड़के का गार्जियन मुकर्रर किया था और उस अवसर पर यह लखनऊ आये भी थे।"

मुश्ताक साहब गम्भीर हो गये, फिर एकाएक उनकी आंखों में चमक आयी, बोले : "वसीयत की बात तो मैं नहीं जानता मगर तुम्हारे पूछने से यह जरूर याद आया कि भैरू उस ज़माने में शायद एक या दो बार लखनऊ आया था—मेरा खयाल है यह सन् बयालीस से पहले की ही बात है···चालीस या सन् इकतालिस। कुछ देर तक होंठों-ही-होंठों में बुदबुदाते रहे, फिर एकाएक तन कर कहा : "याद आ गया सन् चालीस ही में यह हमारी कालेज यूनियन का प्रेसीडेण्ट भी चुना गया था और उसी साल गर्मी की छुट्टियों में यह किसी जरूरी काम से लखनऊ आया था। अरे मुझसे ही तो पैसे लेकर आया था बेटे।"

रिकार्डर बन्द करते हुए युधिष्ठिर ने कहा : "तब उसी वक़्त वसीयतनामे का रजिस्ट्रेशन भी हुआ होगा। मामू साहब, क्या आप मेहरबानी करके उस विल की नकल देखने का मौका एक बार दिलवा सकते हैं।"

"बन्ने, तुम इन्हें खुर्शीद आलम के पास ले जाओ। मेरा नाम लेना, मगर लिफाफे में पचास रुपये रखकर उसे देना न भूलना भाई। काम हो जाएगा।"

युधिष्ठिर मुस्कुराया, बोला : "आप फर्मायें तो और जादा भी दे सकता हूं।"

"नहीं, वह मान जायेगा और मेरा खयाल है कि अभी वह कोर्ट में मिल भी जायेगा। क्या बजा है।"

"जी, तीन पचपन।"

"मिल जायेगा। इसी वक्त चले जाओ। रुपया देना, मगर उससे यह भी कह देना कि मेरा खास काम है। तुम जानते हो भैरू, आजकल कहीं गवर्नर बनने की कोशिश में दिल्ली की दौड़ लगा रहा है। मैं चाहता हूं कि उसके पहले ही उसका मुंह काला हो जाय। तुम्हारे वालिद को जिस तरह इसने ज़लील किया था, मैं उसे भूल नहीं सकता और इसे कुत्ते की मौत मरते देखना चाहता हूं।"

जावेद और युधिष्ठिर के मन नई कल्पनाओं के पंख लेकर तेज़ी से फड़फड़ा उठे।

तीन

उसी दिन शाम को 'ईवनिंग स्टार' ने शहर में तहलका मचा दिया। काल्पनिक पीरबसरा की सवा सौ बरस पुरानी किताब की झूठी अफवाह जो अब तक बहुत से न्यायप्रिय प्रकार के लोगों का मन बांधे हुए थी उसका पर्दाफाश हो गया। भूतपूर्व मुख्यमन्त्री बी० पी० वर्मा के लिए सैकड़ों जबानों पर गालियां चढ़ गयीं। श्रीमती जगदम्बा मेहरोत्रा के बूढ़े जेठ हरिमोहनदास जो बी० पी० वर्मा के सिखाये हुए मुसलमानों की मीटिंग में यह कह आये थे कि मैंने अपने बचपन में पीरबसरा की मज़ार देखी थी और उनके बारे में बहुत कुछ सुना था और उनके बेटे बृजमोहनदास वकील भी गली-गली में नफ़रत और गालियों के पात्र बन गये।

बी० पी० का एक खास आदमी सआदतगंज में हरिमोहन सेठ की कोठी पर आया। हरिमोहन स्वयं हाफिज जी की तलाश में थे। इधर-उधर की बहुत पूछताछ का नतीजा यह निकला कि सुबह नौ बजे मुंशी मथुराबख्श उन्हें रिक्शे पर ले गये थे, तब से हाफिज जी लापता हैं। हरिमोहन ने अपना आदमी भेजकर मथुरा मुख्तार से पुछवाया तो पता चला कि युधिष्ठिर टण्डन उन्हें अपने साथ ले गये थे। युधिष्ठिर के यहां बी० पी० और हरिमोहन के फोन पर फोन हुए लेकिन यही पता चला कि भैया जी के साथ कार पर अकेली माताजी ही आई थीं और कोई न था। घर से भैयाजी (युधिष्ठिर) फिर अपने स्कूटर पर अकेले गये थे।

स्वभाववश अनवरत रूप से चलती और कुछ-न-कुछ पीसती ही रहने वाली भूतपूर्व मुख्यमंत्री महोदय की मनचक्की यह सुनकर बिजली की तेजी से चल पड़ी। सेठ हरिमोहनदास के पास गये। कहा: "गजब हो जाएगा सेठजी, मीटिंग में आपने भी अपने गुलशेर की हवेली में मजार होने की बात कही थी। मैंने भी कही थी। हम दोनों ही झूठे साबित होंगे। इज्जत का सवाल है।"

"अरे, मैं आपे परेसान हूं वर्माजी। बिरादरी में, रिस्तेदारी में सब जगह हमरी नाक कट जैहे। आपका क्या, आप तो नेता हैंगे, सच झूठ बोलना आपका रोज का धंधा हैगा। मब कहियें कि छोटे भाई की विधवा को परेसान किया। क्या करें, कुछ समझ में नहीं आता हैगा।"

एक गहरी ठंडी सांस लेकर वी० पी० बोले: "क्या कहें, करेले पर नीम भी चढ़ी है, सेठ जी। सुमन्त बाबू का लड़का भी कुछ कम नहीं। साला मेरी गवर्नरी का चांस ले डूबेगा। मैं दस-बीस हजार तक खरच करने को तैयार हूं, उस हाफिजवे की तलाश करवाइये।"

"कहां कराऊं। कैसे कराऊं। यह भी हो सकता है कि युधिष्ठिर उसे अपने बाप के यहां अजुध्याजी···"

"नहीं, सुमन्त बाबू के यहां हरगिज नहीं ले गया होगा। वह इन बातों से अलग रहते हैं।"

"तब हमारी समझ मे एक जगह और हुइ सकती है।"

"कहां?"

"चांद्रकोजी के पास सुमन्त बाबू के पड़बावा रायसाहेब बंसीधर ने अपने वास्ते एक काटिज बनवाई रही। उसमें हमारे बाबा के धेवते डॉ० जगदीश नारायण टण्डन आजकल···"

"अरे, ये अपने डॉ० पन्नालाल के···"

"बाप।"

"अच्छा-अच्छा। यह लोग आपके रिश्तेदार हैं। तलाश करवाइए सेठजी। इज्जत का सवाल है।"

तब तक बृजमोहनदास भी कचहरी से आ गये। सब हाल सुनकर कहा: "अरे युधिष्ठिर तो हमें अभी कचहरी में दिखाई पड़े थे। उनके साथ मुश्ताक साहेब का लड़का भी था। लगभग हमारे साथ ही फाटक से बाहर आये थे। हमारी दुआ-सलाम भी हुई पर कोई बात नहीं हुई।"

वी० पी० बड़बड़ाये: "वहां क्या करने गये थे?"

"अरे इखबार वाले ससरे हर जगह कुत्ते-बिल्ली की तरह झपटते हैं। बिरजू जरा छगे को तो बैसिकल पे चादको जी दौड़ाय देओ। होय सकत है गुपाल भैये के हियन उस निगटे को छुपाय आये होय।"

"नहीं बाबू, अगर छुपाया होगा तो मुश्ताक़ साहेब की राय से किसी मुसलमान के यहां छुपाया होगा।"

"मुश्ताक कौन ? बरेली वाले।"

"जी हां, जी हां। वहीं जावेद के फादर हैं।"

"मगर यह तो शिया हैं, सुन्नी···"

"इसमें शिया-सुन्नी की बात नहीं। युधिष्ठिर और जावेद हमप्याला हमनेवाला दोस्त हैं।"

"वकील साहेब, मुश्ताक हुसैन का घर जानते हो।"

"जानता तो नहीं हूं पर शायद वजीरगंज में रहते हैं कहीं। हसन जावेद उन्हीं का लड़का है। मेरे खयाल में 'ईवनिंग स्टार' के दफ्तर में आपको पता चल जायगा और वैसे कहिए तो मैं चलूं।"

"कोई जरूरत नहीं, मेरा सचिव तलाश कर लेगा। (उठते हुए) वैसे तुमसे मुझे यह अच्छी सूचना मिली कि जावेद मुश्ताक मियां का लड़का है।"

'मुश्ताकविला' के फाटक पर माननीय भूतपूर्व मुख्यमंत्री जी की गाड़ी रुकी। जावेद उनके आने से लगभग पल-दो पल पहले ही घर पहुंचा था और फाटक खोलकर अपना स्कूटर अन्दर लिये जा रहा था। उसने मुड़ कर वर्मा जी को देखा। वहीं रुक गया, फिर कार के पास पहुंच कर सलाम किया और कार का दरवाज़ा खोला।

"तुम मुश्ताक के साहबजादे हो न।"

"जी हां, तशरीफ लाइए।"

"कोर्ट से आ गये मुश्ताक।"

"जी, वह तो दो साल से कचहरी नहीं गये। उन्हें पैरालिसिस का अटैक हुआ था।"

"अरे, यह तो मुझे किसी ने बताया ही नहीं था। कहां है भई, मुझे उनके पास ले चलो बेटे, ही इज़ माई ओल्डेस्ट फ्रैण्ड एण्ड क्लासफेलो यू नो।"

बी० पी० वर्मा मुश्ताक साहब के कमरे में गये। बूढ़े ने चश्मा उतारकर चश्मेधारी बूढ़े को देखा, किन्तु आरामकुर्सी से उठने का तनिक भी प्रयत्न नहीं किया।

"अरे भई मुश्ताक, कैसे हो मियां।"

मुश्ताक हुसैन साहब वैसे ही लेटे रहे, कुछ न बोले।

"अभी-अभी तुम्हारे लड़के ने बताया कि तुम पैरालिटिक हो गये थे और तुमने कोर्ट वगैरह जाना भी बन्द कर रखा है। मुझे खबर तक नहीं थी।"

मुश्ताक साहब तब भी चुप ही पड़े रहे। सचिव और ड्राइवर क्रमशः मिठाइयों का पैकेट और फलों का झौआ लेकर कमरे में आये। सचिव ने

मिठाइयों का पैकेट जावेद की ओर बढ़ाया, ड्राइवर ने झौआ कमरे के एक कोने में धर दिया। मुश्ताक मियां अब बोले : "जावेद, ऑनरेबल एक्स चीफ मिनिस्टिर साहब की ये सौगातें बाइज्जत उनकी कार में रख आओ। हमारे यहां बच्चों को ब्लैक मनी की चीजें खाने की आदत नहीं पड़ी। एक्स चीफ मिनिस्टर साहब को चाय-वाय पिलाओ एण्ड टेल हिम आई एम क्वाइट ऑल राइट। थैंक हिम फार कमिंग हियर।" मुश्ताक साहब का चश्मा फिर आंखों पर चढ़ गया। डिकेन्स की 'पिकविक पेपर्स' किताब फिर हाथ में उठा ली। माननीय भूतपूर्व मुख्यमंत्री जी का ऐसा सम्मान शायद कभी नहीं हुआ होगा।

भूतपूर्व मुख्यमंत्री इस अप्रत्याशित व्यवहार से स्तब्ध हो गये। फिर कहा : "मैंने तुम्हारा दिल दुखाने वाली तो कोई बात कही नहीं मुश्ताक, फिर···"

"जावेद, इनसे कह दो कि मुझे ऐसे लोगों से बात करना सख्त नापसन्द है जो अपनी खुदगर्जी के लिए कम्यूनल दंगे कराने से भी गुरेज न रखते हों।"

कुछ बनावटी गुस्से के साथ भूतपूर्व माननीय मुख्यमंत्री बोले : "भई तुम तो मुझ पर नाहक इल्जाम लगा रहे हो मुश्ताक, मेरा इसमें कोई भी अपराध नहीं है।"

"जनाब एक्स चीफ मिनिस्टिर साहब, मैं इस वक्त आपसे बातें करने के मूड में नहीं हूं। आप आये हैं, घर है आपका। मगर मैं आपसे बात नहीं करूंगा।"

"मगर मैं बात करूंगा मुश्ताक मियां। हमारे बीच में गलतफहमी हरगिज नहीं होनी चाहिए।"

मुश्ताक मियां ने उनकी बात का उत्तर देना भी उचित न समझा, उनकी ओर से मुंह फेरकर पढ़ने वाला चश्मा और 'पिकविक पेपर्स' उठाने लगे।

माननीय भूतपूर्व मुख्यमंत्री जी का ऐसा सम्मान और शायद ही कहीं या कभी हुआ हो। किन्तु वे सिद्ध, स्वार्थ—महायोगी हैं—मानापमान आदि से परे।

चार

युधिष्ठिर रात में अपने घर खाना खाने से पहले रम की चुस्कियां ले रहा था, सहसा उसे अपने स्टडी रूम की तरफ आते हुए गलियारे में मां और पत्नी की आवाजें सुनाई दीं। बोतल तुरन्त अन्डरग्राउन्ड हुई, गिलास एक घूंट में खाली होकर पीछे की मेज पर चला गया और मुंह पोंछ कर टण्डन साहब मां के स्वागताभिनय में धोखे से उल्टा अखबार ही उठाकर पढ़ने लगे। शारदा जी ने

शकुन्तला के साथ कमरे में प्रवेश किया। युधिष्ठिर हल्के नशे की झोंक में एकाएक वाअदव खड़ा हो गया, वोला : "अरे मां, क्या वात है ?"

मां का चेहरा कुछ उदास और खोया हुआ था। वेटे के एकाएक प्रश्न करने से चौंक कर बोली : "वो···अरे हाफ़िज़ जी को कहीं सुरक्षित जगह भिजवा दिया है न। उनका स्टेटमेन्ट तो क्षेत्र भरके मुसलमानों को भड़काय देगा भाई।"

"वेफिकर रहो मां। जगदम्वा मौसीजी का मुख्तार तो विल्कुल सतजुगी स्वामीभक्त है, कमाल का तेज़ दिमाग़ आदमी है।"

"जगदम्वा वताती रहीं कि दो साल का रहा जव इसकी मां मरी, इसका वाप भी इन्हीं के यहां काम करता रहा विचारा। वह इसे गोदी में लेके उनके यहां आवे तो जगदम्वा को दया आ गई। उसने लड़के को पाल लिया। इन्हीं के पास पढ़ा-लिखा हुशियार वना। जगदम्वा के लड़कऊ भी इसे शुरू से ही वहुत चाहते हैंगे, मयरावकस उन्हें अपनी सगी मां जैसा व्योहार देत हैगा।"

"आज तो वी० पी० वर्मा शहर भर का पीकदान वन गया मां। मेरी रिपोर्टिंग पढ़के मेरे दफ्तर वाले ही एकदम चौंक उठे थे।"

"अरे वड़ा नीच है रे, तेरे वावूजी को गिराने के लिए जव पी० ए० सी० रिवोल्ट भड़काके इसने अखवारों में स्टेटमेन्ट दिया रहा तो तुम्हारे वावूजी कैसे दुखी भए रहे, मैं ही जानती हूं।···आज तुमरे वावू जी की भी हमें वड़ी याद आ रही है मुनुवा, न जाने क्यों।"

युधिष्ठिर सुनकर सहसा भावस्तब्ध रह गया, क्षणभर रुक कर वोला : "मेरे वावूजी ग्रेट आदमी हैं···" मां पास की कुर्सी पर आकर बैठने लगीं। अपने मुंह का भभका वचाने के फेर में युधिष्ठिर सहसा खड़ा होकर सामने व्राकेट पर रखे टेलीफोन की तरफ विना कुछ समझे-वूझे ही वढ़ गया। फिर कुछ न सूझा तो वात को मदभरी भावुकता में आगे वढ़ाया : "मैं वहुत भाग्यशाली हूं मम्मी, ऐसे ग्रेट पापा और मम्मी कितने वच्चों को मिलते हैं।"

"मैं सोच रही हूं मुनुआ कि कल सवेरे अजुध्या जी निकल जाऊं, दस-पांच दिन तुमरे पापा के पास ही रह आऊं।"

"ठीक है मम्मी, तुम्हारा जी करता है तो हो आओ।"

स्टूल पर वैठी हुई शकुन्तला भी पति से वोली : "मैंने भी यही कहा। अरे, अभी जव थोड़ी देर पहले ये मेरे पास आई तो चेहरा ऐसा फफकाया हुआ था कि मैं घवड़ा गई। पूछा, क्या वात है मम्मी, तो मुझसे लिपट गयीं, वोलीं—तुम्हारे पापा की वहुत याद आ रही है। इतना इमोश्नल तो मैंने मम्मी को कभी देखा ही नहीं था।"

टेलीफोन के व्रेकेट से हटकर पत्नी के स्टूल के पास रखी हुई कुर्सी तक

आकर खड़ा हो गया। शकुन और युधिष्ठिर के बीच फासला था और नहीं भी था। शरीर न सही पर शरीर की शोभा कपड़े तो आपस में एक-दूसरे का स्पर्श कर ही रहे थे। युधिष्ठिर ने पत्नी से कहा : "पापा इस डर्टी पालिटिक्स से और इधर घर मे अनन्तु-बसन्तू भाइयों की कलह से दुखी होकर जब सब छोड़कर लखनऊ से अयोध्या गये थे शकुन तो आई रिटल रिमेम्बर, मम्मी कितनी रोई थी। आई रिटल रिमेम्बर पापा सेइंग टू मम्मी, शारदा तुम पिछले जन्म की और इस जनम से भी पैदायशी तपस्विनी हो। पहले नियति ने तुम्हें विधवा बनाया और अब सौभाग्यवती बनाकर भी वैधव्य का ही अनुभव कराया। साथ ही मैं भी तुम्हारा सौभाग्यवान पति होकर भी विधुर ही रहूंगा। चक्रवर्ती महाराज रामचन्द्र और महारानी महादेवी सीता राजा-रानी होने के बाद भी नसीब के धोबी के पाप से अलग रहे। हम भी वैसे ही रहेंगे।'''फिर मुझे देखकर मम्मी से बोले, तुम अपने बेटे में मुझे देखना। जब बहुत याद आये तो आ जाया करना। हमें-तुम्हें मिलने के लिए राम के राजसूय यज्ञ के मौके की जरूरत नही पड़ेगी।" स्टूल के पास वाली कुर्सी को खिसकाकर उसके हत्थे पर शकुन के कन्धे की टेक लेकर बैठते हुए युधिष्ठिर ने अपना वाक्य पूरा किया।

शारदा मां कुर्सी पर दोनो पैर उठाए आखें बन्द किये, बड़ी खामोश बेचैनी-भरे आसू बहा रही थी।

कमरे का क्षण, कमरे की चौहद्दी से बड़ा हो गया। तंग जगह की घुटन सताने लगी। युधिष्ठिर का हाथ शकुन्तला की पीठ पर आया और उसी की तरफ देखकर कहा "आज की रात मुझे जागना पड़ेगा शकुन। किसी भी वक्त लखीमपुर से ट्रंककाल आ सकता है।"

पत्नी सास की उपस्थिति के कारण पति का हाथ अपनी पीठ से हटा लेने के लिए अपना स्टूल तनिक खिसकाती हुई बोली : "लखीमपुर से क्यो।"

"अब क्यो के जवाब तो लम्बा पवारा है, डॉक्टर शकुन्तला टण्डन साहिबा। मथुरावक्श हाफिजजी की जान बचाने के लिए उन्हे अपने गांव नजरबन्द करने गये। वहा से शायद अब तक लखीमपुर पहुंच भी चुके होंगे। ईश्वर करे उनका अनुमान सही निकले और तलाश भी हो जाय तो मुझे चार बजे के लगभग ही अपना 'राजदूत' दौड़ा देना पड़ेगा। मजनू को लैला जैसी प्यारी लगती है वैसी ही रिपोर्टर को खबर।"

शारदा जी ने आखें खोली, सूखती हुई सरस्वती नदी जैसी गीली अश्रु रेखाओं के साथ अपने शोक के ऊपर एक नयी चिन्ता की चौक लिये खुली। मां की आंखो ने बेटे को बरज कर देखा, आदेश भरे स्वर मे कहा : "मोटर साइकिल की कोई जरूरत नही, गाड़ी ले जाओ।

"लेकिन तुम मम्मी !"

"जगदम्बा को मेरे लिए फोन लगाए के कह देओ कि सवेरे ठीक पांच बजे मेरे अजुध्या जान खातिर अपनी गाड़ी भेज दें।" कहकर शारदाजी उठीं और कमरे से चली गईं।

"शकुन डियर, जरा वो मेरी मेज के पीछे से अंडरग्राउण्ड बोतल तो निकालो, एक पैग तैयार करो, तब तक मैं फोन मिलाता हूं।"

"अब मत पीना..."

"अरे, एक पैग ही पिया था। मम्मी की प्रेजेंस से उसका नशा हिरन हो गया। अब तुम यह सोने के कमरे में ले चलो। मैं फोन करके और उसका प्लग निकाल कर वहां उसी कमरे में लगाने को आता हूं और अपनी काली माई से कह दो कि मेरा और तुम्हारा खाना कमरे में ले आये।"

बोतल-गिलास लेकर शकुन्तला बोली: "मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊंगी।"

"क्यों?"

"तुम पीने को मजबूर करोगे। मुझे सवेरे चक्कर आयेंगे। दिन में क्लासेज..."

"कल तो सण्डे है डार्लिंग। मुझे और मां को बाई-बाई करके फिर सो जाना।"

रात को डेढ़ बजे फोन की घण्टी घनघनाई। पहले शकुन जागी फिर युधिष्ठिर। लखीमपुर से मथुराबख़्श ने बतलाया कि कुशलो बीबी का लड़का शिवप्रसाद मिल गया। बजाज की दूकान पर नौकर है। मां-बाप के साथ बचपन का फोटो है, मां की चिट्ठियां हैं। एक बी० पी० वर्मा की भी बड़ी पुरानी चिट्ठी उसके पास है। मगर वसीयतनामा नहीं है। खबरों से उत्साहित होकर युधिष्ठिर ने कहा: "मुख़्तार साहब, इस समय पौने दो बज रहा है। मेरी कार देर से देर तीन बजे यहां से चलकर करीब छह-सवा छह बजे तक लखीमपुर बस स्टेण्ड पर पहुंच जायेगी। मेरी कार का नम्बर डब्लू० आर० 7372 है। हां 7372। शिव-प्रसाद के मिल जाने की खबर से बहुत खुश हुआ। ठीक है सवेरे मिलूंगा।"

फोन रखकर खुशी के मारे उसने अपनी पत्नी को चिपटा कर चूम लिया।

तीसरे दिन का 'ईवनिंग स्टार' और उसके अगले दिन का 'मार्निंग टाइम्स' के अंक शहर ही नहीं, सूबों के एक बहुत बड़े हिस्से में हलचल मचा गये। अदालत के रिकार्ड रूम से वसीयतनामे की नकल निकल आई। शिवप्रसाद ने मौसी और खास तौर से मौसिया जी जो विल में एक गवाह थे, और सआदतगंज के दो-एक सजातियों की शिनाख़्त और पुराने फोटोग्राफ और चार मई सन् तैंतालीस को लिखा गया कुशलो बीबी के नाम बी० पी० वर्मा का एक पत्र और वह भी सद्भावना से लबालब भरा और छलकता, ईमान के युग और उम्र में लिखा गया पत्र आदि ऐसे अकाट्य प्रमाण थे कि बी० पी० वर्मा को भी मजबूरी से त्यागवीर

और सत्यवादी बनना ही पड़ा। उन्होंने चलते-चलाते यह प्रस्ताव अवश्य किया कि शिवप्रसाद अपनी वह पैतृक भू-सम्पत्ति यदि उन्हें बेच दे तो वह मुहमांगा दाम देंगे। मगर शिवप्रसाद ने इन्कार कर दिया।

भाग्यचक्र ने जिसे बयालीस वर्ष की आयु तक यह बुरे दिन दिखलाकर अब अपनी पैतृक संपत्ति का स्वामी बनाया था, जिस भैरू मामा को-उसने भीख मांगे पैसों से पचासों चिट्ठियां लिखी थीं, जिनके फाटक से धक्के खाकर लौट आया था, उनको वह कदापि न देगा। शिवप्रसाद की ओढ़री पत्नी भी इसके लिए राज़ी न थी। और पत्नी को वह अपना सौभाग्यसितारा मानता है, उसकी बात तो वह टाल ही नहीं सकता। उसकी ओढ़री पत्नी मगी भी गरीब घर की अनाथ लड़की थी। संकट से उबरने के लिए पच्चीस रुपये महीने पर एक बजाज के यहां नौकरी करने वाले सजातीय लड़के से विवाह कर लिया। एक पुत्र हुआ, पति ट्रक से कुचल कर मर गया। मगी उसी बजाज के घर में चौका-बासन करके अपने बच्चे का पेट पालती। परन्तु पति की मृत्यु के साल-डेढ़ बरस बाद बच्चा भी न रहा। गली-गली तरकारी बेचने बजाज मालिक के द्वारे पर शिवप्रसाद से भेंट हुई कई बार मिले। मगी आयु में शिवप्रसाद से दो वर्ष बड़ी अवश्य है, पर गरज बावली में उमर नहीं देखी जाती। शिवप्रसाद के मौसी-मौसिया की राजी से पचायत में धर बैठौवे की रसम भी कर ली। मगी ने अपने पुराने पति की जगह अपने नये पति शिवप्रसाद को नौकर रखवा दिया। इसकी नौकरी पचास से शुरू हुई क्योंकि गिनती-पहाड़े, हिसाब-किताब में कुशल था, मुड़िया और नागरी पढ़ा-लिखा भी था। शिवप्रसाद ने मगी के नाम से दो बार लाटरी के टिकट लिये, एक बार सौ और एक बार ढाई सौ रुपये के इनाम पाये थे। बस, उसके बाद तो शिवप्रसाद के लिए जो मगी कहे दिन तो दिन और रात कहे तो रात। मगी अब उसके भी एक बच्चे की मां बनने वाली है। ऐसे ही दिनों में डूबते-डूबते रात के दस बजे मुंशी मयूरावक्श उसके मौसिया को लेकर उसकी टूटी मड़ैया पर पहुंचे। सतोमी माता और सत्तनारायन स्वामी ने इनके नसीब का छप्पर फाड़कर धन बरसा दिया।

सवेरे टण्डन साहब पहुंचे। तीसरे दिन अखबारों में मौसी-मौसिया के साथ उसकी और मगी की फोटो छपी। वह सब पुराने कागज उसने गरीब के धन की तरह सहेज रखे थे। उनके सबके ब्लाक अखबारों में छपे। पूरी दास्तान छपी। कंस मामा को पछाड़कर ज्यों श्रीकृष्ण ने ख्याति पाई थी ऐसे ही भैरू मामा पर भांजा शिवप्रसाद भी भारी पड़ा। अचानक मशहूर हो गया। ऐसे शाही तेवरों वाला शिवप्रसाद भला दबता? मगी उसे दबने देती?

वर्मा ने धमकी दी कि उस भूमि को चौरस बनवाकर प्लाट बनवाने में उनके दो लाख रुपये खर्च हुए हैं, वह धन उन्हें लौटा दिया जाय। किन्तु मयूरावक्श और टण्डन की सलाह से शिवप्रसाद ने उसे भी इंकार कर दिया। मुख्यमंत्री

किशोरीरमण जायसवाल ने बदनाम वर्मा गुट के कई प्रभावशाली व्यक्तियों को भी तोड़ लिया था। वर्मा को न गवर्नरी मिली और न पराई सम्पत्ति—न खुदा ही मिला न विसाले सनम।

इसके दूसरे ही दिन भूतपूर्व माननीय मुख्यमंत्री श्री सुमंत टण्डन घायल और अत्यन्त चिन्तनीय स्थिति में फैज़ाबाद से लखनऊ ले आये गये।

पांच

सवेरे लगभग साढ़े-सात बजे अपने नियमित ध्यान योग साधना से मुक्त होकर सुमन्त टण्डन अपनी कॉटेज के बाहर नंगे बदन छोटी आरामकुर्सी पर बैठे हुए धूप का आनन्द लेते हुए पिछली शाम का अखबार पढ़ रहे थे। शाम के 'ईवनिंग स्टार' में बी० पी० वर्मा के द्वारा लिखवाए गये 'अहवाले पीरबसरा' पुस्तक के झूठे और नकली होने के सम्बन्ध में हाफ़िज नुरुद्दीन का वक्तव्य पढ़कर वीतरागी साधक सुमन्त टण्डन के मन में भी एक सन्तोष भरे आनन्द का नशा-सा चढ़ रहा है। वह अभी अपने मन की इस हिंसात्मक प्रवृत्ति के प्रति ध्यान भी न दे पाये थे कि दरवाज़े के बाहर शारदा की कार आकर रुकी। अखबार हटा कर सुमन्त ने बाहर की ओर देखा, आंखों में प्रसन्नता की चमक आ गयी, कुर्सी से खड़े हुए, बांस के फाटक के पास तक आए, उसे खोला। शारदा पति को देखकर सन्तोष से मुस्कुराते हुए कार से उतरी। बोली "कैसे हो?"

"देख रही हो, चंगा हूं, परन्तु तुम्हारे चेहरे को देखकर लगता है कि तुम किसी घबराहट के कारण आई हो।"

गहरी नेह-भरी दृष्टि पति की ओर डालकर कॉटेज की ओर बढ़ती हुई शारदा बोली : "कल दोपहर से हमरा जिउ तुमरे में ही पड़ा रहा, तुम जाने कैसे माया-मोह छोड़कर बैठे हो, हमसे तो नहीं छूटता भैया।"

मालकिन की आवाज़ सुनकर घर का पुराना नौकर भीखम बाबू साहब के प्राकृतिक चिकित्सा का टब धोना छोड़कर धोती से जल्दी-जल्दी हाथ पोंछते हुए बत्तीसी खिलाये कमरे में आया। शारदा के पैर छूकर बोला : "आप खूब आयीं बहूजी, अबहें परों और याक दांय कल्हो बाबू साहब आपका याद कहिन रहैं।"

वार्धक्य की ओर बढ़ते हुए प्रौढ़ सुहाग का दर्प चेहरे पर दमक आया, पति की ओर न देखते हुए गर्दन झटकार कर कहा : "अरे, ये क्या याद करेंगे हमें, ये तो माया-मोह से महायुद्ध कर रहे हैं महराज।"

कमरे की दो दीवारें हिन्दी-अंग्रेज़ी की किताबों से मढ़ी हुई थीं। उसके आगे

ही एक तखत, उस पर एक चटाई, मृगछाला और छोटा-सा गोल तकिया। पत्नी की बात सुनकर सुमन्त बाबू होंठों में मुस्कुराते हुए तखत के एक कोने पर बैठ गये और संयत स्वर में कहा : "हां, याद तो तुम्हें किया था, मन को लगा कि यदि तुम इस समय पास होतीं तो अच्छा होता।"

सुनकर शारदा का मुख गम्भीर हो गया। पति के पास बैठकर पूछा : "ई बताओ तुमरा स्वास्थ्य कैसा है?"

शारदा का हाथ सुमन्त की बाहु दबाने के लिए उठा, फिर रुक गया। पति-पत्नी में पिछले दो वर्षों से किसी प्रकार का भी कायास्पर्श नहीं हुआ। सुमन्त थोड़ा बाईं ओर सरक गये, बोले : "देख तो रही हो, खूब स्वस्थ हूं।"

जगदम्बा मेहरोत्रा का ड्राइवर एक अटैची और दरी में लिपटा तकिया उठाकर कमरे में आया। भीखम अभी कमरे में ही खड़ा था। दोनों वस्तुएं लेकर अन्दर के कमरे में जाने लगा। शारदा बोली : "भीखम ड्राइवर के लिए दौड़के पाव भर जलेबी ले आओ। गरम खाना और कचौड़ियां भी लाना।"

"आज भला यहा क्या मिलेगा, मन्दिर-मस्जिद की तना-तनी में दूकानें बन्द हैं।"

"अच्छा तो महराज से कह दो कि ड्राइवर को और कार में बैठे उस कानेस्टेबुल को आलू के पराठे बनाकर खिला दें। मिठाई मैं दे दूंगी, लाई हूं। आज तो फैजाबाद की सीमा में घुसते ही पुलिस ने मेरी कार रोकी थी। मैंने तुम्हारा नाम लिया तो बोले कि पहले डी० एम० साहब से मिल लें। वहां गई तो बेचारों ने एक कानेस्टेबुल साथ किया। पूरे फैजाबाद-अयोध्या, यहां तक के रास्ते में पुलिस ही पुलिस भरी पड़ी है।"

"हां, जब से जन्मभूमि का ताला खुल गया तब से लाखों की संख्या में भीड़ आ रही है। अयोध्या में और उससे अधिक फैजाबाद में काफी टेन्शन है।"

"कुछ भी कह लो, मैं तो इसे मुसलमानों की ज्यादती मानूंगी।"

सुमन्त गम्भीर हो गए, कहा : "एक काया में वर्षों रह लेनेवाले जीव को अन्तकाल में अपनी काया के प्रति जैसे अहम जनित कष्ट होता है वैसे ही एक चेतना स्तर से दूसरे चेतना स्तर तक उठने में भी श्रम तो पड़ता ही है। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का बनवाया राम मन्दिर टूट गया। बाबरी मस्जिद बन गयी। तब से इन पाच-छ. सौ वर्षों से इस भूमि ने कभी चैन के दिन नहीं देखे। घृणा की प्रतिक्रिया में घृणा और हिंसा की प्रतिक्रिया में हिंसा ही उभर रही है। राम जो चाहते हैं वही होता है। अच्छा है—तुम्हारे नन्हे ने तो भाई उस मौलवी का स्टेटमेण्ट छाप कर कल लखनऊ में हलचल मचा दी होगी।"

"अरे पूछो नहीं, शाम के वखत तो घर में टेलीफोनों का तांता लग गया था।"

"मगर उस अफीमची, मदकची को बचाने का कोई प्रबन्ध कर लिया है कि नहीं। क्योंकि बी० पी० वर्मा और हरिमोहन दोनों ही…"

"अऽरे, वह मुख्तिआर बड़ा तेज है। जगदम्बा ने उसे पाला है। ऊपर से मिल गए हमारे नन्हा। कल हमरे सामने ही तो नन्हा मुख्तार गिलके उस मदकची और उसकी रखैल को अपनी गाड़ी पर बिठाय के गाड़ी पर घर लाये, भरों को खिलाया-पिलाया और स्टेटमेण्ट के कैसेट बना लिये। फिर वहीं से मुख्तार उन दोनों को अपने गांव ले गया। हमरा नन्हा इन बातों में बहुत चलाक है, तुमसे जादा।"

सुनकर सुमन्त बाबू विनोदी तरंग में आ गये, कहा : "हां-हां भाई, लड़का तुम्हारा है। जब तुम्हीं ने हमको मात कर दिया तो वह तो करेगा ही। मगर यह तुम्हारे धरम का भाई बी० पी० साधारण व्यक्ति नहीं है शारदा। अब तक इसका सारा पोलेटिकल कैरियर अपने प्रतिद्वन्द्वियों को मार कर उनकी लाशों की सीढ़ी बनाकर ऊपर चढ़ने का रहा है।"

"हमरा नन्हा तुमरी तरह सन्त-संन्यासी नहीं है। अरे बड़ा कमीना है भैरू। वो बिचारी इसकी ममेरी की मौसेरी बहन अपने लड़के का गार्जियन बना गई इसे और उसे धता बताकर ये मालिक बन बैठा।"

"युधिष्ठिर ने क्या इसके ठोस प्रमाण पाये हैं?"

"उसी के लिए तो वह अपनी गाड़ी लेकर गया है। यहां आउन के वास्ते हमें जगदम्बा के यहां से गाड़ी मंगवानी पड़ी। रात में एक बजे लखीमपुर से मुख्तियार का फोन आया। सवेरे नन्हा उधर लखीमपुर गया, हम इधर आये। अच्छा, पहले ये बताओ कि तुम नाश्ता-आस्ता कर चुके या नहीं।"

"तुम तो जानती हो, मैं सवेरे दूध पीता हूं।"

"पर आज तो मलाई की पूरियां खानी पड़ेंगी तुम्हें, मैं लाई हूं। कल स्याम ही हजरतगंज में रामआसरे के यहां से मंगाई थी। सवेरे हमने खस्ता पूरियां थोड़ी नन्हा को खिलाई और थोड़ी तुमरे लिये टिफिन में भरके लै आई।"

कॉटेज में दो बड़े कमरे, एक छोटा कमरा, एक रसोईघर और शौचालय-स्नानगृह है। पीछे के कमरे में सुमन्त अपने प्राकृतिक चिकित्सा के प्रयोग करते और करवाते रहते हैं। बगल का छोटा कमरा विशेष रूप से शारदा का ही है। उसमें एक खाली तखत पड़ा रहता है और दीवार में एक गहरी अलमारी बनी हुई है। तखत पर भीखम दरी और तकिया पहले ही बिछा गया था, अटैची अलमारी में रखी थी। शारदा यों तो सवेरे घर से ही स्नान करके चली थीं, फिर भी एक बार स्नान करने की उनकी इच्छा हुई। अटैची से अपनी धुली धोती और सलूका निकालकर बाथरूम जाने से पहले पति के कमरे में आईं। सुमन्त तब तक अपने आसन पर बैठकर पुस्तक पढ़ने लगे थे। शारदा ने कहा : "सुनते हो।"

"क्या ?"

"तुम आज्ञा दो तो हम भीखम को साथ लेकर सरजू जी नहा आयें।"

किताब से दृष्टि हटाकर शारदा को देखते हुए सुमन्त ने मीठी झिड़की दी : "क्या विदुषी होकर मूर्खता की बातें कर रही हो रानी।"

शारदा बोली : "यह नहीं सोचा था कि स्वराज्य के बाद ऐसे बुरे दिन भी हमें देखने को मिलेंगे।"

"मैंने कहा न, अभ्यस्त चेतना स्तर से उठकर नयी चेतना तक उठने में मनुष्य को संघर्ष तो करना ही पडता है।"

मन्दिर और मस्जिद की समस्या को लेकर हिन्दू-मुसलमानों में काफी तनाव और रोष है। उसी दिन शाम फैजाबाद में युवकों का एक बहुत बड़ा जुलूस निकलने को था मगर पुलिस ने उसे रोक लिया। शाम को भीखम ने बाहर से आकर शारदा देवी को हिन्दू-मुस्लिम तनाव की बहुत-सी बातें बताईं : "अरे बहूजी, जब पहले पहल रामजी महजिद मा परगट भए रहे ना तो हुआ एक मियां भाई रहे कानेस्टेबिल। उई कहे कि रात के बारा बजे जमीन फोड के नूर परगट भवा और ऐसा रंग बिरंगा नूर कि जैसे रामजी का धनुष होए। कानेस्टेबिल सगरा डर के मारे भागा। अब ई सरकार राम-जानकी की रथ जात्रा ताले मा बन्द कर दिहिस है। बातन से लागत है कि दो-चार दिन मा हियां बड़ा उत्पात होय वाला है। हम तो यू कहत हैं बहूजी कि आप आय गयीं, बड़ा नीक भवा, बाबू साहब का समझाय के लखनऊ लै जाओ आप।"

एक ठण्डी सांस लेकर शारदा ने कहा . "अरे, तेरे बाबूजी अपने आगे किसी की सुनते है। यहां जगल मे पड़े हैं। अब बताओ रात-बिरात में कुछ उन्नीस-बीस हो जाय तो यहा कोई पूछनेवाला भी नहीं है। क्या कहूं ?"

तीसरे दिन फैजाबाद के एक हिन्दी दैनिक मे स्थानीय सूचनाओं के अतिरिक्त भूतपूर्व मुख्यमंत्री बी० पी० वर्मा की कलुप-कथा भी प्रकाशित हुई। उसमें 'ईवनिंग स्टार' और 'मार्निंग टाइम्स' के रिपोर्टर युधिष्ठिर टण्डन की प्रशंसा भी निकली थी। पढ कर सुमन्त को फिर एक मौन सन्तोष मिला।'' तुम्हारा यह आनन्द तुम्हारी हिंसात्मक वृत्ति से उत्पन्न हुआ है, सुमन्त। भूलो मत। प्रत्येक मनुष्य अपने किये का पाप या पुण्य फल पाता ही है। फिर सुमन्त ने सोचा, यद्यपि बी० पी० वर्मा ने अपना वक्तव्य देकर लखनऊ की आलमनगर स्थित जमीन पर शिवप्रसाद का अधिकार स्वीकार कर लिया है किन्तु वह भीतर-ही-भीतर युधिष्ठिर से किसी-न-किसी प्रकार का बदला अवश्य लेगा। इस आशंका से उनके मन की वीतराग स्थिति तनिक ढीली पडी। शारदाजी उस समय भीखम को लेकर भरत मन्दिर गयी थी। एक पुराना मन्दिर है और एक नई भरत कुटी। वहां कथा हो रही थी। शारदाजी सुनने बैठ गयी। पड़ोस के गांव की एक बुढ़िया

रोती हुई आई और सुमन्त बाबू के आगे धरती पर मत्था टेक-टेककर रोने और गिड़गिड़ाने लगी। उसका बाईस वर्ष का जवान बेटा बहुत बीमार है। सब कहते हैं कि उसे अस्पताल ले जाओ। अबला सुमन्त बाबू से यह प्रार्थना करने आई है कि उनके बेटे को अस्पताल में भर्ती करा दो। सुमन्तजी ने फैजाबाद अस्पताल के अधीक्षक को एम्बुलेन्स भेजने के लिए फोन कर दिया।

वे बुढ़िया के साथ उसके बेटे को देखने भी गये। कुछ समय के बाद एम्बुलेन्स आ पहुंची। तब तक शारदा और भीखम मन्दिर से लौटकर आ चुके थे। सुमन्त ने कहा : "इसे भर्ती कराके अभी आता हूं।"

"तुम क्यों जाते हो। उसकी मां है तो उसके साथ!"

"नहीं, मेरे जाने से उसकी चिकित्सा विशेष ध्यान से होगी। अभी आता हूं।"

एम्बुलेन्स गाड़ी लगभग फैजाबाद में प्रवेश कर चुकी थी, तभी सड़क पर अचानक बम फटा, ड्राइवर ने गाड़ी बचाने का प्रयत्न किया तो सड़क की ढाल से उलटकर गाड़ी पेड़ से टकराई। इंजन में आग लग गई। रोगी युवक और उसकी वृद्धा माता ने तत्काल ही मरण पाया। ड्राइवर और सुमन्त बाबू को भी गहरी चोटें आयीं।

बम के धमाके की आवाज़ सुनकर पुलिस की एक उड़नदस्ता गाड़ी तुरन्त आ पहुंची। जलती गाड़ी में से घायलों को झट-पट निकाला गया। पुलिस ने मिट्टी फेंक-फेंककर आग बुझाने का प्रयत्न किया। सुमन्तजी अस्पताल पहुंचाये गये।

एम्बुलेन्स गाड़ी पर बम फेंका जाना अपने आप ही में एक सनसनीखेज खबर थी और उसमें बैठे भूतपूर्व मुख्यमंत्री सुमन्त टण्डनजी का गम्भीर रूप से घायल हो जाना तो इतनी बड़ी बात थी कि वर्तमान मुख्यमंत्री जायसवालजी सारे काम एक तरफ रख बलरामपुर अस्पताल के एक वरिष्ठ सर्जन को लेकर सीधे हेलीकाप्टर से फैजाबाद गये। शारदा देवी तब तक भरतकुण्ड आश्रम से अस्पताल पहुंच गई थीं। टण्डन जी बेहोश थे। उनके सिर और बायीं बांह में बहुत चोट आयी थी। ड्राइवर को भी चोटें आयी थीं पर वह चिन्ताजनक नहीं थीं। मुख्यमंत्री के आदेश से सुमन्तजी को उत्तम से उत्तम डाक्टरी उपचार उपलब्ध कराने के लिए उसी दिन लखनऊ के बलरामपुर अस्पताल पहुंचा दिया गया।

अस्पताल दर्शनार्थियों की भीड़ से, शहर अफवाहों से, बी० पी० वर्मा का मन निराशा से और हरिमोहनदास व बृजमोहनदास मेहरोत्रा के दिल बदला लेने की भावना से पिछले चार दिनों में भर-भर उठे थे। शारदा देवी ने पति की रोगशैय्या की पाटी एक पल के लिए न छोड़ी, लगातार उनके पास ही बैठी रहीं। टांग की टूटी हड्डी में प्लास्टर और जांघ के घाव का ऑपरेशन कराने के बाद टण्डनजी अब अपेक्षाकृत खतरे से बाहर माने जाने लगे थे लेकिन उन्हें नींद की

दवा निरन्तर दी जा रही थी। सरकार की ओर से एक नर्स दिन और एक नर्स रात के लिए बराबर रहती थी। दिन की नर्स कमरे की खिड़की के पास कुर्सी पर बैठी हुई कोई उपन्यास पढ़ रही थी। शारदा सुमन्त के सिरहाने बैठी हुई आंखों पर चश्मा चढ़ाये आज का अखबार झाक रही थी। उनके पति के बारे मे अनेक वी० आई० पी० लोग अखबार वालो को अच्छी-अच्छी बातें बतलाते हुए उनके शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ की कामना कर रहे थे। सम्पादक के नाम पत्र स्तम्भ में बी० पी० वर्मा दो-तीन पत्रो में बुरी तरह से याद किये गये थे।

तभी कमरे का दरवाजा खुला। शारदा ने देखा कि उनके नन्हा (युधिष्ठिर) के साथ चाचको जी की कॉटेज मे रहने वाले सुमन्त के जग्गो चाचा प्रवेश कर रहे थे। शारदा देवी ने शिष्टाचारवश सिर का पल्ला ढक लिया और उठ कर चचिया ससुर के पैर छुए, नर्स भी किताब पढ़ना छोड़कर उनके पास ही आ गई। डॉ० जगदीशनारायण टण्डन ने नर्स से टूंम्प्रेचर चार्ट मंगवाकर देखा, बोले : "इम्प्रूवमेण्ट तो है, मेरे खयाल में अभी हास्पिटल से बाहर निकलने में इन्हें पन्द्रह-बीस रोज और लग जायेंगे।"

शारदा ने उनसे पूछा : "आपको विश्वास है कि जल्दी अच्छे हो जायेंगे।"

"हां-हां, भाई, बड़ी स्ट्राग विल का आदमी है हमारा सुमन्त। अरे, जयन्त भैये का बेटा है। मौत से भी जूझकर पछाड़ देगा। घबराओ मत बहू। देखो, एक बार तो इसे जगाऊंगा।" कहकर कुर्सी से उठे और सुमन्त के सिर पर हाथ फेरते हुए उनके कान में आवाज दी - "सुमन्त, ए सुमन्त।"

आखें खुल गयी, चेहरे पहचाने, युधिष्ठिर को देखकर खिले, फिर शारदा और जग्गो चाचा पर नजर गई।

"अहं-हं-हूं, बोलने की जरूरत नही।"

डॉ० जगदीशनारायण टण्डन ने उनकी नब्ज देखी, आंखें देखी : "यू बैल रिकवर सून माई सन। गॉड ब्लेस यू।"

दीवाल से चार्ट उतरवाकर तापमान की स्थिति जाची। सुमन्तजी फिर तन्द्रावस्था में आ गये। जग्गो चाचा बोले - "घोष ने मुझे बतलाया कि न्यूरो-सर्जन डॉ० दवे भी चेक कर गये हैं।"

"जी हां। उन्होंने कहा, ब्रेन पर कोई आच नही आई। गर्दन के निचले हिस्से में चोट तो गहरी आई है पर ठीक हो जायेगी।"

शारदा के चेहरे पर आवेश का अपूर्व तेज चमक उठा। धीमे किन्तु दृढ़ स्वर में कहा : "जब तक मैं नही जाऊंगी, यह जा नही सकते।"

सफेद बुर्राक बालो और अधपकी बड़ी-बड़ी भवो वाले गोरे चिट्टे चुस्त और दुरुस्त छियासीवर्षीय डॉ० जगदीशनारायण टण्डन ने बड़ी नेह भीनी दृष्टि से अपने भतीजे की प्रौढ़ा पत्नी को देखा, फिर कुर्सी से उठकर शारदा के सिर को

अपने दोनों हाथों से थपथपाया। फिर एक क्षण मौन रह कर युधिष्ठिर से बोले : "नन्हा, अब चलूं बेटे। परसों आऊंगा। आई होप, सुमन्त से बातें कर सकूंगा।"

बरामदा पार करते हुए जग्गोबाबा बोले : "तुमने इस बार शेर के मुंह में हाथ डाला है नन्हा। बी बेयर आफ दैट रास्कल बी० पी०।"

"मैंने शेर के मुंह में हाथ डालने से पहले उसके सारे दांत तोड़ दिये हैं बाबा।"

"लेकिन किसी ने मुझसे कहा कि वह उस जमीन के हकदार पर हमला..."

"करने वाला था मगर बाबा इस बार लक यह है कि मेरे दोस्त और 'कुलीग' के फादर मुझे इस मामले में छोटी-से छोटी बातों की टिप्स देते रहते हैं।"

"कौन ?"

"मुश्ताक हुसैन साहब जो पहले..."

"मैं उन्हें जानता हूं। उन्हें क्या उनके फादर इन लॉ को भी जानता हूं। वह मेरे पेशेण्ट रहे हैं।"

"मुश्ताक साहब अम्मा को अपनी छोटी बहन की तरह मानते हैं। मेरे नाना जी की ट्रेनिंग में रहे थे। वह इस बार बी० पी० से बदला लेने के लिए पूरे पठान हो गये हैं। उन्होंने मेरे यहां अस्पताल में होने की वजह से अपने बेटे जावेद को शिवप्रसाद के पास पहले ही भेजकर यह अर्जी दिलवा दी कि मेरी जान को खतरा है, मेरी रक्षा की जाय। जावेद ने उसकी अर्जी पर सीधे एस० पी० (देहात) से आर्डर करवा लिये। मुझे जब बाद में यह सब बतलाया गया तो मैं मुश्ताक मामू से मिला। उन्होंने कहा, कि मुख्यमंत्री से कहो शिवप्रसाद की जमीन आवास-विकास के लिए खरीद लें। भले ही दाम उसे कम मिलें मगर जान तो सलामत रहेगी और एक तरह से देखो तो उसे इतनी दौलत मिल जायेगी कि जो उसने आज तक ख्वाब में भी न देखी होगी। वह किसी भी अच्छे धन्धे में मेहनत से उतनी ही रकम को चौगुना बना सकता है। शिवप्रसाद की पत्नी मेरी यह बात मान गयी और मैं आज सुबह ही जायसवाल साहब के पास ज़रा-सी नमक-मिर्च लगाकर सारी बातें कह आया हूं। वह भी बी० पी० को क्रश करने पर तुल गये हैं, जायसवाल इस काम में पर्सनल इन्टरेस्ट ले रहे हैं।"

फाटक के भीतर खड़ी अपनी कार के अन्दर बैठते हुए जग्गोबाबा बोले : "मेरे खयाल में तुम बी० पी० से बदला लेने के जोश में हो मगर अपने बाबा की जनम शताब्दी को मनाने के लिए क्या तैयारियां कर रहे हो भाई।"

"जी, मुख्यमंत्री जायसवाल खुद उनकी शताब्दी का उत्सव बड़ी तड़क-भड़क के साथ मनाना चाहते हैं। कमेटी तो उन्होंने पांच-छः महीने पहले ही बना दी थी। पिताजी उसके सदस्य हैं। मुख्यमंत्री मुझसे कहने लगे कि तुम इस काम में पर्सनल

इन्ट्रेस्ट लो। मैं जन्म शताब्दी के अवसर पर दिल्ली से राष्ट्रपति को बुलाना चाहता हूं।"

"आल राइट, मैं परसों आऊंगा।"

युधिष्ठिर एक बार मा के पास आया। एक नजर मोते पिता पर डाल कर मां से कहा: "मैं अब दफ्तर जा रहा हूं अम्मा, घर से तुम्हें कुछ मगाना हो तो पहले घर चला जाऊं।"

"नही, किसी चीज की जरूरत नही, तुम दफ्तर से ही या वही से फोन घर कर दो कि गुरुदीन यहा चला आये। घर का एक जना तो मेरे पास रहना ही चाहिए।"

"ठीक है।"

छ:

बाबरी मस्जिद ऐक्शन कमेटी के बड़े-बड़े नेता गुफिया तौर से लखनऊ आ-जा रहे थे। सरगर्मिया बढ़ रही थीं, उसी समय हाफिज नूरुद्दीन अपनी महरी मासूका के साथ काले पहाड़ के इलाके मे फिर से यो चमके जैसे बादलों की ओट से निकल आने के बाद सूरज चमकता है। मुश्ताक मामू की सलाह से ही युधिष्ठिर ने मथुराबख्श मुख्तार से कहकर मौलवी को आजाद करवा दिया था। मुश्ताक साहब की यह चाल थी कि नूरुद्दीन को फिर से देखकर बी० पी० वर्मा और बृजमोहन को कोई नई चाल चलने का उकसावा मिले और वह उसे दबोच लें। सयोग से वह चाल चल भी गई। बी० पी० और बृजमोहन ने नूरुद्दीन को फिर फंसा लिया। उर्दू अखबारों में नूरुद्दीन के इस तरह के वक्तव्य प्रकाशित हुए कि मुझे मथुराबख्श ले गया, जगल मे पेड़ से उल्टा लटका कर मुझसे कहा कि जो हम कहते हैं वह रेकार्ड करा दो वर्ना तुमको यही छोड़कर चले जायेंगे। आखिरकार मैं मजबूर हो गया। मुख्तार ने मुझे पेड़ से उतरवा तो दिया मगर तीन दिन तक मुझे व मेरी खिदमतगार को भूखा-प्यासा रखकर खुद खाते-पीते रहे और फिर जनाब युधिष्ठिर टण्डन ने मुझे उर्दू में लिखा एक मजमून दिया और कहा कि इसे लफ़्ज-बलफज रेकार्डर के सामने सुना जाइए। भूखा-प्यासा, मरता क्या न करता वाली हालत मे मैंने उनका मजमून मशीन के आगे पढ़ दिया। जान बचाने के लिए ही मुझे यह भी कहना पड़ा कि गरीबपरवर जनाब बी० पी० वर्मा के दबाव से अपने बाबा मरहूम की किताब को अपनी लिखी और जाली किताब बतलाया। जबकि हकीकत यह है कि वह किताब सच्ची है और गुलशेर

खाँ की हवेली जो अब मुसम्मात जगदम्बा देवी मेहरोत्रा के कब्ज़े में है, दरअसल में पीरबसरा की मज़ार और मुकद्दस जगह, वह मुसलमानों को वापस मिलनी ही चाहिए। ये हिन्दू हमारी मज़हबी जगहों पर बहाने-बहाने से कब्ज़ा करते जा रहे हैं। इन्हें सबक सिखलाना ज़रूरी हो गया है।

मस्ज़िद ऐक्शन कमेटी ने कुछ मुसलमानी इलाकों में हिन्दू-मुस्लिम फसाद कराने की योजना बनायी थी। इसी योजना में जगदम्बा देवी की हवेली पर फिर से हमला करने की सशक्त योजना भी शामिल कर दी गई। पहले चौपटियों की एक मस्ज़िद से 'अल्ला हो अकबर' के नारे लगाते हुए बल्वाइयों की भीड़ निकली, पुलिस कप्तान की गाड़ी पर बम फेंका, बस फिर तो मार-पकड़ शुरू हो गई। आलमनगर में भी मस्जिद से भीड़ निकली मगर दूर से घुड़सवारों को आता देख कर तितर-बितर हो गई। घुड़सवारों ने भीड़ का पीछा कर-करके सबको छितरा दिया। पैदल पुलिस वालों ने बिजली के खम्भों से चढ़-चढ़कर ऊपर के दरवाज़े तोड़े और घर में घुसकर पुरुषों की अच्छी पिटाई की। एक कसाई पहलवान जोश में बम लेकर मारने चला तो एक पुलिस वाले ने उसके हाथ पर ही निशाना लगा दिया, कसाई पहलवान का हाथ जख्मी हुआ, बम फटा, बम फटने से ही छज्जे का एक हिस्सा टूट गया और वह नीचे आ गिरा।

सिपाही उस ज़ख्मी गिरे हुए पहलवान को कंकड़ों पर घसीट कर अपनी गाड़ी तक ले गये। धर्मान्धों की पशुता को पुलिस की पशुता ने दबा लिया। कर्फ्यू ज़ारी हो गया। जगदम्बा देवी की हवेली पर पुलिस तैनात हो गई। उनके जेठ हरिमोहनदास और भतीजे बृजमोहनदास को ऊंचे अफसरों ने यह धमकियां भी दीं कि अगर जगदम्बा देवी के खिलाफ कुछ हुआ तो वह अपराध की पहली जिम्मेदारी उन्हीं पर ठोकेंगे।

बी० पी० वर्मा के गुर्गों ने इस धमाचौक में मदकची नूरुद्दीन को पीट-पाट कर घायल तो ज़रूर कर दिया मगर उनकी छाती में छुरा घुसने से पहले कातिल नाटकीय ढंग से पकड़ भी लिया गया। इलाज के लिए नूरुद्दीन को अस्पताल भेजा गया। कातिल पकड़ लिया गया। उसने यह स्वीकार कर लिया कि वर्मा साहब के सिकत्तर से पांच सौ रुपया पेशगी व पांच सौ रुपया बाद में देने की बात तय करके उसे नूरुद्दीन को मारने के लिए भेजा गया था। हत्यारे की इस स्वीकारोक्ति पर वर्मा जी के निजी सचिव भी गिरफ्तार कर लिये गये। साम्प्रदायिकता के इस घमासान को यह राजनीतिक विस्फोट एक नया रंग दे गया। बी० पी० वर्मा फिर अखबारों के शिकार बने, साम्प्रदायिकता की कहानी तो बालू की तरह उभर-उभर कर बैठ गई पर बी० पी० वर्मा की कलंक कथा जो अखबारों में शुरू हुई तो उसका अन्त ही होता न दिखाई पड़ा। रोज़-रोज़ अखबारों में उनकी कुछ-न-कुछ कहानियां निकलती ही रहीं। अपने पैतृक

मगर बरेली में उन्होंने अपने मुख्यमंत्रित्व काल में बेटों, दामादों और पत्नी के नाम से बड़ी जमीन हड़प कर ली थी। उसके सम्बन्ध में भी खबरें प्रकाशित हुईं। बी० पी० ने वक्तव्य दिया कि वह उनकी पैतृक जमीन है दादा-परदादाओं के समय की। दूसरे दिन मुश्ताक हुसैन खां साहब का पत्र छपा कि वह निहायत गरीब घर का लड़का है। उसका बाप कधे पर सीढ़ी व मिट्टी का तेल का कनस्तर लाद गली-गली लैम्प पोंछता व जलाता था। मुश्ताक मियां स्कूल के पांचवें दर्जे से लेकर बी० ए० तक बराबर बी० पी० के सहपाठी रहे और उन्हीं के यहां से बी० पी० की परवरिश भी होती थी। बी० पी० रईस नहीं बल्कि खानदानी गरीब आदमी हैं। और कुतुबखाने के पीछे गली में बहुत से रहने वाले मेरे हमउम्र इस बात की गवाही दे देंगे कि बी० पी० का बाप उनकी गलियों में म्यूनेस्पेल्टी के लैम्प जलाता था।

इस पर बड़े-बड़े कार्टून निकले, व्यंग्योक्तियां हुईं, बी० पी० के बाप भले ही लालटेन जलाते हों मगर पब्लिसिटी के कारण इस वक्त बी० पी० बुझी लालटेन जैसे हो गये। युधिष्ठिर और जावेद पूरे जोश के साथ बी० पी० के विरुद्ध प्रचार कर रहे थे। इस तरह बी० पी० की गवर्नरी का बांस चला गया। राजनीति में भी उनकी शक्ति प्रायः निर्बीज-सी हो गई। शाम का वक्त था। सुमन्त बाबू तब तक होश में आ चुके थे। पत्नी पति को अंगूर खिला रही थी। उसी समय अस्पताल का एक चपरासी एक चिट लेकर शारदा जी के पास आया। शारदा जी त्योरियां चढ़ाकर बोलीं : "जाओ, कह दो उससे, मैं नहीं मिलूंगी।"

पत्नी के हाथ पर हाथ रखकर धीरे से सुमन्त ने पूछा : "कौन है?"

"अरे, वह मरा भैरू हैगा निगोड़ा, सत्यानास जाय मरे का।"

"बुला लो—बुला लो। वह मुझे देखने ही तो आया है।"

शारदा जी की नाक चढ़ी रही। भुनभुनाते हुए चपरासी से कहा : "भेज दो।"

चिकने आबनूस के गोल-मटोल पुतले-सा भैरोंप्रसाद वर्मा कमरे में आया। शारदा देवी ने उसे देखकर भी न देखा और अपना चेहरा भी कसे रहीं। बी० पी० जी हाथ जोड़े, गिड़गिड़ाते हुए सुमन्तजी के पायताने की तरफ गये और उनके चरणों पर अपना मस्तक झुकाकर प्रणाम किया। नर्स एक कुर्सी उठाकर सिरहाने की ओर रख गई। उस पर बैठने से पहले चरण छूने की मुद्रा में झुककर शारदा जी को प्रणाम किया और पूछा : "कैसी हो शारदा बहन?"

"ठीक हूं, तुम क्यों आये हो?"

बी० पी० इस रोब-भरे जवाब से सकपका गये, फिर कहा : "सुमन्त भाई के स्वास्थ्य...।"

"बहुत अच्छा है उनका स्वास्थ्य और बहुत जल्दी ठीक भी हो जायेंगे। आप

जा सकते हैं।"

वी० पी० ने कुर्सी पर बैठे-बैठे ही शारदा जी के पांव छुए : "मुझे क्षमा कर दो जीजी।"

"जीजी मैं कब से हुई तुम्हारी ?"

"हें-हें, कभी-कभी छोटी बहनों को भी बड़ी बहन मान लिया जाता है। तुम गुणों में हमसे बड़ी हो, तुम्हारी तपिश्या भी बड़ी है। मैं आप दोनों से अपने अपराधों की छमा मांगने आया हूं। मेरे अपराधों को भूल जायं, आपका धरम-भाई हूं। मैंने सन् बयालीस में जब श्रद्धेय जयन्त बाबू अण्डरग्राउण्ड थे तब उनकी बहुत सेवा करी है। इसका तो ध्यान रखो शारदा बीबी। अपने बेटे से कह दो कि चाहे तो घर आकर अकेले में मुझे पांच जूते मार ले, मगर भरी बाजार में मेरी इज्जत न ले, अब दया करे।"

फिर कमरे में एक लम्बी मौनावधि बीती। अन्त में सुमन्त जी ने कहा : "शारदा इनसे कह दो जायं, नन्हा अब कुछ नहीं करेगा।" शारदा को कहने की आवश्यकता न पड़ी, वी० पी० ने बात सुन ली थी, वह उठ खड़े हुए। एक बार फिर गिड़गिड़ाते हुए सुमन्त जी के पैरों पर जाकर अपना मत्था टेका, शारदा जी को झुक कर प्रणाम किया और भिखारी-सी करुण मुद्रा बनाए हाथ जोड़े कमरे से बाहर चले गए।

शारदा बोली : "मुझे इनकी सूरत से घृणा है।"

"घृणा विवेक की शत्रु है डार्लिंग। अपना मन किसी की ओर से मैला मत करो। जनवरी में बाबू जी की जन्म शताब्दी आ रही है। उनकी पवित्र आत्मा का स्मरण करती रहो।"

"कल तुम जब सो रहे थे तो नन्हा कह रहा था कि पिता जी से बाबा के सम्बन्ध में इंटरव्यू लूंगा।"

"हां, कुछ यादें तो उनकी दूंगा ही, मगर सुनो उससे कहना कि वी० पी० का इण्टरव्यू ले आये बाबू जी के अण्डरग्राउण्ड दिनों के।"

"वो नहीं जायगा उस मरे कमीने के पास।"

"अच्छा तुम नहीं, मैं कहूंगा। बाबूजी की एक डायरी भी रखी है।"

"कहां है, तुमने अभी तक बतलाया ही नहीं।"

"कभी प्रसंग नहीं चला, वह दरअसल मेरे बाबा जी की तिजोरी में है। उनके ही कमरे में।"

"बाबाजी का कमरा तो अब अनन्तू के कब्जे में है।"

"हां, यही संकोच है। अनन्तू हमारा बड़ा जिद्दी और मूर्ख है। असल में हमारी भाभो के लाड़ ने उसे हाथ से बेहाथ कर दिया और भाभो की भी जाने क्या बुद्धी हो गई थी कि लड़ैतों के बच्चों को हमेशा तुम्हारे खिलाफ भड़काती

रही।"

"मेरा ईश्वर जानता है और तुम भी जानते हो कि न तो मैंने कभी भाभो जी की किसी बात को काटा और न मैंने अनन्तू, हेमू और बल्लो को अपनी ओर से सौतेले बेटे समझा।"

"बल्लो तो खैर भाभो के काबू में न आ सका। छोटा था न। तुम्हारे बस में ही रहा। पर···।"

"क्या कहूं मेरा भाग। जी में तो ये हौंसले लेके तुम्हारे घर आई थी कि दुनिया को यह दिखला दूंगी कि सब औरतें एक जैसी नहीं होतीं। औरत के लिए मुसीबत में पड़ा हर बच्चा केवल बच्चा होता है। औरत के अन्दर जितनी तरह के माया-लोभ-मोह के कलेजे हैं उनमें सबसे बड़ा मां का कलेजा ही होता है।"

पत्नी की बांह पर मुलायमियत से हाथ फेरकर नेह-भरी नजरों से उन्हें देखते हुए सुमन्त मुस्कुराये, हाथ हाथ पर रुक गया, आंखें मूंद कर बोले: "अब तुम मुझे शारदा के रूप में ही नहीं, सुमन्त के रूप में दिखलाई देती हो।···मुझे राम दिखलाई देते हैं तुम्हारे में।"

सत्तरवर्षीय सुमन्त टण्डन का जीवन आरम्भ ही से अनोखी मन.परिस्थितियों से गुजरा है। पिता जयन्त सन् उन्नीस सौ बारह में विलायत से लौटने के बाद सन् 18 तक नियमित रूप से वकालत करते रहे। उन्होंने यश कमाया और पैतृक धन में बढ़ोत्तरी भी की किन्तु सन् उन्नीस सौ उन्नीस में बाद की बदलती राजनीतिक परिस्थितियों में वह अधिकाधिक निष्काम देश-सेवक होते गये। बची-खुची बैरिस्टरी सन् बीस-इक्कीस के आन्दोलन के साथ-ही-साथ समाप्त हो गई। जेल, जुर्माना न अदा होने पर घर के सामान की कुड़की, गुप्त कागजात के लिए बार-बार घर में पुलिस की तलाशियां आदि हो-हगामे में ही सुमन्त के शैशव-काल का अबोध बोध पनपा। पिता और माता में कभी न बनी। माता को पिता की यह देश-सेवा फूटी आंखों नहीं सुहाती थी। वह वैभव चाहती थीं। और पिता देश-सन्यासी बन कर कम-से-कम खर्च पर घर-गृहस्थी चलाने पर ज़ोर देते थे। भाभो तेज स्वभाव की थीं। पिताजी उनकी अनसुनी करके अपनी ही धुन में रहते थे, घर का वातावरण अक्सर कटु हो जाता था। इसलिए बेटे के निर्विघ्न पठन-पाठन के लिए जयन्त ने उन्हें होस्टल में भर्ती करा दिया। पति-पत्नी के बीच भेद की दीवार और बड़ी हो गई, इसलिए पिताजी को रोज शाम फिर से दो पैग नियमित रूप से व्हिस्की पीने की आदत पड़ गई। पर इससे अधिक आगे वे कभी नहीं गये। अपना शयनागार भी उन्होंने नीचे ड्राइंग रूम में ही बना रखा था। सन् छत्तीस की लखनऊ कांग्रेस में उन्होंने बड़ा काम किया और उसके बाद ही एलेक्शन में जी-तोड़ मेहनत करके अपने शहर में कांग्रेस को जिता दिया। बृटिशकालीन पहली कांग्रेस सरकार में पंत जी उन्हें अपना सभा सचिव बनाना

चाहते थे, किन्तु उन्होंने इन्कार कर दिया। सन् बीस-इक्कीस से कांग्रेस के हर एजीटेशन में जेल गये। सन् बयालीस के आन्दोलन में अपनी छप्पन वर्ष की आयु में जब शहीद हुए तो इतने जोशीले थे कि शहर में बृटिश सरकार के छक्के छुड़ा दिये।

युधिष्ठिर जावेद के यहां गया हुआ था। फालिज गिरी लड़खड़ाई काया के सत्तरवर्षीय मुश्ताक मियां आज सुबह से ही फिर इस बात का हठ पकड़ गये थे कि मैं टण्डन साहब की मिजाज़पुर्सी के लिए अस्पताल जाऊंगा। सुमन्त जी की गम्भीर दशा में वह दो दिन लगातार अस्पताल पहुंचे थे। शारदा ने ही उनसे कहा था : "भैया अब तुम मत अइयो। तुम्हें हमाई कसम। बन्ने मेरा तो आता ही है। नन्हा भी तुम्हारे यहां जाता तो है ही, तुम्हें खबर मिलती रहेगी।"

मुंहबोली छोटी बहन की डांट खाकर मुश्ताक साहब फिर लगभग बारह दिनों तक नहीं गये। टण्डन साहब गम्भीर स्थिति से सकुशल पार हो गये हैं, अच्छे हो रहे हैं, थोड़ा-बहुत बोलते-चालते भी हैं, यह सब जानकर इस बार शारदा से नहीं बल्कि टण्डन साहब से मिलने के लिए मुश्ताक मियां बच्चे की तरह मचल उठे। दफ्तर में जावेद ने युधिष्ठिर से पिता का हठ बतलाया। मित्र युधिष्ठिर ने कहा : " मैं गाड़ी ले आऊंगा और तुम्हारे साथ ही मामू को लेने चलूंगा।"

शाम को ठीक साढ़े-चार बजे दोनों मित्र युधिष्ठिर की फिएट कार पर मुश्ताकविला पहुंच गये। बुजुर्गवार कपड़े पहने एकदम तैयार बैठे थे और जवानों की वक्त की पाबन्दगी देखकर बहुत खुश हुए। युधिष्ठिर बोला : "मामू, आज तो आपके पुराने [illegible]र को देखने [illegible] पहुंचे थे।"

"कमीना है वह [illegible]

थी। आपके फादर उस वक्त मुसलमानों जैसी ही दाढ़ी बढ़ाये हुए मुसलमान ही लगते थे। मैंने अब्बा से यह कह दिया था कि लखनऊ से चचा मियां के एक अजीज दोस्त आने वाले हैं और वह गांव के घर में ठहरेंगे, हालांकि मेरी सियासी हरकतें उन्हें नापसन्द थीं मगर उन्हें मुझ पर भरोसा भी खूब था। जानते थे झूठ नहीं बोलता, मगर खैर, एक बड़े मकसद के लिए झूठ बोलना भी कोई गुनाह न था।"

"शारदा बतलाती थीं कि उस ज़माने में बी० पी० ही आपके कान्टैक्ट मैन थे।"

"जी हां, ठीक बतलाया है शारदा ने, तब दुबला-पतला तो था ही, फटा सलूका पहन कर अंगोछा सिर पर लपेटे, पैर में टायर की चप्पल पहने, कान में बीड़ी लगाये, यह हर रोज मेरे गांव जाता था। अरे, बरेली के उस कोने के गांव में बैठके उन्होंने लखनऊ और कर्बोजवार में आग की लपटें उठा दी।"

सुमन्त ने कहा : "क्या यह उचित न होगा मुस्ताक मियां कि आपके इन बेटों में से ही कोई जाकर उनका इण्टरव्यू ले आए।"

"मुझे एतराज नहीं, अच्छा होगा। (युधिष्ठिर की तरफ देखकर) तुम्हीं जाओ बेटे, बल्कि बन्ने को भी अपने साथ ले जाओ। इससे क्रास क्वेश्चनिंग में और भी सहूलियत होगी। मुझे हैरत होती है टण्डन साहब कि खरे सोने से दिल का आदमी जंग लगे लोहे जैसा सड़ियल बन गया।"

"आदमी को भी मयस्सर नहीं इंसा होना।"

"खूब कहा आपने, कुर्सी के लालच में आदमी क्या से क्या हो जाता है, आप कभी सोच भी सकते थे कि जिसने मुसीबत के दिनों में आपके फादर की सारी जिम्मेदारियां अपनी जान हथेली पर रखकर निभाईं, वही कुर्सी के लालच में आपको…"

"छोड़िए मियां इन बातों को, ईश्वर मुझे उस दलदल से उबारना चाहते थे।"

युधिष्ठिर ने जावेद की बांह में चुटकी काटते हुए मुस्कुराकर मां से कहा : "तो अम्मा जब बी० पी० से इन्टरव्यू लेने जाऊं तो क्या उन्हें मामा कहूं ?"

"कहो चाहे न कहो, पहले कभी मैंने भी भैया कहा है। अब शब्द तो वापस ले नहीं सकती बेटे लेकिन मेरे मन में वह भाव नहीं रहा।"

जावेद ने अपने अब्बा से पूछा : "और मैं उन्हें क्या कहकर पुकारूं अब्बू जी ?"

सुमन्त बोले : "इसमें क्या पूछते हो, इन्टरव्यू लेते समय मौके पर रिश्ते जोड़ना फिर तलवारें लड़ाना, फिर जख्मी की मरहम-पट्टी करना तुम वर्न-लिस्टों से अच्छा और कौन जानता है।…नन्हा, मैं तुम्हें एक बहुत मूल्यवान भेद देना चाहता हूं, मगर उसके पाने की तरकीब तुम्हीं करोगे।"

"क्या ?"

"तुम्हारे अनन्तू भैया के पास जो बेडरूम है वह ओरिजनली तुम्हारे पड़बाबा डॉ० देशदीपक जी का था।" युधिष्ठिर पिता का मुंह कौतूहल से देखने लगा। वे बोले : "अगर तुम कभी अनन्तू के कमरे में गये होगे तो तुमने देखा होगा कि दीवारों पर की टीकवुड की पैनेलिंग हो रही है।"

"जी हां, देखा है।"

"मेरे बाबा की मृत्यु के बाद मेरी दादी ने वह कमरा पापा को दे दिया था। उस लकड़ी की दीवाल में ही किसी जगह एक तख्ता खिसकाया जा सकता है। उसके पीछे मेरे बाबा की तिजोरी थी। पापा अपनी डायरीज और ऐसे ही कुछ डाकूमेन्ट्स उसमें रखते थे। यह एक बार संयोग से ही वे मुझे बता गये थे। बाद में मैं दूसरी स्थितियों में आ गया, उधर ध्यान ही न दे सका। क्या तुम अनन्तू से उसके कमरे में तिजोरी की तलाशी लेने को राजी कर सकोगे।"

"आपने कठिन काम बताया पिताजी, वैसे अनन्तू भैया से भी मेरे इक्वेशन्स बहुत बुरे नहीं हैं, फिर भी काम कठिन है। मगर इसे करने का लालच भी हो रहा है।"

"मैं कर लूंगा चाचा साहब, बस दो-चार दिन टण्डन से अदावत करने का ड्रामा करना पड़ेगा, कुछ रुपये भी खर्च करने होंगे मगर उनका इन्तजाम मैं फूफी-जान के दूसरे मुंहबोले भाई से कर लूंगा।"

युधिष्ठिर के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गयी। मुश्ताक साहब भी अपनी मुस्कुराहट छिपाने के लिए दाढ़ी-मूंछों पर हाथ फेरने लगे।

सात

सुबह सात बजे हसन जावेद का टेलीफोन वी० पी० वर्मा के सचिव को मिला। जावेद ने उनसे कहा : "मैंने अपने फादर से सुना कि चचा साहब ने जयन्त टण्डन साहब के साथ उनके अण्डरग्राउण्ड दिनों में बहुत काम किया था और चूंकि मेरे फादर की गांव वाली हवेली में ही वह छिपाये गये थे, इसलिए इण्टरव्यू में उनकी अज़ीम शख्सियत को भी बखूबी याद किया जाना चाहिए। मेरे फादर ने यह भी कहा कि हालांकि वी० पी० से अब मेरी सख्त नाइत्तफाकी है मगर मैं उसके उस जमाने के कान्ट्रीब्यूशन को भुला नहीं सकता। जयन्त साहब के नाम पर उन्होंने भी कुछ काम अपने ढंग के किये थे, उनका जिक्र होना चाहिए। वर्मा साहब से यह पूछें कि मैं अब इण्टरव्यू लेने के लिए आऊं।"

भूतपूर्व मुख्यमंत्री माननीय बी० पी० वर्मा साहब 'शेव' करने के लिए मुंह पर साबुन मल रहे थे। सचिव ने उनसे सब बात कही। बी० पी० साहब बोले : "ठीक है, उससे कह दो कि सवेरे नाश्ते के समय आ जाये।"

युधिष्ठिर ठीक साढ़े-सात बजे पहुंचा। कार्ड देखकर बी० पी० ने क्षण भर कुछ सोचा और फिर कहा : "अच्छा, बुला लाओ।" उसके आने से पहले झटपट कुर्सी से उठे और अलमारी के पास कौन से रुद्राक्ष की माला उतार कर गले में डाल ली। उसे देखते ही बोले : "आओ भई, भाई तुम तो बहुत दिनों बाद मिले हो हालांकि यह समय—अब देखो अस्नान-वस्नान करके बैठा हूं। थोड़ी देर उस परमपिता परमात्मा का भी तो ध्यान करना पड़ता है भाई हें-हें-हें।"

"मुझे माफ कीजियेगा। मैंने तो यह समझा कि इस समय मुझे आप खाली और फुरसत से मिलेंगे इसलिए चला आया। अम्मा ने बतलाया था कि बयालीस में आपने मेरे बाबा जब अण्डरग्राउण्ड थे, तब उन्हें बहुत सहयोग दिया था।"

बी० पी० वर्मा साहब बहुत गम्भीर हो गये, फिर एक-एक शब्द तौल कर कहना शुरू किया : "जयन्त टण्डन साहब महापुरुष थे। उनके सम्बन्ध में तो इस शताब्दी के अवसर पे मैं खुद ही एक लेख लिखना चाहता हूं। वह इतने बड़े महापुरुष थे कि उनकी शान में इण्टरव्यू देना मुझे शोभा नहीं देता है। उनके महान व्यक्तित्व के सामने मैं बहुत मामूली व्यक्ति हूं इसलिए स्वयं लिखूंगा।"

"तब तो बड़ी अच्छी बात है। मैं आपका लेख लेने कब आऊं। उसे मैं ही छापूंगा। पहले यह आपसे प्रामिस करा लेता हूं।"

गले में पड़ी माला पर हाथ फेरते हुए बी० पी० साहब बोले : "अब भई लेख तो लिख लूं, फिर प्रामिस की बात होगी। इस समय तो लेख से ज्यादा प्रभु परमपिता परमात्मा के प्रति ध्यान जा रहा है। हें-हें-हें।" कहते हुए कुर्सी से उठे।

युधिष्ठिर टण्डन दो-एक चलतू-किस्म की 'इम्पोर्टेन्ट' बातों में समय फंसाये रहा। पौने-आठ से ऊपर बजा दिये। वर्मा साहब अनमने होने लगे, बोले : "देखो बेटे, बाहर हमारा सेक्रेटरी बैठा होगा। उससे डेट व टाइम ले लो। कह देना कि जल्दी डेट वाला दिन व टाइम देना, मैंने कहा है।"

युधिष्ठिर मन-ही-मन मुस्कुराया। उसे लगा कि जावेद की चाल ठीक असर कर गई। कुर्सी से उठते हुए बोला : "देखिए वर्माजी, मेरा कुलीग हसन जावेद भी इस काम के लिए टाइम मांगेगा। मगर मुझे आपको यह वचन देना होगा कि उससे पहले आप मुझे समय देंगे, इण्टरव्यू मैं ही लूंगा।"

"क्यों-क्यों, क्यों भाई, मुश्ताक मियां के बेटे से तो तुम्हारी दांत-काटी रोटी है, सुना है।"

"जी हां थी मगर अब वह बात नहीं रही।"

एक बड़े बुजुर्ग की तरह बी० पी० साहब बोले : "डिफरेन्सेज तो आते ही

रहते हैं वेटे मगर यह वात है कि…"

"मामा जी, यों मैं वहुत ही नानरेलिजेस आदमी हूं, फिर भी स्वीकार करना ही पड़ता है कि मेरे अन्दर एक जन्मजात हिन्दू मौजूद है और मैं इस हिन्दुत्व को छोड़ नहीं सकता। खैर तो चलता हूं, आपके सचिव से टाइम ले लूंगा।"

युधिष्ठिर निकल रहा था कि जावेद का स्कूटर वी० पी० साहव की कोठी में आया। जावेद ने धीरे से पूछा : "कहा वेटा, भुना सके अपना सिक्का।"

"नहीं, मेरा तो खोटा सावित हुआ, वाद में सव वतलाना।" युधिष्ठिर चला गया।

हसन जावेद की पेशी वी० पी० साहव के सामने तुरत ही हो गई। तव तक वी० पी० साहव की रुद्राक्ष की माला फिर खूंटी पर टंग चुकी थी।

"आओ वेटे आओ। मुश्ताक मियां कैसे हैं!"

"यों तो ठीक हैं मगर अव ज़रा चिड़चिड़े जरूर हो गये हैं। क्या टण्डन अभी आपके यहां आया था?"

"हां भाई, आया तो था। तुमने अच्छा ही किया कि मुझे पहले फोन कर दिया वर्ना मैं उसे उसके ग्रेण्डफादर की इण्टरव्यू अवश्य दे देता।" वी० पी० साहव मुस्कुराये, वोले : "देखो जावेद, शारदा टण्डन को मैं मानता तो वहुत हूं मगर मुश्ताक मियां के साथ रिश्ता ये है कि वो सगे भाई जैसे ही हैं। भले ही वह मुझसे असन्तुष्ट हों मगर तुम घर के आदमी हो और युधिष्ठिर तो महज मुंहवोली वहन का वेटा है।"

"यह तो आपकी ज़र्रानवाज़ी है चचा साहव। मगर देखता हूं कि इधर आपकी कास्ट पर उसने चूंकि वेतहाशा अपनी पब्लिसिटी कर ली है इसलिए उसका दिमाग खराव हो गया है। मोरओवर आई ऐम वेरी मच एशेम्ड टू नो दैट ही हैज़ विकम ए स्टान्च कम्यूनलिस्ट ओवर नाइट।"

"अरे भाई, ये तो सव चलते-चलाते के सेन्टीमेन्ट्स हैं। दोस्ती तो भाव की होती है। आओ चलो नाश्ता कर लें पहले।" कहकर वी० पी० साहव डाइनिंग टेवुल की ओर वढ़े।

चलते हुए उन्होंने जावेद के कन्धे पर हाथ रखके कहा : "अभी देखो मैं उस दिन तुम्हारे यहां गया था, मुश्ताक हमारे फिफ्थ क्लास से एल० एल० वी० तक साथी रहे। मेरी कच्ची-पक्की सव उन्हें मालूम है और उनकी कच्ची-पक्की सव मैं जानता हूं। उस दिन वह मुझसे इतने उखड़े रहे कि मुंह तक से न वोले, मगर गॉड नोज, आई नेवर फेल्ट इट विकाज़ आई नो कि इमोशन गाढ़ा होता है और सेन्टीमेन्ट तो इट इज़ जस्ट ए पासिंग फेज़। गहरे से गहरे दोस्त हों मगर भाई इंसान हैं। किसी-न-किसी मोमेन्ट पर डिफरेन्सेज तो आ ही जाते हैं।" मुंह का लुकमा चवाते हुए वी० पी० साहव ने जावेद से पूछा : "भई धरम से तो जयन्त

साहब की बातें मुझे युधिष्ठिर को ही बतानी चाहिए। आफ्टर आल ही इज द ग्रेट मन ऑफ़ दैट ग्रेट मैन।"

"आपकी बात सही है चचा साहब, मगर ग्रेट मैनों के कोई रिश्तेदार नहीं, सारी दुनिया उनकी अज़ीज़ और नज़दीकी होती है। लेकिन असल में बात यह है कि जयन्त साहब के उन अण्डरग्राउण्ड के दिनों में सच पूछिए तो जितने गहरे एसोसियेशन्स आपके और मेरे फादर के रहे उतने टण्डन और उसके नाना के नहीं। वह तो बहाना-भर थे, रहने की जगह उन्हें अब्बू जी ने दी और उनके कान्टेक्ट मैन आप बने। अब्बू जी बतलाते थे कि सारे उत्तरी भारत में आपने ही उनके कार्यक्रम को आर्गनाइज़ किया था।"

पी० पी० साहब सुनकर काफ़ी गम्भीर हो गये, फिर बोले : "यह सच है कि जयन्त जी के चरणों में बैठकर ही मुझे एक बहुत बड़ा आन्दोलन आर्गनाइज़ करने का मौका मिला मगर उनके नाम पर कुछ काम स्वयं मैं भी कर जाता था। तुम जानते हो मैंने बरेली—काठगोदाम एक्सप्रेस पर अपना अधिकार कर लिया था जिसकी जयन्त साहब ने बाद में बड़ी प्रशंसा की।"

"कमाल है साहब, अब्बू जी कहते थे, हालांकि मैं (आपका नाम लेकर) उनसे सख्त नाराज़ हूँ मगर आख़िरकार वह मेरा बचपन का लंगोटिया यार है। आपने एम० पी० को सिचुएशन आंकने का मौका भी न दिया और अपने ज़िले के सारे थानों पर कब्ज़ा कर लिया, कमाल है साहब।"

पी० पी० साहब थोड़ा-बहुत फूल गये, बोले : "मुश्ताक़ मियाँ और हम दोनों क्लास से क्लासफ़ेलो हैं। हम दोनों में दांतकाटी रोटी थी। तुम्हारे ग्रैण्ड फादर सरदाराह साहब हालांकि हमारी दोस्ती को नापसन्द करते थे मगर मुश्ताक़ ने बराबर मेरा साथ दिया। मैं यह भी एडमिट करता हूँ बेटे कि उन्होंने मौके पर मेरी पार्लेमेन्ट्री सहायता भी बहुत की है। इधर वो मुझसे नाराज़ हो गये, वो भी अधिकतर शारदा और सुमन्त टण्डन की वजह से। उनका ख्याल है कि मैंने सुमन्त टण्डन से जबर्दस्ती कुर्सी छीन ली, मगर उन्हें यह अन्दाज़ा शायद नहीं है कि सुमन्त बाबू अपने सन्तरने में यू० पी० में अनार्की पैदा कर देंगे।"

"मगर वह तो कहते हैं मिसेज़ गांधी से पूछ कर सब काम किये...."

"अरे सब बेकार की बातें हैं बेटे! मिसेज़ गांधी क्या थी, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। वह अपने दादा की तरह बड़ी डिप्लोमेट थी। तुम जानते हो कि मेरे और उनके डिफ़रेन्सेज़ कैसे पैदा हुए? उन्होंने 1983 का चुनाव जीतने के लिए दिल्ली और जम्मू में 'हिन्दू कार्ड' खेला। मैं उसके ख़िलाफ़ था। इसीलिए मुझे ब्लैकमूक किया जाने लगा।"

"यह आप बिल्कुल नयी ख़बर सुना रहे हैं मुझे।"

"जी हां जनाव, जावेद साहेव जर्नलिस्ट, आपको अभी मालूम क्या, कल के वच्चे हैं, माफ कीजिएगा। आपको और वता दूं। श्रीमती गांधी के आपरेशन ब्लू-स्टार प्लैन का भी मैंने विरोध किया था। मैंने वार्न कर दिया था, इससे पंजाव की सिख प्राब्लम और उलझ जाएगी। इसी के कारण 31 अक्टूवर 1984 की ट्रेजिडी हुई। उनका मर्डर उनके सिख गार्डों ने कर दिया। उनके मर्डर के वाद दिल्ली में जो एन्टी-सिख रायट हुए उसने सिखों को एलिमेनेट कर दिया है। जो पंजाव में सिख टेरोरिज्म चल रहा है वह मिसेज गांधी के ब्लण्डर का नतीजा है। उनके वाद अव उनके साहवजादे साहव ने भी अपनी मां के नक्शे कदम पर चलते हुए हिन्दू कार्ड खेलने की नीयत से अजुध्या जी में रामजन्मभूमि वाली वावरी मस्जिद का ताला खुलवाय दिया है। देखिएगा, इससे कम्यूनल प्राब्लम और एक्यूट हो जायगी। और अव हम तुमसे एक वात कह दें किसी से कहना मत, यह सुमन्त वावू जो अजुध्या में महन्त वन कर वैठे हैं, इनके भीतर की पालिटिक्स अगर खोल देओ तो नेशनवाइड पब्लीसिटी पाय जाओगे। इनके लड़के ने जो हमें वदनाम किया है, जो हमारे मुंह पर कालिख लगाई है, हमीं हैं जो सह रहे हैं।"

आत्मप्रशंसा की गर्मी में दो आमलेट, चार फिश कटलेट खा गये, फिर प्याले भर ठण्डी मीठी मेवे पड़ी खीर आयी तव वी० पी० साहव ने चाय सुड़कना शुरू किया। जावेद ने कहा : "अगर सुमन्त टण्डन इतनी वड़ी कांसपिरेसी कर रहे हैं तो आप ही क्यों नहीं डिस्क्लोज करते।"

"अरे वेटे, हमारे फादर गरीव जरूर थे मगर वड़े आनेस्ट थे, उन्होंने हमको यह उपदेश दिया था कि जो तुम्हारे ऊपर एक वार उपकार करे उस पर तुम सौ वार उपकार करो, उसका बुरा कभी मत मानो। मैं अपने को जयन्त साहव का शिष्य कहता हूं और वहुत ग्रेटफुल हूं उनका। उनकी कृपा से ही मैंने वहुत कुछ ज्ञान पाया, इसी लिहाज़ में सुमन्त का ख्याल कर जाता हूं।"

"चचा साहव, कार्लटन होटल में वृटिश गवर्नमेन्ट के जमाने का गवर्नमेन्ट हाउस का एक खानसामा है सुलेमान। वह अभी जिन्दा है, मैं उससे जयन्त साहव के कुछ सीक्रेट अफेयर्स के वारे में कुछ जानकारियां हासिल कर चुका हूं मगर साहव वह वेहद लालची है। फरदर इन्फारमेशन्स देने के लिए उसे व्हिस्की की वोतल और हर वार सौ रुपये का नोट दूं तो इन्फारमेशन्स गैदर करूं। कहां से दूं, दो हजार रुपये मेरी तनख्वाह है, अब्बू जी की अव आमदनी है नहीं।"

वी० पी० चौंके, वोले : "अच्छा एक सोर्स अभी जिन्दा है, मुझे पता नहीं था। खैर फिकर न करो, उसके पास अगर इन्फारमेशन्स हैं तो मैं तुम्हें फाइनेन्स कर दूंगा।"

"चचा साहव, मुश्किल तो यह है कि ग्राउण्डवर्क करने के लिए ऐट लीस्ट फाइव हन्ड्रेड रुपीज़ मेरे पास हों तो दो-एक वार उसे शराव पिलाऊं तव उससे

बात करूं।"

"तो परेशान क्यों होते हो, मुझसे ले जाओ रुपये।"

"जी, आपको तकलीफ देने में मुझे शर्म आती है।"

"हे-हें-हे, शरम किस बात की बेटे मेरे। मैंने तो तुम्हारे फादर से न जाने कित्ती बार रुपये लिये होंगे, मैंने शरम नहीं की। और यह तो तुम अपने वास्ते ले नहीं रहे हो, यह तो सोसल वर्क है, जाते वक्त ले जाना। कुछ काम बना तो तुम यह समझो कि कित्ता महान कार्य होगा। आई एम स्टिल वेरी डाउटफुल दैट दिस मुमन्त टण्डन इज बिहाइण्ड दिस हिन्दू विश्व परिषद् एजीटेशन। ये मुसलमानों को हिन्दोस्तान से उखाड़ देना चाहते हैं। इनका प्लान यह है कि हिन्दोस्तान की तमाम मस्जिदें तोड़ दो, मुस्लिम कल्चर को खतम कर दो। आई प्राउडली एनाउन्स दैट आई एम ए हिन्दू बट नाट ए डर्टी हिन्दू ऐज दे आर।"

"तो टण्डन साहब के इण्टरव्यू लेने आपसे कब आऊं या आज ही आप देंगे।"

"ऐसा है जावेद, कि तुम उस बैरे से पहले कुछ इनफारमेशन्स ले आओ तब तक हम कुछ नोट्स गेदर कर लेंगे। कुछ याद भी कर लेंगे, फिर तुम्हें इण्टरव्यू देंगे।"

चलते वक्त वी० पी० ने जावेद को हजार रुपये की गड्डी दिलवाई। "इसे मैं क्या करूंगा, आई नीड ओनली फाइव···।"

"बकबक मत करो। बड़े लोग बच्चों को दिया ही करते हैं। इनफारमेशन्स लाओ और अगर कुछ मतलब की बात ले आये तो आई शैल गिव यू फिफ्टी थाउजेन्ड।"

हुमन जावेद बहुत खुश होकर अपने दफ्तर पहुंचा। शफीक उसे देखकर बोला : "जानते हो, मुक्तसर में भी पन्द्रह बेगुनाह बस-यात्रियों की हत्या कर दी गई।"

"अच्छा तो यह खालिस्तानी एजीटेटर्स का काम होगा।"

पाण्डे बोला : "अरे, खालिस्तानी क्लीनशेव्ड होकर अपना निखालिस सिख धरम भी छोड़ रहे हैं भाई। इनको सिख कहना सिख धर्म का अपमान करना है।"

"अमा, ये क्यों नहीं कहते कि पंजाब में हिन्दुओं और सिखों का सदियों पुराना नाखून और गोश्त वाला रिश्ता अब टूट रहा है।"

पाण्डे कुछ चिढ़ा, कुछ मजाकिया मूड में भी आया. "तभी तो पाकिस्तान नकली सिख बना-बना कर अपने मुस्लिम एजेण्टों को हमारे यहां भेज रहा है।"

जावेद इन बातों से चिढ़ गया, बोला : "अमां क्या अफवाहों के कनकौए उड़ा रहे हो यार। कान्ट यू बी सीरियस एबाउट अवर नेशन्स करेन्ट अफेयर्स। जरा यह सोचो यह बिखराव आखिर हमें ले कहां जायगा।"

"अजी, और कहां ले जायगा, एक तरफ शाहबुद्दीन और शाही इमाम की आदम सेना जेहाद बोलेगी। दूसरी तरफ से खालिस्तानिये सत्‌सिरी अकाल बोल कर धरम जुद्ध छेड़ेंगे और तुम्हारे वम-वम महादेव के तिरसूल नकारे होएंगे। तुम सब फिर गुलाम होगे।"

शफीक के यह कहने पर विनोद पाण्डे बोला : "अवकी इन त्रिशूलों से लेसर रेज़ निकलेंगी वेटा।"

जगदीश से न रहा गया। कहा : "पाण्डे जी, लगता है कि विश्व हिन्दू परिषद् ने तुम्हारी मार्फत ही रूस से यह लेसर वाले त्रिशूल बनवाये होंगे।"

साधारण विनोद में भी घातक साम्प्रदायिक कटूक्तियां सुनकर जावेद मन-ही-मन चिढ़ गया। दराज खोल कर अपने कागज़-पत्र निकालने लगा। जगदीश बोला : "अमां जावेद, बोले नहीं।"

"क्या कहूं यार, सोचता हूं—दिल और कहीं ले चल ये दैरो हरम छूटे।"

विनोद ने दूसरी पंक्ति पूरी की : "इन दोनों मकानों में झगड़ा नज़र आता है।"

"अमां, ये झगड़ा तो हिन्दोस्तान के अस्सी करोड़ घरों में आग लगा रहा है।"

शिवदीन अपने स्टूल पर बैठे-ही-बैठे बोला : "हमारी मगजखोरी यह कहती है पाण्डे जी कि अब हिन्दुस्तान यानी इण्डिया यानी भारत ही नहीं बल्कि यहां के सारे धरम खतम हो जायेंगे।"

जावेद सुनकर फड़क उठा, बोला : "वारे मेरे मिट्टी के मगजखोर। यह ले, एक सिगरेट पी जा।"

दोपहर में युधिष्ठिर जब शहर का दौरा लगाकर लौटा तो जावेद से पूछा, "काम कर आये वेटा।"

अपनी दोनों बांहें वजनी बनाकर ऊंची उठाने का अभिनय करते हुए वह बोला : "हसन जावेद हैवीवेट लिफ्टर है। वी० पी० को मैंने दस कुन्तल आंका था पर साला ढाई ही निकला।"

"पहेलियां न बुझाओ, जरा साफ-साफ बताओ।"

"वह अभी नहीं बताऊंगा।"

"अच्छा बच्चू, मैं भी एक ऐसे काम में लगा हूं कि अगर सक्सेसफुल हो गया तो तुझे शानदार दावत खिलाऊंगा।"

"अमां तुम तो जब खिलाओगे खिलाओगे, मैं तो तुम्हें अभी शानदार लंच दे सकता हूं।" कह कर हसन जावेद ने अपनी क्लीनशेव्ड मूंछ पर ताव दिया।

"क्या लूट लाये साले को।"

"बोलो मत, यह सब बातें थोड़ी फुर्सत से होंगी।"

"आज शाम।"

"नहीं। आज नहीं, कल भी नहीं।"

"कल क्या आफिस भी नहीं आओगे?"

"नहीं।"

मन में प्रश्नचिह्न और अपनी योजनाओं की पतंगें लेकर युधिष्ठिर विदा हुआ।

आठ

दो दिन बाद मां को घर में अस्पताल छोड़कर युधिष्ठिर सीधा जावेद के घर पहुंचा। घंटी बजाई, दरवाजा खोलने के लिए गुलबेरू की अम्मा ही आई और युधिष्ठिर को देखकर उसके टूटे दांतों की खिड़की खुल गयी: "आज तो बेटा वजीरेआजम सवेरे-सवेरे ही आय गये। बन्ने मियां तो बुखार में पड़े हैं।"

"उनका बुखार मैं अभी उतारता हूं। बुआ, तुम मुझे उनके कमरे में पहुंचा दो। ओ ऐ मेरी अच्छी बुआ, दो प्याले चाय भी दे जाना दो मिनट बाद।"

टूटे दांतों की खिड़की फिर खुली, हंसके कहा: "अरे सो तो तुम्हारे बिना कहे ही लाती। ये बायें हाथ के जीने से ही ऊपर चले जाओ।"

ऊपर कमरे में जावेद पलंग पर लेटा हुआ अखबार पढ़ रहा था, युधिष्ठिर को देखकर मुस्कुराया, बोला: "आओ।"

"ये बुखार का चक्कर क्या चलाया है जी। परसों तक तो भले चंगे थे।" पलंग पर जावेद के पास बैठते ही युधिष्ठिर ने कहा।

जावेद भी उठकर बैठ गया। मुस्कुराकर बोला: "पोलटिकल बुखार है यार।"

"यानी।"

"अरे परसों आफ्टर-नून में जब तेरे साथ आफिस में टाटा करके घर आया तो बूढ़े मियां ने हुकम फरमाया कि बरेली चले जाओ।"

"वहां क्या है।"

"मेरे कजिन की शादी है यार और मेरी शब्बो की सगी छोटी बहन से हो रही है। गालियां वह भी देगी मुझे मगर क्या कहूं, वी० पी० से अभी पांच हजार रुपये और झटकने का लालच था।"

"यानी कुछ पहले भी झटक लाये हो साले।"

"एक हजार।"

"किस खुशी में उस साले हरामुद्दहर ने तुम्हें इतने रुपये दे दिये।"

"अभी बतलाता हूं। अरे यार, तेरी जेब में सिगरेट हो तो निकाल, मेरी जेब में एक ही है।"

अपनी जेबें टटोलकर युधिष्ठिर बोला : "मेरी भी खत्म हो गयी है। खैर, तू पी जा।"

सिगरेट सुलगाकर पलंग से उठते हुए जावेद ने कहा : "तेरे लिए चाय…।"

"बुआ से कह आया हूं, लाती ही होंगी। तू अपनी बात शुरू कर, आई एम वेरी-वेरी इन्क्वीजिटिव।"

"गवर्नमेन्ट हाउस का एक पुराना बैरा सुलेमान, जो अब कार्लटन में खानसामों का सुपरवाइजर है, उसके पास तुम्हारे मरहूम दादा जान के कुछ लव सीक्रेट्स हैं।"

"लेकिन उनसे साला ये बी० पी० इस वक्त क्या भुनायेगा।"

"वो नहीं भुनायेगा, मैं भुना रहा हूं। मैंने उससे यह थोड़ी बतलाया कि किस तरह के सीक्रेट्स हैं उसके पास। मैंने जयन्त को कुछ इस किस्म से उसके सामने पेश किया है कि समझे वे अंग्रेजों से भी मिले हुए थे। वह साला इन्फारमेशन्स पाने के लिए बावला हो उठा है।"

युधिष्ठिर का मन गम्भीर हो गया। बाबा के लव अफेयर्स भी थे और वह भी अंग्रेज जाति की औरतों के साथ। अभी तक उसके मन में जयन्त टण्डन का व्यक्तित्व सन् बयालीस के अपराजेय योद्धा की तरह अंकित था, जयन्त चौक के आस-पास से गुज़रते हुए जब उसकी दृष्टि अपने दादा की ओजस्वी मूर्ति पर जाती थी तो अभिमान से उसका रोम-रोम फड़क उठता था और इस समय ऐसा लग रहा है कि उसकी श्रद्धा भावना पर हल्की-सी राख की पर्त जम गई है।

"अमां, क्या चड्ढा गुलखैरू जैसे बैठे हो।"

जावेद के इस कहने के साथ ही गुलखैरू की अम्मा की थुलथुल काया ने चाय की ट्रे लिये हुए कमरे में प्रवेश किया। "हमरा गुलखैरुआ यहां कहां बैठा है बन्ने मियां। वो तो…।"

उसकी बात पूरी भी न हो पाई कि जावेद ठहाका मारकर हंस पड़ा, युधिष्ठिर को भी उसकी मन की गम्भीरता के गिलाफ़-दर-गिलाफ़ फाड़कर हंसी खिल उठी। बेचारी गुलखैरू की अम्मा अपने टूटे दांतों की खिड़की खोले खिसियाई-सी खड़ी थी, तभी जावेद बोला : "अरे तुम्हारे गुलखैरू की बात नहीं थी बुआ, मैं तो इस नालायक दोस्त को चड्डा गुलखैरू कह रहा था। हाय बुआ, तुम कितनी अच्छी हो, चाय के साथ-साथ आमलेट भी ले आयी।"

टूटे दांतों की खिड़की बहुत गद्‌गद भाव से खुली, बोली : "अरे ई हमरे वजीर-आजम बेटा ने घर में आते ही आते हमसे कहा कि बुआ बहुत भूख लगी है, चाय

के साथ-साथ डबल रोटी भी ले आना। हमने सोचा आमलेट बना लें तुम लोगों के वास्ते।"

"अच्छा बुआ, ये रुपये ले लो, एक तकलीफ तुम्हें और करनी होगी। आबिद की दूकान से मेरे लिए एक डिबिया सिगरेट की ले आओ, कहना कि वही सिगरेट दे जो मैं पीता हूं।"

गुलबहरु की अम्मा के जाने के बाद आपरेशन आमलेट पर दोनों दोस्त जीजान से जुट गये। फिर खाते-खाते बीच में चाय की एक घूंट में मुंह का निवाला गले में उतारकर बोला : "मेरे बाबा के लव अफेयर के बारे में तुमने सुलेमान से कुछ जानकारी हासिल की।"

"हां, कुछ-कुछ। वह कहता है कि छोटे लाट साहब की बहन से उनकी तब की जान-पहचान थी जब वह इंग्लैण्ड में पढ़ते थे। वह दो बार अपने भाई से छिपाकर टण्डन साहब से मिलने के लिए उनके यहां आयी थी। सुलेमान ही उनकी छोटी-छोटी परचियां भी लाता था। उसने यह भी बतलाया कि उसके पास मेम-साहब का एक लिफाफाबन्द खत भी है जो उन्होंने तुम्हारे ग्रैण्ड फादर को देने के वास्ते उसे दिया था। मगर उन्हें दिया न जा सका क्योंकि तब तक वे शायद अण्डरग्राउण्ड चले गये थे।"

"वह खत कहां है।" युधिष्ठिर मन-ही-मन अपने 'हीरो' बाबा की 'नैतिक प्रतिष्ठा' बचाने के लिए बेताब हो उठा था।

"उसी को लेने के लिए परसों से कवायद कर रहा हू यार।"

"यानी अभी वह लेटर तुम्हारे हाथ नही लगा।"

"लगेगा-लगेगा। साले को व्हिस्की पिलाकर जब एक हजार की गड्डी दिखलाऊंगा तो बचके जायेगा कहां। अस्सी-बयासी बरस का बुड्ढा है मगर क्या कहूं टण्डन, साला पानी की तरह से व्हिस्की पीता है।"

"तो तुम पी० पी० को कब तक ब्लैकमेल करते रहोगे।"

"अरे कोई लम्बी पेंच का कंकऊआ थोड़े ही लड़ा रहा हूं। सुलेमान से लेटर पाया और अगर उसमें कोई पोलिटिकल बात नहीं है तो साले को दे दूंगा। वहुगा यही सीक्रेट है।"

"लेकिन वह लेटर जब तक मुझको नही दिखलाओगे तब तक नही दोगे।"

"यह भी भला कोई कहने की बात है।"

"मैं तुम्हें एक इम्पोर्टेण्ट काम के लिए ले जाने के लिए आया हूं। तुम्हें इसी वक्त मेरे साथ कैमरा लेकर अनन्तू भैये के आफिस चलना होगा।"

"क्यों ?"

"तुम्हें उनकी फोटो लेनी है, तुम्हें उनकी इण्टरव्यू भी लेनी है साले। तुम वह बटर हो जिसे लगाकर मैं बड़े भैये से अपना काम निकालूंगा।"

"यह सब क्या खुराफात भर गई है तुम्हारे दिल में।"

"खुराफात नहीं, बाबा के बल्कि उनसे भी पुराने फेमिली डाकूमेन्ट्स एक सीक्रेट तिजोरी में रखे हुए हैं जो बड़े भैये के कमरे में हैं।"

जावेद पलंग से उछल पड़ा : "रियली।"

"सच, पिताजी कहते थे कि अनन्तू से तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा। मगर मैं तय करके निकला हूं। वह इम्पार्टेण्ट डाकूमेण्ट इस सेन्टनरी के जमाने के मुझे हथियाना ही हैं। और बड़े भैये से मेरे रिश्ते खराब भी नहीं हैं लेकिन इस काम में तुम्हारा कोआपरेशन लेना जरूरी है।"

"जरूर चलूंगा यार। उन डायरियों का इस्तेमाल तो पहले हसन जावेद करेगा। बेटा, तू टापता रह जायगा।"

"साऽऽले कम्पनी से मैं 'शीवाज़ रीगल' के लिए पैसे लाया हूं, मेरे बाबा का माल है, मैं इस्तेमाल करूंगा।"

"अबे नेशनल हीरोज़ हम सबके बाबा हैं, तू चल तो सही। अब मैं इण्टरेस्टेड हूं।"

युधिष्ठिर को लगा कि अपनी गोली से वह खुद ही घायल हो गया। पछतावे का उभार बहुत तेज़ हुआ। मगर खैर, अब तो आगे देखा जायगा।

जब यह लोग नीचे उतर रहे थे, गुलखैरू की अम्मा सिगरेट लिये आ रही थी। देखकर जावेद ने उसके पास जाकर कहा : "अब्बूजी पूछें तो कह देना कि डॉक्टर के यहां गया हूं।" उनसे डिब्बी ली और दोनों अपने-अपने स्कूटरों पर सवार हो गये।

अनन्तू भैये अपने आफिस में शान से बैठे हुए सिगरेट पीते हुए अपने स्टैनों को कोई पत्र लिखा रहे थे। युधिष्ठिर और जावेद को देखकर चौंके, फिर मुस्कुराये, कहा : "अरे आओ, आओ, आज तुम लोग यहां कैसे टपक पड़े।"

"भाई साहब, पहले तो मैं आपका एक फोटोग्राफ यहां स्नेप करूंगा।" जावेद ने अपने कन्धे से कैमरा उतारते हुए कहा। अनन्तू भैये सुनकर फूल गये, बोले : "मेरे फोटो की जरूरत आपको कैसे हुई। मैं तो एक बहुत मामूली…"

"मामूली कैसे?" तुम तो ग्रेट पर्सनलिटी हो, वेरी इम्पोर्टेन्ट पर्सन," युधिष्ठिर बोला : "हम भाइयों में तुम्हीं अकेले उनकी गोद में खेले हो। बाबा के सम्बन्ध में हम सब भाइयों में तुम्हीं ने ज्यादा से ज्यादा बातचीत सुनी है।"

"खैर, यह सब बातें छोड़ो। ये मेरा कैमरा लो। टण्डन भाई साहब से इण्टरव्यू करते हुए मेरी पिक्चर खींचो। गेट अप।"

सुनकर युधिष्ठिर गम्भीर हो गया, बोला : "इसके माने यह हैं कि तुमने मुझे धोखा दिया। खैर, दोस्त के लिए यह सेक्रिफाइस कर दूंगा। बस तुम जो कम्पनी से मेरे भैये के नाम पर जो माल लाये हो वह पहले इनको दो। यह बड़ा चार-सौ

बीस है बड़े भैये। मेरे सामने ही आपके नाम से यह साला हमारे डिप्टी जनरल मैनेजर से 'शीवाज़ रीगल' की एक भटेल झटक लाया है, बदनियत न मुझे पिलायेगा न आपको।"

अनन्तू भैये के चेहरे पर नई चमक आ गयी। अपने सिगरेट का कश लेकर स्टैनो की ओर देखते हुए कहा : "यह लेटर अब मैं कल डिक्टेट कराऊंगा, तुम अब जा सकते हो। पहले इन अखबारवालों का काम निपटा दूं'''या हमें तुम लोग दो मिनट का टाइम दो तो इसे'''"

"हां-हां भाईजान, काम इम्पार्टेन्ट है।"

"उसे पूरा कर लीजिए लेकिन पहले हमारे लिए दो बोतल'''"

युधिष्ठिर ने मुट्ठी बांधकर अपना अंगूठा ऊंचा उठा दिया।

कोल्डड्रिंक की बोतलें आयी, भैये का डिक्टेशन पूरा हुआ, सरीन चला गया। युधिष्ठिर ने पीना छोड़कर अनन्तू और जावेद के दो स्नेप्स खींचीं। बातें शुरू हुई।

अनन्तू ने कहा : "भई, बाबा की शहादत के समय मैं कुल जमा नौ या दस माह का था। उनकी गोदियों में जरूर खेला हूं लेकिन मुझे उनका तनिक भी होश नहीं। जो बातें मैंने अपनी ग्रैण्डमदर से सुनी हैं वही'''"

"वही तो इम्पार्टेण्ट है भैये। हम सब भाइयों में आप ही तो दद्दा के सबसे ज्यादह लाड़ले पोते रहे हैं।"

"हां, यह बात तो जरूर है। मैंने अपनी दादी से बाबा के बारे में जितनी बातें सुनी हैं उतनी और किसी भाई को सुनने का सौभाग्य नहीं मिला।"

"इसके अलावा एक बात और भी है भैये, जो शायद आपको भी नहीं मालूम है। पिताजी के मुंह से सुनकर कल मैं भी धक्क से रह गया था।"

"क्या?"

"बाबा की एक खुफिया तिजोरी आप ही के कमरे में है। जिस कमरे में आप सोते हैं वह बाबा से पहले हमारे परबाबा का कमरा था। तिजोरी उन्होंने ही लगवाई थी।"

"कैसी तिजोरी। उस कमरे में तो मैंने कभी भी नहीं देखी कोई तिजोरी-विजोरी और न दद्दा ने ही कभी कहा। पिताजी कहां बतलाते हैं उस तिजोरी को।"

"कल बातों के सिलसिले में ही पिताजी ने बतलाया कि उन्होंने वह तिजोरी देखी थी। लेकिन उसमें रुपये-गहने वगैरह नहीं हैं भैये बल्कि कुछ बड़े वैल्युएबुल डाकूमेन्ट्स और कुछ पुराने सिक्के वगैरह ही रखे हैं। वह तो बतलाते थे कि उसमें कुछ पुराने सिक्कों का कलेक्शन भी रखा है और रायसाहब बाबू बंसीधरजी के हाथ की लिखी कुछ नोटबुकें भी'''"

पीते-पीते अनन्तू भैये ने बोतल उठाकर मेज पर रख दी और तन कर बोले :

"अगर तेरी बात सच निकली नन्हा तो शाम को जावेद के साथ तेरी भी ग्रैन्ड दावत करूंगा बेटे। चलिए जावेद साहब, अब तो मैं खुद भी उस तिजोरी के बारे में इम्पेशेन्ट हो चुका हूं।" कहकर टेबुल से उठाकर बची-खुची बोतल का पानी पी गये। डिक्टा फोन पर मातहतों को फटाफट काम समझाकर मेज़ की दराज में चाभी लगाने लगे।

जावेद भी अपनी बोतल खत्म करके बोला: "आपका यह भाई इतना बड़ा स्काउंड्रल है भाई साहब कि इसने मुझे बतलाया ही नहीं था। खैर, अगर आप इजाजत देंगे तो मैं भी आप लोगों के साथ इस सीक्रेट ट्रेज़र की खोज होते देखना चाहूंगा।"

"चलिए-चलिए।"

"लेकिन एक बात के लिए आपसे यहीं प्रामिस लेता चलूंगा कि इसका जिगरी दोस्त होने के नाते आपका छोटा भाई हूं।"

"ठीक है—ठीक है। क्या चाहते हैं आप।"

"पहले तो यही गुजारिश करता हूं कि आप मुझे आप कहना छोड़ दें। आप जैसे इसके बड़े भाई हैं वैसे ही···"

"ठीक है बड़ा तो हूं ही भाई, तुम्हारा भी बड़ा हो गया।"

अनन्तू टण्डन की कार पर तीनों लोग चम्पक मैन्शन पहुंचे। युधिष्ठिर अपने कमरे की तरफ भी जाना चाहता था मगर इस विचार को दबा गया। पहले उसी पुरानी इमारत में घुसा, जोर से आवाज़ लगाई: "बड़ी भाभी, कहां हो भाई, बड़े भैये के साथ दो राक्षसों का खाना भी तैयार करा रखो। हम लोग ऊपर आय रहे हैं।"

बड़ी भाभी से पहले छोटी भाभी ऊपर के छज्जे से झांकी: "ओक्खो, जरन-लिस्ट साहब बहादर आये हैं। आज कैसे भूल पड़े इधर।"

बात वहीं की वहीं रह गयी। तीनों ऊपर चढ़ गये। बड़ी भाभी नीचे ही थीं, पति के साथ इन लोगों को ऊपर जाते देखकर चौंकीं मगर बोलीं कुछ नहीं। ऊपर स्वर्गीय डॉक्टर देशदीपक का कमरा था जिसमें बाद में मरने से पहले तक अमर शहीद जयन्त टण्डन साहब भी बरसों तक रहे थे। कमरे की आधी दीवारों में टीकवुड की पालिशदार लकड़ी लगी हुई थी और दीवारों पर डॉक्टर टण्डन, जयन्त और उनकी पत्नी स्वर्गीया लड़ैतो बीबी के फोटोग्राफ टंगे-टंगे मैले पड़ गये थे। फ्रेम के शीशों पर इतना मैल जम चुका था कि चित्रों में अंकित चेहरे बहुत ही धुंधले दिखलाई पड़ रहे थे। देखकर युधिष्ठिर नाटकीय ढंग से ऊंची आवाज में बोला: "ओ हो, ये हमरी बड़ी भाभी तो ऐसी मगरमच्छ हो गई हैं कि ज़रा-सा हाथ हिलाते भी नहीं बनता। अरे होली-दिवाली तो पुरखों की तस्वीरें पोंछ दिया करो भई।"

जावेद कमरे के स्नेप्स ले रहा था। अनन्तू ने युधिष्ठिर से कहा : "अरे छोड़ो भी यार, अपनी भाभी को बताओ। यहां कहां है तुम्हारी खुफिया तिजोरी।"

जावेद बीच ही में बोल उठा : "भाई साहब, जरा एक गीला कपड़ा तो मंगवा दीजिये, मैं इन तस्वीरों को साफ करके कमरे की एक पिक्चर और लेना चाहता हूं।"

तब तक बड़ी भाभी ऊपर आ चुकी थी। फैली हुई डबल कमर वाली मोटी देह के भद्देपन के बावजूद उनके मुख का सौन्दर्य अब भी आकर्षक था। हीरे की बड़ी कील और कानों में हीरे की तरकियां चमक रही थीं। आठ-दस और सीढ़ियां चढ़ने से ही उनका दम फूल रहा था, युधिष्ठिर देख कर बोला : "ओफ्फोह, कित्ता नम्बर दो का माल भर लिया इस तिजोरी में? दिन-पर-दिन मोटापा बढ़ता ही जाता है।"

"हां-हां और कोस लेओ, जी भरके कोस लेओ और तुम्हारा काम ही क्या है। इखबार में झूठी, सच्ची बातें छाप-छाप के अब घर में भी झूठे परपंच फैलाने लगे। काहे आये हो हमरे हिंया।"

"मेरे बड़े भाई का घर है, मेरे बाप-दादों का घर है। सवेरे-सवेरे अपनी भाभी की गालियां सुनने आये हैं। बोलो क्या कर लोगी हमारा। दस घण्टे आये हुए हो गए, तुमने चाय-पानी को भी नहीं पूछा।"

अनन्तू बोला : "अरे पहले किसी से गीली झाड़न मंगवाओ। ये फोटो लेंगे।"

युधिष्ठिर अपनी बड़ी भाभी को रिझा रहा है। उनके गले में दोनों बाहें डाल-कर खड़ा हो गया, बोला : "ये तस्वीरें साफ हो जायें तो बड़े भैये के साथ बाबा की तस्वीर के नीचे खड़ा करके तुम दोनों की तस्वीर खिंचवाऊंगा। जब छपेगी तो क्वीन एलिजाबेथ भी देख के गश खा जायेगी कि हाय-हाय युधिष्ठिर टण्डन की बड़ी भाभी भी कितनी खूबसूरत हैं।"

यह बातें करते-करते ही युधिष्ठिर की नजरें भी अपना काम कर रही थीं। सामने के कोने में एक छेद दिखलाई पड़ गया। भाभी को भूलकर वह तुरन्त 'टीकवुड' जड़ी दीवार के उस हिस्से के पास पहुंचकर झुककर गौर से देखने लगा। लकड़ी की पालिश बहुत पुरानी पड़ गई थी लेकिन चाबी के लिए छेद साफ नजर आ गया। उंगली से टटोलते हुए उसने लकड़ी से बना हुआ वह दरवाजा भी खोज निकाला जिसमें वह चाबी का छेद बना हुआ था। अनन्तू पैनी नजरों से युधिष्ठिर की कारस्तानियों को देख रहा था। युधिष्ठिर बोला - "बड़े भैय्ये, तुम्हारे हिस्से में पुरानी चाबियों का गुच्छा भी जरूर ही होगा।"

भाभी का रुख तेज पड़ गया . "चाबियों का क्या करोगे?"

अनन्तू जरा डपट कर बोले : "अच्छा-अच्छा बहस न करो, पुराना गुच्छा है तो सही। नीचे दद्दा की कुठरिया वाली बुखारी में रखा रहा। हमने देखा है। ले आओ उसे।"

भाभी और तेज़ पड़ीं, डपट कर बोलीं : "हम नहीं देते किसी को चाबी-आबी। ये हमरा हिस्सा है। इसमें किसी और का दखल नहीं होगा।"

युधिष्ठिर उठकर बोला : "अरे भाभी, मैं दखल नहीं करता बल्कि चाबी ले आओ तो अभी एक ऐसा तमाशा दिखलाऊंगा जो तुमने क्या बड़े भैये ने भी अभी तक नहीं देखा।"

बड़ी भाभी की मोटी कमर में खुसा हुआ गुच्छा बड़े भैये ने हठात निकाल लिया और तेज़ी से नीचे चले गये। पति की ओर विवश आग्नेय दृष्टि डालकर जब घूमी तो देवर पर अग्निवर्षा की। कहा : "तुम हमरे के हियन क्या लेने आये हो, ई पहले बताओ नई तो हम खोले न देंगे।"

जावेद कुर्सी पर बैठ गया था। युधिष्ठिर अपनी भाभी से उसी खुशामदी लहजे में बोला : "तुम बात समझ लो भाभी, फिर नाराज़ होना। इस दरवाज़े के पीछे एक तिजोरी है।"

तिजोरी का नाम सुनकर भाभी की आंखें फटी-फटी रह गयीं। युधिष्ठिर कहता रहा : "तिजोरी में धन-सम्पदा तो कुछ भी नहीं है और जो होगी वह सब तुम्हारी। मैं पहले से ही कहे देता हूं।"

"तिजोरी का पता तुम्हें किसने बतलाया ?"

"पिताजी ने। अगले साल बाबा की शताब्दी मनेगी न। शहर का जयन्त चौक तो तुमने देखा ही है न।"

भाभी की आंखों में क्रोध की लपटें तो बुझ चुकी थीं पर कौतूहल बढ़ गया था, बोलीं : "इन सब बातों से इस तिजोरी का क्या मतलब हैगा।"

"इसमें बाबा की डायरियां हैं। और पुराने काग़ज-पत्तर हैं।"

तब तक अनन्तू नीचे से चाबियों का एक पुराना गुच्छा लेकर आ गये। छोटे सौतेले भाई की ओर स्नेह-भरी दृष्टि से देखकर अनन्तू बोला : "नन्हें मान गये तुम्हें। इत्ते बरसों से मैं यहां रहता हूं, मैंने कभी नहीं देखा और तुमने आते ही अर्जुन की तरह से तीर मार दिया। वाह बेटा।" कहकर अनन्तू दीवार के पास बैठकर चाबियां लगाने लगा।

"भीतर से लॉक में जंग लग गया है यार। यह चाबी तो इसी की लगती है मगर लॉक भीतर से इतना मुरचा गया है कि चाबी मुड़ती ही नहीं है। तोड़ दूं साले को।"

"हॉं-हां, आंय बड़े तोड़न वाले।"

"तुम मत बोलो जी, जाओ, इन लोगों के लिए अच्छा-सा नाश्ता-पानी

लगाओ। ये लड़के मेरी इज्जत बढ़ाने आये हैं, तुम उनसे हुज्जत कर रही हो। और नीचे से हमारा पेंचकस तो भेज दो।"

युधिष्ठिर अपनी भाभी की खुशामद में भाई को झिड़कते हुए बोला : "अच्छा भईये, अब जरा चुप रहिए। भाभी बेचारी अभी समझी नहीं हैं। जब समझेंगी तो हमें ऐसे प्यार से चुम्मे देंगी कि तुम देख-देखकर जलोगे।"

भाभी की क्रोधाग्नि में युधिष्ठिर का मजाक स्वाती की बूंद की तरह तरावट ले आया, वह नीचे चली गयी। पेंचकश आया। किसी तरह वह पार्टीशन वाला टुकड़ा खींच-खींचकर तोड़ा गया। तिजोरी जादू की तरह प्रकट हो गई, सबकी आखें चमक उठीं।

"अब बड़े भैये, इस सेफ की चाबी।"

तिजोरी को देखकर बड़े भैये बोले - "यार, अगर इसमें भी मुर्चा हुआ तो कैसे खोलेंगे।"

"पुराना लॉक है, बृटिश मेड, इतनी आसानी से जंग नहीं लगा होगा। पहले एक काम करो बड़े भैये। मशीन की तेल की कुप्पी मंगवाओ। (जोर से चिल्लाकर) ए भाभी, कहां हो आओ, तुम्हें दिखायें क्या निकला।"

बृटिश मेक का पुराना सेफ खुलने में अधिक परेशानी न हुई। सब-के-सब देख रहे थे जैसे भीतर न जाने क्या-क्या होगा। भीतर टार्च डालकर पहले यह देखा गया कि भीतर सांप-बिच्छू तो नहीं हैं। जावेद तिजोरी के चित्र ले रहा था। भाभी, पति और देवर की पीठों पर लदी-लदी गौर से देख रही थी कि भीतर से क्या मिलता है। रायसाहब बाबू बंसीधर की अधूरी जीवनी, मुंशी गंगाप्रसाद वर्मा के लिखे कुछ पत्र, रायसाहब और डॉक्टर देशदीपक के लिए लिखे गये पुराने अंग्रेज अधिकारियों के कुछ प्रमाणपत्र और पत्र। स्वर्गीय डॉक्टर देशदीपक की जीवनी के आरम्भ का एक पृष्ठ और जयन्त टण्डन की डायरियों का बण्डल मिला। उनकी पहली डायरी सन् 1903 से लेकर अगस्त सन् 1906 तक की लिखी हुई थी। दूसरी दो डायरियां उनके इंग्लैण्ड जीवन से सम्बन्धित थी। तीसरी डायरी में सन् 1918 से लेकर 1930 तक के दैनिक विवरण अंकित थे। और चौथी नोटबुक इस शताब्दी के चौथे दशक के विवरणों से साथ ही सन् 41-42 की हलचलों और जयन्त जी के बरेली में मुश्ताक मियां के गांव में छद्म जीवन बिताते समय उन्होंने लिखी थी।

इतनी बड़ी तिजोरी में इतने सारे कागज देख-देखके भाभी अघाय गयीं, अकुलाके बोली : अरे तुम तो ई सब देखे लगे। पहले भीतर झाकके देखो और क्या-क्या है।"

"हमारी लक्ष्मी तो मिल गई बड़े भैये, पर हमरी बड़ी [illegible] मिला, यह तो पहले खोजो।"

हाथ से तिजोरी के दोनों खाने टटोले गये। कोने में एक डिब्बा मिला, पुराने सिक्कों का एलबम था और एक सोने की रामनामीमाला थी जिसे देखकर भाभी के चेहरे पर तरावट आई, बोलीं : "ई सब हमरा है।"

"बिल्कुल सब तुम्हारा है भाभी। मैं गवाह हूं, लेकिन एक बार पिताजी को यह सब दिखलाना तो होगा ही।"

"सिक्कों में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के दो रुपये, मल्का विक्टोरिया और किंग एडवर्ड के पांच-पांच रुपये, जार्ज दि थर्ड और विक्टोरिया और एडवर्ड के समय की गिन्नी, चांदी की दुअन्नी, अठन्नी, तांबे के सिक्के—ऐसा लगता है अपने समय में प्रचलित इन नोटों और सिक्कों का ऐतिहासिक संग्रह रायसाहब और डॉक्टर देशदीपक ने ही किया होगा। किन्तु यह रामनामी किसकी है।"

"बड़े भैये, इस रामनामी को कभी आपने दद्दा के गले में देखा था?"

"नहीं भाई।"

"और उनकी सास तो आर्यसमाजी थीं, वो भला रामनामी क्यों पहनने लगीं। खैर, यह तो पिताजी ही बतला सकेंगे—भाभी, तुम एकदम फटाफट तैयार हो जाओ, जैसी भी हो, तुम और बड़े भैये अभी अस्पताल चलोगे। तुम दोनों ही पिताजी को उनकी यह सम्पत्ति दिखाओगे।"

"पर ई डिब्बे में हम किसी को बटवारा नहीं करै देंगे, ई बतलाय देते हैं।"

खुशामद से भाभी की ठोढ़ी छूकर युधिष्ठिर बोला : "अरे भाभी, मैं इस डिब्बे की खबर किसी को भी नहीं दूंगा, कसम खाके कहता हूं। न हेमन्तू भैये, न बल्लू भैये, किसी को भी नहीं और न अखबार में जायगी। ये माला भी मैं तुम्हारे गले में अभी डाल देता मगर पिताजी को पहले दिखला दें कि यह है किसकी। तुमने आज हमें इतनी बड़ी दौलत दे दी है कि जिसके मुकाबले में कोहिनूर और तख्तेताउस भी बेमोल है।"

जावेद ने सहसा शान्त स्वर में युधिष्ठिर के बड़े भाई से कहा : "भाई साहब एक बात पूछूं, बुरा तो नहीं मानेंगे।"

"वाह, बुरा क्यों मानूंगा भला, अरे जैसे हमारे लिये नन्हा वैसे आप-तुम। फिर तुम्हारे वालिद साहब ने तो मेरे दादा की सेवा भी की है।"

हसन जावेद ने झुककर अनन्त टण्डन के पांव छू लिये और कहा : "आपसे यही उम्मीद थी। तो भाई साहब, मेरे खयाल में आप यह बेहतर समझेंगे कि आदरणीय जयन्त साहब की इन डायरियों को आधार बनाकर उनका एक मुसलमान पोता सन् बयालीस की हिस्ट्री लिखे।"

इससे पहले कि अनन्त कुछ जबाब दे, युधिष्ठिर तैश में बोला : "ये डाकूमेन्ट्स फेमिली प्रापर्टी हैं और मेरे फादर ने मुझे ही बाबा की लाइफ लिखने के लिए

कहा है। जब तक पिताजी जीवित हैं तब तक वही इस तमाम प्रापर्टी के मालिक हैं।"

यह सुनकर अनन्तू का भेजा खौल उठा, लपक कर सारे कागजात अपने हाथ में उठाये और कहा : "फेमिली प्रापर्टी का यह हिस्सा दद्दा मुझे दे गये हैं और यहां पर जो कुछ है वह मेरा है। मैं जिसे चाहूं दूंगा, जिसे चाहूं नहीं दूंगा। तुम साले बोलने वाले कौन होते हो। आई कैन फाइट विद पिताजी टू।"

पति की गर्मी देखकर पत्नी को अपनी माला के 'हक' ने सताया। वह भी बोल उठी : "यह सब हमरे घर में निकला है। हम किसी को छुअन भी नहीं देंगे। लाओ, हमरी माला हमे दो।"

युधिष्ठिर ने देखा कि उसके सारे किये-धरे पर चौका लगा जाता है, तो सम्हल गया। सोचने लगा—बड़े भैये के सामने में पिताजी भी चुप लगा जायेंगे और खास तौर पर उनकी बीमारी के मौके पर वह उन्हें किसी प्रकार का मानसिक आघात नहीं पहुंचाना चाहता। तुरन्त विनीत होकर बोला : "भाभी, यहां जो कुछ मिला है वह सब तुम्हारा और बड़े भैये का है। मैं अपनी मां की कसम खाके कहता हूं कि इस मामले में अपना कोई भी हक नहीं मांगूंगा।"

"तब फिर भाईजान आप मुझे प्रामिस कर चुके हैं कि इन डायरियों का इस्तेमाल आपकी इजाजत से मैं करूंगा। आई शैल गिव यू द फुल क्रेडिट टू यू एण्ड यू ओनली। मुझे खुशी है कि आप इन्साफपसन्द हैं।"

युधिष्ठिर ने खूनी नजरों से हसन जावेद को देखा। उसे मन-ही-मन इस बात का बहुत दुख था कि वह बन्ने को अपने साथ क्यों लाया। दांत पीसकर उसने जावेद से कहा : "गद्दार, बेईमान।"

युधिष्ठिर के शब्दों की ओर ध्यान न देते हुए जावेद अनन्तू से बोला : "देखिए भाई साहब, आप मुझसे प्रामिस कर चुके हैं अपने इस मुसलमान भाई को···।"

"हां-हां मैंने प्रामिस कर लिया है, यू शैल राइट दि हिस्ट्री आफ माई ग्रैण्ड फादर। या तो तुम लिखोगे वर्ना मैं इन सारे कागजातों को अभी जाकर गोमती नदी में डुबो दूंगा।"

"नहीं बड़े भैये, इसी साले को लिखने दीजिए। इसने दोस्ती के नाम पर मेरी पीठ में छुरा भोंका है।"

जावेद बोला : "अपनी क्यों भूलता है बे, सिराज अहमद मर्डर केस में तू भी मेरे साथ ऐसा ही दाव खेल चुका है। जर्नलिज्म में बैटा अपने सगे बाप का नहीं होता—क्या समझा। अच्छा जा, तुझे आज शाम को व्हिस्की पिला दूंगा।"

"नहीं-नहीं, आज तो तुम लोग मेरे साथ खाना खाओगे। जावेद, मैं आज तुम्हारे लिए 'अवध जिमखाना' वाले बावर्ची का मुर्ग-मुसल्लम लाऊंगा और

व्हिस्की तो तुम लाये ही हो, क्या अकेले मैं ही पियूंगा।"

युधिष्ठिर मन-ही-मन और कुढ़ गया। 'शीवाज़ रीगल' भी आफिस से वही लाया था। अपने ही षड्यन्त्र में फंसा-फंसा वह फड़फड़ाता रहा। फिर सब चलने को हुए। युधिष्ठिर एकाएक अनन्तू से गिड़गिड़ा कर बोला: "बड़े भैये, कम-से-कम एक बार पिताजी को तो यह सब चीजें दिखला ही देनी चाहिए। मैं आपको वचन दे चुका हूं कि मेरा इन चीजों पर कोई अधिकार नहीं और माला तो भाभी की है ही। मगर एक बार इन सब चीजों को पिताजी को दिखला देना उचित होगा।"

"हां-हां, आई डोन्ट माइन्ड बल्कि तुम अपनी गाड़ी निकाल लो, हम तीनों अभी पिताजी के पास चलते हैं और मैं उनसे भी कह दूंगा कि हिस्ट्री के लिए मैंने मिस्टर हसन जावेद को प्रामिस दे दिया है।"

कमरे से बाहर आकर ज़ीना उतरते हुए युधिष्ठिर ने जावेद से कहा: "बन्ने साले, तुझे कच्चा चबा जाऊंगा।"

"अच्छा बेटा, चबा लेना, नमक-मिर्च की पुड़िया मैं तुझे लाकर दे दूंगा।"

"साला, हिन्दू-मुसलमान, हिन्दू-मुसलमान कह-कहके तूने बड़े भैये को उल्लू बना दिया एण्ड यू आर नीदर हिन्दू नॉर मुसलमान।"

युधिष्ठिर के कन्धे पर हाथ रखकर हंसते हुए जावेद ने कहा: "अबे जो तू है वो मैं हूं। नसीब से जिसकी बेरी में फल लग जाये वही तो खायेगा बेटा।"

"मगर मैं क्या करूंगा?"

"तू नावेल लिख साले। बहुत शेखी बघारी है तूने मेरे सामने कि नावेल लिख सकता हूं। लिख-लिख, आई हैव गिवेन यू द चान्स आफ योर लाइफ।"

दोनों मूल कोठी से निकल कर काटेज की मोटर गैराज की ओर बढ़ने लगे।

नौ

'चंपक मेन्शन' के पीछे वाले हिस्से में जहां स्वर्गीया श्रीमती चंपकलता टण्डन ने घर का गोदाम बना रखा था, वह भाग अब नया होकर अनन्त टण्डन का ड्राइंग-रूम बन चुका है। उसके दोनों छोटे भाई हेमन्त और बलवन्त बंगले के पुराने हिस्से में ही तोड़-फोड़ करके अपने लिये दो अलग छोटे-छोटे ड्राइंगरूम बनवा चुके हैं। स्व० रायसाहब का ड्राइंगरूम अब बलवन्त का रिहायशी कमरा बना हुआ है। अनन्तू ने मंझले भाई को नहीं लेकिन छोटे हेमन्त को अपनी पार्टी में जरूर बुलाया था। हेमन्त इतिहास का डॉक्टर है और प्रादेशिक पुरातत्व विभाग में

सहायक निदेशक भी। हेमन्त से अनन्तू की पटती है किन्तु बलवन्त से नहीं। बहरहाल सौतेले भाइयों और हसन जावेद के साथ बढ़िया मुर्ग-मुसल्लम और व्हिस्की की दावत खाकर युधिष्ठिर जब अपने घर लौटा तो रात के साढ़े-दस बज चुके थे। युधिष्ठिर सोने के कमरे में न जाकर अपने 'स्टडी' वाले कमरे में आरामकुर्सी पर जाकर लेट गया, उम्दा नशा और हंसी-मजाक का खुशनुमा माहौल भी उसके मन की खिन्नता को अब तक दूर नहीं कर पाया था, यद्यपि उसने दिन में हुई बात को भुला देने का भरसक अभिनय इतनी देर तक अवश्य किया था। दिन में जब पिताजी को पाई हुई 'दौलत' दिखलाने के लिए सब लोग गये थे तब भी अनन्तू की बात का प्रतिवाद पिताजी ने नहीं किया। बन्ने ने भी मां को बुआ-बुआ करके अपनी बातों में ऐसा लिपटाया कि उन्होंने भी जावेद को ही इतिहास लिखने की अनुमति दे दी, बोलीं: "अच्छा है, तू अपनी किताब लिख, नन्हा अपनी लिखेगा।"

"लेकिन बेटे, इसकी दो फोटोस्टेट कापियां कराओ। एक नन्हे को दो, एक बन्ने को। यह ओरिजनल तुम अपने ही पास रखो, जरा पढ़ने लायक सेहत हो जाय तो एक बार इन्हें तुमसे लेकर मैं भी पढ़ूंगा।"

रामनामीमाला के सम्बन्ध में सुमन्तजी निश्चित रूप से तो कुछ कह न सके किन्तु उनका अनुमान यही था कि यह माला उनकी दादी स्वर्गीया कौशल्या टण्डन की नहीं होगी क्योंकि वह कट्टर आर्यसमाजी विचारों की थी। यह निश्चय ही श्रीमती चपकलता की ही होगी और चूंकि कौशल्याजी उसका इस्तेमाल नहीं करती थीं इसलिए शायद डॉक्टर देशदीपकजी ने उसे अपनी निजी तिजोरी में रख दिया होगा।

रखा होगा ' जिसको मिली उसको मिली, मेरे हिस्से में तो कुछ भी नहीं आया। बन्ने ने बहुत करारा धोखा दिया है मुझे—तूने भी उसे दिया था। सिराज अहमद मर्डर केस की हत्यारिणी नसीमबानो कालेज में श्रीमती शबाना जावेद की सहपाठिनी और अंतरंग मित्र रही थी, नसीम-सिराज अहमद पुराने ताल्लुकेदार परिवार की इकलौती बेटी, दो-दो बार योरोप और अमेरिका के चक्कर लगा आयी थी। फ्रेन्च, अंग्रेजी और फारसी की विदुषी, प्रतिष्ठित समाज-सेविका और अपने पति को बेहद चाहने वाली स्त्री ने पति की हत्या क्यों की, यह रहस्य तब तक नहीं खुला था। हिरासत में होने के बावजूद हत्यारिणी नसीम को मामूली हवालात में न रखकर पुलिस लाइन्स में एक अलग और शानदार कमरे में उसकी हवालात बनाई गई थी इसलिए वहां कोई पत्रकार क्या, परिन्दा तक पर नहीं मार सकता था। जावेद को विश्वास था कि अपनी पत्नी के साथ जाकर वह नसीमबानो की हत्या का रहस्य जान सकता है, किन्तु वहां तक पहुंच पाने का कोई रास्ता उसे खोजे नहीं मिल रहा था।

संयोग से गृहमंत्री की पत्नी युधिष्ठिर की परिचित थी और नसीमबानो की बातें प्रसंगवश चलने पर उन्होंने पढ़ी-लिखी और ख्यातिनामा हत्यारिनी से मिलने की उत्सुकता दिखाई तो युधिष्ठिर भी मौका न चूका। मंत्री जी की पत्नी के साथ उसे आसानी से इण्टरव्यू मिल गई और अखबार में वह सनसनीखेज रहस्य उद्‌घटित करके युधिष्ठिर ने बड़ा यश कमा लिया। तब जावेद भी उससे यों ही चिड़चिड़ाया था। बदले का जवाब बदला, ईंट का जवाब पत्थर...।

बन्ने ने आखिर बुरा क्या किया है बल्कि एक बार नहीं, दो बार युधिष्ठिर जावेद के साथ ऐसी शरारत कर चुका है। गवर्नमेन्ट हाउस का पुराना खानसामा सुलेमान कार्लटन होटल के बैरा-बावर्ची स्टाफ का वर्तमान मुखिया है। उससे बाबा की विलायती प्रेमिका के पत्र यह कम्बख्त कहीं झटक न लाये। मुझे जावेद से पहले अपने हाथ में कर लेना है। बी० पी० से रुपये लूटने की तिड़कम में कहीं वह लेटर्स.. नहीं-नही, उन्हें सुलेमान से जैसे भी होगा, लाना ही है।

मन का क्षोभ रेगिस्तानी आंधियों की तरह बार-बार तपन से उसका कलेजा झुलसा जाता था लेकिन अपने अपराध भी उसे भुलाये नहीं भूलते थे।

पिछले तीन वर्षों से युधिष्ठिर टण्डन और हसन जावेद का साथ हुआ। पत्रकारिता के क्षेत्र में दोनों ही नये-नये आये थे। दोनों ही पढ़ने और सोचने के लती थे। विचारधारा में भी काफी समानता थी। और दोनों को अति निकट लाने में सबसे बड़ी बात तो यह हुई कि युधिष्ठिर की मां और हसन जावेद के पिता एक ही नगर के रहने वाले नही बल्कि उनके सम्बन्ध भी बहुत घनिष्ठ रहे थे। युधिष्ठिर के नाना कौशलकिशोर खन्ना राष्ट्रीय आन्दोलन के दिनों में बरेली की नई पीढ़ी के लिए जगमगाती मशाल का काम कर रहे थे। जावेद के पिता मुश्ताक हुसैन साहब और कुछ वर्ष पहले तक इस प्रदेश के मुख्यमंत्री रह चुकने वाले बी० पी० वर्मा आदि बरेली के अनेक राष्ट्रवादी नवयुवक खन्नाजी के इर्द-गिर्द उनके आदेश पाने के लिए मंडराया ही करते थे। शारदा जी बाल-विधवा और मातृहीना होने के कारण अपने पिता के साथ-ही-साथ बरेली के नारी जागरण काल में सोत्साह काम करने लगी थीं और जावेद के पिता को भाई कहकर सम्बोधित करती थीं।

यह पुरानी बातें युधिष्ठिर ने प्रसंगवश टुकड़ों-टुकड़ों में ही सुनी थीं। साथ काम करने के दौरान जावेद तो एक बार युधिष्ठिर टण्डन की माताजी से संयोगवश मिल भी चुका था, किन्तु दो-तीन बार हसन जावेद के घर जाने का अवसर पाकर भी युधिष्ठिर कभी मुश्ताक साहब से नहीं मिला था। लकवे के कारण वकालत छोड़ने के बाद मुश्ताक साहब अपने घर में भी प्राय: निर्लिप्त रहा करते थे। चूंकि बेटा ही सुबह-शाम अपने अब्बू जी के पास दस-पांच मिनट के लिए आया-जाया करता था इसलिए युधिष्ठिर उनसे मिल नहीं पाया था। जावेद की

पत्नी शबाना से भी युधिष्ठिर की भेंट एक ही आध बार किसी पार्टी के बहाने हुई थी। हां, युधिष्ठिर का विवाह चूंकि अभी साल-डेढ़ साल पहले ही हुआ था और जावेद तब तक उसका घनिष्ठ भी हो चला था इसलिए शकुन और जावेद का परिचय जल्दी हो गया। शकुन के कारण ही शबाना-जावेद भी उसके यहां दो-तीन बार आ-जा चुकी थी। दोनों ही अध्यापिकाएं थी इसलिए भी उनमें अधिक निकटता हो गई थी।

युधिष्ठिर ने अपने और जावेद में क्रमश. एक घनिष्ठता यह भी अनुभव की थी कि दोनों ही अपनी-अपनी धार्मिक आस्थाओं से उतने ही अलग थे जितने कि रात और दिन रहते हैं। दोनों ही एक जगह अपने-अपने धर्मवालों से नफरत करते थे। उनकी यह मान्यता भी थी कि इन धर्म-साहब के दरबों में बन्द होने के कारण ही हमारे देश का मनुष्य आपस में बंट गया है। वह इन बंटवारे की दीवारों को तोड़ना चाहते थे। जावेद के प्रति आज के इस वेगशाली क्रोध-ज्वार में भी युधिष्ठिर की आन्तरिक चेतना उसमें अपना साम्प्रदायिक अलगाव महसूस न कर सकी। युधिष्ठिर अपने भीतर एक निरर्थक चिड़चिड़ाहट से परेशान हो चुका था लेकिन उबर नहीं पाया था।

शकुन्तला गर्भ-भार से अलसायी काया को लगभग ढकेलती हुई स्टडी रूम में आयी और युधिष्ठिर को आंख मूंदे आरामकुर्सी पर लेटे देखकर बोली . "अरे मैं तो समझी थी कि तुम कुछ पढ़-लिख रहे होगे, तुम तो निठल्ले पड़े हो। क्या बात है। तुम तो बड़े भैये के यहां खाने गये थे।"

"हूं।"

"क्या-क्या माल खिलाये हमारी जिठानीजी ने। और किस बात की खुशी में ये दावत करी थी तुम लोगों की।"

युधिष्ठिर ने कुछ जवाब न दिया। आरामकुर्सी के हत्थे पर बैठी हुई शकुन ने युधिष्ठिर की बांह झिंझोड़ी, बोली . "बतलाते क्यों नहीं, किस बात की दावत थी।"

"मेरी हजामत बनाने की खुशी में।"

युधिष्ठिर के गाल पर हाथ फेरते हुए शकुन बोली : "हजामत तो बढ़ रही है तुम्हारी।"

"मेरी अक्ल का मुण्डन किया है उस साले ने।"

"किसने, बड़े भैये ने।"

"बड़े भैये ने नहीं, उस तुम्हारे भैये साले ने। उसके मुंह पर पच्चीस जूते मारूं तब भी मेरा कलेजा ठण्डा न हो, गद्दार साला।"

तैश में आकर युधिष्ठिर आरामकुर्सी पर बैठ गया। शकुन बोली : "कौन भैया मेरा, बन्ने भाई।"

"और कौन हो सकता है साला।"

पति-पत्नी के बीच में थोड़ी-सी व्यर्थ की बहस हुई। तब शकुन ने सारा वृत्तान्त जाना।

"साले ने मेरा जूता मेरे सिर पर ही मार दिया।"

"मगर बन्ने भाई तो ऐसे हैं नहीं। समझ में नहीं आता, तुमसे भी पहले कोई ऐसी ही छेड़छाड़ हुई होगी तभी उन्होंने बदला लिया है।"

युधिष्ठिर अपने अपराधजड़ित मन का सत्य पत्नी के सामने न खोल सका और पुरानी री में ही, जो अब तक ईमान के आईने में अपना मुंह देख कर भी अकड़ रही थी, बोला: "साला कहता है तू नावेल लिख, मैं हिस्ट्री लिखूंगा।"

"ये उनकी बात नहीं हो सकती, यह तो तुम्हीं कहते थे कि मैं नावेल लिखूंगा। तो क्या बुरा? तुम उपन्यास ही लिखो।"

चिड़चिड़ाहट ने युधिष्ठिर को आरामकुर्सी से बरबस उठा दिया, बोला: "कहना आसान है, उपन्यास लिखना कोई मामूली बात है। अरे, मैं उस समय से परिचित नहीं, उस वातावरण से मेरी जान-पहचान नहीं, तब लिखूंगा क्या खाक। खैर छोड़ो किस्से। आओ चलो।" शकुन्तला के कन्धे पर हाथ रखकर वह सहारे से ले चला। "अब ये अपना पेट कब पिचकाने वाली हो भाई।"

हल्की झेंप के साथ शकुन बोली: "अब तो मैं भी बोर हो चुकी हूं। डॉक्टर गुप्ता ने आज ही कहा था कि आजकल, हद परसों, किसी दिन भी हो सकता है।"

दरवाज़े से निकलते हुए अध्ययन कक्ष की बत्ती बुझायी और ड्राइंगरूम फलांगते हुए सोने के कमरे में आ गये। युधिष्ठिर कबर्ड की तरफ बढ़ा, शकुन बोली: "क्यों, अब वहां क्या करोगे।"

"अरे एक पैग निकालूंगा, नींद नहीं आ रही।"

"नहीं-नहीं, अब तुम्हें नहीं पीने दूंगी। कहीं रात ही में जरूरत पड़ जाये मुझे। बीच-बीच में दर्द का उठना अनुभव कर रही हूं। आज तो माताजी भी घर में नहीं हैं, चलो लेट जाओ। मैं तुम्हारा सिर दबाऊंगी, नींद आ जायगी चलो।"

"मैं उस साले बन्ने के बच्चे की चुनौती का वह जवाब दूंगा कि साला आंखें फाड़ कर देखता रह जायगा।"

"शाबाश, यह बात कही हमारे टण्डन साहब ने। अरे चाहने पर आदमी क्या नहीं कर सकता। तुम अपनी खबरों में जो एटमास्फियर क्रियेट करते हो, उसे देखकर मुझे तो लगता है कि तुम अब तक जो अनुभव करते हो वह सही है। तुम अच्छे उपन्यास-लेखक बन सकते हो। घटना का चित्रण तुम बन्ने भाई से अधिक अच्छा और अधिक नाटकीय ढंग से करते हो। मैं बताऊं···"

"क्या।"

"तुम चांदको जी जाकर जग्गो बाबा से मिलो, वहां पहले अपने ही कोई पुरखे रहते थे।"

"अरे मेरे ही सगे लकड़बाबा की काटेज है भाई, रायसाहब बंशीधर की जिन्होंने यह चंपक मैन्शन बनवाया था। सुनते हैं वे चन्द्रिको जी के बड़े भक्त थे और हर अमावस को वह दर्शन करने जाते थे। जग्गो बाबा ने वह चन्द्रिकाश्रम हमारे पिताजी से ही तो लिया है।"

"क्या खरीद लिया है?"

"नहीं, ऐसे ही दे दिया है बाबा को। सुनते हैं कि हमारे जयन्त बाबा वहां भी कुछ दिनों अण्डरग्राउण्ड रहे थे।"

"अरे तो जाते क्यों नहीं। वहां बातें करेंगे तो कुछ प्रेरणा भी मिलेगी।"

युधिष्ठिर का थका-हारा मन फिर से नयी जीत के लिए स्फूर्ति पाने लगा।

शकुन सो गई, किन्तु युधिष्ठिर की आंखों में नींद आने की बात तो न्यारी है, पल-भर के लिए पलक तक न झपकी। उसे अपने मित्र की चुनौती को स्वीकार करके उपन्यास लिखना है, बहुत-सी बातों को सोचना है—चरित्र-चित्रण, वातावरण, ऐतिहासिक परिस्थितियां, सामाजिक बदलाव। मुझे अपने बाबा का ग्रन्थावतार कराना है। वैसे उनका जनम तो कांग्रेस के जनम के बाद ही हुआ था किन्तु उनकी डायरियां सन् 1905 से मिलती हैं। इन्हीं 'डायरियों' में अंकित विचारों और घटनाओं की पृष्ठभूमि को सजीव रूप में चित्रित कर सकूं, उसके लिए मुझे देश और काल की बौद्धिक, मानसिक और कायिक गतियों का विकास-क्रम देखना है, मुझे सन् 1905 से लेकर सन् 1942 तक के उस जमाने को बारीकी से देखना होगा जिसे मैंने अपनी आंखों से कभी नहीं देखा'' हे भगवान, कल बन्ने साले का गला घोंट दूंगा। लेकिन कल दोपहर को तो मुझे जग्गो बाबा के पास इण्टरव्यू के लिए समय तय करने जाना है। कल सबेरे बन्ने के घर जाऊंगा। उसी साले के स्कूटर पर चांदको जी जाऊंगा। अपना पेट्रोल नहीं फूकूंगा।'''क्या बदला लिया है मुझसे इस कम्बख्त ने।

क्रोध, झुंझलाहट, नये काम की कच्ची-पक्की योजनाओं का दिमागी बोझ और शराब की खुमारी की थकन – सब मिलाकर उसके दिमाग को चकरघिन्नी-सा नचाते-नचाते उसे कब सुला गई, यह वह न जान सका।

कहते हैं सपने गहरी नींद में आते हैं। नींद में एक नयी दुनिया दृश्यमान होती है'''युधिष्ठिर टण्डन हसन जावेद के स्कूटर पर चांदको जी जा रहा है और वहां जाते-जाते न जाने कैसे एक पहाड़ी रास्ते पर पहुंच गया है। पहाड़ों की दो चोटियों के बीच एक खस्ताहाल काठ के पुल से उसे दूसरे पहाड़ की चोटी पर पहुंचना है। पुल के नीचे सैकड़ों फिट नीचे गहरे में एक तेज धारावाली नदी बह

रही थी। युधिष्ठिर बहुत सम्हल-सम्हल कर पुल पर स्कूटर चला रहा है फिर भी बीच राह में ही काठ का पुल टूट जाता है। युधिष्ठिर टण्डन खुद को नीचे गिरते हुए देख रहा है। वह अपने-आपको स्कूटर समेत गिरते हुए देखकर दहशत भी खा रहा है और युधिष्ठिर टण्डन, बहती हुई तेज़ नदी में डूब जाता है। पानी के भीतर युधिष्ठिर, युधिष्ठिर को छटपटा कर ऊपर आते हुए भी देख रहा है, वह यह भी महसूस कर रहा है कि उसकी डूबने वाली काया के भीतर का जीव अभी निकला नहीं है बल्कि बहते पानी की तेज धार में भी उसका मस्तक एक जगह बाहर निकल कर स्थिर हो जाता है। युधिष्ठिर देखता है कि उसका मस्तक अंगारे-सा चमक रहा है, वह अंगारा बढ़ते-बढ़ते रूपान्तरित होकर अरुणोदय का बाल सूर्य बन जाता है। वह सूर्य तेज बहाव में भी अंगद के पांव की तरह एक ही जगह जमा हुआ है। फिर उठता है, प्रखर, प्रखरतर, प्रखरतम होते हुए मध्याह्न के सूर्य की तरह तपने लगता है···

उसकी काया किसी ने झिंझोड़ी, साथ ही शकुन का स्वर सुनायी पड़ा : "सुनते हो। उठो।"

नींद खुल गई। शकुन्तला को दर्द उठ रहे थे। युधिष्ठिर पूरी तरह से होश में आ गया। देखे हुए पहेली जैसे सपने से अपना मन हटाकर उसने कपड़े पहने और गैराज़ से मोटर निकालने के लिए चल पड़ा। दो मिनट में शकुन्तला भी अपनी नौकरानी के साथ कार तक आ गयी। अस्पताल में प्राइवेट कमरे का आरक्षण पहले ही हो चुका था। गाड़ी चलाते हुए युधिष्ठिर के मन में एक मज़ेदार खयाल आया—शकुन उसके बेटे या बेटी को दो-चार घण्टे बाद या कल तक जन्म दे देगी किन्तु उसके गर्भ-प्रसव का समय कब आयेगा। यह लिखा जाने वाला उपन्यास भी उसका ही बच्चा होगा।

दस

लगभग आधे एकड़ भूमि में सुन्दर बगीचे के बीच स्व० रायसाहब बाबू वंशीधर टण्डन के बनवाये चन्द्रिकाश्रम की बंगलेनुमा इमारत में अब कुछ और स्थान की बढ़ोत्तरी हो चुकी है। युधिष्ठिर के कुनबे के रिश्ते से बाबा डॉक्टर जगदीश-नारायण टण्डन ने लगभग तीस वर्ष पहले अपने भतीजे और उत्तरप्रदेश शासन के मंत्री श्री सुमन्त टण्डन से कहा : "यह काटेज मेरे हाथ बेच दो; मैं अब रिटायर्ड लाइफ वहीं बिताना चाहता हूं।" लेकिन सुमन्तजी ने अपने पूर्वज का वह स्थान बेचने के बजाय अपने कुनबे के जग्गो चाचा को यों ही रहने के लिए दे दिया था।

डॉक्टर साहब की वृद्धा सौभाग्यवती भी चूकि अपने पति के साथ ही रहना चाहती थी इस वास्ते उनके लिए एक कमरा और बनवाया गया। पुराना रसोईघर भी नये सिरे से बना और डॉक्टर साहब के दूर-दूर देहातो से आये हुए मरीजों के विश्राम के लिए बगीचे में ही एक हिस्से मे एक बड़ा कमरा भी डॉ० जगदीश टण्डन ने बनवाया था जिसके आगे श्री वशीधर टण्डन रोगी विश्रामालय का पत्थर जडवाकर उन्होंने सुमन्त टण्डन से ही उस समय उसका उद्घाटन करवाया था जब वह प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री का पद सुशोभित कर रहे थे। डॉ० जगदीशनारायण टण्डन, पिछले तीस वर्षों से चन्द्रिकाश्रम में ही रह रहे हैं। उनकी अस्सीवर्षीया वृद्धा पत्नी कभी अपने पति के पास रहती है और कभी अपने नगर-निवासी दो डॉक्टर पुत्रों के घरो मे। दोनो लडको की डॉक्टरी खूब चल रही है, अच्छा नाम कमा रहे है, इसलिए कि डॉ० जगदीशनारायणजी अपने समय मे स्वय भी सुख्यात फिजीशियन रह चुके थे और अपने यहा चन्द्रिकाश्रम मे भी सुबह के आठ बजे से दिन के एक बजे तक नि स्वार्थ भाव से देहाती मरीजो को देखा करते थे। उनके यहा रोगियो की अच्छी भीड हुआ करती है।

शाम को लगभग चार बजे अपने ही स्कूटर पर युधिष्ठिर चन्द्रिकाश्रम पहुंचा। वह इस समय बहुत प्रसन्न था। आज दिन मे बारह बजकर इक्तीस मिनट पर उसने एक पुत्र का पिता बनकर नयी प्रसन्नता मे रात का क्रोध बिसार कर सबसे पहले दफ्तर मे हसन जावेद को फोन किया, फिर शकुन और अपने बच्चे के लेबर रूम से प्राइवेट रूम मे आ जाने तक जनाने बलरामपुर से मर्दाने बलरामपुर तक लगभग तीन-चार बार चक्कर काट आया था। शारदाजी अपनी बहू के पास ही थी। सुमन्तजी पहले से अब काफी स्वस्थ नजर आ रहे थे यद्यपि उनके हाथ और पैरो मे पलस्तर अब भी चढ़ा था। सुमन्तजी तो अनन्त, बलवन्त और हेमन्त के बच्चो के दादा पहले ही बन चुके थे और शारदाजी भी उन सबकी ही दादी कहलाती थी पर अपने सगे पोते का मुख उन्होंने आज ही देखा था। युधिष्ठिर पहले अपनी मा की बडी-बडी बधाइया सुनाने के लिए पिता के पास गया फिर अपने जी का उतावलापन दबाने के लिए वह यो ही अस्पताल के लेबर रूम से पिता के प्राइवेट वार्ड तक आया-गया। एक बार नर्स पिताजी को पेपर पढकर सुनाती हुई दिखाई दी, दूसरी बार अस्पताल के सुपरिण्टेण्डेण्ट डॉक्टर को अपने हाली-महालियो के साथ पिताजी के कमरे मे देखकर बाहर ही से लौट आया, तीसरी बार लगभग एक बजे के करीब जब वह पहुचा था तब लतिका (नर्स) उन्हे भोजन करा रही थी।

सुमन्तजी बेटे को देखकर प्रसन्न हुए कहा · "आज तुम अपने आफिस नहीं गये। नन्हे क्या बात है?"

"जी बात तो कुछ नही पर वो—वो···"

"वो-वो कुछ नहीं, निजी जीवन की खुशी में तुम्हें अपने सामाजिक जीवन की जिम्मेदारी नहीं भूलनी चाहिए।"

"नहीं-नहीं, मैं आज—अब क्या करता पिताजी, माताजी के घर में न रहने की वजह से ही मैं रात के तीन बजे से उन्हीं की जिम्मेदारियां सम्हालने लगा।"

"पर वह तो सम्हल गई।"

"जी-जी, मैं जा रहा हूं मगर आफिस नहीं। वहां से तो आज दिन-भर की छुट्टी ले रखी है। मैं अभी जग्गो बाबा के यहां जाऊंगा।"

"क्यों ?"

"उनसे इंटरव्यू लेनी है, बाबा के सम्बन्ध में बातें पूछनी हैं।"

सुमन्तजी चुप हो गये। मुंह का कौर चाबकर फिर बोले : "जर्नलिस्ट महोदय वहां खाली हाथ नहीं जायेंगे। अगर मैं आज दादा बना हूं तो तुम्हारे जग्गो बाबा भी परबाबा बन गये हैं। रामआसरे के यहां से एक किलो मिठाई का पैकेट ले जाइयेगा। अपनी मां की तरफ से और मेरा प्रणाम भी निवेदन करना। क्या समझे। अब तो हमारे चौक का रामआसरे हजरतगंज का भी हो गया है न। आधा किलो गिलौरियां लेना, हमारे जग्गो चाचा को गिलौरियां बहुत पसन्द हैं, और आधे किलो में दूसरी मिठाइयां मगर शकुन में पांच केसरिया लड्डू जरूर रखवा ले जाना।"

चन्द्रिकाश्रम के बाहर स्कूटर खड़ा करके मिठाइयों का पैकेट हाथ में लेकर भीतर कमरे में गया। संयोग से जग्गो बाबा उस समय चाय पी रहे थे। गौर वर्ण, क्लीनशेव्ड, केवल सिर के बाल ही नहीं वरन भौं के सफेद हो जानेवाले रोयों से जग्गो बाबा का चेहरा और भी भव्य लग रहा था, बोले : "हैलो नन्हा, अरे भाई भगेलू कहां गया है।"

भगेलू पीछे के कमरे से निकलकर तुरन्त सामने आ गया। उसी समय मिठाइयों का पैकेट चाय वाली छोटी मेज पर रखकर युधिष्ठिर ने बाबा के पैर छुए। दो बार हूं-हूं करके चाय का प्याला उठाते हुए उन्होंने भगेलू से कहा : "अरे भैया के वास्ते चाय लाओ। सेब और केले भी लाना। आज ये मिठाई कैसी लाये नन्हा।"

"मां ने भिजवाई है।"

"किस खुशी में। क्या सुमन्तू का प्लास्टर कटा ?"

"जी नहीं, वो-वो यानी (रुककर) वह दादी बन गयी हैं।"

"ओह माई डियर, यानी तू बेटे का बाप बन गया। अभी तो तेरे पेशाब की बदबू भी मेरी कमीजों से नहीं निकली है, वेल-वेल। सो आई हैव रीन्यूड माई ग्रेट ग्रैण्ड फादरशिप। वेरी हैप्पी, वेरी हैप्पी। अरे भगेलू।"

भगेलू फिर दौड़ता हुआ आया : "जी सरकार !"

"देखो ये मिठाइयां एक थाली में सजाकर नन्हे बाबू को साथ लेकर पहले तुम मन्दिर में जाओ। पुजारीजी से कहना कि मैंने कहा है। और रास्ते मे माली की दूकान से एक फूलमाला भी ले लेना, क्या समझे। नन्हा, पहले तू इसके साथ जा और देवी जी के दर्शन करके आ। तब तक अरे मगेलू वह जैरमुआ की बहू से कह दे कि चाय का पानी चढा दे ताकि मन्दिर से लौटते ही इसे गरम चाय मिल सके। और सुन रे दो, मालाएं और भी बनवा लेना। बंसी बाबा और दद्दा के फोटो पर चढ़ाई जायेंगी।"

युधिष्ठिर के मन मे किसी भी देवी-देवता के लिए तनिक भी आस्था नही है, हां उसे एक ईश्वर के प्रति अब भी कहीं कोने-कचरे मे एक विश्वास बना हुआ है। वह ईश्वर कैसा है, मोरमुकुटधारी है, या पायजामा पहनता है अथवा हैट कोट, यह वो नही जानता। जानने की जरूरत भी नहीं समझता। उसका विश्वास है कि सत्य का प्रकाश ही ईश्वर है। पिता राजयोग साधन करते हैं। उसने स्वयं तो कभी नही देखा पर अयोध्या मे अधिकतर रहने के कारण मां यह बतलाया करती हैं कि रात में ग्यारह बजे वह नियमित रूप से स्नान करते हैं और फिर दो-ढाई घण्टे तक अपनी कोठरी में बन्द रहते हैं। वह कोठरी युधिष्ठिर ने देखी है। वहां कोई मूर्ति आदि प्रतिष्ठित नही है, केवल दीवार पर ॐ लिखा है। एक कुशासन, उसके ऊपर एक ऊनी आसन और अगरबत्तियों का एक पैकेट-भर ही रखा हुआ उसने देखा है। वह ध्यान में क्या करते हैं यह उसे नही मालूम। उसने पिताजी से कभी पूछा भी नहीं। चन्द्रिका जी के मन्दिर मे जब वह मूर्ति के सामने जाकर खड़ा हुआ तो मूर्ति के बजाय उसकी भाव दृष्टि मे केवल पिताजी की कोठरी मे लिखा 'ॐ' ही था। पुजारी ने युधिष्ठिर के हाथों माला स्पर्श कराकर मूर्ति को पहना दी और एक नारियल भी फोडकर उसका आधा भाग देवी को चढ़ा दिया, प्रसाद का कुछ भाग भी रख दिया और गद्गद स्वर में आयुवार्धक्यवश अपना कंपित सिर हिलाते हुए बोला · "हमरे बाबा बतावत रहे कि उई रायसाहब का पूजा करावत रहे, हर अमावस का लाल घोड़िया पर चढ़ के आवें, पूजा करें। उनकी मेहरारुऔ बड़ी भक्तिन रहीं। रायसाहब यहा चन्द्रिकाश्रम बनवाइन रहैं।"

"अब आपकी कितनी अवस्था होगी महराज ?"

पुजारी हसे : "अरे गवई गांव मा हम पचन का तारीक-सम्मत आद सौ पढावा नाहीं जात रहै बाबू। बाकी हा, बप्पा के मुह से सुना रहै कि जौने दिन मल्कार्टूरिया के बेटवा बिलाइत मां राजगद्दी पाइन रहैं वहै दिन हमार जलम भवा रहा। अरे बड़ा जमाना देखा बाबू, जब गान्ही महतमा का सोर भवा रहै तब हमूहू एक बेर लखनऊ गैं रहैं। तौन जुलूस जात रहा, हमहू घुसिगें। पुलिस हम पचन का पकरि के जेहेलखाना मां डाल दिहिस और हिंया हमरे बप्पा घबरावैं कि हमार

सिवलोटन कहां गा, कहां गा। जब पता न चला तब रोए-गाए के वैठिगे, छ: महीना बाद जब हम लौटि के आए तौ बप्पा कहिन कि भैंया का चमत्कार है।"

"याद कीजिए तब आपकी कितनी उमर रही होगी!"

"अब उमिरि का बताई बाबू। लरिका रहे, बाकी दुई बिटुअन के बाप हुई चुके रहे। हमरी जान मां बीस-एक बरस की उमिर होई तब हमार।"

युधिष्ठिर मन में हिसाब लगाने लगा। इक्कीस के आन्दोलन में गए होंगे तब बीस के थे, एडवर्ड द सेवेन्थ के कारोनेशन के दिन पैदा हुए यानी सन् दो के हैं बुजुर्गवार। काफी नक्खासी माल हैं। एक दिन इनसे भी इंटरव्यू लेने आऊंगा।

लौटकर जग्गो बाबा से चाय पीते समय बातें होने लगीं: "आपका यह पुजारी तो काफी पुराना है बाबा, करीब-करीब बीसवीं सदी के साथ ही पैदा हुआ है। शायद सन् दो में।"

आरामकुर्सी पर दोनों हाथों की उंगलियां फंसाये बैठे हुए जग्गो बाबा की आंखों में आनन्द की चमक आ गई। मुस्कुराकर हल्के अभिमान भरे स्वर में अंग्रेजी में कहा: "मैं शिवलोटन से बड़ा हूं। तुम्हारी इस बीसवीं सदी से भी पन्द्रह मिनट बड़ा हूं। मेरा जन्म 31 दिसम्बर सन् 1900 ईसवी में ग्यारह बजकर पैंतालिस मिनट पर हुआ था।"

"अरे फिर तो आप मूर्तिमान बीसवीं सदी हैं हमारे लिए। दरअसल मैं आपके पास एक दूसरे ही उद्देश्य से आया था।"

जग्गो बाबा ने केवल नजरें उठाकर उसे जिज्ञासावश देख लिया। युधिष्ठिर कहने लगा: "अगले साल जनवरी में बाबा की जन्मशताब्दी हमारे प्रदेश में राजकीय स्तर पर मनायी जा रही है न···"

"हूं, जयन्तू भैये मुझसे करीब चौदह-पन्द्रह वर्ष बरस थे, बल्कि चौदह बरस ही समझो। मैं सच पूछो तो उनके इंग्लैण्ड से लौट आने के बाद ही उनके नज़दीक आया। जब वह बैरिस्टर होकर आए थे तो कुछ बरसों तक वकीलों की दुनिया में उनका रौब सबके ऊपर गालिब था। अच्छे-अच्छे अंग्रेज जज और आला अफसरान उनकी अंग्रेजी, खासतौर से उनके बृटिश उच्चारण से बहुत प्रभावित होते थे। जिरह ऐसी करते थे कि एक बार सर रासमसूद जो अपने जमाने के बहुत उम्दा बैरिस्टर माने जाते थे उनको जबाब न दे पाये।" कहते हुए बाबा तनिक रुककर ध्यान-मग्न हो गये।

युधिष्ठिर बोला: "बाबा एक-आध गिलौरी तो और खाइए। पिताजी ने मुझे बतलाया था कि आपको रामआसरे की गिलौरियां बहुत पसन्द हैं।"

"बस-बस मैंने खा ली बल्कि सच पूछो आज दो मिठाइयां खाईं। मैं अब अपनी उम्र के छियासिवें में चल रहा हूं। मेरा खान-पान अगर सधा हुआ न रहता तो इस उम्र में तुम्हें इतना स्वस्थ नहीं दिखलाई देता। शिवलोटन पुजारी को तुम

देख ही आए हो। मुझसे दो बरस छोटे हैं और गरदन हिलने लगी है, दांत गायब और बुड्ढा खबीस हो गया है। दो डाढ़ों के सिवा मेरे दांतों की अभी कोई हानि नहीं हुई है। कान खूब सुनते हैं, चश्मा सिर्फ पढ़ने या नुस्खे लिखते समय ही लगाता हूं। जिस दिन से मुझे अपनी उम्र का इकसठवां साल लगा उस दिन से आज तक मैंने गोश्त, सिगरेट, शराब वगैरह इन सबको छोड़ दिया। यह तुम्हारी लायी हुई खुशखबरी की मिठाई भी मैंने एक अर्से के बाद खाई है। बस दिन में खाना खाने के बाद एक बताशा मुंह में दबा लेता हूं।"

युधिष्ठिर ने अनुभव किया कि बाबा बातों के क्रम को अपनी रौ में अब बदल देने हैं, बहकने लगे हैं। खैर। इतना तो इस उम्र में हो ही जाना चाहिए। अपनी बात के सूत्र सम्हालकर युधिष्ठिर बोला : "इसके मतलब हैं कि आप हमारे बाबा की पोलिटिकल लाइफ के शुरू से ही गवाह रहे हैं।"

"ओह यस-यस, अरे नाइन्टीन, नाइन्टीन में उन्होंने अपने 'पायनियर' के एक आर्टिकिल में बृटिश गवर्नमेंट पर जिस तरह से अटैक किया था वह दिन मुझे याद है। लखनऊ के तमाम पढ़े-लिखे लोगों में एक तहलका फैल गया था। उस वक्त हमारे यहां ये जो तुम्हारी विक्टोरिया स्ट्रीट है न उसमें एक नवाब साहब रहा करते थे। अरे बड़े मजेदार थे नवाब साहब। क्या नाम था बेटे, इस समय भूल रहा हूं, खैर। पहली लड़ाई के खत्म होते-होते तक वह करीब-करीब तबाह हो चुके थे। हमारे बाबा के जमाने से जिनको तुम्हारे मकड़बाबा गुमानी भैये कहते थे, वह सोने के जेवर रेहन रखकर रुपया ले जाते थे और ऐश में फूंक डालते थे। उनकी दो अंग्रेज रखैलें थीं जिनकी वजह से उन्होंने अंग्रेजी पढ़ना और बोलना सीखा था। मगर वो रखैलें तो नवाब साहब का जमाना बिगड़ते ही उन्हें छोड़कर चली गयीं मगर अंग्रेजी उनके साथ ताउम्र रही। उस जमाने में मुझे याद है कि वह हमारे यहां बापू के पास कोई जेवर गिरवी रखने आये थे। बापू ने हमारे बड़े भैये को हीरे की परख करने को अंगूठी दे दी और मुझसे नवाब साहब के लिए शर्बत लाने को कहा। अब मैं मुसलमानों के इस्तेमालवाले चांदी के गिलास में उनके लिए शर्बत लेकर आया तो वह बैरिस्टर जयन्त टण्डन साहब के आर्टिकल की तारीफों के पुल बांध रहे थे।"

युधिष्ठिर ने उनकी बातों में रुचि लेकर पूछा "शर्बत आपसे क्यों मंगवाया बाबा, उस जमाने में तो आपके यहां काफी नौकर-चाकर रहे होंगे।"

"मुझे ठीक तरह से याद नहीं बेटे। उस समय में आस-पास कोई कहार न रहा होगा और हमारे बलई मिसिर महराज किसी मुसलमान के लिए कभी पानी-सानी नहीं लाते थे, बड़े कट्टर ब्राह्मण थे। कहते थे म्लेच्छ के हाथ में पानी देने से भी उसका स्पर्श हो जाता है, उनका धरम बिगड़ जाता है। अहा क्या-क्या लोग थे उस जमाने में। अब तो हमारा यह शिवलोटन महराज भी दिन-भर चाय की

चुस्कियां लगाता है कमवख्त। हमारे जमाने में एक तो चाय का चलन था ही नहीं। दूसरे ब्राह्मण, खत्री, वनिये, ऊंचे लोग उस जमाने में चाय को वड़ी नफरत की नज़र से देखते थे।"

युधिष्ठिर को यह एहसास हुआ कि वावा की इन वहकी वातों से उसके भीतर का पत्रकार जितना लाभ उठा सकता है उससे शायद कहीं अधिक उसका निर्मित होने वाला उपन्यासकार लाभ उठा सकता है। यह सोचकर उसके पत्रकार मन की वोरियत कुछ कम हुई, वोला : "वावा, मैं अपने वावा की वायोग्राफी तो लिखना ही चाहता हूं। लेकिन सच पूछिए तो वह एक जीवनीपरक उपन्यास ही होगा।"

"अच्छा है, तुम्हारा यह खयाल मुझे वहुत पसन्द आया। मगर भई इस वक्त मैं तुम्हारी वातों में अगर फंस गया तो मेरा टाइम-टेवुल विगड़ जायगा।"

"नहीं-नहीं, मैं इस समय आपका ज्यादह वक्त भी नहीं लूंगा वावा। मैं तो खाली आपसे इण्टरव्यू लेने का समय मांगने आया था। मैं अवकी अपना टेप-रिकार्डर ले आऊंगा और आपकी वातें रिकार्ड करूंगा।

"दिस इज़ वेटर, वल्कि एक टेप रिकार्डर तुम मेरे वास्ते खरीद ही लाओ। मुझे काम मिल जायगा, खाली वक्त में वैठा-वैठा कुछ-न-कुछ वकता ही रहूंगा। याददाश्त कभी तो हिरन की तरह कुलांचें भरती हैं और कभी कछुआ चाल। तुम वायोग्राफिकल नावेल लिख रहे हो यह वात मुझे वहुत अच्छी लगी। मैं तुम्हें शायद वहुत से किस्से उस ज़माने से जुड़े हुए दे सकता हूं।"

युधिष्ठिर जव चलने लगा तो वावा वोले : "अपनी दद्दा से जाके कहना वेटे कि अव कुछ दिन हमारे साथ ही रह जायें। टेपरिकार्डर उन्हीं को दे देना और कम-से-कम छः कैसेट भिजवाना, पैसे तुम अपने कपिल चाचा से···।"

"मैं आपको प्रेजेण्ट करूंगा टेपरिकार्डर। अव तो मैं भी कमाता हूं वावा।"

ग्यारह

[डॉक्टर जगदीशनारायण टण्डन के द्वारा टेपरिकार्ड किया गया अंश :]

"हमारे ताऊजी यानी कि तुम्हारे पड़वावा डॉक्टर देशदीपक की एक वात याद आयी सो वता देना चाहता हूं। हमारे ताऊजी ने लगभग सन् चार या पांच, तारीख वहुत पक्की तो याद नहीं मगर उसी ज़माने की लगभग फोर्ड मोटरकार खरीदी थी। उस ज़माने में शहर में मुश्किल से दो-तीन मोटरकारें ही थीं, इसलिए उसकी चारों ओर वड़ी शोहरत मची हुई थी। मुझे अभी तक धुंधली-सी

याद है कि हमारे ताऊजी कभी-कभी अपने एक मित्र के यहां रहीमनगर जाया करते थे। तुमको यह सुनकर बहुत अचरज होगा कि उस जमाने में जबकि हमारे खत्री-बनिये-रस्तोगियों में अंग्रेजी एजूकेशन पानेवाले लोग आमतौर से कम ही होते थे। उनके एक क्लासफेलो लाला बल्लभदास रस्तोगी ने बी० ए० पास कर लिया था। उनका खानदान पहले तो चौक में ही रहा करता था, मगर बाद में उन्होंने यहां के पास ही रहीमनगर में एक बहुत ही आलीशान हवेली बनवा ली थी और उसी से लगा एक बहुत शानदार श्रीनाथ द्वारा भी बनवा लिया था…"

युधिष्ठिर ने टेपरेकार्डर बन्द कर दिया। बगल के कमरे में बारीक-सी कुंआ-कुंआ की आवाज सुनाई पड़ी। युधिष्ठिर का जी हरा हो गया। अपने पिता बन जाने का सुख भरा गौरवबोध भी जागा। एक सिगरेट सुलगाई, दो-एक कश खींचे। अपने उपन्यास के पहले अध्याय का श्रीगणेश करते हुए कागज पर फाउण्टेनपेन दौड़ चला।

नई फोर्ड मोटरकार, डॉ० देशदीपक ने अभी उसे चलाना सीखा ही है। यों ड्राइवर साथ रखते हैं मगर अधिकतर चलाना खुद ही पसन्द करते हैं। गाड़ी रहीमनगर की ऊबड़-खाबड़ सड़क पर हिचकोले खाती हुई आगे बढ़ रही है। चवालीस बरस के अधेड़ किन्तु हृष्ट-पुष्ट गौर वर्ण के डॉक्टर साहब के कानों पर पके बालों के पास से पसीने की लकीरें बह आई हैं। यद्यपि बड़े सबेरे ही चल पड़े थे, अभी न धूप ही बहुत तेज हुई थी और न हवा ही गर्म हुई थी : "अब और कितनी दूर होगा रहीमनगर ?" डॉक्टर साहब ने रूमाल निकालकर कनपटी का पसीना पोंछते हुए पूछा।

ड्राइवर दीनदयाल ने जवाब दिया : "बस अगले चौराहे से बाईं ओर मुड़े तो आय गया साहेब। बस इत्ती ये सड़क आधे-पौन मील की बड़ी ही खराब है हजूर, मुला गौरमिण्ट मा कौनो सुनवाई ही नाहीं होती। क्या किया जाय।"

डॉक्टर साहब कुछ न बोले, गाड़ी हांकते ही रहे। सामने से बैलों की घण्टियां बजती सुनाई दीं। नये-नये ऊपर उठते हुए सूरज की धूप बैलगाड़ी में लगे हुए गन्नों के ढेर पर चमक रही थी। डॉक्टर साहब बोले : "गवरमेण्ट बेचारी क्या करे, यह सड़क तो सीधे काकोरी से आती है न।"

"हां हजूर, आजकल रात-रात भर ई सड़क पर बैलगाड़ी-ही-बैलगाड़ी चला करती हैं, सरकार तौन गड्ढे पड़ गए हैं। आप ठीक ही कहत हो कि गौरमिण्टौ बिचारी कहां तक गौर करे।"

गाड़ी को और भी बाएं सरकाते हुए डॉक्टर साहब के मन में विचार आया, बैलगाड़ी के सामने में हवागाड़ी आ गई। लेकिन इस कीमती 'हवागाड़ी' को

चल ने वाले शहर में अभी दो-चार ही हैं। बीसवीं सदी आ गई, मगर भारत में अभी उन्नीसवीं, अट्ठारहवीं, सत्रहवीं और भी पीछे की न जाने कितनी सदियां इन्हीं बैलगाड़ियों पर गुजर गयीं, आगे भी गुजरती जाएंगी। बीसवीं क्या इक्कीसवीं सदी भी आ जाये तो भी हमारे हिन्दुस्तान में बैलगाड़ियों की ही बहुतायत रहेगी। दो-चार और खतरनाक गड्ढों में धचकती, झकोले खाती डॉक्टर देशदीपक की फोर्डकार आखिरकार रहीमनगर की पक्की सड़क पर बाईं ओर मुड़ ही गई। कच्चे-पक्के छोटे-छोटे घरों के बच्चों की भीड़ 'हवागाड़ी—हवागाड़ी' कहकर चिल्ला उठी। बस्ती अभी खुल ही रही थी। एक हलवाई की दूकान पर खड़े व्यक्ति को देखकर गाड़ी रोककर डॉक्टर साहब ने दीनदयाल से कहा : "इससे पूछो तो, लाला वल्लभदास की हवेली किधर है ?"

"अरे ई दहिनी अलंग जौन निमहरा लागि है बस ऊ के बादै उनकी हवेली आपका दिखाई पड़ जाई," हलवाई ने ड्राइवर को पता बतला दिया।

डॉक्टर साहब एकाएक कार से बाहर निकल आए। खड़े-खड़े ही एक अंगड़ाई ली और दीनदयाल से बोले : "पण्डित, मैं पैदल ही चलूंगा, तुम पीछे-पीछे गाड़ी लेकर आओ।"

लाला वल्लभदास रस्तोगी बी. ए. और डॉ. देशदीपक टण्डन एल. एम. एस. आज के दोनों ही प्रतिष्ठित महानुभावों ने कैनिंग कालेज में सहपाठी के रूप में संयोगवश लगभग दो वर्ष साथ बिताये थे। उस समय दोनों में कोई खास घनिष्ठता नहीं हुई थी। वल्लभदास पहले चौक में ही रहते थे। बचपन ही में माता और पिता की छत्रछाया खो दी थी। पिता छोटी पूंजी से महाजनी करते थे। वह भी उनकी अबोधावस्था में इनके सगे-सम्बन्धियों ने हथिया ली। एक रिश्तेदार के घर में ही तगादे की नौकरी पा गए। इसी दौड़-धूप में वल्लभदास ने पढ़ने की लगन लगाई, ज्यों-त्यों कुछ पढ़े। शुरू की दो-चार परीक्षाओं में नामवरी हासिल की इसलिए इनके मालिक के मन में रिश्तेदारियत का जज्बा ज़ोर से उभार दिया। और कोठी में भी तगादगीरी से इनका पद बदलकर बहीखाते लिखने के काम में लगा दिया गया। डॉक्टर साहब पहले ही वर्ष में शान से इण्ट्रैंण्स पास हो गए, वल्लभदास भी तीसरी श्रेणी के पांचवें सवारों में आ गये थे। बस इतना ही नाता था। डॉक्टर साहब भूल भी गए थे कि एक दिन अपनी मरीज़ा गृहलक्ष्मी को दिखलाने के लिए वल्लभदास डॉ० देशदीपक के यहां आ पहुंचे। पुरानी जान-पहचान नये सिरे से पोढ़ी हुई, डॉक्टर साहब के ही शुभ हाथों से गृहिणी के रोग का सफल आपरेशन हुआ। बस तब से ब्योहार-बरताव, प्रेम-भाव में अधिक घनत्व आ गया था। लाला वल्लभदास बी० ए०, बैंकर पिछले चालीस वर्षों में बल्कि सच पूछिए कि जिस दिन वल्लभदास के घर में पत्नी की छविश्री आकर स्थापित हुई उसी दिन से वल्लभदास की तकदीर मानो उड़नखटोले पर

सवार हो गई। अपनी हुण्डी-पुरजे का काम चालू किया, पुराने मालिक ने भी सिर पर हाथ रखा और आज भगवान श्रीनाथ जी की दया से लखनऊ और उसके दो-चार पांच जिलों में उनकी आढ़तें और उगाही फैली हुई हैं। मुनीम-गुमाश्ते हर घड़ी हिसाब-किताब लिखा ही करते हैं, हुण्डियों का भुगतान भी होता है। छः आने, तीन पैसे के सूद पर खरे असामियों का रुपया जमा कर लिया करते हैं। बैंकों के भी आड़े पर काम आते हैं। इसीलिए लाला की बड़ी साख है, दूर-दूर के लोग इनके यहां आते-जाते ही रहते हैं। सवेरे सात बजे टहलते छड़ी हिलाते हुए डॉ० साहब ने एक बड़े फाटक में प्रवेश किया। अन्दर एक खासा बड़ा मैदान है जिसके बाद पक्की चौमंजिली हवेली बनी हुई है। बड़े आदमियों के नौकर अपने महा नित्य ही कोई न कोई बड़ा आदमी देखने के इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि मनुष्य को सरसरी नजर से भी देखने की परवाह नहीं करते। परन्तु डॉक्टर साहब के आगन में खड़े होकर कहा जायें, किससे पूछें के अन्दाज में कुछ सोच ही रहे थे कि हवागाड़ी की पों-पों ने तीन-चार नौकरों को दो-तीन दरवाजों से यों निकाल दिया जैसे दरवा खोलने पर मुरगी के चूजे फड़फड़ाकर निकलें। हवागाड़ी वाले बड़े आदमी के लिए हाथ जोड़ते, कमरें झुकाते हुए हजूर का नाम-पता पूछने लगे। इस पर हजूर के बजाय गाड़ी से निकले वर्दीधारी पण्डित दीनदयाल ने रौब से कहा: "खबर कर दो कि लखनऊ वाले डॉक्टर साहब तसरीफ लाये हैं। पहले हजूर का बैठक खाना मा लै चलो।" डॉक्टर साहब आराम से मखमली, विलायती कोच पर आसीन हुए। लाला अलखदास का कमरा क्या था मानो किसी नवाब-बादशाह के महल का एक टुकड़ा था। दीवारों पर सुनहरे फ्रेम के बड़े-बड़े दर्पण, झाड़-फानूस और भगवान श्रीनाथ जी का एक बड़ा चित्र कमरे की शोभा बढ़ा रहे थे। बैठकखाने में बैठते ही पखा झलने वाले नौकर दौड़ते हुए आ गए। एक नौकर डॉक्टर साहब के जूते-मोजे उतारने लगा, दूसरे ने गीले तौलिये से पैर रगड़-रगड़ कर पोंछे, मुह पर छींटें मारने और कुल्ले करने का प्रबन्ध भी सेवकों ने सम्पन्न किया। तब तक लालाजी छड़ी के सहारे अपने भारी-भरकम शरीर को सम्हाले हुए आए: "अरे डॉक्टर साहेब, आज ये ईद का चांद यहां कैसे उतर आया भाई?"

"अरे भाई एक सज्जन के काम से आया हूं, मैंने सोचा तड़के ही निकल चलूं, दोपहर होने तक आसानी से घर भी पहुच जाऊंगा।"

"अरे अब ई सब फिकिर छोरौ, बरसो बाद हमरे घर आये होंगे। ओबे महगुए सुन, मालकिन को खबर दे झट से कि लखनऊ से डॉक्टर साहब आये हैं। सब बाल-बच्चन, बहू-बेटों को लेकर आवें, सलाम-बन्दगी कर जाए।"

चौमंजिली हवेली में हड़कम्प मच गया। बच्चों को जल्दी-जल्दी नहला-धुला कर नये कपड़े पहनाये गए, सलमे की टोपिया लगायी गईं, डिठौने के तौर पर

काजल के टिपकने भी लगाये गए। मूल्यवान रत्नाभूषणों और साड़ियों की प्रदर्शनी-सी बनी हुई लम्बे घूंघट वाली बहुओं के साथ श्रीमती वल्लभ ने प्रवेश किया। बीमारी के कारण बरसों पहले ही डॉक्टर साहब से उनका पर्दा छूट गया था। सबसे राज़ी-खुशी खैर-सल्ला हुई, फिर जलपान के मिष्ठाहारी, फलाहारी, और दुग्धाहारी दौर चले, तब काम की बात हुई। डॉ० देशदीपक अपने एक मित्र मेडिकल प्रेक्टीशनर डॉक्टर श्याममनोहर गुप्ता के काम से आये थे। श्याम-मनोहर ने अपनी बेटी के विवाह के अवसर पर वल्लभदास बैंकर से ऋण लिया था, जो अब व्याज और छियाज के कारण और बढ़ गया है। डॉक्टर साहब बेटी के विवाह के बाद किसी और से ऋण लेकर ऊंची डिग्री के वास्ते विलायत चले गए हैं। पहले ऋण की मियाद चढ़ चुकी है। वल्लभदास डॉ० श्याममनोहर के घर पर कुरकी ले जाने वाले हैं। डॉ० श्याममनोहर की पत्नी असहायावस्था में दौड़कर कल डॉक्टर साहब के घर पहुंची। संयोग यह भी था कि डॉक्टर श्याम-मनोहर की दूसरी बेटी की सगाई भी कल ही पक्की होने वाली थी। यदि कुरकी वाले आये तो सगाई वाले उखड़ जाएंगे।

डॉ० देशदीपक, श्याममनोहर की इस उधारू वृत्ति से अत्यन्त पीड़ित थे। जाने कितने छोटे-बड़ों से छोटी-बड़ी रकमें बटोर कर वह व्यक्ति अस्पताल की अधेड़ एंग्लो-इण्डियन मैट्रन के साथ इंग्लैण्ड भाग गया है। अब वह जाने कभी लौटकर आवेगा या नहीं यह भी कोई कह नहीं सकता। पीने और जुए की लतों ने उन्हें यों ही बदनाम कर रखा था, अब जाने क्या हाल होगा। जो हो, डॉक्टर देशदीपक को श्रीमती सरोजकुमारी देवी के मान की रक्षा करनी ही होगी। सरोजकुमारी जी आर्य समाज के महिला विभाग की उत्साही कार्यकर्त्री थीं। पति के इंग्लैण्ड चले जाने के बाद वह एक आर्य कन्या पाठशाला में अध्यापिका बनकर अपनी छोटी बेटी और बेटे को बड़े तप से पढ़ा रही थीं। कौशल्या देवी भी सरोजकुमारी से प्रेम और आदर का भाव रखती हैं। डॉ० टण्डन ने श्रीमती सरोज को वचन दिया कि वे उन्हें इस संकट से उबार देंगे।

सुनकर लाला ने पलथी बदली, बोले : "डॉक्टर साहेब, तुम हमारे मित्र हो, उपकारी भी हौगे, तुम्हारी बात हम टाल नहीं सकते। पर बात ऐसी है कि हारे ब्योहारे लज्जा नकारे। डॉ० श्याममनोहर चालबाज़ आदमी हैगा। उनकी धरम पत्नी देवी के लिए हमारे मन में बरा आदर-भाव हैगा। बाकी भैया डॉक्टर साहेब ये भी तो समझो कि घोरा घास से आसनाई करिहै तो खइहै क्या—हें-हें-हें। महंगाई कैसी बढ़ रही हैगी देखते नहीं हो। गेहूं ससरा पांच रुपये मन बिक रहा है, चावल आठ-नौ रुपये मन हुइगा, तेल अब घी के भाव मिलता हैगा।"

"मैं यह सब जानता हूं वल्लभदास, मगर मैं उस निराश्रित अबला की इज्जत बचाने का वचन दे चुका हूं और उसे निबाहूंगा भी। यह बताओ कि श्याम-

मनोहर ने तुमसे मूल रकम क्या ली थी।"

लालाजी हंसे, कहा : "अरे भइया, ई एक का मामला तो हैगा नहीं, सैकरन केसेज परे हैं हमरे हिया। अब किसी मुनीम से कागज-पत्तर देखके बताय सकते हैं, अभी कैसे बताय दें।"

"वल्लभदास, तुम हमसे उड़कर बच नही सकते। तुम्हारे यहां इतवार की छुट्टी तो होती नहीं। मैं जानता हूं।"

"अरे पर नौ-दस बजे रोटी-पानी करके आवेंगे भाई। ई तुमरा मतब तो है नहीं कि सबेरे साते बजे से भीर लग जात हैगी।"

बात काटकर डॉक्टर साहब बोले : "वल्लभदास, मैं बात कम करता हूं, तुम जानते हो। देखो, मैं खाली हाथ नहीं जाऊंगा। जो तुम्हारा खास कर्मचारी हो उसे अभी बुलाकर कागज-पत्तर देखो। मैं चेकबुक लेकर आया हूं। तुम्हारी रकम चुका कर ही जाऊंगा।"

"हम तुमसे कुच्छो नही लेवा डाक्टर साहेब।"

"मगर हम तो आज तुमको गला दबाकर देवा, छोड़ूंगा नहीं। एक महिला की इज्जत का सवाल है।"

खैर कागज-पत्र भी निकल आये, हिसाब-किताब भी मिल गया, सूद-ब्याज मिलाकर साढ़े-बारह हजार की रकम निकली। डॉ० देशदीपक ने अपनी चैकबुक निकाल ली। पांच हजार की चैक काटी और श्याममनोहर का पुरनोट हाथ में उठाकर उसे अपनी जेब में रखने लगे।

"अरे-अरे, ई का करत हो डाक्टर साहेब।"

"तीन हजार तुम्हारे मूल के, दो हजार मैंने ऊपर से दे दिया। बाकी सब ब्याज-बट्टा तुम्हें छोड़ना ही पड़ेगा। लड़की की शादी है। बच्चों को पढ़ाना-लिखाना भी है। दुख-सुख के दिन सबके आते हैं।"

वल्लभदास तुनककर बोले . "हमें तो दबा लिया तुमने। अब बिटेवा की मैरिज कैसे करिहे।"

"उसकी चिन्ता तुम मत करो वल्लभदास। मैं आर्यसमाजी पद्धति से विवाह करवाऊंगा और जो खर्चा होगा वह अपनी जेब से करूंगा।"

वल्लभदास बोले : "डॉक्टर साहेब, हमने आदमी बहुत देखे मगर तुम अपनी मिसाल अपने आप ही होगे। अरे अपने लरकन-बच्चन की खातिर भी कुछ छोरत जाओ भैया। तुमरा बरा लरका···।"

"हां, उसने एफ० ए० का इम्तिहान दिया है। देखो, दो-चार दिन में रिजल्ट आता ही होगा।"

"और छुटका तुम्हारा ?"

"वह इस साल नवें में आया है। उसको पढ़ा-लिखा रहा हूं। कमाई के दो

पैसे उसके लिए भी अलग डाल देता हूं। दो पैसे समाज को अर्पित कर देता हूं, उसमें कौन-सी बड़ी बात है। अच्छा वल्लभदास, अब चलें।"

वल्लभदास गिड़गिड़ा कर बोले : "ऐसा है भैया, वो पुरनोट हमें दै जाओ।"

"पुरनोट अब परनोट हो गया, वल्लभदास, भूल जाओ।"

"अरे-अरे हजारन का घाटा कराय रहे हौ डाक्टर साहेब। हमरा जिऊ खराब हुई जाई।"

"कोई बात नहीं, दवा मैं मुफ्त में दे दूंगा।"

"हजार-दुई हजार कहोगे तो कम कर देंगे, बाकी इत्ती बरी रकम…"

डॉक्टर साहब कुछ न बोले, कमरे से बाहर निकलने लगे। वल्लभदास हड़बड़ा कर उनके साथ निकले। बरामदे में खस की टट्टियां भिगोई जा रही थीं। वल्लभदास बोले : "सुनो, लाडसाहब के सिक्रेटरी हमफी साहब से तुमरी बड़ी जान-पहचान है। हम सुना है कि उइ तुमका बहुत मानत हैं।"

"हां, उनसे क्या काम है तुम्हारा।"

"उनको एक दिन अपने हियन बुलाना चाहते हैं, हम।"

"क्यों?"

"अरे यार हमफी मेहरबान हो जायं तो हम भी न्यू इयर के डे रायसाहब हुई जायेंगे।"

डॉक्टर देशदीपक मुस्कुराए, बोले : "अब तुम भी एक मोटर खरीद लो वल्लभदास। मोटर से हमफी साहब पर तुम्हारा अच्छा रौब जमेगा हें-हें-हें-हें।"

इस बार डॉक्टर साहब पीछे आराम से बैठ गए थे। गाड़ी दीनदयाल चला रहा था।

बारह

रहीमनगर से लौटकर डॉक्टर टण्डन की गाड़ी ने जब 'चंपक मैन्शन' में प्रवेश किया तो जून की दोपहरी क़यामत बरसा रही थी। इसी लू और तपिश से बचने के लालच में वह घर से जल्दी ही निकल गए थे, फिर भी लाला और उनके घर-वालों की बातों और खातिरदारियों के घेराव में जिसका अन्देशा था, वही समय हो गया। अब आयु का चवालीसवां वर्ष चल रहा है। चौक में, शहर में अपनी ही उमर के बहुत-से लोग उनके सामने बूढ़े नजर आते थे। डॉक्टर साहब नियमित व्यायाम और खान-पान के संयम से अपेक्षाकृत बहुत स्वस्थ और युवक लगते हुए भी अब कुछ-कुछ थक चले हैं। उनके व्यावसायिक और सामाजिक जीवन का हर

दिन लगभग पन्द्रह-सोलह घण्टों का रहा है, कभी-कभी तो और भी अधिक समय लग जाता है। रहीमनगर से लौटते समय यात्रा में पीछे आराम से खिड़कियों के पर्दे बन्द कर लेटे रहने के बावजूद डॉक्टर टण्डन जब गाड़ी से पोर्टिको में उतरे तो बदन अकड़ा और अलसाया हुआ था। मोटरकार से बाहर निकलकर डॉक्टर साहब ने एक अंगड़ाई ली, कमर सीधी की, फिर दीनदयाल से कहा : "अब सझा की बिरिया छुट्टी मनाओ पण्डित, अब हम कहीं न जाव।"

दीनदयाल ने गिड़गिड़ाहट में खिली बत्तीसी निकालकर कहा : "आप मन की बात जान लेत हैं धर्मावतार। बस हमहूं अब सीधे मोहनलालगंज जाय रहे हैं, हुजूर।"

"वहां क्या काम है ?"

"हमरे साले की बिटेवा का मुण्डन है, आज। तौन सब काल्हे हुआ चले गए। अब आपका हुकुम हुई गवा है तो हमहू चलें जाव।"

"तो सवेरे अस्पताल के वखत तुम न आ सकोगे। खैर, कोचवान से कहते जाना कि मैं सवेरे फिटन पर चला जाऊंगा।"

"साहेब के बेटवा जियें। हुजूर आप बड़े दीनदयाल हौ।"

पानी पड़े खस की टट्टियों मढ़े बरामदे में प्रवेश करते ही डॉक्टर साहब का मन भी तरी में आने लगा। पुराने नौकर बुद्धू का बेटा जोखन भीतर जाने के दरवाजे खोलकर अदब से खड़ा हो गया। डॉक्टर साहब बैठक के कमरे में घुसे। आज यद्यपि छुट्टी का दिन होने की वजह से उन्होंने कोट-पैन्ट नहीं पहना था फिर भी ड्राइगरूम से लगे हुए छोटे निजी दफ्तर के कमरे के गुसलखाने में जाकर बाहर के कपड़े बदले और हाथ-पैर धोकर मुह पोंछते हुए गुसलखाने के बाहर निकले, तो कौशल्या सामने खड़ी थी। कौशल्या का मुख देशदीपक के लिए 'नन्दन कानन' है। आंखों में आंखें डालते ही सहज भाव में जीवन की पूर्णता का अनुभव होने लगता है।

"बड़ी देर लगा दी। आप तो कह रहे थे कि जल्दी आ जायेंगे।"

"अरे भाई, लाला वल्लभदास को तो जानती ही हो, फिर उनकी मैडम छन्नो देवी—रात भर ओस में रखी ठण्डी, बासी खीर और कचौड़िया खिलाईं। फिर थोड़ी देर में बरफ में दबाये हुए खरबूजे आ गये। तरबूज का शरबत आ गया। अरे क्या बताऊं।"

'सरोज का काम हुआ ?"

"मैं पाच हजार की चैक दे आया हू। लाला वल्लभदास मना करते रहे मगर मैं देके चला आया।"

कौशल्या कुछ उदास हो गयी, बोली - "अरे, यह तो कुछ बात नहीं भई। महाजनों के हथकण्डे बड़े पैने और बारीक होते हैं।"

"वह कुछ नहीं करेगा कुशलो। वल्लभदास जानता है कि जिस काम में मैं पड़ता हूं उस काम में फिर किसी और का दखल पसन्द नहीं करता।"

"आप तो खूब खातिरदारियां करवा कर आ रहे हैं, मैं भूखी बैठी हूं, जल्दी चलिए भई।"

पेट पर हाथ फेरते हुए डाक्टर साहब खाना खाते हुए बोले : "भूख तो सच पूछो नहीं है। तुम लड़कों को साथ लेकर बैठो, मैं टेबुल पर बैठ जाऊंगा।"

"लड़के तो दोनों सवेरे से ही चौक गए हैं।"

"ओह, आज तो गनेसी चाचा का श्राद्ध है। तो चलो, तुम्हें खिलाने के लिए तो मुझे खाना ही पड़ेगा।" कहकर कौशल्या के दाहिने कन्धे पर हाथ रखकर एक मीठी दबोच दी। फिर कहा : "तुम्हारे बेटे हमारे फेमिलीहाउस से गहरा अपनापन रखते हैं। यह देखकर मुझे बहुत सन्तोष होता है रानी। और यह भी तुम्हारी ही शिक्षा और अनुशासन के कारण हुआ।"

"पिताजी कहा करते थे जो घर से न जुड़ा वह महल्लेवालों से भला क्या जुड़ेगा। और जो घर और महल्ले से ही न जुड़ा वह नगर और देश से क्या जुड़ेगा।"

पति-पत्नी बरामदे में लगी खाने की मेज़ के पास आ गये। आंगन के ऊपर छज्जे को मोमजामे से ढंक दिया गया था, घर की हर खिड़की खस की तरावट और महक दे रही थी। बहूजी और डॉक्टर साहब को आते देखकर सामने रसोईघर और नौकरों-चाकरों में बिजली की-सी फुर्ती आ गई। पंखा खींचने वाला अंगनू अपने काम पर मुस्तैद हो गया। रसोईघर में थालियों और बरतनों की खड़खड़ाहट तेज हो गई। मुंशी प्रयागनारायन के नये-नये बरफ के कारखाने से एक-दो छोटी सिलें सवेरे ही इस घर में आ जाती हैं। जस्ते की सुराहियों में लौंग और कपूर के डले डालकर उन्हें बरफ में रख दिया जाता है। भोजन से पूर्व पति-पत्नी ने मंत्र पढ़े, हाथ जोड़े।

बड़े पकौड़ों की स्वादिष्ट कढ़ी, देहरादूनी बासमती चावलों और अरई के शुद्ध घी के साथ मजा दे गई। बरफ में रखे ठण्डे खरबूजे भी बहुत मीठे थे, पति-पत्नी ने सराह कर खाये। नीचे जो कमरा पहले कभी देशदीपक की मां का था उसी में कौशल्या अब अपना अधिकांश समय बिताती हैं। अन्तर केवल इतना ही हुआ है कि तख़्त की जगह अब एक सादा निवाड़ का पलंग और एक छोटी-सी किताबों-भरी शीशे की अलमारी भी जुड़ गई हैं।

यों तो भोजन करके डॉक्टर साहब अपने ऊपर के कमरे में ही दो घण्टे विश्राम करते हैं, किन्तु आज घर में बच्चे थे नहीं इसलिए पत्नी के कमरे में ही आकर लेट गए। नौकरों को खाने और आराम करने की छुट्टी देकर कौशल्या भी आ गयीं, और पति के पास बैठते हुए पूछा : "जो रुपये सरोज के पति का

ऋण उतारने में आप दे आये वह तो अब आपके पास लौटके नहीं आयेंगे।"

देशदीपक सुनकर कुछ क्षण चुप रहे, फिर कहा : "सरोज ने कहा तो है कि धीरे-धीरे करके वह इस राशि को लौटा देगी परन्तु मुझे लगता है कि शायद तुम्हारा अनुमान ही ठीक साबित हो। उनके न लौटने से क्या तुम्हारे मन को दुख होगा।"

पलंग पर सरककर दीवार से टेक लेते हुए पति के पैर अपनी टांगों पर फैलाकर वह दाबने लगीं, फिर कहा, "बड़ा अजीब प्रश्न है, पांच हजार की रकम इतनी छोटी भी नहीं कि उसके निकल जाने का दुख न हो। साथ ही उनमें सरोज का कष्ट निवारण हुआ इसका सन्तोष भी है। अरे अभी तो हम लोगों के आगे भी बहुत खर्चे हैं, आप कहते हैं कि बड़े को इंग्लैण्ड भेजेंगे।"

पैर दबाते हुए कौशल्या के हाथ पर अपना हाथ रखकर देशदीपक बोले : "सुनो, लाहौर में डॉक्टरी पढ़ने जाने से पहले मां और पापा, खास तौर से पापा मुझे इंग्लैण्ड भेजने के लिए मन-ही-मन बड़े परेशान थे, तब पैसों की कमी थी। मां कहती थीं, गहने बेचकर भेज दूंगी, किन्तु पापा को यह अच्छा नहीं लगता था। और न तिल्लोकी चाचा या कलकत्ते के विपिन मामा से ही उधार लेना चाहते थे। मां-पापा दोनों ही बड़ी मुश्किलों में पड़े थे उन दिनों, उधर तिल्लोकी चाचा के दो-दो लड़के इंगलैण्ड जा रहे हैं। यह बात पापा को बेहद कचोट रही है, मुझे पता लगा। मैंने कहा मैं इंगलैण्ड नहीं जाऊंगा और अगर कभी गया तो अपने पैसों से जाऊंगा। तब तो धन के अभाव ने मेरे भाग्य को लाहौर पहुंचा दिया और वहां जो कुछ मिला उसके विषय में तुम्हारे मुह पर क्या कहूं। तुम खुश रहो रानी, परोपकार में तुमने अगर किसी को आज पांच हजार दिये हैं तो भी ईश्वर की दया से तुम्हारी यह हैसियत अवश्य है कि मौका पड़ने पर चाहो तो अपने दोनों बेटों को एक साथ इंगलैण्ड भेज सकती हो। मेरे बाप की तरह तुम्हारे बेटों के बाप को किसी चाचा या मामा के आगे हाथ फैलाने की नौबत नहीं आ सकती।"

कौशल्या अधलेटी-सी होकर पति के शरीर से सट गई, कहने लगीं : "आप के रहते मुझे कोई चिन्ता नहीं है। आपको तो भगवान, मेरा कवच बनाकर लाहौर भेजना चाहते थे, इसलिए मां और पापाजी के भाग्य ने पैसों की कमी का प्रपंच रचा था'' फिर भी मेरे हिसाब में अभी मेरी आने वाली दोनों बहुओं को देने के लिए तुम्हारे पास इतना नहीं आया कि बराबर से बांट सकूं। इसीलिए जुड़े में से ये पांच हजार रुपये मुझे कुछ-कुछ अखर भी रहे हैं, तुमसे झूठ नहीं बोलूंगी। मेहनत से जुड़ी राशि पलभर में ही निकल गयी।"

पत्नी को छाती से चिपटाकर उनके सिर पर हाथ फेरते हुए देशदीपक बोले . "नारी का मन संयोग से अगर कभी मुरझा आए तो भी उसके भीतर से मोह

की महक नहीं जाती। पगली, अभी मेरी सर्विस के ग्यारह वरस बाकी हैं और वाहर भी ईश्वर की दया से कोई दिन ऐसा नहीं जाता जिस दिन मेरी जेब में तुम्हारी तिजोरी के लिए कुछ न कुछ खुराक न निकले।"

कौशल्या कुछ बोलीं नहीं, केवल पति की वाईं वांह से अपना मुंह चिपकाये रहीं। पति का छाती पर चलता हुआ हाथ भी रुककर सुहाग का स्थायी सुख पा रहा था। पति-पत्नी कुछ क्षण मौन रहे, फिर देशदीपक ने कहा : "जयन्तू अपना वड़ा ब्रिलिएण्ट लड़का है कुशलो, मैंने बहुत सोच-समझ कर ही उसे अपने प्रोफेशन में नहीं डाला। वह वार-ऐट-लॉ वन कर आयेगा तो इलाहावाद के पं० मोतीलाल और कलकत्ते के सर रासबिहारी से कम नहीं कमायेगा। उसकी दलीलें सुन-सुन कर मेरे दोस्त कहते हैं कि ये गजब का वैरिस्टर बनेगा।"

छाती का हाथ गले में आ गया, चेहरा नीचे कन्धे पर ही रहा। "जब पिता इतने गजब के सिद्ध-प्रसिद्ध हुए तो मेरा वेटा क्यों न बनेगा।"

पति ने पत्नी को और ऊपर खींच लिया और चेहरा देखने लगा। पति को अपनी ओर दूर कहीं खोयी हुई रीझ-भरी टकटकी लगाये देखकर कौशल्या ने अपनी आंखें मूंद लीं। देशदीपक कुछ-कुछ प्रौढ़ और स्थूल हो चली अपनी प्रिया के मुखड़े पर उसके चौथाई सदी पहले का रूप निहार रहे थे। कौशल्या तब अनिन्द्य और अनुपम सुन्दरी थीं। उनके मुख पर तब कौमार्य का तेज कैसा चमकता था। देशदीपक की प्रिया के मुख पर तेज आज भी है पर वह व्यक्तित्व का है। कौशल्या का सौन्दर्य अब भी अत्याकर्षक है किन्तु आदर के भाव जगाता है। कितना बड़ा संकट आया था इसके भाग्य पर। कैसे परिस्थितियां बनीं, कैसे धुन्ध में खो गई थी इस अनिन्द्य सुन्दरी की सुनहरी भाग्यरेखा। यह दिव्यात्मा आज कैसा अदिव्य जीवन विताने के लिए बाध्य हो जाती—नहीं, इसकी पुण्य शक्ति बहुत थी। हम लोग पहुंच गए।। इसका आत्मतेज किसी प्रकार की हीन स्थिति का पुनर्विवाह स्वीकार ही नहीं कर सकता था। यह तो मेरा भाग्य नक्षत्र बनकर अचानक मेरे जीवन में चमकनेवाली थी। हाथ से मुखड़ा उठाकर अपने ओठ उसके ओठों पर धर दिए। पत्नी क्षणिक सुख का स्पर्श देकर अलग हो गई। अपनी कोहनी पर अपना सिर टिकाकर पति की ओर देखते हुए कौशल्या बोलीं : "अरे हां, एक बात मैं कल से सोच रही थी और वार-वार भूल जाती थी —आपका हंसो मुझसे पांच सौ रुपये उधार मांग रहा है।"

"किसलिए ?"

"आजकल यह जो स्वदेशी की लहर चली हुई है न, तो कहता था कि माताजी जो मंजन पिताजी हम लोगों के लिए बनवाते हैं, उसे अधिक बनवाकर अगर हम बेचें तो लोगों को भी लाभ होगा और हमें भी। साथ ही स्वदेशी के आन्दोलन में भी हम लोग अपना योग देंगे।"

पत्नी की गर्दन सहलाती हुई मुलायम हथेली एकाएक दवाव लेने लगी। देशदीपक कह रहे थे : "अच्छा अब समझा कि हंसो वाबू आजकल मेरे मतब मे रामभरोसे के पास बार-बार क्यो आ रहे हैं—(हल्का हंसकर) मेरे बाबा लाला मुसद्दीमल की रूह अब फिर से हमारे घर में घुस रही है। तुम तो जानती ही हो कुशलो, नवाबी समय मे हमारे यहां कपड़े का ही कारवार होता था। हमारी चौक की हवेली को देखकर ही तुम उस हैसियत का अनुमान लगा सकती हो। फिर हमारे सकड़बाबा और परबाबा जरा रईसी मिजाज के साबित हुए। घर की लक्ष्मी पचला हो उठी। लेकिन मेरे बाबा हारे नहीं, मजदूर के सिर पर कपड़ों का गट्ठर लदवाकर रईसों और नवाबों की हवेलियों पर बराबर चक्कर लगाते ही रहते थे। मैं समझता हूं, मेरी तीन-चार पीढ़ियों मे मेरे पापा बिल्कुल अलग निकले थे। आज अगर किसी से कहूँ तो लोग झूठ मानेंगे कि बारह-तेरह बरस की आयु पाने तक मेरे पापा फारसी की ऊँची परीक्षा पास कर चुके थे। अरे, राजा राममोहन राय ने तो और भी कमाल किया था, नौ बरस की आयु में फारसी के पण्डित हो गए थे।"

"माजी के लिए पापाजी ने बाबाजी को अपनी दूसरी शादी करने से रोक दिया था।"

"हा, उन्होंने अपने समय और पिता से न्याय के लिए विद्रोह किया, घर छोड़ा, जाने कहा-कहा नौकरिया की। मैं खूब जानता हू कुशलो, पापा अपने हृदय और बुद्धि, दोनों ही से अंग्रेजी शासन के विरुद्ध थे लेकिन उनके मन में जाने किस तरह से यह बात भी बैठ गई थी कि अंग्रेजों की चाटुकारी किए बिना किसी व्यक्ति की उन्नति नही हो सकती। अंग्रेजो के सामने उनकी जबान नही खुलती थी। यस सर या आलराइट सर के अलावा तीसरी बात मुह से नही निकलती थी। अंग्रेजों से अपना विरोध प्रकट भी करते तो ऐसी लज्जित मुद्रा बनाकर बात कहते जैसे सूरज को दीया दिखा रहे हों।"

"अपने-अपने स्वभाव होते हैं जी, यह मत भूलो कि हमारी माजी और पिताजी ने तुम्हारे लिए और तुम्हारे बहाने हमारे लिए भी बहुत कुछ किया। उनके अहसानों से हम मुक्त नही हो सकते। मेरे सास-स्सुर अगर ऐसे बड़े दिलवाले न होते तो तुम्हारे इतनी दया दिखाने के बाद भी मेरा और तुम्हारा जीवन सुखी न हुआ होता।"

देशदीपक बोले . "मैं तुम्हारी बात से सौ फीसदी सहमत [illegible] कुशलो, मैं तो खाली यह कह रहा था कि पापा की इल्मदानी और विद्रोहवृत्ति दोनों ही ने मिलकर खानदान की जनमपत्री बदल दी। पापा के बहाने घर में अंग्रेजी घुसी, सरकारी नौकरी घुसी, अब ये तुम्हारा छोटा फिर से उस टूटी हुई परम्परा को जोड़ रहा है।"

उठकर बैठते हुए पत्नी ने पति से कहा : "मेरे बड़े में और सब बातें जो तुम कहते हो वो सब ठीक हैं, पर मुझे लगता है कि उसकी आंखें अब चंचल और उतावली हो उठी हैं। ईश्वर न करे अगर कहीं ऊंच-नीच कर बैठा तो फिर कुछ-का-कुछ हो जाएगा। अब उसका अठारहवां साल चल रहा है।"

"लेकिन कुशलो, मेरी और जयन्त की दोस्ताना बातें होती हैं। उसकी किसी भी बात से यह संकेत न मिला।"

कौशल्या मुस्कुराकर बोलीं : "आपको रोगों की सर्जरी करने से अवकाश ही कहां मिलता है। वैसे भी जितने निकट से जननी अपनी सन्तानों के भले-बुरे को देख सकती है उतने निकट से शायद जनक नहीं।"

उठकर बैठते हुए देशदीपक बोले : "बिना किसी बनावट के मैं इस क्षेत्र में तुम्हें अपनी गुरु मानता हूं। तुम मुझे संकेत देती रहना।"

"और हंसो की मांग का क्या करूं ?"

"अभी मेरे हिसाब से निकालकर दे दो। फिर अपने हिसाब से ले लेना।"

तेरह

दो अध्यायों का पहला मसौदा लिखकर युधिष्ठिर उन्हें टाइप कराकर अपने पिताजी के पास दे आया था। उसके दो दिन बाद जब शाम को दफ्तर से लौटते समय वह अस्पताल में अपना नियमित चक्कर लगाने गया तो सुमन्तजी के पलंग का ऊपरवाला हिस्सा उठा हुआ था और वे आराम से बैठे कोई पुस्तक पढ़ रहे थे। मां कमरे के बाहर ही थीं। चौक से रिश्तेदारी की कुछ औरतें सुमन्तजी का हाल-चाल जानने के लिए आई हुई थीं। वह उन्हींके साथ बतिया रही थीं। बरामदे में बैठी हुई इस जनानी भीड़ के जाने-अनजाने चेहरों को हाथ जोड़ता हुआ युधिष्ठिर पिताजी के कमरे में आ गया। और उन्हें बैठे देखकर प्रसन्नवदन बोला : "पिताजी, यू आर लुकिंग फाइन।"

किताबवाला बायां हाथ पलंग पर रखकर सुमन्त नेह-भरी दृष्टि से बेटे को देखकर मुस्कुरा दिए। युधिष्ठिर ने कहा : "इत्ते दिनों बाद आपको यों बैठा देखकर आज मेरे मन को बहुत सन्तोष हो रहा है, पिताजी !"

"तुम्हारे बायोग्राफिकल नावेल के मैं दोनों चैप्टर्स पढ़ गया नन्हा।"

"कोई सुधार, संशोधन।" युधिष्ठिर ने विनयपूर्वक पूछा।

"पहला अध्याय तो तुम्हें फिर से लिखना ही होगा बेटे। उसमें कुछ तुम्हारे नोट्स हैं, कुछ तुम्हारी लिखाई के अंश हैं…"

"जी हां, यह तो मैं पहले ही से समझ रहा हूं पिताजी, मैं खाली इसलिए आपको दे गया था कि कोई उस जमाने की इम्पोर्टेन्ट बात तो मुझसे नहीं छूट गई।"

"नहीं, ठीक ही है करीब-करीब, उसे व्यवस्थित रूप से तो लिखना ही होगा। लेकिन तुम्हारा दूसरा अध्याय मुझे बहुत पसन्द आया। मेरे बाबा और दादी की अन्तरंग वार्ता तुमने खूब लिखी है।"

"बाबा की पहली डायरी में सन् पाच की एक वन्देमातरम् सभा और बड़ी कालीजी की एक स्वदेशी और बायकाट की मीटिंग का जिक्र है। उन्होंने लिखा है—मीटिंग मे मेरी बुड्ढों से तेज झांव-झांव हो गई थी। ईश्वर को धन्यवाद है कि उस सभा मे पिताजी नही आए थे।"

सुमन्त सुनकर हंसे, बोले : "हा, वो बड़ी कालीजी वाली सभा की बात तो काफी हद तक मुझे भी याद है। मैंने पिताजी के ही मुख से एक बार सुनी थी। और रही वन्देमातरम्‌वाली सभा, यह उस जगह हुई थी जहां अब लाटूश रोड पर बुद्ध मन्दिर बना हुआ है। यहा की उस मीटिंग का तो अधिक हाल मुझे मालूम नही। उनके एक मित्र थे व्योमेश बनर्जी, वो बहुत ऐक्टिव थे। मगर ये सात अगस्त की जो कलकत्तेवाली सभा हुई थी, उसके एकाउन्ट्स मैं पढ चुका हू। टाउनहाल में हजारो की भीड़ मे बड़े-बड़े वक्ताओं ने यह स्वीकारा कि 'आनन्द-मठ' उपन्यास मे बंकिम बाबू का लिखा वन्देमातरम् गीत कोई मामूली रचना नही है। वह समय को जगाने का मन्त्र है। उसमे पहली बार जग-माता को भारत-माता के रूप में वर्णित किया गया है। बस, उस दिन से वन्देमातरम् का जोर बढ़ गया। वन्देमातरम् का नारा एक ऐसा सामाजिक जोश बन गया था कि हमारे अंग्रेज शासक उसे सुनकर ही थर्रा उठते थे। उसी मीटिंग के सिलसिले मे सारे उत्तर भारत में जगह-जगह वन्देमातरम् सभाएं हुईं, यहा भी हुई थी। हमने सुना है, यानी पिताजी की शहादत के बाद उनके दोस्त से ही सुना कि पिताजी और उनके मित्र व्योमेश ने मिलकर उस सभा मे वन्देमातरम् गाना गाया था।"

"अरे ये बड़ी कालीजी वाली बायकाट सभा।"

"हां, इसका विवरण मैं तुम्हें कुछ विस्तार से सुना सकता हूं क्योंकि इसका एक बार ब्योरा बातो-बातो मे पिताजी से ही सुना था।" कहकर सुमन्त बैठे-बैठे ही कुछ कसमसाये।

यह देखकर युधिष्ठिर बोला : "आप बहुत देर से बैठे हैं पिताजी, पलग नीचा कर दें, आप लेट जाइए।"

"हा, यह ठीक होगा।"

पलंग के व्यवस्थित हो जाने के बाद लेटकर सुमन्त कहने के लिए तैयार हुए, युधिष्ठिर अपने ब्रीफकेस से जेबी टेपरिकार्डर निकाल लाया।

गुजरा ज़माना सुमन्तजी के स्वर में फिर से सजीव होने लगा।

वाहर का जनाना शिष्टाचार पूरा करके मां भी कमरे में आ गई। पिताजी की वातें युधिष्ठिर के कथानायक के चरित्र-चित्रण के लिए स्फूर्ति दे रही थीं। लगभग एक घण्टे तक युधिष्ठिर सुमन्तजी की रेकार्डिंग करता रहा। वह धारा-प्रवाह गति से प्रसंग-रस में वंधे हुए वोल रहे थे। युधिष्ठिर को लगा कि वह घर पहुंचते ही उपन्यास के इस अध्याय को पूरा कर लेगा।

साढ़े-सात वजे वह अपनी लेखनशाला में पहुंच चुका था। पिता की रिकार्डेड वार्ता फिर से उसकी मेज पर सुनाई देने लगी। शकुन आई, पति को व्यस्त देखकर वाहर ही से लौट भी गई और फिर जव चाय लेकर आई तव ससुरजी का स्वर मशीन पर वोल रहा था, और पति की कलम कागज़ की चार-छः पंक्तियां लिख चुकी थी। प्याला देखा, नज़रें उठाकर पत्नी को देखा, मुस्कुराकर वोला: "तुम्हारी आज्ञा का पालन कर रहा हूं महारानीजी।"

"किए जाओ, वेस्ट आफ लक।" पति के गाल पर एक चुम्वन लिया और चली गई।

पत्नी का चुम्वन चाय से अधिक स्फूर्तिदायक सिद्ध हुआ जो युधिष्ठिर को सन् पांच की ओर ले चला।

वड़ी कालीजी के मन्दिर के पिछवाड़े नाले के पास वहुत वड़ी किराये की हवेली में खत्री पाठशाला खुल चुकी थी जो चौक क्षेत्र की पहली राष्ट्रीय संस्था थी। इस संस्था को स्थापित करने का श्रेय भी आधुनिक लखनऊ के आदिम सुधारवादी पूर्वज मुंशी गंगाप्रसाद वर्मा को ही था। सभी जातियों के लोग इस शिक्षा संस्थान में प्रशिक्षण पाते थे। खत्री पाठशाला के हेडमास्टर पंडित शिवनाथ शर्मा वी०ए० ने अपने विद्यालय में स्वदेशी आन्दोलन और वायकाट की शहर में वढ़ती हुई चर्चा पर विवाद करने के लिए पाठशाला भवन में एक मीटिंग वुलाई थी जिसकी अध्यक्षता इसी पाठशाला के अंग्रेजी अध्यापक वावू हेमन्तकुमार मित्र महोदय करनेवाले थे तथा नगर और क्षेत्र के उत्साही नवयुवक नेता वावू हरेकृष्ण धवन और सुधारवादी कार्यों में अग्रणी मुंशी गंगाप्रसादजी तथा उनके अनुगामी युवक पंडित गोकर्णनाथ मिश्र भी इस सभा में पधारने का वचन दे चुके थे। डॉ० देशदीपक ने भी वचन दिया था कि यदि अवकाश मिला तो वह भी आएंगे।

असल में वह आने से कन्ना काट रहे थे, क्योंकि जयन्त वायकाट के सम्वन्ध में उग्र विचार रखता था। नगर के, विशेष रूप से, चौक क्षेत्र के कई सजातीय और सुप्रतिष्ठित लोग विलायती सूत का व्यापार करते थे, उन्हें वायकाट की वात अनुचित मालूम होती थी। स्वयं डॉ० देशदीपक के चचेरे भाई लाला काशीनाथजी

का भी यही धन्धा है और वह भी आज से नहीं, पैतृक। देशदीपक के दादा लाला मुमद्दीमल विलायती कपड़ों की फेरी लगाते थे। उनके मंझले ताऊ गुमानी लाला भी विलायती कपड़े और सूत का ही धन्धा करते थे, उनके पुत्र काशी भी यही करते हैं। काशी के बेटे आशुतोष ने कपड़े का धन्धा छोड़कर बिसातखाने की दूकान खोल ली है और वह भी विलायती माल की बदौलत ही पिछले पांच-छ. वर्षों में ही उदीयमान श्रीमान हो चला है। जयन्त और उसके कुछ बंगाली और देशी मित्र स्वदेशी के साथ-साथ विदेशी माल के बहिष्कार के कट्टर समर्थक और उग्र आन्दोलनकर्ता हैं। जयन्त के दल ने बायकाट की पूरी बंगाली योजना बना रखी थी जिसके कारण आज की यह सभा बुलाई गई थी।

हेडमास्टर पण्डित शिवनाथजी खाली हेडमास्टरी ही नहीं करते थे, वे कुशल पत्रकार थे और अपने समय के श्रेष्ठ व्यंग्य लेखक भी। उत्साही नवयुवकों की गर्मी देखकर ही उन्होंने जानबूझकर बंगाली अध्यापक हेमन्तकुमार मित्र को ही सभा का अध्यक्ष बनाया था। जयन्त अपने मित्र व्योमेश बनर्जी और आठ-दस अन्य पढ़े-लिखे युवकों के साथ पांच बजे ही चौक में पहुंच गया था। गोल दरवाजे के भीतर आसफुद्दौला के जमाने की बनी हुई जीर्ण-शीर्ण मछलीवाली बारहदरी के नीचे दूकानों में अभी टाट के पर्दे उठाए नहीं गए थे, भिश्ती छिड़काव से पहले अभी बैठे हुए आपस में दोहरा बदलऊअल कर रहे थे। हां, खोमचेवाले दूकानदारों को नाश्ता कराने के लिए जरूर आ चुके थे। गोटे की दूकानों के बाद छोटे-छोटे सर्राफ एवं फटुओं की भी दूकानें थीं। खलीफा तम्बोली की दूकान के बगल में जो गली जाती थी उसमें प्रवेश करते समय जयन्त को अपना सबसे छोटा चचेरा भाई बिशनू मिला, बोला - "जयन्त भैये, जयन्त भैये कहा जा रहे हैं।"

"अरे बिशनू तू ! अभी तो लू थमी नहीं भैये और तू बाहर घूम रहा है।"

"आप भी तो घूम रहे है, सन्तोषनरायन की औरतिया को अंग्रेजी पढ़ाने आए हैं, मैं जानता हूं।"

जयन्त अपने साथी व्योमेश की ओर छिपी कनखी से ताककर झेंप और झिड़की-भरे स्वर में बोला "अबे मीटिंग में जा रहा हूं बेवकूफ।"

"अच्छा-अच्छा, जिसमें हमारे आसू भैये भी आएगे।"

जयन्त ने कुछ उत्तर न दिया, मित्र के साथ आगे गली में बढ़ने लगा। बिशनू ने जोर से पूछा : "मीटिंग से लौटकर घर आएगे न भैये।" फिर पावों के साथ-साथ व्योम से अपनी बात को आगे बढ़ाता हुआ बोला "देखो मोन्टी, यह तय कर लो कि अपनी बात से पीछे नहीं हटोगे।"

"कौन शाला हमको हटा सकता है यार। हम टोटल बायकाट की बात से एक इंच भी पीछे हटनेवाला नहीं हैं। तोमरा शाला जाती-बिरादरी का दोस्त…"

वहुतों की रोजी-रोटी का सवाल है, विलायती ताले, साबुन, लवेन्डर, जूते, कलम-दावात, सुई-तागा, बटन, बैट्री के लैम्प—जाने कितने प्रकार की वस्तुएं हमारे अपने ही भाई-वन्दों की दूकानों में गंजी पड़ी हुई हैं और नित्य प्रयोग में लाई जाती हैं। शिक्षित युवकजन दूरदर्शिता से काम लें। इस वात पर भी विचार करें कि वायकाट आन्दोलन चलाकर हम स्वयं अपने ही भाईवन्दों को दरिद्र वना रहे हैं।"

"हम केवल इसी वात पर ही सुन सकते हैं कि हमें भी अपनी वात कहने का अवसर दिया जाना चाहिए।"

जयन्त की इस वात पर थोड़ा शोर-शरावा हुआ, परन्तु शर्माजी के यह कहने पर कि हम दोनों पक्षों की वात सुनेंगे, मजमा शान्त हुआ।

अनेक महानुभाव वोले। एक शास्त्रीजी ने एक श्लोक सुनाया: "क: काल? कानि मित्राणि! को देशो? को व्ययागमो? को वाहं! काच में शक्ति? रिति चिन्त्य मुहुमुर्हु।"

फिर इसकी व्याख्या करते हुए उन्होंने अपने ढंग से इसे इस प्रकार अर्थाना शुरू किया: "ज़माना वड़ा खराव है और महाप्रतापी अंग्रेज़ों के आने से पूर्व हज़ारों वर्षों में म्लेच्छ यवनों ने यहां के धर्म और संस्कृति को नष्ट करके हमें उस हीन दिशा में पहुंचा दिया। इसलिए हमें अपने प्रतापी शासक मित्र अंग्रेज़ों का सम्मान करना चाहिए। हम कोई ऐसी वात न कहें जिससे कि हमारी न्यायप्रिय अंग्रेज़ सरकार को किसी प्रकार का मानसिक क्लेश पहुंचे। परम प्रतापी सम्राट् सप्तम का राज है, उनके साम्राज्य में सूर्य भगवान कभी डूवते नहीं हैं।"

"अरे जरा से जापान ने रूस के महाप्रतापी जार को युद्ध में धूल चटा दी तो क्या हम अंग्रेजों के सूर्य को अस्त नहीं कर सकते हैं।"

लगभग सौ-सवा सौ लोगों की सभा में सभी तरह के लोग थे, कुछ जाने-माने प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा कुछ विलायती विसातखाने के दूकानदार भी थे। जयन्त का चचेरा भाई और क्षेत्र के आर्यसमाज युवकदल का अध्यक्ष भी मौजूद था। बीस-बाईस ऐसे लोग भी थे जो किसी-न-किसी सरकारी कार्यालय में काम करते थे। और पढ़े-लिखे सुधारवादी कहलाना पसन्द करते थे। गर्म खून की गर्मी अपनी गर्माहट से कुनकुना वना रही थी। बूढ़ी पीढ़ी को यह खल रहा था कि हम शिक्षक या सफल वकील, डाक्टर आदि अपने समय में क्या कम सुधारक रहे हैं। न जाने कितनी ही परम्पराएं अब तक हम ही से टूटीं। दफ्तरी पोशाक में पारसी कोट, फेल्ट टोपी और विलायती वूटों के साथ-साथ वह पाजामा जो अव तक सवर्ण हिन्दू समाज में लगभग बहिष्कृत था, अव रोजमर्राह की पोशाक में आ चुका है। कितने ही अन्ध विचारों के विरुद्ध लड़नेवाले सुप्रतिष्ठित पीढ़ी के वड़े लोग वहां थे। कवि नरोत्तमदास के सुदामा की तरह 'शिक्षक हौं सिगरे जग को और ताको तूं अव देत है शिक्षा' का दम्भ उनमें उवल उठा। कुछ सम्मान्य व्यक्तियों ने इस गर्माहट का

वाग्-प्रदर्शन कर दिया। उनमें एक प्रतिष्ठित महानुभाव अपने-आपको नगर में इण्डियन नेशनल कांग्रेस का बेताज या ताजदार मानते थे। उन्होंने कहीं यह कह दिया कि जब तक हमारे महान नेतागण इस बात का समर्थन नहीं करते तब तक हम अपने क्षेत्र में यह विरोधी तमाशा नहीं होने देंगे।

जयन्त ताव खा गया। अपनी जगह से उठकर खड़ा हो गया और जोश-भरी आवाज में व्यंग्य मिलाकर बोला : "माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रश्न यह उठता है कि कांग्रेस को मानता ही कौन है। खुद अरविन्द घोष लिख चुके हैं कि कांग्रेस केवल मध्यवर्ग की संस्था-भर बनकर रह गई है।"

"सभा में आप किससे पूछकर बोले। बैठ जाइए, बैठ जाइए।"

मगर जयन्त भी अपने जोश में बेकाबू हो उठा। आकाश में जैसे सूर्य और बादलों के टुकड़ों की लड़ाई चलती है वैसे ही 'बैठ जाइए, नहीं-नहीं कहने दीजिए' की द्विपक्षी कौआरोर में भी उन्मत्त भाव में स्वर को और भी ऊंचा उठाकर वह दहाड़ा : "जो संस्था सर्वहारा दीनदुखी जन की गरीबी में नहीं लड़ सकती, उसके हित में कोई ठोस प्रस्ताव नहीं रख सकती, उस संस्था को हम नहीं मानते। आपकी कांग्रेस-फांग्रेस का हम पर कोई असर नहीं होगा, हम बायकाट करेंगे।"

कुछ लोग जोश में तालियां बजाकर हियर-हियर चिल्ला उठे। कइयों की प्रतिष्ठा को यह बेअदबी-भरा माहौल नागवार गुजरा। वे गुस्से में तमतमाते हुए उठकर चले गए। सभा में एक खलबली-सी मच गई, पीछे-पीछे भीड़ का आधा भाग खाली हो गया। इस आवाजाही में बाबू हेमन्तकुमार मित्र और पण्डित शिवनाथ शर्मा में दृष्टि वार्तालाप हुआ और सभा बिना कोई प्रस्ताव पास किए ही भंग कर दी गई।

जयन्त की पार्टी ने 'वन्देमातरम्' का जयघोष करना आरम्भ कर दिया। गरीबी की सीमा को छूते हुए साधारण मध्यवर्ग के लोग जवानों की सहानुभूति में और अपनी भावनाओं के वशीभूत होकर भी उस स्वर में सम्मिलित हो गए। लौटते समय लल्लू भैया ने जयन्त को कलेजे से लगा लिया और मुंह चूमने लगे। आपस में कुछ दूर की रिश्तेदारी भी है, दिल-दरियाव जीव हैं। व्योमेश और जयन्त को जबर्दस्ती घसीटकर फिर अपने बैठक में ले गए और वहां दोनों को बैठाकर आप उनके लिए मलाई और मलाई के लड्डू लाने लपके।

चौदह

वन्देमातरम् प्रसंग लिखकर युधिष्ठिर का काम फिर ठप्प पड़ गया। युधिष्ठिर यह सोच नहीं पा रहा था कि आगे का प्रसंग किस तरह से बढ़ाया जाए। एक दिन

दफ्तर से घर लौटते हुए नरही में पुराने इक्के-तांगे के स्टैण्ड के पास सुलेमान मिर्ज़ा किसी से वात करते नजर आ गए। वह अपना स्कूटर रोकने की सोच ही रहा था कि सुलेमान अपने हमउम्र साथी से जोश में कुछ वातें करते हुए आगे वढ़ गए। 'इन्हें इस समय रोकूं या?' मन में प्रश्न उछला, 'नहीं, इस वक्त ठीक नहीं, पर वावा का अगला प्रसंग सुलेमान मियां ही हल करेंगे। इनसे चिट्ठियां लेनी ही हैं।' हज़रतगंज का भीड़भरा चौराहा पार करके पोस्ट आफिस की तरफ आते हुए सहसा उसके मन में विचार आया: 'पहले वलरामपुर में पिताजी से मिल लिया जाए। वह अव स्वस्थ हैं। केवल हाथ-पैर का प्लास्टर अभी नहीं उतरा है। कल-परसों किसी दिन ही खोला जाएगा, तव एक्सरे होगा। पर पिताजी में ऐसी कौन-सी भीतरी शक्ति है जो इस वड़ी-से-वड़ी तकलीफ में भी अपने ऊपर सहज अधिकार रखना जानती है। जव से वातें करने की स्थिति में आए, कितनी सावधानी से अपने विचार प्रकट करते हैं। हास्य-विनोद के क्षणों में भी उनका वाणी-संयम कभी-कभी काव्य की छटा विखेर देता है। युधिष्ठिर को कभी-कभी ऐसा भी लगा है, कि जैसे उसके पिता अक्सर किसी और के मन में उठी हुई वातों को अपने मन में सुन भी लेते हैं और उसका जवाव भी दे देते हैं। कुछ भी कह लो, उनकी साइन्स भी समझने काविल है, नन्हा।'

भीड़ के वढ़ते भयावने जंगल से स्कूटर निकालता हुआ युधिष्ठिर एक मौज में तुरन्त अपना स्कूटर कैसरवाग वारहदरी की सड़क पर ले आया। यह सड़क अपेक्षाकृत कम भीड़-भरी थी, गोया वाजिदअलीशाह का शाही रुतवा वहां अव भी कायम है। चलते-चलते विचार आया—'यहां कभी वेगमात, रखैलें, रंडियां, खवास, खवासिनें, ख्वाजासरा लोग डोलते होंगे।' विलास और विलासजनित कुचक्रों की तीव्र वैचारिक महक युधिष्ठिर को ऐसी लगी जैसी गन्ना पेरने की ऋतु में किसी शक्कर मिल के आस-पास से वदवू और घुटन-भरे भभके नाक और मुंह में भरते हैं। शक्कर की मिठास के निर्माण से पहले यह दुर्गन्ध की प्रक्रिया भी युधिष्ठिर के मन में पटवीजने-सी चमकी। स्कूटर अस्पताल पहुंचनेवाली चढ़ाई की सड़क पर चढ़ रहा था। पिताजी स्वस्थ थे। संयोग से मां अपने पोते के साथ वहीं मिल गई। पिता के सामने स्वयं अपने को पिता की स्थिति में खड़ा देखकर युधिष्ठिर का मन झेंप-भरे आनन्द-झोंके से लहरा उठा। मां वोलीं: "पुराने रिवाज़ से इसे अभी घर से वाहर नहीं निकाला जा सकता, मगर मैं चुराके इसे वावा को दिखाने ले ही आई।"

युधिष्ठिर ने अपना हैलमेट कोने की मेज़ पर रख दिया और पिता के पलंग पर ही उनके सुरक्षित चरण के निकट आकर वैठ गया और एक हाथ से धीरे-धीरे पिताजी का पांव दवाने लगा। पैर दावते हुए दो वार मां की गोद में लिपटे सोते हुए अपने वेटे पर दृष्टि गई। सुमन्तजी की दृष्टि से यह वात चूक न सकी, वोले:

"शारदा, तुम्हारे पोते का भविष्य बहुत उज्ज्वल है।"

सुनकर युधिष्ठिर के आनन्द ने मन में उछाल ली और शारदाजी अपने सोते हुए पोते के सिर पर हाथ फेरते हुए बोली : "तुम्हारे जैसे जोगी, महात्मा बाबा का पोता तो अच्छा भविष्य लेकर आएगा ही।"

"तुम्हारा बेटा भी अभी बहुत नाम करेगा शारदा, पत्रकारिता तो इसके भविष्य का द्वार खोलने की कुंजी-भर है। यह अभी अनेक देशों का राजदूत बनेगा।"

सुनकर युधिष्ठिर चौंककर अपने पिता को देखने लगा। मां अपने पति को श्रद्धा-भरी दृष्टि से देख रही थी। शारदा पति के साथ अपने अन्तरंग सत्संग के कारण यह जानती है कि उनके सौभाग्यनाथ पिछले एक वर्ष से अब कभी-कभी अचानक ही कुछ भविष्यवाणियां-सी बोल देते हैं। शारदा ने पहले ध्यान नहीं दिया था, फिर चौंकी। अपनी इस मोटर-दुर्घटना से पन्द्रह दिन पहले जब वह भरतकुण्ड से लखनऊ के लिए चलने लगी थी तब सुमन्त ने अचानक कहा था : "जाती तो हो मगर कुछ ही दिनों बाद तुम्हें लौटना भी पड़ेगा।" पति की मोटर-दुर्घटना के बाद शारदा को अब यह पक्का भरोसा हो गया था कि उनके पति की साधना अब उस ऊंचाई पर पहुंच गई है जो औसत मनुष्य की समझ से बाहर होती है।

युधिष्ठिर के लिए पिता का यह योग-विज्ञान अभी रहस्यमय है और वह इस समय उसमें अधिक उलझना भी नहीं चाहता। पिता की बातों को अपने प्रति लाड़ का ही एक रूप समझकर युधिष्ठिर बोला : "अब कम-से-कम छः महीने तो मैं आपको भरतकुण्ड जाने नहीं दूंगा, पिताजी। यहां रहिए, कभी मौज आ जाय तो दो-चार रोज के वास्ते आप मां के साथ चन्द्रिकाश्रम रह आया कीजिए। उसमें तो अभी पीछे के हिस्से में बहुत काफी जगह है पिताजी। मैं सोचता हूं, आपके और मां के लिए पीछे एक फ्लैट और क्यों न वहां बनवा दिया जाए।"

शारदाजी बोलीं : "नहीं नन्हा, अब ऊ सब नहीं बनै-उनैगा। एक पुरखे तुम्हारे चन्द्रिकोजी के भक्त थे तो वहां बनवाय गए। चलो, जग्गो चाचा के काम आ रहा हैगा। हमें इसी बात का सन्तोष है। बाकी यह तुमने ठीक कहा, अभी तो मैं इन्हें पांच-छः महीने कहीं जाने-आने नहीं दूंगी।"

सुमन्त कुछ न बोले। युधिष्ठिर ने कहा : "मां, तुम तो अभी बैठोगी। मैं घर जाता हूं।"

"नहीं, मैं भी चलूंगी नन्हा, बबुआ को ज्यादा देर बाहर रखना ठीक नहीं। मौसम अब धीरे-धीरे बदलाव पर आ चला है।"

मां कुर्सी से उठने लगी, बच्चे को गोदी में सम्हालते हुए पति से कहा : "साढ़े-सात बजे तुमरा खाना लेके हम आय जाएंगे।"

घर कितना अच्छा लग रहा है। मां तो निश्चित समय पर खाना लेकर फिर अस्पताल चली गईं। अब इस घर में एक नये मां-बाप अपने बच्चे को बीच में लिटाए हुए लेटे बतिया रहे हैं। युधिष्ठिर पत्नी से कह रहा है: "देखो, अब पिताजी करीब-करीब यहीं रहेंगे। हम लोग फिर से अपने ओरिजनल कमरे में ही क्यों न शिफ्ट हो जाएं।"

"फिर लाइब्रेरी कहां जाएगी?"

"जहां पहले थी, लाइब्रेरी तो पिताजी के सोने के पासवाले कमरे में थी जिसमें मैं अब अपना दफ्तर लगाता हूं।"

"फिर दफ्तर कहां ले जाओगे?"

"कहां ले जाऊं, तुम्हारे सिर पर। मेज-कुर्सी बिछाकर बैठ जाऊंगा।"

"मांजी से कहकर एक कमरा ऊपर क्यों नहीं बनवा लेते?"

युधिष्ठिर मुस्कुराया: "लड़का जब खुद कमाने लगता है तो उसे अपने माता-पिता से मांगते हुए फिर झिझक लगती है। और मेरी कमाई अभी इतनी नहीं हुई कि खुद कमरा बनवा सकूं।"

शकुन ने मुंह बनाकर कहा: "तुम सक्सेसफुल जर्नलिस्ट, नावलिस्ट भले ही बन गए हो पर अभी तुम्हारे भेजे में अकल-वकल नहीं है।"

"हां, आप ही तो एक बड़ी अकलवाली हैं।"

"आप चुप रहिए। कल जाके नगरपालिका से ऊपर एक कमरा बनवाने का आर्डर ले आइए, मैं कह दूंगी मांजी से। वह अपने पोते के लिए ऊपर कमरा बनवा देंगी, आगे छत भी मिलेगी। अभी आगे सर्दियों में धूप की बहार लूंगी।"

युधिष्ठिर कुछ न बोला, पलंग से उठते हुए कहने लगा: "यह औरत कौम साली बड़ी···"

"खबरदार, अब आगे कुछ मत कहना। चलो, तुम्हारा खाना लगा दूं।"

"नहीं, खाना लगवा लूंगा, तुम्हारा भिजवा दूं?"

"हां, और अपना भी यहीं मंगवा लो। अभी तुम्हारी इस पिलपिली खोपड़ी में मुझे और भी अकल भरनी है।" शकुन ने आंखें नचाकर कहा।

बदले में पति पत्नी के गाल पर रीझ-भरी चुटकी काटकर चला गया।

सवेरे दफ्तर से लौटते हुए कार्लटन होटल जाकर वहां के पुराने बैरे सुलेमान मिर्जा की टोह लगाई। सुलेमान मिर्जा नरही में रहते थे। आज उनका ऑफ डे है। घर पर ही मिलेंगे।

युधिष्ठिर सुलेमान के घर की ओर चल दिया। संयोग से बुजुर्गवार मिल गये: "कहिए हुजूर, कैसे तशरीफ लाए?"

"आप ही की खिदमत में आया था मिर्जा साहब। आइए, कहीं नाश्ता-वाश्ता किया जाए।"

"नहारी तो मैं कर चुका हुजूर, इस वक्त गरीबखाने पर कैसे तशरीफ लाए ?"

"वो, आपसे मेम साहब का वह खत लेने आया था जो उन्होंने मेरे बाबा के नाम लिखा था। आपने एक बार मुझसे उसका जिक्र भी किया था।"

"हां-हां, यह तो मुझे याद है, आपके दादा बुजुर्गवार हमारी एक कौमी हस्ती थे। आपके वालिदे बुजुर्गवार ने भी अपनी चीफ मिनिस्टिरी में बड़ी शोहरत पैदा की। क्या बात है आपके खानदान की। मगर हुजूर, मैं एक गरीब आदमी हूं, आप बड़े आदमियों की बदौलत ही मेरे बाल-बच्चे पलते हैं।"

"मैं समझ गया, आप जो कहेंगे मिर्ज़ा साहब, वह मैं उस खत की एवज आपकी नज़र कर दूंगा।"

सुलेमान मिर्ज़ा अपनी बड़ी-बड़ी खिचड़ी मूछों और पश्म आर्जनुमा दाढ़ी की बारीक उचक-बिचक के साथ नज़रों में मुस्कराए। दाढ़ी पर हल्का-सा हाथ फेरके बोले : "आप समझे नहीं हुजूरेवाला, आपके दादा साहब मरहूम कौम के बहुत बड़े नेता थे, इसमें तो कोई शक ही नहीं है। मगर इन्सान तो आखिर इन्सान ही होता है और हर इन्सान में कोई-न-कोई कमज़ोरी होती ही है। इसमें कोई बुरा मानने की बात नहीं है।"

"मैं समझा नहीं मिर्ज़ा साहब।"

सुलेमान मिर्ज़ा ने चारों तरफ सन्नाटा होने हुए भी युधिष्ठिर के कान के पास अपना मुंह लाकर कहा : "ये जो हमारी मेमसाहब थीं न, हमारे हुजूर लाटसाहब की कुछ दूर-दराज की रिश्तेदार, वह आपके हुजूर दादा मरहूम की पुरानी आश्ना थीं। अब यह बात अपने तक ही रखिएगा हुजूर, बड़े-बुजुर्गों की बात है आखिर। खास गेस्टरूम में टिकाई गई थीं ये मेमसाहब। यानी जिन कमरों में हुजूर वैसराय साहब के गेस्ट जब लखनऊ तशरीफ लाते थे तो टिकाए जाते थे। ऐसी आला खानदान और ऊंचे रसूखवाली थी आपके दादा हुजूर की आश्ना, हमारी मेम साहब।" कहकर सुलेमान मिर्ज़ा अपनी खसखसी दाढ़ी पर अपने ही हाथ को किसी माशूका का हाथ मानकर फेरते हुए बोले "किस्सा हुजूर, रंगीन है, मेरी बूढ़ी रगों में भी इस वक्त व्हिस्की की तलब सनसना उठी है।"

"अरे तो क्या बात है, मेरी तरफ से दावत कबूल कीजिए। आइए, मेरे घर तशरीफ ले चलिए। आपको…"

"हुजूर के दौलतखाने तक तो इस वक्त क्या जाएंगे हम, व्हिस्की आपकी दुआ से घर ही में रखी है। पियोर स्काच व्हिस्की, होटल से हुजूर स्मगिलकर लाया था। सोचा था गरीब आदमी, किसी रईस के हाथों बेचकर दो-ढाई सौ कमा लूंगा, अब अपनी ही नियत हुजूर बदनियत हुई जा रही है, कुछ समझ में नहीं आ रहा है।"

अपने पत्रकारिता-जीवन मे युधिष्ठिर अब तरह-तरह के चरित्रों और उनकी आदतों, चाल-ढाल वगैरह से काफी अनुभवी हो चुका है। लखनऊ का ऊंचे वर्गों की चाकरी में रह चुकनेवाले जनसाधारण वर्ग के मुसलमान की बातचीत के नफीस ढंग से तो खूब ही वाकिफ है इसलिए चट से पर्स निकाल लिया, बोला: "ये दो सौ रुपये तो हाजिर हैं और बाकी सौ रुपया अगर आप मेरे साथ मेरे गरीबखाने पर तशरीफ ले चलें तो तुरन्त नज़र कर दूंगा बल्कि वहीं साथ बैठकर व्हिस्की पीजिए और वह बातें मुझे भी बतलाइए जो आपकी ज़ईफी को इस वक्त जवान बना रही हैं।"

दो-एक और हीले-बहाने करने के बाद सुलेमान मिर्जा खरीता और व्हिस्की की बोतल लेकर चलने को राजी हो गए।

रास्ते में सुलेमान मिर्जा की बतलाई हुई दूकान से ही उसने मिठाइयां और नमकीन खरीदे और चम्पक मैंशन आ गया। मकान को देखकर सुलेमान मिर्जा की आंखों में पुराने वक्तों की चमक आ गयी: "आह, जिन्दगी बखैर एक बार फिर देख लिया।"

गाड़ी पुरानी इमारत के पिछवाड़े जाकर खड़ी हुई। "उस पुरानी कोठी में मैं पांच बार मेम साहब के रुक्के लेकर आपके दादा साहब के पास आया हूं। कोठी के इस हिस्से में तो उस वक्त बगीचा था।"

"जी हां, यह तो मेरे पिताजी ने अपने लिये बनवाया था।" अन्दर नौकरानी से कहकर प्लेटें वगैरह मंगाई और यह आदेश दिया कि अस्पताल से टेलीफोन आने के अलावा और किसी फोन आदि की सूचना उसे न दी जाए। वह इस समय किसी आनेवाले के लिए घर में मौजूद भी नहीं है।

एकान्त साधा, एक सौ के बजाय एक सौ पचास रुपये सुलेमान मिर्जा के हाथ रखे तो बिना बोतल खोले ही उनकी आंखें खुली-की-खुली ही रह गई। "यह क्या हुजूर, मैंने तो ढाई सौ से ज्यादह तो सोचा भी नहीं था। ईमान से कहता हूं आपसे, वाह! वाह! आपने तो हमारी उन मेम साहबा की याद दिला दी हुजूर। पन्द्रह रोज़ लखनऊ में रही थीं और आते ही मुझे दस रुपये का नोट बख्शीश देते हुए कहा—सुलेमान, यह रुक्का जयन्त टण्डन साहब के ही हाथ में पहुंचे। बैरिस्टर हैं, बड़े आदमी हैं, उन्हें शहर में हर कोई जानता है। तब मैं हुजूर पहली बार आपकी कोठी पर हाज़िर हुआ था। रुक्का देकर और टण्डन साहब का दावतनामा लेकर जब मैं उनके पास गया तो उन्होंने मुझे फिर दस का नोट दिया। उस ज़माने के दस रुपये हुजूर, आज के सौ रुपये के बराबर समझ लीजिए। तेरह रुपये की गिन्नी मिलती थी। वैसे ही बड़ा दिल आपने भी पाया।"

युधिष्ठिर झेंप गया, मिर्जा साहब के यहां से आई हुई बोतल की सील तोड़ते हुए उसने कहा: "ऐसी कोई बात नहीं मिर्ज़ाजी, आज का दिन बड़ा खुशनसीब

साबित हुआ मेरे लिए। दादाजान के पडपोते की आमद भी आज ही हुई और उनके बारे मे कुछ जानने का मौका भी आपसे मिला।"

व्हिस्की के दौर चले, बातों के दौर चले। छोटे लाट दो बार जब दौरे पर रहे तब दो बार मेम साहब जयन्त टण्डन साहब के साथ-साथ उतरटिया रेस्टहाउस मे खुफिया तौर से बिता आई थी। रुक्के तो कम-से-कम पांच-छः भिजवाए होंगे। जब सुलेमान मिर्ज़ा के कई बार रुक्के ले जाने के बाद भी उनकी जयन्त साहब से भेंट न हुई तो मेम साहिबा ये मोटा-सा लिफाफा लिखकर सुलेमान को दे गई कि उन्हे जल्द-से-जल्द पहुचा देना'''सो वह जल्द-से-जल्द का दिन आज तैंतालिस-चवालिस वर्षों के बाद आया है। किसको मिलना था, किसके हाथ मे दिया। जैसे पानेवाले न रहे, खुदा जाने वैसे ही वह खत देनेवाली मेम साहिबा रही हों या न रही हों। बड़े आदमियो की बात है, मुझसे वह आपके दोस्त हसन जावेद भी इस खरीते की बात कर रहे थे मगर मेरी आपसे भी जान-पहचान हो चुकी थी इसलिए मेरे ज़मीर ने यही तय किया था कि आपसे चाहे पैसे-दो पैसे कम ही मिलें मगर टण्डन साहब का खत उनके खानदान मे ही जाए, कहीं बाहर न जाए।"

"मैं आपकी शायद कुछ और ज़्यादा खिदमत कर सकता था मिर्ज़ा साहब मगर'''"

"आप क्या फरमा रहे हैं टण्डन साहब। मेरी बातो से आप यह न समझें कि मैं आपसे कुछ और ज़्यादह माग रहा हू या आपने मुझे कम दिया। खुदा आपको खुश रखे, जैसा मैंने आपसे पहले ही अर्ज किया कि बड़े आदमियो की बात है। शहर में आपके दादाजान का सद्‌साला जलसा भी मनाया जानेवाला है, मैं अखबार मे पढ़ चुका हूं। मेरा मतलब यही है कि टण्डन साहब बहुत आला इन्सान थे, लेकिन इन्सान ही तो ठहरे। मगर उनकी वह विलायती आशना भी बहुत ऊंचे दर्जे की थी, मगर इन्सान ही तो थी। खैर, घर की बात घर ही मे रही। अल्लाह दोनों की रूहो को जन्नत मे सुकूनो राहत दे।" मिर्ज़ा दुआएं देते हुए चले गए।

पुराना मोटा लिफाफा, धूमिल स्याही के दो बड़े-बड़े अक्षर जे० टी०, लिफाफे के कोने में एम०। पुराने गवर्नर के दफ्तर का मज़बूत लिफाफा युधिष्ठिर ने पेन नाइफ से खोला। लिफाफा खुलता है जैसे किसी पुराने दबे हुए खजाने का द्वार खुलता है। युधिष्ठिर के मन मे गहरी उत्सुकता, गहरी हलचल। लिफाफे मे अलग-अलग दिनाको के लिखे कुछ पत्र है। लिखनेवाला एक ही व्यक्ति का मानस *छियालीस वर्षों के अन्तराल में'''*

"जे०, 3-3-42

सर एम० मुझसे ठीक ही कहते थे कि तुम बड़े खराब आदमी हो। उनके खराब कहने को तो मैं कोई महत्त्व नहीं देती, आखिर सर एम० एक आला अफ़सर

हैं। वह कहते थे कि तुम्हारी खराबी यह है कि तुम कब गम्भीर होते हो और कब अगम्भीर, यह नहीं कहा जा सकता। वह कहते थे कि मुझे तुमसे गवर्नमेण्ट हाउस की अतिथि होकर नहीं मिलना चाहिए, क्योंकि आजकल यों ही पोलिटिकल सरगर्मियां बढ़ी-चढ़ी हैं और वह पालिटिकली विरोधी खेमे का आदमी है। मगर मैं तो तुमसे मिलने के लिए बेताब हूं जे० डियर। तुम्हारे साथ पिछले हफ्ते उतरटिया रेस्ट हाउस में बिताई हुई वह शबेजन्नत जिन्दगी के अन्तिम पल तक नहीं भूलेगी। एक रात वैसी और निकालो। सर एम० छह को चार रोज़ के वास्ते पश्चिमी यू० पी० के दौरे पर जा रहे हैं। और आठ मार्च को मुझे हर हाल में बम्बई पहुंच ही जाना है। छह को डेट फिक्स करो। हमारा यह दोस्त सुलेमान हमारे लिए इस बार एक और जगह इन्तजाम कर देगा।

मैं अपना वो पुराना पत्र लेती आऊंगी जो सन् नौ में उस रात की घटना के बाद मैंने तुम्हें बहुत नाराज़ होकर लिखा था और जो फिर तुम्हें भेजा नहीं था।"

इस पत्र के बाद 4-3-42 की लिखी एक छोटी परची थी।

"जे०,

तुम वाकई बहुत-बहुत खराब आदमी हो। मैं तुम्हें रोज चिट्ठियां लिख रही हूं। तुम्हें देखने के लिए कितनी व्यग्र हूं। काश कि तुम मेरा दिल समझ सकते। प्रोग्राम के हिसाब से मुझे कल बनारस चला जाना चाहिए था। मगर मैंने अपने रिजर्वेशन की तारीख एक दिन और आगे बढ़वा ली है। अगर तुम आज भी आ जाओ तो छह को बनारस जाने का प्रोग्राम कैन्सिल करके सात मार्च को सीधे यहीं से बम्बई का रिजर्वेशन करा लूंगी। तुम मान सकते हो जे०, इस अधेड़ उम्र में भी नवतरुणी की तरह मैं दिवास्वप्न देख रही हूं कि तुम आ गए हो और सुलेमान मेरे लिए तुम्हारी चिर-परिचित लिखत की दो पंक्तियां लेकर मेरे पास लौट आया है और मैं खुशी से उछल पड़ी हूं। अलग-अलग वक्तों के इतने कल्पनाचित्र एकसाथ जुड़कर इस समय मेरे सामने हैं और मैं सचमुच बेहद खुश हूं, काश कि यह खुशी सचमुच की खुशी साबित हो।

तुम्हारी,
एम."

इसके बाद सात मार्च सुबह पांच बजे की लिखी एक छोटी-सी परची थी···

"बरसों का अन्तराल रहने के बावजूद तुम्हें भूल न सकी, इसीलिए लखनऊ आने का बहाना खोजा था। नियति तुम्हारी मीठी, कड़वी यादों का बोझ शायद

मेरी आखिरी सांस तक मेरे दिल से नहीं हटाना चाहती। नये और वह पुराना खत भी सब एकसाथ तुम्हें अपने विदाई चुम्बन के साथ भेज रही हूं।

एम०
8-3-42
4.56 प्रातः"

युधिष्ठिर के सामने न देखी हुई एम० के विरह-उतावले मानस का एक भाव-स्फूर्ति त्वरित रेखाचित्र कल्पना के धुंधले पट पर झलक उठा। अपने बाबा को उसने भले न देखा हो परन्तु घर में, उनके बचपन से लेकर शवयात्रा तक के अनेक चित्र हैं। न देखा हुआ चेहरा भी देखा हुआ ही है। चौड़ा कपाल, सिर के बाल काफी हद तक उड़े हुए, लेकिन मरते दम तक उनकी खोपड़ी उस तरह गंजी नहीं हुई थी कि वे अपने गंजेपन के कारण बदसूरत लगें। युधिष्ठिर ने अपने बाबा के अन्तर्व्यक्तित्व की बहुचर्चित महान राजनेता के रूप में ही सुन-सुनकर देखा था, लेकिन यह अनजानी विदेशी एम०, बाबा के व्यक्तित्व का एक दूसरा पक्ष ही उजागर कर रही है। पत्रों के क्रम में अन्तिम पत्र 8-9-09 का लिखा हुआ था। स्याही मैली और कहीं-कहीं धुंधली भी हो गई थी, लेखिका वही एम०। परन्तु सन् 42 और सन् 09 की लिखावटों में कुछ अन्तर अवश्य पड़ गया था। इस बार सम्बोधन मात्र जे० न होकर जे० के० टण्डन एस्क्वायर—

"मुझसे मेरी प्यारी सहेली एनी ने दो-चार यह कहा था कि आप उसे दो बार दो अलग-अलग बदचलन लड़कियों के साथ दिखलाई दिए थे। किन्तु मैंने कभी इस पर विश्वास नहीं किया। कल अपनी आंखों से देखा, पार्क के कोने में आप उस बदनाम कुतिया सूसी को किस कर रहे थे। आपने किसी हाल में टंगे हजार मोम-बत्तियोंवाले खूबसूरत झाड़ को अ[illegible]क टूटकर गिरते हुए देखा है, और यह कभी महसूस किया है, कि रोशनी ही भयानक आग भी बन जाती है। मैं आपसे शादी करके भारत जाने के जो सपने देखती थी, वह खत्म हो गए। मैंने अब यह महसूस कर लिया है कि मेरी मां सच कहती थी, कि किसी हिन्दुस्तानी लड़के से दिल उलझाना अक्सर खतरनाक साबित हो जाता है। मैंने कल इस बात को अच्छी तरह महसूस कर लिया, मेरा-आपका रिश्ता खत्म हो गया।

आपकी स्पष्टवादिनी,
मार्गरेट एल्विन"

पत्र पूरा करने के बाद कागज की बची हुई जगह में जयन्त टण्डन एस्क्वायर की शान में चुनिन्दा गालियां इस तरह से लिखी हुई थीं जैसे दीवार पर चुने हुए

चित्रों की प्रदर्शनी लगी हो। तुम धूर्त हो, धोखेबाज हो, इन्सानी कोमल भावनाओं के हत्यारे हो। तुम्हारी बातों से अधिकतर लोगों को यह भ्रम हो जाता है कि तुम बहुत बड़े, प्रतिभाशाली, विचारक और मेधावी पुरुष हो। मगर वह सब तुम्हारा नकली मुखौटा है। शराब पीकर तुम अपना आपा खो बैठते हो। कोई शरीफ औरत रूहानी चाहत हो जाने के बाद ही किसी पुरुष से अपने जिस्मानी रिश्ते भी कायम कर सकती है। लेकिन तुम मांस नोच-नोचकर खाने के उतावले कामुक गिद्ध हो। अच्छे-अच्छे सम्भ्रान्त वर्ग के समाज के युवक-युवतियों से सम्बन्ध रखकर भी तुम उन निम्न मध्यवर्ग की लड़कियों के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते हो जो थोड़े से शिलिंगों या छोटी-मोटी भेंटों के वास्ते, खुफिया तौर पर अपना शरीर बेचा करती हैं। जे०, मैंने तुम्हें हीरा समझा था मगर तुम कोयले और कोयले से भी बदतर बन जानेवाली राख निकले। मैं तुमसे नफरत करती हूं और हमेशा नफरत करती रहूंगी। - एम०

लेकिन क्या यह लेडी एम० मेरे बाबा से कभी नफरत कर सकी? नारी-हृदय भी कैसा अनोखा होता है।

वैसे याद पड़ रहा है कि जग्गो बाबा ने भी उनके किसी अफेयर का ज़िक्र किया था।

पन्द्रह

अमर शहीद श्री जयन्त टण्डन की जन्म-शताब्दी के सिलसिले में हसन जावेद का पहला लेख बड़ी सज-धज के साथ 'ईवनिंग स्टार' के कल शाम के अंक में प्रकाशित हुआ था। जयन्त क्रासिंग पर लगी हुई उनकी मूर्ति का एक पुराना फोटो प्रकाशित किया गया था जिसमें तत्कालीन मुख्यमन्त्री माननीय श्री बी० पी० वर्मा मूर्ति को माल्यार्पण कर रहे थे। लेख में उनके तथा जावेद के पिता श्री मुश्ताक हुसैन के उनसे सम्बन्धित संस्करण प्रकाशित हुए थे। लेख में युधिष्ठिर के नाना, शारदा मां और पिता सुमन्त टण्डन के चित्र भी सजाए गए थे। लेख बहुत ही प्रभावपूर्ण भाषा में लिखा गया था और, उसकी कल से आज तक जगह-जगह खूब सराहना भी हुई थी।

युधिष्ठिर की दुखती रग फिर से चिहुंक पड़ी, परन्तु इस बार उसे विशेष मानसिक पीड़ा न हुई। उसने भी अपना काम शुरू कर दिया है। पत्रकारिता के क्षेत्र की तो बात है नहीं, आखिर वह एक साहित्यिक रचना-कार्य में संलग्न है जो श्रम और समयसाध्य है। लेडी मार्गरेट एल्विन की यह चिट्ठियां उसे अपने

पिताजी को दिखलानी चाहिए। बाबा के इस पक्ष का चित्रण करते हुए उसे एक बार अपने पिता की आज्ञा ले ही लेनी चाहिए।

दफ्तर के लिए चलते समय जयन्त ने मेम साहबवाला लिफाफा भी अपने ब्रीफकेस में रख लिया। तभी मां आईं, कहा : तू ऑफिस जा रहा है न नन्हा ?"

"हां, लेकिन पहले पिताजी के पास जाऊंगा।"

"अरे, यही तो मैं भी कहने आई थी। तू मुझे अस्पताल छोड़ता जा।"

"मेरे साथ न चलो मां, मैं स्कूटर पर जाऊंगा।"

"तब फिर मैं रिक्शे पर चली जाऊंगी, हालांकि मैं चाहती थी कि उन्हें देख-कर जल्दी ही घर लौट आऊंगी। शकुन्तला आज सवा महीने का नहान नहाएगी।"

युधिष्ठिर नहीं चाहता था कि पिता को बाबा के पुराने प्रेमपत्र दिखलाते समय मां भी अस्पताल में उनके साथ हो इसलिए उसे बहाना मिल गया, बोला : "मेरी समझ में तुम आज इस समय न जाओ मां, मैं साढ़े-बारह पौने-एक तक दफ्तर से लौट आऊंगा। तब तुम खाना लेकर मेरे साथ चलना। वैसे मैं अभी जाकर पिताजी से कह भी दूंगा।"

पिताजी स्वस्थ और प्रसन्नचित्त थे।

"हलो नन्हा, कैसे आ गए ?"

"मां इस समय नहीं आएंगी पिताजी, कुछ नहान-वहान का चक्कर है। शायद मैं उन्हें लंच टाइम पर लेकर आऊंगा।"

"अरे, ये तो ठीक है, तुमरी मां से मुझे इस समय कोई काम भी नहीं जो याद करता।"

"मुझे परसों संयोग से बाबा को लिखी हुई कुछ चिट्ठियां मिल गई।"

"कहां ? तिजोरी के पुराने कागजात में ?"

"जी नहीं, वो एक सुलेमान मिर्ज़ा हैं, पहले गवर्नमेंट हाउस में काम करते थे, गर मुझीमैन के वक्त में इंगलैण्ड से एक कोई महिला उनकी अतिथि होकर आई थी। बाबा से शायद उनके इन्टीमेट रिलेशन्स थे। वह लेटर्स मैं आपको दिए जाता हूं। इन्हें पढ़ लीजिए तो बतलाइएगा कि आप भी इस सम्बन्ध में कुछ जानकारी रखते हैं। और दूसरी बात, क्या मुझे बाबा के इस पक्ष को भी अपनी किताब में रखना चाहिए।"

युधिष्ठिर ने वह लिफाफा पिताजी को दे दिया। सुमन्तजी ने लिफाफे पर एक नजर डाली। पत्र निकलवाए। सबसे पहले सन् नौ वाले पत्र को ही उन्होंने देखा। फिर गम्भीर होकर बोले "इन्हें रखते जाओ। मैं सावधानी से पढ़ूंगा। लेकिन इतना मैं जरूर कह सकता हूं कि पिताजी के जीवन का यह पक्ष शुरू से ही कुछ कमजोर जरूर था। तुम्हारी मां के पास मेरे पुराने कागजात के दो बण्डल रखे हुए हैं। जहां तक मुझे याद है, मेरे बाबा ने मेरी दादी के नाम लिखे गए एक पत्र में

पिताजी की इस किस्म की किसी बात पर चिन्ता प्रकट की थी। वह कोई स्थानीय घटना ही थी। बहरहाल, देख लेना। वैसे मैं तुम्हारी मां से भी उन बण्डलों में ढूंढ़ने के लिए कहूंगा।" कुछ रुककर वह फिर बोले : "अगर किसी बड़े व्यक्ति में कोई कमजोरी भी है तो उसका उल्लेख करने में मैं कोई हर्ज नहीं समझता। कमजोर होने के बावजूद मनुष्य अपनी ऊर्ध्व चेतना के स्तर को कैसे पाता है, महत्त्व इस बात का है।"

पुरानी चिट्ठियों के बण्डल में सुमन्तजी ने जिस पत्र को अपने बाबा स्वर्गीय देशदीपकजी का बतलाया था, वह वास्तव में देशदीपकजी के नाम कौशल्या का पत्र निकला। उन्होंने लिखा था—"मैंने प्रेमकिशोरी से कसम दिलाकर पूछ लिया है। जयन्तू ने उससे कोई ऐसी-वैसी बात नहीं करी है। प्रेम भी दुखियारी जरूर है, पर बुरे चलन की लड़की नहीं। उसने मुझसे यह भी बहुत साफ-साफ कहा है कि वह उमर में जयन्तू से बड़ी है, और कभी उसके नादान फुसलावों में नहीं आएगी। मैं समझती हूं, जयन्तू के रिश्ते की बात अब कहीं चलानी ही चाहिए। मेरा विश्वास है कि यह खाली उमर की हलचल ही है और उसके चरित्र में कोई खास खराबी नहीं है। आप चिन्ता न करें। कलकत्ते से लौट आएं तो आगे की बातें हों।"

इस पत्र से युधिष्ठिर को नया अध्याय जोड़ने की प्रेरणा मिल गई। रात में टाइपराइटर पर नया प्रसंग जोड़ा जाने लगा—पिछले अध्याय में स्वदेशी सभा के बाद जयन्त अपने बंगाली मित्र के साथ लल्लू भैये के घर से निकला था। पुराने अध्याय में उसने यह नया जोड़ भी दिया कि व्योमेश को इक्के पर बिठलाकर वह फिर गलियों की तरफ लौट पड़ा है···

लल्लू भैये के घर से निकलते समय जयन्त ने व्योमेश से कहा : "अपनी घड़ी देख व्योम, टाइम क्या हुआ है ?"

"सेवेन ट्वेन्टी। तुम शाला इतने बड़े बाप का बेटा होकर घोड़ी भी नईं रखता।"

"अबे घोड़ी नहीं, घड़ी बोल—घड़ी।"

सुनकर लल्लू भैये हंस पड़े और व्योम मुस्कुरा उठा। जयन्त ने फिर कहा : "बंगाली बाबू शब्दों को भी रसगुल्ले जैसा गोल-गोल बना देते हैं। अब घड़ी लूंगा बेटा, जरा रिजल्ट आ जाए। हजरतगंज के मीनू एण्ड डीन शॉ कम्पनी में नई रिस्टवाचेज़ आ गई हैं,, वहीं लूंगा। स्विट्जरलैण्ड की घड़ियां बहुत अच्छी आती हैं। उठ बे बंगाली, मलाई खा चुका है। अब तुझे मच्छी-भात नहीं खिलाएंगे हमारे लल्लू भैये।"

व्योमेश ने उठते हुए लल्लू भैये की तरफ देखकर कहा : "ई जयन्तो बड़ा शोहदा हय लोल्लू भोय्या, शाला हमरा बाड़ी में ▪ बार माछ खा चुका हय। आप अपना खत्री जाती से इसको निकलवा दीजिए।"

लल्लू बोले : "अरे हमरी जाती का रतन हैगा, हमरा भाई। इसके बाबा हमरे यहां पहले-पहले नायबसाहब भय रहें। हमरे खोगा चाचा ने भी बड़ा नाम कमाया हैगा। तुम भी अब विलायत से बालिस्टरी पास कर आओ, जयन्तू।"

"क्या हमें भी बिरादरी से निकलवाओगे लल्लू भैये?" जयन्त ने बैठक के दरवाज़े की ओर बढ़ते हुए कहा।

"अरे तुम्हें कौन निकाल सकता है यार, अब पहले जैसा ज़माना नहीं रहा कि कोई तुम्हारे खानदान को अब बिरादरी से बाहर कर सके।"

जयन्त हंसा : "कायदे से तो हम लोग अब भी बिरादरी से बाहर ही हैं। पर अब तो सभी हमारे माताजी और पिताजी को अपने यहां बुला-बुलाके खिलाते हैं और हमारे यहां भी खाने आते हैं। वाह रे हमारा धरम, चल बेटा व्योम, देर हो रही है।"

कहलेकुएं से कालीजी के बाज़ार की तरफ निकले। कुप्पियों और टिम-टिमाती ढिबरियों तथा दो-चार जगह लालटेन की भी टिमटिमाती रोशनियों के धुंधले उजाले में हटीराम की चढ़ाई पार करके सड़क पर आ गए। गर्मी के मौसम में मलमल के कुर्ते कन्धे पर डाले नंगे बदन, अक्सर नंगे पांव भी, लेकिन सिर पर दुपलिया टोपी पहने, हाथों में छोटी-छोटी पंखिया डुलाते हुए अधिकतर लोग आते-जाते दिखलाई दे रहे थे। सड़क पर लोहे के खम्भे में जगमगाती हुई गैस के हण्डे की रोशनी दिखाई देने लगी। राजवैद्य गजाधरजी के बड़े बेटे डॉक्टर गंगाराम जैतली का मकान आया, फिर इलाहाबाद बैंक की कोठी, फिर बाबू हरेकृष्ण धवल की कोठी, बड़ा भारी बरगद का पेड़ फिर 'तख्त'। गोल दरवाज़े के चौराहे पर बेले और मोतियों के हारवाले और फूलों के गहने बेचनेवाले बैठे थे। गंडेरियां बिक रही थीं, कुल्फी और मलाई की बरफवाले भी नज़र आये। मछलीवाली खानदगी के बाद घड़ियाली टोले के आगे नई कोतवाली बन रही थी, वहीं इक्के खड़े थे। एकाएक जयन्त ठिठक गया, बोला : "व्योम यार, तू जा। मुझे एक काम याद आ गया है, अपने एल्गिन्स्टन हाउस जाऊंगा।"

व्योम को टके सवारी के इक्के पर बिठाकर जयन्त फिर लौटा और गोल दरवाज़े के फाटक से बाज़ार में गुज़रने लगा। दुकानें धीरे-धीरे बढ़ने लगी थीं, शौकीन रईसज़ादे हाथ की कलाइयों में बेले और मोतियों के हार लपेटे, पान चबाते हुए अपनी-अपनी चहेतियों के कोठों की ओर उतावली से बढ़ रहे थे। जयन्त चहोरन टोले की गली में घुस गया और अंधेरे में गलियां पार करता हुआ अपनी पैतृक हवेली के पिछवाड़े टोले की बाड़वाली कुलिया में था।

तभी आवाज़ आई : "जयन्तू भैये, कहां जा रहे हे ?"

सुनकर जयन्त यों ठिठका जैसे चोरी करते रंगेहाथों पकड़ा गया हो। नन्दू चाचा का सबसे छोटा बेटा विशनू पास आ गया। जयन्त ने अपने होश को ठीक तरह से सम्हालते हुए कहा : "तू कहां से आ गया विशनू ?"

"अरे रामआसरे की दूकान गए थे ताई के लिए सेब का मुरब्बा लेने ! आप कहां जा रहे हैं ? वहीं सन्तोपनरातन की औरतिया के यहां न ?"

जयन्त फिर झिझका। अकड़कर कहा : "अबे वो माताजी के स्कूल में पढ़ाती है बेवकूफ और मैं उसे अंग्रेजी पढ़ाता हूं, क्या समझा।"

विशनू मुस्कुराकर बोला : "सब समझा, सब समझता हूं, जयन्तू भैये। अच्छा ये बताइए घर आइएगा ?"

"नहीं, उससे कहना है कि कल नहीं पढ़ाऊंगा, मुझे जरूरी काम है। बस फिर चला जाऊंगा। मुझे अभी सुन्दरबाग भी जाना है।"

विशनू के मिलने से जयन्त को बड़ी झेंप और झुंझलाहट महसूस हो रही थी और उसकी यही झुंझलाहट अचेतन रूप से प्रेमकिशोरी के दरवाज़े की कुण्डी पर तनिक जोर से बरस पड़ी। कुछ क्षणों के बाद ही दरवाज़े के पीछे से प्रेमकिशोरी का स्वर सुनाई पड़ा : "कौन है ?"

"मैं जयन्त।" जयन्त ने धीमी आवाज़ में कहा, भीतर की कुण्डी खुल गई।

"ठहरिए, रोशनी ले आऊं।"

प्रेमकिशोरी की आवाज़ में कुछ रूखापन था, जिसे सुनकर जयन्त के मन का चोर सकपका उठा। भीतर से द्वारे की कुण्डी बन्द करता हुआ मजाक-भरे स्वर में बनावटी हंसी के साथ बोला : "उल्लू अंधेरे में देख लेता है प्रेम, चिन्ता न करो।"

प्रेम कुछ न बोली, दालान पार करके भीतर की कोठरी से दीवट उठा लाई और उस दालान में रखी एकमात्र कुर्सी के पास उसे रख दिया, खम्भे से लगकर एक ओर खड़ी हो गई, जयन्त आकर कुर्सी पर बैठ गया। टिमटिमाते प्रकाश में भी वह प्रेमकिशोरी के चेहरे पर लदा हुआ रोष देख रहा था। कुछ क्षण गहरी चुप्पी में बीते, फिर प्रेम ने पूछा : "पानी पीजिएगा जयन्त भाई ?"

पिछले दिनों भी दो-तीन बार वह जब यहां आया है तब प्रेम ने उसे जयन्त बाबू ही कहा है भाई नहीं, किन्तु आज यह शब्द मानो उसके मुंह पर तमाचा मारने के लिए ही प्रेम ने प्रयुक्त किया था। जयन्त को सचमुच प्यास थी, फिर भी रूखे स्वर में मना कर दिया। फिर चुप्पी।

"क्या हवेली में अपने किसी चाचा के यहां आए थे ?"

"खत्री पाठशाला में एक मीटिंग थी।"

"और मेरे यहां किसलिए ?"

जयन्त उत्तर न दे सका।

बातों की रेल पैंसिजर गाड़ी की तरह अभी तक रुक-रुककर चल रही थी। प्रेमकिशोरी ने फिर कहा : "इतने पढ़े-लिखे होकर आप इस तरह की नादानियां करेंगे, यह मैंने कभी नहीं सोचा था, जयन्त भाई। आपके यहां पढ़ने आती हूं तब भी आप माताजी से चुराकर मुझे जिस तरह देखते हैं उसका मतलब तो बहुत पहले ही समझ गई थी, पर आप जो अब जल्दी-जल्दी मेरे यहां फेरे लगाने लगे हैं, इसका मतलब नहीं समझ पा रही हूं।"

वह कुछ और भी कहना चाहती थी कि जयन्त के रौब-भरे स्वर ने झटका दिया, वह बोला : "क्या मैंने अभी तक तुमसे कोई भद्दी बात कही है ?"

"मुंह से भले न कहें, आखें सब कुछ कह देती हैं।"

जयन्त के रौब का गुब्बारा पिचक गया, नम्र स्वर में कहा : "मैं अपने को रोक नहीं पाता प्रेम, चाहता हूं तुम्हें देखता रहूं, देखता रहूं। तुम्हारे रूप की मशाल मुझे अपने मन की अनजानी सुरंग में दूर तक ले जाती है।"

"किसी ने आपको मेरे यहां आते-जाते देख लिया तो मेरे मुंह पर कैसी कालिख लगेगी, यह नहीं सोचा ? (जयन्त चुप) आपसे पांच-छह बरस बड़ी जरूर हूं पर आपके बार-बार इस तरह देखने से मेरे मन में जो उलट-पलट हो जाती है—आखिर मैं भी इन्सान हूं, जोगिनी-संन्यासिनी नहीं। मुझे क्यों बरबाद करना चाहते हैं आप ?"

"मुझे—मुझे माफ करो प्रेम—क्या करूं, तुम्हारा ध्यान मुझे अरमानों के तालाब में बरबस ढकेलकर डुबो देना चाहता है। और बचाव के लिए भी तुम्हें देखना ही मेरा सहारा भी है।"

"आपका यह सहारा एक दिन या तो मुझे आपके साथ पाप के पंक में डुबो देगा या फिर मुझे कुएं में ही डूबना होगा।"

"नहीं-नहीं प्रेम। मैं··· मुझे माफ करो। अब कभी नहीं आऊंगा। (जयन्त उठ खड़ा हुआ) मैं अपनी गलती समझ गया हूं लेकिन तुम्हारे आकर्षण से अभी उबर नहीं पाता, इसलिए अब कल से तुम्हें पढ़ाऊंगा भी नहीं।"

"मैं तब अपने प्राण दे दूंगी।"

"क्यों ?"

"आपके न पढ़ाने से माताजी को शक होगा, स्त्री का शक स्त्री पर ही जाता है।"

"ठीक है, पढ़ाता रहूंगा।" कहकर जयन्त रुका नहीं, सीधे दहलीज की ओर चल पड़ा।

"रुकिए जयन्त भाई, एक बार गली के मोहाने तक देख आऊं, तब जाइएगा।"

सोलह

उस दिन सुबह का गया जयन्त जब शाम को साढ़े-सात आठ बजे तक घर नहीं लौटा तो कौशल्या को चिन्ता होने लगी। दिन में वह कन्या पाठशाला गई थीं। प्रेमकिशोरी से अकेले में बुलाकर बातें पूछीं। प्रेम ने बेझिझक कहा : "हां माताजी, वह आए तो ज़रूर पर मैं आपके चरनों की सौगन्ध खाकर कहती हूं कि उन्होंने मुझे अभी तक कोई ऐसी-वैसी बात नहीं कही।"

"तब तुम्हारे यहां क्यों आता है?"

प्रेमकिशोरी ठिठकी, फिर कहा : "मुझे देखते रहते हैं।"

"खाली देखता रहता है, बस?"

"कई बातें करते हैं, पूछते रहते हैं। ये पूछते हैं कि बीस रुपये में तुम्हारा खर्च कैसे चलता है? एक बार पांच रुपये का नोट भी देना चाहा, मैंने नहीं लिया।···हां, परसों-नरसों जब रात में आए तो मैंने रुखाई से कहा कि जयन्त भाई, बखत-बेवखत आपके इस तरह यहां आने से मैं झूठे ही बदनाम हो जाऊंगी, क्या आपको इस बात का ख्याल नहीं आता।"

"तो क्या बोला?"

"चुप हो गए। फिर बोले, मन जब परेशान होता है तो तुम्हारे पास आने से मुझे राहत मिलती है। लेकिन तुम ठीक कहती हो, मैं अब नहीं आऊंगा। मुझे माफ़ करना।"

"और कुछ कहा था?"

"जी नहीं। (कुछ रुककर) शुरू में एक बार मुझसे यह ज़रूर कहा था कि तुम पुनर्विवाह क्यों नहीं कर लेतीं। मैंने कहा—अगर ऐसा करना ही पड़ा तो माताजी से कह दूंगी कि वो ही उचित जगह प्रबन्ध कर दें।"

"देखो प्रेम, मैं तुम्हें अपनी बेटी की तरह से चाहती हूं। जयन्त अभी लड़का है···"

कौशल्या की बात अभी पूरी भी न हुई थी कि प्रेमकिशोरी ने तुरन्त झुककर उनके पैरों पर अपना सिर नवा दिया। कौशल्या के पैरों पर उसके आंसू टपके, उन्होंने उसे उठाकर फिर खड़ा किया। पूछा : "क्या बात है?"

"आपने···" कहते-कहते गला भर आया। "मुं-मुं, मुझ पर शक किया···

मैं लखनऊ छोड़कर चली जाऊंगी। मैं बहुत अभागी हूं माताजी।" कहकर वह फूट-फूटकर रो पड़ी।

कौशल्या देवी ने उसके सिर पर हाथ फेरा और वात्सल्य-भरे धीमे स्वर में कहा : "आंसू पोंछो, कोई देखेगा तो क्या कहेगा? मैंने तुम पर शक नहीं किया प्रेम, यह उमर ही ऐसी होती है कि मन बहक जाता है। तुम जयन्त से बड़ी भले ही हो पर हो तो अभी लड़की ही। फिर अकेली रहती हो। मैंने अभी तक तुम्हारी किसी से कोई शिकायत नहीं सुनी। फिर भी यह उमर ऐसी है कि इसमें कहीं ऊंच-नीच तुम्हारे न चाहते हुए भी हो जाए तो···"

"पिताजी से कहकर मेरा यह घर बिकवा दीजिए। मैं रुपये लेकर नसीमपुर चली जाऊंगी। वहीं रहूंगी।"

"वहां तुम्हारा कौन है?"

"पहले मामका था, अब कोई नहीं है।"

"पगली, मैं तुझ पर अविश्वास नहीं करती। तू यहीं रह। तुझे अंग्रेजी पढ़ाने के लिए मैं किसी ईसाइन का प्रबन्ध कर दूंगी।"

"नहीं माताजी, पढ़ूंगी तो जयन्त भाई से ही। मुझे अपने ऊपर और उनके ऊपर विश्वास है।"

कौशल्या देवी एकटक उसका सांवला मुंह देखती रहीं, फिर कहा : "ठीक है, पाठशाला के स्कूल बन जाने पर तू अध्यापिका हो जाएगी।"

कौशल्या पाठशाला से होकर घर आ गई किन्तु जयन्त अभी तक घर नहीं लौटा। दिन में खाने भी नहीं आया, कहां गया होगा। डाक्टर साहब आर्यसमाज की सभा में गणेशगंज गए हैं, वह भी अभी तक नहीं लौटे हैं, आने ही पूछेंगे। कौशल्या देवी इसी चिन्ता में बैठी थीं कि माली एक पर्चा दे गया। पर्चा जयन्त का ही था, लिखा था—'आज रात व्योमेश बनर्जी के घर पर ही रहूंगा। उनके यहां बंगाली कीर्तनिए आए हैं।"

कीर्तनिए आने की बात झूठी थी। जयन्त व्योम के साथ अपने एक सहपाठी जगदम्बासहाय के यहां भावी बायकाट आन्दोलन की योजना बनाने के लिए गया था। जगदम्बा कह रहा था : "भई, अभी गवर्नमेंट से सीधी टक्कर लेने का समय नहीं आया। बंगाल में तो बम वगैरह बनने भी लगे हैं पर हमारे यहां ऐसा कोई ऑर्गनाइजेशन नहीं है।"

"नहीं है तो हो जायगा। हमारा कैलक्टा में बहुत-बहुत कान्टैक्ट है, हम बुला देगा।"

"तुम लोग बात को दूसरी दिशा में मोड़ रहे हो, व्योम। मैं चाहता हूं कि पहले यहां का स्वदेशी आन्दोलन मजबूत करें। हम एक निगलेचर कम्पेन चलाएं। यहां के जितने बड़े-बड़े लोग हैं, उनसे हम प्रतिज्ञापत्र पर दस्तखत कराएं कि वे

स्वदेशी मिलों का कपड़ा ही पहनेंगे। हम स्वदेशी धन्धों को भी बढ़ावा देंगे।" कहते-कहते एकाएक अपनी जांघ पर थपकी देकर जयन्त बोला : "बंगाल की तरह हम भी सवेरे-सवेरे यहां 'वन्देमातरम्' की प्रभातफेरियां क्यों न निकालें ? अरे आर्यसमाजवाले निकालते हैं कि नहीं—'वेदों का डंका आलम में बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने।' हम भी 'वन्देमातरम्' के गीत गाएंगे और स्वदेशी का प्रचार करेंगे। कम-से-कम चौक, सआदतगंज और तुम्हारे इस तरफ़ लाल कुआं, छितवापुर, रिसालदारपार्क, नाकेहिन्डोले वगैरह मोहल्लों में प्रभातफेरियां निकल सकती हैं। इधर रासबिहारी तिवारी हैं, उधर चौपटियों में बालमुकुन्द वाजपेयी हैं, रूपनारायण पाण्डेय हैं। एक बहुत एनर्जेटिक आर्यसमाजी हैं। एण्ड ही इज आई कैन एश्योर यू फ्रैण्ड्स दैट आई शैल मोबलाइज ए ग्रेट नम्बर ऑफ़ रिस्पेक्टुबुल यंग मैन एण्ड स्टूडेन्ट्स। प्रभातफेरियां निकालो, हमारा प्रचार तेज होगा तो आगे की सरगर्मियां भी खुद-ब-खुद बढ़ने की राह पा जाएंगी।"

पहली प्रभातफेरी अमीनाबाद में निकली—

"जिएं तो स्वदेशी बदन पर बसन हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफ़न हो।
पराया सहारा है अपमान होना,
जरूरी है निज शान का ध्यान होना।
है वाजिब स्वदेशी पै कुर्बान होना,
इसी से है सम्भव समाधान होना।"

एफ़० ए० का परीक्षाफल इलाहाबाद के 'पायनियर' अखबार में प्रकाशित होकर आ गया था। जयन्त प्रथम श्रेणी के छात्रों में भी प्रथम स्थान पर आया। बड़ी धूम मची। दोस्त अहबाब डॉक्टर देशदीपक को दावत देने के लिए ज़ोर देने लगे और दावत भी हुई। कमिश्नर और कलक्टर जैसे बड़े-बड़े अंग्रेज हाकिमों ने पहले तो निमन्त्रण स्वीकार किया, पर दावत के दिन दोपहर ही में दोनों हाकिमों का खेद-भरा यह पत्र भी डॉक्टर साहब को मिला कि वे किसी कारणवश न आ सकेंगे।

अंग्रेज़ों में सिर्फ़ सिविल सर्जन साहब ही पधारे थे। यों डॉक्टर साहब से उपकृत नगर के प्रायः सभी हिन्दू-मुसलमान रईस वहां मौजूद थे। जनाब यूसुफ हुसैन खां बैरिस्टर ने डॉक्टर साहब के सामने जयन्त की पीठ थपथपाते हुए कहा : "तुम तो हमारे शहर के रतन हो बुर्खुर्दार, खूब तरक्की करोगे। बाकी यह नेक सलाह भी देना चाहूंगा कि ये तमाम जो नये-नये मूवमेन्ट्स बंगालियों की सोहबत में हमारे यहां आ रहे हैं उनसे फिलहाल दूर रहो। देखो तुम्हारी स्वदेशी की सर्गर्मियों की वजह से ही आज कमिश्नर और कलक्टर साहबान इस दावत में शिरकत फ़रमाने के लिए तशरीफ़ नहीं लाए वर्ना हमारे डॉक्टर साहब ऐसे हरदिल

अज़ीज़ और आला शख्सियत के दावतनामे को शहर में भला कोई मना कर सकता है।"

"लेकिन स्वदेशी मूवमेन्ट को एण्टी-गवर्नमेन्ट क्यों माना जाता है ?" जयन्त ने तनिक तेज़ स्वर में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की।

बैरिस्टर साहब मुस्कुराए : "साहबज़ादे, तुम्हारी स्वदेशी में ये बायकाट का दुमछल्ला जो जोड़ा गया है वह ज़ाहिर है कि एण्टी बृटिश है और बृटिश सरकार इसको क्योंकर फेवर कर सकती है। भई डॉक्टर साहब, मेरी राय में तो आप मेरे इस बेटे को ऑक्सफोर्ड या कैम्ब्रिज में क्यों नहीं भेज देते ?"

डॉक्टर देशदीपक बोले . "बैरिस्टर साहब, आप तो मेरे जी की बात ही फ़र्मा रहे हैं। मैं भी यही चाहता हू कि इसकी बी० ए० की पढ़ाई इंग्लैण्ड में ही हो।"

बातों का रुख जब स्वदेशी से हटकर विदेशी हो गया तो जयन्त बहाने से माफ़ी मांगकर वहां से हट गया।

शहर में हिन्दुओं के अलावा अब मुसलमान रईसज़ादों में भी अंग्रेज़ी पढ़ाई का ज़ोर बढ़ चला था। दावत में आए हुए हिन्दू-मुस्लिम मेहमानों को अंग्रेज़ी में सम्बोधित करते हुए बैरिस्टर यूसुफ हुसैन ने पहले तो जयन्त की तारीफ़ की, दुआएं दी और यह कामना भी की कि हमारे बच्चे ज्यादह-से-ज्यादह तादाद में इंग्लैण्ड, फ्रान्स और जर्मनी से नई-नई तालीमात हासिल करके अपने मुल्क में आएं और इसकी इज़्ज़त बढ़ाएं।

लेकिन जयन्त तो इज़्ज़त बढ़ाने के बजाय स्वदेशी आन्दोलन बढ़ाने में जुटा हुआ था। दावत के दूसरे दिन ही संयोग से जयन्त अब अपने कमरे में बैठा हुआ डायरी लिख रहा था तभी सुक्खू फर्राश एक छोटी-सी पर्ची लेकर आया। उस पर लिखा था ज़ियाउर्रहमान, मऊनाथ भंजन।

डॉक्टर साहब तब तक चूंकि अस्पताल जा चुके थे इसलिए जयन्त ने नीचे बैठकखाने में बिठला देने को कहा और स्वयं अपना डायरी लेखन जल्द समाप्त करके नीचे आ गया।

"आदाब बजा लाता हूं।"

"वन्देमातरम्, कहिए, कैसे तकलीफ़ करी आपने ?"

"पायनियर में आपकी तस्वीर छपी देखी तो यकायक शानेअवध से भर उठा। काम से लखनऊ आया था, सोचा आपसे मुलाकात कर लूं। मैंने भी इसी साल आपके साथ ही एफ० ए० पास किया है लेकिन थर्ड डिवीजन।"

"मेरे साथ आप कॉलेज में पढ़ते थे ?"

"जी, प्राइवेट किया था। ब्राउन साहब से कोचिंग लेता था।"

"अच्छा-अच्छा, कोई बात नहीं, कैसे तकलीफ़ की ?"

"मैं आपसे तफ़सील से कुछ बात करना चाहता हूं, कौम का जुलाहा हूं,

मुसलमान ज़रूर हूं। पहले हम लोग भी कभी हिन्दू ही हुआ करते थे मगर अब तो सदियों से मुसलमान हैं।"

जियाउर्रहमान की इच्छा थी कि वह लखनऊ में चिकन बनानेवाले कारीगरों का सहयोग लेकर अपने यहां की देशी मलमल पर उनसे काम करवाए। ज़िया, जयन्त की मदद चाहता था। उसने अपने यहां की बनी हुई मलमल का एक रूमाल भी पेश किया, कहा : "देखिए, मान्चेस्टर के बारीक सूत की तारीफ़ तो बहुत है लेकिन विलायती मशीनों की कारीगरी के मुकाबले में हमारे अवधी हुनरमन्दों का कमाल भी देखिए।"

जयन्त ने कपड़े को देखकर प्रशंसा की और कहा : "मगर मैं आपके काम में मदद देना चाहकर भी मजबूर हूं, क्योंकि मैं किसी कारीगर को नहीं जानता हूं।"

"आपको जानना चाहिए जनावेआला। अगर स्वदेशी की हिमायत करते हैं तो इस काम को बढ़ानेवाले बुनकरों और कारीगरों से भी आपको दो-चार होना पड़ेगा।"

"आप ठीक कह रहे हैं ज़िया साहब, मैं सिर्फ़ एज़ीटेशन की बातें ही सोचता था। उसके बढ़ाने की बातें अभी मेरे ध्यान में ही नहीं आईं, लेकिन मैं आपको पता लगवा दूंगा। आप कब तक लखनऊ में रहेंगे?"

"जब तक आप चाहेंगे। अस्ल में मेरे एक खालूजात भाई यहां मुदर्रिसी करने लगे है। यों हमारे उनके वालिद, हमारे कारखाने में पत्तीदार भी हैं। उन्हीं के यहां आकर ठहरता हूं।"

"ठीक है, आप मुझसे कल इसी वक्त आकर मिलें, मैं आपको बतलाऊंगा। और आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं कि स्वदेशी का आन्दोलन चलाते समय मुझे स्वदेशी व्यापारियों एवं कारीगरों के कान्टेक्ट में भी रहना चाहिए। वैसे आपकी बिरादरी में और कितने नौजवान अंग्रेज़ी पढ़-लिख रहे हैं?"

"फिलहाल अपने कस्बे में तो मैंने ही यहां तक तालीम हासिल की और अब अपने छोटे भाइयों को भी पढ़ा रहा हूं।"

बातों में जयन्त को मुसलमानों के सम्बन्ध में कई नई जानकारियां मिलीं। इतिहास के उजाले में वह इस समस्या को देखने लगा। इस देश में आरम्भ ही से न जाने कितनी जातियां आईं और यहां की संस्कृति तथा फैले हुए धर्माचारों में से किसी भी एक को अपनाकर यहां के समाज में घुलमिल भी गईं, उनका अपना अस्तित्व ही समाप्त हो गया। आठवीं शताब्दी में सिन्ध पर अरबों का शासन हो गया और यह अरब मोहम्मदी ही ऐसे निकले जिन्होंने हिन्दुओं से अपने अस्तित्व को अलग रखा। फिर और भी आगे अफगान लोग जिनके देश में कभी वैदिक ऋचाएं गूंजती थीं, मुसलमान बनकर आए। तुर्क-फारसवाले पुराने अग्नि-पूजक या बौद्ध, नये आक्रामक मुसलमान होकर भारत में आए और उन्होंने भी

अरबों की तरह ही अपना पृथक् धार्मिक अस्तित्व बनाए रखा। बारहवीं शताब्दी में तुर्कों की तलवार ने भारत की न जाने कितनी दबी-कुचली जातियों को डरा-धमकाकर मुसलमान बनाया, लेकिन यह नये हिन्दुस्तानी मुसलमान न इधर के रहे न उधर के रहे। पुराने धार्मिक समाजों से तो यह बहिष्कृत हो ही गये, नये धार्मिक समाज में भी इन्हें प्रतिष्ठा का स्थान न मिला। यह लोग दबे-के-दबे ही रह गए। मुसलमानी शासन में तो उनकी जीविका किसी-न-किसी तरह चल जाती थी, रईसों, नवाबों और ऊंचे मनसबदारों की रियासती आवश्यकताओं की पूर्ति और कपड़े की तिजारत करनेवाले व्यापारियों के द्वारा रोज़ी-रोटी का जोगाड़ हो जाता था। अब वह भी न रहा और यह हिन्दू व्यापारियों के आश्रित होने पर मजबूर हुए।

अंग्रेजों की हुकूमत में एक यह बड़ा परिवर्तन भी हुआ कि हिन्दू समाज के 'धोतीप्रसादों' ने अंग्रेजी पढ़कर सरकारी नौकरियां पा लीं और मुसलमानों के बड़े अभिजात वर्ग के वे लोग जो कल तक हिन्दुओं पर हुकुम चलाते थे, इन अंग्रेज और अंग्रेजी-पोषित हिन्दू हाकिमों को सलामें बजाने पर मजबूर हुए। इसी प्रतिक्रिया में रायबरेली के सैय्यद अहमद खां ने अभिजात वर्ग के मुसलमानों के सहयोग से अलगाववादी अलीगढ़ मूवमेंट चलाया और उच्चकुलों के मुसलमानों को भी अंग्रेजी शिक्षा दिलवाने के लिए अलीगढ़ में मोहम्मडन ऐंग्लो ओरियण्टल कालेज की स्थापना कराई।

सत्रह

मुनऊ, हाजी नवाब को उनकी बग्घी तक छोड़ने के लिए फाटक तक गए थे और लाला बल्लभदास पन्ने के तराशे हुए नायाब कारीगरी के झुमके को हाथ में उठाकर उसकी बारीक और बेमिसाल कारीगरी को मुग्ध दृष्टि से देखते हुए मगन हो रहे थे। अब इस पुराने और बेशकीमती कलात्मक नग के मालिक यह हैं—लाला बल्लभदास रस्तोगी बी. ए. बैंकर। "अब ई नवाब बिचरऊ हमसे क्या ले पइहैं।"

मुनऊ बैठक में लौट आए थे। पिता को गहना निरखते-परखते देखकर वह खुश होते हुए, पास आकर बैठ गए और दूसरे झुमके को उठाकर देखते हुए रीझे स्वर में कहा "ऐसी कारीगरी तो देखतै बनत है बाबू।"

"हाजी बतावत रहे कि हमारे बुजुर्गों ने जब घरों से यह इलाका जीता तो लूट के माल में यह हासिल हुआ था। छह सौ बरसों से हमारे खानदान में है।"

"ई की वैलू का होई बाबू, ई जमाने में?"

"भाई, ठीक-ठीक तो कोई जोहरियै वताय सकिहै, वाकी हमरी निगाह मां लाख की जोरी हैगी। अरे पन्ना रियासत की निसानी होत हैगा। औ ई अंगूठिऔ पचास हजार से कम की नाही है, पीले रंग का पुखराज, हमरी जान मां वीस-वाईस रत्ती की चौकी हैगी हीरे की। चलो अच्छा आवा आज, सुक्करवार हैगा। भीतर से जायके ई का दूध मां धोय लाओ। अपनी उंगली में डाल लेवा। और झुमकै अपनी अम्मा का दिखाऔ, वहुरिया का दिखाऔ, फिर भीतर तिजोरी मां रखि कै आव।"

अंगूठी और झुमकों की खुली पोटली हाथ में उठाकर भीतर जाते हुए मुनऊ ने सन्तोष के साथ पिता से कहा : "आज वोहनी अच्छी भई वावू, लगभग डेर्ह पौने दुई लाख का माल आवा।"

अपनी वड़ी-वड़ी खिचड़ी मूंछों में वल्लभदास मुस्कुराए : "सिरीनाथजी की किरपा है। हम क्या चूतिया रहे जो सत्तर हजार हाजी नवाव का टिकाय दिए।"

"अव छुराय तो पइहैं नहीं वावू।"

लाला वल्लभदास हंसे : "अऽरै ई सव मुसलमान नवाव, ताल्लुकेदार अव जाय रहे हैं भैया। झूठी आवरूदारी, झूठी सेखी, अय्यासी अव इनका उवरै न देहै मुनऊ। एक ज़माने मां हिन्दू रानी महारानियन से लूटिन रहा। अव फिर से हम हिन्दुन के पास लौट के आय रही है इनकी सम्पदा।"

अहाते में फिर मोटर का हार्न वजा। वल्लभदास सुनते ही अपने आपसे कह उठे : "मोटर पै कौन आवा। अरे ड्यौढ़ी पै कौन हैगा?"

तभी दरवान के साथ कौशल्या देवी एक अन्य महिला के साथ आई। कौशल्या देवी को देखते ही अपने भारी शरीर को उठाते हुए गद्गद स्वर में लाला वोले : "अरे-अरे वहूजी सहिवा, आज तो हमरे धन्य भाग हैंगे।"

तखत पर एक किनारे वैठते हुए कौशल्याजी ने कहा : "अरे मैंने सोचा जब आपने इत्ते परोपकार का काम किया हैगा तो मैं ही इनके साथ आपको न्योता देने आऊं।"

"काहे का न्योता वहूजी।" (भीतर की ओर मुंह उठाकर ओर से) अरे उंघे कोई हैगा? दौर के आओ।"

कौशल्याजी अपने साथ आई हुई श्यामवर्ण की सौम्य महिला की ओर देखकर वोलीं : "ये सरोजकुमारी हैं, डॉक्टर श्याममनोहर की···"

"अच्छा-अच्छा, समझ गए, समझ गए। व्याह का न्योता होगा।"

श्रीमती सरोजकुमारी ने गुलावी रंग का लिफाफा अपने झोले से निकालकर कौशल्याजी के हाथ में रखा जिसे उन्होंने लालाजी की ओर वढ़ाते हुए कहा : "आपने वहोत-वहोत परोपकार किया लालाजी। पूरा-का-पूरा रुपया इनके यहां भेज दिया।"

"हें-हें-हें, आप तो बहूजी साहिबा आरसमाजी हैं पर हम तो कट्टर सनातनी बिचारों के हैगे। ब्राह्मनों और डाक्टरों का पैसा हमें पच नही सकता हें-हें-हें। (कमरे में नौकर आकर खड़ा था, उसे देखकर लाला बोले) बरे भइया का बुलाओ जल्दी से। कहो डाक्टर साहेब के घर में से आई हैंगी।" फिर पहले सरोजकुमारी, बाद में कौशल्या देवी की ओर देखकर कहा : "अब ये छपे हुए न्योतन का अच्छा चलन चल गया हैगा, कब का है ब्याह ?"

"उतरते जेठ चौदस का, आज के सतएं दिन समझिए। श्यामवर्णा सरोज-कुमारी बोली : "इस समय आपका यह दान पहुंच जाने से मेरे सिर से चिन्ता का पहाड़ उतर गया लालाजी। आपका उपकार मानने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।"

"उपकार तो एक मिरी ठाकुरजी ही करते हैं सबके ऊपर बहिनजी, खैर। और डाक्टर श्याममनोहर कैसे है हमारे। उनकी चिट्ठियां-उट्ठिया आती हैं बिलायत से ?"

"नहीं। अरे अब उन्होंने विवाह कर लिया है, वहीं लण्डन में बस गए हैं। कभी झूठे भी इनको और इनके बच्चों को नहीं पूछते।"

मुनऊ बैठके में आ गए थे। उसने डॉक्टर टण्डन को तो कई बार देखा था पर कौशल्याजी के दर्शन आज पहली बार ही किए थे। दो महिलाएं देखकर वह पहचान तो न सके, लेकिन गौर वर्ण की तेजस्वी महिला को अनुमान से डॉक्टर-पत्नी मानकर उनके पैरों को झुककर छुआ। साथ ही बैठी दूसरी महिला के चरण छुए तो नही, पर छूने का-सा दिखावा अवश्य किया।

"अरे भाई, इनका अपनी अम्मा के पास लै जाओ। कुछ खातिर-उतिरदारी करौ, बड़े भाग। (कौशल्याजी की ओर देखकर) कैनिंग कालेज में हमारे क्लास-फेलो रहे डाकटर साहेब, फिर वो तो अपनी डाकटरी पढ़ने चले गए, हमने सौक में पहले प्राइवेटली बी० ए० पास कर लिया।"

"हां, डॉक्टर साहब बतलाते थे। उन्होंने भी आपके दान की बड़ी तारीफ करी है। और बहुत-बहुत धन्यवाद कहलाया है।"

"अरे दान तो हमने क्या किया बहूजी, ये तो डाकटर साहेब ने किया है। हां, ये जरूर कह सकती है कि हमने इनके पती को दी हुई रकम कृस्नार्पन कर दी है।"

मुनऊ महिलाओं को भीतर चलने के लिए दोनों हाथ बढ़ाकर आवाहन कर रहा था। तखत से उठते-उठते कौशल्या देवी बोली "आप चाहे जो कुछ भी कह लें पर आपके यह पाच हजार रुपये आने से इनका सब काम बन गया। अभी हमारे यहां ब्राह्मणों में दहेज चलता है, कायस्थों में भी चलता है।"

"हां-हां बहूजी, दहेज क्या यूं समझ लीजिए पुराना रिवाज हैगा, सभी जात के लोग अपने लरकन-बिटियन के लिए कुछ-न-कुछ तो करते ही हैगे। मुसलमानों

के यहां भी खूव दिया-लिया जाता हैगा। अभी हमरे हिया विलारी के हाजी नवाब आय रहें, पांच लरकन के बीच में एकै एक लरकी हैगी उनकी। खानदान में कोई लरका न मिला। तो टिकैतगंज के नवावजादे से व्याह रहे हैं। डेढ़-दुई लाख की सादी हुइहै वहूजी सहिवा।"

"डेढ़-दो लाख ! कोई वड़े राजा-महाराजा, नवाव ही होंगे ?"

"दुई सौ गांव की रियासत रही। एक जमाने में सवसे वड़ी रियासत थी। कुछ गदर में छिनी, वाकी ऐसवाजी में। कमाई तो होती नहीं इनके यहां। वस लक्ष्मी घर से निकलती ही चली जाती है वरव्वर। इस निकाह के वाद ये समझिए कि भंगी हुई जैहै इनका खानदान।"

"आपके लिए एक चिकन का काम वनानेवाली का पता पूछ आई हूं," प्रेमकिशोरी ने डॉ० टण्डन के घर में अंग्रेजी पढ़ने के वाद कितावें उठाते हुए जयन्त से कहा।

जयन्त जो उसकी ओर नजर उठाकर देख भी नहीं रहा था आज, पढ़ाते समय उसका यह एक घण्टा एक वरस के समान लम्वा वीता है। कल जव प्रेम पढ़ने आई थी तव तक सव कुछ सहज था और उसने प्रेम से कहा था : "तुम तो हमारी हवेली के पड़ोस में ही रहती हो प्रेम। काशी चाचा से किसी अच्छे चिकन वनानेवाले गरीव वूढ़े-वूढ़ियों का नाम व पता पूछ लेना। मैं किसी वक्त शाम को तुम्हारे यहां आकर पूछ लूंगा।"

"छमा कीजिएगा जयन्त भाई। अव आप मेरे यहां नहीं आएंगे। माताजी ने मुझसे मना कर दिया है।"

"मां ! माताजी ! मां ! माताजी ? उन्हें मालूम है ?"

"हां, परसों उन्होंने पाठशाला आकर मुझसे कहा था।"

जयन्त सन्न खड़ा रह गया, फिर कहा : "तव फिर कल से नहीं पढ़ोगी ?"

"नहीं, उसके लिए आज्ञा ले ली है।"

उस समय जयन्त की मनोदशा कुछ ऐसी थी कि आधा होश में था और आधा वेहोश। सारा जीवन-रस ही जैसे उसके मन से निचुड़कर वूंद-वूंद वाहर निकल गया था, चेहरा एकदम उतर गया था। दो क्षण विलकुल चुप खड़ा रहा, फिर पूछा : "कारीगर कहां रहता है ?"

"वुढ़िया है, सआदतगंज में जहां चाची का मैका है, उसके पास ही रहती है। किसी पुराने खानदान की है, वसीका मिलता है।"

"लेकिन मैं वहां पहुंच कैसे पाऊंगा। ऊंचे खानदान की स्त्री, वह भी मुसलमान, मैं वात कैसे करूंगा ?"

"मैं आपके साथ चलूंगी।"

"तुम ?"

"हां ! माताजी से पूछ लूंगी, वह आज रहीमनगर गई हैं। मुझसे कह गई थी कि पिताजी को कहीं जाना है, वह हर हालत में पांच बजे तक आ ही जाएंगी, अब उनके आने का समय हो गया है। जाने से पहले आपसे कह भी जाऊंगी।"

"पर मैं भी अब बाहर जा रहा हूं और रात से पहले नहीं लौटूंगा।"

"तो माताजी को बतला दूंगी कि मैं कल कब आपको आकर ले जाऊंगी।"

जयन्त रुका नहीं, तेजी से कमरे के बाहर चला गया।

एक बार ऊपर अपने कमरे में गया पर वहां भी मन न जमा। ये सारा घर उसे काटने दौड़ रहा था। मां की नजरों में उसकी चोरी खुल गई, पिताजी भी कुछ-न-कुछ जानते ही होंगे। जयन्त यह पसन्द नहीं करता कि वह अपनी माता और पिता के सामने अपराधी बनकर आए। स्वदेशी वस्तुओं की प्रतिष्ठा के लिए जो कुछ कर रहा है, वह पिता की दृष्टि में भले ही अनुचित अतिरंजित हो लेकिन उसमें उसके मन में किसी भी प्रकार की अपराध भावना नहीं जागती। वह अपने उस कार्य के लिए पिता से बाअदब बग़ावत भी कर सकता है लेकिन प्रेमकिशोरी के घर छिप-छिप के जाने को प्रेरित करनेवाली उसकी गुप्त लालसाएं मां के सामने उजागर हो गईं, यह लज्जा-बोध उसके लिए एकदम नया और असहनीय है। माताजी आती होंगी, वह उनके आने से पहले ही घर से चला जाएगा। दराज से पांच रुपये का नोट निकालकर जेब में रखा, नीचे आया, दालान में प्रेमकिशोरी अब भी बैठी हुई अपना होमवर्क कर रही थी, न चाहते हुए भी कनखियां मिल ही गईं। जयन्त बाहर आ गया। पिताजी ड्राइंगरूम के बगल में बने अपने प्राइवेट कमरे में थे। बाईसिकिल उठाई और फाटक से बाहर निकल गया। अपराधी होने के अहसास का दर्द और युवा नारी के प्रति अपने दिल और दिमाग पर घटाटोप लदा हुआ सम्मोहन का प्रभाव उसे बेहद परेशान कर रहे थे—'तुम्हें क्या हो गया है जयन्त, इतने पगला क्यों रहे हो ? हर चीज अपने समय से आती है, यह प्रेम नहीं है बल्कि उसकी देह से जुड़ी हुई वह जन्नत है जिसका अनुभव पाने के लिए वह उत्कण्ठित हो उठा था।···ठीक है वह उत्कण्ठा। मैं उसे ईमानदारी से हरगिज नहीं नकार सकता लेकिन इस समय उसे सकारने में उतावली भी हरगिज नहीं दिखाऊंगा।'

बाईसिकिल जा रही है। सड़क से दो-चार बग्घियां, तांगे, इक्के जरूर गुजर गए मगर जयन्त ने उनकी ओर ध्यान देकर भी ध्यान नहीं दिया। एक प्रकार की बेसुधी ही उसके मन-प्राणों में आच्छादित थी। एकाएक ख्याल आया वह आगामीर की ड्योढ़ी के पास आ गया है और उसकी बाईसिकिल राजा बाजार की ओर मुड़ी रही है···क्यों ? इधर क्यों जा रहा हूं ? वैसे भी चौक जाकर क्या करूंगा, आशू भैये कल की मीटिंग में मेरे स्टैण्ड से बहुत नाराज हैं। उनका नाराज होना शायद

ही समाज का व्याख्यान वाचस्पती है उल्लू का पट्ठा। ऐसी स्पीच झाड़ता है साला कि उसका लोहा बड़े-बड़े मौलवी और पादरी तक मान गए। और इस कंच-ढिल्ले साले ने अपने ही समाज की एक बुद्धू औरत को फुसलाकर उसका धरम बिगाड़ दिया। क्या कहें ऐसी थुड़ू-थुड़ू मची है महल्ले में कि हम क्या बताएं।"

"तब तो उस औरत को भी मैं पूरी तरह से निर्दोष नहीं मानता।"

"हां, निर्दोष तो नहीं पर वो बुद्धू है साली। उसका हज़बैण्ड सुखलाल असल में अपने एक जौहरी क्लाएन्ट के साथ बम्बई चला गया था। कई साल से बम्बई में रह रहा था। वासुदेव से उसकी बड़ी दोस्ती थी, वाइफ से भी कोई पर्दा न था क्योंकि सब लोग आर्यसमाजी थे। उसकी वाइफ बच्चे के लिए तड़फड़ा रही थी। इस कंचढिल्ले साले ने उस बेवकूफ औरत को अपनी बातों में फंसा लिया। बुरे काम को भी साले ने धरम का नाटक कह कर किया।"

"कैसे—कैसे आशू भैये ?"

"इसने उसे समझाया कि पुराने ऋषि-मुनि सन्तानोत्पत्ति के लिए नियोग करते थे और उससे कोई पाप नहीं लगता था। भीष्म पितामह ने अपने छोटे भाइयों की रानियों का महर्षि वेदव्यासजी से नियोग करवाया था। साले ने उल्टे-सीधे मन्त्र-तन्त्र बोलने का नाटक करके उसे प्रेगनेन्ट कर दिया। सुखलाल जब लौट के आया तो अपनी पत्नी से यह सब सुनकर इतना गुस्से में आ गया कि वासुदेव के चौके में घुसकर साले को जूते लगाए। कल दिन-भर से पूरे महल्ले में हड़बोंग मची है, वासुदेव की घरवाली अपने बाल-बच्चों को लेकर अपने भाई के घर चली गई है। सुखलाल कल से चिल्ला-चिल्लाकर धमकी दे रहा है और आर्य-समाजियों एवं हिन्दुओं को गालियां दे रहा है। कहता है औरत के साथ मुसलमान हो जाऊंगा। सनातनी उधर एजीटेटिड हैं, हमरे बाबू अम्मा नाराज हैं कि काहे हम आर्यसमाजियों के चक्कर में पड़ें। अरे मैं कोई पहला आदमी हूं खानदान में। सच्ची पूछो तो खोखा ताऊ और हरों ताऊ—ये पहले दो आर्या बने हमारे घर में। अब हम-तुम सब उन्हीं से तो इन्फ्लूएन्स्ड भए कि झूठ कहता हूं।"

"अरे, इन सब बातों का ख्याल न करना चाहिए आशू भैये। चलो, मैं सब ठीक किए देता हूं। आई हैव गॉट ऐन आइडिया।"

अठारह

आशू भैये को साइकिल के कैरियर पर बिठलाए हुए जयन्त जब चौक की तरफ़ जा रहा था तब एकाएक आशू ने विनोदी मुद्रा में जयन्त की तरफ़ कनखी से

देखकर कहा : "सुना है आजकल सन्तोपनराएन की विडो से तुम्हारी इश्कबाजी चल रही है?"

सुनकर जयन्त झेंप गया। साइकिल का हैण्डिल साधे हुए हाथ पल-भर के लिए लड़खड़ाए लेकिन तुरन्त नाटकीय ढंग से मुस्कुराकर बोला : "आप लोग चूंकि इस वक्त नियोग के दिमागी एटमास्फियर में हैं, हर स्त्री-पुरुष के रिश्ते को इश्कबाजी के अलावा और भला देख ही किस नज़र से सकते हैं। माफ कीजिए आशू भैये, आप चौकवाले अभी इतने माडर्न नहीं हुए कि स्त्री-पुरुष के सहज रिश्ते को सहजता की दृष्टि से देख सकें।" साइकिल मौलवीगंज की चढ़ाई पर आ चली थी, दोहरी सवारी के वजन से साइकिल के पैंडिल चलाने में मशक्कत पड़ रही थी।

आशू बोले : "रोको, मैं उतर पड़ूं।"

उनके थोड़े खिसकने से साइकिल को झकोला लगा लेकिन जयन्त तुरन्त बोला : "बैठे रहिए, मेरा बैलेन्स न बिगाड़िए।"

साइकिल आगे बढ़ गई।

आशू भैये बोले : "शाबाश, तुम तो बड़े साइकिलबाज हो गए यार।"

विजयी मुद्रा में जयन्त बोला "इसी से समझ लीजिए कि मैंने अभी नियोग की पालिटिक्स में अपनी एनर्जी वेस्ट नहीं की है। असल में मां उनकी सहायता करना चाहती हैं। उसे अंग्रेजी पढ़ाके अपने यहां ही अंग्रेजी की अध्यापिका बनाकर उन्नति दे सकेंगी। इसलिए उन्होंने मुझसे अंग्रेजी पढ़ाने के लिए कहा था। आई एडमायर दैट लेडी आशू भैये। वह अभागी भले हो लेकिन तपस्विनी और शील-संयम की देवी है। आपके चौक की नासमझ दुनिया भले ही कुछ कहा-सुना करे मगर आप अब आइन्दा से ऐसी बात न कहिएगा आशू भैये। बैकवर्ड एरियाज के आर्यसमाजी ही ऋषि दयानन्द के महान मिशन को और सच पूछिए तो हिन्दू संस्कृति की महानता को ही डुबोए दे रहे हैं। ये आर्यसमाजियों और सनातनियों के इस नियोगी झगड़े से हमारे उमेन मूवमेन्ट को कितना झटका लगेगा, इसका अन्दाज है आप लोगों को?"

मच्छीभवन के टीले के पास गुलाबवाड़ी और डाकखाने की सड़क से गुजरती हुई जयन्त की साइकिल नई बनती हुई कोतवाली के सामने से गोल दरवाजे के पिछवाड़े बाजार में आ गई। दोनों साइकिल से उतरकर चलने लगे। चौहरल टोले की कुलिया के पास आते हुए आशू भैये की दृष्टि जो भीतर गई तो महाशय सुखलाल को एक रंगरेजिन से बातें करते देखा। "अरे-अरे, महाशयजी, कहां थे!"

महाशय सुखलाल ने उन्हें देखकर भी न देखा। आशू भैये खुद गली में घुस गए, साइकिल लिये जयन्त पीछे-पीछे। पास आकर आशू भैये ने फिर महाशयजी

आशू ने जयन्त को देखते ही कहा : "वाह, तुम यहां हो, मैं तो खुद ही तुम्हारे घर का चक्कर लगाकर आ रहा हूं।"

जयन्त ने पूछा : "वहां के हाल-चाल बतलाओ।"

"द वर्क हैज़ बीन डन। महादेव कहां गया?"

"उसे मैंने लस्सी मंगवाने के लिए भेजा है। आपके लिए भी मंगवाई है।"

दूसरा नौकर और सहायक भी तब तक आ पहुंचे, गाहक आने लगे। आशू और जयन्त की बातें भी कनफुसकियों में आगे बढ़ने लगीं। "कब काम हुआ?"

"अरे, वह तो रात ही में हो गया था।"

"उसे रखा कहां है?"

"भोलानाथ के कुएं पर एक गंगो घटवालिन है। उसी के यहां रखवा दिया, किसी को कानों-कान खबर भी न पड़ी। आज सवेरे तक उसका एबार्शन हो गया होगा या होनेवाला होगा।"

"वह औरत?"

"मैं तो सामने पड़ा नहीं भाई, पर सुना है बहुत सकपका गई है। गंगो का लड़का मुल्लर है तो साला नशेबाज लेकिन बड़ा जोशीला है।"

"आर्यसमाजी है?"

"उसके आर्यसमाज और हिन्दूइज़्म को आप अलग-अलग नहीं कर सकते जयन्त बाबू। बस जोशीला है और उसको जब इस चंग पर चढ़ा दिया गया कि इसका मूरख पती चिढ़कर इसके साथ मुसलमान बनने जा रहा है तो वह धरम की रक्षा करने के लिए बाकी तरकीबें सकसेसफुली कर ले गया। मुझसे कहता था कि तुम घबराओ मत। मैं साली को मार-पीट कर ठीक कर लूंगा।"

जयन्त घबरा गया। उसका चेहरा देखकर आशू ने मुस्कुराकर कहा : "घबराओ मत, ऐसा कुछ नहीं हुआ होगा। मैंने उसकी मदर को समझा दिया है कि जैसे ही यह मुल्लर उसे डराने-धमकाने पहुंचे वैसे ही तुम हमदर्दी दिखाने पहुंच जाना और उसको एबार्शन कराने को राज़ी कर लेना। हो गया होगा।" कहकर आशू ने लस्सी का घूंट पिया।

गलियों में सुखलाल की औरत के घर से भागने का हुल्लड़, चारों तरफ़ उसकी बदनामी होने लगी कि वही खराब थी। इसी बदनामी के घटाटोप से वासुदेव शर्मा की निष्कलंकता का सूर्य फिर क्रमशः चमकने लगा। "शर्माजी बुरे आदमी नहीं हो सकते, इतने विद्वान आदमी हैं। जवान हैं तो क्या हुआ, मगर ऐसी धरम की बात करते हैं कि बड़े-बड़ों के कान काट लें। अच्छे-अच्छे मौलवियों को पछाड़ दिया है।"

दोनों तरह की अफवाहों को फैलाने में जयन्त की बनाई योजना सुनिश्चित गति करने लगी। कैनिंग कॉलेज में पढ़नेवाले चौक के अनेक परिचित विद्यार्थियों

को जयन्त ने संगठित कर लिया था। चौथे या पांचवें दिन ही गली-गली बंटने-वाले एक पर्चे ने आम जनता की निगाहों में एक 'नया सत्य' उद्घटित हुआ। पर्चा श्यामकुमारी आर्य के नाम से छपा था जिसमें लिखा था कि "मेरे पति मुन्नालालजी किसी भ्रम के कारण मुझे और आदरणीय वासुदेवजी को मिथ्या बदनाम करने लगे। मैंने उन्हें समझाया तो क्रोध में आकर बिना सोचे-विचारे शर्माजी का अपमान किया और यह मिथ्या कलंक हमारे ऊपर लाद दिया। उनसे मेरे गर्भ रह जाने की बात सवा सोलह आने झूठ है, पर मेरे पति मुन्नालालजी जब गुस्से में भरे हुए मुझे लेकर मुसलमान बनने का हठ करने लगे तो मैं अपने धर्म की रक्षा के लिए एक जान-पहचान की जगह में शरण लेने के लिए भाग आई। अपने कुछ गहने और कपड़े मैं ही घर से लाई थी जो किसी ने लूटे या चुराए नहीं है। जब मेरे पतिदेव पूज्य शर्माजी से भरी सभा में माफी माग लेंगे तो मैं उनके पास अपने आप लौट आऊंगी। मेरे पतिदेव बहुत देवता आदमी हैं, खाली उनको क्रोध में यह सब खुराफात सूझी।"

कोनेश्वर के पास कुंजबिहारी की बगिया में चौक आर्यसमाज की तरफ से वासुदेव शर्मा के सम्मान में एक सभा का ढिंढोरा पिटा। शर्माजी को खूब गा-बजाकर फिर से आर्यवीरता के गौरव से मण्डित किया गया। मुन्नालाल की प्रशंसा भी की गई, बस उन पर यही दोष लगाया गया कि वे जोश तो रखते हैं पर होश नहीं रखते।

इस प्रतिष्ठा समारोह के बाद तुरन्त ही व्याख्यान-वाचस्पति आर्यवीर ने स्वदेशी और बायकाट का राग अलापना शुरू किया। अधिक सफेदी लाने के लिए विलायती चीनी गाय और सुअर की हड्डियों से साफ की जाती है। जो हिन्दू इसे दावतों या ब्रह्मभोज में ब्राह्मणों को खिलाएगा वह धर्म का नाश करेगा। विलायती बूट-जूते गऊ के चमड़े से बनाए जाते हैं। जो इन्हें पहनेगा उसे गऊहत्या का पातक लगेगा। मशीनों से सूत बनाने से पहले सूत बारीक करने के लिए उसे सुअर और बछड़े की चर्बियों से साफ किया जाता है इसलिए विलायती कपड़ा पहनना अधर्म है।

वासुदेव शर्मा का कण्ठ बहुत सुरीला था। गली-गली गा-गाकर वह अब तक आर्यधर्म सम्बन्धी भजनमालाओं की छोटी-छोटी पुस्तिकाएं ही बेचा करते थे। अब उनके तथा अन्य तुकबाज कवियों के स्वदेशी प्रचार के गीत गली-गली फैलने लगे—

"जिएं तो स्वदेशी बदन पर वसन हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफन हो।
पराया सहारा है अपमान होना,
ज़रूरी है निज शान का ध्यान होना।

है वाजिब स्वदेशी पै कुर्बान होना,
इसी से है सम्भव समाधान होना।"

स्वदेशी और वन्देमातरम् के गीत बंगाल की तरह ही उत्तर भारत के अनेक प्रान्तों में फैलने लगे। धर्म का टेका लगाकर राष्ट्रीयता उभरने लगी। वासुदेव शर्मा इस्लाम के खिलाफ़ पहले धार्मिक दृष्टिकोण से बोलते थे, अब राजनीतिक दृष्टि से बोलने लगे : "देखो ढाका के नवाब ने पहले तो बंगाल की एकता के लिए हिन्दुओं का साथ दिया और फिर अंग्रेज़ों से मिलीभगत करके उसके खिलाफ़ बोलने लगे। कल बंगाल के विभाजन के पक्ष में बोले थे, अब अगर अंग्रेज़ों की चाल हुई तो आनेवाले कल को यह देश के विभाजन के पक्ष में बोलने लगेंगे। म्लेच्छों की बुद्धि का कोई ठिकाना है। गाय और सुअर खानेवाले म्लेच्छ चाहे कहने को दो अलग-अलग धर्मों के हों पर पाप ही उनका धर्म है। धर्मात्मा आर्य सन्तानों को पतन के रास्ते पर ले जाकर गुलाम बनाने में दोनों का धर्म एक ही हो जाता है। विलायती कपड़े मत पहनो, विलायती जूते मत खरीदो, यदि देश की रक्षा चाहते हो तो अपनी भाषा और अपने धर्म को आगे बढ़ाओ। स्वदेशी वस्तुओं का ही उपयोग करो।"

लखनऊ, बनारस और इलाहाबाद, आगरा के साथ-ही-साथ संयुक्त प्रान्त के सत्रह-अठारह जिलों में स्वदेशी की लहर ज़ोर पकड़ गई। स्वदेशी शिक्षा का आन्दोलन भी ज़ोरों से चल रहा था। कई जातियों के नये संगठनों ने अपनी बिरादरियों में चन्दा करके लड़कों और लड़कियों के लिए पाठशालाएं और स्कूल स्थापित किए। 'नागरी प्रचारक' पाक्षिक पत्र के संचालक, सम्पादक बाबू गोपाल-लाल खत्री ने स्वदेशी की लहर में एक नागरी प्रचारक कम्पनी तक खोल डाली जिसके द्वारा वह प्रतिमास एक सूचीपत्र प्रकाशित करके हिन्दी में प्रकाशित होने-वाली नई पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाओं की सूचना अपने पाठकों को दिया करते थे और इस प्रकार हिन्दी नागरी के प्रकाशनों का प्रचार और प्रसार कर रहे थे।

इसी बीच में एक घटना अकस्मात् घट गई। उदयगंज के चौराहे पर छावनी की तरफ़ जानेवाले दो मदहोश फिरंटे सिपाही अपनी भाषा का कोई गीत गाते चले जा रहे थे। महल्ले के किसी जोशीले जवान को उन्हें गाता देखकर स्वयं भी गवास की तलब आ गई, वो अंग्रेजी गा रहे थे, इन्होंने हिन्दी में गाना शुरू किया, "देश की खातिर हैं अक्सीर वन्देमातरम्, दुश्मनों को नष्ट करने के लिए है आग वन्देमातरम्।"

वन्देमातरम् शब्द फिरंटे सिपाहियों के नशे को भड़का गया : 'यू ब्लडी निगर' कहता हुआ एक गोरा उस गायक पर झपटा और चढ़ बैठा। चौराहे के कुछ युवक दूकानदार भी अपने इलाके के लड़के को गोरे से पिटते देखकर भड़क उठे और आगे आकर गोरे से अपने महल्ले के साथी को छुड़ाने लगे। दूसरा गोरा यह समझा कि

उसको मार रहे हैं, फिर तो झपटा-झपटी और मारपीट शुरू हो गई। चौराहे के पास ही ताड़ीखाना भी था, कुछ नीम मतवाले पियक्कड़ भी अपनी बोतलों में ताड़ का दूध लिये गालियां देते निकल आए। दोनों गोरों की अच्छी ठुकाई हो गई। एक ताड़ीबाज ने गिरे हुए गोरे के मुंह में अपनी बोतल ठूंस दी : "ले, साले पी, पी, साले पी।"

इस हंगामे ने शहर में हलचल मचा दी। छावनी की पुलिस ने मार और नशे से बेहोश अपने सिपाहियों को ले जाते समय दो-चार महल्ले के जवानों को गालियां-वालियां दीं। इस पर इलाके के एक अंग्रेजीदां वकील निकल आए और छावनी के पुलिसवालों से कहने लगे "ये शराब तो पिए ही थे और ऊपर से ताड़ी भी पी ली कमबख्तों ने और हुड़दंग भी मचाया, हमारा क्या कसूर है।"

खबर दूसरे दिन आधे शहर में फैली, तीसरे दिन सारे शहर में फैल गई और नगर के राष्ट्रप्रेमी युवजनों की सरगर्मियां बढ़ गईं। एक दिन जयन्त और हंसराज दोनों भाई घर ही में बैठे थे कि हंसो उसी दिन देशदीपक कार्यालय के वज्रदन्ती मंजन की शीशियों के लिए लेबुल छपवाकर लाया था। जयन्त बोला : "तुमने रेविल अट्रेक्टिव नहीं छपवाए, हंसो।"

"अरे भैये, स्वदेशी काम में कौन परवाह करता है इन बातों की?"

"नहीं, यह बात गलत है, सादगी तो अच्छी है, पर सादगी में सुरुचि और कलात्मकता भी जरूरी होती है। तुम्हें अपने माल के प्रति लोगों को आकृष्ट करना है। इसके विज्ञापन वगैरह तैयार करो।"

"अब यह सब अपना छमाही इम्तहान देने के बाद ही करूंगा। मैंने और जयन्त भैये ने अपने यहां के ड्राइंग टीचर से ऐसे ही बातचीत चलाई थी तो वो बोले कि उनके पिता पुलिस आफिस के रिटायर्ड क्लर्क हैं। एकाउन्ट्स बुक रखने, चिट्ठी-पत्री वगैरह का काम भी वह सब देख लेंगे।"

"ठीक है, वेतन कितना चाहेंगे?"

"कहते थे होलटाइम जाब है, तीस रुपये लेंगे। मैं कोशिश कर-कराके पच्चीस में राजी करवा लूंगा, मगर भैये, पिताजी से कहा कैसे जाएगा?"

"क्यों? इसमें क्या तकलीफ़ है। अरे बिजनेस है, इसमें पहले तो लगाया ही जाता है तब कमाई होती है।"

"हां, मगर पैसा लगाने में ही पूरी सावधानी अगर न बरती गई तो धन्धा फिर उबर नहीं पाता।"

जयन्त की आंखें चमक उठीं : "वाह बेटे, आई एम प्राउड ऑफ़ यू। बात तुमने बिल्कुल सही कही—पिताजी भी सुनकर तुमसे बिल्कुल ऐग्री करेंगे।"

"नहीं भैये, पिताजी पैसे के मामले में, मैंने देखा, बड़ी लापरवाही से सोचते हैं।"

"परवाह से सोचना कैसे होता है रे ?"

"पैसे को जब लगाने और खर्चने की ज़रूरत हो तब लोभ नहीं करना चाहिए—का वर्षा जब कृषी सुखाने, कहावत है न।"

"पर पिताजी कंजूस नहीं हैं, हंसो।"

"पर भैये, आपने शायद यह कभी गौर नहीं किया कि वह जो पैसा बैंक में डाल देते हैं उसकी छदाम भी निकालने में उन्हें अच्छा नहीं लगता। मैंने दो सेर मंजन कुटवाया, छनवाया था, शीशियां खरीदीं, लेविल छपवाए और सब खर्च करके अब भी मेरे पास सौ रुपये बचे हैं।"

"हंसो, मेरी राय मानो, तुम हल्दी की एक ही गांठ के पंसारी न बनो। इस वक्त देखो किन-किन और भी स्वदेशी दवाओं के विज्ञापन छप रहे हैं। तुम उन सबकी होलसेल की एजेन्सी लो, दूकान खोलो। मैं आशू भैये को तुम्हारी आढ़त में पैसा लगाने के लिए राज़ी कर लूंगा। पिताजी से कहने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी।"

"यह भी तो उन्हें अच्छा नहीं लगता भैये! फिर कहेंगे कि आजकल के लड़के सब अपनी मर्ज़ी के हो गए हैं..."

"अरे, डोण्ट केयर हंसो। मैं सब ठीक कर लूंगा। पिताजी को टैकेल करना मैं जानता हूं।"

अमीनाबाद के नये बसते हुए बाज़ार में ही देशदीपक फार्मेस्युटिकल कम्पनी खुल गई। कागज़ का लम्बा फुंदनेदार टोप और लालकोट जांगिया पहने दो प्रचारक देशदीपक वज्रदन्ती का प्रचार करने के लिए गली-गली घूमने लगे। धीरे-धीरे फिर और दवाओं के सैम्पुलों का प्रचार भी करने लगे। वज्रदन्ती मंजन खूब चला। साथ ही ताकत की एकमात्र दवा 'चन्द्रभाव गुटका' एवं नेत्ररोग के लिए 'ममीरे का सुरमा' तथा 'बिगुलर की फूंक' नामक कफ़ खांसी की दवाएं भी बहुत मकबूल हुईं।

एक दिन इतवार को व्योमेश आया। जब से अमीनाबाद में दवाओं की दूकान खुल गई तब से जयन्त उसी के पीछे की कोठरी में अपना लिखने-पढ़ने का दफ्तर भी अक्सर जमाने लगा है। छुट्टी का दिन होता है अथवा हर शाम को अवकाश के समय हंसो भी बराबर यहीं उठता-बैठता है। दवाओं की आढ़त मुनाफे में चलती नज़र आने लगी है इसलिए डॉक्टर देशदीपक भी खुश हैं। एक दिन तीसरे पहर श्रीमती प्रेमकिशोरी जयन्त से मिलने के लिए वहां आई। प्रेम को देखकर जयन्त का मन एकाएक झटके खाने लगा। उसका मन जानता है कि प्रेम उससे किसी प्रकार का अनुचित सम्बन्ध नहीं रखती पर जयन्त का युवा मन औचित्य-अनौचित्य की चिन्ता से अलग केवल किसी नारी से सम्बन्ध होने की इच्छावश तड़प रहा था। "यहां का पता तुम्हें कैसे मिला ?"

"माताजी ने ही बताया।"

मा का नाम सुनते ही मन का आक्रामक-सा रवैया बदल गया, कड़ाई से बोला : "किसलिए आई हो ?"

"जयन्त भाई, आमिना बेगम मऊनाथभजन चलने के लिए राजी हैं। लेकिन वह कहती है कि पहली बातचीत के अवसर पर आपका उनके साथ रहना बहुत जरूरी है। पराए आदमी से बातें करने के लिए···"

"अरे, पर उनके लिए तो पराया मैं भी हूं।"

प्रेमकिशोरी बोली : "यही मैंने भी उनसे कहा था तो कहने लगी जिनकी सिफारिश से आई हो वो मेरी बचपन की सहेली है, इसलिए उनके भतीजे से मैं पर्दा नही करूंगी।"

"तो क्या मुझे आमिना बेगम के यहा चलना होगा ?"

"हा, यही वो चाहती है।"

"ठीक है, तो तुम कब ले चलोगी ?"

"मैं आज उन्हे खबर कर दूगी। कल आप तीन बजे पाठशाला ही चले आइएगा। वही माताजी के सामने ही हम दोनो सआदतगज चले चलेंगे।"

उन्नीस

सुबह की नीद आधी रात की गहरी नीद की तरह ही युधिष्ठिर से हल्के-हल्के खुर्राटे भरवा रही थी कि एकाएक टेलीफोन की घण्टी घनघना उठी। होश नीद को झटके देने लगा, मगर युधिष्ठिर का आलस्य उन्हें नकारता ही चला गया, दो मिनट तक घण्टी बजकर रुक गई। युधिष्ठिर के निंदारे होश ने राहत की सास ली और दोहर सिर तक तानकर फिर से सोने का उपक्रम किया। टेलीफोन फिर ट्रिग-ट्रिंग-ट्रिग : "उफ बड़ी आफत, कौन है साला सबेरे-सबेरे डिस्टर्ब करनेवाला ?"

टेलीफोन बजता ही जा रहा है। न उठने की कसम अपना मानसिक कसाव ढीला करती जा रही थी कि एकाएक शकुन की आवाज सुनाई पड़ने लगी "हैलो, आदाब बन्ने भाई···नही, अभी तो खुर्राटे ही भरे जा रहे हैं। रात मे कौल साहब के यहा से डेढ बजे के लगभग लौटे थे·· आपकी यह गालियां तो मैं उन्हें नहीं सुना सकूगी बन्ने भाई साहब। हा, यह कर सकती हू कि उनके सिर से चादर हटाकर फ़ोन उनके कान के पास रख दू।"

शकुन ने झटके से युधिष्ठिर के सिर की चादर खीच ली और हेडफोन उसके कान से सटा दिया : "साला उल्लू की दुम फाख्ता, ये सवा-आठ बजे तक सो रहा

है। नालायक साला, नावलिस्ट बनेगा।"

"अबे चुप कर निठल्ले। कमबख्तों को सुबह-सुबह ही शरीफ आदमियों के आराम में खलल डालने की आदत···"

"अबे हां-हां, कौल ने कल उम्दा दावत दी थी, तुम क्यों नहीं आए साले ?"

"वह सब आकर बतलाऊंगा, नाऊ गेटअप। इट इज़ एट ट्वेन्टी नाऊ, मैं ठीक साढ़े-नौ बजे तुम्हारे घर आ जाऊंगा। मैं जानता हूं, शकुनजी की आज छुट्टी है। मैंने आज नाश्ता नहीं किया है। बुआ अपने गांव गई हैं और शब्बो कल शाम को अपनी छोटी बहन के यहां गई थीं, साढ़े-आठ तक आने को कह गई थीं। फिर आमिना का फोन आया कि वह आज वहीं रहेगी। खैर, मैं ठीक साढ़े-नौ बजे तुम्हारे घर आ जाऊंगा। शकुनजी से कह दो, नौ पैंतीस पर मेरे लिए नाश्ता तैयार हो जाए।"

"शकुन पास ही खड़ी है। हां-हां, कह दिया। भाई नाश्ता भी और दिन में लंच भी। मीनू अब तुम्हीं बतला दो, मैं चाय पीने जा रहा हूं।"

युधिष्ठिर ने चाय पीते हुए हिसाब लगाया कि पूरे दस दिनों से उसने जावेद की सूरत ही नहीं देखी। जब से दोनों में दोस्ती गहराई है तब से इतने दिनों तक मिले बिना दोनों कभी नहीं रहे। आमिना बेगम की नौकरानी के नाक-नक्श चाय की घूंट की गर्मी से ही अचानक छाती को गरमा गए। गुरबत के झंखाड़ में इतना खूबसूरत गुलाब।

"लो उठो, झटपट तैयार हो जाओ, बन्ने भाई सचमुच तुमसे बहुत-बहुत नाराज़ हैं। तुम्हें गाली देकर मुझसे भी कहा कि कई रोज़ से न तो उसकी सूरत देखी है और न आवाज़ ही सुनी है। तुम बड़े खराब आदमी हो।"

शकुन ने इस प्रकार बनावटी गुस्से में आंखें तरेरीं, वह मुद्रा देखकर मुग्ध होने की दो तात्कालिक तीव्र अनुभूतियां हुईं, किन्तु युधिष्ठिर की अन्तःचेतना ने यह भी अनुभव किया कि "आमिना बेगम की नवयौवना नौकरानी के श्यामल सौन्दर्य ने उसके मन में कोई कलुष भाव नहीं जगाया, न कल दोपहर में देखते समय और न आज उसका मुखड़ा मन के आगे आ जाने पर भी।" बल्कि शकुन की यह बनावटी क्रोध में देखने की अदा उसके शृंगारजड़ित सौन्दर्य-बोध को अलिप्त—लिप्त काम-रंग से अवश्य रंग गई। आजकल उपन्यास में अपने दादा का चरित्रांकन करते हुए वह स्वर्गीय महापुरुष की कमजोरियों के कांटे पर स्वयं अपने को भी बार-बार तौलने की मनःस्थितियों में आ जाता है। कल शाम को एक बुजुर्ग मुस्लिम महिला प्रिंसिपल से मुस्लिम समाज में नई शिक्षा के सूत्रपात होने का इतिहास जानने गया था, युधिष्ठिर के उपन्यास में रंगे मन ने जयन्त टण्डन की कमज़ोरी प्रेमकिशोरी की मार्फत सआदतगंज की आमिना बेगम का काल्पनिक तजकिरा किया। और यह तजकिरा उक्त महिला प्रिंसिपल से बातें करते हुए उसके मन में कहीं झांक ही

पड़ता था, इसलिए युधिष्ठिर कल प्रिंसिपल साहिबा के सामने बैठे हुए उन्हें आमिना बेगम के रूप में ही देखता रहा। प्रिंसिपल साहिबा प्रौढ़ वय की हैं, ढलते यौवन में भी उनकी नये उम्र की अभिजात सुन्दरता का आभास मिल रहा था। युधिष्ठिर ने कल वहीं बैठे हुए ही वास्तविक प्रिंसिपल साहिबा का रूप-सौन्दर्य और उनकी ढलान पर उतरी आयु भी अपनी काल्पनिक 'आमिना बेगम' पर जम को तस फिट कर दी। मगर उस नौकरानी की लौंडिया को आमिना साहिबा के घर में किस जगह फिट करे…उपन्यास की खूंटी पर टंगा हुआ मन, चाय पीते, निपटते, मंजन करते आदतन अखबार में एक नजर डालने के लिए बैठने के समय ही उससे असम्पृक्त हुआ। पत्रकारिता के रंग में रंगा मानस अर्जुन की मीनाक्ष-भेदी दृष्टि से अखबार की महत्त्वपूर्ण खबरों को देखने में तल्लीन हो गया। तभी फिर शकुन अपने बेटे अंशू को गोदी में उठाए हुए आ धमकी, बोली: "तुम्हारे पिताजी के मारे तो मैं दुखी हो गई मुन्ना, इनकी आदतें जानकर ही मुझे किचेन छोड़कर आना पड़ा। उठो।"

"ब-ब-बस, एक मिनट।"

लेकिन वह एक मिनट कौन देता, छह महीने का अंशू अब पिता से खेलने लगा है। पति का सिर पकड़कर हिलाती हुई मां की गोद से पिता के कन्धे पर हठात् फिसल पड़ा। ध्यान तो पत्नी ने ही झकझोर दिया था किन्तु बेटे के उछलकर पास आने से वह धुएं-सा तिरोहित हो गया। कन्धे से फिसलते हुए बेटे को अरे-अरे के साथ झटपट गोद में सम्हाल लिया। आजकल लिखने की धुन में दफ्तर से दो महीने की छुट्टी लिये बैठा है, ऊपरवाला कमरा बन्द करके घण्टों घर से कटा रहता है। शकुन्तला दिनभर अपने कालेज में रहती है। अंशुमान अधिकतर अपनी नवनियुक्त आया के साथ अस्पताल में ही अपनी दादी की निगरानी में रहता है। दादा-दादी दोनों ही से खूब हिल-मिल गया है। फिर भी माता या पिता को बहुत देर के बाद देखने पर बच्चे के मन में उसकी गोद में जाने की जो छटपटाहट होती है, उसका सुख अनोखा ही है। अंशू ने पिता के गाल से गाल सटा दिया। प्रकृति को उसी समय अचानक विनोद सूझा, बच्चे ने पिता की बनियान गीली कर दी।

"ए-ए-ए, धत् तेरे की।"

शकुन्तला खिलखिलाकर हंस पड़ी, "वाह, मेरे मुन्ने ने तो इस वक्त मेडेल पाने लायक काम किया है, चलिए उठिए, नहाइए। मैं ठीक सवा-नौ बजे आपको बाथरूम से नहाके निकलते हुए देखूं। क्या समझे, कपड़े आपके कमरे में ही रखे हैं। मैं अब जा रही हूं। बन्ने भाई का टाइम मैं ग्रीनविच की घड़ी की तरह साधकर दिखलाना चाहती हूं।"

जावेद का स्कूटर नौ बजकर इकतीस मिनट पर चम्पक मैन्शन में सुमन्तजी की काटेज के सामने आकर खड़ा हुआ। युधिष्ठिर धुली कमीज-पतलून पहने

अंशुमान को गोद में लिये हुए बाहर बरामदे में टहल रहा था।

"वेलकम-स्वागतम्-खुशामदीद। साले, खुद पूरे साठ सेकेण्ड लेट होते हैं और पराई बीवी पर हुक्म चलाते हैं कि इस वक्त से इस वक्त तक तैयार रहे, हरामखोर साले।"

"देख ली ना बर्खुरदार अपने बाप की शराफत। तेरा उल्लू बाप यह भी नहीं समझता कि रास्ते में भैंस की टकराहट से मेरे पूरे नब्बे मिनट जाया हो गए। आ जा बेटे, आ जा।" जावेद ने बच्चे को बुलाने के लिए अपने हाथ बढ़ा दिए।

अंशु पहचान गया, मुस्कुराया भी, पर बाप के गले से चिपक गया। दोनों अन्दर आए, ड्राइंगरूम में बैठे। सामने दीवार पर जयन्त टण्डन का एक भव्य तैल-चित्र टंगा था। एक नज़र उस पर डालकर जावेद बोला : "टण्डन तुमसे दस दिनों तक मुलाकात नहीं हुई। जाहिर है, तुमने अपनी छुट्टी के वक्त का पूरा-पूरा इस्तेमाल किया होगा। मैं आज तुम्हारा नावेल सुनकर जाऊंगा। मैंने भी आज आफिस से छुट्टी ले रखी है।"

"चल कमबख्त ! तू साले सवेरे से ही मेरे वर्किंग मूड को चौपट कर चुका है। आज मैं मिसेज रज़िया अख़्तर को अपनी आमिना बेगम की शक्ल में ढालने का प्लान बना रहा था। मेरे अमन में खलल डालनेवाले एक आप निकल आए दूसरी मेरी दुश्मन शकुन्तला थी। आज छुट्टी मना रही है। मेरी जान को दो-दो बाधाएं..."

"मैं फिर बाधक बनकर आ गई हूं बन्ने भाई, नाश्ता तैयार है।"

नाश्ते के बाद युधिष्ठिर बोला : "अगर मेरा नावेल सुनना है तो ऊपर चलो। आनरेबुल मिस्टर बीबी जान, यू शैल नाट करो मी तंग नाऊ।"

"अवश्य करूंगी। ठीक एक बजकर पन्द्रह मिनट पर अगर तुम बन्ने भाई को लेकर नीचे नहीं आए तो मैं दरवाजा फटफटाना शुरू कर दूंगी। याद रहे।"

ऊपर कमरे में गए। यहां इस वक्त युधिष्ठिर की रायटिंग टेबुल पर पूरे टण्डन वंश की प्रदर्शनी लगी हुई है। लाला मुरद्दीमल का एक बहुत धुंधला चित्र फ़ोटोग्राफी के रंगों से ताजा होकर एक फ्रेम में रखा है रायसाहब बंसीधर, श्रीमती चम्पकलता, डॉक्टर देशदीपक, श्रीमती कौशल्या देवी, प्रदेशरत्न अमर शहीद जयन्त जिन्होंने अपने नाम के आगे से 'कुमार' शब्द हटा दिया था, उनके पुत्र युधिष्ठिर के पिता श्री सुमन्तजी और माता श्रीमती शारदा रानी के चित्र क्रम से लगाए गए थे।। एक फ्रेम में शकुन और अंशुमान के साथ युधिष्ठिर। उसके कोने में ताज़े फूलों से सजा गुलदस्ता। जावेद देखकर बोला : "पूरे खानदान का इन्स-पिरेशन लेकर लिख रहे हो बच्चू। इस नई फील्ड में भी तुमने कुछ कमाल जरूर कर दिखलाए होंगे। तुमको अब अपने मजबूरन नावेल लिखने के इरादे से कोई शिकायत तो नहीं है टण्डन।"

"पहले थी, अब नही है। लेकिन अपने बारे में तो बताओ कि तुमने काम शुरू किया या नहीं।"

"अभी तक तो पढ़कर नोट्स ही बनाए हैं। शुरू का एक चैप्टर जरूर लिखा है। वह तुम्हें कभी जरूर सुनाऊंगा। लेकिन हां, इधर बंगाल के पार्टीशन और स्वदेशी मूवमेन्ट के जमाने के पुराने बयानात की मैंने एक्ज़ास्टिव स्टडी की है। अरे यार कमाल कर दिया उस जमाने में इन बंगालियों ने।"

"तुमने स्वदेशी और बायकाट पर खूब जोर दिया होगा।"

"ओह, सोलह अक्टूबर सन् पांच को बंगालियों ने पार्टीशन के खिलाफ एक बहुत बड़ा तमाशा आर्गनाइज किया था।"

"वो राखी बन्धनवाला।"

"ओह, तुम मुझसे इस मामले में भी बराबर की टक्कर ही ले रहे हो। मैंने तो समझा था कि मैं ही इन फैक्ट्स को तुमसे पहले जान गया।"

"अबे मैं बंगला की किताबें अपने एक बंगाली मित्र से पढ़वाकर उनके नोट्स बना चुका हूं। खाली अंग्रेज़ी का ही मेरा सहारा नहीं है। यह राखीबन्धन का सुझाव रवीन्द्रनाथ टैगोर का ही था। ओ हो क्या कमाल किया है हमारे इस दाढ़ी वाले बुजुर्ग ने। बयान पढ़ने से पहले मेरे ख्वाबो-खयाल में भी कभी यह नहीं आया था कि इतने बड़े ताल्लुकेदार खानदान के और इतने बड़े राइटर होकर भी टैगोर नेशनल मूवमेन्ट के ऐक्टिव लीडर भी थे।"

"बंगाल के पार्टीशन के खिलाफ़ चलाए गए मूवमेन्ट का इतिहास पढ़कर, तुम यकीन मानो टण्डन, मेरा सारा बदन सनसनाहट से भर गया था। बंगालियों ने अंग्रेज़ों की हठधर्मी के विरुद्ध पूर्वी और पश्चिमी दो बंटे हुए बंगालों में मूवमेन्ट आर्गनाइज़ करके यह दिखला दिया कि कुदरत की बनाई एक कौम को किसी भी ताकतवर सरकार की तलवार काटकर भी दो हिस्सों में तकसीम नहीं कर सकती।"

"तुम्हें यह मानना ही होगा जावेद, कि बंगाल का बटवारा अंग्रेज़ों ने भले ही अपनी फूट डालो और शासन करो की नीति के तहत किया हो, मगर हिन्दोस्तान की आंखें खोलने के लिए वह एक बड़ा ही कारगर आप्रेशन साबित हुआ। बंगाल का बंटवारा पूरे देश में नया जागरण ले आया। अरे कमाल था यार! सारी कौम गंगा में नहा-नहाकर वन्देमातरम् के नारे लगाती हुई सड़कों पर जुलूस निकालती है और सुरेन्द्रनाथ बनर्जी जैसे कौमी लीडर नंगे पावों मीलों कलकत्ते की सड़कों पर जुलूस में चलते हैं। यह न किया होता उन लोगों ने तो बायकाट मूवमेन्ट भला कहीं ज़ोर पकड़ सकता था। परसों मैंने कुछ फैक्ट्स यहां के इकट्ठा किए। मुझे चौक-चौपटियों के इलाके में दो बुजुर्ग ऐसे मिले जिन्होंने बतलाया कि बाबा ने यहां भी दावतों में विलायती चीनी के खिलाफ़ एक बहुत

बड़ा आन्दोलन चलाने में बड़ी सफलता पाई थी। उन्होंने अपने बंगाली साथी व्योमेश बनर्जी के साथ यहां के ब्राह्मण पण्डितों को इस बात से कन्विन्स कर दिया था कि पंचामृत और भगवान के चढ़ाए जानेवाले प्रसाद में विलायती चीनी का प्रयोग करना धर्म के खिलाफ़ है क्योंकि उसे सफेद बनाने में गाय की हड्डियों का चूरा भी मिलाया जाता है।"

"ओह, मानना पड़ेगा दोस्त कि हमारे बुजुर्गों ने कौमी जुनून को बढ़ाने में कमाल की ताकत दिखलाई थी। खैर, तुम अपना नावेल सुनाओ यार। आज तो मैं यह कस्द करके ही आया हूं कि तुम्हारा नावेल सुनकर ही जाऊंगा।"

युधिष्ठिर ने अपने उपन्यास के लिखे हुए अध्याय सुनाने शुरू किए। सुनते हुए जावेद की पी हुई सिगरेटों के टुन्ने ऐशट्रे में बढ़ते रहे। प्रेमकिशोरी वाला प्रसंग सुनने के बाद जावेद अपनी नई सिगरेट का टुन्ना ऐशट्रे के सिरे पर रगड़-कर बुझाते हुए बोला : "अब पांच मिनट का इन्टरवल कर यार, चाय हो जाए। तुमने शाबाशी देने लायक काम किया है।"

बिजली की केतली और चाय-कॉफी का पूरा सामान एक किनारे मेज़ पर लगा हुआ था। सन्तुष्ट मन से युधिष्ठिर सोत्साह उठा, बोला : "तू चाय पिएगा या कॉफ़ी, बोल।"

"कुछ भी बना यार। मगर तूने अपने बाबा के इस नौजवानी के 'इन्फैचुएशन' की तस्वीर उम्दा तो आंकी ही है, साथ ही बड़ी दिलेरी का काम भी किया है।"

"यार, दिलेरी-विलेरी कुछ नहीं। असल में सुलेमान से मिले बाबा की विलायती माशूका के खतों ने मुझे इन्स्पायर कर दिया।"

"हां साले, मुझे सुलेमान से मालूम हो चुका है कि तू मेरे साथ ये गद्दारी भी कर चुका है।"

केतली में तीन कप पानी डालकर उसके तार को प्लग से जोड़ते हुए युधिष्ठिर ताव खाकर बोला : "इसमें गद्दारी की क्या बात है और सच पूछो तो वे चिट्ठियां एक नावलिस्ट की हैसियत से मेरे काम की जादा थीं। बनिस्बत एक जर्नलिस्ट की हैसियत से तेरे। लेडी एम० के पहले लेटर ने ही मुझे बाबा की इस कमजोरी का एहसास कराया तो मैंने सोचा कि एकाएक विलायत जाने के बाद ही उनकी यह आदत न पड़ी होगी। उसके पहले यहां हिन्दोस्तान में भी उसकी कहीं-न-कहीं शुरुआत अवश्य हुई होगी, इसीलिए मैंने प्रेमकिशोरी की कल्पना की। बल्कि मुझे अपने दादा के पिता डॉ० देशदीपक की एक कटी-फटी डायरी में सन् आठ का यह वाक्य भी पढ़ने को मिल गया कि बंगालियों और औरतों के साए से दूर रखने के लिए मुझे जयन्त को जल्द-से-जल्द इंग्लैण्ड रवाना कर देना चाहिए…"

"द ब्वाय इज़ वेरी इंटेलीजेन्ट, करेजियस।"

"ओह, तो तुम्हें वह सेन्टेन्स भी याद है।"

"हां यार, पढा मैंने भी था, मगर मैंने इतनी गहरी नजर से उसे उस वक्त नही देखा था जैसे तूने देखा है। एक तो शायद यह बात भी थी कि मैं इतने बुजुर्ग लीडर की प्राइवेट लाइफ को ज्यादह छूना नही चाहता। आदमी बडा हो या छोटा, हर इन्सान में कुछ-न-कुछ कमजोरियां तो होती ही हैं। लेकिन एक बात और बतलाओ टण्डन। तुम्हारे फादर अपने फादर की इस दास्ताने-माशूकाना···"

केतली का पानी खौलने लगा था, उसका ढक्कन खोलकर युधिष्ठिर भाप के धुएं के हमले मुंह पर झेलता हुआ पानी का खौलना देखता रहा, वह स्विच बन्द करने ही वाला था कि जावेद की यह बात सुनकर वह पानी की खौलन के बजाय अपने मन के उबलते सत्य को प्रकट करने की उतावली में कहने लगा "इस मामले में मेरे पिता अपने पिता से भी बडे निकले यार। जब मैंने लेडी एम० की चिट्ठियां उन्हें दिखलाई और यह पूछा कि इन्हें भी क्यों उजागर कर दूं, तो पिताजी छूटते ही बोले—बुद्धिमान अगर सत्यवादिता का धर्म खो देता है तो वह सत्य के साथ-ही-साथ अपना भी बुरा करता है।"

कुर्सी पर तनकर बैठते हुए जावेद ने गम्भीर स्वर में कहा . "अंकिल की यह बात सुनाकर तुमने मुझे इन्सान को समझने का एक बहुत कोमल-नाजुक क्लू दे दिया है यार। आई थैंक्यू।"

युधिष्ठिर और जावेद के मनों में जयन्त की जीवनी लिखने के प्रसंगवश जो हल्की-सी दरार आ गई थी, वह आज पूरी तरह मिट गई। चाय के बाद आगे के अध्याय भी सुने गए। तब तक दरवाजे पर खटखटाहट शुरू हो गई। जावेद ने उठकर दरवाज़ा खोला, शकुन्तला अंशू के साथ खडी थी। कमरे में घुसते ही बोली :

"एक बजकर पन्द्रह मिनट हो चुके, जनाब।"

"अ-अए-ए दस मिनट, बड़ा इन्ट्रेस्टिंग है। हां, सुनाओ यार।"

शकुन युधिष्ठिर की ओर एक नजर ताक फिर अंशू की ओर देखकर बोली। "अंशू, पिताजी की मेज पर बैठकर इनके कागज सम्हाल तो मुन्ने।"

"अरे-अरे ये गजब मत करो यार, लाओ अंशू को मुझे दे दो। मेरी फाइल-वाइल बन्द करके रखो यार। मैं नही सुनाता। ये औरतें तो ऐटम और हाइड्रोजन बमों से भी ज्यादह खतरनाक होती हैं यार। इनको जबसे समानता का अधिकार दे दिया गया है तब से तो ये खोपडी पर ही सवार हो गई हैं। मां आ गई हैं अस्पताल से ?"

"आ ही नही गई हैं बल्कि आपको और बन्ने भाई को खिलाने के लिए डाइनिंग टेबुल पर आकर बैठ भी गई हैं। आइए, चलिए-चलिए।"

"कुछ भी हो शकुन, जो तेरा मियां कहता था, उसने कर भी दिखलाया। बहुत अच्छा लिखा है नावेल।"

बीस

जावेद के साथ बिताए हुए दिन ने युधिष्ठिर की स्फूर्ति को जोश की नई फुरफुरी दे दी। दूसरे दिन पिताजी के कन्धे और बांहों की हड्डियों का एक्सरे होनेवाला था। सवेरे चाय के बाद सिगरेट का पहला कश खींचते ही युधिष्ठिर के मन की आंखों के सामने कल्पना का एक दृश्य सहसा चमक गया। किसी पुरानी किस्म की पंसारी की दूकान के आगे जयन्त और कई युवक शोर मचाते हुए धरना दे रहे हैं और दूकान के आगे तमाशाइयों की भीड़ भी काफ़ी झलक रही है। मानसिक दृष्टि का एक पैना उभार युधिष्ठिर की लेखनेच्छा को भी प्रबल रूप से उभार गया। सहसा कल्पना में देखा गया 'फ्लैश' शब्दों में अंकित करने की उतावली बढ़ गई, लेकिन एक्सरे के समय उसे पिताजी के पास अस्पताल में रहना ही चाहिए, यह कर्तव्य-भावना उसे इस समय उसकी खामोशी की तहों में अखर रही थी। इच्छा होती थी कि निपटकर तुरन्त अपने ऊपर के लिखनेवाले कमरे में चला जाए, लेकिन कर्तव्य उसे दूसरी दिशा दे रहा था।

सहसा शकुन अंशू के लिए कबर्ड से धुले कपड़े निकालने आई। कपड़े निकाले, फिर पति को देखकर कहा: "अब अपने खयालों में बैठे-बैठे सिगरेट न फूंको भाई, आज पिताजी का एक्सरे···"

"हां यार, ऐसा सीन साला मन में फ्लैश हुआ है कि नया अध्याय खोलने के लिए मचल उठा हूं। क्रियेटिव मूड्स की जनमपत्रियां भी अजीब-अजीब ढंग से खुला करती हैं। बड़े धरम संकट में पड़ गया हूं शकुन।"

शकुन ने सुना, चेहरे पर हल्की मुस्कुराहट आई। कुछ-कुछ मस्त और इठलाती अदा से पति के पास आती हुई बोली: "सच कह रहे हो या बहानेबाज़ी।"

"मैं ड्यूटी में कभी बहाना नहीं करता। हां, कांटे तोल निर्णय करने में कभी-कभी ऐसी रस्साकशी मन में होने लगती है कि क्या कहूं।"

"मैं जानती हूं," सहानुभूति के स्वर में कहते हुए शकुन ने पति के कन्धे पर अपनी प्यार-भरी हथेली का मुलायम भार रख दिया। फिर क्षण-भर युधिष्ठिर के गले के पीछे अपनी उंगलियां थिरकाते हुए बोली: "अगर मेरा अहसान मानो तो मैं तुम्हें धरम संकट से बचा सकती हूं।"

"एहसान ! अरे मैं कुत्ते की तरह से तेरे आगे दुम हिलाता रहता हूं और फिर भी तुम…"

"एवमस्तु, तुम लिखने का मूड बनाओ, मैं अस्पताल की ड्यूटी सम्हाल लूंगी। आज कॉलेज नहीं जाऊंगी।"

युधिष्ठिर सचमुच उपकृत मात्र से प्यार के जोश में उठकर खड़ा हो गया और स्नेहावेश में पत्नी के बाएं गाल पर चमकते हुए काले तिल का चुम्बन लिया, सिर थपथपाया और तेजी से अपनी दिनचर्या में लग गया।

जयन्त टण्डन आशुतोष, डॉ जगदीश नारायण (जग्गो बाबा) अपने खानदान के परिचित, केवल तस्वीरों में देखे या बिल्कुल अनदेखे पुरखों के चेहरे लॉन में लगे चम्पक के फूलों में चमक उठे। अपनी कल्पना को लेखबद्ध करने के लिए युधिष्ठिर अब तक न जाने कितने पुराने पहनावे मूठों के ढब-ढंग देख चुका था। अपनी चौक की खानदानी हवेली में खूब चक्कर लगाए थे, गलियों में आते-जाते बहुत-सी पुरानी चाल के जीवन की बची-खुची झलकियां देखी थीं। पुराने लोगों से अनेक पुराने-पुराने चरित्रों के किस्से सुने थे। वे सब संचित अनुभूतियां समाधियों का झुण्ड बनकर शहद का छत्ता बनाने लगी…।

नगर में बायकाट आन्दोलन चलाने के लिए जयन्त के बंगाली मित्र अब बेहद उतावले हो उठे थे। जयन्त ने उन्हें भरोसा दिलाया था कि वह नगर के मुख्य भाग में आन्दोलन को संगठित और सफल कर दिखलाएगा किन्तु असफल रहा। आज सवेरे तड़के-ही-तड़के व्योमेश बनर्जी, मोन्टू सान्याल और देबू घोष जयन्त के घर आ धमके और आते ही उसकी खासी खिंचाई की "तुम शाला हिन्दुस्तानी छातू खोर, तुम लोग बड़ा-बड़ा बात कर सकता है, काम नहीं कर सकता। देखो हामरा बांग्ला नेशन ने बृटिश गव्हॉमेंट की नाक में नकेल डाल दिया। व्हाइसराय से लेकर छोटा-सा-छोटा बृटिश ऐडमिनिस्ट्रेशन का आदमी शौत्र अत्याचार जुलूम करके भी हामरा बंगाली नेशन को दबा नोईं शका और तुम लोग शाला आईडिल-आईडिल हैम आईडिल—शेम-शेम।"

जयन्त चिढ़ गया। अपनी पराजय को पराजय न मानने की अकड़ में उसने भी बड़ी-बड़ी शेखियां बघारीं "वी आर नाट कावर्ड्ज ! साले, तुम यह मत भूलो कि बर्बरों के प्रारम्भिक आक्रमण हम पंजाबियों और यू० पी० वालों ने ही झेले हैं। जब हम फिफ्टीसेवन की म्यूटिनी कर रहे थे तब तुम साले अंग्रेजों की नौकरी कर रहे थे। हम साले तुम्हें अब भी करके दिखाएंगे।"

क्रोध के आवेश में भी जयन्त सत्कार करना न भूला। नौकर को बुलाकर केसरबाग से जलेबियां लाने का आदेश दिया। व्योम बोला. "नहीं, हम लोग

प्रोतिज्ञा किया है कि वीलाईती शोक्कोर नेंई खोंयगा।"

"नहीं खाएगा तो जाओ साले भाड़ में। सवेरे-ही-सवेरे हमारा दिमाग खराब करने आ गए, यू फूल्स।"

व्योम और जन्यत तथा मोन्टू साथ-साथ पढ़े थे। देवू, मोन्टू का बचपन का मित्र था और अपने राष्ट्रीय विचारों के कारण इन तीनों का घनिष्ठ मित्र हो गया था। किन्तु आज की कुण्ठा-भरी मिठास बहुत कड़वी हो गई। व्योम यह अल्टीमेटम देकर उठा था: "जोदी एकमास के भीतर तुम लोग सक्सेज़फुल न हुए तो हाम तोमरा जातिवाला दो-चार कोपड़ा दूकानदारों की दूकान में आग लगा देगा।"

"लगा दो। साले, अब मेरी एक जाति नहीं है, नेशन है। तुम हमको हिन्दुस्तानी कहकर अपने से अलग करते हो, मगर मैं नहीं कर सकता। हिन्दुस्तान यहां से लेकर कन्याकुमारी तक है। खैबर पास से लेकर आसाम के धुर कोने तक है।"

"हाम भी है, हाम भी है।"

"तुम तो अपने को बंगाली नेशन कहता है। हम हिमालय की ऊंचाइयों से लेकर समुद्र की गहराइयों तक अपना नेशन मानते हैं—हिन्दुस्तानी नेशन।"

मैत्री की मिठास आवेश-भरे असंगत तर्कों की कड़वाहट में बदलती चली गई। सवेरे का यह मित्र-मिलन जैसा अचानक और अन्धड़-भरा था वैसे ही अचानक और कड़वाहट के साथ समाप्त भी हो गया।

इन लोगों के जाने के बाद भी जयन्त की खौलन बढ़ती गई। घर में अभी नाश्ता तैयार ही हो रहा था कि जयन्त अचानक अपना कुर्ता, पायजामा और वास्केट पहनकर घर से बाहर निकल पड़ा। कौशल्या देखकर बोलीं: "अरे कहां चला सवेरे-सवेरे! तेरे मित्र भी चले गए। मैंने सबके लिए हलवा बनवाया था?"

"ज़रूरी काम से जा रहा हूं। आकर खाऊंगा।"

बरामदे में बाईसिकिल रखी थी। उसे झाड़ने-पोंछने लगा तो माली दौड़ा हुआ मालिक के हाथ से झाड़न लेने के लिए आया। उसे भी अपनी खीझ में ख्वाहमख्वां डांटकर भगा दिया। और खीझ-भरे हठीले राजकुमार की तरह अपनी नई चाल के दो पहियोंवाले लोहे के घोड़े को चम्पक मैन्शन से बाहर निकाला। बाईसिकिल चौक की ओर सरपट भाग चली।

अपने बंगाली मित्रों की बीच-बीच में होनेवाली आपसी बंगाली गुफ्तगू के दौरान उसने यह सुन लिया था कि आज प्रतिपदा है यानी हिन्दुस्तानी नेशन की परेवा यानी आशू भैये की छुट्टी का दिन। अभी उस उल्लू के पट्ठे व्याख्यान-वाचस्पति को बुलवाता हूं। साले को इतनी क्रिटिकल करेक्टर क्राइसिस से बचा लिया। उसकी नियोगिनी माशूका का एबार्शन कराके सारा किस्सा पाक करवा

जयन्त ने दो-तीन वार उनके वाचस्पतित्व की तेज़ खिचाई की और यह शेखी भी वखारी कि अगर मैं तरकीव न वताता तो तुम दुनिया में अपना काला मुंह भी दिखलाने काविल न रहते। इस पर वासुदेव वोले : "आपकी युक्ति और योजना का आदर करता हूं। नतमस्तक हूं कि आपने मेरी गलती को सुन्दरता से सुधार दिया। परन्तु यह ऐसी प्राकृतिक और सहज ही हो जानेवाली गलती है जो मुझसे हो गई, आपसे भी हो सकती है, आशू भी कर सकते हैं। ऐसा कौन है जो कामिनी के कुचों और कटाक्षों की मार से वच सकता है ?"

व्याख्यान-वाचस्पति के आवेशयुक्त वाक्यों को सुनकर जयन्त चुप रहा। शर्माजी अपनी वात वढ़ाते रहे : "यह गलती तो खैर जो हुई सो हुई। किन्तु मुझसे सवसे वड़ी मूर्खता यह हुई कि मैंने मान्या श्यामाजी को अपने पति से सत्यवार्त्ता कह देने की सलाह दी। सुखलाल मेरे वहुत वड़े मित्र हो गए थे, किन्तु थोड़े वहुत विचारक हो जाने पर भी विवेकशून्य ही रहे। क्या कहूं, उनका भाग्य मेरा भाग्य, मान्या श्यामाजी का दुर्भाग्य।"

तव तक गर्मागर्म जलेवियां तश्तरी में आ गईं। जयन्त उनका स्वाद लेकर वोला : "अच्छी हैं। आशू भैये, तुम अव एक काम करो।"

"क्या ?"

"किसी एक्सपर्ट वकील से अपने इस नियोग स्पेशलिस्ट यार की तरफ़ से एक नोटिस लिखवा दो।"

"कैसी नोटिस ?"

"यही कि तुमने विना किसी प्रमाण के मुझे वदनाम किया इसलिए मैं तुम पर दस हज़ार का मानहानि का दावा करता हूं। अगर पन्द्रह रोज में अदा न किया तो तुम पर मुकद्दमा चलाकर तुम्हारी जायदाद कुर्क करवा लूंगा।"

"इससे क्या होगा ?" वासुदेव ने पूछा।

"सुखलाल विवेकशून्य भी है। वह इस पर आत्महत्या तक कर सकता है।"

"अमां, वीवी के भगा दिए जाने पर वह सुखाउर्रहमान वनने से तो सिटपिटा गया, आत्महत्या साला क्या करेगा। तीन-चार दिन पहले तुम्हीं ने मुझे वताया था कि मित्र और पत्नी के धोखे देने की इम्पोटेन्ट वातें कह-कहके साला चटनी के आलू वेचता है—कावर्ड एण्ड इम्पोटेन्ट। आशू भैये, अगर मेरी सलाह पर तुम लोग चले तो मैं उसको सुखाउर्रहमान से तररहमान वना दूंगा। तुम देखते तो चलो।"

आशू वोले : "यह काम कल ही करवा दूंगा, वैरिस्टर यूसुफ हुसैन खां से नोटिस लिखवा दूंगा। वावू से उनके वड़े अच्छे टर्म्स हैं। उनके तो कई केसेज़ में वकील भी रहे हैं।"

"खैर, किसी से भी करवाओ, मगर जल्द करवाओ, और इसके साथ-ही-साथ

तुम एक बार मुझे वासुदेवजी की माशूका से मिला सकते हो ?"

वासुदेव झेंपकर बोले : "जयन्तजी, आप बार-बार मेरी गलती की याद क्यों···"

"अमां गलती-वलती कुछ नहीं, यह ह्यूमैन वीकनैस है, शर्माजी। तुमने सच ही कहा, मैं भी कर सकता हूं। यह अपराध ऐसे हैं कि पकड़े जाएं तो अपराध हो जाते हैं वर्ना कोई अपराध नहीं।"

जलेबी खाकर आगू ने तश्तरी रखी और नौकर को ले जाने को आवाज़ दी। फिर जयन्त से पूछा "श्यामा सुनारी से मिलकर तुम उसे क्या सिखाओगे ?"

"सिखाऊंगा कुछ नहीं, उससे ड्रामा कराऊंगा।"

"कैसा ड्रामा ?"

"अरे उससे सौभाग्य यज्ञ कराऊंगा। इधर शर्माजी के नोटिस की धूम मचेगी, उधर इनकी माशूका के सौभाग्य यज्ञ की।"

"ठीक है, हाथ धो लो। चलते हैं।"

"यार आगू भैये, इस आशिक को भी साथ ले चलना। साला, मेरे सामने मान्या-मान्या कर रहा है। वहां आवें लड़ाएगा, कलेजा तर करेगा।"

"क्या जयन्त भाई आप···" हंसी-मज़ाक के साथ तीनों नाईबाड़े की तरफ़ चल पड़े।

नज़रबाग की खुली दुनिया में रहनेवाले जयन्त के लिए गली-दर-गली के भीतर आबाद गुलज़ार बाज़ार का दृश्य एक अनोखा और सुखद अनुभव था। गली में एक ओर शिवाला है और दूसरी ओर साधुओं की संगत भी। एक ओर दूध-दही की दूकान, दूसरी ओर लोहे की डिबरिया, देसी किस्म के लैम्पनुमा चिराग़ बनानेवाले की दूकान। बच्चों के लिखने-पढ़ने की तख्तियां, खड़ाऊं और चटाई बेचनेवाला, फिर लोहे की कुण्डियां, कीलें और कब्ज़े—गरज़ कि घर-गृहस्थी वालों की ज़रूरतों का सामान उस गली में मुहैय्या है। आगे तनिक अधिक खुली जगह में एक तिराहा जिसमें दाएं हाथ बनी दो घरों की बन्द कुलिया की राह को चौराहा मानकर तश्तरी में एक टोना-टोटका रखनेवाली आटे की प्याली में जलता दीया लेकर आई। लकड़ी की टालवाली बुढ़िया ने लकड़ी का एक चैला उठाकर ऐसा सटीक फेंका कि आटे के दीयेवाली मिट्टी की तश्तरी में रखे चम्पक के फूल वगैरह गिर पड़े, दीया उलटा, उछलकर पास ही के नाले में चला गया। टोनही और लकड़ी की टाल की मालकिन दोनों ही समान वय की प्रौढ़ाएं कहावती भटियारिनों की तरह हाथ बढ़ाकर उंगलियां नचा-नचाकर लड़ने लगीं। फिर थोड़ा रास्ता सन्नाटे का, दाहिनी ओर एक खण्डहर मस्जिद और बाएं हाथ से हल्की चढ़ाई शुरू हो जाती थी, जिसमें घुसते ही नुक्कड़ पर गोबरशाह की चार दर की दूकान थी। चौधरी पसारी की दूकान, डिब्बों, कनस्तरों से भरी

अलमारियां, बीस-पच्चीस फुट लम्बी और दस-बारह फुट चौड़ी दूकान के भीतर से गाहकों की मांग का सामान निकाल ले आनेवाले तीन नौकर, चौथे दर में छोटा-सा दरीदार पंखा लटकाए उसकी डोरी को अपने पैर के अंगूठे में फंसाकर एक चालीस-बयालीसवर्षीय आदमी लेटा था। उसकी तोंद बेहद बड़ी और फैली थी, सिर और मूंछों के बाल खिचड़ी, एक आंख भैंगी। उससे कुछ दूर पर एक लगभग पैंतीस-छत्तीसवर्षीया औरत, जिसे देखकर लगता था कि विधाता ने कोयले पर खेल-खेल में सूरत गढ़ी है और साथ ही उस काली-कलूटी शक्ल को बड़ी-बड़ी और बड़ी रसीली आंखें भी दे दी हैं।

व्याख्यान-वाचस्पति जयन्त और आशू के कानों के पास आकर धीरे-से मज़ाक-भरे स्वर में बोले : "इस गोबर के पैर के अंगूठे में फंसी पंखे की डोरी का रहस्य जानते हो आशू ?"

"नहीं।"

"यह गोबरसाह पंसारी कहलाता है। असली नाम गोबरधन है। इसके दादा ने एक दर की दूकान खोली थी जिसे इसके बाप ने दो दर की बनवाकर पीछे, एक छोटा-सा रिहायशी मकान भी जोड़ दिया। इस गोबर साले की किस्मत विलायती चीनी ने चेता दी, अब इस वक्त चार दर की दूकान है, मकान आगे की जमीन खरीदकर और बड़ा कर लिया है। साला पक्का औरतबाज, ये जो औरत इसके पास बैठी सूप फटक रही थी, इसकी सातवीं ओढ़री है। और वह जो दूसरी कोने में बैठी जोशांदे की पुड़िया बांध रही है, वह इसकी रखैल है। लेकिन अब स्त्रियों को वश में रखना इसके शारीरिक स्वास्थ्य के वश में ही नहीं रहा। भाग्य ऐसा है कि मिट्टी का ढेला हाथ में लेता है तो वह भी सोना बन जाता है। घी, मिठाइयों के बड़े शौकीन, चर्बी इतनी बढ़ गई है कि दो-चार कदम भी चलना-फिरना दूभर। एक बार बड़े भैया के पास ये इसकी सातवीं ओढ़री डोली में गोबर को डालकर लाई थी। आशू जानते हैं कि वह इस इलाके के बहुत प्रसिद्ध वैद्य हैं। उन्होंने महीने के चार सोमवार, दो त्रयोदशियां, दो गणेश चौथें और एक शनीचर का बरत-उपास सुझाया कि रोज़ अपने घर से पैदल कोनेश्वरजी के दर्शन करने जाएं और आएं। साथ में चोकर-मिला आटा खाएं, चावल कम, घी-मिठाई बिल्कुल नहीं। गोबर मेरे भाई के पैरों पर गिर गया जयन्तजी और बोला—कोई छोटी कसरत बतलाइए महराजजी जिससे पेट की हवा भी खुलती रहे। तब भैया ने इस डोरीदार पंखे को खींचने की तरकीब बतलाई थी। फिर भी जब वायु नहीं खुलती तो ससुरा अपनी ओढ़री पर चिल्लाता है कि अरे भई पदाय जाओ—पदाय जाओ। दस-बारह बार अनसुनी करके एक बार आती है और इतने झटके से टांग उठाती है कि गोबर हाय-हाय चिल्ला उठता है।

जयन्त सुनता रहा, फिर बोला : "वाह-वाह-वाह, ये तुम्हारा गोबरशाह तो

मेरे काम के लिए इर्बी की लाटरी का टिकट सिद्ध होगा, लाला।"

"कैसे, मैं समझा नहीं आपकी बात," शर्माजी ने पूछा।

"चलो समझाएंगे। अभी पहले तुम्हारी नियोगिनी मामूका को तो देख लें यार।" जयन्त ने उत्तर दिया।

शर्माजी ने प्रेम-भरा बनावटी गुस्सा दिखाते हुए आंखें तरेरी।

तब तक गगो घटवालिन का घर आ चुका था। गली इस छोर पर लगभग पूरी तरह सूनी थी। गली में केवल बाएं हाथ का एक दरवाजा अधखुला था, एक औरत बाहर कूड़ा फेंकने आई थी। उसी से गगो का घर पूछा। वह सामने का दरवाजा बतलाकर झटपट अपना दरवाजा बन्द कर गायब हो गई।

कुण्डी खट्-खट्-खट्।

"कौन है ?"

"गगो घटवालिन है ?"

"घाट पर गई है।"

"उनके बेटे रामसरन हैं ?"

"वो और सबेरे चले जाते हैं।"

अब तक आशुतोष बोल रहा था। अब उसके इशारे पर व्याख्यान-वाचस्पति वासुदेव बोलने लगे : "माताजी मैं हूं, मैं और मेरे एक शुभचिन्तक मित्र हैं, द्वार खोलिए।"

कुछ हिचकिचाहट-भरे क्षणों के बाद भीतर की कुण्डी खुल गई। "हम आप ही से एक बहुत जरूरी बात कहने आए हैं।" व्याख्यान-वाचस्पति ने कहा।

पहले आशुतोष फिर जयन्त फिर वासुदेव घर में प्रविष्ट हुए। जयन्त ने कनखियों से देखा, पीछे छूट जानेवाली चार चितवनें आपस में पाप-पुण्यमयी रसीली छिपा लुकउमल खेल रही हैं।

यह लोग भीतर दालान में जाकर बैठे ही थे कि द्वारे की कुण्डी फिर खटखटा उठी। इस बार संयोग से गगो घटवालिन स्वयं आ गई थी। लाला काशीनाथ जैसे बड़े धनवान के बेटे आशू को अपने घर में देखकर गगो खिलखिला पड़ी। "अरे कहां सुदामा के घर भगवान के चरन आय पड़े भैया !"

इससे पहले कि आशू कुछ कहता, जयन्त ने अंग्रेजी में कहा : "आशू भैये, इस बुढ़िया को लेकर तुम पांच मिनट के वास्ते मेहरबानी करके कहीं टल जाओ। मैं अभी बुला लूगा।"

आशू ने भी अपनी अंग्रेजी भाषा को इस तरह चलाया जैसे अंग्रेज पहली बार इक्के पर बैठा हो। बोला : "मगर ये पूछेगी तो मैं क्या कहूंगा ?"

"बस, यानी यह कह देना कि इनसे मिलने आए हैं। इनका इनके पति से मेल-मिलाप कराना है।"

गंगो और आशुतोष सीढ़ी से छत के ऊपर कोठरी में चले गए। नीचे दालान में एकान्त में जयन्त टण्डन, व्याख्यान-वाचस्पति और उनकी 'मान्या' तीनों करीब-करीब पास बैठे थे। मान्या का मुख प्रायः नीचे की ओर झुका हुआ था, बीच में एक बार उनकी प्रश्नभरी दृष्टि जयन्त टण्डन पर पड़ी और दो बार अपने चोरी के धन को चुराकर ताका। जयन्त ने मौका साधकर खुस-फुस स्वर में बात उठाई : "देखिए, मैं आपसे साफ़ कह दूं कि मेरा अभी कोई निजी यानी अपना अनुभव नहीं है। लेकिन मैंने आप दोनों की इस घटना से सोचा ज़रूर है और बहुत सोचा है। यानी कि, आपसे सच कहूं, इस घर में आप दोनों का सामना होने तक बराबर सोचता रहा हूं।"

जयन्त की जोशीली आवाज़ का जादू असर करने लगा। वह कह रहा था : "मैं ईश्वर की, वेदों की और हिन्दू-मुसलमान, ईसाई-मूसाई किसी भी धर्म के महापुरुष की कसम खाकर कह सकता हूं कि आपने कोई पाप या अपराध नहीं किया था। नर मादा के बीच यह कुदरती मजबूरी होती है!···बोलो मत शर्माजी, चुपचाप सुनो। गलती तुम लोगों से यह हुई कि इस मेरे नालायक विद्वान दोस्त की सत्यवादिता की बेवकूफी में तुमने सुखलाल को लिख दिया और तमाशा खड़ा हो गया।"

यों तो व्याख्यान-वाचस्पति वासुदेव शर्मा को भी लताड़बाज़ी के अन्दाज़ में अपने तर्क उछालते रहने का अच्छा अभ्यास है, मगर जयन्त अपनी बातों से दोनों पर इस कदर छाने लगे कि उनमें आपसी खुलावट आने लगी। श्यामा ने सिर उठाया, जयन्त को विश्वसनीय दृष्टि से देखते हुए कहा : "खैर, जो कुछ हुआ उससे तो आप लोगों ने मुझे छुटकारा दिलवा दिया, उपकार मानती हूं आप लोगों का। पर दूसरी तरह से देखती हूं तो मैं कहीं की भी नहीं रही, न इनकी न उनकी। अब कहां जाऊंगी! मेरा क्या होगा?" श्यामो एकाएक फूट-फूटकर रो पड़ी। वासुदेव खिसियाए, लज्जित-से हो गए, किन्तु जयन्त ने शान्त स्वर में कहा : "रोने की ज़रूरत नहीं, असल में इस समय आपको ठण्डे दिमाग से सोचने की ज़रूरत है, बुद्धि की ज़रूरत है इसीलिए मैं अपने भाई और शर्माजी को लेकर यहां आया हूं। पहले आप ध्यान से सुनिए।" श्यामा ने फिर सिर झुका लिया। जयन्त ने उससे कहा :"सुनिए, ये हमारे शर्माजी मेरी सलाह से आपके पतिदेव को वकील से यह नोटिस भिजवाएंगे कि आपने झूठा इल्ज़ाम लगाकर मुझे और अपनी पत्नी को समाज में बदनाम किया है। अपनी हतक-इज़्ज़ती के लिए मैं आप पर दस हज़ार रुपयों का दावा ठोंकता हूं।"

"मगर दस हज़ार उनके पास कहां होंगे। उनके पास जो दो-तीन हज़ार के बटोरे हुए गहने थे, वे तो आपके भाई साहब ने लपेटकर मेरे साथ बंधवा दिए हैं। हां, मेरी लिखी चिट्ठी फड़वा दी, यह उपकार किया। उन पर···"

"आप घबराइए मत देवीजी, अभी मेरी पूरी बात सुनिए। ये धमकी आपके पति से रुपये लेने-देने के लिए नहीं है। इन धमकी से उनको घबराहट होगी और इधर आपके नाम से अपने सौभाग्य देवता की शुभकामना के लिए आपसे एक यज्ञ करवाया जाएगा। वह चारों ओर घबराहट से घिरकर अपनी शरण के लिए एक ही रास्ता पाएगा और वह होंगे आपके चरण।"

श्यामा के सन्देह निरस्तरित हो गए, वासुदेव गिड़गिड़ाए स्वरों में बोला : "जयन्तजी, आपने कमाल की युक्ति सोची है। अब लगे-हाथ यह भी बतला दीजिए कि आपने गोवर के यहां कौन-सी नई युक्ति सोची थी जो कहा था कि बाद में बतलाऊंगा।"

जयन्त हंसा, बोला : "हां शर्माजी। वो जो मैं इन देवीजी के सौभाग्य यज्ञ की बात घर से चलते समय उठा रहा था···"

"हां-हां।"

"अरे वो स्कीम अब ऐसी चूहेदानी बनेगी जिसके एक पाले में देवीजी का वह चूहा फंसेगा और दूसरी तरफ मेरे बायकाट की बलि का बकरा तुम्हारा गोवर पंसारी।"

"कैसे?"

जयन्त आंखें नचाकर बोला : "सौभाग्य यज्ञ अब केवल आपकी मान्या महादेवी की ओर से ही नहीं होगा बल्कि सभी सौभाग्यवतियों का सामूहिक यज्ञ होगा। लेकिन इसमें देवीजी को थोड़ा भाषण देने का अभ्यास भी करना होगा।"

देवीजी कुछ कहें, इससे पहले ही देवजी जोश में बोल उठे : "अरे ये रट के बोल देंगी।"

"खाली रट्टू तोते की तरह नहीं।"

"अरे ये ऐसा तेजस्वी भाषण देंगी कि आप चमत्कृत रह जाएंगे। मैं जानता हूं, आपको मालूम नहीं है।"

प्रशंसा की सूक्ष्म डोर से नर-नारी के नयन बंध गए। जयन्त खिलखिला पड़ा : "हे हे, मार्गी नाहीं छूटे चाहे जिया जाय। मैंने किसी बुरी नीयत से नहीं कहा है शर्माजी! खैर, आगे की बातें अब घर चलकर होंगी, लेकिन भाषण आप मुझे लिखकर देंगे। खुद आपकी इनसे तभी भेंट होगी जब आप दोनों मुन्नालाल के सामने होंगे। अब इस वक्त बातें न कीजिए। बुलाइए आनू भैये को, घर चला जाए।"

आशू-जयन्त की मन्त्रणा से श्रीमती श्यामकुमारी आर्या के नाम से बटकर एक पर्चे ने लोकदृष्टि से महाशय मुन्नालाल को अविश्वसनीय बना दिया था। कोई

उनकी बात ही सुनने को तैयार नहीं था। सब यही समझते थे कि श्यामा आर्या के पर्चेवाली बात ही सच है। सुखलाल प्रलोभन और मूर्खतावश मुसलमान होना चाहता था, किन्तु उसकी सती पत्नी पहले ही घर का माल-मता लेकर किसी सुरक्षित स्थान पर जाकर छिप गई है। नियोगवाली खबर गलत है, सुखलाल झूठा है। इस लोकमानस की पृष्ठभूमि में जब महाशय सुखलाल को व्याख्यान-वाचस्पति वासुदेव शर्माजी के वकील का नोटिस मिला तब वह बहुत परेशान हुए। जिससे कहते वह यही जवाब देता कि सुखलाल तुम्हारी मूर्खता से उबरने का यही एक रास्ता है कि तुम शर्माजी से मांफी मांग लो। मगर यही बात मानने से उनका मन इन्कार करता था। वह अपने एक पुराने परिचित सर्राफ सेठ के यहां गए। उनका लड़का नया-नया वकील बना था। बड़ी खुशामद-दरामद, चिरौरी-मनौतियों के बाद सर्राफ-सुत बोले : "भई, आपका मुकद्दमा तभी लड़ा जा सकता है जबकि,कोई ठोस प्रमाण आपके पास हो।"

"साहेब, मेरी धरमपत्नी की चिट्ठी मौजूद है कि वासुदेव ने नियोग धरम से फुसलाकर उसे गर्भवती बना दिया।"

"कहां है वो चिट्ठी। ले आइए।"

"यह चिट्ठी पाकर जब मैं लखनऊ आया तो उसने खुद रो-रोकर भी मुझसे कहा था।

"खैर, ये बात तो आप साबित नहीं कर सकते। मगर चिट्ठी ले आइए तो कुछ बात बने।"

"साहेब, वो चिट्ठी वह चुरा ले गई है।"

"देखिए सुखलालजी, मुसम्मात श्यामकुमारी आर्या के पर्चे में यह साफ़-साफ़ लिखा है कि वह घर से रुपये, जेवर और अपने कपड़े-भर ही लेकर निकली है और कोई वस्तु उन्होंने छुई तक नहीं है।"

"हां वकील साहेब, मैं असत्य नहीं बोलूंगा। यह बात बिल्कुल सत्त है।"

"आपके जो कुछ कागज़-पत्र थे ···"

"बस एक उस चिट्ठी को छोड़कर और सब मौजूद हैं।"

"तब कुछ नहीं हो सकता महाशयजी, आप शर्माजी से या तो माफ़ी मांगिए या फिर जेल जाइए।"

सुखलाल बौखलाए-बौखलाए अपने परिचितों, सजातीयों और सम्बन्धियों की सहानुभूति बटोरने के लिए घर-घर भटके, पर बात बन नहीं रही थी।

तभी गलियों में यह चर्चा चली कि श्यामकुमारी आर्या अपने पति और सब सौभाग्यवतियों के सौभाग्य की कामना के लिए एक सर्वसौभाग्यवती महायज्ञ करा रही हैं तो सुखलाल और भी अधिक चिड़चिड़ा उठे। उनकी पत्नी ही उनके अन्तर्सत्य को तोपने के लिए गहरा गढ़ा खोद रही थीं लेकिन उनकी इस बात को

कोई मानता ही न था। सभी श्यामा की तारीफ करते। यह बदनामी भी बहुत ज़ोर-शोर से फैली कि सुखलाल किसी जनाने चक्कर मे ही मुसलमान बन रहा था जो श्यामा सती की चतुराई के कारण खटाई मे पड़ गया है। ऊपर से वह सती अपने सौभाग्य के शुभकामनार्थ प्रमाण पर प्रमाण देती चली जा रही थी। गली-महल्लेवाले सब लोग सुखलाल की थू-थू उन्ही के मुंह पर करने लगे थे। सुखलाल बहुत दुखी, जिधर जाएं उधर जगहंसाई।

मगो घटवालिन के पिछवाड़ेवाले मैदान मे 'सर्वसौभाग्य महाअनुष्ठान' आरम्भ हुआ। चार दिन पहले से ही गली-गली कनस्तर पीटकर घोषणा की गई कि अपने और सब स्त्रियो के पतियो की शुभकामना के लिए श्रीमती श्यामा भगवान लक्ष्मीनारायण को प्रतिष्ठित कराके महायज्ञ करा रही हैं। हर स्त्री अपने सौभाग्य की कामना के लिए पाव-भर देसी घी और पाव-भर देसी खांड पूजा मे अर्पित करके उसमे शामिल हो सकती है। देसी खांड की बात बहुत अधिक प्रचारित की गई कि गाय-सुअर की हड्डियो से साफ की जानेवाली विलायती शक्कर धर्म-विरुद्ध है, अतः उसे कोई न लाए। महाशया श्रीमती श्यामकुमारी आर्या मण्डप मे भगवान लक्ष्मीनारायण की प्रतिष्ठापना के अवसर पर बिना पर्दे-चद्दर के, मुह खोले पण्डितो के साथ विराजमान हुईं। उन्होंने भाषण मे कहा : "मेरे पति बहुत ऊंचे विचारों के आदमी है, बहुत कुशल कारीगर हैं, इसलिए कुछ कुचाली लोग प्रलोभन देकर उन्हे अपने धर्म मे मिला लेना चाहते हैं। उन्होंने मेरे ऊपर और परमपूज्य वासुदेवजी शर्मा पर झूठा कलक लगाया है। जब मेरे पूज्य पतिदेव आर्यसमाज के मिम्बर हुए तब से मैं पूज्य शर्माजी को जानती हू। वह खुद ही मुझे उनके पास ले गए थे। वैसे मैं अपने पूज्य पति को अपना आराध्य मानते हुए भी अपने पुराने सस्कारो के कारण दिल के अन्दर-दर-अन्दर सनातन धरम को भी मानती हू। इसीलिए मैंने अपनी धरम की माता श्रीमती मगोदेवी की सलाह से यह यज्ञ कराया है।"

औरतों के सौभाग्य से जुड़े अनुष्ठान मे औरतों की भारी भीड़ आई। श्यामा आर्या के भाषण ने सब औरतों का बहुत प्रभावित किया। उनके ओजस्वी भाषण के कारण ही लक्ष्मीजी के लिए सिन्दूर और भगवान के चरणामृत के लिए घी और खाड-बूरे की बरसात हो गई। इसी समय सहसा यह आवाज भी उठी कि गोबर बेधर्मी विलायती शक्कर बेचता है। उसकी दूकान से खरीदी हुई हर चीज धर्म-विरुद्ध है। श्रीमती श्यामा आर्या और पूजा करानेवाले पण्डित ने भी इस बात का समर्थन कर दिया। आवाज गूज उठी कि गोबरशाह की दूकान से सामान खरीदनेवाला हर आदमी अपनी समाज बिरादरी से निकाल दिया जाएगा।

विलायती वस्त्रों के बायकाट के लिए उठाया गया आन्दोलन तब तो सफल न हुआ, किन्तु विलायती शक्कर के बायकाट का आन्दोलन जेठ की लू मे उड़ी

चिनगारी के समान अनेक जगहों पर आग लगा गया। साथ ही सौभाग्य महायज्ञ की चर्चा घर-घर फैली। लक्ष्मीजी पर चढ़ाया गया सिन्दूर प्रसाद के रूप में वितरित होने से सौभाग्यवतियों में होड़-सी लग गई। और लक्ष्मीजी का सिन्दूर उसी स्त्री को मिलता, जो यह प्रतिज्ञा करती कि उसके घर में अब विलायती शक्कर नहीं आएगी।

दिखावटी रूप से सनातनी मंच पर आरम्भ हुए सौभाग्य महायज्ञ और विदेशी शक्कर बायकाट आन्दोलन ने तुरन्त ही आर्यसमाज का मुखर समर्थन भी प्राप्त कर लिया। आशुतोष टण्डन की नवयुवक आर्यसभा के स्वयंसेवकों ने व्याख्यान-वाचस्पति की अनोखी वक्तृत्वशक्ति का सहारा लेकर जयन्त की संगठन-योजना ऐसी मजबूत हुई कि एक दिन सुबह घर के पारिवारिक प्रातराश के अवसर पर डॉ० देशदीपक ने जयन्त से कहा : "आजकल तुम्हारे खिलाफ सी० आई० डी० की ऐक्टिविटीज़ बढ़ गई हैं जयन्त।"

पूरी भाजी का हाथ में उठाया गया नेवाला हाथ में ही रह गया, जयन्त के चेहरे पर एक बार तेज़ तमतमाहट आई, फिर संयम सधा। तब भी तेज़ी न गई, निर्भीक स्वर में पिता से कहा : "मैंने बृटिश गवर्नमेन्ट को उखाड़ने के लिए किसी भी मीटिंग में एक शब्द भी नहीं कहा, लेकिन अगर गुड़ और देशी शक्कर के प्रचार में जगह-जगह बोल रहा हूं तो इसमें सरकार मेरा क्या कर सकती है।"

डॉक्टर देशदीपक सुनते रहे, चुपचाप खाते रहे, फिर कुछ रुककर कहा : "मैंने तुमसे शिकायत तो नहीं की। तुम जानते हो कि मैं स्वदेशी का शुरू से ही हिमायती हूं। इसके लिए हंसो को भी मैंने इन्करेज किया है, यह तुम जानते हो। लेकिन भई, इट शुड नाट बी वायलेन्ट। मुझे बतलाया गया है कि तुम्हारे चन्द बंगाली दोस्त दूकानदारों को धमकाते हुए अक्सर लोगों को वायलेन्स के लिए भड़काते भी हैं।"

"यह झूठी खबर है पिताजी।"

देशदीपक चुप हो गए, फिर कहा : "बहरहाल, मैंने जो सुना उसके लिए तुमको तुम्हारी मदर के सामने ही चेतावनी दे दी।"

जयन्त एकाएक तमतमा गया : "आप भी जानते हैं पिताजी कि मैं अपनी वैल्यूज़ से कोई कम्प्रोमाइज़ नहीं कर सकता।" वह कुर्सी से उठ खड़ा हुआ, फिर कहा : "मैं इस मूवमेन्ट को हरगिज़-हरगिज़ नहीं छोड़ूंगा पिताजी, बल्कि हंसो को···"

"उसके लिए तो मैं भी आपत्ति नहीं करता, लेकिन भाई जो कुछ भी करो वह सम्हलके करो। यह मत भूलो बेटे कि मैं और तुम्हारी माताजी सदा तुम लोगों का शुभ चाहते हैं। मैं चाहता हूं कि तुम इंग्लैण्ड जाओ और एक बहुत नामी-गिरामी बैरिस्टर बनकर लौटो। हमारे खानदान का नाम रोशन करो।"

"मैं आप लोगों की आज्ञा से तनिक भी बाहर नहीं, लेकिन अपनी कान्शेन्स से भी समझौता नहीं करूंगा। इन विलायती बनियों का राज हमारी जनरेशन के लोग अब कदापि बर्दाश्त नहीं करेंगे।" कहकर जयन्त तेज़ी से उठकर चला गया।

नाश्ते की मेज उदास हो गई। डॉक्टर साहब ने दूध का करीब-करीब ठण्डा हो चुका गिलास पानी के घूंट की तरह पीया। कौशल्या ने हंसो की तरफ़ दो पूड़ियां बढ़ाई, किन्तु उसने हाथ रोक दिया। कुर्सी से उठते हुए हंसो ने कहा : "आप लोग अभी बहुत उदास न हों। मैं बड़े भैया की खुशामद कर लूंगा।"

लेकिन स्त्रियों और कर्मकाण्डी ब्राह्मणों ने विलायती शक्कर के प्रति एक प्रबल धार्मिक प्रतिरोध उत्पन्न कर दिया था। राजभक्ति से धर्मभक्ति अधिक शक्तिशालिनी थी। विलायती शक्कर खाने के लिए प्रतिज्ञापत्र भरवाए जाने लगे। इसमें एक बड़ी प्रशासनिक समस्या उत्पन्न हो गई। शासन नहीं चाहता था कि बहिष्कार आन्दोलन सफल हो। एक ओर तो आर्यसमाज के नवयुवक और सनातन धर्म दक्षिणी सभा के लोग दूकानदारों को विलायती शक्कर न बेचने के प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर करने को मजबूर कर रहे थे और दूसरी ओर पुलिस के माध्यम से प्रशासक यह दबाव डाल रहे थे कि दूकानदार दस्तखत न करें।

जयन्त टण्डन के नेतृत्व में जगह-जगह स्वदेशी प्रचार की सभाएं धुआंधार हो रही हैं। गली-गली में विलायती माल के बायकाट की गर्मजोशी फैल रही है। घरों-घरों में देशी विलायती के पक्ष-विपक्ष का तनाव किसी-न-किसी हद तक बढ़ ही गया था। एक गली में एक पसारी की दो दर की छोटी-सी दूकान से जोशीले लड़कों ने एक बोरी विलायती शक्कर उठाकर गली में गिरा दी, उस पर दो-चार डोल पानी डालके गली-भर में बहला कर दिया।

ऐसी रिपोर्टों पर पुलिस तुरत काम करती थी, पर लड़के जहां मौका पाते वहीं विलायती शक्कर रूपी मेम साहिबा से ऐसे ही बलात्कार करते। पुलिस के पहुंचने-पहुंचने तक शासन-मरजिता शक्कर रूपी सूर्पणखा की नाक-कटैया करके लड़के भाग चुके होते। पुलिस आजिज आ गई। दूकानदार घबराने लगे। हरीराम की चढ़ाईवाले प्रसिद्ध मुरब्बे मिठाई विक्रेता रामआसरे हलवाई ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि हमारे यहां देसी खांड, देसी घी और कुएं के शुद्ध जल का प्रयोग होता है।

जयन्त टण्डन और व्योमेश बनर्जी अब विदेशी वस्तुओं के बायकाट आन्दोलन के साथ नगर के प्रायः सभी हिस्सों में जुड़कर सरनाम हो चले थे। सुप्रसिद्ध डॉ० देशदीपक का कुलदीपक होने के कारण जयन्त की शोहरत शहर में अधिक फैल रही थी। लोग डॉक्टर साहब से शिकायत करते, डॉक्टर अपनी पत्नी से शिकायतें करते, पर इनका कहीं अन्त नजर नहीं आ रहा था। माता और पिता दोनों

ही के समक्ष अब यह बात स्पष्ट उजागर हो चुकी थी कि जयन्त की विप्लवी अन्तरात्मा को अपनी मोहमयी महत्त्वाकांक्षाओं के चौखट में बांधा नहीं जा सकता।

डॉ० देशदीपक को विश्वस्त सरकारी अमलों से यह सूचना मिली कि ज्ञानेन्द्रनाथ मजूमदार नामक अठारह बरस के एक बंगाली छोकरे ने पुलिस को यह सूचना दी है कि लखनऊ भी अराजक दल का एक प्रधान केन्द्र बन गया है और लखनऊ प्रवासी कुछ बंगाली लोग कलकत्ते के अराजक लोगों से सहानुभूति रखते हैं। इनमें व्योमेश बनर्जी और जयन्त टण्डन और शीतल बनर्जी के नाम खासतौर से लिये जा रहे थे।

बहुत से सरकारी अमले, हिन्दुस्तानी और अंग्रेज दोनों ही डॉक्टर टण्डन के प्रति आभार मानते थे, क्योंकि डॉक्टर साहब इनके घरों की हारी-बीमारी में बहुत काम आते थे। तलाशी लेनेवालों की सूची से जयन्त का नाम सफाई से उड़ा दिया गया था। पुलिस के डिप्टी इन्स्पेक्टर जनरल मिस्टर मि० मेजर्स, डिप्टी कलेक्टर मिस्टर नाथूराम तथा सिटी मैजिस्ट्रेट मिस्टर जॉपलिंग के साथ पुलिस ने बाजार झाऊलाल, छुरीवाली गली और मकबूलगंज के बहुत से घरों को घेर लिया। बाबू हरिदासपाल ओवरसियर के यहां बीस बरस पहले खरीदी हुई एक जंग-लगी खुखरी मिली। संयोग की बात थी कि डॉक्टर देशदीपक ने सूचना मिलते ही अपने ही घर में जयन्त के कमरे की तलाशी पहले ले ली थी। दो-चार ऐसी चिट्ठियां अवश्य मिलीं जिनसे जयन्त को किसी हद तक खतरा हो सकता था, मगर डॉक्टर साहब ने वे कागज चीर-फाड़कर जला दिए थे।

इक्कीस

भूतपूर्व मुख्यमन्त्री माननीय सुमन्त टण्डन के प्लास्टर काटे जा चुके थे, उन्हें अस्पताल से आज विदाई देने की बात प्रायः निश्चित हो चुकी थी। वर्तमान मुख्यमन्त्री जायसवालजी बिना किसी पूर्वसूचना के अचानक अस्पताल आ पहुंचे। उनके आते ही हलचल मच गई। जायसवालजी ने अधीक्षक डॉ० अमरीक सिंह से कहा : "डॉक्टर साहब, सुमन्तजी हमारे राष्ट्र की बहुत बड़ी निधि हैं। आप जानते हैं ?"

"हां-हां साहब, हम लोग इसी स्प्रिट से उनकी देखभाल करते रहे हैं। आज उनके प्लास्टर काटे जा चुके हैं। उम्मीद है, हम उन्हें आज ही डिस्चार्ज कर देंगे।"

"मैं यही सुनकर आया हूं। लेकिन इस बात का ख्याल रखिएगा, मैं उस समय तक उन्हें अस्पताल से जाने नहीं दूंगा जब तक कि यह कन्फर्म न हो जाय कि उनकी हड्डी पूरी तरह से जुड़ चुकी है। ही इज सेवेन्टी इयर्स ओल्ड नाऊ, हमें पूरे प्रिकाशन्स लेने होंगे।"

डॉ० अमरीक सिंह का दाढ़ी-भरा गोल सुन्दर चेहरा हल्की मुस्कुराहट से और भी आकर्षक हो उठा। वह बोले : "आपकी बात से पूरी तरह सहमत हूं मगर सिर्फ इतने से फर्क के बाद कि हमारे टण्डन साहब सत्तर बरस के बूढ़े नहीं बल्कि सत्तर के जवान हैं।"

"डॉक्टर्स जाच कर चुके या कर रहे हैं?"

"आपके कीमती समय में मैं सिर्फ पांच मिनट और चाहूंगा। मेरे आफिस में तशरीफ रखें। मैं खुद देखकर आता हूं।"

अस्पताल के सारे डॉक्टरों, नायब डॉक्टरों, नर्सों, नौकरों-चाकरों में ही नहीं बल्कि आउटडोर के मरीजों तक में यह बात फैल गई कि मुख्यमन्त्री अस्पताल में बैठे हैं। 'इयर-नोज थ्रोट' के आउटडोर मरीजों में एक बुड्ढे के बज्र बहरे कानों में भी यह खबर न जाने कैसे रेंग गई। लोकतन्त्र का स्वतन्त्र प्रजाजन अपने मुख्य-मन्त्री के आगमन की सूचना पाकर एकदम शक्तिशाली हो उठा। जोर-जोर से कहने लगा : "सबेरे पहले हम ही आये रहे पर हमारी सुनवाई नहीं होती। ससुरे चार-छः पेशेन्टमोटरन पर जाए और बिना कागज पर्ची से सीधे घुसिगे। उनके कान-नाक में तकलीफ रहे और हम ससुर उल्लू के पट्ठे जैसे हियन पर्ची लिये बैठे ही रहे।"

चपरासी ने आगे बढ़कर उंगली से उसे चुप हो जाने का आदेश दिया। बुड्ढा और भी तैश में आकर खड़ा हो गया। लगभग चीखकर बोला : "अरे हां-हां, हम मुख्यमन्त्री को सुनाय रहे हैं। तुम सबके बाप को सुनाय रहे हैं। कान बहरे हैं, पर आत्मा के कान बहुत तेज होते हैं, बताय देते हैं। हम चीफ सेक्रेटरी मिस्टर मार्चन साहब के खास अर्दली रहे हैं। तब ससुर भारत आजाद रहा। हमरे आते ही डॉक्टर निकल के आता रहा और कम्पोडर से कहे कि आओ इनकी परची बनवाय लाओ, तब तक हम देखते हैं। अब जब से भारत गुलाम हो गया है तो मोटर-वालन को देखते हैं, हमरी फिकर नहीं। बस वोट लेने के लिए हाथ जोड़े आएंगे।"

युधिष्ठिर की गाड़ी उसी समय बाहर आकर रुकी। बुड्ढे की बात सुनकर जावेद मुस्कुराया : "सुना टण्डन, अंग्रेजों के वक्त में भारत आजाद था और अब गुलाम है।"

दोनों जब प्राइवेट वार्ड के बरामदे की तरफ बढ़े तो सुपरिन्टेन्डेन्ट डॉ० अमरीक सिंह तेज कदम अपने कमरे की ओर जाते हुए दिखलाई दिए। युधिष्ठिर को देखकर बोले : "हलो, आपके पापा बिल्कुल दुरुस्त हैं।"

कि मुसलमानधर्मी भारतीय प्रजा भी राजनिष्ठा में हिन्दुओं से कम नहीं है। उन्होंने ही अलीगढ़ में मोहम्मेडन ऐंग्लो ओरियन्टल कॉलेज खुलवाया और अट्ठारह सौ पिच्चासी की कांग्रेस में मुसलमानों को शरीक होने से रोका। कांग्रेस की स्थापना के कुछ ही वर्षों बाद अंग्रेज़ हुक्कामों को यह लगा कि कांग्रेस दिनों-दिन उनके गले की हड्डी बनती जा रही है।

इलाहाबाद की तीसरी कांग्रेस के अवसर पर उसकी अध्यक्षता के लिए यूल साहब का नाम प्रस्तावित करते हुए रज़ा हुसैन खां साहब ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि यह कहना गलत है कि मुसलमान कांग्रेस के खिलाफ हैं बल्कि सच तो यह है कि मुसलमानों के मालिक अंग्रेज हुक्काम उसके खिलाफ हो गए हैं। अपनी बात के समर्थन में उन्होंने सुन्नी वर्ग के मुसलमान शम्सउल उलेमा का एक फतवा भी पढ़कर सुनाया था। लार्ड कर्जन के जमाने के आते-आते तक अंग्रेज हुक्कामों ने हिन्दू और मुसलमानों में फूट पैदा करके कांग्रेस मूवमेंट को कमज़ोर बनाने के लिए बंगाल का बंटवारा कर दिया। इसके बाद लार्ड मिन्टो ने पृथक् निर्वाचन पद्धति चलाकर हिन्दू-मुस्लिम समस्या और जटिल कर दी। सरकारी प्रचार से दोनों धर्मों के बीच एक बड़ी खाई क्रमशः पैदा होने लगी। अलीगढ़ी नीति का मुस्लिम सामन्ती वर्ग जो अपनी हुकूमत छीने जाने के कारण पहले अंग्रेजों से नाराज था, अब इस बात पर खीजने लगा कि जो हिन्दू प्रजा कल तक उनके अधीन रहकर मुंह से चुकारा तक नहीं निकालती थी, उसी वर्ग के लोग अब अंग्रेजी पढ़-पढ़कर उन्हीं के ऊपर हुकूमत कर रहे हैं। यहीं से हिन्दू-मुस्लिम दंगों की शुरुआत हुई।

मन्दिरों में गाय और मस्जिदों में सुअर काटकर फेंके जाने की कुटिल बृटिश चाल से धार्मिक तनाव आरम्भ हुआ। पारस्परिक उत्तेजना का जामा पहनकर धर्म अधर्म बन गया…।

लम्बी बातचीत युधिष्ठिर के लिए बहुत रोचक और बहुत जानकारी-भरी थी। रात में ऊपर अपने कमरे में जाकर कैसेट-सुनते-सुनते युधिष्ठिर टण्डन की कल्पना बहुत तेजी से अपने उपन्यास नायक जयन्त टण्डन के व्यक्तित्व में समाने लगी।

सआदतगंज की गली। खैरू पंसारी की दूकान। जहां गाहकों द्वारा घरों की नौकरानियों से या तो छेड़-छाड़ भरी बातों की फुलझड़ियां छूटती रहती हैं या फिर कलह गालियों के बम गोले बरसा करते हैं। खैरू में डंडी मारने की पुरानी आदत है। गनी दर्जी की दूकान पर पैरों से सिलाई करनेवाली मशीन की खड़-खड़ का शोर दिन-भर चला करता है और चेहरे पर कमसिनी की चिकनाई लिये बीच-बीच में उस्ताद की डांट-फटकार और कभी अपने बुरे रिश्ते के सड़े शहद से सनी हुई प्यार-

भरी उजागर बातें सुनता हुआ बेशर्म बुलाकी मलमल के कुर्ते या टोपियां हाथ से सिलता रहता है। गली के आवारा लड़के मशीनी सिलाई का नई [illegible] करिश्मा खड़े-खड़े देखने का मजा लेते हैं। अधेड़ पानवाली नसीबन अपनी [illegible] आंखों से हमउम्र बस्तीवालों पर डोरे डालती नजर आती है। [illegible]

नब्बू कबाड़ी तहमद सलूका पहने, कन्धे पर बोरे में कबाड़खाना लादे हुए 'टूटे-फूटे बरतन बेच डालो, लोहा-लक्कड़, पुरानी कुप्पियां, लोहे के टूटे पलंग बेच डालो' कहता हुआ गली में आ रहा था। नसीबन की दूकान के चबूतरे पर बैठ [illegible] पान चबाता और पैसे की दसवाली तोताछाप सिगरेट को [illegible] कर बंधी मुट्ठी से कश खींचता हुआ मुस्कुराहट-भरे रंगीन दांत दिखाकर बोला— "अरे खलीफा, टूटे पलंग पर नसीबन चच्ची के साथ लेटोगे तो [illegible] जाएगी।"

नसीबन ने पान लगाते-लगाते अपनी दूकान से पान [illegible] नब्बू को चाहत-भरी नजरों से देखकर कहा : "आज बड़ी जल्दी चले आए।"

"न आता तो क्या गला कटवाता?"

"क्यों, क्या बात है, नब्बू मियां?" कादिर ने पूछा।

नब्बू ने आवाज को धीमी बनाकर कहा : "अरे, [illegible] सिवाला है न…"

"हां-हां।"

"वहां महादेव की खोपड़ी पर कोई गाय का कटा सिर चढ़ा गया है। बड़ी सनसनी फैली है। काफिर साले बमक रहे हैं, [illegible]। [illegible] मां…"

खैरू पसारी की दूकान के आगे खड़े गाहक औरतों-मर्दों में सनसनी फैल गई। खैरू तराजू तौलना भूलकर बातें सुनने लगा, बुलाकी की मशीन की घरघराहट खामोश हो गई।

और उसके बाद ही बुलाकी के मुंह से हिन्दुओं के लिए [illegible] गालियों का फौव्वारा खुल गया। जवानी नंगेपन पर गली के औरत-मर्द सभी सुनेआम उतर आए।

जयन्त की बाईसिकिल उस समय आमिना बेगम की ड्योढ़ी की तरफ जा रही थी। कानों में हिन्दुओं के खिलाफ भली-बुरी बातें जो पड़ीं तो चौंक उठा।

आमिना बेगम की ड्योढ़ी डॉक्टर देशदीपक के साहबजादे के लिए हमेशा बाइज्जत खुली रहती है। नईम दरोगा बन्द फाटक की खुली खिड़की के आगे मचिया पर बैठे हुक्का गुड़गुड़ाते हुए ड्योढ़ीदार से बातें कर रहा था कि जयन्त की बाईसिकिल देखकर अदब से उठ खड़ा हुआ : "आदाब बजाता हूं हुजूर, आज सुबू-सुबू कैसे तकलीफ फरमाई बन्दापरवर ने?"

बाईसिकिल से उतरते हुए जयन्त बोला : "बेगम साहिबा‥"

"नहारी नोश फ़रमा रही हैं, आप तशरीफ़ ले जाइए। भला आपसे कौन पर्दा है हुज़ूर।" फिर ड्योढ़ीदार की तरफ़ देखकर कहा : "लपककर भीतर जा, अनारो से कह दे, डॉक्टर साहब के भैया तशरीफ़ लाए हैं।"

ड्योढ़ीदार छक्कन खुली खिड़की से भीतर गया और खस्तादम फाटक की कुण्डी खोलकर ज़रा-सा सरकाया, जयन्त साहब बाईसिकिल लिये हुए भीतर चले गए। ऊपरवाले खण्ड में ज़ीने के पास ही इत्तफाक से खड़ी हुई अनारो ने जयन्त को देख लिया। लगभग अठारह-बीस का सिन, उभरी हुई गठी छातियां, सांवले-सलोने सुतवां नाक-दांत, बड़ी-बड़ी शर्बती आंखोंवाले सलोने चेहरे पर जयन्त को देखते ही आब आ गई। छक्कन बोला : "हुजूर को बड़ी सरकार के पास पहुंचा दो।"

"हां-हां, तुम जाओ।"

छक्कन ज़ीने उतरने लगा और जयन्त बेहोश निगाहों से एकटक अनारो को निहारते हुए ऊपर। नजदीक आकर धीमी आवाज़ में कहा : "बखाले हिन्दुवश बख्शम समरकन्दो-बुखारा रा।"

शोखी-भरी आवाज़ में तुनककर अनारो बोली : "मैं हिन्दू नहीं हूं जनाबेआला।"

"अरे हिन्दू का दिल लूटा है तो काफिर ही हो गईं।"

लगभग बीस-बाईस दिनों से चाहत के आग-भरे मैदान में साथ-साथ दौड़ते हुए दोनों क्रमशः पिघलते भी जा रहे हैं। जयन्त को बेगम साहिबा के दौलतखाने पर आते-जाते तब तक लगभग डेढ़ महीना बीत चुका था। वकील युसूफ हुसैन खां साहब की सलाह से चिकनकारी जाननेवाली गरीब औरतों की तलाश करके कारखाना शुरू करने के काम में अनारो ने बहुत मदद दी थी। आमिना बेगम उसे बहुत चाहती थीं। अनारो की दादी आमिना बेगम के मायके में काम करती थीं। दुर्भाग्य से शादी के बाद ही अनारो अचानक विधवा हो गई, मां-बाप पहले ही मर चुके थे, कुआंरी बेवा को आमिना बेगम की सरपरस्ती मिली। यहीं रहकर उसने चिकनकारी का काम सीखा और किसी हद तक अलिफ-बे की भी महारत हासिल कर ली। अम्मीजान (आमिना बेगम) उसकी चुस्ती-फुर्ती और अदब-सलीक़े से बेहद खुश थीं। हवेली के सूनेपन में वह उनके दिल का दीया बन गई। एक दिन अंधेरे में जयन्त के जिस्म से टकरा गई, लड़खड़ाहट से बचने के लिए जयन्त की छाती से चिपकना पड़ा। रफ़्ता-रफ़्ता आंखें टकराने लगीं, मुस्कुराहटें बढ़ीं। एक दिन अकेले में जयन्त ने हाथ पकड़ लिया।

"छोड़िए, कोई देख लेगा ?"

"इस सन्नाटे में सिर्फ़ हमीं एक-दूसरे को देख रहे हैं और कोई नहीं।"

"यह न कीजिए, आपको मेरी कसम। मैं पराई औरत हूं।"

"जिसकी वजह से तुम पराई हो सकती थी, वह तुम्हारी जिन्दगी से दूर हो गया। अब तुम अपनी हो, मेरी हो।"

"मगर आप तो पराए हैं?"

"मेरी अभी शादी नहीं हुई, मेरी जिन्दगी में अचानक इतना अपनापन अभी तक तुम्हीं ने दिया है।"

अनारो के प्यासे होंठों की तरफ जयन्त के बहुत प्यासे होंठ लपके और लपक-झपक में अनारो छिटककर दूर जा खड़ी हुई। तभी अम्मीजान ने उसे आवाज दी और वह चली गई।

इसके बाद रोज ही मिलने और दो-एक बातें भी कर लेने के मौके निकाले जाने लगे। धीरे-धीरे गर्मी यहां तक बढ़ने लगी थी कि यह पता ही न चलता था कि शिकार शिकारी का शिकार कर रहा है या शिकारी शिकार का।

ऊपर-नीचे, आगे-पीछे, चौकस नजरों से ताककर जयन्त का हाथ अनारो के कन्धे पर आया और पोले-पोले फिसलते हुए नीचे की ओर बढ़ने लगा।

अनारो छिटकने का बहाना करके भी छिटक न पाई। बनावटी गुस्से से बोली, "सता आप रहे हैं या मैं। हटिए जी, मासूम बेवा की इज्जत से क्यों खिल-वाड़ कर रहे हैं आखिर?"

"मैं दिलोजान से तुम पर निछावर हूं, अनारो। तुम्हारे लिए हर कुर्बानी कर सकता हूं।"

"मुसलमान बन जाएंगे?"

जयन्त झिझका "मैं धर्म मजहब को नहीं मानता। तुम्हें पाकर इन्सान जरूर बन जाऊंगा।" हाथ छाती पर था और अनारो का हाथ उसे प्यार से दबाए हुए।

जीने में सरककर बगलवाली सहनची के अंधेरे गलियारे में दोनों सरक गए।

"आज यहां क्यों आए आप?"

"तुम्हारे लिए, सिर्फ तुम्हारे लिए।"

"अरे यहां शिवाले में महादेव के ऊपर किसी ने गाय का सिर काटकर चढ़ा दिया है। बड़ा वावेला मचा है। छुन्नन खबर लेकर आई है कि बड़ी गर्मागर्मी है। दंगा किसी भी वक्त भड़क सकता है।"

जयन्त चौंका, फिर कामलोभ में फंसता हुआ अनारो को सीने से चिपका लिया, बोला "फिक्र क्यों करती हो जानेमन। दंगा अब हो न पाएगा। मैं आ जो गया हूं।"

भीतर से कुछ-कुछ कांपती रोबीली आवाज आई: "अनारो, कहां गई री! ये झूठे बरतन हटा यहां से।"

कामना की लपटों पर आदेश का पानी पड़ा। अनारो आलिंगनपाश में छटपटाई : "छोड़िए जी, जाने दीजिए।"

"मैं आज तुम्हें पाए बगैर जाऊंगा नहीं।"

"अरे, वेगम साहिबा नाराज़ होंगी। उफ़, आप तो गज़व करते हैं, नहीं मानते।"

"वादा करो कि जल्द ही लौट आओगी। और मुझे यहीं कहीं अकेले में बैठा जाओ। वेगम साहिबा से न कहना कि मैं यहां आया हूं। तुम्हें मेरी कसम, मेरी जान की कसम, मेरा मरा मुंह देखो जो···"

वोलते मुंह पर मेंहदी लगी मुलायम हथेलियों की दवन आई। सहनची से गुज़रते हुए अपनी कोठरी में ले जाकर विठला दिया, कहा : "दरवाज़े भीतर से वन्द रखिएगा। मैं खटका दूं तभी खोलिएगा, समझे?"

चलते-चलाते के चुम्बन ने जयन्त के दिल को थामा भी और वेताव भी कर दिया।

थोड़ी देर वाद पहली वार जीवन में नई स्फूर्ति पाकर जव जयन्त वेगम साहिवा के दीवानखाने में पहुंचा तभी संयोग से वाहर कुछ दूर पर 'हर-हर' महादेव और 'अल्ला-हो-अकवर' का शोर गूंज उठा। वेगम साहिवा वोलीं : "हाय अल्ला, ये कैसा हंगामा है?"

"कुछ नहीं है अम्मीजान, हिन्दू और मुसलमानों को भड़काया गया है। किसी ने गाय का सिर काटकर शिवाले में चढ़ा दिया है।"

"हैं-हैं, अव क्या होगा भैया, यहां तो कभी दंगा-फ़साद नहीं हुआ।"

जयन्त कुछ न कहकर एकाएक उठ खड़ा हुआ और तेज़ी से वाहर चल दिया। आमिना वेगम की आंखें जाते हुए जयन्त को टकटकी वांधकर एकटक देखती रहीं। मुसीवतों की राख से ढंके हुए अंगारे की तरह देदीप्यमान वेगम साहिवा का गोरा, गोल, खूवसूरत चेहरा मुजस्सिम सवालिया जुमले का निशान वन गया था। अनारो दीवानखाने के वाहर दीवार से लगी हुई खड़ी थी। जयन्त को वाहर जाते देखकर तेज़ी से वांहों में भर लिया : "कहां जा रहे हैं? मैं नहीं जाने दूंगी आपको इस दंगे-फ़साद में।"

जयन्त ने प्यार से उसके गाल पर एक थपकी लगाई और वांहें झटककर ज़ीने से नीचे उतरने लगा। वेगम साहिवा के कानों में वाहर से आनेवाली धीमी आवाज़ों की फुसफुसाहट पड़ चुकी थी, दूसरी तरफ़ दीवानखाने के चिक पड़े दरवाज़े से झलकती हुई हवेली की खस्ता चहारदीवारी के वाहर 'हर-हर महादेव' का शोर वगूले-सा उठ रहा था। 'अल्ला-हो-अकवर' के नारे उसके मुकावले में कम थे। दरोगाजी, छक्कन मियां, सभी—ड्योढ़ी-खिड़की वन्द करके सकपकाए-से खड़े थे। वूढ़े दरोगा झुंझलाकर छक्कन से कह रहे थे : "अवे, क्या वक-वक करता

है। गदर के ज़माने में तिलंगों ने हैदरबेग की हवेली का फाटक तोड़ डाला था। अरे-अरे बाबू साहब, बाहर बड़ा हंगामा है। कहां जा रहे हैं?"

"खिड़की खोल दीजिए बड़े मियां।" जयन्त खिड़की में लगे ताले को झिंझोड़ रहा था।

दरोगाजी हुजूर-हुजूर करते ही रह गए, छक्कन मियां ने जल्दी से ताला खोला और जयन्त खिड़की से बाहर दौड़ता हुआ सड़क पर आ गया। खैरू पसारी की दूकान का सामान फेंका और लूटा जा रहा था। नसीबन पानवाली अपने कत्थे-चूने वगैरह की हंडिया हटाकर नीचे रख चुकी थी और दूकान के तख्ते लगाती जाय, और चौंक-चौंक के खैरू की दूकान की तरफ देखती जाय कि कोई इधर तो नहीं आ रहा है। रोती-चीखती जाय : "अरे भैया, मैं तो तुम्हारी गुलाम हूं। सात पुश्तें यहीं कट गई हैं तुम्हारे महल्ले में। ऐ, मैं तो तुम्हारी गाय हूं भैया, गाय। अल्ला खैर करे।"

जयन्त जोश में दौड़ता हुआ खैरू की दूकान की हिन्दू-भीड़ की तरफ़ ललकार कर बोला : "ठहरिए-ठहरिए, ये क्या कर रहे हैं आप लोग। सुनिए, मैं डॉक्टर देशदीपक टण्डन का लड़का हू। यहीं थोड़ी दूर पर गगानारायण को आप जानते हैं न, उनसे पूछ लीजिए, शिनाख्त कर लीजिए। आप नहीं मानेंगे और लूट-मार करेंगे तो आप लोगों के हाथों पहले मेरी ही जान जाएगी, आइए, मैं तैयार हू।" दीवाने जोश में जोर-जोर से चीखता-चिल्लाता जयन्त खैरू की दूकान पर चढ़ गया।

अपने को बजरंगबली के खास लड़ैते समझनेवाले दो-तीन बैरागी लंगोटधारी जो खैरू की दूकान को तबाह कर रहे थे, एकाएक अपने लूट-खसोट के धर्मकार्य में व्याघात पड़ने से उत्तेजित हो उठे।

"मारिए मुझको", एक का डण्डा दोनों हाथों से थामे हुए जयन्त दीवाने जोश में बक रहा था : "मारिए-मारिए। ये पुलिस जो अभी सामने खामोश खड़ी है, पहले आप ही को पकड़ेगी, ये बताए देता हू।"

क्षेत्र के कुछ पढ़े-लिखे नौजवान जो अपनी स्वाभाविक उत्तेजनावश भीड़ में शामिल हुए थे, तब तक 'खबरदार, खबरदार' करते हुए दूकान की तरफ बढ़ आए थे। दूर पर खामोश खड़े चार-पाच कान्स्टेबुलों की कायाओं में भी हरकतें आ चुकी थी। निहत्थे जयन्त का आत्मतेज लठैत क्रोधान्धों के उफनते जोश पर चिल्लू के छींटे की तरह असर कर गया। पढ़ी-लिखी भीड़ के द्वारा धर्मान्ध गुण्डे-लफंगे भी काबू में आए, उधर डॉक्टर देशदीपक के ताऊ गुमानी भैये के बूढ़े समधी गगानारायण की हवेली तक भी खबर पहुची। उनको चटपटहट ने हवेली के असरदार लोगों को प्रभावित किया और मामला जैसे-तैसे काबू में आया।

जयन्त को उनकी हवेली में साग्रह ले आया गया। बस्ती के बड़े-बूढ़ों की भीड़

सहज ही सेठजी के बैठके में भर आई। सबसे पहले बुजुर्गवार सेठजी ही बोले : "भई देखो, ये अच्छी बात नहीं हैगी। किसी का पाप तुमने उस बिचारे गरीब के ऊपर थोप दिया। वो कहावत है कि धोबी से बस न चला गधे पर लाठी पीट दी। हमरी तो गरदन भैया, सरम से झुक गई। महल्ले में आज तक ऐसा कभी नहीं भया।"

दुबले-पतले सफेद बकरदाढ़ी और बड़े बालोंवाले चरसिया बाबा जोश में आकर खड़े हो गए और कहने लगे : "तुमरी तो सरम से झुकी, हमरी तो धरम से झुकी हुई हैगी लाला। तुम कहत हो ऐसा कभी नहीं भया और हम कहत हैं कि ऐसा जुलूम भी कभी नहीं भया। हमरी गऊ की बली देके ससुर भोले बाबा के खोपड़ी पे चढ़ा गए।"

जयन्त बोला : "ये काम पुलिस से करवाया गया है बाबाजी, आप समझते क्यों नहीं हैं। ये हमारे देश में स्वदेशी और बायकाट का जो नया आन्दोलन चला है, उसे दबाने के लिए अंग्रेज़ हमारे अन्दर फूट डलवा रहे हैं।"

"फूट तो बाबू साहब, सदा की रही। तब से मुसलमानों ने इस देस पर हमला किया, सैकड़न-हजारनबार हम हिन्दू मतवालों को काट-काटके लहू की नदियां बहाईं, हमारे पवित्र मन्दिर तोड़े।"

जयन्त अदब से कहनेवाले प्रौढ़ सज्जन की बात को सविनय काटकर बोला : "आपकी बात बिल्कुल ठीक है लालाजी, मगर वह पुराने इतिहास की बात है। और इतिहास पर ही आप अगर जाएं तो मैं आपको प्रमाणों के साथ यह इतिहास भी बता सकता हूं कि हमारे हिन्दुओं के अन्दर भी शिवजी और विष्णुजी के भक्तों में भी बड़ी मार-काट हुई है, दोनों ने एक-दूसरे की मूर्तियां तोड़ी हैं। तब जाकर दोनों के बीच में सन्त-महात्माओं ने हरि-हर को एक बनाया। जैसे अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति हम पूजते हैं वैसे ही हरिहर की मूर्तियां बनीं और पूजी जाने लगीं। आप विद्वानों से पूछ सकते हैं। मैं तो लड़का हूं आपका। लालाजी, ये अंग्रेज हमारे पुराने भेद-भाव को नये सिरे से भड़का रहे हैं। आप समझते हैं, किसी बड़े अंग्रेज हाकिम ने हिन्दुस्तानी कोतवाल को इशारा किया होगा, कोतवाल ने थानेदार को, थानेदार ने पुलिसिए को और पुलिसिए ने किसी कसाई से गाय का सिर कटवा-कर शिवजी पर चढ़ा दिया। इसमें हिन्दू मुसलमान का प्रश्न ही नहीं है, प्रश्न तो हमारी धर्मभावना को मिथ्या रूप से भड़काने का है। आज शिवाले को अपवित्र किया, कल किसी मसजिद को सुअर काटके अपवित्र करवा देंगे···।"

दंगे के घटाटोप बादल लखनऊ से टले तो पास ही के एक कस्बे पर बरस पड़े। वकीलों की आपसी बहस बात का बतंगड़ बन गई।···

"साहब, ये कौन-सा तुक है कि अलग-अलग मजहबों के लिए अलग-अलग रिप्रेजेन्टेशन भी हों। अरे, मजहब अनेक होते हैं मगर नेशन एक होता है।"

"ये आप गलत फरमा रहे हैं जनाबेवाला। हिन्दुओं और मुसलमानों की तह-ज़ीबोतमद्दुन में दिन और रात का फ़र्क है। आप बुतपरस्त कौम के हैं और हम बुतशिकन कौम के। आप पूरब में सिर झुकाते हैं, हम पच्छिम में। हमारा-आपका मेल हो ही नहीं सकता। लार्ड मिण्टो ने सेपरेट एलेक्टोरेट चलाकर बहुत अच्छा किया।"

"जी हां, एक तरफ़ सेपरेट भी और दूसरी तरफ़ कम्बाइन्ड भी। यानी ज़बर्दस्ती हमको रेहन रखके दोहरा ब्याज वसूल करेंगे। हम लोगों से यह बड़ी भारी हुण्डी लिखवाई जा रही है। मुसलमानों की तीन हज़ार सालाना आमदनी पर और ग़ैर-मुसलमानों की तीस लाख सालाना आमदनी पर टैक्स देनेवाले ही वोट दे सकेंगे। वाह्-वाह्-वाह्, क्या इन्साफ़ है।"

हाजी साहब को वर्मा साहब की वाह्-वाह् पर ताव आ गया। हाथ हिलाकर बोले: "ये वाह्-वाह् क्या करते हैं जनाब। मैं कहता हूं, लार्ड मिण्टो ने इन्साफ़ किया है, सौ फीसदी इन्साफ़। आपके हिन्दू साहूकारों ने गदर के बाद हमारे ऊंचे-से-ऊंचे खानदानों का माल लूट-लूटकर उन्हें कंगाल•••"

"हमने क्यों बनाया, साले मुसलमानों की रंडी लौंडों की सोहबत और शराबनोशी ने कंगाल बनाया है सालों को।"

"तो आप गाली क्यों देते हैं जनाब।"

"जो गाली खाने के काम करेगा, वो खाएगा।"

"आप हम मुसलमानों की हतकइज़्ज़ती कर रहे हैं साहब, मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। आप साले धोतीपरशादों की कौम जो कल जब हमारी हुकूमत थी, तो हमारे जूतों के तलवों के तले दबे रहते थे साले हिन्दू। किसी हरामज़ादे का चूकारा भी नहीं सुनाई देता था।"

वर्मा साहब खीझकर कुर्सी से उठे और हाजी साहब की दाढ़ी पकड़कर खींच ली, बोले: "हरामज़ादे कहता है कमीना। तेरा बाप चार-चार आने में जूतें पिया करता था।"

बारहम में हलचल मच गई, लोग-बागों ने छुड़ाया मगर हिन्दू-मुसलमानियत की तोप से छूटा हुआ गुस्से का गोला कस्बे को तबाह कर गया। एक लकड़ीवाले की टाल जला दी गई, ज़िन्दा आदमी और बच्चे उसमें झोंके गए। शुरू में दस-बीस मुसलमान ही लुटे, मगर बाद में कस्बे की हिन्दू बस्ती पर कयामत के बादल बरस पड़े। धनिकों की हवेलियां टूटीं, आगें लगीं, स्त्रियों और धनसम्पदा की लूट भी हुई। पच्चीस हज़ार की आबादीवाला कस्बा भूतों का मनहूस डेरा बन गया।

सरकारी कागज़ों में जयन्त टण्डन का नाम उभरकर आने लगा। डॉक्टर देशदीपक को अपने कुछ अंग्रेज़ शुभचिन्तकों के द्वारा कोई-न-कोई शिकायत मिलती; 'डॉक्टर देशदीपक साहब, अपने बेटे को काबू में कर लीजिए। वर्ना कहीं-न-कहीं हम मजबूर हो जाएंगे।" चीफ सेक्रेटरी डॉक्टर देशदीपक के प्रति बहुत ममतालु थे। उनके इकलौते बेटे के अंग्रेज़ डॉक्टर के द्वारा बिगड़े हुए 'कारबंकल' के आपरेशन को सुधारकर डॉक्टर टण्डन ने उसकी जान बचाई थी। बलरामपुर अस्पताल ट्रस्ट की मीटिंग में अध्यक्षता करने आए थे। मीटिंग के बाद देशदीपक से अकेले में कहा: "आपका बेटा बहुत तेज और ज़हीन है, उसे इंग्लैण्ड भेज दीजिए।"

डॉक्टर साहब बोले: "उसको इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में दाखिल कराने की बात तय कर चुका हूं।"

साहब बोले: "उससे कोई फ़ायदा नहीं होगा, डॉक्टर टण्डन। आपने मेरे बच्चे की जान बचाई है। मैं आपके बच्चों के लिए भी शुभकामना करता हूं। मेरी सलाह मानिए, उसको जल्द-से-जल्द इंग्लैण्ड भिजवाइए, बी० ए० वह वहीं कर लेगा। लन्दन में मेरे भाई रहते हैं। उनके नाम खत लिख दूंगा। वह उसका सारा इन्तज़ाम कर देंगे।"

नाश्ते और भोजन के समय पूरा परिवार एकसाथ बैठता था। टण्डन परिवार में यह परम्परा स्वर्गीय रायसाहब के समय में ही आरम्भ हो चुकी थी। किन्तु मां से यह मालूम होने पर कि पिताजी जयन्त को शीघ्र-से-शीघ्र इंग्लैण्ड भेजना चाहते हैं, जयन्त प्रायः उनसे कन्ने काटता था। एक तो अनारो की गदराई जवानी की सोहबत का नशा उस पर जादुई असर डाल रहा था। दूसरे, व्योमेश आदि अपने बंगाली मित्रों की संगत और नये वैचारिक जोश में वह करीब-करीब पूरे मन से अंग्रेज़ों से घृणा करने लगा था। वह अपनी शस्यश्यामला भारत मां की भक्ति में अंग्रेज़ों से घृणा करता था। उसने मां से कहा था: "पिताजी यों तो देशभक्त हैं पर हैं तो आखिर अंग्रेज़परस्त रायसाहब के बेटे। मैं अब पढ़ाई-बढ़ाई के चक्कर में नहीं पड़ूंगा। मैंने अब तय कर लिया है कि हंसो की स्वदेशी इण्डस्ट्री को जमाकर ही दिखाऊंगा। सआदतगंजवाली बेगम साहिबा के चिकनवाले कारखाने को जमाकर मुझमें अब एक नया आत्मविश्वास पैदा हो गया है। वह भी मुझे बहुत चाहती हैं। बार-बार कहती हैं – बेटा, तू मुझे मत छोड़ना। तू ही मेरा सहारा है। आप चाहें तो चाची की मार्फत उनसे मिलकर पूछ भी सकती हैं।"

आमिना बेगम के कारखाने के बहाने इसका दिन का समय अधिकतर सआदतगंज में और या फिर हंसो की अमीनाबादवाली दूकान पर अथवा आशू भैये की सोहबत में बीतता। खाना अधिकतर चौक में, कभी-कभी अपनी नई अम्मीजान के यहां सआदतगंज में और नादिर-शादिर महज ढैया छूने के लिए ही कभी-कभी घर में भी खा लिया करता था। अनारो उसके जादू में बंधी थी और

वह अनारो के। रोज ही वह आनेवाले खतरे की याद दिलाकर उससे बचने की कोशिश करती पर जो होना था, सो होकर के ही रहा। एक दिन अनारो ने उससे कहा : "जिस मुसीबत से मैं डरती थी वह अब आ गई है। मैं क्या करूं ?"

"अरे, ये तुम्हारा महज वहम है। कुछ भी नहीं होगा यार।" अनारो की पीठ पर बांह रखकर उसे अपने से चिपटाते हुए जयन्त बोला।

अनारो ने हाथ झटक दिया और बोली : "आप तो बस ऐसे ही कहके छूट जाएंगे। मेरा क्या होगा ?"

"होगा क्या, तुमसे शादी कर लूंगा।"

"नामुमकिन को मुमकिन नहीं बनाया जा सकता है। हिन्दू-मुसलमान में न शादियां हुई हैं और न हो सकती हैं।"

"मैं करके दिखा दूंगा।"

"क्या आप कलमा पढ़ने को राजी हो जाएंगे ? अपना मजहब छोड़ देंगे ?"

जयन्त को झटका लगा, उसकी चिन्तन गति लड़खड़ाई, फिर कहा : "शादी और मजहब का भला क्या रिश्ता, मैं तुमसे कोर्ट मैरिज करूंगा।"

इससे अनारो की दिलजमई न हुई। दो-चार दिन बाद फिर वही। अनारो बोली : "लगता है, अब मेरे जहर खाने या फांसी लगाने के दिन बहुत नजदीक आ गए हैं ?"

जयन्त गम्भीर हुआ, कहा : "सुनो, मैं किसी अंग्रेज नर्स की तलाश करता हूं। तुम किसी किस्म की झूठी-मूठी बीमारी का बहाना करो। मैं अम्मीजान से इलाज के बहाने तुम्हें उसके पास ले जाऊंगा।"

अनारो तेज हुई : "यह नहीं होगा। अजाब पर अजाब नहीं करूंगी। मैं अपनी जान दे सकती हूं मगर अपनी आनेवाली सन्तान की जान जाया नहीं होने दूंगी।"

जयन्त अब सआदतगंज की तरफ जाने से कन्नी काटने लगा। आमिना बेगम ने दो बार दारोगाजी को जयन्त की तलाश में डॉक्टर साहब की कोठी पर भी भेजा, पर वह न मिला। एक बार आग़ू मियां ने भी उससे कहा : "अमां, हमारी मुसल्ली मौसी के यहां तुम नहीं गए इधर ?"

"हां यार, जाने का मौका नहीं मिला, असल में मैं एक मिस्त्री से भाप से चलनेवाला करघा बनवाने की तरकीब में लगा हूं।"

यों बहानों में नये-नये बहानों की ईजादें तो हो रही थीं मगर उसे कोई राह समझ में नहीं आ रही थी। एक दिन रात में हसो ने उसके कमरे का दरवाजा खटखटाया—"कौन ?"

"मैं हूं भैये !" जयन्त ने दरवाजा खोल दिया। "आप ये क्या कर रहे हैं भैये ?"

"कर क्या रहा हूं, जो करता हूं वह तुम लोग सब जानते ही हो।"

"पिताजी बेहद नाराज़ हैं भैये, आज माताजी से कह रहे थे कि मुझे रायसाहब, रायबहादुरी वगैरह का लोभ नहीं, लेकिन अंग्रेजी हुकूमत से बिगाड़ नहीं करूंगा। दो में से एक ही काम कर सकता हूं, या तो खुद घर छोड़कर कहीं चला जाऊं और या फिर तुम्हारे बड़े बेटे को अपने घर से निकाल दूं।"

जयन्त ताव खा गया, बोला: "वह क्यों निकलें, मैं घर छोड़कर चला जाऊंगा। मैंने देश के लिए फकीरी ले ली है और फकीर होकर दिखला भी सकता हूं।"

"इस बेकार के गुस्से से काम न चलेगा भैये, आप माताजी और पिताजी दोनों के ही नेचर जानते हैं। आपके हठ से घर का बहुत अमंगल होगा, सोच लीजिए। आप बड़े हैं, ज़्यादा क्या कहूं।"

उस दिन रात-भर नींद नहीं आई। एक तरफ़ अनारो का भय, दूसरी तरफ़ माता और पिता का। क्या हर्ज है, कल वह घर छोड़ दे, कलमा पढ़ ले और अनारो से शादी कर ले···यह विचार निश्चय की गांठ बना और गांठ फिर खुल गई। यह ठीक है कि अनारो खूबसूरत है, प्यारी है, मगर उसके साथ सारा जीवन बिताना भला कैसे सम्भव होगा। बेवकूफ औरत, बच्चा पाने की ज़िद में ये बेवकूफियां! इस बेवकूफ के साथ ज़िन्दगी कैसे बसर होगी। बेवकूफ भी है और ज़िद्दी भी, उल्लू की पट्टी कहीं की, मरेगी। मर जाय कमबख्त, मगर हंगामा कितना होगा। हिन्दू-मुस्लिम समस्या के लिए एक बहाना बन जाऊंगा। कितनी बदनामी होगी मेरी। सारे उद्देश्य, अब तक का सारा चिन्तन, पढ़ाई, लेक्चरबाज़ी ये सब झूठी साबित होंगी। न इधर का रहा, न उधर का। भयावने भविष्य और अनिश्चय रूपी चक्की के दो पाटों में दबकर जयन्त सारी रात छटपटाता रहा।

सुबह अर्से के बाद वह माता-पिता और छोटे भाई के साथ नाश्ते की मेज़ पर बैठा था। डॉक्टर साहब उसे देखकर सन्तुष्ट हुए, पर बोले कुछ नहीं। माताजी बहुत दिनों बाद बेटे को नाश्ते के समय देखकर रसोईघर में महराज से आलू के परांठे बनवाने के लिए दौड़ी-दौड़ी गई। जयन्त ने कहा: "पिताजी, मैं इंग्लैण्ड जाने के लिए तैयार हूं। आप मुझे कब भेजेंगे?"

मां उछाह-भरी बड़े बेटे की कुर्सी तक आईं, बड़े भाव से उसके सिर पर हाथ फेरा, फिर अपना गाल बेटे के सिर पर टिकाकर उसकी बाह दबाते हुए बोलीं : "मुझे यही आशा थी बेटे ! मुझे आनन्द हुआ, बहोत-वहोत आनन्द हुआ ।"

"लेकिन मेरे इंग्लैण्ड जाने की बात अभी फैलाई न जाय । मैं नहीं चाहता कि इस बात का शोर हो ।"

"हांऽऽ, यह तो मैं भी नहीं चाहूंगा भई, शोर होना तो मुझे तब अच्छा लगेगा जब मिस्टर जयन्त टण्डन बार एट लॉ होकर आएंगे ।"

दस दिन के बाद कौशल्याजी, डॉक्टर टण्डन और छोटे भाई के साथ जयन्त जब बम्बई के लिए रवाना हुआ तभी चौक की बिरादरी में एकाएक हुल्लड़ मचा कि रायसाहब तनकुन का पोता बालिस्टरी पढ़ने के लिए विलैत गया ।

यह खबर सआदतगंज तक तब पहुंची जब जयन्त बम्बई पहुंच चुका था ।

बात कारखाने में काम करनेवाली सुगनी बुआ के मुख से ही प्रसंगवश निकली थी जो जयन्त की चौकवाली चाची के मायके में लाला गयानारायण के यहां रहती थी । अनारो पास ही बैठी हुई सुई से फूल काढ़ रही थी । खबर सुनते ही पत्थर हो गई । चक्कर आया, वहीं-की-वहीं ढुलक गई । कारखाने में बड़ी हाय-हाय मची, पखा झलो, पानी के छींटे दो, उठाओ-उठाओ, वगैरह के कोहराम से हंगामा-सा मच गया । बेगम माहिया तक खबर पहुंची ।

अनारो अपनी कोठरी में बिस्तर पर लिटाई गई । अम्मीजान की घबराहट का अन्त नहीं था । हकीम साहब को बुलवाने के लिए दरोगाजी दौड़ाए गए । धीरे-धीरे अनारो ने होश सम्हाला । "कुछ नहीं, कुछ नहीं" कहते हुए अनारो ने उठने की कोशिश की मगर शक्ति जैसे शरीर से खिंच गई थी ।

यह भीड़-भाड़, घबराहट-भरी मिजाजपुर्सिया उसे बिल्कुल अच्छी नहीं लग रही थी । मन की आंखों में केवल एक मूर्ति समाई थी । 'कितना प्यार किया, वादे किए, कितना धोखा खाया—अब मेरा क्या होगा ?···कहा था—मैं तुमसे शादी कर लूंगा और अब विलायत जा बसे । काफिर, हकीकत में काफिर ।' सोच की तेज भंवर में होश फिर डूब गया । उसके दोबारा बेहोश हो जाने से आमिना बेगम बहुत चिन्तित हुईं । बरसों से इस बड़ी भारी खस्तादम हवेली में वही अकेली रहती हैं । स्वर्गीय बेटे की बेवा बीवी पति के देहान्त के बाद पिछले पांच वर्षों से अब अपने पिता के घर मिर्जापुर में रहती है । वह वहां लाख के धंधे के लखपति व्यापारी हो गए हैं । पुत्र वधू अपने पति के जीवनकाल में ही उनसे यह वचन ले चुकी थी कि उसे अंग्रेजी पढ़ाएंगे, परन्तु आमिना बेगम इसके सख्त खिलाफ थीं । सास-बहू के बीच पटरी न बैठ पाई और अम्मीजान अकेली हो गईं । अनारो ऐसे ही समय उनके पास आई थी । उन्होंने पतोहू को दिया जानेवाला प्यार अब अनारो को देना शुरू किया । अनारो बहुत लायक और फर्माबरदार भी थी । बेगम माहिया की

रुचि के अनुरूप ही कुरानशरीफ पढ़ना, रोज़े नमाज़ की अदायगी में बहुत चुस्त और चिकन कसीदाकारी वगैरह कलाओं में बेगम साहिबा की प्रियतम शिष्या।

हकीम साहब देख गए, अनारो की नब्ज वगैरह सब ठीक थी। कह गए कि इसके दिल को कोई गहरा सदमा पहुंचा है। ताकत के लिए दवा की पुड़िया भी दे गए। अम्मीजान को अब यह फिक्र लगी कि आखिर इसे किस बात से सदमा पहुंचा।

अनारो कुछ न बतलाए, बहुत पूछो तो रोने लगे, दो-तीन रोज़ में बार-बार प्यार से पूछे जाने पर अनारो अम्मीजान के कलेजे से लगकर फूट-फूटकर रो पड़ी। धीरे-धीरे राज़ खुला। अम्मीजान गुस्से के मारे बावली हो उठीं। पचासों बातें सुनाईं, तब भी जी न भरा तो पालकी मंगवाई, चौक गईं। जयन्त के चाचा लाला काशीनाथ की पत्नी से कहा : "तुम्हारा भतीजा कहां है ?"

"क्यों। वह तो पांच-छः दिन हुए, विलैत गया, बालिस्टरी पढ़ने के लिए।"

"मैंने तो समझा था कि इतने बड़े खानदान का लड़का, कभी ऐसा कमीना न होगा। मगर हिन्दू आखिर हिन्दू है, काफिर कमीना !"

बेगम साहिबा की क्रोध-भरी बड़बड़ाहट के बवंडर आशुतोष की मां के समझाने से रुके। तब उन्हें असलियत मालूम हुई। आशू की बहुआ भी सन्न रह गईं। बचपन की सहेली को खींचकर कलेजे से चिपकाया और कहा : "घबराओ मत, मैं तुम्हें अभी-के-अभी जिठानीजी के पास लिये चलती हूं। वो बड़ी इन्साफपसन्द औरत हैंगी, हमारे जेठ डॉक्टर साहब भी बड़े शरीफ आदमी हैंगे, कोई-न-कोई रस्ता निकल ही आएगा।"

बेगम साहिबा की पालकी पर ही दोनों गोल दरवाज़े की सड़क पर आईं, पालकी सआदतगंज लौटा दी गई। और किराये की बग्घी पर नौकर के साथ ही दोनों चम्पक मैन्शन जा पहुंचीं। डॉक्टर साहब व कौशल्या देवी एक ही दिन पहले बम्बई से लौटे थे। कौशल्या देवी को सारा काण्ड बतलाया गया, सुनकर वह सन्न हो गईं। 'यह लड़का क्या करेगा ? पहले प्रेमकिशोरी से छेड़छाड़ हुई और अब यह कालिख पोतकर विलायत गया है। वहां न जाने क्या-क्या करेगा। कहीं बाहर परदेस में कोई बदनामी की बात कर आया तो डॉक्टर साहब को कितना गहरा धक्का लगेगा।' यह सोचकर कौशल्या देवी का मन बहुत घबरा उठा, देवरानी और आमिना बेगम की ओर देखकर बोलीं : "क्या कहूं। ये लड़का तो मुंह पे कालिख पोतनेवाला काम कर गया। आप थोड़ी देर इन्तज़ार कीजिए बेगम साहिबा। डॉक्टर साहब अब अस्पताल से आते ही होंगे।" कहकर एकाएक बहुत भावुक हो गईं और आमिना बेगम के पैरों के आगे अपना सिर झुकाकर कहा : "आपसे किस मुंह से भला माफ़ी मांगू। लेकिन इज्ज़त बचाने का अब एक ही उपाय है। डॉक्टर साहब आ जाएं तो बात करूं।"

आने पर डॉक्टर देशदीपक टण्डन ने जब यह सुना तो एक बार उनका गौर वर्ण क्रोध से लाल हो गया, फिर शर्म से स्याह। वे सिर पर हाथ रखकर बड़ी देर तक चुप बैठे रहे। "ये लड़का मेरे मुंह पर कालिख लगाएगा। इंग्लैण्ड में जाने क्या करेगा। कुशलो, तुम बेगम साहिबा से कह दो कि अगर वे चाहें तो जयन्त के लौट आने पर मैं उसके झूठे वादे को दोनों की शादी करवाके सच कर दिखलाऊंगा··· या दूसरा उपाय जिसका मैं मन से समर्थन नहीं करूंगा यह है कि किसी कुशल नर्स से मदद ली जाय · "

डॉक्टर देशदीपक और कौशल्या के व्यवहार से बेगम सन्तुष्ट हुईं। फिर सोचकर कहा : "मैं अनारो से सलाह कर लूं तब आपको जवाब दूंगी।"

डॉक्टर साहब ने अपनी मोटरकार पर ही दोनों को चौक और सआदतगंज भेज दिया। ड्राइवर को पहले बेगम साहिबा को छोड़कर फिर चौक में लाला काशीनाथ की हवेली तक भाई की पत्नी को छोड़ने का आदेश दिया।

सआदतगंज में अपनी हवेली पर उतरते हुए बेगम साहिबा ने अपनी मनेली बहन से कहा · "कित्तो, अपने इस मोटर चलानेवाले से कह दे कि मैं लड़की का जवाब पूछकर अभी उसके फैसले को लिखवाकर भेजती हूं। तुम शायद अपने मैके में तो छिन घड़ी वास्ते जाओगी ही।"

अनारो ने कहा "मैं अब उस धोखेबाज का इन्तज़ार नहीं करूंगी अम्मीजान!"

"भई लड़के ने धोखा दिया भी हो, आला खानदान का है, उसके मां-बाप पर यकीन कर सकती हूं।"

"क्या वो इस्लाम कबूल फर्माएंगे ?"

आमिना बेगम ठिठक गईं, फिर कहा "हां, यह तो मैं उस वक्त के उलझे दिमाग में सोच ही न पाई। बात के जज़्बे में बहक गई। अगर वह लड़का मुसलमान न बना तो मैं तुझे भी शुद्ध करके हिन्दू हरगिज़ न बनने दूंगी।"

"आप मेरा दूसरा रास्ता ही करवा दीजिए।"

"अरे बहुत खतरनाक खेल है बीबी, मेरा तो कलेजा कांप रहा है।"

"कुछ भी हो अम्मी, यही एक रास्ता है। ये कठिन जान जिस्म से आसानी से न निकल पाएगी, अम्मी। यही करवा दीजिए।"

ड्राइवर के हाथ आमिना बेगम का मोहरबन्द खत डॉक्टर टण्डन को मिला— "दोनों की शादी करा देने की आपकी बात सही है और मुनासिब भी। मगर क्या इसके लिए आप अपने बेटे को मज़हबेइस्लाम कबूल फर्माने की इजाज़त दीजिएगा? अगर यह न कर सकें तो मेरी और आपकी इज़्ज़त बचाने के लिए एक ही रास्ता है। बाइज़्ज़त पूरी हिफ़ाज़त के साथ वही करवा दीजिए।—धोखे की मारी दुखियारी।" खत पर आमिना बेगम ने अपने दस्तखत नहीं किए थे।

अम्माजी को किचन में न देखकर शकुन ने पिताजी के कमरे का दरवाज़ा खुला देखा तो उधर चली गई। शारदाजी अभी सुमन्तजी का सिर थपथपा ही रही थीं कि आंखें खुलते ही सुमन्तजी के सामने पौत्र और पुत्रवधू की छवि आ गई। अन्तर की दिव्यानुभूति का अंशुमान बाहर की आनन्दानुभूतिवत् अंशुमान को देखकर सुमन्तजी का मन सहज ही खिल गया। "आओ प्रभु," कहकर उन्होंने दोनों हाथ बढ़ा दिए, शारदाजी भी बहू और पोते को देखकर खिल उठीं : "अरे राजा भैया आ गया, नन्हा क्या कर रहा है।"

अंशू ने दादी को देखकर उनके पास जाने के लिए हाथ बढ़ाए। दादी ने दादा को दूध का गिलास दिया और बहू से पोते को अपनी गोद में ले लिया। सुमन्तजी बहू से बोले : "नन्हा अभी सो रहा है न? आज उसने लगभग रात-भर काम किया है, सोने दो। तुम किसी चिन्ता से नीचे आई हो शकुन?"

शकुन्तला अब जान गई है कि उसके ससुर अपनी ध्यान-शक्ति से कभी-कभी दूसरों के मनों में चल रही बातों के उत्तर दिया करते हैं, इसलिए बात सुनके चौंकी तो नहीं, फिर भी हर बार की तरह मन में अचरज-भरा सवालिया निशान अवश्य उठ आया। अदब से बोली : "जी हां, अभी-अभी अस्पताल से बन्ने भाई का फ़ोन आया, शब्बो भाभी के लड़का हुआ है।"

शारदाजी सुनकर खिल उठीं : "अच्छा, शब्बो कैसी है?"

"उसे बुखार हो आया है अम्माजी, बन्ने भाई कह रहे थे उनके पिताजी को खबर हो जाती क्योंकि वह इस समय भाभी का सिरहाना छोड़ना नहीं चाहते। बुखार शायद तेज़ है।"

दूध-बादाम का घूंट लेकर सुमन्तजी ने शान्त स्वर में कहा : "वह अपनी पत्नी का सिरहाना छोड़ नहीं सकता, यह अपने थके सोए पति को जगा नहीं सकती। शारदा, तुम्हीं अपने मुंहबोले भाई के यहां चली जाओ। कुछ मिठाई-विठाई, फल-बल तुम्हारे फ्रिज में रखा हो, वह शब्बो के वास्ते तो ले ही जाओगी। शकुन बिटिया, देखो, बाहर अखबार आ गए होंगे, मुझे दे जाओ, और ऐसा करो बेटी कि हेमू को बुला लाओ। उससे कहना अपनी अम्मा को जावेद के यहां और अस्पताल ले जाएं।"

"और इसके नये कपड़े ले आ बेटे, मैं ही पिन्हा दूंगी। इसे साथ ले जाऊंगी, अब घण्टे-दो घण्टे तो ये खेलेगा ही। एक बोतल दूध भी इसका बना लाना, डोलची मैं साथ ले जाऊंगी।"

पति-पत्नी और पोता साथ रहे। उसी दिन शाम को युधिष्ठिर जावेद को अस्पताल से लेकर उसे घर छोड़ने के लिए ज़ा रहा था। शबाना का प्रसूतिज्वर दिन में तीव्र हो गया था। सरशाम में बकने लगी थी। शारदा अपने मुंहबोले भाई मुश्ताक को बधाई देकर कस्तूरबा अस्पताल गई। शबाना का ज्वर तेज़ देख-

कर उन्होंने अपना कर्तव्य निश्चित कर लिया। अंशू को हेमू के साथ गाड़ी पर घर भेजकर आप वहीं रह गईं। जावेद अपनी पत्रकारिता का प्रभाव-पुछल्ला लगाकर बड़ी डॉक्टर के घर पहुंचा। सब हाल कहा, उनसे अस्पताल में ड्यूटी पर तैनात छोटी डॉक्टर की बात करवाई, आदेश दिलवाए। औषधि में परिवर्तन होने के बावजूद जब ज्वर में परिवर्तन न हुआ तो दूसरी बार बड़ी डॉक्टर के घर जाकर उन्हें अपने साथ अस्पताल घेर लाया। पत्नी के डिलेरियम से वह स्वयं घबरा गया था। घबराहट में फिर फोन का सहारा : हलो टण्डन" यैस"'बच्चा तो खैर ठीक है, मगर शब्बो डिलेरियस हो रही है, यार, उसका टैम्पेचर हण्ड्रेड फाइव है। तू भइया, मेरे पास आ जा। कर तो साले कुछ नहीं सकेगा मगर मुझे तसल्ली रहेगी। और सुन टण्डन, दफ्तर भी फ़ोन कर देना यार, मैं न आ सकूंगा और दो पैकेट सिगरेट भी ले आना भला।"

फोन पर युधिष्ठिर से अपना जी हल्का करके फिर प्राइवेट रूम नम्बर वन सेवेन में !" वन, सेवेन, न्यूमेरालोजी के हिसाब से आठ मेरा लकी नम्बर है, शब्बो डार्लिंग बच जाएगी।

मन की गर्म हवाओं को बहलने-बहलाने से तमल्लियों की तरावटें दे-देकर जावेद ने सवेरे से अब तक अपने मन को सम्हाला था। वह बेटे का बाप हुआ है, मगर जिसकी बदौलत उसे यह रुतबा हासिल हुआ है उसे अगर कुछ हो गया तो फिर मेरी खुशी क्या रहेगी।

दिन में युधिष्ठिर जब आया तो शकुन भी उसके साथ थी। तब तक शबाना के सरसाम पर काबू पाया जा चुका था और बुखार भी रफ्ता-रफ्ता उतार पर आ रहा था। शकुन ने शारदाजी से कहा : मैं आज कॉलेज से आधे दिन की छुट्टी ले आई हूं अम्माजी, आप इनके साथ अब घर जाइए। बन्ने भाई, आप भी इनके साथ जाइए, यहां मैं सब सम्हाल लूंगी। यू डोन्ट वरी।"

शाम तक दोनों दोस्त साथ-साथ रहे।

तेईस

पिताजी अपने प्रातःकालीन ध्यान से छुट्टी पाकर आज स्वयं ही रसोईघर में आ पहुंचे। सयोग से युधिष्ठिर भी रसोई के सामनेवाले सकरे बरामदे में अंशू को गेंद खिलाता मिला। शारदादेवी पति के लिए गिलासों में दूध उछालकर ठण्डा कर रही हैं, उन्हें देखकर बोलीं : "अरे आप क्यों आ गए, मैं तो आ ही रही थी।"

सुमन्तजी मुस्कुराए और बोले : "मैं जानता था कि आज तुम घर-गृहस्थी में काफी फंसी हो। बाहर निकलकर इधर आते हुए मैंने नौकरानी को भी कहीं जाते हुए देखा, सोचा, मैं ही चला चलूं।"

युधिष्ठिर माता-पिता की बातें होते देखकर तुरन्त ही दौड़कर बगल के कमरे से कुर्सी उठा ले आया। जब से फ्रैक्चर हुआ तब से सुमन्तजी अधिक देर खड़े नहीं रह पाते थे इसलिए पुत्र की तत्परता देखकर खुश हुए। शारदा देवी दूध का गिलास लेकर रसोई से बाहर आती हुई बोलीं : "असल में मुझे भी जल्दी है भाई। मैं जब अस्पताल पहुंचूंगी तभी बहू घर आ सकेगी। राम जाने, आज भी उसने छुट्टी ली है या नहीं।"

"मेरी समझ में तो अब तुम लोगों को अधिक दौड़-भाग करने की आवश्यकता नहीं। मुश्ताक साहब की नौकरानी तो वहां हरदम रहती ही है।"

"मैंने तो अम्मा से कल रात ही में आकर कह दिया था कि मामू के यहां खाने-पीने का प्रबन्ध करनेवाली भी एक बुढ़िया मौजूद है।"

दूध पीते हुए सुमन्तजी बोले : "क्या उन्होंने दो नौकरानियां रख ली हैं? अंशू बेटे, मेरे पास आ, आ जा।"

"दो नौकरानियां तो नहीं, है तो वही एक चड्ढा गुलखैरू की अम्मा। लेकिन उनकी एक पड़ोसिन ने यह काम सम्हाल लिया है।"

अंशुमान डुग-डुग डग भरता हुआ दादी के पास आया। शारदाजी ने उसे गोद में उठा लिया, युधिष्ठिर कहता रहा : "उसका मकान भी अब इनकी हवेली में जुड़नेवाला है बाबूजी।"

"क्या खरीद लिया है?"

"नहीं, अभी खरीदा तो नहीं, असल में वो नन्हो बुआ इनके पड़ोसी किसी जरीवाले की प्रेमिका है। उसने अपने ऊपर का कमरा जावेद को दे रखा है। इनकी हवेली से उस कमरे में जाने के लिए दरवाजा भी फूट चुका है। अब वहीं उनकी स्टडी भी बन गई है।"

दूध पीते हुए पिता बोले : "परन्तु वह मकान इनके पास टिक नहीं पाएगा।"

"क्यों?"

"क्यों का उत्तर अब क्या दूं?·लेकिन वह टिकेगा नहीं, यह बताए देता हूं। और इनके भाई भी मुझे लगता है कि अपने पोते का मुंह देखने के लिए ही जीवित हैं। अभी पिछली बार जब यहां आए थे तो मैंने अनुभव किया कि उनके चेहरे से जीवन का अस्तित्व अब लगभग लुप्त हो गया है।"

अंशुमान दादी के कान की मोतियों-जुड़ी तरकी बार-बार खींच रहा था। पोते का हाथ हटाते हुए शारदाजी बोलीं : "अरे भई, जब तक हैं, खुशी से रहें। मैं तो यह जानती हूं कि 42 में इन लोगों ने पिताजी की बहुत सेवा की।"

चन्दो नौकरानी साग-भाजी का झोला लेकर उसी समय आई। उसे देखकर शारदाजी बोली : "चन्दो, अंशू को सम्हाल। मुझे अस्पताल जाना है।"

दूध का खाली गिलास धरती पर रखने के लिए झुके ही थे कि युधिष्ठिर ने उनके हाथ से ले लिया और उसे दीवार पर रखते हुए बोला : "बाबूजी, बाबा के सम्बन्ध में मुझे आपसे कुछ जानकारी लेनी है। कमरे में चलेंगे या यहीं बैठेंगे।"

"अब यहां बैठकर क्या करूंगा, तुम्हारी अम्मा तो अब जा रही हैं।" कहकर वह कुर्सी से उठ खड़े हुए। बेटे ने सहारा दिया।

"इसकी जरूरत नहीं, तुम कुर्सी भीतर ले आओ और चन्दो बिटिया, अंशू को नहला-धुला लो तो एक बार मेरे पास भी ले आना।"

बैठक के कमरे में आकर अपनी आरामकुर्सी पर आसीन होने के बाद उन्होंने युधिष्ठिर से कहा : "हां, क्या पूछना चाहते हो?"

"बात नाजुक है बाबूजी। आप चाहें तो इन्कार भी कर सकते हैं।"

"पूछो-पूछो।"

"बाबा और दद्दा के आपसी रिलेशन्स कैसे थे?"

"अगर बुरे नहीं तो अच्छे भी नहीं थे। बस इसी से समझ लो कि उनकी एक सन्तान केवल मैं ही हुआ। माताजी ब्रह्मचारिणी का जीवन बिताती थीं, बड़े ही धार्मिक स्वभाव की थीं।"

"धार्मिक माने किस धर्म की? क्योंकि आपके दादा-दादी तो आर्य-समाजी···"

"नहीं, इस मामले में मेरी माताजी, मेरी बड़ी माताजी यानी तुम्हारी दादी से बिल्कुल अलग थीं, शुद्ध सनातनधर्मी। पूजा-पाठ, बरत-बरसूले सब करती थीं—बट शी डाइड वेरी अर्ली। पिताजी सन् 12 में इंग्लैंड से आए थे, वह बम्बई से लखनऊ पहुंचे भी न थे कि बाबा का अचानक स्वर्गवास हो गया। उसके बाद मेरी दादी अधिक वर्ष नहीं जी सकी थीं। मैंने अपने दादा को कभी नहीं देखा, खाली माताजी से सुना-भर था। किन्तु दादी को देखा था।"

कुछ झिझक के साथ युधिष्ठिर ने नया प्रश्न किया : "कार्लटन के सुलेमान से मैंने बाबा के नाम लिखे लेडी एम०···"

"हां, वह पत्र तुमने मुझे दिखाए थे मगर मैं यह नहीं कह सकता कि वे महिला कौन थीं। लेकिन उसके पत्र से यह भी जाहिर होता है कि बाबा के कुछ और लव अफ़ेयर्स हुए थे।"

सुमन्तजी ने सिर झुका लिया, कुछ क्षण चुप रहकर बोले "हां, मेरे पिताजी पूर्णिमा के चन्द्र की तरह उज्ज्वल और आकर्षक थे लेकिन उनके चरित्र में कलंक का दाग तो लगा ही हुआ है।"

"जग्गो बाबा ने उनके इंग्लैण्ड जाने से पहले यहां के दो अर्ली अफ़ेयर्स मुझे

बताए थे।"

"हां, अपने माता-पिता के अति आदर्शवाद की यह चारित्रिक प्रतिक्रिया उन पर अवश्य हुई थी।"

"उनकी इंग्लैण्ड की डायरियों में आपने देखा होगा कि कई नामों पर स्याही फिरी हुई है, खाली वही नाम और घटनाएं उजागर हैं जो उनके राजनीतिक विचारों से मेल खाती थीं।"

"मेरा अनुमान है कि अपने बाद की चढ़ती-बढ़ती गुडविल को देखकर उन्होंने अपने कलंकों के दाग मिटाने की कोशिश की। लेकिन इससे मैं इन्कार नहीं करूंगा कि वह सुन्दरी स्त्रियों के प्रति मन से काफ़ी हद तक कमज़ोर थे।"

"लेकिन सन् 2 में जब वह अण्डरग्राउण्ड हो गए थे तब तो उनका कोई लव अफ़ेयर हुआ नहीं। मुश्ताक मामू से मैंने पूछा था लेकिन उन्होंने बतलाया कि उनका कैरेक्टर बेदाग था।"

"हां, बाहरवालों के सामने मेरे पिताजी इस मामले में बहुत चौकन्ने रहते थे, नन्हा! तुम एक काम करो बेटे, यहां मालरोड पर जो कृष्णचन्द्र खन्ना रहते हैं न···"

"जी हां, जी हां, जानता हूं।"

"उनकी माता अभी जीवित हैं, उनकी उमर भी अब शायद 89-90 वर्ष के लगभग ही है। अपने समय की मशहूर फ्रीडम-फाइटर थीं। वह जब कभी हमारे घर आती थीं तो मेरी माताजी गुस्से से लाल हो जाती थीं। उनके सम्बन्ध में मेरी अपनी भी कुछ शंकाएं हैं बेटे! जिन दिनों मैं पी० डब्ल्यू० डी० का मन्त्री था, वह मेरे पास दो-तीन बार एक नजूल की जमीन के सिलसिले में आई थीं—आई हैव माई डाउट्स एबाउट हर। कुछ तो अपनी माताजी के क्रोधवाले पुराने मूड्स को देखकर और कुछ इस बात से भी कि पिताजी की शहादत के बाद ही उन्होंने विधवा का वेश धारण कर लिया, जबकि उनके हज़बैण्ड की मृत्यु जब हुई थी तब उन्होंने लोगों के कहने पर भी अपना सुहागिन का रूप ही कायम रखा। बड़ी हठीली महिला हैं। और तुम एक बार अगर गौर करोगे तो यह भी भांप लोगे कि मेरा और कृष्णा का चेहरा बहुत मेल खाता है। बस, इससे अधिक मैं कुछ नहीं बतलाऊंगा। चरित्रदोष होने के बाद भी वह मेरे पिता थे और खरे देशसेवी और सब तरह से बड़े विचारवान तथा मनीषी थे।"

पिछली रात जावेद से भी उसकी कुछ बातें हुई थीं। डायरी में काली स्याही पोतकर छिपाए हुए नामों पर जावेद ने भी कहा था: 'वैसे तो मेरे अब्बूजी उनके कैरेक्टर की बड़ी तारीफ़ करते हैं। कम-से-कम हमारे यहां उनकी अण्डरग्राउण्ड ज़िन्दगी में कोई भी बात ऐसी नहीं दिखलाई पड़ी जो उनकी बदनामी का बायस बन सके। बी० पी० भी इस मामले में कतई चुप हैं, मगर इन कटे हुए नामों से

मुझे भी कुछ शक होता है। अरे यार, रवीन्द्रनाथ टैगोर के दादा और क्वीन विक्टोरिया के भी लव अफ़ेयर्स बताए जाते हैं। यहां तक सुना है कि मलिका को उनसे एक बेटी भी हुई थी। तो तुम्हारे दादा क्या किसी से कम थे।' सोचते हुए युधिष्ठिर ने यह निश्चय कर लिया कि वह सुहागिन होते हुए भी बाबा के देहान्त के बाद विधवा वेष धारण करनेवाली बुढ़िया से मिलेगा। बाबूजी ने अपनी सारी शराफ़त और श्रद्धा के बावजूद यह सुराग तो दे ही दिया है कि कृष्णचन्द्र खन्ना का चेहरा उनसे बहुत मिलता-जुलता है।

दफ्तर पहुंचते ही उसने देखा कि मेज़ों पर कलमों से ज़्यादह ज़बानों का ज़ोर है। विनोद पाण्डेय ज़ोर-ज़ोर से कह रहे थे : "लो, सालों ने जनरल वैद्य को मार डाला।"

"हैं, ये तो गज़ब हुआ यार।"

चोपड़ा बोला : "टण्डन सुना तुमने, टेरोरिस्टों ने जनरल वैद्य को जो आपरेशन ब्लू स्टार के समय सेनाध्यक्ष थे, मार डाला।"

"सुन लिया भाई, क्या कहा जाए, यह टेरोरिस्ट लोग अपने ही हाथों से सिख धर्म की जड़ों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं, बेवकूफ़।"

विनोद बोला. "न जाने क्या हो गया है इन सिखों को। स्वर्ण मन्दिर को एन्टी-नेशनल मूवमेन्ट का हेडक्वार्टर बना दिया है।"

सिगरेट सुलगाकर युधिष्ठिर बोला. "जो बीमारी सिखों को लगी है वह सारे देश में फैली हुई है, पाण्डेयजी। कम्यूनलिज्म इस समय नेशनलिज्म का मुखौटा लगाकर हमें बहका रहा है।"

चोपड़ा बोला. "मेरा बस चलता तो हिन्दुस्तान के सारे मन्दिर-मस्जिद, गिरजेघर सब तोड़-फोड़कर ज़मींदोज़ कर देता। धर्म और मज़हब के खिलाफ़ अब तो जेहाद बोल देना चाहिए। जो साला धर्मान्धता का प्रचार करे उनको पकड़कर सालों को हवाई जहाज़ों से एवरेस्ट के इलाकों में छोड़ दिया जाए और कहा जाए कि सालो हिन्दुस्तान में अब तुम्हारी जगह नहीं है।"

शफ़ीक जोश में आ गया, कहने लगा. "मज़हब ने इन्सान को इन्सान बनाया। ये तुम्हारी तरह-तरह की कल्चर्स मज़हब के उसूलों के सहारे ही आगे बढ़ी हैं।"

पाण्डेयजी भी बोले "मैं तुमसे पहली ही बार सहमत हुआ हूं शफ़ीक। धर्म एक आध्यात्मिक शक्ति है और उसी शक्ति से दुनिया आज तक आगे बढ़ी है।"

चोपड़ा खिजलाकर बोला "खाक आगे बढ़ी है। साले, एक-दूसरे पर तलवार चलाते रहे, इतिहास भरा पड़ा है। शैव वैष्णवों से लड़ते हैं, शिया-सुन्नियों से लड़ते हैं, कैथलिक्स् प्रोटेस्टेन्ट्स् से लड़ते हैं और अब ये साले सिख, सिखों से लड़ रहे हैं, हरामज़ादे हैं सब-के-सब।

शफ़ीक गरमाया : "चोपड़ा, मैं किसी मजहब या मजहबी के खिलाफ़ तुम्हारी ये गालियां अब बर्दाश्त नहीं करूंगा, तुम्हें बताए दे रहा हूं। आइ कान्ट टालरेट इट। रेलिजन स्पेशली माई इस्लाम इज़ द नेक्टर आफ़ माई लाइफ़।"

पाण्डेयजी भी जोश में आ गए, बोले : "हमारे वेदों और उपनिषदों ने दुनिया के सब धर्मों को सत्य का मार्ग दिखलाया।"

"ठहरो-ठहरो यारो, धर्म की तरकारी मण्डी में कबाड़ियों की तरह शोर न मचाओ। यह क्यों नहीं सोचते कि इसी देश में एक वह समय भी था जब हम मुट्ठीभर पढ़े-लिखे लोगों ने राष्ट्रीयता के जागरण काल के सत्य को उजागर करके अंग्रेजों की बेईमानियों के खिलाफ़ देश को संगठित किया था। पंजाब में अगर बेकारी और भविष्य के घने अंधेरे की घुटन से अगर हम शुरू ही में सचेत हो जाते तो क्या वहां टेररिज़्म की यह प्राब्लम पैदा होती। जवानों का क्रोध इतना अन्धा होता कि सिखों का एक गुट ही समझदार सिखों के विरुद्ध हो जाता। जो हालत पंजाब की है वह सारे देश की है। पाण्डेय, चौथे पेज पर मेरे लिए दो कालम की जगह रखना, एक छोटा-सा लेख लिखना चाहता हूं।" कहकर युधिष्ठिर अपने केबिन में चला गया।

दफ्तर के काम से फ़ुर्सत पाकर लगभग तीन बजे युधिष्ठिर ने श्रीमती मनोरमा खन्ना को फोन किया। नौकरानी ने जवाब दिया : "अम्माजी अब किसी अखबारवाले से नहीं मिलती हैं। वह अब बहुत बूढ़ी हो गई हैं।"

"अरे भाई, मैं कोरा अखबारवाला नहीं हूं और न किसी अखबारी काम से उनसे मिलना ही चाहता हूं। उनसे जाकर कहो कि स्वर्गीय जयन्त टण्डन साहब का पोता उनके दर्शन करने के लिए आना चाहता है।"

थोड़ी देर बाद एक कमज़ोर मगर रौबीली जनानी आवाज़ आई : "तुम सुमन्तू के लड़के हो?"

"जी हां, दद्दाजी मैं आपको प्रणाम करता हूं।"

"जीते रहो। किसके लड़के हो? लड़ैतो के या शारदा के?"

"जी, शारदा देवी का।"

"मैंने तुम्हें कभी देखा नहीं बेटे, अनन्तू और बल्लो से तो मिल चुकी हूं। हेमन्तू को भी छुटपने में देखा था। मेरा सुमन्तू अब कैसा है?"

"आपके आशीर्वाद से अब बिल्कुल ठीक हो गए हैं दद्दाजी।"

"कब आओगे?"

"जब आप आज्ञा दें।"

"चले आओ।"

"अभी।"

"हां, मैं भी तुम्हें देखना चाहती हूं, आ जाओ।"

स्कूटर माल रोड की तरफ दौड़ चला। रायबहादुर बाबू रघुनन्दन प्रसाद खन्ना ने उस ज़माने में यहां अपनी महलनुमा कोठी बनवाई थी, जब छोटे लाट मर हारकोर्ट बटलर साहब बहादुर इलाहाबाद से लखनऊ चले आए थे। रायबहादुर और बटलर साहब में बहुत घनी दोस्ती थी। दोनों ही ऐशपसन्द, खाने-पीने और हिन्दुस्तानी नाच और मुजरे के शौकीन। जंगलात के ठेकों में रायबहादुर ने लाखों कमाए। मनोरमाजी रायबहादुर साहब की तीसरी पत्नी थीं, बहुत सुन्दर और बहुत निराश जीवन बितानेवाली। पति-पत्नी में आपसी बनाव बहुत कम था। सन् अठारह या उन्नीस में इलाहाबाद में ही किसी मुकदमे के बहाने से बैरिस्टर जयन्त टण्डन अपने मुवक्किल रायबहादुर रघुनन्दन प्रसाद के यहां अक्सर आने-जाने लगे थे, बाद में वह उन्हीं की हवेली में मेहमान भी हुआ करते थे। सन् 21 में रायबहादुर साहब के लखनऊ आने पर दोनों की घनिष्ठता बहुत बढ़ गई थी, जो असहयोग आन्दोलन में बैरिस्टर साहब के जेल जाने के बावजूद और भी बढ़ गई थी। खासतौर से मनोरमाजी से, इन्हीं दिनों बैरिस्टर जयन्त टण्डन साहब का घनिष्ठ सम्बन्ध हुआ था।

कोठी में पहुंचकर युधिष्ठिर ने भीतर खबर पहुंचाई। उसे लगा कि जैसे दरवाज़ा खोलकर खुद उसके पिता ही, मुस्कुराते हुए, उसका स्वागत करने के लिए खुद बाहर आ गए हों। युधिष्ठिर कृष्णा बाबू को देखते ही पहचान गया, पैर छुए। "आओ बेटे, भाभी ने मुझे इन्टरकॉम पर यह बताया कि तुम आनेवाले हो और मैं खुद तुम्हें लेकर उनके पास आऊं।"

अन्दर ड्राइंगरूम में ले गए। शानदार सजावट थी। बाबू कृष्णचन्द्र खन्ना कपड़े और शराब के बहुत बड़े व्यापारी हैं। अब स्वयं तो आमतौर से घर ही में रहते हैं। उनके दोनों लड़के ही घर की दौलत बढ़ाने के काम में लगे हुए हैं। कृष्णा बाबू भले ही युधिष्ठिर को अपने पिता जैसे लगे पर सुमन्त टण्डन से वह लगभग आठ-नौ वर्ष छोटे थे। सोफे पर बैठने के बाद कुछ क्षणों तक वह उसे एकटक देखते रहे, फिर कहा : "तुम्हारा कपाल और नाक हूबहू जयन्तु चाचा से मिलती है। आखिर खानदानी असर कहीं-न-कहीं पर तो बोलता ही है। खैर। यह बतलाओ कि हमारे सुमन्तु भाई कैसे हैं। मैं तो एक लम्बे अरसे से उनसे नहीं मिला। जब वह चीफ मिनिस्टर थे तभी तीन-चार बार उनसे मुलाकात हुई थी। उनके फ्रैक्चर होने की खबरें तो बहुत पढ़ी थीं। भाभी उन्हें देखने के लिए भी दो बार गईं मगर मैं अपनी तन्दरुस्ती खराब होने के कारण इच्छा होने पर भी आ न सका, अब कैसे हैं।"

"जी, ठीक हैं। अब तो घर पर ही आ गए हैं।"

"अब अनुष्याजी कब आएंगे? पोलिटिक्स छोड़ने के बाद उन्होंने अपना शहर भी छोड़ दिया है।"

"जी, फ़िलहाल अभी तो उन्हें लखनऊ में ही रोके हुए हूं। कम-से-कम महीने में दो-तीन बार तो डॉक्टर उन्हें देख ही जाते हैं। अयोध्या में भला ये सुविधाएं उन्हें कहां मिल सकती हैं।"

"ठीक, है अब उनका बुढ़ापा भी आया।" कहते हुए कृष्णाजी ने इन्टरकॉम उठाया। "कौन, ललिता। भाभो से कह दो, सुमन्तू भाई के बेटे आ गए हैं।··· अच्छी बात है, भेजता हूं।"

मनोरमाजी कोठी के पिछले हिस्से में अलग रहती थीं। दरवाजे पर प्रौढ़ वय की ललिताजी ने युधिष्ठिर का मुस्कुराकर स्वागत किया और कहा: "जब से आपका फ़ोन आया तब से माताजी आपसे मिलने के वास्ते बेचैन हो उठी हैं। आइए, भीतर चलें।"

लगभग 89 बरस की आयु होते हुए भी मनोरमाजी का चेहरा अब भी भव्य लगता है। दुबला शरीर आयु के प्रमाण से कुछ फैला और ढीला ज़रूर हो गया है लेकिन बुरा नहीं लगता। पिछले बीस-बाईस दिनों से कुछ बीमार भी चल रही हैं। दोनों पैरों में हल्की सूजन आ गई है। गद्देदार आरामकुर्सी पर लेटी थीं। युधिष्ठिर ने जाकर श्रद्धापूर्वक उनके पैर छुए। मनोरमाजी के बनावटी दांत खिल उठे: "तुझे देखकर बहुत खुश हुई बेटा, सुमन्तू को देखने के लिए दो बार बलरामपुर अस्पताल गई थी। तेरी मां को तो देखा, पर तू नहीं मिल सका।"

"यह मेरा दुर्भाग्य है दद्दाजी, कि आपके दर्शन नहीं हो सके।"

"हां, शारदा से तो कई बार मिल चुकी हूं। उसकी तो शादी में भी गई थी। अभी अस्पताल में भी देखा। कैसी है?"

"जी, अच्छी हैं।"

"तू वहां दूर न बैठ। ललिता, इसके लिए एक कुर्सी मेरी आरामकुर्सी से सटाकर रख दो।"

युधिष्ठिर ने ललिता से पहले ही सामनेवाली कुर्सी उठाकर रख दी। मनोरमाजी धीरे-धीरे उसके पांव पर अपना कोमल हाथ फेरने लगीं, बोलीं: "तू तो अखबार में काम करता है न?"

"जी हां, 'ईवनिंग स्टार' में।"

"आज के सब पेपर्स भी मरे बेकार के हो गए हैं, वो कहा करते थे कि जीवन में मिशन होना चाहिए।"

"जी, वो कौन?"

"तेरे बाबा और कौन। देश के लिए जान भी दे दूंगा, यह कहा करते थे।··· करके भी दिखा दिया। अभी रेडियो में सुना कि सन्त लोंगोवाले को भी मार डाला गया···क्या यही दिन लाने के लिए उन्होंने अपनी जान दी थी? तू कुछ क्यों नहीं लिखता देश की एकता के लिए।"

"जी, अभी-अभी एक आर्टिकिल लिखके आया हूँ, दद्दाजी। ये सारी मूर्खताएं बेकारी और आर्थिक तंगदस्तियों की वजह से हो रही है।"

"बिल्कुल ठीक, बिल्कुल ठीक। हमारे जवाहरलालजी ने बड़े-बड़े बांध, बोकारो और भिलाई तो खोले पर साथ-ही-साथ छोटे-छोटे उद्योग-धन्धों का जाल भी अगर फैलाया होता तो आज ये विभ्रम न आता। तेरे बाबा बापू के ग्रामोद्योग से बहुत सहमत थे। हालांकि बहुत-सी बातों में उनका मन बापू से मेल नहीं खाता था।"

युधिष्ठिर ने मौका देखकर प्रश्न का तीर साधा : "अच्छा दद्दाजी, वह ईश्वर-धर्म और ब्रह्मचर्य वगैरह को क्या गांधीजी की तरह ही मानते थे?"

"मानते भी थे और नहीं भी मानते थे। मैं पहले बहुत-से बरत-बरतुल्ले किया करती थी, जब कांग्रेस में उनके साथ गई तो अक्सर मुझे झिड़का करते थे कि ये सब क्या बेकार की बातें करती हो। ये सब नकली धरम हैं। असली धरम देश को प्यार करना है, गिरे हुए इन्सान को ऊपर उठाना है। दरिद्रनारायण की सेवा है।"

"मेरा मतलब था दद्दाजी कि जैसे गांधीजी भी ये सब काम करते हुए ईश्वर में आस्था रखते थे वैसे क्या बाबा भी···"

"हां, जब इंग्लैण्ड में पढ़ते थे तो बताया करते थे कि पहले-पहल एक पादरी की बीबी के यहां पेइंगगेस्ट बने, उन्होंने वहां उन पर ईसाई धर्म का प्रभाव डाला। बतलाते थे कि पहले तो हर इतवार को वह भी ईश्वर की भक्ति में चर्च जाने लगे पर जब उन लोगों ने उन्हें ईसाई बनाने का जाल फैलाना शुरू किया तो वह घर छोड़कर चले आए। वहां एक लड़की भी थी। उनसे उनका कुछ-कुछ प्यार भी हो गया था। पर कहते थे कि धरम की ऐसी झूठी मतलबवाली लड़की से ब्याह करके अपना सच्चा धरम नहीं बिगाड़ूंगा।"

"वो सच्चा धर्म किसको मानते थे?"

मनोरमाजी चुप हो गईं, फिर बोलीं : "तुम्हारी दादी मन्नो बड़ी धरम-सोचवाली थीं। वह कहते हैं न कि फलाने की धोती अकास में सूखती है। ऐसी ही थीं, कथा-भागवत, बरत-बरतुल्ले बहुत करती थीं। पर वो कहते थे ये सब ढोंग है। गीता का धरम सबसे सच्चा धरम है।"

नाश्ता आ गया। बेसन का हलुआ, मोयन पड़ी नमकीन छोटी-छोटी पूड़ियां, दही की पकौड़ियां, फल—ललिता ने छोटी मेज पर सामान सजा दिया। हलुए का पहाड़ घी में तैर रहा था : "अरे दद्दाजी, इतना तो मैं दो दिनों में भी न खा सकूंगा।"

"अरे, खा-खा। बेसन का हलुआ और दही की पकौड़ियां उन्हें बेहद पसन्द थीं। तब मैं उनके लिए अपने हाथ से ये चीजें बनाया करती थी।"

"नहीं दद्दाजी, मैं इतना तो न खा सकूंगा (ललिता से) अब एक खाली प्लेट भी ले आइए। और हमारे बाबा साहब यानी कि आपके पति को भी यही सब चीज़ें पसन्द थीं।"

मनोरमाजी ने मुंह विचकाया : "अरे उनकी न पूछ, उनका खान-पान, संग-सोहबत सब अलग ही थे। कभी-कभी मैं उनके साथ चन्द्रिकोजी जाती थी जहां उनके बाबा ने एक बिसराम कुटी बनवाई थी न।"

"वो अब भी है।"

"हां-हां, होगी। वहां जाती तो उनके लिए खाना बनाया करती थी। उन्हें मेरे हाथ की रसोई बहुत पसन्द थी बल्कि सच पूछो तो मेरे कहने से ही उन्होंने मांस-मछली खाना बिल्कुल छोड़ दिया।"

"पहले खाते थे?"

"हां-हां, खूब खाते थे। वो टनकपुर के राजा की मेम जब इनकी सेक्रेटरी बनी तो उसके साथ खाते थे।"

"टनकपुर के राजा की मेम।"

"हां, बतलाते थे कि वह लण्डन में उनके साथ पढ़नेवाले एक लड़के की बहन थी। टनकपुर के राजा के साथ यहां चली आई। यहां आके उनका फिर साथ हो गया। वह राजा साहब को छोड़कर इनकी सेक्रेटरी बन गई। तब उनकी वकालत बहुत चलती थी, बीस-पच्चीस हज़ार महीने की आमदनी थी। अरे, हज़ार रुपया तो वो उस मेम को तनखा ही देते थे,-ढाई सौ ऊपर से, बंगले-नौकर, आया…"

"तो उनका साथ कब टूटा, आपको मालूम है।"

"अरे ये जब जलियांवाला बाग में डायर ने गोलियां-वोलियां चलवाई थीं न तभी से। फिर वकालत भी एक तरह से छोड़ ही दी थी, बहुत कम कर दी थी। पूरा वखत तो कांग्रेस के कामों में चला जाता था उनका।"

"आपसे उनकी भेंट हो चुकी थी तब?"

"हां, इलाहाबाद आते तो हमारी ही कोठी पर ठहरते थे। फिर जब हम लोग लखनऊ आ गए तो मैं भी उनके साथ-ही-साथ कांग्रेस के काम में लग गई। तुम्हारी दद्दा मन्नो हमें कोसें कि हमने उनकी वकालत छुड़वा दी और हमारे पति भी कहें कि बैरिस्टर साहब के जाल में फंसके हमने जो कांग्रेस ज्वाइन कर ली तो इससे अंग्रेज सरकार उनसे बिगड़ जाएगी। दोनों तरफ़ मरे अंग्रेज़-अंग्रेज़ की गुहार और हमको गालियां, जबकि न उनका कुछ अपराध था और न मेरा।"

युधिष्ठिर अपने मन में अपने दादा और इन महिला के सम्बन्धों का विचार करता रहा। फिर अकस्मात उसने पूछा : "आपने उस मेम को देखा है?"

"देखा था, इलाहाबाद में लेकिन जब लखनऊ आए तो उनका उससे झगड़ा हो चुका था।"

बेसन का हलुआ खाते हुए युधिष्ठिर का दिमाग षड्यन्त्रकारी खूटियों का सहारा लेकर आगे बढ़ रहा था। बहुत ठण्डे और हल्के-फुल्के ढंग से उसने पूछा : "दद्दाजी, एक बात कहूं। आपको अपने पति से ज्यादा हौसला मिलता था या मेरे बाबा से ?"

झपाटेदार स्वर में उत्तर आया : "उनसे क्या हौसला मिलेगा। वह तो जिन्दा, मुस्तरी, हमीदा, बटलर साहेब, उनके अंग्रेज कारिन्दे बस इन्ही की खुशामद में लगे रहते थे दिन-रात। खाना-पीना, दावतें देना—मेरी कब फिकर रही उन्हें। ये बिचारे तुम्हारे बाबा ही मेरा ख्याल रखते थे। उन्हीं ने धमकी दी कि खन्नाजी अगर बैंक को ये लिखकर नही दोगे कि पांच हज़ार रुपया हर महीने मन्नो के नाम नही जमा किया तो हम दोस्ती का लिहाज छोड़के तुम्हारे ऊपर नालिस ठुकवाय देंगे।"

"मन्नो माने मेरी दादी ?"

बनावटी दांतों की बत्तीसी खिली, बोलीं : "नहीं-नहीं, तुमरी दादी का तो नाम मन्नो रहा, हमरा तो शुरू से मनोरमा रहा, पर तुमरे बाबा हमें मन्नो ही कहें।"

कुर्सी का पैंतरा बदलकर युधिष्ठिर बोला : "मेरे बाबा और आपके पतिदेव का कभी झगड़ा भी हुआ था ?"

मनोरमाजी सावधान हो गईं, बोलीं : "झगड़ा तो नही, पर हां, चौरीचौरा के आन्दोलन के खतम होने के बाद जब हिन्दू-मुसलमानों के झगड़े बड़ी जोरों में शुरू भए तब इन्होंने ये नोटिस अखबारों में निकलवाय दिया कि मेरी पत्नी बैरिस्टर साहेब के असर में आके कांग्रेस में काम करती है। सो सरकार यह जान ले कि पती-पत्नी होते हुए भी हमारा दोनों का अब कोई सम्बन्ध नहीं है। तुम्हें मालूम है, कृष्णो हमरा जेल में ही हुआ था। सारा इन्तजाम इन्होंने ही किया। वैसे कांग्रेस लीडर रहे पर अंग्रेज आफीसरों में भी इनका बड़ा दबदबा रहा। कई इंगलैण्ड के बड़े पुराने जान-पहचानी लोग भी उनके हिमायती रहे, जेल के अस्पताल में हमारी डिलवरी करवाई। दो बरसन इन्ही की वजह से हमारी नौकरी में रही। एक बच्चे को सम्हाले, दूसरी हमें। तभी तो खन्नाजी ने नोटिस छपवाया रहा। ये हमसे बोले · मन्नो, इसका मजा तो मैं खन्नाजी को चखा दूंगा।"

"फिर मजा चखाया था बाबा ने ?"

"हां-हां, सिमली रियासत का एक जंगल खन्नाजी ने हथियाय लिया। हथिया क्या लिया था असल में सौदा पक्का हो चुका था पर कागज-पत्तर पोढ़े हुए बिना खन्नाजी के आदमी जंगल काटने भी लगे। राजा के और इनके आदमियों में कुछ कहा-सुनी भी हुई, शायद कुछ मारपीट भी हुई। तब ये राजा साहब की तरफ से वकील बने और खन्नाजी के धुरें उड़वाय दिए। इलाहाबाद के दंगे में इन्होंने बड़ा

काम किया रहा। हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों की जान बचाने में अपनी जान की परवा नहीं की। शहर में चारों ओर इनकी जय-जयकार कि टण्डनजी आदमी नहीं, देवता हैं। खन्नाजी मन मसोसके रह गए। जंगल उनके हाथ से निकल गया। कटी लकड़ी का हर्जाना देना पड़ा। बटलर साहेब रिटायर्ड होनेवाले रहे, वो भी कुछ न कर सके। बस उसके बाद ही खन्नाजी बीमार पड़े और चल बसे।"

"दद्दाजी, मेरी बदतमीज़ी को माफ़ कीजिएगा। मगर मैंने यह सुना है कि अपने पति के स्वर्गवास पर आपने सुहागिन का वेष नहीं त्यागा था?"

"तुमने ठीक सुना बेटे, अरे उनकी सुहागिनें किराये की रहीं—मुस्तरी, हमीदा, कि हम रहे। वो मूड़ मुड़वातीं कलमुहियां, मैं क्यों मुड़वाती। उनसे मुझे कौन-सा सुख मिला जो उनके सुहाग को रोती।"

मन में उठता हुआ प्रश्न दबा गया। पूछना चाहता था कि कृष्णचन्द्रजी के पिता कौन हैं, पर झिझक गया। नाश्ता खत्म हो चुका था, सिगरेट की तलब ज़ोर मार रही थी। उठते हुए मनोरमा दद्दा के पैर छुए, कहा : "मैंने अपनी मन्नो दद्दा को तो नहीं देखा। वैसे देखा तो होगा पर अपने होश के साथ नहीं देखा।"

"हां-हां, शारदा के ब्याह की वखत तो जिन्दा थी मन्नो। तुमरे जनम के वखत भी जिन्दा रहीं। मैं तो शारदा की शादी में गई थी। सुमन्त खुद मेरे घर आके न्योता दे गए रहे। अरे बेटे, तेरी मां मेरी रिश्ते की भतीजी लगती हैं, तेरे नाना मेरे ममेरे भाई थे। तुमरी दादी ने बड़ा खबीस दिमाग पाया रहा।" मनोरमाजी की नाक चढ़ गई।

"खैर, उन मन्नो दादी को तो याद करने के लिए मेरे पास कोई बहाना ही नहीं, लेकिन इन मन्नो दद्दा के चरण अब मैं नहीं छोड़ूंगा। आपको बाबा के आन्दोलनों में सहयोग की कहानी अपने इस पोते को सुनानी ही होगी दद्दाजी। जो आप मुझे बतला सकती हैं वह तो मेरे बाबूजी भी मुझे नहीं बतला सकते।"

"तुम जब चाहो तब आओ बेटा। इतने बरसों के बाद तुम्हारे बहाने आज उनकी इतनी बातें तो किसी से मैंने कीं। और हमसे जादा कोई बताय भी नहीं सकत है।"

खन्नाजी की कोठी से बाहर निकलकर युधिष्ठिर मनोरमाजी के सम्बन्ध में सोचता रहा। राष्ट्रीय आन्दोलन के समय जिन भारतीय नारियों ने परदा प्रथा तोड़कर विद्रोही बाना पहना, उनके चरित्रों में अगर देखा जाय तो कोई पारिवारिक कारण भी अवश्य रहा होगा। विलासी पति से उपेक्षित एक सम्भ्रान्त कुल की सुन्दरी किस प्रकार अपने घर आनेवाले एक बैरिस्टर से प्रभावित होकर पति से विद्रोह करके देशसेविका बन जाती है, मनोरमा खन्ना इसका प्रत्यक्ष उदाहरण थीं। पति की मृत्यु के बाद भी अपने सुहागिन वेश को न उतारने का

उत्तर उन्होंने जिस तैश के साथ दे दिया उसी तैश के साथ कहा वह यह भी मंजूर कर सकती हैं कि कृष्णचन्द्र उनकी जारज सन्तान नहीं है। क्या कृष्णचन्द्रजी को इस बात का आभास नहीं होगा कि अपने नाम के साथ खन्ना लिखकर भी वे वस्तुतः टण्डन हैं। मन में टण्डन शब्द की गूंज के साथ ही जग्गो बाबा उसके ध्यान में आए : 'अगर उन्हें भी लगे-हाथ इस चक्कर में शामिल कर लूं तो शायद और भी बहुत-सी बातों का रहस्य खुले।'

घर आया। बंसीधर कॉटेज में फोन मिलाकर जग्गो बाबा से बातें कीं : "बाबा, कल आप खाली होंगे, शाम को आ जाऊं।"

"हां, आ जाना और सुनो, कपिल के यहां भी फोन कर दो कि उनसे मम्मी ने पांच सेर देहरादूनी चावल मंगवाए थे वह अभी तक नहीं भेजे। न भेजे हों तो तुम अपने यहां मंगवा लो और साथ में लेकर चले आना। गुमन्नू कैसे हैं अब?"

"खूब अच्छे हैं बाबा, उनका टाइमटेबुल रेगुलर है। आजकल जैन रामायण पढ़ रहे हैं।"

पंजाब की समस्याएं जटिल से जटिलतम होती जा रही हैं। भिण्डरावाले के अस्सीवर्षीय पिता को झण्डा बनाकर उग्रवादियों ने आतंक का गुण्डा राज कायम कर रखा था। किंवदन्तियों के नायक किन्हीं जनरल साभासिंह के आदेश से यह कहा गया था कि अब अमृतसर में शराब और सिगरेट-बीड़ी की एक भी दुकान चलने नहीं दी जाएगी। शाम को प्रेस क्लब में शराब के दौर में नशीली जबानों से चाकू से आतंकवादियों की खाल जी भरकर खींची जा रही थी। युधिष्ठिर ऊब रहा था। थोड़ी देर बाद ही उठकर चला आया। दूसरे दिन एक हिन्दी दैनिक पत्र में भूतपूर्व मुख्यमन्त्री और बयालीस के अमर शहीद श्री जयन्त टण्डन के सहयोगी सी० पी० वर्मा का एक संस्मरण छपा था। बहुत ही श्रद्धा से लिखा गया, किन्तु अपनी प्रशंसा के नमक-मिर्च से अधिक चटपटा बनाया गया सी० पी० का संस्मरण रोचक था। युधिष्ठिर ने कैंची से उस लेख की कटिंग काटकर अपनी फाइल में चिपकाई।

आज सगुन की छुट्टी थी। शबाना भी अपने बच्चे को लेकर आसपास के घर जा चुकी थी। शारदाजी अनु को लेकर एक सहेली के साथ चौक गई हुई थीं। युधिष्ठिर बोला "शक्को, तुमने कभी चन्द्रिकाजी के दर्शन किए हैं।"

"नहीं।"

"मेरे बाबा के बाबा यानी कि बंसीधर कॉटेज देखी है।"

"तुम मुझे वहां कभी ले ही नहीं गए।"

"तो चल यार, तुझे भी सैर करा लाऊं।"

सगुन उसी सहजे से बोली : "चलूंगी यार, मगर चाय-पानी तो निपटा दूं।

"असल में आपने वतलाया था कि इंग्लैण्ड जाने से पहले हमारे बाबा के यहां पर कुछ एक लव अफ़ेयर्स हुए थे।"

"हूं—हूं।"

"उनकी इंग्लैण्ड की डायरीज़ में जगह-जगह नाम कटे हुए हैं, काटा क्या है बल्कि वह जगह वावा ने स्याही से काली ही कर दी है।"

"तो।"

"कल मनोरमा खन्नाजी के यहां गया था।" नाम सुनकर वावा और भी गम्भीर हो गए। "उनसे पता लगा कि उनकी लण्डन की मुलाकाती एक औरत यहां किसी टनकपुर के राजा की रखैल होकर आ गई थी। वाद में इनकी सेक्रेटरी हो गई।"

"एलिज़ावेथ ग्राहम वड़ी हरामज़ादी औरत थी। जयन्तू भैये को व्हिस्की पिलाकर दुहती थी वह गोरी विल्ली। मैं मौजूद था जव जयन्तू भैये ने उसे अपनी नौकरी से निकाला था।"

"किस वात पर निकाला था?"

"जलियांवाला काण्ड पर भैये आगभभूका हो गए थे। इस पर वह जनरल डायर का पक्ष लेकर गरमा गई। कहने लगी, मैं अपने नेशन के किसी हीरो के खिलाफ किसी हिन्दुस्तानी से ऐसी वातें सुनना वर्दाश्त नहीं कर सकती। वस, भैये गरमा उठे—साली हरामज़ादी कुतिया की औलाद, जाने क्या-क्या कह डाला उसे। फौरन ही एकाउण्टटेण्ट को वुलाया। कहा, फौरन ही इसे तीन महीने की तनख्वाह देके कान पकड़कर वाहर निकाल दो। मैंने इसे वहुत वर्दाश्त किया। शुरू से ही वर्दाश्त कर रहा हूं। इसी ने मेरा और मार्था का झगड़ा करवाया था। तीन दिनों में इस उल्लू की पट्ठी से वंगला भी खाली करा लो। मकान मालिक को लिख दो कि अव से वैरिस्टर साहव इस वंगले का किराया नहीं देंगे। एलिज़ावेथ का चेहरा फीका-फक्क पड़ गया था। मुझे अव भी याद है। उसके वाद उसका क्या हुआ, मैं नहीं वतला सकता।"

"ख़ैर, न सही, मुझे अपनी एक अंग्रेज़ टेंपरेरी दादी का नाम तो मालूम हुआ।"

कि मनोरमा को छोड़कर उन्होंने और किसी से कोई रिश्ता ही न रखा। बट आई डोन्ट ब्लेम हर। अच्छी महिला हैं, थोड़ा रिवोल्ट जरूर है उनमें। बट देन शी इज मोर डिवोटेड टू भैये इवेन नाऊ। मेरी मन्नी भाभी से कहीं ज्यादह समझती हैं ये मेरे भैये को।"

जग्गो बाबा एक भाव-भरे जोश में अपने स्वर्गीय चचेरे भाई की महिमा अभिभूत होकर बता रहे थे। कहते-कहते थोड़ी देर के लिए रुके, फिर एकाएक अपनी सफेद भवों को ऊंचा उठाकर उन्होंने युधिष्ठिर से पूछा: "लेकिन तुम्हें ये मनोरमा का सुराग किससे मिला नन्हे?"

नन्हे मुस्कुराया, बोला, "जर्नलिस्ट और जासूस हमेशा सुरागों की तलाश में ही रहते हैं, बाबा।"

जग्गो बाबा खुश हुए, मुस्कुराए, सिर हिलाकर कहा: "अच्छा जवाब दिया, फिर भी यह सुराग किसने दिया?"

"बाबूजी ने।"

"आई थॉट सो, आई थॉट सो। सुनो, मनोरमा खन्ना के पास पुराना एक फोटोग्राफ है, तुम्हारे घर में भी था, पर जयन्तू भैये ने एक दिन मेरे ही सामने अपनी दराज के पुराने कागजों की छंटाई करते हुए उसे देखा, देखते रहे। मैंने भी देखा था। गलती से पूछ बैठा — भैये, ये खन्नाजी का लड़का तो आपकी सूरत का लगता है। भैये कुछ न बोले, लेकिन फिर एकाएक उसे फाड़कर छोटे-छोटे टुकड़ों में करीब-करीब चिन्दी-चिन्दी बनाकर उसे कूड़े में डाल दिया।

"अगर वह फोटोग्राफ देखने को मुझे मिला तो अवश्य देखूंगा, मगर यह तो मैं देखते ही समझ गया था कि उनका चेहरा हमारे बाबूजी के चेहरे से मिलता-जुलता है। दोनों ही एक पिता की सन्तान लगते हैं···

"वे सब पुरानी यादें, ऐसा लगता है कि जैसे वह सब इस समय भी मेरे सामने से गुजर रहा हो—द पास्ट इज प्रेजेण्ट। जयन्तू भैये जेल में थे, शहर की नोटेड फिगर। इनको 'ए' क्लास मिला हुआ था। बाद में जब मनोरमा भी जोश में आकर जेल पहुंच गई तो बहुत परेशान हुए। मुझसे कहने लगे, उसकी प्रेगनेंसी का पीरियड है, क्या बेवकूफी की है उसने। फिर दूसरे दिन जब मैं उनसे मिलने गया तो होम सेक्रेटरी मिस्टर टैंचर के नाम एक चिट्ठी लिखकर मुझे दी। कहा, ये चिट्ठी अपने हाथ में देना और इसका जवाब मुझे लाकर दो। शाम को छः बजे बंगले पर मिलना और कार्ड भेजते समय यह लिखना न भूलना कि कज़िन ऑफ़ बैरिस्टर मि॰ जे॰ टण्डन।"

कहते-कहते बाबा एकाएक थोड़ी देर चुप हो गए। युधिष्ठिर ने आखिर टोक-कर पूछा: "तो फिर आप गए थे बाबा?"

"हां-हां—हां, गया था। टैंचर साहब भैये के लण्डनियां दोस्त थे। यानी कि

"असल में आपने वतलाया था कि इंग्लैण्ड जाने से पहले हमारे वावा के यहां पर कुछ एक लव अफ़ेयर्स हुए थे।"

"हूं—हूं।"

"उनकी इंग्लैण्ड की डायरीज़ में जगह-जगह नाम कटे हुए हैं, काटा क्या है वल्कि वह जगह वावा ने स्याही से काली ही कर दी है।"

"तो।"

"कल मनोरमा खन्नाजी के यहां गया था।" नाम सुनकर वावा और भी गम्भीर हो गए। "उनसे पता लगा कि उनकी लण्डन की मुलाकाती एक औरत यहां किसी टनकपुर के राजा की रखैल होकर आ गई थी। वाद में इनकी सेक्रेटरी हो गई।"

"एलिज़ावेथ ग्राहम वड़ी हरामज़ादी औरत थी। जयन्तू भैये को व्हिस्की पिलाकर दुहती थी वह गोरी विल्ली। मैं मौजूद था जव जयन्तू भैये ने उसे अपनी नौकरी से निकाला था।"

"किस वात पर निकाला था?"

"जलियांवाला काण्ड पर भैये आगभभूका हो गए थे। इस पर वह जनरल डायर का पक्ष लेकर गरमा गई। कहने लगी, मैं अपने नेशन के किसी हीरो के खिलाफ किसी हिन्दुस्तानी से ऐसी वातें सुनना वर्दाश्त नहीं कर सकती। वस, भैये गरमा उठे—साली हरामज़ादी कुतिया की औलाद, जाने क्या-क्या कह डाला उसे। फौरन ही एकाउण्टटेण्ट को वुलाया। कहा, फौरन ही इसे तीन महीने की तनख्वाह देके कान पकड़कर वाहर निकाल दो। मैंने इसे वहुत वर्दाश्त किया। शुरू से ही वर्दाश्त कर रहा हूं। इसी ने मेरा और मार्था का झगड़ा करवाया था। तीन दिनों में इस उल्लू की पट्ठी से वंगला भी खाली करा लो। मकान मालिक को लिख दो कि अव से वैरिस्टर साहव इस वंगले का किराया नहीं देंगे। एलिज़ावेथ का चेहरा फीका-फक्क पड़ गया था। मुझे अव भी याद है। उसके वाद उसका क्या हुआ, मैं नहीं वतला सकता।"

"खैर, न सही, मुझे अपनी एक अंग्रेज़ टेंपरेरी दादी का नाम तो मालूम हुआ।"

"अरे क्या करोगे किसी की जवानी की इन्सानी गल्तियों को याद करके। यह जरूर था कि वो गांधीजी की तरह नहीं थे। वह कामुक जरूर थे, मगर उनके जीवन का यह कोई खास महत्त्व का पहलू नहीं था। भैये ने डायरी में भले ही अपनी विलायती माशूकों के नामों पर गहरी स्याही फेरी हो मगर वह इस वात को छिपाते नहीं थे—कि सेक्स किसी भी काम-काजी आदमी की सेहत के लिए वहुत जरूरी है और इसमें वह किसी रिश्ते या धर्म वगैरह के कायल नहीं थे। हां, कुछ ट्रेडीशनल वातों पर ध्यान अवश्य रखते थे। और वाद में तो मैं समझता हूं

कि मनोरमा को छोड़कर उन्होंने और किसी से कोई रिश्ता ही न रखा। दट आई डोन्ट ब्लेम हर। अच्छी महिला हैं, थोड़ा रिवोल्ट ज़रूर है उनमें। बट देन शी इज़ मोर डिवोटेड टू भैये इवेन नाऊ। मेरी मन्नो भाभी से कहीं ज्यादह समझती हैं ये मेरे भैये को।"

जग्गो बाबा एक भाव-भरे जोश में अपने स्वर्गीय चचेरे भाई की महिमा अभिभूत होकर बता रहे थे। कहते-कहते थोड़ी देर के लिए रुके, फिर एकाएक अपनी सफेद भवों को ऊंचा उठाकर उन्होंने युधिष्ठिर से पूछा : "लेकिन तुम्हें ये मनोरमा का सुराग किससे मिला नन्हे?"

नन्हे मुस्कुराया, बोला, "जर्नलिस्ट और जासूस हमेशा सुरागों की तलाश में ही रहते हैं, बाबा।"

जग्गो बाबा खुश हुए, मुस्कुराए, सिर हिलाकर कहा · "अच्छा जवाब दिया, फिर भी यह सुराग किसने दिया?"

"बाबूजी ने।"

"आई यॉट सो, आई यॉट सो। सुनो, मनोरमा खन्ना के पास पुराना एक फोटोग्राफ है, तुम्हारे घर में भी था, पर जयन्तू भैये ने एक दिन मेरे ही सामने अपनी दराज के पुराने कागजों की छंटाई करते हुए उसे देखा, देखते रहे। मैंने भी देखा था। गलती से पूछ बैठा भैये, ये खन्नाजी का लड़का तो आपकी सूरत का लगता है। भैये कुछ न बोले, लेकिन फिर एकाएक उसे फाड़कर छोटे-छोटे टुकड़ों में करीब-करीब चिन्दी-चिन्दी बनाकर उसे कूड़े में डाल दिया।

"अगर वह फोटोग्राफ देखने को मुझे मिला तो अवश्य देखूंगा, मगर यह तो मैं देखते ही समझ गया था कि उनका चेहरा हमारे बाबूजी के चेहरे से मिलता-जुलता है। दोनों ही एक पिता की सन्तान लगते हैं···

"वे सब पुरानी यादें, ऐसा लगता है कि जैसे वह सब इस समय भी मेरे सामने से गुज़र रहा हो—द पास्ट इज़ प्रैज़ेन्ट। जयन्तू भैये जेल में थे, शहर की नोटेड फिगर। इनको 'ए' क्लास मिला हुआ था। बाद में जब मनोरमा भी जोश में आकर जेल पहुंच गई तो बहुत परेशान हुए। मुझसे कहने लगे, उसकी प्रेगनेंसी का पीरियड है, क्या बेवकूफी की है उसने। फिर दूसरे दिन जब मैं उनसे मिलने गया तो होम सेक्रेटरी मिस्टर टैंचर के नाम एक चिट्ठी लिखकर मुझे दी। कहा, ये चिट्ठी अपने हाथ से देना और इसका जवाब मुझे लाकर दो। शाम को छ. बजे बंगले पर मिलना और कार्ड भेजते समय यह लिखना न भूलना कि कज़िन ऑफ़ बैरिस्टर मि॰ जे॰ टण्डन।"

कहते-कहते बाबा एकाएक थोड़ी देर चुप हो गए। युधिष्ठिर ने आखिर टोक-कर पूछा : "तो फिर आप गए थे बाबा?"

"हां-हां—हां, गया था। टैंचर साहब भैये के लण्डनिया दोस्त थे। यानी कि

भले-बुरे दिनों के साथी। मेरी परची देखकर उन्होंने मुझे भीतर बुलवा लिया। चिट्ठी पढ़ी, मुझसे पूछा तुम क्या करते हो? मैंने कहा, कलकत्ते के मेडिकल कालेज का स्टूडेन्ट हूं। इस साल पढ़ाई पूरी कर लूंगा। बोले—ठीक है, पढ़ना जारी रखो, तुम्हारे कज़िन के देशप्रेम की मैं प्रशंसा करता हूं लेकिन तुमको फिलहाल उस बहाव में बहने की जरूरत नहीं, समझे। और टण्डन से कह देना कि उन्हें फिक्र करने की जरूरत नहीं है। सब इन्तजाम उनके मनके मुताबिक हो जाएगा। कृष्णा का जनम जेल में ही हुआ था इसीलिए उसका नाम कृष्णचन्द्र खन्ना रखा गया। फिर तो गांधीजी ने एकाएक चौरीचौरा के बाद आन्दोलन वापिस ले लिया तो यह लोग भी छूट आए। मगर खैर, ये सब बातें छोड़ो। तुम जवानों का ही ज्यादह इण्टरेस्ट रहता है इन सब बातों में। असल में जोर इस बात पर दो कि इंग्लैण्ड में रहकर भी, अपनी पढ़ाई का काम पूरा करते हुए भी हिन्दुस्तान की राजनीतिक हलचलों में उन्होंने कितनी दिलचस्पी ली थी। तुम्हें एक बात बताऊं नन्हा, जवाहरलालजी से भैये की मुलाकात टैम्पुलबार में ही हुई थी। दोनों ही एक-दूसरे की तरफ बहुत खिचे, दोनों ही गरम पार्टी के फॉलोवर। संयोग से अपने-अपने ढंग से देश में आकर दोनों ही कांग्रेस में शामिल हुए। उनकी आपसी दोस्ती बराबर बनी रही।"

"जी हां, इसके तो बहुत-से रेफरेन्स लण्डन की डायरियों से लेकर और आगे की डायरियों में भी कभी-कभी मिलते रहे हैं।"

दद्दा कमरे में आईं: "अरे भई, अब बातें फिर कर लेना। खाने चलो, सवा बज रहा है। आज तुमरे नन्हा ने खीर बनवाई है और तुमरी बहू ने ही मेवे-एवे काटे हैं, हम तो खाली बैठे देखते रहे।"

मजलिस खत्म हुई लेकिन युधिष्ठिर के मन की मजलिस चहल-पहल से खूब भर गई थी। सुनी हुई बातों पर बाबा के इंग्लैण्ड-जीवन का चित्र बन गया। सन् दस की इलाहाबाद के नुमाइश में होने तक इलाहाबाद के प्रसंग याद आने लगे।

शाम को घर लौटकर आने पर देखा तो मुश्ताक मामू पिताजी के कमरे में बैठे दिखलाई दिए। युधिष्ठिर ने सोचा, एक बार भीतर जाकर सलाम कर आऊं परन्तु भीतर से आनेवाली बातों का प्रसंग सुनकर उसने शकुन को नाक पर हाथ रखकर खामोशी से भीतर जाने को कहा और आप बाहर से कान लगाकर सुनने लगा।

मुश्ताक साहब कह रहे थे: "सर सैयद ने इंग्लैण्ड जाते वक्त अपनी डायरी में यह लिखा कि अफसोस, मुसलमान तमाम दुनिया में गुर्बत ही भोग रहे हैं, खास-तौर से अपने हिन्दुस्तान में। गदर के बाद पुराने रईसों और शुरफा लोगों की जो बदतर हालत हुई उससे वह बहुत गमगीन थे।"

"दरअसल वो सिर्फ पुरानी एरिस्ट्रोकेसी की गरीबी से ही दुखी थे मुश्ताक। उनका दुख देखकर इन्हें बहुसंख्यक मुसलमानों की गरीबी का ध्यान न आता था।"

"तो उसमें अजब क्या है।" डेगची के एक चावल को टटोलकर उन्होंने सारी डेगची की हकीकत को पहचान लिया।

"फ़र्क़ है मुश्ताक़, गरीबी की जड़ देखने लिए बहुजन समाज की हकीकतों को पहचानना होगा। अरे वो लोग जो कल रईस थे और आज गरीब हुए, उनके राज में भी वे मुसलमान वैसे ही गरीब रहे जैसे आज हैं। सर सैयद ने अगर गदर में लुटने या अपनी ऐशपरस्ती में रुपया लुटाकर गरीब हो जानेवाले मुरफ़ा लोगों का ध्यान ही न किया होता और उनमें अलगाववादी भावनाएं न फैलाई होतीं तो बाद में टू नेशन थ्योरी न पैदा होती। और अगर पैदा होती तो गरीब और अमीर का भेद लेकर, हिन्दू-मुसलमानों को लेकर नहीं।"

"टू नेशन थ्योरी तो टण्डन साहब, जिन्ना साहब ने चलाई···"

"जिन्ना साहब ने तो कांग्रेस के खिलाफ तुरुप के पत्ते की तरह इस्तेमाल करने के लिए इस टू नेशन थ्योरी को और फैलाव दे दिया। असल में उसकी नींव अलीगढ़ मूवमेन्ट में पड़ चुकी थी, इसीलिए सर सैयद ने मुसलमानों को कांग्रेस में जाने से रोका।"

युधिष्ठिर के विचार-जगत की हवाओं को झोंके लगने लगे। शाम हो, मन दिन-भर के काम से थका हुआ भी था, इसलिए कमरे के अन्दर जाए बिना भी वह आह देकर अपने ऊपरवाले कमरे की ओर निकल गया। नहा-धोकर ताज़ा हुआ, कुछ देर अंशु से खेला, व्हिस्की पी, मन ताज़ा किया और तमाम सुनी हुई बातों को अंकित करने के लिए नोट्स बनाए। सबेरे काम पर बैठ गया।

चौबीस

जनवरी सन् ८८ के अन्त और फरवरी के पहले सप्ताह में लण्डन से बड़े भैया के जल्दी-जल्दी दो पत्र हंसो को मिले। जयन्त ने बहुत ज़ोर देकर लिखा था कि भले ही वह आगे न पढ़े मगर एण्ट्रेन्स की परीक्षा तो उसे सम्मान पास करनी ही होगी।

हंसो ने परीक्षा के लिए तैयारी तो अच्छी कर रखी है। अब भी ध्यान से पढ़ता है लेकिन व्यापारिक युक्तियों में उसका तरुण मन इतना अधिक लगाव रखने लगा है कि अक्सर कोई और काम करते हुए भी अचानक व्यापारिक सूझ के विचार उसके मन में झलक उठते हैं। तब वह खीझकर सोचता है कि पढ़ाई-लिखाई छोड़कर मैं अपने मन के ही धन्धे में क्यों न लगू—मगर बड़े भैया का आग्रह और उससे भी बड़ी बात कि पिताजी-माताजी दोनों को आघात लगेगा। लेकिन

पढ़ाई के मामले मे यह मेरी आखिरी परीक्षा होगी। 'आई शैल नाट वेस्ट माई लाइफ़।' खानदान में अभी तक केवल गुमानी वावा का परिवार ही लखपती है वाकी सब तवाही से कड़की तक ही सीमित रह गए। वस, हम लोगों ने पढ़-लिख-कर नाम वहुत कमाया—वावा रायसाहव हुए, पिताजी की सामाजिक प्रतिष्ठा तो हम सब देख ही रहे हैं—वड़े भैये उनसे भी अधिक वड़ी प्रतिष्ठा कमाएंगे। मैं फिर धन से अपनी प्रतिष्ठा क्यों न कमाऊं। काशी चाचा की हैसियत अव कम-से-कम ढाई-तीन लाख की होगी। अगर ईश्वर ने चाहा और क्लापंजी की कृपा हुई तो मैं पांच-छः वर्षों में इतनी हैसियत तो वना ही लूंगा। फिर भी उसे अपने माता-पिता और भाई की इच्छा का ख्याल वना ही रहा। उसने सोचा कि दो-तीन महीने के लिए दूकान की पूरी देख-भाल आशू भैये को सौंपकर वह केवल अपनी परीक्षा की तैयारी में ही लगेगा। सोचा, फर्स्ट डिवीजन भले ही न मिले लेकिन सेकेण्ड डिवीजन तो लाकर दिखला ही दूंगा।

शाम का वक्त था, आशू भैये इस समय तक देशदीपक फार्मेस्युटिकल में आ ही जाते हैं। वह अपनी दूकान पर पहुंचा। आशू भैये को अपना निश्चय वतलाया। उन्होंने भी समर्थन किया। हंसो से नये आर्डरों और हिसाव-किताव को भी समझा। फिर नाश्ता करते हुए वातों-व्रातों में इलाहावाद की नुमाइश के चर्चे छिड़ गए। सुना, ऐसी वड़ी नुमाइश आज तक नहीं हुई, कम-से-कम एशिया में तो नहीं ही हुई। आशू के मौसा लाला गिल्लूमल मेहरोत्रा ने भी कानपुर में नुमाइश के मनोरंजन पार्क में तीन स्टाल ले लिये हैं। वह उनमें विलायती सजावट के साथ हिन्दुस्तानी रेस्टोरेन्ट खोलेंगे।

यह सुनकर हंसो का मन परीक्षा की चिन्ता के खजूर से गिरकर फिर धन्धे के ववूल में अटक गया। वोला : "तुम्हारे मौसा भी तगड़ा विजनेस-माइण्ड रखते हैं आशू भैये। क्या स्कीम सोची है। अरे, इन फसल के आमों से वे महीने में ढाई-तीन हजार कमा लेंगे भैये। हाय हमारे देशदीपक फार्मस्युटिकल के लिए भी अगर वहां एक स्टाल मिल जाए तो?"

"अरे, अभी कुल जमा चार-पांच चीजें तो हैं हमारे पास, इत्ती वड़ी नुमाइश में क्या मुनाफा कमा सकेंगे हम लोग। छोड़ो इस सव चकल्लस को। तुम अपनी पढ़ाई में लगो, हम ये लोकल आर्डर निपटाते रहेंगे वस। इससे ज्यादह कुछ नहीं कर सकते।"

"अरे, नुमाइश में वड़ी पब्लिसिटी हो जाएगी, आशू भैये!"

"वो सव भई तुम अपने इम्तहान दे लो, तव सोचना। हमसे ये सव नहीं होगा। न वहां अव स्टाल वचे हैं और न मेरे पास उसमें लगाने के लिए पैसा ही वचा है। साफ वात है।"

आशू के इन्कार कर देने के वाद भी नुमाइश में स्टाल का विचार हंसो के मन

में कूदता ही रहा। सोचा, एक बार आशू भैया के मौसा से कानपुर जाकर मिलूं। हो सके तो उनके साथ एक-आध दिन इलाहाबाद भी चला जाऊं।

निश्चय ने मन में इतना जोर पकड़ा कि उसी रात घर लौटकर माताजी से नाटकीय झूठ बोला : "माताजी, मुझे कल प्रतापगढ़ जाना होगा।"

"क्यों ?"

"असल में मेरे एक मित्र हैं। उनके साथ मेरी कम्बाइन्ड स्टडीज होती है। बेचारे के फादर एकाएक बीमार हो गए और उसे खबर मिलते ही जाना पड़ा। मेरी किताबें भी ले गया।"

कौशल्याजी बोलीं : "तुम अकेले ही जाओगे।"

"क्यों, अरे अब मैं सोलह बरस का हो गया हूं। मेरा साथी ये रणदमन सिंह यहां होस्टल में रहता है और महीने में कम-से-कम दो बार तो प्रतापगढ़ जाता ही है।"

"कल सबेरे अपने पिताजी से पूछ लेना।"

"वह तो पूछूंगा ही, मैंने आपके कान में सिर्फ इसलिए डाल दिया कि मौका मिले तो आप आज ही उनसे कह दीजिएगा। मतलब यह है कि मुझे कम-से-कम तीन-चार दिन तो लग ही जाएंगे। मगर मेरी पढ़ाई का तनिक भी हर्जा नहीं होगा, यह आप विश्वास रखिए।"

सबेरे चाय के समय डॉक्टर देशदीपक ने पूछा . "तुम्हारे फ्रैण्ड के फादर को क्या हुआ भाई ?"

पिता के इस प्रश्न से हंसराज टण्डन का दिमाग एकाएक चकरा उठा, परन्तु स्कूल में सुनी हुई एक और घटना बहाना बनकर तत्काल सूझ गई, बोला : "मुझसे तो जाते समय रणदमन सिंह मिल नहीं पाया था मगर लड़कों को यह जरूर बतलाया कि ताल्लुकेदार साहब शराब पीकर खुद ही अपनी मोटरकार चला रहे थे। नशे की झोंक में रणदमन के बैठके की दीवार से मोटर लड़ा दी। उसके फादर वहीं बैठे थे। दीवार टूटने से पैर और हाथ में बहुत चोट आई है, शायद फ्रैक्चर-फ्रैक्चर हो गया है। मुझे ज्यादह कुछ मालूम नहीं पिताजी, वहां जाके सब हाल देखूंगा। अगर मामला कुछ गम्भीर हो गया तो किताबें लेकर कल शाम तक ही लौट आऊंगा। नहीं तो दो-चार दिन उसके साथ वहीं पढ़ लूंगा। यों भी मेरी और उसकी पढ़ाई साथ ही होती है।"

पिताजी ने आज्ञा दे दी। चमड़े के छोटे अटैचीकेस में अपने रोज-मर्रा के दो कपड़े रखे, माताजी के पैर छुए। उनसे खर्च के लिए पच्चीस रुपये मिले, फिर अमीनाबाद में अपनी दूकान जाकर पचास रुपये और लिये और शाम को चार बजे कानपुर में लाला गिल्लूमल की लाठीमोहाल स्थित कोठी में जा पहुंचा। बैठक खुली हुई थी। लालाजी तख्त पर बैठे कुछ हिसाब-किताब देख रहे थे। हंसराज

अटैचीकेस लिये हुए बैठक के दरवाजे में घुसकर खड़ा हो गया। गठा हुआ कसरती बदन, गले में तुलसी की कण्ठी और दो लड़ की सोने की जंजीर। फरवरी का मौसम होने पर भी सिर्फ एक ऊनी बनियाइन पहने और रेशमी फर्द की छोटे सकरपारे कटी दुलाई ओढ़े हुए लाला गिल्लूमल मेहरोत्रा की दृष्टि हंसो पर गई।

"अन्दर आ जाऊं ?"

"हां-हां। मगर मैंने पहचाना नहीं आपको ?"

हंसो ने जाकर उनके घुटने छुए और कहा : "मैं लखनऊ के डॉक्टर देशदीपक टण्डन का छोटा बेटा···"

"ओहो, ओ हो—ओ हो।" कहते हुए गिल्लूमल ने हाथ पकड़कर हंसो को अपने तखत पर बिठलाया और फिर अपने पास खींचते हुए बोले : "अरे बेटे, बहुत खुश भया तुम्हें देखके। अरे कल्है तो हम लखनऊ से आए हैं। बड़ा अनन्द भया। वाह-वाह।"

"मैं आप ही के पास एक काम से आया हूं।"

"कहो-कहो।"

"कल आशू भैये से मालूम हुआ कि आपने इलाहाबाद की नुमाइश में तीन स्टाल लिये हैं।"

"हां-हां, अरे बेटे हमने क्या, बस ये समझ लो कि तकदीर के किसी बन्धन में पड़के ये इस्टाल ले ली है। खैर, ये सब बातें तो बाद में होंगी, पहले जूते-ऊते उतारो, हाथ-पैर धोओ, तब इत्मीनान से बातें होंगी। अरे रामलोटन···" कहते हुए लालाजी खुद उठे और घर के भीतरवाले दरवाजे के पास खड़े होकर आवाज दी : "अरी सुनती हो, रामलोटन कहां है, उसे जल्दी भेजो और तुम भी आ जाओ। देखो, कौन आया हैगा।"

गिल्लूमल की पत्नी नीचे आ गई। "इस लड़के को पहचाना ? अपने कासी बाबू के भाई देसदीपक डाक्टर का लड़का हैगा।"

"अरे-अरे, हम समझ गए। रामलोटन, इनकी सन्दुकची ऊपर हमरे बरब्बर-वाले कमरे में रख आओ और धोती दो लाकर, पतलून उतारें।" कहते हुए पति को इशारा देकर भीतर ले गई, धीरे-से कहा : "हमरी लच्छो के लिए ई लड़का कैसा रहेगा ?"

"अरे तुमने तो हमरे मन की बात छीन ली। मगर देसदीपक तो आरसमाजी हैंगे। उनकी घरवाली भी कट्टर आरसमाजी हैं। कह देंगे अभी अट्ठारह बरस की उमिर तक नहीं करेंगे।"

"ऊंह, रोक की रसम हुई जाय तो हम बरस-दुई बरस का बखत टाल देंगे। बाकी लड़का है अनमोल। हमरी लच्छो की इसके साथ राम-जानकी जैसी जोड़ी लगैगी। कैसे आया है ?"

"कुछ इलाहाबाद की नुमाइश के बारे में बात हैगी।"

"हमें तो लगत है कि घर बैठे नरायनजी हमरी लच्छमीजी को मागने आए हैं। इन्हें अब हाथ से जाने न दूगी।"

"तुमरी बहन कहियें कि एक तरफ तो हमरी सगी भतीजी और दूसरी तरफ सगा भतीजा।"

"उह, ये सब तो अब छोटी-छोटी बातें हुई गई हैं, लच्छो के बाबू। जमाना बहौत बदल चुका है। खैर, अब तुम इ लड़के को सम्हालो। आगे का काम हम देख लैंगे।"

रात में हंसो अत्यन्त प्रेमल वातावरण में रहा। अभी नाश्ता हो रहा है, फिर खाने के लिए छप्पन भोग आ रहे हैं। बातें भी चल रही हैं, दो-एक हंसी-ठहाके भी लग जाते हैं। इसी बीच में लच्छो भी दो-तीन बार किसी काम के बहाने से बुला ली जाती है। लच्छो उर्फ लक्ष्मी मेहरोत्रा सुन्दर है और सलीकेदार भी। नव-यौवन पा रहे हंसो की चेतना में बसन्त-सी समा रही है। गिल्लूमल की बातें भी हंसो के मन के उत्साह को राजसिक बना रही हैं। खाते समय गिल्लूमल कहने लगे : "तुमको अलग इस्टाल लेने की जरूरत ही नहीं भैये, तुम्हें कोई बड़ी बिक्री तो करनी नहीं। खाली सो बनाना है। हमी अपने भट्ठी खानेवाले इस्टाल में बनाय देंगे। भट्ठीखानेवाले इस्टाल में आगे आधे में तुम्हारी दवाएं सजी रहेंगी, भट्ठीखाना बाहर से दिखाई नहीं पड़ेगा। सिम्भूसरन डिप्टी कलक्टर हमसे कह भी रहे थे कि बाहर से आपका भट्ठीखाना दिखाई देगा। हमने कहा, उधर चद्दर ढकवायके तो बनाय लेंगे। अब चद्दर की जरूरत नहीं, आधे में तुमरा इस्टाल सजा देंगे। इससे हमरे रस्टूरन्ट का दिखावा भी बना रहेगा और तुमरा इस्टाल भी सज जाएगा। तुमरी चूरन की टिकिया ये हजमीना हम ऐसी बेच लेंगे कि देख लेना। तुम पहले अपना इम्तिहान-विम्तिहान खतम कर लो फिर, चले आना।"

"एक बात चाचाजी।"

लच्छो की भाभो बोलीं "इन्हें चाचाजी-चाचाजी न कहो भैया! अरे हमरे घर में लड़के की तरह से आए हैंगे, हमें लच्छो की तरह कोई बाबू-भाभो कहनेवाला लड़का नहीं दिया है भगवान ने। तुम्ही कह लो, हमरा जी खुस हुई जायगा। क्यों लच्छो के बाबू···"

"तुमने हमरे कलेजे की कया, हमरी आतमा की बात कह दी लच्छो को भाभो। आज इनके अचानक आ जाने से हमरा जिउ ऐसा खुस भया—ऐसा खुस भया कि कहते नहीं बनत।"

पति-पत्नी की बातों से हंसो इतना भावाभिभूत हुआ कि कुछ कहते न बना। फिर भी संकोच के साथ कहा - "फिर भी बाबूजी, आधे स्टाल का किराया हमें

कितना देना होगा यह वतला दीजिए क्योंकि आशू भैये…"

"अव किराये की वात कहां है, तुम हमरे लड़के हुई गए अव। (लच्छो के वावू से) क्यों, झूठ कहती हूं कुछ।"

"झूठ नहीं, सवा सोलह आने सच कहा। वल्कि इससे भी जादा सच तो इ है कि इनके इसटाल से हमरा सो वढ़ जायगा। हमें उल्टे इन्हें कुछ रुपया देना चहिए।"

"फिर भी वावूजी, मुझे एक वार इलाहावाद देख लेना चाहिए।"

"क्या करेंगे आप देखके। हमरे वावू से अच्छा देख सकते हैं। आप अपना इम्तिहान देखिए।" लच्छो वोली।

"अरी चुप, जो मुंह में आया, वोल पड़ी।"

लच्छो की मां ने लच्छो को झिड़का किन्तु पिता मुस्कुराते हुए वोले: "अरे भई, कहने दो, लड़कन की वातों में न वोलो। वाकी इस वखत कुछ भी कह लो, तुमरी विटिया ने हमरे वेटे को वात वहुत वढ़िया समझाई। इस वखत अपना इम्तिहान ही देखो भैया। हम देखो चार आदमी खोज लेंगे। दुई सहर-भर के दुकानदारों में तुमरा माल फैलावैंगे और दुई हमरी निगरानी में इसटाल सम्हालेंगे।"

"दो वड़े-वड़े साइनवोर्ड वनवा लीजिए वावू। एक में लालाजी मेज़ पर रखी हुई तरह-तरह की भोजन सामग्री देखकर खुश हो रहे हैं और दूसरे में फूली हुई तोंद पर हाथ रखे हुए अपनी पत्नी के हाथों हमारी हजमीना खाकर खुश हो रहे हैं। एक अपने स्टाल के आगे, एक हमारे स्टाल के आगे। अपने स्टाल के आगेवाले साइनवोर्ड पर लिखवाइएगा —'जो चाहिए, जित्ता चाहिए, खाइए' और हमारे स्टालवाले वोर्ड पर लिखवाइए —'हमारी हजमीना सव हजम कर देगी'।"

हंसो दूसरे ही दिन दोपहर में घर लौट आया। स्टेशन पर लोगों के मुख से फिर तांगेवाले की वातों में, सव जगह नुमाइश के ही चर्चे थे।

यह विशाल प्रदर्शनी किले के पश्चिमी ओर यमुना के किनारे लगी हुई है। दो सौ वीघे ज़मीन में इस नुमाइश का फैलाव है। सैकड़ों अस्थायी सुन्दर-सुन्दर भवन वनाए गए हैं, वीच में एक घण्टाघर भी है। वह नुमाइश क्या है, इलाहावाद में ही एक छोटा-सा नया नगर आवाद हो गया है।

इस नुमाइश में अद्भुत वस्तुएं प्रदर्शनार्थ रखी गई हैं। प्रदर्शनी को वारह विभागों में वांटा गया है—पहला विभाग डाक और तार सम्वन्धी रोचक वस्तुओं का है। दूसरे में अनेक प्रकार की ललित कलाओं का संग्रह है। तीसरे में लकड़ी और पत्थर की क़ारीगरी है। चौथे में चमड़े और कागज तथा अनेक प्रकार की हज़ारों अन्य वस्तुएं प्रदर्शित की गई हैं। पांचवां विभाग देशी रियासतों की कारीगरी तथा वहां की प्राचीन वस्तुओं का है। छठवें में हर प्रकार की शिक्षा

सम्बन्धी वस्तुएं तथा कुछ उत्तम हस्तलिखित प्राचीन पुस्तकें भी रखी गई हैं। सातवें में स्त्रियों की कारीगरी के नमूने रखे गए हैं। आठवें में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा-सम्बन्धी अस्त्र-शस्त्र तथा अनेक प्रकार की अन्य वस्तुएं हैं। नवां इंजीनियरिंग अर्थात् हर प्रकार के कला-कौशल का विभाग है। दसवें में हर प्रकार की बुनाई का काम होते हुए दिखाया गया है और ग्यारहवां कृषि तथा बारहवां वन विभाग है। ये अन्तिम दो विभाग सबसे बड़े हैं। प्रदर्शनी में कितनी ही चीज़ें देखने लायक हैं। लखनऊ के अजायबघर में पुराने समय के नफीस स्वदेशी कपड़ों के नमूने भी लाकर रखे गए हैं। प्रयाग के एक मुसलमान ने बादशाह औरंगज़ेब के कुछ फ़रमान और अरबी किताबें भेजी हैं जो कहीं नहीं मिलतीं। बनारस के महाराज और नेपाल के स्वर्गीय राजा पद्मजंग के अनमोल जवाहिरात भी प्रदर्शनी में रखे गए हैं।

अस्पताल से घर आकर भोजन और आधे-पौन घण्टे की झपकी के बाद डॉ० टण्डन सबेरे की डाक से आया हुआ 'पायनियर' अखबार बहुत रुचिपूर्वक ध्यान से पढ़ रहे थे। तीन बजे के लगभग कौशल्या देवी स्वयं ही फलों की तश्तरी लेकर आईं। उन्हें देखते ही डॉक्टर खिल गए, उत्साह से बैठते हुए बोले : "आज तो पेपर में कुशलो, तुम्हारे छुटकऊ की कम्पनी के भी एडवर्टाइज़मेन्ट निकले हैं। चलो, हम भी इलाहाबाद की नुमाइश देख आएं।"

"हां, हंसो तो कल इम्तहान खतम होते ही भाग गया है।"

"कल तो मेरे विद्यालय की दाई हाथ और आखें नचा-नचाकर कह रही थी, बहूजी, अब तुम्हार आर्या मता न चल पाई। मैंने कहा, क्यों। तो बोली कि अब रामजी क्यार पुष्पक विमान आय गवा है।"

"हां भाई, विमानों की कल्पना को अब हम लोग कोरमकोर गप्प नहीं मान सकते। हवाई जहाज़ उड़ रहे हैं बल्कि इलाहाबाद की नुमाइश में हिन्दुस्तान के लोगों को भी हवाई सैर के लिए उकसाया जा रहा है। आज के पेपर ने तो लिखा है कि सर वैडरबर्न ने हमारे इलाहाबाद के नामी वकील पण्डित मोतीलाल नेहरू को हवाई सैर करने की दावत दी है और उन्होंने स्वीकार भी कर लिया है।"

"कैसा लगता होगा आसमान से धरती को देखना। वैसे कुछ भी कह लो—यह अंग्रेज़ जाति लुटेरी भले ही हो पर साइंस में इन्होंने और अधिकतर योरोपियन्स ने सचमुच कमाल कर दिखलाया है।"

अनार के दाने पत्नी के हाथ में रखकर स्वयं भी उन्हें उठाते हुए डॉक्टर बोले : "कुदरत का कानून भी बड़ा अजीब होता है कुशलो। यानी कि ज़हर, ज़हर तो होता ही है मगर उसका भी सही प्रयोग अगर किया जाय तो वह मारक के बजाय तारक सिद्ध होता है। ये अंग्रेज़ लोग भारत में रेलें लाए, मगर भारत की उन्नति करने के इरादे से नहीं लाए थे। ये हमारे इतने बड़े मुल्क में अपना

कितना देना होगा यह बतला दीजिए क्योंकि आगू भैये···"

"अब किराये की बात कहां है, तुम हमरे लड़के हुई गए अब। (लच्छो के बाबू से) क्यों, झूठ कहती हूं कुछ।"

"झूठ नहीं, सवा सोलह आने सच कहा। बल्कि इससे भी जादा सच तो ई है कि इनके इसटाल से हमरा सो बढ़ जायगा। हमें उल्टे इन्हें कुछ रुपया देना चहिए।"

"फिर भी बाबूजी, मुझे एक बार इलाहाबाद देख लेना चाहिए।"

"क्या करेंगे आप देखके। हमरे बाबू से अच्छा देख सकते हैं। आप अपना इम्तिहान देखिए।" लच्छो बोली।

"अरी चुप, जो मुंह में आया, बोल पड़ी।"

लच्छो की मां ने लच्छो को झिड़का किन्तु पिता मुस्कुराते हुए बोले: "अरे भई, कहने दो, लड़कन की बातों में न बोलो। बाकी इस बखत कुछ भी कह लो, तुमरी बिटिया ने हमरे बेटे को बात बहुत बढ़िया समझाई। इस बखत अपना इम्तिहान ही देखो भैया। हम देखो चार आदमी खोज लेंगे। दुई सहर-भर के दुकानदारों में तुमरा माल फैलावेंगे और दुई हमरी निगरानी में इसटाल सम्हालेंगे।"

"दो बड़े-बड़े साइनबोर्ड बनवा लीजिए बाबू। एक में लालाजी मेज़ पर रखी हुई तरह-तरह की भोजन सामग्री देखकर खुश हो रहे है और दूसरे में फूली हुई तोंद पर हाथ रखे हुए अपनी पत्नी के हाथों हमारी हजमीना खाकर खुश हो रहे हैं। एक अपने स्टाल के आगे, एक हमारे स्टाल के आगे। अपने स्टाल के आगेवाले साइनबोर्ड पर लिखवाइएगा—'जो चाहिए, जित्ता चाहिए, खाइए' और हमारे स्टालवाले बोर्ड पर लिखवाइए—'हमारी हजमीना सब हजम कर देगी'।"

हंसो दूसरे ही दिन दोपहर में घर लौट आया। स्टेशन पर लोगों के मुख से फिर तांगेवाले की बातों में, सब जगह नुमाइश के ही चर्चे थे।

यह विशाल प्रदर्शनी किले के पश्चिमी ओर यमुना के किनारे लगी हुई है। दो सौ बीघे ज़मीन में इस नुमाइश का फैलाव है। सैकड़ों अस्थायी सुन्दर-सुन्दर भवन बनाए गए हैं, बीच में एक घण्टाघर भी है। वह नुमाइश क्या है, इलाहाबाद में ही एक छोटा-सा नया नगर आबाद हो गया है।

इस नुमाइश में अद्भुत वस्तुएं प्रदर्शनार्थ रखी गई हैं। प्रदर्शनी को बारह विभागों में बांटा गया है—पहला विभाग डाक और तार सम्बन्धी रोचक वस्तुओं का है। दूसरे में अनेक प्रकार की ललित कलाओं का संग्रह है। तीसरे में लकड़ी और पत्थर की क़ारीगरी है। चौथे में चमड़े और कागज तथा अनेक प्रकार की हज़ारों अन्य वस्तुएं प्रदर्शित की गई हैं। पांचवां विभाग देशी रियासतों की —रीगरी तथा वहां की प्राचीन वस्तुओं का है। छठवें में हर प्रकार की शिक्षा

सम्बन्धी वस्तुएं तथा कुछ उनम हस्तलिखित प्राचीन पुस्तकें भी रखी गई हैं। सातवें में स्त्रियों की कारीगरी के नमूने रखे गए हैं। आठवें में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा-सम्बन्धी अस्त्र-शस्त्र तथा अनेक प्रकार की अन्य वस्तुएं हैं। नवां इंजीनियरिंग अर्थात् हर प्रकार के कला-कौशल का विभाग है। दसवें में हर प्रकार की बुनाई का काम होते हुए दिखाया गया है और ग्यारहवां कृषि तथा बारहवां वन विभाग है। ये अन्तिम दो विभाग सबसे बड़े हैं। प्रदर्शनी में कितनी ही चीजें देखने लायक हैं। लखनऊ के अजायबघर से पुराने समय के नफ़ीस स्वदेशी कपड़ों के नमूने भी लाकर रखे गए हैं। प्रयाग के एक मुसलमान ने बादशाह औरंगजेब के कुछ फ़रमान और अरबी किताबें भेजी हैं जो कहीं नहीं मिलतीं। बनारस के महाराज और नेपाल के स्वर्गीय राजा पद्मजंग के अनमोल जवाहिरात भी प्रदर्शनी में रखे गए हैं।

अस्पताल से घर आकर भोजन और आधे-पौन घण्टे की झपकी के बाद डॉ० टण्डन सबेरे की डाक से आया हुआ 'पायनियर' अखबार बहुत रुचिपूर्वक ध्यान से पढ़ रहे थे। तीन बजे के लगभग कौशल्या देवी स्वयं ही फलों की तश्तरी लेकर आईं। उन्हें देखते ही डॉक्टर खिल गए, उत्साह से बैठते हुए बोले : "आज तो पेपर में कुशलो, तुम्हारे छुटकऊ की कम्पनी के भी एडवर्टाइजमेन्ट निकले हैं। चलो, हम भी इलाहाबाद की नुमाइश देख आएं।"

"हां, हंसो तो कल इम्तहान खतम होते ही भाग गया है।"

"कल तो मेरे विद्यालय की दाई हाथ और आंखें नचा-नचाकर कह रही थी, बहूजी, अब तुम्हार आर्या मता न चल पाई। मैंने कहा, क्यों। तो बोली कि अब रामजी क्यार पुष्पक विमान आय गवा है।"

"हां भाई, विमानों की कल्पना को अब हम लोग कोरमकोर गप्प नहीं मान सकते। हवाई जहाज उड़ रहे हैं बल्कि इलाहाबाद की नुमाइश में हिन्दुस्तान के लोगों को भी हवाई सैर के लिए उकसाया जा रहा है। आज के पेपर में तो लिखा है कि सर वैंडरवर्न ने हमारे इलाहाबाद के नामी वकील पण्डित मोतीलाल नेहरू को हवाई सैर करने की दावत दी है और उन्होंने स्वीकार भी कर लिया है।"

"कैसा लगता होगा आसमान से धरती को देखना। वैसे कुछ भी कह लो—यह अंग्रेज जाति लुटेरी भले ही हो पर साइंस में इन्होंने और अधिकतर योरोपियन्स ने सचमुच कमाल कर दिखलाया है।"

अनार के दाने पत्नी के हाथ में रखकर स्वयं भी उन्हें उठाते हुए डॉक्टर बोले : "कुदरत का कानून भी बड़ा अजीब होता है कुशलो। यानी कि जहर, जहर तो होता ही है मगर उसका भी सही प्रयोग अगर किया जाय तो वह मारक के बजाय तारक सिद्ध होता है। ये अंग्रेज लोग भारत में रेलें लाए, मगर भारत की उन्नति करने के इरादे से नहीं लाए थे। ये हमारे इतने बड़े मुल्क में अपना

अधिकार रखने के लिए अपनी फौजों को झट-पट इधर-से-उधर पहुंचा सकें, इस-लिए लाए थे। मगर अब ये हमारी पब्लिक के काम भी आ रही हैं। इसी तरह ये हवाई जहाज भी एक दिन हमारी यात्रा के लिए काम आने लगेंगे।"

चाकलेट पीने की परम्परा तो रायसाहब बंसीधर ही अपनी जवानी के दिनों में इस घर में स्थापित कर गए थे किन्तु खोखा बाबू के समय में इतना परिवर्तन अवश्य हुआ कि सुबह के बजाय तीसरे पहर के जलपान के समय पति-पत्नी दूध में चाकलेट मिलाकर पीते हैं। इस दिशा में आर्यधर्मी पत्नी को आधुनिक धर्माव-लम्बन करने के लिए पति ने ही बाध्य कर रखा है। नौकरानी चीनी के प्याले, दूध की केतली और चाकलेट पाउडर का डिब्बा ट्रे में रखकर ले आई।

पति-पत्नी चाकलेट पी रहे थे, तभी चौक से डॉक्टर साहब के चचेरे भाई काशीनाथ और उनकी पत्नी की बग्घी ने 'चम्पक मैन्शन' में प्रवेश किया। कौशल्या अधपिया प्याला रखकर बाहर जाने को उद्यत हुईं। डॉक्टर साहब ने उन्हें हाथ के इशारे से ही रोका और कहा : "यहीं आने दो, घर में घरवालों के फार्मल स्वागत की जरूरत ही क्या है।"

"कहो भाभी, क्या हो रहा है?"

"आइए-आइए भैयेजी, आओ किशोरी-बहू, तुम हमारे पास ही बैठो। काशी भैये अपने भाई के पास बैठ जाएंगे।"

"अरे भई भाभी, तीन दिन से ये हमारे बड़ी खोपड़ी खाए हैं—इलाहाबाद चलो, इलाहाबाद चलो। तो हमने कहा कि अगर खोखा भैये और कुशलो भाभी राजी हुईं तो हम भी चले चलेंगे।"

डॉक्टर बोले : "यही बात अभी मैं तुम्हारी भाभी से कह रहा था। मगर यार, पैसे जो खर्च होंगे सो होंगे ही लेकिन हमारे मरीजों को बड़ी तकलीफ़ हो जाएगी। खासकर बेचारे गरीबों की सुनवाई न तो हमारे अस्पताल में ही है और न दूसरे प्राइवेट डॉक्टर्स ही उनका खयाल करते हैं।"

आशुतोष की मां किशोरी-बहू ने अपनी जेठानी की ओर मुंह करके कहा : "आप राजी हुई जाएंगी जिठानीजी, तो सब लोग राजी हो जाएंगे। हमने सुना है कि ऐसी नुमाइश दुनिया-भर में न कभी हुई है, न होएगी। सुना है, चीलगाड़ी उड़त है वहां।"

"हः हः हः, चीलगाड़ी, धुआंगाड़ी, पैरगाड़ी, क्या-क्या नाम रखे हैं हमारे हिन्दुस्तानियों ने इन विलायती मशीनों के।"

"हमें तो बड़े भैये, सच पूछिए तो इन साइंस के करिस्मन से जादा वहां के सैर-सपाटे और गाने-बजाने की मैंफिलों का मजा लेने की तबियत हो रही है। हमारे यहां की अच्छन बाई, नन्हुआ-बचुआ, बनारस की विद्याधरी, कलकत्ते की गौहरजान···अरे सारे हिन्दुस्तान की नामी से नामी गानेवालियां इस वखत

इलाहाबाद की नुमाइश में··· अभी परसों दिलदार हुसैन हमें वही मज़े की खबर सुनाय रहे थे।"

"क्या ?"

"वो गौहरबाई है न कलकत्तेवाली, वो नुमाइश में गाने आई तो वहां के शायरे आजम अकबर इलाहाबादी के दर्शन करने भी गई। बड़े-बड़े कीमती तोफे लेकर गई थी। और कहा कि हजूर हमारे ऊपर भी एक सायरी लिख दीजिए तो हम भी अमर हो जाएं।"

डॉक्टर देशदीपक को किस्से में मजा आने लगा था। रुचि से पूछा : "तो अकबर साहब ने कुछ लिखकर दिया गौहरजान को।"

"अरे बुढऊ बड़े हजरत हैंगे भैये, एक सेर लिख के दै दिया—

> आज अकबर कौन है दुनिया में गौहर के सिवा,
> सब कुछ खुदा ने दे रखा है एक सौहर के सिवा।"

डॉक्टर साहब और दोनों महिलाएं खुलकर हंसीं। खोखा बोले : "भाई, हम एक शर्त पर चलने को तैयार हैं काशी, कि अपनी भाभी से करार कर लो कि वो हमारे साथ हवाई जहाज़ की सैर जरूर करेंगी।"

किशोरी-बहू घबराके बोली : "ना जिठानीजी, जानजोखों की चीज पर भला कौन बैठे। और फिर रुपया जाने कित्ता पड़ेगा।"

"कुछ नहीं जी, पांच मिनट की उड़ान के ज्यादा-से-ज्यादा सौ-पचास रुपये लगेंगे और क्या। अरे ऐसे मौके पर कहीं रुपयों का मुंह देखा जाता है भला।"

"आप अपने को बहुत वीर समझते हैं और हैं भी, मगर मुझको आप कायर क्यों समझते हैं जी। काशी लाला, अपने भैये से कह दीजिए कि मैं चलूंगी और मेरी देवरानी भी चलेंगी और आप लोगों की हवाई उड़ान के पैसे भी मैं ही दूंगी।"

डॉक्टर देशदीपक टण्डन ने हंसकर ताली बजाते हुए कहा : "थ्री चियर्स फ़ॉर मिसेज कौशल्या टण्डन 'हिप-हिप हुर्रे'। मगर भाई काशी, पहले अपने साढ़ू को तार दे दो, कह दो कि हम लोग आ रहे हैं।"

"अरे, वो तो आपं एक पुरतानी के छोटे-से घर में रह रहे हैं और वहां उनका परिवार भी होगा, हसो भी पहुंच गए हैं, फिर हम कहां रहेंगे।"

"अरे, ऐसे में जगह निकल ही आती है। हां, तार देने की बात ठीक है, कर दो।"

दो दिनों बाद ही टण्डन बन्धु और उनकी पत्नियां इलाहाबाद के लिए रवाना हुए। नगर के सभी होटल एवं धर्मशालाएं नुमाइश देखने के लिए इलाहाबाद आनेवाले यात्रियों से खचाखच भरी हुई थीं। घरों के बाहर चबूतरों पर भी

यात्रियों ने अपनी-अपनी पाकशालाएं और शयनशालाएं जबर्दस्ती बना ली थीं। खुशाल पर्वत महल्ले में पन्नो पुरतानी का छोटा-सा घर भी टण्डन और मेहरोत्रा परिवारों से ठसाठस भर गया था। पुरतानी की दो गरीब नातेदारिनें सवेरे-शाम इतने आदमियों की रसोई बनाने आती थीं। जिस दिन गिल्लूमल की पत्नी जमुना बीबी, किशोरी बीबी, कौशल्या बीबी और डॉक्टर टण्डन हवाई जहाज की सैर पर जाने लगे, उस दिन काशी बाबू और गिल्लूमल ने चलते समय अपनी कांचें खोल दीं, बोले : "भई, हम तो न जाएंगे।"

"अरे, पर ये जो टिकट खरीद लिये हैं तुम्हारे लिए, उनका क्या होगा?"

"सरकार को किरिस्नार्पन कर दो, हम न जाएंगे। हमें तो ये चीलगाड़ी देखकर ही चक्कर आने लगा।"

हंसो हंसकर बोला : "अरे, पण्डित मोतीलाल नेहरू तो ऊपर जाकर ही कहने लगे कि नीचे उतारो, हमें चक्कर आ रहा है। मगर आप तो बिना चढ़े ही चकराने लगे।"

"कुछ भी कह लो बेटे, मैं नहीं जाऊंगा," गिल्लूमल बोले : "हमने तो आपसे पहले ही कह दिया था कि धन्धे का वखत है इस समय, सैर-सपाटा करने का नहीं।"

"तो इन टिकटों का क्या करूं? काशी, तुम हंसो को समझा दो तो कम-से-कम एक टिकट तो···"

हंसो वहीं खड़ा था, बोला : "हां-हां, काशी चाचा नहीं जाते तो मैं जाऊंगा और (गिल्लूमल की तरफ़ देखकर) ये नहीं जाते तो लच्छो को ले जाऊंगा।"

"अरे डर जाएगी, ज़रा-सी लड़की है," गिल्लूमल बोले।

"ये नहीं डरेगी, डरेगी तो मैं इसे हवाई जहाज से ही सीधे गंगाजी में फेंक दूंगा।"

"जब मैं डरूंगी ही नहीं तो आप फेंकेंगे कैसे? मैं चलूंगी।"

हंसो और लच्छो भी हवाई जहाज पर गए। रात को लौटकर घर में औरतों की बातें शुरू हुईं : "लच्छो हमरी तो हंसो भैये से इत्ते ही दिनों में खूब घुल-मिल गई है।"

पुरतानी बोली : "अरे, इन दोनों की गांठ जोड़ दो। सीता-रामजी की जोड़ी है।"

कौशल्या बोलीं : "अभी कैसे जी, अभी तो इसके बड़े भाई का सम्बन्ध नहीं हुआ जी।"

तीन महीने बाद नुमाइश खत्म होने पर गिल्लूमल और हंसो दोनों ही प्रसन्न थे। गिल्लूमल ने अपने भारतीय रेस्टोरेन्ट से सारे खर्चों के बाद भी छः हज़ार रुपये नकद कमाए थे। हंसो का मुनाफा तो बहुत नहीं हुआ क्योंकि दूकान में माल

कम था, फिर भी उत्तर भारत के लगभग सभी प्रदेशों के व्यापारियों से उनका सम्पर्क हो गया, यह बड़ी बात हुई।

पच्चीस

डॉक्टर देशदीपक टण्डन और उनके कनिष्ठ पुत्र हंसराज में पहली खींचतान तब हुई, जब हंसो ने आशुतोष टण्डन से साझा तोड़कर और लाला गिल्लूमल से साझा करके अपनी फार्मेस्युटिकल कम्पनी को कानपुर ले जाने का निश्चय किया। देशदीपक चाहते थे कि उनका बेटा अभी अपनी पढ़ाई खत्म न करे लेकिन हंसराज इस निश्चय पर डट गया था कि पढ़ाई बेकार है, व्यापारे वसते लक्ष्मी।

गिल्लूमल ने यों तो जीवन में कोई काम कभी जमकर किया ही नहीं, खाली फसल के आमों की कमाई करते रहे लेकिन काम करने का हुनर उन्हें खूब आ गया था। पनकी, बक्सर, हल्हा क्षेत्रों में बसे हुए तीन-चार वैद्यों को साधा। कानपुर और लखनऊ से दो अच्छे हकीमों को भी अच्छे पैसे देकर उनके नुस्खे लिये और इस तरह आठ-दस दवाओं के साथ उन्होंने दो-तीन उम्दा गश्ती एजेन्ट भी नियुक्त किए। अधेड़ उम्र में मानो उन पर नये सिरे से जवानी चढ़ गई थी। लेबलिंग, पैकिंग, विलायती माल से टक्कर ले आर्डर तुरन्त सप्लाई किए जाएं, हर औषधि के लिए आवश्यक जड़ी-बूटियों तथा अन्य वस्तुओं में कोई कसर न रहे, इन सब बातों की देखभाल हंसो करता था। हिन्दी, अंग्रेजी और दो-चार उर्दू के अखबारों में भी आकर्षक विज्ञापन छपवाने का प्रबन्ध भी हंसो ने अपनी ही निगरानी में ले रखा था। देशदीपक फार्मेस्युटिकल के कानपुर आने के बाद छः महीने में ही बिजनेस चमक उठा।

महीने-दो महीने में देशदीपक फार्मेस्युटिकल का हिसाब समझने के लिए लाला गिल्लूमल लखनऊ आया करते थे। जब आए तब फल, मिठाई और मेवे भी लाएं। कभी-कभी अपनी पत्नी जमुना को भी साथ लाते, लेकिन लच्छो को बूढ़ी नौकरानी की निगरानी में कानपुर ही छोड़ आते थे।

एक दिन जमुना ने कौशल्या से कहा: "आपके बड़े बेटे के लिए मैंने ऐसी सुन्दर लड़की देखी है कि अगर बिलायती कपड़े पहना दिए जाएं तो हूबहू मेम लगे। विलायत से लौटते ही चट-पट उसका ब्याह कर डालिएगा।"

कौशल्या बोलीं: "हां, यही मैं भी सोचती हूं। लड़की आपने कहां देखी, बहनजी!"

"अरे, हमरे घर से थोड़ी ही दूर पर रहते हैं परसोतमदास कक्कड़। उनकी

सूत की फैक्ट्री हैगी। डेढ़-दुई लाख के असामी हैं और लड़कियां बस दो ही हैं, धन्नो और मन्नो। धन्नो का ब्याह तो इसी पिछली सहालग में हुई गवा, अब मन्नो के लिए ढूंढ़ रहे हैं। हमने आपके बड़े बेटे का नाम बतलाया तो परसोतम की जुरुआ पीछे पड़ गई। हमसे कहने लगी—जमुना, यह काम तो तुम्हें करवाना ही होगा। हमरी भी यह राय है कि आप और डॉक्टर साहब चलकर देख लीजिए और अबही से रोक-रसम करके लड़की को बांध लीजिए। इसके साथ में अपने छोटे बेटे की कम्पनी भी देख लीजिए। हंसो तो हमरे ऐसे हुनरमन्द हैंगे बहनजी कि हम और लच्छो के बाबू इन्हीं के इन्हीं उन पर निहाल हुई गए हैं। ऐसा लायक लड़का तो हमने देखा ही नहीं। और लच्छो को हम आपै की सेवा में देने का तय कर चुके हैं।"

"अरे नहीं बहनजी, अभी हंसो की उमर तो छोटी है। पिछले महीने ही तो उसे सत्रहवां लगा है। डॉक्टर साहब कभी राजी न होंगे।"

"अरे तो मैं कुछ कह थोड़ी रही हूं बहनजी, आज नहीं तो साल-भर बाद, दुई साल बाद, हम तो अपने मन से उसे आपके चरनन में संकलप करै चुके हैं।"

इस तरह परसोतम कक्कड़ की मन्नो को देखने के बहाने डॉक्टर देशदीपक और कौशल्याजी कानपुर गए। लाला गिल्लूमल ने आग्रहपूर्वक पति-पत्नी को अपने ही घर में ठहराया। शाही खातिरदारियां कीं।

परसोतम की लड़की मन्नो देशदीपक और कौशल्या दोनों ही को बहुत पसन्द आई। यस-नो से अधिक अंग्रेजी बोल लेती थी। लाल इमली वूलन मिल के मैनेजर की लड़की मार्टिना उसकी सहपाठिनी थी। उसकी संगत में मन्नो ने कई विलायती हुनर भी सीख लिये थे। बहरहाल जब श्रीमती कौशल्या टण्डन ने अपने हाथों मन्नो को कंगन पहना दिया तो डॉक्टर देशदीपक ने भी उसे स्वीकार कर लिया। जयन्त को भेजने के लिए उसी समय फोटोग्राफर बुलाकर मन्नो के साथ डॉक्टर देशदीपक और कौशल्याजी का चित्र खिंचा। बात यहां तक पक्की हो गई कि अगले वर्ष के अन्त में जयन्त के लौट आने पर विवाह की तिथि सुझवा ली जाय।

लाठीमोहाल में गिल्लूमल का मकान बहुत बड़ा तो न था पर छोटा भी नहीं कहा जा सकता था। गिल्लूमल ने देशदीपक फार्मेस्युटिकल के लिए अपने मकान का पूरा निचला हिस्सा ही दे रखा था। एक तरफ़ दवाइयां कूटी-छानी-भरी जाती थीं। एक आदमी कायदे से शीशियों पर लेबुल चिपकाता और कागज़ की अच्छी छपाईवाली डिबियों में रखता। एक दो दरी कोठरी में पीछे की दीवाल में खिड़की लगवाकर गिल्लूमल ने अपनी गद्दी जमाई थी और पास ही दो कारिन्दों के आसन भी थे। हंसराज कम्पनी में (यानी बैठके में ही) बैठता था। कलकत्ते, मद्रास, और गुजरात की कुछ प्रसिद्ध औषधिशालाओं की औषधियां भी उसके यहां बिकती

थीं। कारबार काफी चलने लगा था। बेटे की सफलता से सन्तुष्ट होने पर भी डॉ० देशदीपक को यही शिकायत थी कि हंसो पराए घर में खाता-पीता और रहता है। उन्होंने कौशल्या से दो-तीन बार अपनी आपत्ति को प्रकट किया। हंसो शनिवार की शाम को नियमित रूप से अपने माता-पिता से मिलने के लिए आता था।

एक बार कौशल्या ने पिताजी की इस आपत्ति की चर्चा चलाई। हंसो बोला : "देखिए माताजी, इस बारे में मैं पहले ही सोच चुका हूं। शुरू में मैंने भी गिल्लूमलजी से, जिनको मैं बाबू कहता हूं, इस सम्बन्ध में कहा था। पर वे रोने लगे। मुझसे कहा मैं तुम्हें अपने लड़के की तरह मानता हूं। आइन्दा ऐसी बात मेरे सामने कभी न कहना। और ये तो अब आप और पिताजी दोनों ही जान गए होंगे कि शादी मैं उन्हीं की लड़की से करूंगा।"

कौशल्या तेज स्वर में बोली : "शादी-ब्याह की बातें भारत में माता-पिता ही किया करते हैं। लड़कों के तय कर लेने का चलन अभी नहीं चला।"

"वाह, चला क्यों नहीं, पिताजी ने ही कौन अपने माता-पिता से पूछकर आपसे ब्याह किया था। जैसे अपने लड़के की रजामन्दी देखकर मेरे दादा-दादी राजी हो गए वैसे आप भी हो जाइए।"

बेटे की दो-टूक बात सुनकर कौशल्या को धक्का लगा : "तू बहुत बदतमीज हो गया रे।"

"बदतमीजी की बात नहीं है माताजी, साफ कहता हूं। और उनकी लड़की आप लोगों को भी नापसन्द नहीं। व्यवहार में भी ये लोग नम्बर एक के आदमी हैं। आप भी तो बताया करती हैं कि लाहौर में हमारे नाना-नानी के व्योहार से ही पिताजी उनके मुरीद हो गए थे, कहती हैं कि नहीं ?"

कौशल्या चुप हो गई, अकेले में पति से कहा : "अब आप हंसो से कुछ न कहिएगा। आपको मेरी कसम है।"

"कुछ नहीं कहूंगा भाई। हमारे वंश में लड़कों के विद्रोह करने का चलन तो मेरे पापा के वक्त से ही चल गया कुशलो। पापा भी तो हमारी दद्दा के रहते दूसरी शादी से इन्कार करके घर से चले गए थे। तुम्हें भी तो अपने गले का हार बनाकर मैंने ही ..."

"अरे, आप अपनी बात तो छोड़िए, सच पूछिए, आपने तो मेरा उद्धार किया।"

रीझी हुई दृष्टि से पत्नी को देखते हुए डॉक्टर बोले : "कि तुमने मेरा उद्धार कर दिया रानी। मेरे न जाने कौन-से पुर्वले जन्म का पुण्य था जो तुम्हें पा लिया।"

"लेकिन हमारे मामले में मां और पापाजी ने जैसा भाव दिया वैसा कम लोग

ही देते हैं। मेरी राय में तो अब आप हंसो से इस विषय में कुछ न कहिएगा।"

"कुछ नहीं कहूंगा भाई। पर शादी से पहले उसका वहां रहना कुछ अच्छा नहीं लगता। लाहौर में मैं भी तो अलग कमरा लेकर रहा था, भले तुम्हारे घर में खाता-पीता रहा हूं। खैर, मैं अब इस मामले में कुछ भी न बोलूंगा, जब शादी करने को कहेगा, मैं हां कह दूंगा। लेकिन ये जयन्त की समस्या तो मुझे समझ में ही नहीं आ रही है, मंगनी की खबर और लड़की की फोटो भेजे हुए आज छः महीने हो गए, बन्दे ने एक शब्द भी उसके लिए मुझे नहीं लिखा। और कम-से-कम तीन चिट्ठियां तो आ ही चुकी हैं उसकी तब से मेरे पास।"

"आपको भले ही न लिखा हो पर हंसो की मार्फत तो उसने हमारी होनेवाली बहू को चिट्ठी भी लिखी बल्कि अब तो दोनों की चिट्ठियां आने-जाने भी लगीं।"

"अच्छा, ये मुझे नहीं मालूम था।"

"अरे, आपको तो अभी कुछ भी नहीं मालूम, नये ज़माने की बातें आप क्या समझें।" बनावटी मान से कौशल्या ने अपने पति को झिड़क दिया।

मन्नो और जयन्त की आपसी चिट्ठीबाज़ी से हंसो का मन तो शृंगारी हो ही उठा था, लच्छो का बाला जोबन भी सनकने लगा। लच्छो की भाभो यों दोनों को अलग ही अलग रखती थी, फिर भी एक घर में रहें और आमना-सामना न हो, यह मुश्किल था। सन् 11 की 21 नवम्बर को हंसो को अठारहवीं सालगिरह लगी कि गिल्लूमल ढेर सारे फल-मिठाइयां और मेवे लेकर लखनऊ पहुंच गए। सीधे चौक में काशी बाबू के पास गए। उन्हें और अपनी बहन किशोरी को साथ लिया और 'चम्पक मैन्शन' पहुंच गए। तब तक डॉक्टर देशदीपक अस्पताल से नहीं आए थे। काशी बोले : "चलो भाभी, कानपुर में पहला धावा बोलो। बसन्त पंचमी की तिथि निकली है ब्याह के लिए।"

"तो मुझसे क्या कहते हैं, अपने भाई से कहिएगा।"

"भाई साहब विचारों से क्या कहना, वो कहेंगे कि भाई बरात ले जाने का इन्तज़ाम तो सब तुम्हीं करोगे, मुझे तो खाली बरात में जाना-भर ही होगा।"

"लेकिन भैये जी, मेरी समझ में तो जयन्त आ जाता फिर उसके बाद शादी होती तो···"

गिल्लूमल बोले : "इस बात पर भी हमने बहुत-बहुत विचार किया समधिन साहब, लेकिन हमारी चिन्ता यह है कि इधर लच्छो की महतारी की तन्दरुस्ती कुछ अच्छी नहीं चल रही। उन्होंने आपको बहुत-बहुत हाथ जोड़कर कहलवाया है कि उनकी अरदास मान लें।"

किशोरी-बहू बोली : "अरे जिठानीजी, मौके-मौके की बात होवत है। बड़े के होते भए भी कभी-कभी छोटे भाई का ब्याओ पहिले हुई जात है। कोई हमरे

हिया नवाई थोड़ी होयगी। अब का किया जाय। भाभी हमरी फूल-पान हुई रही होंगी।"

डॉक्टर देशदीपक ने भी इस प्रस्ताव को बहुत ही दबाव में स्वीकार किया। बरात में डॉक्टर देशदीपक की सुधारवादी ना-ना करते हुए भी ढाई सौ लोग गए थे। शादी के बाद लच्छो चम्पक मैन्शन में आई, चार दिन रही, फिर चली गई। फिर उसका रहना प्राय: मायके में ही हुआ क्योंकि उसका पति वहीं रहता था। डॉक्टर देशदीपक और उनकी पत्नी को यह अभाव बहुत खला। उन्होंने कौशल्या से कहा : "शादी के बाद लड़कियां आमतौर से अपनी ससुराल में रहती हैं लेकिन तुम्हारे घर में कायदा उल्टा ही चला है। मुझे यह पसन्द नहीं आ रहा है।"

"पसन्द तो मुझे भी नहीं आ रहा है पर क्या करूँ, बताइए। हंसो ने अपना कारबार वहीं जमाने का निश्चय किया है और उसके ससुर बड़े जी-जान से उसके कारबार को बढ़ा रहे हैं, फिर लड़के-बहू को यहां कैसे रखूं, आप ही बताइए। कानपुर में ही अलग रहने की बात'' "

"यह तो एकदम मूर्खतापूर्ण ही होगी, मुफ्त में किराये का खर्च झूठी शान के लिए बढ़ाना मेरी राय में तो समझदारी की बात न होगी। (ठण्डी सांस लेकर) खैर, क्या किया जाय। लेकिन जयन्त के ससुर ने भी अगर उसे कानपुर में ही प्रैक्टिस करने का लालच दिया तो क्या होगा।"

"ऐसा मैं नहीं होने दूंगी। मैं जयन्त का मन पहले ही से पक्का-मोड़ा कर दूंगी।"

लेकिन परिस्थितियां टण्डन परिवार के साथ अनोखा खेल खेल रही थीं।

छत्तीस

बेटा होने के बाद शारदाजी ने जावेद और उसकी पत्नी को दो-एक दिन अपने ही घर में बिताने की दावत दी थी। बहुत दिनों से यह न्योता टलता ही आ रहा था लेकिन आज वानक बन गए। टीचर्स एसोसियेशन की मीटिंग में शबाना शकुन के कॉलेज में आई थी। मीटिंग के बाद शकुन उसे अपने साथ घसीट ले आई। कल शनीचर के दिन शहर के तमाम महिला शिक्षालयों ने यूनिवर्सिटी के विरुद्ध हड़ताल रखी थी और इतवार तो अल्लामियां की छुट्टी का दिन ही था। शब्बो घर से शौकत को लेने गई तो शकुन्तला ने भी मामू हुजूर के पैर छूकर शौकत और शबाना को अपने साथ ले जाने की इजाजत ले ली। शकुन और शब्बो दोनों ही ने वहीं से टेलीफोन पर अपने पतियों को यह सूचना देते हुए उन्हें सीधे 'चम्पक मैन्शन'

आने के लिए कह दिया।

उस दिन शारदाजी के घर की ऊपरी मंजिल बहुत गुलज़ार थी। जावेद युधिष्ठिर के अध्ययन कक्ष में कॉफ़ी की चुस्कियां लेते हुए गप्पें लड़ा रहा था। जावेद बोला : "चलो, जलते हुए पंजाब पर बरनाला मिनिस्ट्री का बरनाल कुछ काम नहीं कर पाया।"

"हः हः। मगर तुम क्या समझते थे कि बरनाला मिनिस्ट्री बन जाने से पंजाब में शान्ति हो जाएगी।"

"आई डिडिन्ट थिंक। बरनाला मिनिस्ट्री के कई मिनिस्टर्स उग्रवादियों के साथ दमदमी टकसाल का दमामा ज़ोर-शोर से बजा रहे हैं···अरे यार टण्डन, अपनी दमदमी टकसाल का क्या दमामा नहीं बजेगा यार?"

"बिल्कुल बजेगा, ज़ोर-शोर से बजेगा। परसों बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर्स के डिनर में बची हुई 'जॉनी रेड लेबुल' की आधी बोतल मेरे पास है।"

"क्या अभी से बोतल खोलोगे?"

"नहीं-नहीं, फिलहाल तो दिन-भर के हिसाब-किताब का गम गलत करने के लिए तुमसे तसल्ली ले ली। अभी बहुत रोशनी है यार। अंधेरा होने दो, तब 'जॉनी' का स्विच खोलेंगे।"

"तुम उस वक्त दिन में इस साल में होनेवाली मौतों का कुछ हिसाब-किताब बता रहे थे मुझे। इन्दिरा मर्डर के बाद दिल्ली के ऐन्टी-सिख रायट में और पंजाब में कितने कत्ल हुए?"

"कोई हिसाब बतला सकता है। कम-से-कम छह-सात हज़ार चलती-फिरती ज़िन्दगियां लाशें बना दी गई होंगी अब तक। ये अन्धा क्रोध हमें ले कहां जाएगा आखिर।"

"माल्थ्यूज़ थ्योरी के हिसाब से तो जितनी आबादी बढ़ेगी उतनी ही लड़ाइयां होंगी, कत्लेआम होंगे। प्रकृति आबादी घटाएगी।"

"यह सब तो ठीक है मगर ये गुस्सा, ये अलगाव, अजीब तमाशे खेल रहा है। मैं समझता हूं कि किसी हद तक इन्दिराजी भी सिख युवकों के इस गुस्से के लिए जिम्मेदार हैं।"

"होगा यार, थोड़ी देर के लिए दिमाग को खाली करो, तुमने अपना नावेल कित्ता लिखा, सुनाओ। मैं वहां तक सुन चुका हूं जहां हंसो की शादी हो चुकी है और बाप-बेटे में लखनऊ-कानपुर रहने की बात को लेकर खिंचाव आ चुका है।"

"उसके बाद अधिक तो नहीं लिखा, पर लो सुनो।" मेज से फ़ाइल उठाकर युधिष्ठिर ने सुनाना शुरू किया—

कद मुश्किल से पांच फ़िट, काधा भी सींकिया जवान की, मगर आंखें और मुस्कुराहट बहुत आकर्षक, रंग खुलता गेहुंआ। सिर के बाल फ़िलासफ़रों जैसे, बेतरतीब होंठों में पाइप दबा हुआ। नीला सूट पहने युवक ने शान से देशदीपक फार्मेस्युटिकल में प्रवेश किया। हंसराज टण्डन लेजरबुक में आंखें गड़ाए हुए किसी गाहक का हिसाब निरीक्षण कर रहा था। मुंह में दबा पाइप हाथ में लेकर आगन्तुक डॉ० श्यामाचरण श्रीमाली ने अंग्रेज़ी में कहा : "सॉरी, टु डिस्टर्ब यू। मैं मि० जयन्त टण्डन के भाई मि० हंसराज से मिलने आया हूं।"

"मेरा ही नाम हंसराज है। विराजिए।"

"मैं लखनऊ से आ रहा था, मि० पुरुषोत्तमदास कक्कड़ मुझे ट्रेन में इत्तफ़ाक़ से मिल गए। वह आपके फ़ादर से मिलकर आ रहे थे। उन्होंने ही बतलाया कि आप यहां रहते हैं। मैंने सोचा कि आपके फ़ादर से तो न मिल सका मगर आपसे मिल लूं। वरना लौटने पर जयन्त मुझसे नाराज होते।"

कलम कलमदान में रखकर बड़ी रुचि दिखलाते हुए हंसो बोला : "ओह, तो आप जयन्त भाई को जानते हैं।"

"हम दोनों ही फेबियन सोसायटी के सदस्य हैं। पहली मुलाकात मि० जार्ज बर्नार्ड शॉ के यहां खाने पर हुई थी।"

"कौन मि० शॉ?"

"ओह, आप अंग्रेज़ी के इतने मशहूर लेखक को नहीं जानते। इंग्लैण्ड में तो कोई प्राइमरी स्कूल का बच्चा भी बर्नार्ड शॉ, एच० जी० वेल्स वगैरह के नाम बतला देगा।"

हंसो झेंप गया, बोला : "असल में भाई साहब तो शुरू से ही पढ़ने-लिखनेवाले रहे और मेरा झुकाव बिजनेस में रहा। खैर, कब आए हिन्दुस्तान?"

"अभी चला ही आ रहा हूं, लेकिन कानपुर तो आज ही आ सका। मैं भी अपनी होनेवाली बीवी को देखने आया हूं।"

"ओह! काग्रेचुलेशन्स। आपका असबाब कहां है?"

"स्टेशनमास्टर की निगरानी में छोड़ आया हूं। अभी किसी होटल में इन्त-ज़ाम कर लूं तो स्टेशन से मंगवा लूंगा।"

"अच्छा-अच्छा," कहकर नौकर मिट्ठूलाल को उंगली के इशारे से बुलाया। मिट्ठूलाल के हाथ-लगा काम छोड़कर आने पर हंसो ने उसके हाथ में पांच रुपये का नोट टिकाया और धीरे से कहा, "मुरारी के यहां से जलपान लाना, समझे। और पड़ोस में सन्देसी के यहां से खस्ता ले लेना, जल्दी आना।"

मिट्ठू को आदेश देकर हंसो फिर डॉ० श्रीमाली की ओर आकर्षित हुआ। "ज़रा माफ़ कीजिएगा, थोड़ी देर के लिए ध्यान दूसरी ओर देना पड़ा।"

"आप घर में ब्राण्डी-व्हिस्की नहीं रखते।"

हंसो चौंककर बोला : "मुझे इसका शौक कभी नहीं रहा।"

"मगर मिस्टर जयन्त तो हर पांच मिनट बाद व्हिस्की का पैग लिये बिना रह ही नहीं सकते।"

"होगा, यहां उन्होंने ऐसी कोई आदत लगाई नहीं थी।"

"ये इतनी खराब चीज नहीं है जितना कि हिन्दुस्तान में लोग समझते हैं।"

नाश्ता-वाश्ता आ गया। खाने के बाद हंसो ने पूछा : "दूध पिएंगे।"

"दूध बच्चे पीते हैं।" हंसो इस जवाब से कुछ-कुछ देशी शान में आ गया, बोला : "हमारे लाठीमोहाल में दूध इतना बढ़िया मिलता है कि पूरे इंग्लैण्ड-भर में आपको कहीं नहीं मिलेगा।"

"होगा, पर मुझे इण्टरेस्ट नहीं। खैर, अब मैं चलूंगा। कोई अच्छा होटल बतलाइए जहां अंग्रेजी स्टाइल का रहन-सहन हो।"

"इम्पीरियल होटल बहुत बढ़िया है, मगर दस रुपये रोज़ का कमरा मिलेगा।"

"वह तो मिलना ही चाहिए। और देखिए, संयोग से अभी मेरा पैसा इंग्लैण्ड से नहीं आया है। मैं मि० जयन्त से कह आया हूं कि बैंक ड्राफ्ट बनवाकर मुझे भेज दें। तब तक होटल के खर्च की ज़िम्मेदारी आप लेंगे।"

हंसो पहली बार गम्भीर हुआ, फिर कुछ सोचकर बोला : "मैं आपके साथ अपना आदमी किए देता हूं। मेरे ख्याल में दो रोज़ तो रहेंगे ही।"

"हां और क्या, शायद एक-दो रोज़ जादा रुक जाऊं।"

हंसो ने अपने कारिन्दे के हाथ में पचास रुपये रखे और कहा कि "होटल में तीन रोज़ का किराया जमा करना और कहना कि कमीबेसी हो तो हमारी दुकान से मंगवा लें, पता दे देना।"

डॉ० श्रीमाली का इतिहास तनिक अटपटा-सा था। शाहजहांपुर में पैदा हुए, बाप पांच-छः वर्ष की आयु में ही परलोक सिधार गए। मामा के घर बरेली में पढ़े, दसवां दर्जा प्रथम श्रेणी में पास किया। अंग्रेजी भाषा में खासतौर पर बहुत ऊंचे नम्बर पाए। फिर मां भी मर गई। मामा के घरवालों से मां के जीवनकाल में ही उपेक्षा मिलती थी। बाद में मामी आदि के परिवार के लोगों से उपेक्षा मिलने पर उन्होंने घर ही छोड़ दिया। मजबूरी में नौकरी करने के लिए अभी उनका उच्च महत्त्वाकांक्षी मन राज़ी नहीं होता था। दो ट्यूशनें करके पढ़ने लगे। किन्तु बी०ए० के द्वितीय वर्ष में दुर्दैववश उनको टाइफाइड हो गया। जहां ट्यूशन करते थे, उन्होंने ही इन्हें अस्पताल में दाखिल करवा दिया। जस-तस करके खैराती वार्ड के अपमानों-भरे उपचार से उनकी बेशर्म जिन्दगी फिर चंगी हो गई मगर बरेली से ऊब चुके थे। लखनऊ आ गए। कैनिंग कॉलेज के एक अंग्रेज अध्यापक से उनकी एक लेक्चर के दौरान मुलाकात हो गई। वह बहुत प्रभावित हुए। श्यामाचरण ने

उनके आगे अपना गलत परिचय दिया, यह बतलाया कि वह इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से एम० ए० पास कर चुके हैं। प्रोफेसर सायन्स ने उन्हें अपने एक ताल्लुकेदार छात्र का अभिभावक अध्यापक बनवा दिया। श्यामाचरण को शाही भाग्य मिल गया। उम्दा-से-उम्दा भोजन, विलायती शराबें, पढ़ने के लिए कुअर साहब के बहाने से श्रेष्ठ अंग्रेजी साहित्य की पुस्तकें खरीदने का अवसर मिल गया। नाच-मुजरे भी खूब देखा करते थे। अंग्रेजी में लेख भी लिखा करते थे जो बम्बई के 'टाइम्स' और 'स्टेट्समैन' में भी अक्सर छप जाते थे। श्यामाचरण का एक लेख डॉक्टर की नकली डिग्री से संयुक्त होकर लण्डन की एक बौद्धिक पत्रिका में भी छप गया।

संयोग से पत्रिका के उसी अंक में एक अंग्रेज युवक मिस्टर सैमसन स्मिथ का लेख भी छपा था। वह कानपुर के डिप्टी कलेक्टर थे। उन्होंने श्यामाचरण के लेख की प्रशंसा करते हुए ताल्लुकेदार छात्र के पते पर एक पत्र भेजा था। उस पत्र को पाकर ही महत्त्वाकांक्षी श्यामाचरण की मनोभिलाषाएं कोठे पर चढ़ गईं। डिप्टी कलेक्टर से मिलने के लिए ही नकली डॉक्टर श्यामाचरण कानपुर आए थे। होटल 'इम्पीरियल' में टिक जाने के बाद उन्होंने डिप्टी कमिश्नर साहब को चिट्ठी लिखी। उन्होंने बड़े तपाक से डॉ० श्यामाचरण को शाम के समय अपने घर आने की दावत दी। बातचीत उम्दा। सैमसन साहब ने श्यामाचरण से पूछा : "कानपुर में मैं अगर आपकी कुछ मदद कर सकूं तो बतलाइएगा।"

"मैं कानपुर की मिलों और फैक्ट्रियों के मजदूरों की हालत पर एक लेख लिखना चाहता हूं।"

"बहुत खुशी से लिखें। मैं आपको एल्गिन मिल्स के मैनेजर से कल ही मिलवा दूंगा।"

दूसरे दिन मिल-मैनेजर से मुलाकात हुई। मैनेजर ने पूछा : "आप किस उद्देश्य से यह लेख लिखना चाहते हैं ?"

श्यामाचरण बनावटी रौब में आ गए, बोले "मैं यह दिखाना चाहता हूं कि आप हमारे मजदूरों को किन तरह एक्सप्लायट करते हैं।"

"एक्सप्लायटेशन की तो ऐसी कोई बात नहीं डॉक्टर श्रीमाली। क्या आपको कामदत्त मजदूर ने कुछ बतलाया ?"

एक नया नाम सुनकर श्यामाचरण की विचार-तरंगें और आगे बढ़ीं, झूठ बोले, कहा : "मुझसे कई हिन्दुस्तानी मजदूरों ने आपकी शिकायत की। आप बहुत सख्ती से काम लेते हैं।"

"हमने कोई अनाथालय तो खोला नहीं। बिजनेसमैन अपने पैसे की तीनों पाई भुनाने के लिए ही बिजनेस करता है आखिर।"

"मगर आप तो तीन पाई के बजाय चार और पांच पाइयां तक नफ़ा कमाते

हैं। हिन्दुस्तानी मज़दूर बेचारा सफर कर रहा है, मैं इसी पर एक लेख लिखूंगा।"

मैनेजर का रौब श्यामाचरण के रौब से समझौता करने के लिए झुका, मीठा बना। कहा : "आप शौक से हमारी गल्तियां हमको बतलाइए। हम हिन्दुस्तानी मज़दूरों को भी आराम देना चाहते हैं। उसके लिए हमें सलाह दीजिए कि हम क्या कर सकते हैं। बाइ द वे, आप ठहरे कहां हैं ?"

"होटल इम्पीरियल में।"

"आप आज से हमारे मेहमान हैं।"

श्यामाचरण हंसराज के मेहमान से एलिगन मिल्स के मेहमान बने और हंसो को धन्यवाद का एक पत्र भेजते हुए होटल का पेमेन्ट करने को लिख दिया। चार दिन के आतिथ्य का दण्ड, हंसराज टण्डन को लगभग ढाई सौ रुपया भुगतान करना पड़ा। चार दिनों में श्यामाचरण ने उम्दा-से-उम्दा खाने और विलायती शराबों का आनन्द उठाया। हां, यह जरूर किया कि भारतीयों से किसी हद तक हमदर्दी रखनेवाले अपने परिचित डिप्टी कमिश्नर साहब से उन्होंने देशी डिस्पेन्सरियों के लिए लगभग इतनी ही रकम की दवाएं खरीदवाकर हंसो का घाटा पूरा भी करवा दिया। कानपुर की मज़दूर समस्या को उन्होंने थोड़ा बहुत समझा अवश्य लेकिन इस इरादे से कि वह चोर को चोरी करने के लिए भी उकसावें और साथ-ही-साथ साहों की बस्ती में यह गुहार भी लगाते रहें कि जागते रहो—जागते रहो। अपने लेख में श्यामाचरण ने कुछ मार्मिक बातों की चर्चा भी की। उन्नीसवीं सदी के आरम्भिक काल तक अन्न उत्पादन ही हमारे देश का प्रमुख कार्य था। हमारे गांवों की लगभग नब्बे प्रतिशत आबादी उसी पर निर्भर थी। इसके अलावा कुछ वंश-परम्परागत जातीय पेशे और कुटीर उद्योग भी थे। अंग्रेज़ी राज्य के साथ ही नये प्रकार के विलायती उद्योग भी यहां आ पहुंचे। इन उद्योगों के मालिक भी अधिकतर अंग्रेज ही थे। उनकी मुनाफ़ाखोर प्रवृत्ति ने पुराने भारतीय ढांचे को ही बदल दिया।

अच्छी-अच्छी जातियों के लोगों को जो कभी अपने हाथ से हल नहीं पकड़ते थे, बढ़ती महंगाई की मजबूरी से मिलों में मज़दूरी तलाश करनी पड़ी। उन्हें चौदह से सोलह घण्टे तक काम करना पड़ता था। सवेरे मिल का भोंपू बजते ही मिलों में चले जाते और रात में ही वापस आ पाते थे। न खाने की मोहलत, न घड़ी-पल आराम करने की। पाखाने-पेशाब की हाजत लगे तो एक लोहे का वजनी नम्बर लेकर जाना पड़ता था। मज़दूरों के अंग्रेज़ी ढंग के बाल कटे देख लेने पर मास्टर उन्हें चमड़े के पट्टों से मारता था। इसके अलावा मज़दूर परिवारों की बहू-बेटियों की इज्जत पर भी तरह-तरह के अमानुषिक हमले हुआ करते थे। श्यामाचरण ने एलिगन मिल के कामदत्त, लाला देवीदयाल, लोचन, मोहम्मद याकूब, रमजान अली आदि से बातें करके बहुत-सी जानकारी हासिल की। इस

तरह के लेखों ने डॉक्टर श्यामाचरण श्रीमाली का नाम फैला दिया। अच्छी अंग्रेजी बोलने और साहित्यिक भाषा में लेखादि लिखने से डॉक्टर श्यामाचरण का नाम लेखकों-साहित्यिकों की दुनिया में भी फैलने लगा।

अपने उपन्यास का अध्याय सुनाते-सुनाते युधिष्ठिर रुक गया।

जावेद बोला : "बस।"

"हां, अभी तक तो बस ही समझो। एक हफ्ते से कलम हाथों में उठाने का मौका ही नहीं मिला।"

"इण्टरेस्टिंग है, अब आगे श्यामाचरण का क्या हाल होगा।"

"मैंने जग्गो बाबा से एक सवाल किया कि अंग्रेजी शिक्षा की बढ़ोतरी से हमारे समाज में बेकारी कब से फैली। तभी बाबा ने सन् 10-11 के लगभग अपने देखे-बरते हुए इन महाशय का किस्सा सुनाया था। मुझे भी रोचक लगा और साथ-ही-साथ बहुत कारुणिक भी, इसीलिए इनके किस्से को भी अपने उपन्यास में जोड़ दिया।"

"क्या ये सचमुच तुम्हारे हसो बाबा से मिले थे?"

"हां, जग्गो बाबा ने मुझे यही बतलाया था। बल्कि होटल के पेमेंट के मामले में ससुर-दामाद में थोड़ी झड़प भी हो गई थी। हमारे हसो बाबा ने अपने ससुर से कहा कि बिजनेस में कभी जानबूझकर भी घाटा सहा जाता है। फिर जब सरकारी हिसेगर्दियों की दवा-खरीदी में यह घाटा पूरा हो गया तो हमारे हसो बाबा अपने ससुर के ऊपर शेर बन गए।"

सिगरेट सुलगाते हुए जावेद विचारों के एक क्षण में उलझकर फिर बोला : "तो इसके माने हैं कि बीसवीं शताब्दी की पहली महंगाई के दौर में ही पढ़े-लिखे लोग चोर भी बनने लगे थे।"

"अरे भाई, सीधी तरह से रोटी नहीं मिलेगी तो उल्टे-औंधे जैसे भी बने, पर इन्सान को पेट का ओसार तो भरना ही पड़ेगा। हां, यह श्यामाचरण श्रीमाली जिसको हमारे बाबा श्रीरमाली कहते हैं, चोरों में भी ईमानदार चोर था। लेकिन बड़ा ही ट्रेजिक अन्त पाया इस 'श्रीरमाली' ने।"

"नावेल में पेन्ट करोगे?"

"क्यों नहीं। अरे इस शख्स ने इलाहाबाद के वाइस चांसलर पर अपनी विद्वत्ता का सिक्का जमाया और भी बड़े-बड़े विद्वानों, कवियों और लेखकों से अपनी प्रतिभा की पूजा करवा ली। न जाने कितनों के बेबुलाए मेहमान बनकर व्हिस्की-मुर्गों की खातिरदारियां उड़ाते रहे। उनकी विद्वत्ता की धाक थी। अपनी कल्पना-शक्ति से वह कभी कभी उसमें चार चांद भी लगा देते थे। पढ़े-लिखे समाज

में यह फैला रखा था कि आई० सी० एस० की परीक्षा में वैठे, ऊंची पोज़ीशन भी पाई, लेकिन अपने उभरते हुए राष्ट्रीय विचारों के जोश में आकर अपने-आपको जानवूझकर घुड़सवारी में फेल होने की स्थिति में ले आए। साहित्यिकों में वैठते तो उन्हें अपनी आलोचनाओं से पस्त कर देते थे। अर्थशास्त्रियों के समाज में वैठते तो उन्हें भी अपने तर्कों से हतप्रभ कर देते थे। हिन्दीवालों के वीच में वैठते तो उर्दू साहित्य की बुराइयां करते। उसे दरवारी और विलासी मनोवृत्ति का वतलाते। और उर्दूवालों के वीच में वैठते तो हिन्दीवालों की सात पीढ़ियों की वखिया उधेड़ देते थे। जिसके घर मेहमान रहे उसके चांदी, सोने के सिगरेटकेस चुराए और वाज़ार में वेचकर अपनी फिज़ूलखर्ची पूरी की। वहुतों की कीमती किताबें उड़ाकर औने-पौने वेचीं, वाद में हर घर के दरवाज़े उनके लिए करीव-करीव वन्द हो गए थे। जग्गो वावा वतलाते थे कि अपने आखिरी दिनों में किरमिचवाले जूते के रवड़ सोल को अपने पैरों में सुतलियों से वांधकर फटे कपड़े पहने वह सिविल लाइन्स में घूमा करते थे और भीख में कुछ रकम मिल जाने पर ताड़ी या देशी शराव के साथ सूखी रोटियां हलक के नीचे उतारते थे। कभी नमक के साथ और कभी अलोनी ही।"

"बहुत ट्रेजिक दिन देखे..."

"अरे, जग्गो वावा ने मुझे कई किस्से सुनाए थे। एक वी० ए० पास वेकार महोदय ने अपनी मोज़े की फैक्ट्री चलाने के लिए अपने सम्मिलित परिवार के पुश्तैनी मकान को अपना कहकर गिरवी रखा और जव उस पर कब्ज़े की वात आई तभी उनके पिता और दूसरे भाइयों को पता चला। वेईमानी सिद्ध होने पर उन्हे जेल हुई। जाने कितने ही एफ० ए० वी० ए० पास लोगों को भूखों मरने की नौवत आने पर अपनी योग्यता से कहीं अधिक हीन स्थिति की नौकरियां करने को मजवूर होना पड़ा। सन् 11-12 तक वेकारी की हालत दर्दनाक हो चली थी।"

एक ठण्डी सांस लेकर जावेद ने कहा : "और उधर गांवों में, तुम वतला रहे हो कि अच्छे-अच्छे कुलीन लोगों के जवान शहरों में मिलों में मज़दूरी करने के लिए आ रहे थे। तो अव तुम्हारे नावेल में ये सव घटनाएं आएंगी?"

"हां, इनकी पृष्ठभूमि तो वनेगी ही। और साथ ही जहां तक पारिवारिक कथा है, वह भी आगे वढ़ेगी।"

सत्ताईस

उपन्यास लिखने के लिए कलम उठाते समय युधिष्ठिर को अचानक श्यामकुमारी आर्या की सुधि आई। अभी छः-सात दिन पहले ही स्वर्गीय आशुतोष टण्डन की

बरसी के अवसर पर युधिष्ठिर अपने पिता को लेकर चौकवाली पुश्तैनी हवेली में गया था। वहीं उसे कमर झुकी, झुर्रियाँ पड़ीं, मोटा चश्मा लगाए, पोपले मुख की श्रीमती श्यामकुमारी आर्या भी दिखलाई पड़ी थीं। उन्हीं की जवानी के दिनों की सुनी हुई कहानी याद आई। कलम चल पड़ी—

जयन्त के विलायत जाने के बाद पिछले चार-पांच वर्षों में बहुत-से परिवर्तन आ गए थे। गोवरधन पसारी की विदेशी शक्करवाली दूकान पर धरना देने और जोशीले व्याख्यान देने के कारण श्यामकुमारीजी ने समाज के मन से अपने कलंक की कथा को मिथ्या सिद्ध करके उतार दिया था। जयन्त के युक्ति-चक्र और आशुतोष टण्डन के प्रयासों से सुखलाल श्यामा को फिर से अपने घर ले आए थे। एक बड़ा हवन हुआ। उसमें व्याख्यान-वाचस्पति वासुदेव शर्मा भी सम्मिलित हुए थे। इस छोटे-से समारोह के बाद सुखलाल और वासुदेव की गले मिलवाई भी करवाई गई थी। यह सब कुछ हुआ किन्तु महाशय सुखलाल के मन से वासुदेव और श्यामा के प्रति अविश्वास का मैल न उतर पाया। उतरता भी कैसे, नियोग से गर्भ रह जाने की दो चिट्ठियां श्यामा ने खुद सुखलाल को लिखी थीं। बाद में वह चिट्ठियां गायब कर दी गई और महाशय सुखलाल को भ्रमों का शिकार बतलाया गया। इसीलिए समझौता हो जाने पर भी सुखलाल का मन पुरानी स्थिति में न लौट सका। न वासुदेव मन से उनके मित्र बन सके और न श्यामा ही उनकी प्रेम-पात्री बन सकी। यही नहीं, आर्य समाज से भी उनका विश्वास उठ गया। वह चौपटियों के एक सिद्ध तान्त्रिक के चेले बन गए। घर आते थे, परन्तु बहुत कम। प्रायः गुल्लाले के मसान में बनी हुई एक पुरानी बारहदरी में ही रहते थे। सिर और दाढ़ी के बाल लम्बे-लम्बे हो गए थे और उनकी आंखें भी अम्बा जगज्जननी का 'प्रसाद' ग्रहण करते-करते अब रक्ताभ हो गई थीं। चेहरा पुरानी सौम्यता का भाव छोड़कर अब भयानक लगने लगा था।

मुसद्दीमल की हवेली में गनेसो का हिस्सा इधर कुछ वर्षों से बन्द था। गनेसो के पुत्र कैलाशविहारी की विधवा अपनी छोटी पुत्री गोमती को लेकर दूर के रिश्ते के एक मौसेरे भाई के घर में रसोईदारिन हो गई थी और वहीं रहती थीं। उनके बड़े पुत्र वर्षों से बम्बई में रहने लगे थे और कॉटन एक्सचेन्ज में काम करते हुए कुछ जमापूंजी भी बना ली थी। पांच रुपया महीना मां को भेजते भी थे। मां ने अपने मौसेरे भाई की कृपा से सिधौली में रहनेवाले एक दुहाजू वर से गोमती का विवाह कर दिया था। साल-भर पहले वह मर भी गई और इधर गोमती भी विधवा होकर पहले ससुरालवालों के द्वारा बम्बई भेजी गई और फिर भाई का अधिकारपत्र लेकर मुसद्दीमल की हवेली में अपने पुश्तैनी हिस्से में ही लौट आई थी।

आकर यह करिश्मा देखा, उसके हिस्से के एक दालान को दीवार से बन्द करके आशू ने अपना गोदाम बना रखा था। गोमती शिकायत करने गई। कहा : "भैये, यह तो तुमने गजब किया। हमरा हिस्सा भी अपने कब्जे में कर लिया।"

आशुतोष तमककर बोले : "तुम्हें तो रहने-भर के लिए एक कोठरी चाहिए, घर में उससे जादा जगह पड़ी भई है। कुंजविहारी तो अब बम्बई छोड़कर यहां आ ने से रहे, घर उनका है, तुम्हारा नहीं।"

गोमती ताव खा गई, कहा : "उन्होंने हमें हक लिखकर द दिया है। जब तक मैं जिन्दा रहूंगी, मकान मेरा है।"

"तो जाओ, जो करते बने सो कर लेओ। वो दल्लान अब तुम्हें नहीं मिलेगा।"

गोमती चुप बैठनेवाली न थी। महल्ले, टोले, रिश्तेदारी में चारों ओर बकना शुरू किया। एक दिन बचपन की सहेली सोंधी टोले की कम्मो पुरतानी से भेंट हुई। बातें होने पर कम्मो ने कहा : "तुम सुखानन्द स्वामी से मिलो गोमती। उनकी दया हुई गई तो आसू आय के तुमरे पैरों में अपनी नाक रगड़ेंगे।"

"कौन सुखानन्द स्वामी ?"

"अरे पीपलवाली कालीजी के बगल में सुखलाल सुनार रहत रहा कि नाहीं ?"

"रहत हुइयैं, हमका नाहीं मालुम।"

"अरे उसकी लुगइया का लेकर बहुत किस्सा चला रहा। एक आरसमाजी सास्तरीजी ने झूठ-मूठ धरम का नाम लेकर के उसकी जुरुआ को फंसाय लिया। वह गरभवती हुई गई। सुखलाल फिर देवी सिद्ध करे लगे, अब बड़े भारी महातमा हुई गए हैंगे। मारन, उचाटन, वशीकरण जो कहो सो पल-भर में कर देवैं। उनके पास जाओ। ऊ तुमरे आसू को ऐसा सबक सिखावैंगे कि उसकी हालत पतली हो जायगी।"

औरतवानी कभी इतना चली नहीं, फिर भी जैसे-तैसे गुल्लाले पहुंची। सुखानन्द उस समय अपने घर आए हुए थे। दूसरे-तीसरे दिन बड़ी कोशिश करके कालीजी के बाजार में कम्मो की दूध की दूकान पर मिले। वह उन्हें गोमती के घर पकड़ लाई। गोमती ने वह दालान दिखलाया जिसे आशुतोष टण्डन ने अपने कब्जे में कर रखा था। आशुतोष का नाम सुनकर ही सुखानन्द स्वामी गरजे : "वह भ्रष्ट आर्यसमाजी अपने को समझता क्या है। उससे कह दो कि दो दिन के अन्दर अपना सामान यहां से उठा ले। नहीं तो दीमकें उसका लाखों का घर खाक कर देंगी। मैं आज रात तेरे आंगन में हवन करूंगा।"

हवन की बात काशी बाबू के घर में आग-सी फैल गई। सुखानन्द तान्त्रिक के रूप में बदनाम है। आशू की मां दूसरे ही दिन सबेरे-सबेरे दौड़ी गोमती के पास

आई, खुशामद की : "अपने बंस की बरबादी न करो बिटिया। तुमरे ताया कहत हैं कि जो कहौगी तुमको किराया दै देंगे। अरे अपनी लड़की के रोटी-पानी की खातिर तुमरे ताया तुमरा पूरा खर्चा उठाय लेंगे।"

"हमें किसी का रुपया-पैसा नहीं चाहिए। हमरा तो दल्लान खाली कर देओ।"

"देखौ गोमती, बडके को अपनी दूकान का माल रखने को गुदाम चहिए था, सो पिछवाड़े की कोठरी छोटी पडत रही, सो तुमरे दल्लान मे दिवाल चुनवाय के उन्हें अपना समान रखना पड़ा। अब हम जो कह रहे हैं सो पूरा करेंगे। दस-बीस-तीस जो तुम्हारा खर्चा होय सो हमें बताय देओ।"

स्वामी के तन्त्र के जोर पर गोमती अकडी रही। हवन के तीसरे ही दिन आशू के घर मे दीमकें-ही-दीमकें फैल गई थीं। काशी बाबू और उनकी पत्नी घबराईं किन्तु आशू का क्रोध बढा। उसी दोपहर को आशू क्रोधान्ध होकर तीन-चार मुश्तण्ड गुण्डों के साथ गोमती के दरवाजे पर आया और जोर-जोर से बकने-झकने लगा। "दरवाजा तोड दो साली का, सब हवन-पूजा भ्रष्ट कर दो। उल्लू की पट्ठी। देखता हू वह ढोंगी सुनार क्या कर लेता है मेरा।"

चार मुहल्लेवालों ने समझा-बुझाकर आशू और उसके गुण्डों को दरवाजे से हटाया। उसी रात काशी बाबू को दस्त आने लगे, घर मे घबराहट मची। सबेरे-ही-सबेरे डॉक्टर देशदीपक के यहा काशी की पत्नी पहुची और रो-रोकर सब हाल कहा। देशदीपक उसी समय अपने चचेरे भाई को देखने गए, दवा दी और कहा : "मैं जादू-टोने मे विश्वास नही रखता, दो खुराको में ठीक हो जाओगे। लेकिन गोमती से मैं मिलना चाहता हू। उसको यहा बुलवाओ।"

"ऊ हियां नहीं आवैगी। बडी चमरघट्टी है। अपनी मैया के सामने से ही बिगड गई रही। ससुराल मे तो — अब जाय देओ क्या-क्या कहे। सब हमरे कानों में पड़ चुका हैगा भैया, सब अपनी महतारी के गुन-लच्छन पाए हैं इसने।"

"खैर, एक बार मैं ही उसके पास जाऊंगा। लेकिन आशू तुम फौरन से पेश्तर उस नालायक का दालान खाली करो। कही भी किराये पर और जगह ले लो।"

देशदीपक टीले पर चढकर पिछवाड़े गोमती के घर गए। बूढे नौकर काली-दीन ने बडी देर तक घर का कुण्डा खटखटाया : "गोमती बिटिया, गोमती बिटिया। डाकटर साहब आए है, दरवज्जा खोलो।"

तीन-चार बार गोहराने से भीतर की कुण्डी खुली। बडे तायाजी को देखकर गोमती एक बार तो सकपकाई, फिर झुककर पैर छुए।

"तुम्हें काफी अर्से के बाद देखा बिटिया। चलो, अन्दर चलो।"

गोमती ने सकपकाते हुए कहा : "अन्दर पूजा हो रही है तायाजी। आंगन मे जगह तो है नहीं।"

"खैर, मैं यह कहने आया हूं कि अब घर की लड़ाई खत्म करो बिटिया ! ओ ई सब पूजा-वूजा का तमाशा वन्द करो। मैंने आशू से कह दिया है कि आज ही कल में तुम्हारा दालान खाली कर देगा। बहरहाल, एक बात से मैं तुम्हें भी चेताए जाता हूं कि बंटवारे के कागज़ात अभी पक्के नहीं हुए। मेरे पिता ने उस समय अपने सब भाइयों को समझा-बुझाकर हिस्सा-बांट कर दिया था, बंटवारे की कोई लिखा-पढ़ी तो हुई नहीं थी। मैं इस बारे में कुंजू को चिट्ठी लिखूंगा और तुम्हारा दालान खाली हो जाएगा।"

बंटवारा पक्का न होने की बात गोमती की छाती पर बोझ-सी पड़ी। मन भय के नये धरातल पर जा चढ़ा। कुंजविहारी के अधिकार-पत्र की जो दृढ़ता अब तक उसके मन में अंगद का पांव बनकर टिकी हुई थी वह डगमगा उठी। बड़े तायाजी एक बात और कह गए थे, वह भी सच होती दिखलाई देने लगी। उन्होंने कहा था—"तुम्हारे जादू-मन्त्रों से ज्यादह हमारी दवाइयों में ताकत है गोमती। यह बचपना वन्द करो।"

यह बात भी सच होती दिखलाई देने लगी। सुखानन्द ने कहा था—दो दिनों में काशी बाबू की आंतें कट-कटकर गिर पड़ेंगी। परन्तु तायाजी की दवा से वह भी ठीक होने लगे।

गोमती अपने माता-पिता की तीसरी सन्तान है। स्वर्गीय कैलाशविहारी सर्राफे की दल्लाली करते थे। स्वभाव के अय्याश थे, बोतल-दारू, रण्डी-मुण्डी के फेर में लम्बा कर्ज हो गया, संखिया खाकर आत्महत्या कर ली। बड़ा बेटा कुंजविहारी एक रिश्तेदार की सहायता से बम्बई पहुंच गया और कामकाज में लगकर वहीं बस गया। दूसरा गगनविहारी पिता की मृत्यु के बाद ही विरक्त होकर घर से कहीं चला गया था, उसका पता-ठिकाना भी अब तक नहीं लगा। कैलाशविहारी की पत्नी निर्धनता के कारण अपनी बेटी का व्याह न कर सकीं। वह तो सतवन्ती थीं, पर गोमती के गुन-लच्छन कुछ-कुछ बिगड़ने लगे। संयोग से उसके एक मौसेरे भाई ने दया करके गोमती के विवाह का जोगाड़ सिधौली के एक साधारण सर्राफ के दुहाजू बेटे सत्यनारायण कपूर से करवा दिया।

सत्यनारायण के पिता ने सिधौली और सीतापुर के बीच में एक रियासत की बड़ी ज़मींदारिन को अम्मा-अम्मा कहकर पटा रखा था। अम्मा अफीमची थीं और चटोरी भी। धीरे-धीरे उनकी सब अशर्फियां और गिन्नियां सत्तो (सत्यनारायण) के बाप के घर पहुंच गईं। एक दिन संयोग से सत्तो भेजा गया था, उसके हाथ दद्दा का एक कीमती गहना लगा। वह उसने बाप-भाई को न दिया। पड़ोस के एक अन्य सर्राफ मित्र की मार्फत सोना बेचा और नग निकाल लिये। धीरे-धीरे दद्दा को उसने ऐसा पटा लिया था कि दद्दा सत्तो के बाप और भाई को अपने घर में ही नहीं घुसने देती थीं। सत्तो ने यह समझा रखा था कि मेरे बाबू और बड़े भैया

आपके साथ दगा करते हैं। सत्तो सोने की बिक्री का सन्तोषजनक भाग जमीदार ठकुराइन के घर पहुंचा देता, एकमुश्त अच्छी रकम पाकर ठकुराइन उससे बहुत प्रसन्न थी, किन्तु पिता और भाई से सत्तो की खटक गई। एक दिन ऐसा झगड़ा हुआ कि बटवारे की नौबत आ गई। सत्तो अपनी पत्नी और दो बच्चों को लेकर घर के एक स्वतन्त्र हिस्से में बस गया। उस वर्ष भाग्य ने उसके साथ अनोखा खेल खेला। 'डर्बी' की लाटरी में पचास हजार रुपये का दूसरा इनाम उसे मिला। पड़ोसी सर्राफ मित्र धन्नो की सहायता से उसने सर्राफे की स्वतन्त्र दूकान खोल ली। लेकिन उसी साल बरसात में जिस कमरे में उसकी पत्नी और बच्चे सोए हुए थे, उसकी छत गिर पड़ी। सत्तो बाबू उस वक्त धन्नो बाबू के घर बैठे हुए हंसी-मजाक कर रहे थे, अचानक आ जानेवाले इस दुर्भाग्य से स्तब्ध रह गए। बाप-भाई ने यहां तक दुश्मनी दिखलाई कि उसकी पत्नी और बच्चों की मुरदनी तक में शामिल न हुए। सत्तो इससे बहुत क्रुद्ध हुआ।

खैर, चार महीने बाद कुमारी गोमती टण्डन इन्हीं सत्यनारायण कपूर की दूसरी पत्नी बनकर सिघौली आ गई।

सत्तो और गोमती में अच्छा प्रेम-भाव था। लक्ष्मीमैया भी उन पर प्रसन्न थी, दूकान का काम बढ़ चला था और घर भी झकाझक नया बन चुका था। धन्नो बाबू घर में आते-जाते थे, गोमती से उनका कोई पर्दा भी न था। तीनों आपस में खूब हंसते-बोलते थे। दैव संयोग से एक दिन धन्नो अपनी छत से और सत्तो अपनी छत से कनकउए लड़ा रहे थे। तभी अचानक बन्दरों के दो जुझारू दल एक-दूसरे पर खौखियाते हुए सत्तो की छत पर आ धमके। उनके घेराव में सत्तो मुंडेर से गिरकर गली में आ पड़ा। मुहल्लेवाले और धन्नो ने मिलकर सत्तो को अस्पताल पहुंचाया। किन्तु दूसरे दिन सबेरा होते-न-होते गोमती का भाग्य घने अंधेरे से घिर गया। सत्तो की मुरदनी में बाप-भाई शामिल तो हुए लेकिन बाहरी आदमियों की तरह से ही। शाम को सूने घर में अकेली गोमती ही रह गई थी।

धन्नो बाबू अपने घर से टिफिन में खाना लेकर आए। अकेला घर, करुणा से ओत-प्रोत गोमती अपने हितचिन्तक से लिपट गई : "अब मेरा क्या होगा धन्नो बाबू ?"

गोमती के निष्काम आलिंगन ने धन्नो के मन में कामजनित करुणा उमगा दी। करुणा से चूमा-चिपटाया, कसमें दिला-दिलाकर थोड़ा बहुत खिला भी दिया और कहा : "देखो भाभी, अब कल-परसों में ही तुमरे ससुर और जेठ तुमरी दुकान पै कब्जा करने के लिए आवेंगे, तुम कहना कि तेरही से पहले हम ताली-कुंजी नहीं देंगे। इस बीच में दुकान से माल निकालकर मैं तुम्हें दे जाऊंगा। घबरात काहे हो, सत्तो नहीं तो हम तो हैं।"

इसी बीच में गोमती से ताली लेकर धन्नो ने चोरी-छिपे सत्तो की दूकान

खोलकर आधा माल अपने घर में और आधा गोमती को पहुंचा दिया। सोने की तरावट में पति का दुख कम हुआ, धन्नो ने ठौर-कुठौर हाथ फेरते हुए उससे कहा : "अब तेरहीं यहां कर लो, फिर तुम्हें दूसरा घर दिलवाकर पहले ये गहने-रुपये तुमको ले जाकर बैंक में जमा करा दूंगा फिर ताली देना सालों को। तुम घबराती काहे हो। तुम देखना, हम तुम्हें रानी बनाकर रखेंगे, सोने से मढ़ देंगे तुम्हें।"

स्वर्गीया सत्यनारायण के पिता और भाई को जब दूकान की चाभी सौंपी गई तब उसमें प्राय: नहीं के बराबर ही माल रह गया था।

इधर धन्नो के पिता भी अपने इकलौते पुत्र को नये प्रपंच में फंसते देखकर चिन्तित हुए। सत्तो और धन्नो के पिताओं ने आपस में मिलकर यह तय किया कि झगड़ा-झंझट करने से कोई लाभ नहीं। इसको इसके मैके भेज दो तो दोनों का संकट टले।

इस प्रकार बहुत से प्रपंच होकर गोमती अपने भाई के पास बम्बई पहुंची थी। और बम्बई से चौक की पुश्तैनी हवेली में। बड़े ताया डॉ० देशदीपक के यह कहने पर कि हवेली का बंटवारा अभी पक्का नहीं हुआ, वह सनाका खा गई। पास ही के महल्ले में बिरादरी के एक नामी वकील विशम्भरनाथ रहते थे। कम्मो पुरतानी की मार्फत ही उनके पास पहुंची। वकील विशम्भर बाबू से गोमती का मन मिल गया, वह अब उनके यहां आते-जाते हैं मगर कोई कुछ नहीं बोल सकता। विशम्भर बाबू के साथ गोमती उस साल इलाहाबाद की नुमाइश भी देखने गई थी। सेठानी-सी रहती है, कीर्तन-बरत-पूजन करके भक्तिन भी बनी रहती है और वकील साहब के साथ दुनिया के सारे काम भी चलते ही रहते हैं। अब उसकी श्यामकुमारी आर्या से भी अच्छी जान-पहचान है। दुखी श्यामकुमारी का सुखानन्द स्वामी से फिर मेल-मिलाप कराने में भी वह काफी हद तक सफल हो गई।

काशी बाबू को टी० बी० हुई, साल-छ: महीने खटिया भोगकर वह स्वर्ग सिधार गए। हंसो उन्हें देखने के लिए दो बार कानपुर से आया था मगर अपने माता-पिता के घर नहीं गया। कौशल्या और देशदीपक दोनों ही को इससे गहरी चोट लगी थी। देशदीपक बोले : "चिन्ता मत करो कुशलो, दिसम्बर में जयन्त आने ही वाला है। उसका विवाह करके घर में बहू का सुख भी भोग लेना। यह गिल्लूमल की लड़की तो बहुत ही नकशेवाली निकली। मेरी एक छोटी-सी बात को तिल का ताड़ बनाकर इसने हंसो को हमसे अलग ही कर दिया। मैंने इस लड़के से ऐसी आशा कभी नहीं की थी।"

दिसम्बर की बीस तारीख को बैरिस्टर जयन्त टण्डन जहाज से बम्बई आने-वाले थे। देशदीपक ने कौशल्या से कहा : "भई, मेरी तबियत तो होती है कि बम्बई जाकर अपने बेटे का स्वागत करूं। पर क्या करूं, मेरी हिम्मत नहीं पड़ती कुशलो। शरीर गिरा पड़ता है। सांस लेने में भी भारीपन लगता है।"

"जाने की जरूरत नहीं। मैं आशू को कहलवाय देती हूं। वह बम्बई जाकर जयन्तू को ले आएगा। वैसे तो हंसो को भी अगर लिख दो···"

"कोई जरूरत नही। जिस लडके ने अपनी पत्नी की इच्छाओ के आगे अपने माता-पिता की अवहेलना की, उससे अब मेरा कोई मानसिक सम्बन्ध नही रहा, कुशलो, माफ करना। हां, चाहो तो आशू को बम्बई जाने के लिए कह दो। या तुम भी आशू के साथ ही चली जाओ। जयन्तू खुश हो जाएगा।"

"मैं आपको छोडकर कही नही जाऊंगी। मैं डॉक्टर विलियम के पास अभी जाती हूं, तुम्हारी चैकिंग होनी चाहिए।"

डॉक्टर देशदीपक हंसे, बोले : "अरे, ऐसी घबराने की कोई बात नही, अभी अस्पताल जाऊगा तो मैं खुद ही विलियम से सलाह ले लूंगा।"

उस दिन तो डॉक्टर साहब अस्पताल गए, पन्द्रह को भी गए, मगर जल्दी ही लौट भी आए। कुशलो ने पूछा . "जल्दी क्यो चले आए? आपका चेहरा भी आज बहुत उतरा-उतरा है।"

"अरे, कोई खास बात नही। एक मरीज की पैर की हड्डियो को सेट करने मे थोड़ी मशक्कत पड़ गई। दो जगह से फ्रैक्चर हुए थे। खैर, यह अन्तिम जिम्मेदारी भी इज्जत से निभी।"

कुशलो चौंकी : "अन्तिम क्यो?"

"आज अनुभव किया कुशलो, कि मेरे हाथ अब कापने हैं, बूढा हो चला न?"

कुशलो ने फिर कुछ न कहा। महराजिन को डाइनिंग टेबुल पर थालिया परोसने का आदेश देती हुई स्वयं भी रसोईघर की ओर चली गई। सोलह को अस्पताल जाने की हिम्मत न पडी, नौकर के हाथ रुक्का लिखकर भेज दिया। डाक मे 'पायनियर' आया, उसे पढ़ने लगे। पहली बार अनुभव किया कि उन्हे अब कम दिखलाई देता है। फिर भी कुछ-कुछ पढने की कोशिश की, नीद आ गई। दो बजे अस्पताल से घर जाते हुए डॉक्टर चक्रवर्ती आए "कैसी तबियत है टण्डन?"

"कुछ नही यार, यो मैं चंगा हूं।"

"चगे कहा हो, इतने बोलने मे ही हाफ गए, क्या बात है। पलग पर लेट जाओ। मैं जरा देखूगा तुम्हें।"

बड़ी अनख के साथ डॉक्टर देशदीपक आरामकुर्सी से उठे और अपने पलग पर जाकर लेट गए। डॉक्टर चक्रवर्ती ने स्टेथिस्कोप लगाकर पीठ और छाती का परीक्षण किया, पेट भी दबाकर देखा और बोले . "टण्डन, तुम्हारे फेफड़े कफ से जकडे हुए है यार। सबकी परवाह करते हो और खुद अपने साथ यह लापरवाही।"

कुशलो अपने कमरे में डॉक्टर चक्रवर्ती के आने की सूचना पाकर पति के आरामघर में आईं। "नमस्ते डॉक्टर साहब। आपने इनकी चैकिंग कर ली ?"

"हां-हां भाभी, कोई चिन्ता की बात नहीं। ठीक हो जाएगा। बाकी अपने पति से बोल दीजिए कि मस्जिदों में चिराग जलाने से पहले अपने घर में प्रकाश करें। मैं कल डॉक्टर विलियम से कहूंगा कि इन्हें दो महीने के वास्ते छुट्टी दे दें। आप इनको लेकर कहीं भाग जाइए। गो टू लाहौर।"

"अभी तो डॉक्टर साहब नहीं जा सकती। परसों मेरा जयन्त जहाज से आ रहा है। ये तो बहुत जिद कर रहे हैं कि बम्बई चलो, बम्बई चलो, पर मैंने ही रोक दिया।"

"वेश-वेश। अच्छा किया, इनको आराम की जरूरत है। बेटा के आ जाने से डॉक्टर टण्डन को रूहानी रेस्ट मिल जाएगा। टण्डन, मैं जाते ही दवा भेजता हूं।"

सोलह की रात सो न सके, खांसी आती रही, पत्नी ने पास बैठना चाहा, किंतु उन्होंने कसम देकर कहा : "जाओ, आराम करो।"

पति की कसम को मान देने के लिए कुशलो चली तो गईं पर बाहर ड्राइंग-रूम में ही कोच पर बैठ गईं। उनका मन भीतर-ही-भीतर किन्हीं तरह-तरह की आशंकाओं से घिरकर गुम हो गया था। सोचा, हंसो को बुला लें, फिर सोचा, यह कहीं उसे देखकर गरमा गए तो ?

फिर खांसी का दौरा पड़ा। कुशलो पति के पास पहुंच गई, छाती सहलाने लगीं। सिर पर हाथ रखा तो देखा डॉक्टर साहब को बुखार भी चढ़ आया है। सुबह होते-न-होते तक डॉक्टर साहब को ट्रेम्प्रेचर एक सौ चार डिग्री था। श्रीमती कौशल्या टण्डन यों तो हौंसलेवाली महिला हैं पर मन भीतर-ही-भीतर रुआंसा हो रहा है। घबराहट भी बढ़ रही है। दस बजे सिविल सर्जन डॉक्टर विलियम, डॉक्टर चक्रवर्ती और डॉक्टर खरे एक साथ आए। देशदीपकजी का स्वास्थ्य परीक्षण किया। सिविल सर्जन ने कहा : "यह तो निमोनिया का केस है।"

अस्पताल से दो नर्सें भेज दी गई। यों डॉक्टर लोग श्रीमती टण्डन को दिलासा दे गए थे, पर नर्सों को आता देखकर उनका माथा ठनका। रह-रहकर मन में यह कचोट होने लगी कि इस वखत हंसो और उसकी बहू यहां आ जाय तो कैसा हो। पर फिर सोचा, कक्कड़जी को खबर करूं, वो जयन्तू की होनेवाली बहू को लेकर आ जाएं। बड़े की बहुरिया को देखकर शायद इनका मन खुश होगा। खुशी से बीमारी कम होती है। अजीब-अजीब मन के तर्क लगाए, फिर एकाएक राम-भरोसे कम्पाउण्डर को बुलाया, उसे रुपये दिए और श्री पुरुषोत्तमदास कक्कड़ का पता भी।"

बुखार चढ़ता जा रहा है, यूडीकोलोन के शीतल सुगन्धित जल में पड़े हुए

छोटे तौलिए निचोड़-निचोड़कर नर्सें बदन को पोंछ रही हैं। नर्सें बस काम कर रही हैं, कौशल्या टण्डन केवल अपने पति को ही देख रही हैं और उन्हें कुछ नहीं दिखलाई दे रहा है। मन भी पत्थर हो गया है। रात के दस बजे रामभरोसे कम्पाउण्डर उनके साथ पुरुषोत्तमदास कक्कड़ और उनकी पुत्री मनोरमा, लाला गिल्लूमल, हंसो और उसकी पत्नी ने चम्पक मैन्शन में प्रवेश किया। मां को देखकर तसल्ली हुई, लेकिन पिता देशदीपक बेहोश थे। हंसो अपने पिता के सिरहाने ही बैठ गया और वहीं बैठा रहा। गिल्लूमल और कक्कड़जी समधिन के पास ही आकर बैठ गए। हंसो की पत्नी लच्छो और मन्नो भी उसी कमरे में अलग बैठी हुई आपस में बातें कर रही थीं। एकाएक कुशलो ने मन्नो की तरफ़ देखा और इशारे से अपनी ओर बुलाया। मन्नो आई। कुशलो ने कहा : "बेटी, अभी तुम्हें बहू कहने का हक तो मुझे नहीं है, पर तुम्हीं जाओ। भीतर जाकर महराजिन को जगाना। इन सबके खाने का..."

सुनते ही गिल्लूमल बोले : "हम लोग तो समधिनजी इस वखत कुछ खाएं-वाएंगे नहीं, हां, ये लड़कियां चाहें तो अपने वास्ते बनाय लें, हंसो भैया भी खाय लेंगे। लच्छो, यहां आओ।"

लच्छो आई और बजाय सास के पास खड़ी होने के बाप के पास खड़ी हुई। चिड़चिड़ाहटभरी कुशलो का मन और भी चिढ़ा। पास खड़ी मन्नो का हाथ पकड़कर लच्छो की अवज्ञा-सी करती हुई उससे बोली : "तुम्हीं चली जाओ भीतर बहू, महराजिन को जगाके सब देखो-भालो।"

सुनकर गिल्लूमल को बुरा लगा और सौभाग्यवती लच्छो का तोबड़ा भी चढ़ गया। लेकिन कक्कड़जी ने तुरन्त अपनी लड़की से कहा : "जैसे तुम्हारी सास जी कहती हैं वैसे ही करो, अब यही तुमरे माता-पिता हैंगे। हम तो आपके चरनों में इसे सौंपके अभी से ही उरिन हो गए हैं, बहनजी। अब बालिस्टर साहब की अवाई कब तक होनेवाली है?"

"आगू को बम्बई भेजा तो है। बीस को बम्बई में जहाज से उतरेगा, यहां पहुंचते-पहुंचते भी दो दिन तो लग ही जाएंगे। सब भगवान मालिक हैं।" कुशलो ने एक ठण्डी सांस भरी।

उन्नीस दिसम्बर, सूर्योदय से ही 'चम्पक मैन्शन' में सबकी चिन्ता बढ़ाती हुई आई। सिविल सर्जन साढ़े-नौ के लगभग बेबुलाए ही आए। डॉक्टर देशदीपक का टेम्प्रेचर तब तक और भी बढ़ गया था। ढाई डिग्री बुखार का चढ़ना बड़ी ही चिन्ताजनक बात थी, दो बजे बुखार पांच डिगरी तक पहुंचा। गले की घड़घड़ाहट भी बढ़ गई। सब चिन्ता में थे। मन्नो जितनी अपनी होनेवाली सास से चिपकी खड़ी थी, लच्छो उतनी ही दूर थी।

चार बजे लाला गिल्लूमल रानीकटरे से पण्डित रमापति वैद्य को लेकर

आए। क्षमापतिजी ने कहा : "अब तो भैया, औषधि जान्हवीतोयं वैद्यो नरायणो हरिः।"

पांच बजे सूर्यास्त के साथ लाला मुसद्दीमल के पौत्र, रायसाहब वंशीधर टण्डन के पुत्र, यशस्वी चिकित्सक और आर्यसमाजी नेता डॉक्टर देशदीपक टण्डन ब्रह्मलीन हो गए।

बीस दिसम्बर को बैरिस्टर जयन्त टण्डन का स्टीमर जिस समय बम्बई के बन्दरगाह पर आकर ठहरा होगा, आशू और जयन्त एक-दूसरे को देखकर खिल-खिला रहे होंगे. लगभग उसी समय स्वर्गीय देशदीपकजी की शवयात्रा 'चम्पक मैन्शन' से आरम्भ हुई। सड़क इनी-गिनी मोटरों और अनेकों बग्घी-फिटनों से घिरी हुई थी। वे तो थोड़ी ही देर तक सड़क पर संग-संग रहीं, लेकिन लगभग हज़ार-डेढ़ हज़ार उपकृत गरीबों की भीड़ अपने मसीहा के जनाजे में बड़ी श्रद्धा के साथ गंगाकुण्ड की ओर पैदल ही चल रही थी।

अट्ठाईस

बम्बई से आशुतोष टण्डन का तार आया था कि चौबीस की सुबह हम लोग लखनऊ पहुंच रहे हैं। यह तार लगभग उसी समय लखनऊ पहुंचा जबकि लाहौर से कौशल्याजी के भाई बृजनन्दनपुरी अपनी पत्नी के साथ आए थे। तार पाने के बाद एक बार फिर आंसुओं की बाढ़ आई, पुरीजी बिलखकर कहने लगे : "हाय, दो-तीन दिन और रह जाते तो टण्डन साव कम-से-कम अपने होनहार पुत्तर को देख तो लेते। बड़े बहादुर थे। इतने बरस हो गए पर पुराने लोगों में अभी तक टण्डन सा'ब की तारीफ़ होती है।"

उसी दिन शान्ति हवन था, काफी भीड़-भाड़ थी। प्रसाद के दोने बनवाना, घर में आए हुए रिश्तेदारों के खाने-पीने का प्रबन्ध करना, यह सब कुछ मन्नो ही अपनी होनेवाली सास के आदेश से कर रही थी। सौभाग्यवती लच्छो अपनी उपेक्षा के कारण अपने ऊपरवाले कमरे में जाकर बैठ गई थी। हवनोपरान्त बाहर की भीड़ जाने के बाद गिल्लूमल ने अपने दामाद से पूछा : "हमरी लच्छो कहां है भैये, वो नहीं दिखलाई पड़ रही है।"

हंसराज टण्डन ने उदास स्वर में कहा : "यहीं कहीं होगी, मेरी जान में ऊपर चली गई हो।"

"तुमरी महतारी ने तो भैये हमरी लच्छो को दूध की मक्खी की तरह से निकालकर फेंक दिया, जैसे वह घर की बहू ही न हो।"

हंसो चुप रहा। गिल्लूमल फिर बोले : "इत्ते नाते-रिश्तेदार आए भए हैंगे, ऊ लोग अपने मन मे क्या सोचते होंगे। तुमरी माताजी तो बस मन्नो-मन्नो-मन्नो करती रहती हैंगी। अभी ब्याह भी नही हुआ उसका। हमरा जी खट्टा हुई गवा। देखो कहा है लच्छिया, उसे जाय के तसल्ली देओ, बड़ी दुखी होगी बिचारी। और हम तो भैया आजै 'कम्पू' चलें जाएंगे। हुअन न तुम होगे न हम, काम का हरजा हुई रहा होयगा। और फिर मुकाम चुकाय के लिए तुमरी भाभो को भी किसी के साथ यहा भेजना होयगा।"

"उन्हें भी अपने साथ ले जाइए, मैं तो बड़े भैये से मिलकर ही आऊंगा। पर उनका जी मन-ही-मन बहुत दुखी हो रहा है। मुझे भी इस बात का बहुत मलाल है कि माताजी ने उनकी इतनी इन्सल्ट की है।"

गिल्लूमल उसी शाम कानपुर चले गए। लच्छो ने उनके साथ ही जाने को बहुत कहा पर गिल्लूमल ने उसे समझा-बुझाकर रोक दिया, कहा : "तुम हंसो के साथ आना। वह भी बालिस्टर साहब से मिलकर तुरन्त ही कम्पू चले आवेंगे।"

ऐशबाग स्टेशन पर लाहौर से आए हुए वृजनन्दनपुरी और दस-पाच आर्य-समाजी नेता भी खड़े हुए थे। मन्नो के पिता पुरुषोत्तमदास कक्कड़ अपने किसी रिश्तेदार के यहा रानीकटरे में टिके हुए थे। वह लगभग उसी समय वहा पहुचे जब गाडी सिगनल के करीब आ चुकी थी। कक्कड़जी ने पुरीजी को और पुरीजी ने कक्कड़जी को हाथ जोडन किया। पुरीजी ने पूछा . "आप नही गए कानपुर ?"

"हे-हे, मैं भला कैसे जा सकता था बाबूजी ! आज बैरिस्टर साहब की अवाई थी और मन्नो से समधिनजी ने कहा, तुम अभी नही जाओगी।"

"आपकी कन्या पर मेरी भैण को अभी से भौत बिश्वास हुइ गया है।"

"मेरे बड़े भाग हैं, आप सब लोगो की किरपा है बाबूजी, क्या कहूं। इक्के-वाले ससरे ने बड़ी घिस-घिस चाल से यहा पहुचाया, फिर भी पहुच तो गया आपके चरनो की दया से, हे-हे।"

गाड़ी स्टेशन पर आ गई। कुलियो की चहल-पहल और उतरनेवाली सवा-रियो की भीड़-भाड़ में फस्ट क्लास की कम्पार्टमेंट ढूढने में तनिक देर लगी। बैरिस्टर जयन्त टण्डन धोती और कुर्ता पहने हुए ट्रेन से पहले उतरे। उनकी नजरें अपने पिता को ढूढ रही थी। आशू बाबू कुली से सामान उतरवा रहे थे। पुरीजी और आर्यसमाज के दो-तीन पुराने कार्यकर्ताओं ने जयन्त को पहचान लिया। जयन्त ने अपने मामा के पैर छुए, छाती से लगाया। "पिताजी नही आए मामाजी, क्या बात है ? आप यहा कैसे आ गए ?"

"ऐसे ही चला आया भैये ! रस्त मे कोई कष्ट-अष्ट तो नही हुआ तुम्हे। ये तुम्हारे होनेवाले ससुरजी हैं कक्कड़ सा'ब।"

कक्कड़जी अपने होनेवाले दामाद की भव्य छवि देखकर शोक के बावजूद

मुस्कुरा रहे थे।

"तुम अब चौक जाओगे बड़े भैये ? चलो, पहले तुम्हें घर छोड़ आएं। फिर घर जाएंगे।" जयन्त ने पूछा।

"वाह, तायाजी और ताईजी के चरनों में अपना परनाम तो कर आऊं। उनकी तबीयत का हाल-चाल भी पूछ लूंगा।"

"उनकी तबीयत के बारे में तो तुमने अभी तक बतलाया ही नहीं, आशू भैये। क्या बीमारी हुई है उन्हें।"

"घर चलो भैये, सब मालुम हुई जावेगा।"

अपना शहर, जाने-पहचाने रास्ते, स्मृतियों का लट्टू तेजी से नचाने लगा। रास्ते-भर कोई किसी से कुछ न बोला। 'चम्पक मैन्शन' में प्रवेश किया। मोटर की आवाज़ सुनकर हंसो और सब नौकर-चाकर बाहर आ गए।

हंसो का घुटा सिर देखकर जयन्त का माथा ठनका। हंसो ने भाई के चरण छुए। "क्या बात है ? तुम सबके चेहरे उदास नजर आ रहे हैं। पिताजी कैसे हैं ?"

बृजनन्दन बिलखकर रो पड़े : "क्या कहें पुत्तर, कुछ कहते-सुनते नहीं बनता, आओ, भीतर चलें।"

मां ड्राइंगरूम में ही आ गई थीं। बड़े बेटे को देखकर छाती से चिपटा लिया और फफक-फफककर रो पड़ीं। काफी देर तक मां-बेटे एक-दूसरे को छाती से चिपटाए रहे, फिर जयन्त बोला : "पिताजी को क्या हुआ था, मां ?"

"डबल नमूनिया हो गया था भैयेजी, पांच ही दिन में चट्-पट् हो गए।"

सुनकर जयन्त का कलेजा धक्-से रह गया। "तू पिताजी के सामने ही आ गया था, हंसो।"

"हां, मैं तो खैर आपकी अगुआनी में आने ही वाला था, उस पर पिताजी की बीमारी का तार पहुंचा।"

जयन्त धम्म-से कुर्सी पर बैठ गया। बड़ी देर से रुके हुए आंसू फूट-फूटकर बह चले। कौशल्या ने अपने को किसी हद तक सुचित्त कर लिया था। बेटे के माथे पर हाथ फेरकर बोलीं : "शान्त हो जा बेटे, होनी को कौन टाल सका है। तुझे देखने की बड़ी लालसा थी। बार-बार कहते थे—एक बार झटपट अच्छा हो जाऊं तो जयन्तू को लेने बम्बई जाऊं, फिर बेहोश ही हो गए।"

आशू बोला : "खोखा तायाजी ने मुझसे कहा—तू बम्बई चला जा बेटे। मैं उसे यहीं देख लूंगा। तबीयत ठीक रही तो स्टेशन पर जाके अपने जयन्तू को ले आऊंगा। उन्हें यह दिन भी देखना नहीं बदा था।"

आशू की आंखों में भी सावन-भादों की झड़ी लग गई। दोनों नौकर और महराजिन भी अपनी आंखें पोंछ रहे थे।

"महराजिन, भीतर से मन्नो को बुला लाओ।"

मन्नो आधा घूघट काढ़े आई। "बेटी, ये चाबी ले। ऊपर इसके कमरे में इसका सन्दूक खोलकर कपड़े निकाल, गरम पानी तैयार करवा। जानेवाला तो चला गया, शोक जनम-भर का है।"

"बड़े भैये, तू नहा-धोके एक बार कमिश्नर साहब से मिल आ। उनकी शोक की चिट्ठी आई थी।"

"बड़ी बहू, इसको लेके ऊपर जा। महराजिन तुझे इसका कमरा दिखा देगी।" जयन्त ने एक नजर उठाकर मन्नो को देखा। "हसो की बहू कहा है मा?"

"होएगी यही कहीं।" रूखे स्वर मे मा ने उत्तर दिया।

सुनकर हसो का चेहरा कस गया। लच्छो दरवाजे के पीछे खड़ी थी। हसो बोला : "यही है। सुनती हो, आओ, बड़े भैये के पैर छुओ।"

लच्छो घूघट काढ़कर ड्राइगरूम में आई। जयन्त के पैर छुए। जयन्त ने उसके सिर का घूघट ऊचा करके उसे देखा और कहा . "हमारे यहा ये घूघट-ऊघट नही चलता। मा से पूछो, मेरे बाबा ने दादी से भी कभी घूघट नही डलवाया। अच्छा जाओ, सबके खाने-पीने का इन्तजाम देखो।"

"वो सब बड़ी देख लेगी। तू नहा-धो, अश्नान-वश्नान कर।"

जयन्त को आभास हुआ कि मा अपनी छोटी बहू को अधिक पसन्द नही करती। इग्लैण्ड मे मिले स्वर्गीय पिताजी के एक पत्र से उसे यह अनुमान लग गया था कि वह और मा हसो के कानपुर मे रहने के कारण नाखुश है। पिताजी के पत्र की एक पक्ति उसके ध्यान मे आई—"हसो की वाइफ़ बडी घमण्डिन है।" जयन्त सब लोगो को हाथ जोड़कर ऊपर अपने कमरे मे गया। मनोरमा सन्दूक के ताले मे चाबिया घुमा-घुमाके देख रही थी। जयन्त ने उससे कहा . "लीव इट, आइ नो द की आफ माई बाक्स।"

मन्नो एकान्त मे खुलकर बोली। उसने भी अग्रेजी मे ही जवाब दिया : "लेकिन मुझे भी अब हर चीज पर ध्यान रखना होगा।"

"देखता हू, तुमने इन चार-पाच दिनो मे ही मा का मन जीत लिया है।"

सन्दूक खुल गया था और मन्नो पूछ रही थी "आपके लिए इसमे से क्या निकालू?"

"मेरे इग्लैण्ड से आए हुए बक्से पहले ऊपर मगवा लो। अभी तो सूट ही पहनूगा।"

"अभी से क्यो, पहले आप एप्वाइन्टमेंट का लेटर तो लिखेंगे। मैं समझती हू, आप शाम को ही कमिश्नर साहब के यहा जाएगे।"

मन्नो की पीठ पर प्यार से हाथ फेरते हुए जयन्त बोला "देखता हू, तुम काफी समझदार भी हो।"

मन्नो ने लजाकर सिर झुका लिया। दरवाजे पर गयादीन की आवाज आई :

"बड़ी बहू, बड़े बच्चा का पानी गुसलखाने मां रख दिया है। और कुछ काम है?"

"महराजिन से कहो, खाना बनाने की तैयारी करे। मैं अभी आ रही हूं।"

वह जाने लगी, जयन्त ने उसका हाथ पकड़कर रोक लिया और चेहरा उठाकर उसकी बड़ी-बड़ी आंखों से आंखें मिलाईं : "यू आर ए स्वीट गर्ल। मेरा खयाल है, मेरी-तुम्हारी अच्छी निभेगी।"

जयन्त का वासनामूलक मन उसे चिपटाकर चूमने का लालच न छोड़ सका। मनोरमा लजा गई : "छोड़िए, मुझे अभी बहुत काम है।" और वह भावी पति की बांहों को झटककर बाहर चली आई।

कमरे से बाहर जाते हुए एक बार फिर उसने अपने वाक्‌दत्त सौभाग्य देवता को देखा। दोनों मुस्कुराए।

नहा-धोकर अपनी पुरानी ऊनी बनियान और कुर्ता पहनकर जयन्त नीचे उतर आया। मां 'बिछौने' पर बैठ गई थी। बाहर की कुछ स्त्रियां भी उस समय तक उसके पास आ गई थीं। जयन्त सीधे ड्राइंगरूम में ही आया। कक्कड़जी और आशू दोनों ही हंसो के पास बैठे थे। बात शुरू करने के लिए हंसो बोला : "आज सर्दी काफ़ी है। मेरा ख्याल है कोल्डवेव आई हुई है।"

"लेकिन मैं अब इतनी सर्दी का आदी हो गया हूं, फिर भी यह कमरा खासा गर्म है। तुम्हारा बिज़नेस कैसा चल रहा है हंसो? लेकिन मैंने तुम्हारे ससुर को नहीं देखा।"

"उन्हें दूकान सम्हालनी थी और अब तो आप आ ही गए हैं बड़े भैये, मैं भी जल्द ही चला जाऊंगा।"

"नहीं, तुम अभी कैसे जा सकते हो, अभी तो पिताजी की कन्डोलेन्स मीटिंग होनी है।" फिर आशू की ओर मुंह उठाकर उसने कहा : "पिताजी के एक लेटर में इस बात का भी जिक्र था कि हंसो के ससुर तुम्हारे भी कुछ रिश्तेदार हैं, आशू भैये।"

"हां, मेरे दूर के मौसा लगते हैं।"

"मैं शाम को कमिश्नर के यहां जाऊंगा ही, उनसे तारीख तय कर लूं। उसके बाद तुम अपने फ़ादर-इन लॉ को लेटर लिखकर मीटिंग के दिन बुला लेना।"

"नहीं बड़े भैये, बाबू का बार-बार आना मुनासिब नहीं होगा। उनके चले जाने से काम बहुत सफर करता है। उन्हीं की बदौलत इस साल बीस हज़ार के आर्डर्स आए हैं। इसलिए तो मैं भी जल्द जाना चाहता था।"

"खैर कुछ भी हो, तुम्हें अभी तीन-चार दिन रुकना ही पड़ेगा। वैसे मैं तो नेशनलिस्ट व्यूज़ का हूं, लेकिन फ़िलहाल मुझे अंग्रेजों से भी रिश्ता बनाए रखना होगा। कक्कड़जी, आप तो रुकेंगे।"

"हें-हें। आपकी मीटिंग से पहले ज़रूर आ जाऊंगा, वैसे हुकुम करेंगे भैयेजी

तो रुका भी रहूंगा। रानीकटरे में मेरी साली का घर है, वहीं ठहर गया हूं।"

"आप हमारे यहां क्यों नहीं ठहरते? ये घर भी तो अब आप ही का है।"

"बहुत-सी बातों में नये ज़माने को मैंने ज़रूर अपना लिया है पर कुछ बातों में पुरानी चाल-ढाल ही मुझे पसन्द आती है।"

डॉक्टर देशदीपक टण्डन के छपे हुए लेटरपैड पर पत्र लिखकर जयन्त ने कमिश्नर साहब को स्वयं धन्यवाद देने के लिए उनसे मिलने का समय मांगा। दो घण्टे में ही उत्तर आ गया—शाम को पांच बजे मिलने का समय निश्चित हुआ।

इस बीच में जयन्त सिविल-सर्जन डॉ० विलियम साहब तथा पिताजी के सहयोगी अन्य डॉक्टरों से अस्पताल में मिल आया। शाम को कमिश्नर की कोठी पर जाने से पहले जयन्त ने मां से कहा: "मां, मैं तुम्हारी बहू को भी अपने साथ ले जाना चाहूंगा—अगर तुम आज्ञा दोगी तो।"

"ले जा, मुझे कोई आपत्ति नहीं है, पर अभी किसी से यह बात कहने-सुनने की जरूरत नहीं, समझा। (धीरे-से) और हंसो की बहू के कान में तो भनक भी न पड़े।"

कमिश्नर साहब से मुलाकात बहुत अच्छी हुई। शोकसभा के लिए तीस दिसम्बर का दिन निश्चित हुआ। चलते समय कमिश्नर ने संकेत दिया कि वह एक बहुत प्रतिष्ठित कुल के एक शातिर हत्यारे को अपने कब्जे में लेने के लिए उत्सुक हैं। इस बार वह फंसकर भी पूरी तरह से कानून के शिकंजे में नहीं आया। उन्होंने कहा "मैं बैरिस्टर वेल्श को तुमसे सम्पर्क करने के लिए कहूंगा। वह शायद तुमसे चार-पांच साल ही सीनियर रहे हैं। बहुत ही अच्छे और होशियार आदमी हैं।" इतना कहकर वे मुस्कुराए, जयन्त के कंधे पर हाथ रखा और कहा: "डॉक्टर टण्डन का मैं बहुत अहसानमन्द हूं। उनके लिए जो मैं चाहता था वह न कर सका। मैं तुम्हारा अहसानमन्द होऊंगा। अगर तुम मेरी मदद कर सकोगे।"

"मैं पूरे दिल से आपकी सहायता करूंगा। सर, हां, अगर वह जेनुयिइन केस होगा तो।"

तीन-चार दिन बाद बैरिस्टर वेल्श ने बैरिस्टर टण्डन से दूरभाष पर सम्पर्क स्थापित किया। शाम को यूरोपियन क्लब में वेल्श साहब ने उन्हें दावत दी। अपनी नौजवानी के दिनों से ही जयन्त छतरमंज़िल के विलायती क्लब के बारे में बहुत कुछ सुन चुका था, भारतीय वहां प्रवेश नहीं पा सकते थे जब तक कि वह किसी अंग्रेज़ सदस्य के मेहमान न हों। जयन्त के देशी मन में उस क्लब के लिए विद्रोह था, लेकिन उसका विलायती मन वहां जाने के लिए बहुत उत्सुक भी था। कमिश्नर के आदेश पर क्लब के मैनेजर ने एक अलग छोटे-से कमरे में बैरिस्टर वेल्श और बैरिस्टर टण्डन की एकान्त वार्ता का प्रबन्ध कर दिया था। जयन्त को बहुत-सी बातें मालूम हुईं।

कुन्दनपुर अवध की एक ताल्लुकेदारी रियासत का नाम था जिसके राजा अछयवरपालसिंह को बृटिश सरकार से परम्परागत राजा की पदवी प्राप्त थी। खासे अंग्रेजपरस्त, सम्पन्न और मेहमानवाज राजा थे। उनके दो विवाह हुए। पहली रानी गुलाबकुंवर से दो पुत्र और एक कन्या हुई। केवल कन्या ही शेष बची थी। दूसरी नेपालिन रानी ताराकुंवर से भी उनकी एक सन्तान कुंवर रिच्छपाल-सिंह का होना बताया जाता है। रिच्छपाल के जन्म की वैधता के सम्बन्ध में बड़ी रानीजी के मायके में कई गम्भीर अफवाहें फैली हुई थीं। नेपाली रक्त के कारण रानी ताराकुंवर बहुत सुन्दर थीं और यह भी सुना जाता था कि प्रायः नौ-दस बरस की उमर से ही उनकी अपने समवयस्क ममेरे भाई से कुछ उल्टी-सीधी घनिष्ठता हो गई थी जिससे बारह वर्ष की आयु में ही वह गर्भवती हो गई थीं। ताराकुंवर की मामी और मामा ने जोड़-तोड़ करके राजा अछयवरपालसिंह को लुभा लिया। बड़ी रानीजी की भावज और ताराकुंवर की मामी सगी बहनें थीं। बात उस रनिवास से इस रनिवास तक फैल चुकी थी, इसलिए रानी गुलाबकुंवर को इसका बहुत कुछ आभास विवाह से पहले से था। मैके से आए हुए जगजीत खवास की चतुराई से किसी तरह रानी गुलाबकुंवर तारा के प्रेम-सम्बन्ध और गर्भ से सम्बन्धित कुछ महत्त्वपूर्ण सूत्र पाने में सफल हो गईं। और जब राजा अछयवर-पाल ने कुंवर रिच्छपाल को अपना उत्तराधिकारी बनाने के लिए सरकार को लिखा तो जगजीत खवास इलाहाबाद में छोटे लाट साहब के सामने सारे कागज पेश कर आया जिनसे प्रमाणित होता था कि रिच्छपाल सिंह राजा मार्कण्डेय सिंह की अवैध सन्तान हैं। रिच्छपाल राजा न बन सके।

राजा अछयवरपाल इस धोखे का आघात अधिक सह न सके। रानी ताराकुंवर के प्रति उनके मन में गहरी घृणा भर गई थी। इसलिए रियासत गुलाबकुंवर के नाम लिखवाकर वह उसे कोर्ट ऑफ वार्ड्स के सुपुर्द करके कैलाशवासी हुए।

अपनी अवैधता के सम्बन्ध में जब रिच्छपाल को सारा वृत्तान्त मालूम हुआ तो अपने जन्मदाता और जन्मदात्री के प्रति उनका मन खूनी शत्रुता के भाव से भर गया। ताराकुंवर को शराब में जहर दिया गया। बोतल चमचमाई हुई बेदाग। खुला प्रमाण होने पर भी कोई यह कहने का साहस न कर सका कि अपनी माता की हत्या रिच्छपाल ने करवाई है। यह रिच्छपाल के द्वारा की गई पहली हत्या थी।

कुन्दनपुर रियासत से कोई भी अधिकार न पाने के कारण रिच्छपाल ने अपने अवैध पिता राजा मार्कण्डेय सिंह की नटई दबानी शुरू की। बारह गांवों का कब्जा मांगा। राजा मार्कण्डेय सिंह चतुर थे, अपनी गुप्त प्रेमिका के हत्यारे और अपने अवैध पुत्र को कुछ रुपये-टके और मीठी-मीठी बातों के धोखे में रखकर वह गांव उन्होंने निलहे साहब फ्रेडरिक ब्राइटन के नाम पट्टे पर लिख दिया। रिच्छपाल ने

उनसे भी बदला लिया। बिस्तर पर मार्कण्डेय सिंह मरे पाए गए। छुरे से छाती को तीन जगह गोद दिया गया था। किन्तु छुरा बेदाग, निशान भी थे तो राजा साहब के हाथ और उंगलियों के ही। न मानते हुए भी पुलिस को यह प्रमाणित करना पड़ा कि राजा मार्कण्डेय सिंह ने आत्महत्या की है। मार्कण्डेय सिंह की कीमती अंगूठियां, मोतियों की मालाएं, पन्ने के कण्ठे वगैरह गायब थे। रिच्छपाल के यहां तलाशी ली गई, मगर चील के घोंसले में मांस न मिला। कुंवर रिच्छपाल अपने प्रभावशाली अंग्रेज दोस्तों को खिला-चटाकर विलायत चले गए थे। जब लौटे तो उनके साथ एक गोरी माशूका भी थी जिसे वह अपनी सेक्रेटरी कहते थे। लौटे तो लखनऊ में बंगला लेकर ही रहे। विलायती और फ्रेंच सामानों की कुछ एजेन्सियां योरोप से ले आए थे। उनसे धन्धा भी अच्छा चल गया।

फ्रेडरिक ब्राइटन से उनकी यों ठनी कि अय्याश ब्राइटन ने संयोग से उनकी माशूका सेक्रेटरी पर अपने डोरे डालने शुरू किए और वह रिच्छपाल को छोड़कर बाजाप्ता मिसेज ब्राइटन बनकर उनके गांव की हवेली में चली गई। जिस रात शादी हुई उसी रात ब्राइटन हत्या का शिकार हुआ। और तरकीब वही पुरानी, लगता था, ब्राइटन ने ही अपनी कनपटी पर पिस्तौल दागी है। बेचारा जूलियाना के साथ अपनी सुहागरात मनाने से पहले मर गया। ब्राइटन और अवध के चीफ कमिश्नर आपस में कुछ रिश्तेदार लगते थे। कमिश्नर साहब इस बार हत्यारे रिच्छपाल को गिरफ्तार कराके फांसी पर चढ़ाने को कटिबद्ध हो चुके थे लेकिन रिच्छपाल अपने अपराधों के प्रमाण न छोड़नेवाला शातिर हत्यारा था। केवल एक ही शेप बच गई थी जूलियाना। वह उस दिन उसकी पकड़ाई में न आई और रिच्छपाल भी अपने को दूसरों की पकड़ाई में न आने देने के लिए जूलियाना से फिर कभी और समझ लेने का विचार करके भाग निकला था।

सारी कथा सुनकर जयन्त ने पूछा : "जूलियाना इस वक्त कहां है मिस्टर बेल्स ?"

"वह इस वक्त आपके बहुत नजदीक है, सिर्फ एक मंज़िल ऊपर, मिस्टर टण्डन। कमिश्नर साहब उसकी सुरक्षा के लिए इससे बेहतर कोई प्रबन्ध नहीं कर सकते थे।"

थोड़ी देर बाद ही रिच्छपाल की माशूका और ब्राइटन की विधवा मैडम जूलियाना ब्राइटन और बैरिस्टर जयन्त टण्डन एक-दूसरे के आमने-सामने थे। देखते ही दोनों एक-दूसरे से कसकर लिपट गए। जूली का भाई गोल्डस्मिथ बी० ए० में जयन्त का सहपाठी था और जूली उस वक्त लन्दन की एक दूकान पर सेल्स गर्ल का काम करती थी। जूली और जयन्त की नजरों में तभी से गुलाबी डोरे पड़ने लगे थे मगर फिर संयोग से साथ छूट गया। बहुत-सी बातें होने के बाद जयन्त ने बैरिस्टर बेल्स से यह वादा किया कि वह इस बार तीन-तीन हत्याकाण्डों

के अक्षम्य अपराधी को फांसी पर लटकवाने का वचन देता है।

इसी बीच में मन्नो और जयन्त की शादी भी हो गई। पिता का शोक होने के कारण विवाह बिना किसी धूमधाम के बहुत ही सादगी से हुआ। हंसो ने दो दिन भाई और भावज को कानपुर में रोकने का बहुत आग्रह किया। जयन्त बोला : "इसी शर्त पर चलूंगा कि तू भी लच्छो को लेकर मेरे साथ लखनऊ चलेगा। दोनों बेटों और बहुओं को देखकर मां के कलेजे में···"

"मैं जानता हूं बड़े भैये, और खुद भी यही चाहता था। मगर मां और पिता-जी के मन में लच्छो को लेकर कुछ ऐसी शुरू से ही गांठ पड़ गई कि मैं न चाहते हुए भी खुद उसी में फंस गया हूं। और कानपुर में अब मेरा बिज़नेस इस तरह से जमने लगा है भैय्ये।"

"मैं समझता हूं यार, इसीलिए बिगड़े रिश्तों को सम्हाल लेना चाहता हूं।"

"खैर, इस समय तो आप मेरा कहना मानिए। मैं चाहता हूं कि लच्छो भाभी के साथ रहे, मैं इसको मना लूंगा।"

जयन्त मन्नो के साथ रुक गया। लच्छो और मन्नो के स्वभाव में अन्तर पहचानकर जयन्त को कहीं भीतर-ही-भीतर अपने भाग्य पर गहरा सन्तोष मिल रहा था। स्वाभिमानिनी मनोरमा भी है, लेकिन उसका स्वाभिमान असंयत और कुतर्कों से मुक्त भी है। लच्छो जड़ बुद्धि है, घमण्ड ज़्यादा अकल कम। मन्नो जहां अपने से अधिक अपने पति की इच्छाओं पर अभी से अपनी दृष्टि रखने लगी है, यह विशेषता लच्छो में तनिक भी नहीं आई है। हंसो अधिकतर लच्छो की उंगलियों पर ही नाचता है, उसे नहीं नचा पाता और हुआ भी यही। हंसो अपनी पत्नी को भाई और भावज के साथ लखनऊ चलने के लिए न मना पाया। यही नहीं, बल्कि उसने हंसो को भी भाई-भावज के साथ न जाने दिया। मन्नो से बोली : "मन्नोजी, अब हम तुमको जिठानीजी तो कहने से रहे।"

"तो हमने तुमसे कब कहा कि जिठानीजी कहो। हम तो यही कहते हैं कि मैके का जो साथ है उसे चलकर ससुराल में भी निबाहो। हंसी भैये के भाई कुछ गलत थोड़ी कहते हैं। दुख के वखत लड़के-बहुओं को देखकर ही मांजी को कुछ चैन मिलेगा। तुमरा जायगा क्या, दुई दिन में फिर यहीं की यहीं अपने मियां को लेकर लौट आना। कौन तुम्हें बांधके रखेगा। हां, यह ज़रूर होगा कि आने-जाने का फाटक फिर से खुल जाएगा।"

लच्छो अकड़कर नाक की नथ घुमाती हुई बोली : "दिल कटे मिल जाएंगे हिरदय फटे मिलते नहीं। हमरे सास-ससुर ने जब हमें पसन्द नहीं किया तो हम उन्हें क्यों पसन्द करें। हम नहीं जाते उनके यहां। जब ऊ मरैंगी तबहीं हम तुमरे घर आवैंगे।"

मनोरमा फिर चुप हो गई। पति-पत्नी लखनऊ आ गए। घर सम्हालने में

मन्नो कुशल थी। सास कौशल्या से उनके मन की पटरी बैठ गई। पति की मृत्यु के बाद कौशल्याजी एक तरह से विरक्त हो चुकी थीं। सवेरे नियमित रूप से हवन करती, जीवन काल में डॉक्टर साहब उनके साथ ही बैठते थे। अब उनका चित्र, कौशल्या के दाहिनी तरफ रोज खास तौर से बनाए गए छोटे-से गोल तकिये के सहारे रखा जाता है। गायत्री का जप और हवन सम्पन्न करने के बाद पति के चित्र को यथावत् दीवार पर टांग देती हैं। फिर मनोरमा स्वयं उनके लिए दूध और फल लेकर आती है। इसके बाद जयन्त और मन्नो नाश्ता करते हैं। जयन्त और मां दोनों ही मोटरकार पर एकसाथ घर से निकलते हैं, जयन्त लालबाग स्थित अपने दफ्तर में उतर पड़ता है और मोटरकार माजी को लेकर वैदिक कन्या पाठशाला चली जाती है। लालबाग के इसी बंगले में लाहौर से आकर नव-विवाहित स्वर्गीय देशदीपक और उनकी पत्नी ठहरी थीं। फिर वह उनके प्राइवेट मतब के रूप में उनके पास रहा, अब वहां बैरिस्टर जयन्त टण्डन का दफ्तर है। पिताजी के पुराने कम्पाउण्डर रामभरोसे अब भी वहीं बरकरार हैं और बंगले की चौकसी करते हुए तीन काम करते हैं—कुर्सी पर बैठे-बैठे ऊंघना, फिर एकाएक चौंककर दोनों मालियों को कामकाज के लिए फटकारना, तीसरे बीड़ियां पीना।

जूलियाना का आना इधर अक्सर होने लगा है, रिच्छपाल सिंह के प्रति गहरी सतर्कता बरतने की दृष्टि से जूली के आने पर विशेष सतर्कता बरती जाती है। जूली योरोपियन क्लब से मुसलमान औरतों की तरह बुरका ओढ़कर आती है और बैरिस्टर साहब के खास कमरे में पहुंचा दी जाती है। वहां परिन्दा पर नहीं मार सकता। रामभरोसे बरामदे की कुर्सी पर ही जमे रहते हैं। लेकिन धीरे-धीरे रामभरोसे को यह जरूर खलने लगा है कि उस कंजी आंखोंवाली, गोरी छमक-छल्लो के साथ बड़े भैये खाते भी हैं, पीते भी हैं। बड़े भैये के रंगीन स्वभाव से महाशय रामभरोसे कुछ-कुछ परिचित तो थे ही, इसीलिए अब यह सोचने लगे कि कहीं इस गोरी बिल्ली ने बड़े भैये पर डोरे डाल दिये तो मैं माताजी से क्या कहूंगा, बहूरानी को कौन-सा मुंह दिखाऊंगा। एक दिन उनसे न रहा गया। अकेले में बोले - "बड़े भैयेजी, आपकी अदालत में अपना मुकदमा पेश करना चाहता हूं।"

जयन्त समझ गया, मुस्कुराया, रामभरोसे के कन्धे पर हाथ रखा और झुक-कर कान में कहा : "कमिश्नर साहब की रिश्तेदार है, इसीलिए खातिर करता हूं। उस कुन्दनपुरवाले को एक बार फांसी चढ़वा दूं तो फिर यह तुम्हारे यहां नहीं आएगी। समझा करो बुड्ढे मियां। कभी तुम भी तो जवान मरीज़ों को आगे की लाइन में खड़ा करके बुढ़ियों को पीछे ढकेल दिया करते थे, अपनी याद करो यार!"

रामभरोसे झेंपे नहीं - "अरे भैये, हमारी तो गरज बावली रहै, ससुर दुई-दुई

ब्याह किए मगर मर गईं सालियां, अब हम क्या करें। सो डॉक्टर साहब से नजर बचाके कुछ खेल-खिलौने खेल लिया करते थे। मगर तुमरी तो भगवान की दया से अभी नई-नई सादी हुई है और बहूरानी साक्षात् लच्छमी आई है।"

ब्राइटन हत्याकाण्ड का मुकद्दमा गहरे रंग ला रहा था। सरकारी वकील बैरिस्टर वेल्श ने कानून के बड़े-बड़े दांव-पेंच दिखलाए मगर रिच्छपाल के वकील उन्हें तरह देते रहे। एक दिन वह बीमार पड़े। उनकी सलाह थी कि पेशी की तारीख आगे बढ़वा दी जाय मगर जयन्त ने इसरार किया कि वह उनकी अनुपस्थिति में मुकद्दमे को आगे बढ़ाएंगे। जयन्त ने रिच्छपाल से जिरह की: "जूलियाना गोल्डस्मिथ से आपकी कब मुलाकात हुई थी?"

"लण्डन में, सन् दस के आखीर में।"

"तब वह कहां काम करती थीं?"

"टाम्सन एण्ड डेवीज़ के डिपार्टमेण्टल स्टोर्स में।"

"आप उस दूकान से हीरे का हार चुराने के सिलसिले में गिरफ्तार हुए थे?"

"हरगिज़ नहीं।"

रिच्छपाल के वकील ने भी जयन्त के इस प्रश्न पर आपत्ति उठाई। जयन्त ने लण्डन की उक्त फर्म द्वारा की गई पुलिस रिपोर्ट की नकल पेश कर दी। रिच्छपाल बोले: "हां, मगर दूकानवाले मुझ पर चोरी का इल्ज़ाम साबित न कर पाए और मैं बाइज्ज़त छूटा था।"

"बाद में वह हार आपने मिस जूलियाना को दिया था?"

"मैंने कभी नहीं दिया।"

जयन्त ने जूली के प्रति मीठे रस-भरे शब्दों से जड़े हुए एक रोमाण्टिक पत्र को पेश किया जिसके द्वारा वह हार उसे अर्पित किया था।

"वह हार मैंने खरीदा था।"

"रसीद पेश कीजिए।"

"इन छोटी-छोटी चीज़ों को मैं ओवरलुक कर जाता हूं। मुझे पता नहीं, रसीद कहां है।"

"खैर, इसके बाद ही मिस जूली गोल्डस्मिथ की नौकरी उस दूकान से छूटी थी।"

"मैं नहीं जानता।"

"मगर यह तो आप जानते हैं कि इक्कीस मार्च सन् ग्यारह को आप मिस जूली गोल्डस्मिथ को अपनी निजी सचिव बनाकर उन्हें हिन्दुस्तान लाए थे।"

"जी हां, याद है।"

"जूली की नौकरी क्यों छूटी, यह याद है?"

"मैं इन बातों में दिलचस्पी नहीं रखता।" वकील ने भी इस प्रश्न पर आपत्ति उठाई।

मुकद्दमा रंग लाने लगा। रिच्छपाल के क्रूर विनामी व्यवहार से त्रस्त होकर जूली ने भारत में नये-नये परिचित होनेवाले ब्राइटन से मेल-मिलाप बढ़ाया जो रिच्छपाल को नापसन्द था। रिच्छपाल ने जूली को धमकी भी दी कि मैं तुम्हें कत्ल कर दूंगा, मगर जूली सतर्क थी और ब्राइटन भी। गुप-चुप विवाह हुआ और वे चले आए। रिच्छपाल के लिए यह असह्य था, वह क्रोधान्ध हो उठा। ब्राइटन को अपने गांव की हवेली में आए हुए दो घण्टे भी न बीते थे कि रिच्छपाल ने हवेली के पुस्तकालय कक्ष में बैठे हुए ब्राइटन के पीछे से जाकर उसकी कनपटी पर पिस्तौल दाग दी। रिच्छपाल रबड़ के दस्ताने पहने हुआ था। मारने के बाद ब्राइटन के ही हाथ में पिस्तौल दबाकर वह भाग निकला। गोली की आवाज़ सुनकर दूसरे कक्ष में दासियों के द्वारा शृंगार करवाती हुई जूली लाइब्रेरी की ओर दौड़ी। उसने मृत ब्राइटन के हाथ में पिस्तौल थमाते हुए रिच्छपाल को देखा था। जूली चीख पड़ी। मगर रिच्छपाल उस समय अपने को बचाने की घबराहट में ब्राइटन के घर से भाग निकला। अन्तिम गवाही श्रीमती जूलियाना ब्राइटन की ही हुई थी। जूलियाना के द्वारा लौटाया हुआ चोरी का हार गांव की सीमा के निकट नाले में मिला। खून-सना दस्ताना ही नहीं बल्कि कातिल पिस्तौल का वह लाइसेंस भी अदालत में पेश किया गया जो रिच्छपाल के नाम से दिया गया था।

रिच्छपाल बच न पाया, मातृहन्ता, अवैध पितृहन्ता, ब्राइटन का हत्यारा रिच्छपाल फांसी के फन्दे पर झूल गया। बैरिस्टर जयन्त टण्डन इस केस के बाद नामी बैरिस्टरों की गिनती में आ गए।

युधिष्ठिर की गाड़ी फिर अटक गई। अपने स्वर्गीय बाबा के बहुआयामी व्यक्तित्व के चारों ओर उसकी यथार्थ-सचालित कल्पना रॉकेट की तरह परिक्रमा करने लगी। जयन्त ने एक बैरिस्टर के नाते नई सफलता प्राप्त की। अम्मो बाबा बतलाते थे कि उन्होंने मेरी सगी दादी के बहुत लाड़ लड़ाए। हर मुकद्दमा जीतने के बाद उनके मेहनताने की दिनों-दिन बढ़ती आनेवाली धनराशि दो भागों में बटती थी, कभी गहने, कभी साड़ियां और कभी-कभी अपनी पत्नी के लिए चुन-चुनकर किताबें भी लाया करते थे। मन्नो उनकी मां की बहुत सेवा करती थी, सच पूछो तो सास की मुंहलगी होने के कारण मन्नो के मिजाज हमेशा ऊंचे आसमानों में ही उड़ा करते थे।

युधिष्ठिर सोचने लगा कि फिर वह बाबा की पीने-पिलाने की आदत को क्यों न रोक सकीं। जिस स्त्री ने अपनी सास को, सारे घर को अपने वश में कर रखा

था वह अपने पति को क्यों न कावू में रख पाई।

एक दिन शाम को दफ्तर से जल्दी आने का संयोग वन गया। कुछ थका था, सिर में दर्द भी था, घर चला आया। तब तक शकुन अपने कॉलेज से पढ़ाकर नहीं लौटी थी। अंशू वावा के कमरे में सामने ही खड़ा था। पिता को देखकर उछलने लगा : "बावा डैडी, डैडी-डैडी···डैडी आइए, डैडी आइए।"

शारदा पति के लिए सेव के टुकड़े काट रही थीं. आवाज़ दी : "नन्हा भला आया, यहीं आ जा। चाय तैयार है।"

सुमन्त तकिये के सहारे तखत पर अधलेटे धीरे-धीरे सेव का टुकड़ा चवा रहे थे। "आज जल्दी कैसे आ गए नन्हा?"

"सवेरे ज़ल्दी भी तो चला गया था।"

"तेरा चेहरा वहुत तमतमाया हुआ है? क्या वात है नन्हे?"

"कुछ नहीं अम्मा, थोड़ा सिर में दर्द है, कोई खास वात नहीं।"

मां ने उसके आगे भी कुछ कटे हुए सेव एक प्लेट में दिए, कहा : "भूखा होगा। तेरे लिए पनीर पकौड़े वनवाती हूं। (पति की ओर देखकर) आप भी खा लीजिएगा।"

"हमचे कों नई पूछा? हम नई खाएंगे।"

अंशू का मुंह फूल गया था। शारदा मुस्कुराई : "अरे तेरे लिए ही तो वनवा रही हूं मेरे लाल, तेरे वावू से तो झूठ कहा था।"

"नई, मैं नई खाऊंगा। मैं अपनी मम्मी से कहूंगा।"

सुमन्तजी हंस पड़े : "मेरा अंशू तो वावा के हाथ से खाएगा, आ जा, तू मेरे पास आ जा।"

शारदा अपने पोते को देखकर मुस्कुराई, उसे गोद में उठा लिया : "अरे, तू तो मेरा वहुत लाडला है, आ चल। मैं तेरे लिये मुन्नी-मुन्नी पकौड़ियां वनाऊंगी, इनके लिए तो वड़े-वड़े पकौड़े वनाऊंगी पकौड़े, आ जा।"

पोते को गोद में लेकर शारदाजी किचेन की ओर चल दीं, सुमन्त वोले : "जग्गो वावा कहते थे कि मेरे वावा मेरी दादी को वहुत चाहते थे, उनका अदव भी करते थे।"

"मगर वावूजी, फिर भी वह दूसरी स्त्रियों के चक्कर में क्यों रहा करते थे?" युधिष्ठिर ने भीतर से आवाज़ खींचकर अपने यशस्वी पुरखे के प्रति विरोध-भरी शिकायत की, फिर तनिक सांस लेकर कहा : "माफ़ कीजिए, मैंने आपको देखा है। खुद अपने लिये भी किसी हद तक कह सकता हूं, कि एक से लगाव हो जाने पर हमारे मन फिर इधर-उधर नहीं भटके, वह क्यों अपने ऊपर कावू न रख पाए?"

"किसी-किसी की प्रकृति होती है। वाज़-वाज़ आदमी जितना गहन चिन्तन

करता है उतना ही उतावली के साथ मन का तनाव ढीला करने के लिए उसे सेक्स की कामना भी अधिक होती है।"

युधिष्ठिर ने सिर झुका लिया : "बाबूजी, मेरी समझ में अब भी यह बात नहीं आई।"

सुमन्त कुछ देर चुप रहे, फिर बोले : "तुम्हारी बड़ी मां को मेरी दादी के लाड़-दुलार ने बहुत घमण्डिन बना दिया था। वह मुझे कुछ नहीं समझती थी, न मेरा कहना मानती, इसलिए मेरा भी मन अनन्त, बलवन्त और हेमन्त की मां से कुछ-कुछ विरक्त हो गया था। फिर भी मेरा खयाल है, अगर वह अब तक भी जीती होती तो मैं उन्हें छोड़कर तुम्हारी मा या अन्य किसी भी स्त्री पर अनुरक्त न हुआ होता। भले ही मेरी वह विरक्ति मेरी राजनीति के क्षेत्र में मुझे चिड़चिड़ा और गुस्सैल बना देती। अनन्त की मा के न रहने पर तुम्हारी मां मुझे वरदान की तरह मिली, उन्ही के कारण मैं आत्मविकास कर सका। मगर पिताजी के साथ तो उनके लण्डन का पाप भी दुर्भाग्य से जुड़कर यहा आ गया था।"

"लेकिन उनके बाद भी वे "

"मेरी मा के नाम की एक परस्त्री से भी उनके सम्बन्ध हुए और मेरा खयाल है सबसे अधिक स्थायी।"

"आपने ही मुझे सकेत दिए थे और मैं उनसे अब तक दो-तीन बार मिल भी आया हूं। रिश्ते के भले-बुरेपन पर मैं कुछ कमेण्ट नहीं करता पिताजी, बट शी इज ए वेरी गुड लेडी।"

प्लेट में गरम और बड़े-बड़े पनीर पकौड़े लेकर शारदा मा अपने पोते को गोद में उठाए हुए आईं।

थोड़ी देर में, "मेनी मुन्नी-मुन्नी पकौड़िया अच्छी-अच्छी आपके बड़े-बड़े पकौड़े गन्दे" शिशु वार्ता के आनन्द में बहकर पकौड़े खाते हुए सुमन्त बोले : "मेरे विचार में, केवल मेरे पिता ही नहीं बल्कि और भी कुछ बड़े-बड़े लोगों के नाम लिये जा सकते हैं, भारत और भारत के बाहर के भी। एक किसी खास तरह के मानसिक तनाव में किसी विशेष मानसिक सम्पोषण की आवश्यकता भी होती है। मैं तुम्हें अपनी मिसाल देता हू, जब मैं पहली बार पन्त मिनिस्टरी में पालिया-मेन्ट्री सेक्रेटरी बना तब ईर्ष्यावश मेरे कुछ विरोधी भी हो गए थे। मैं बेहद परेशान था। उन्ही दिनों मैं दो-तीन बार तुम्हारे नानाजी से भी मिलने गया था हालांकि तब तुम्हारी अम्मा से मेरी यू ही रस्मिया जान-पहचान थी। तुम्हारी अम्मा एम० एल० ए० होकर आई थीं, इनके और मेरे पिता आपस में एक-दूसरे के सहायक और मित्र भी थे इसीलिए उनसे सलाह लेने गया। विधायक निवास में ही खन्नाजी आए हुए थे। ये तुम्हारी अम्मा भी थी। इन्होंने आते-जाते मुझे बहुत बल दिया, यही नहीं बल्कि मेरे विरोधियों के विरोधी भी संगठित करने

शुरू कर दिए। मुझे लगा कि मैंने जो सुख अब तक नहीं पाया था वह मुझे मिल रहा है या कहूं कि मिल सकता है।"

सुमन्तजी रुके : "देखो नन्हा, अब तो वर्षों से हम दोनों ब्रह्मचर्य पालन कर रहे हैं, लेकिन उस उम्र में भी जबकि औसत युवाओं के जीवन में कामवृत्ति तीव्र होती है तब भी मैं यह अनुभव कर रहा था कि तुम्हारी अम्मा मेरे मन के उन रीते गड्ढों को पाटकर समतल बना रही है, जो तुम्हारी माताजी यानी मेरी पहली पत्नी कभी नहीं कर सकीं। और जहां तक सुन्दरता का सवाल है, तुम्हारी माताजी और तुम्हारी अम्मा में कोई मुकाबला ही नहीं किया जा सकता।"

शारदा बोलीं : "यह सच है, जीजी की गिनती सुन्दरियों में ही की जाएगी। अरे, मेरी सास कभी-कभी क्रोध में कह भी डालती थीं, कि तू तो मेरी लड़ैतो के पैर की धोवन भी नहीं है। मुझसे उनका शायद पिछले जनम का ही कोई बैर रहा होगा क्योंकि मैंने इस घर में पैर रखते ही पहले उनके पांव पकड़े थे। हमारी बिरादरी की बड़ी तेजस्वी और आर्यसमाज का काम करनेवाली महिलाओं में थीं इनकी माताजी।"

"अच्छा अम्मा, एक बात बताओ, ये क्या तमाशा है कि मेरी पहलेवाली जो सौतेली मां थीं वह माताजी कहलाईं, मेरी दादी भी माताजी कहलाती थीं—"

सुमन्त बोले : "अरे वही नहीं बेटे, मेरी दादी भी माताजी ही कहलाईं। मेरे बाबा और दादी ठेठ आर्यसमाजी विचारों के थे न, इसलिए मैं अपने पिता को पिताजी और मां को माताजी ही कहता था। मेरी मां ने भी तुम्हारे सौतेले बड़े भाइयों को और मुझे पिताजी, माताजी कहना ही सिखलाया। इसीलिए तुम्हारे तीनों बड़े भाई अपनी स्वर्गीया मां को माताजी ही कहते हैं। अपने बड़े भाइयों की आदत से तुम मुझे तो पिताजी ही पुकारते रहे, पर इन्होंने अपने वास्ते माताजी सम्बोधन को पसन्द न किया। यह तुम्हारी अम्मा बन गईं।"

"खैर, पिताजी घूम-फिरके फिर अपनी बात पर आ जाऊं, बाबा के सम्बन्धों की गुत्थियां अभी मेरे मन में साफ नहीं हैं।"

"कौन-सी गुत्थी तुम्हें उलझा रही है?"

"जूली गोल्डस्मिथ या मिसेज ब्राइटन, जो कहिए।"

"भाई वह तो मेरे जन्म के दो बरस पहले की घटना है। जग्गो चाचा शायद कुछ बेहतर बता सकें। यह भी हो सकता है कि अपने मन की समस्याएं सुलझाने के लिए उन्होंने कभी मेरी माताजी को नामारासी अपनी प्रेमिका को बतलाई हों। मैं तो सिर्फ इतना ही जानता हूं कि पिताजी के और जूली गोल्डस्मिथ के राष्ट्रीय विचार मेल नहीं खाते थे।"

अपनी वासना-भरी चाहों के बावजूद और इस बात को भी नजरअन्दाज करके कि जूली अपने विलायती सम्पर्कों के कारण उनके लिए अक्सर सरकारी धुरहमे भी ले आती थी, जयन्त के राष्ट्रीय विचार ही उनके हृदय और मस्तिष्क के लिए सर्वोपरि रहे। युधिष्ठिर सोचने लगा—क्या यह विशेषता उसके बाबा में ही आई होगी ? एक दिन तो यह विचार उसके दिमाग की नसों में चींटी की तरह रेंगता रहा, फिर सोचा, प्रश्न के समाधान के लिए बहुत-से साधन तो स्वयं उसे ही उपलब्ध हैं—पठन, चिन्तन, वाद-विवाद। फिर भी युधिष्ठिर केवल अपनी पराई रसोई के बूते पर ही अन्नकूट नहीं मनाना चाहता था। बात करने के लिए किसे छेड़े, अपने पिता को, जावेद को कि जावेद के पिता मुश्ताक साब को ? अपने पिता को कष्ट देने से पहले उसने जावेद के पिता को ही कष्ट देना उचित समझा। दिन में खाली भी रहते हैं। उन्हें नींद कम आती है, इसलिए दो बजे से ही तरो-ताजा होकर किसी अखबार या किताब में अपने आपको मसरूफ़ कर लेते हैं।

उस दिन बाबरी मस्जिद ऐक्शन कमेटी की एक गुप्त बैठक शहर में ही हो रही थी। युधिष्ठिर को चार दिन पहले ही उसकी टोह लग गई थी। टोह देनेवाला और कोई नहीं, उसके दफ्तर का चपरासी मगजखोर शिवदीन ही था। एक दिन धीरे-से आकर बोला "जुधिष्ठिर बाबू, हम आपको एक बड़े भेद की बात बतावें, सुनेंगे।"

"अरे, तुम्हारी बात नहीं सुनूंगा भला, कहो-कहो।"

"ये आपके जावेद मियां के घरे में लगी जौन अर्वचिन है न, अरे जौन मुसल-मानन के बीच में दही-बड़े बेचत है।"

"हां-हां, समझ गया। उससे कुछ तुम्हारा प्रेम-वेम हो गया है क्या, पण्डित ?"

"अरे परेम-वरेम नाही, एक दिन जावेद मियां के घरे कागज ले गए रहे तो उई उनसे पैसे मांगत रही। जावेद बोले, हमरे पास नहीं हैं। बहुत उदास रही तो हम कहा—पांच रुपये हम तुम्हें दे देव, हमरे पास हैं। कहके हम दै दिया और कहा कि जब तुमरे पास होय तब जावेद मियां को दै देना, उई हमको पहुंचाय देंगे। तब से उई हमैं बहुत माने लगी हैं। हमरे घरे आवत जात हैं। हमरी घरवाली से उनका घर में दुभाखा हुई गया है। तौन उई बहिनी कल संझा की बिरिया हमरे घरे आई रहीं। हम तो तब लग आफिस में घर पहुंचे नहीं रहे, बाकी उई कह गई रहें कि जनमभूमि की महजिद को मन्दिर बनावें से मुसलमान बहुत खफा हैं और काल्ह हमीद मियां के हियां मिटिंग हुई रहै। उइका दही-बड़े बनावे खातिर सन्देसा अडर मिला है तौन उई जानत हैं। घरे तिन हमसे कहिन और हम काल्ह राते से यही मगजखोरी कर रहे हैं, यह नूज केहि का देईं। जावेद मियां का कि आपका। हमरी जान जावेद मियां का तो मालुमै हुइहै, आपका बतावा जाय। आप टोह लाओ।"

बात ने युधिष्ठिर को कहीं मन में छुआ भी था, किन्तु वह ऊपर से उसका मज़ाक उड़ाते हुए बोला : "अमां शिवदीन, तुम तो हमारी ही नौकरी लेने की बात सोच रहे हो यार। मालिक सोचेंगे कि जब शिवदीन ही खबरें ला सकते हैं तब युधिष्ठिर टण्डन को इतनी तनख्वाह क्यों दी जाय।"

शिवदीन तो यह कहकर चले गए : "हम तो खैर क्या पावैंगे। हां, शहर-भरे मां आपका तहलका मच जाई।"

जावेद अपनी मेज़ पर काम कर रहा था। उसे उठाया, कहा : "आओ, चलो, आज कैण्टीन में ही चाय पिएंगे।"

चलते हुए यह खबर जावेद के कान में डाली और कहा : "तू इसकी टोह ले। बन्ने, मैं तेरे घर जा रहा हूं।"

"मेरे घर क्या करेगा ?"

"मामू से कुछ इन्टलेक्चुअल बातें करनी हैं जो तेरी समझ में नहीं आएंगी।"

"साला ! तू इन्टलेक्चुअल कब से बन गया बे ?" जावेद चहका।

"सुन, तू हमीद मियां बीड़ीवाले के यहां किसी इण्टरव्यू के बहाने पहुंच जाओ। ज़रा पता तो लगाओ बेटा, खबर में कुछ जान है या नहीं।"

ढाई बजे के करीब युधिष्ठिर ने मुश्ताक मंज़िल की घण्टी बजाई। गुलखैरू की अम्मा ने दरवाज़ा खोला। गुलखैरू की अम्मां को द्वार की अरगला खोलने के साथ ही युधिष्ठिर को देखकर दांतों की अर्गला से मुक्त अपने मुख को भी आश्चर्य-चकित भाव से खोलना पड़ा : "अरे वजीरआजम भैया, तुम ! बन्ने मियां तो घर में हैं नहीं। हाफिस गए हैं।"

"मुझे मामू से मिलना है बुआ, वह तो अब जाग चुके होंगे।"

"अरे कबके, चले जाओ।"

"बुआ, तुम कितनी अच्छी हो। चाय तो पिलाओगी ही।"

बुआ ने अपने पोपले मुख की हंसी बिखेर दी और दरवाज़ा बन्द करने लगी।

मुश्ताक मामू बहुत खुश हुए। घर में सबकी राज़ी-खुशी के हाल लेकर पूछा : "कैसे आए हो इस वक्त ?"

"मामूजी, कल यों ही बैठे-बैठे यह खयाल आया कि अगर मेरे बाबा का पोलेटिकल जोश सन् तेरह-चौदह में इतनी ऊंचाई पर था कि सेल्फ इण्टरेस्ट पर लात मारकर भी वह अपनी सेक्रेटरी और लण्डन की पुरानी दोस्त जूली गोल्ड-स्मिथ से अपने ताल्लुक तर्क कर सकें तोऽऽ—यह बताइए कि हमारी नेशन में राष्ट्रीयता की भावना उस वक्त किस हद तक आ सकी होगी।"

"बड़ी मामूली बात है बेटे, तुम्हें खुद मालूम होनी चाहिए थी।"

"बिल्कुल अनजान नहीं हूं मामू, मगर किसी ऐसे शख्स के मुख से सुनना भी चाहता हूं जिसने उस ज़माने को महसूस किया हो।"

"भई, मैं भी सुमन्त साहब की उमर का ही हूं, बल्कि यों कह लो कि उनकी उमर से एक साल बड़ा हूं मगर सन् बीस-इक्कीस के आन्दोलन में मुझे एकाध-दो मीटिंगें और जुलूस देखने की याद बहुत आती है।

"तुम्हारे सवाल के जवाब में मैं सिर्फ यही कह सकता हूं कि ऐसा दीवाना जोशपन एक दिन में नहीं जाग सकता। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि स्वदेशी मूवमेंट के जमाने में हमारे बंगाल में आम पब्लिक काफ़ी हद तक अंग्रेज़ों के खिलाफ़ होकर बड़े-बड़े जुलूस निकालने लगी थी। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, रवीन्द्रनाथ टैगोर यह सब लोग बड़े-बड़े जुलूस निकालने के लिए पब्लिक को एक आवाज देते तो सैकड़ों-हज़ारों की भीड़ जुट जाती थी। लोग जेल जाने लगे थे, वन्देमातरम् का नारा तेज़ी से बुलन्द हो चुका था। फिर सन् बीस-इक्कीस में यही नज़ारा करीब-करीब सारे कन्ट्री में फैल गया।

"दरअसल इस सदी की शुरुआत से ही आज़ादी की लहर ने डरपोक और कमज़ोर हिन्दुस्तानी को अपनी गिरफ्त में ले लिया था। तुम देखो कि महाराष्ट्र में कितने रेवाल्यूशनरीज़ हो चुके थे। उस वक्त तक हमारा हिन्दुस्तान काफी जाग चुका था और जयन्त साहब के जैसा सेन्सेटिव माइन्ड तो उस माहौल से कितना मुतअस्सिर हो चुका होगा, सोच लो। यह सच है कि बृटिश सरकार घबरा उठी थी उस वक्त। और फिर दूसरा असर बंगाल के अलावा और प्राविन्सेस पर यह पड़ा कि अंग्रेजों ने ऐसा माहौल पैदा किया कि जिससे कांग्रेस में जमा हुए नेशनलिस्ट एन्टेलेक्चुअल्स के जज़बातों को गहरी चोट लगी। मुसलमानों को ज़रूरत से ज़यादह रियायतें देना और हिन्दुओं के हुकूक हल्के करना। अंग्रेजों की ऐसी ज़बर्दस्त चाल थी कि नेशन उसके भुलावे में आकर बटने लगी। मुस्लिम लीग बनी, हिन्दू महासभा बनी, मगर इन तमाम बातों का एक और असर भी हुआ कि हमारी आवाम जाग उठी।"

मुश्ताक साहब जोश में आ गए थे, आरामकुर्सी पर सीधे होकर बैठ गए। कुछ पल रुककर एकाएक फिर कहने लगे "मिसेज़ एनीबीसेन्ट का होमरूल लीग बनाना एक जादू बनकर हिन्दुस्तान पर छा गया। मैं तो खैर उस वक्त छोटा था, मगर तुम्हारे नाना मरहूम की ज़बानी यह सुना था कि अंग्रेज़ सरकार के खिलाफ़ एक अंग्रेज मोहतरमा का जेहाद बोलना हमारी पब्लिक को बहुत सुभा गया। अरे मिसेज बीसेन्ट का नाम लोगों ने वसन्ती देवी कर दिया था। उनके जलसों में पढ़े-लिखे हिन्दोस्तानियों की बड़ी भीड़ होती थी। बेकारी भी बढ़ गई थी इसलिए भीड़ का बढ़ना भी ज़्यादह से ज़्यादह होने लगा। असर यह हुआ कि गवर्मेंट ने मिसेज़ बीसेन्ट को जेलखाने में डाल दिया।"

युधिष्ठिर को अपनी बात का जवाब मिल चुका था। उसके बाबा स्वदेशी और बायकाट आन्दोलनों के सूत्रधार थे। उसके बाबा के लगभग समवयस्क

इलाहाबाद के जवाहरलाल नेहरू होमरूल लीग में शामिल हो चुके थे। यू०पी० के और शहरों में भी थोड़ा-बहुत असर तो होमरूल मूवमेंट का फैल ही चुका था। भारतीय जनता बहुत पिछड़ी हुई होकर भी आगे बढ़ चुकी थी। जूली, जयन्त के लिए अब जादूगर नहीं, खिलौना-भर थी जिसे वह तोड़ सकता था। बाबा के जीवन पर गहरा प्रभाव डालनेवाली नई जादूगरनी शायद तब तक आ चुकी थी, लेकिन मन्नो दद्दा के पास चलकर कन्फ़र्म क्यों न कर लूं।

तीसरे पहर दफ्तर से ही युधिष्ठिर ने मन्नो दद्दा के यहां फ़ोन किया। उनकी सेक्रेटरीनुमा सेविका ने दूरभाष पर ही युधिष्ठिर को यह आदेश भी सुनाया कि शाम को वह और बहू और बच्चे के साथ ही आएं, खाना यहीं होगा।

मन्नोजी की पोतबहू खिल्लो शकुन की ममेरी बहन की कभी घनिष्ठ सहेली भी रही थी। बातों-बातों में वह पुराना रिश्ता निकल आया तो खिल्लो जीजी बन गई और शकुन शक्को। अंशू घर के बच्चों में घुल-मिल गया था और युधिष्ठिर अपनी दद्दा के पास बैठा जूली गोल्डस्मिथ के सम्बन्ध में प्रश्न कर रहा था। मनोरमाजी बोलीं : "असल में पहले तो वह उसे बहुत मानते रहे, उसकी वजह से कई सरकारी मुकद्दमे उन्हें मिले थे पर वह उनके राष्ट्रीय विचारों से चिढ़ती थी। एक बार उन्होंने बताया था कि कानपुर के एल्गिन मिल में उन्होंने मज़दूरों का पक्ष लिया तो दोनों में बड़ी झौं-झौं हुई थी। उसी के बाद तो मिसेज़ बीसेन्ट के लिए उसने वह 'आयरिश कुतिया' वाली बात कही थी। बस, यह भड़क पड़े। उस वक्त तो कुछ न कहा, उठके अपने ड्राइवर को बुलाया और जूली से बिना कुछ कहे-सुने अपने घर चले गए। दूसरे दिन दो महीने की तनख्वाह उसे लिफाफे में रखकर भेज दी और कहा कि तुम्हारी नौकरी खतम। जो बंगला उसके लिए किराये पर लिया था उसका भी अगाऊ भाड़ा एक महीने का चुका दिया और कहा कि आगे इस मकान के भाड़े से मुझे कोई मतलब नहीं। फिर कहां गई जूली, मुझे ठीक याद नहीं। शायद कलकत्ते चली गई थी। उसके बाद उसका क्या हुआ, इसकी मुझे कोई जानकारी नहीं है।"

युधिष्ठिर ने पूछा : "आपने उसे देखा है?"

"मैंने उसे एक बार देखा था बेटे, जब खन्नाजी ने पहली बार इन्हें अपना वकील बनाया था। किस केस में बनाया था यह हमें याद नहीं। तब तक ये दो-तीन बड़े मुकद्दमे जीतकर बड़ा नाम पा चुके थे। खन्नाजी ने पहले तो इनके स्वागत में बड़ी दावत दी थी, नाच-वाच भी कराया था। बड़े-बड़े अंग्रेज़ जज भी उस दावत में आए थे। खन्नाजी कहते रहे कि हमरी बिरादरी में इतना नामी बैरिस्टर हुई रहा हैगा, इसकी तो खातिर में पलक-पांवड़े बिछाना चाहिए। उस जशनवाली मैंफिल में तो हम गए नहीं रहे बेटा। उस जमाने में पर्दा-उर्दा बहुत था। पर जब केस लड़ रहे थे तो चार-पांच बार यह घर पे खाने के लिए आए। हमरे गेस्टहाउस

में एक वार हफ्ता-भर रहे भी थे। तब भी वह उनके साथ थी और तब हमारा इनका कोई खास मन भी नहीं मिला था। हां, यह ज़रूर था कि तुम्हारे बाबा हमें शुरू से ही बहुत अच्छे लगे। असल मे उनका ब्योहार हमसे बहुत अच्छा था और खन्नाजी तो कभी वैसे हमसे बोले ही नही। और डाइनीटेबुल पर भी यही हमसे जादा बातें करें। खन्नाजी तो उस निगोड़ी से ही अधिक हसते-बतियाते रहे। बाद में ये जब होमरूल लीग मे आए तब हमारा और इनका संग जादा बढ़ने लगा। और असल मे भैया, देखो, आज हम घर मे बैठे हैं, अपने अन्त.करण की बात तुमसे छिपाएगे नही। खन्नाजी से हमारा मन कभी नही मिला। जब से ब्याह के आए, ये शुरू में तो हमसे कुछ घुले-मिले, पर बाद मे अपनी रण्डी-मुण्डियो में ही इनका मन फिर से रम गया। बस, जमीदारी-कारबार और नाच-गान। जब से जूली से इनका संग छूटा और होमरूल लीग मे काम करने के लिए बार-बार इलाहाबाद आवें तो हमरे यहा ही ठहरते रहे। एक बार हमें पण्डित मोतीलाल नेहरू के बगले पर भी अपने साथ ले गए थे। जवाहरलालजी से इनकी बिलायत की जान-पहचान रही। हमे इनके साथ उठना-बैठना अच्छा लगने लगा।"

बातो के प्रसग मे ही दद्दा ने बाबा के सम्बन्ध में यह महत्त्वपूर्ण बात बतलाई थी कि उनका स्वाभिमान किसी के आगे झुकना जानता ही न था, विशेष रूप से स्त्रियो के आगे। इसी कारण से बाबा की पटरी न तो कभी उनकी सगी दादी से बैठ पाई और न जूली से ही। मनोरमाजी बाबा का रुख पहचानकर उनके साथ व्यवहार करती थी। और इसीलिए वह दिनोदिन उनके निकट-निकटतर-निकटतम आती गई। विवाहित पति के प्रति उपेक्षा और प्रेमी के प्रति समर्पण का भाव बढता गया। एक जगह खन्नाजी भी अपनी विवाहिता पत्नी के इस मानस-परिवर्तन को पहचानने लगे थे किन्तु वह बहुत स्वार्थी थे। बैरिस्टर जयन्त टण्डन उनके कब्जे मे रहे, भले ही श्रीमती मनोरमा खन्ना जयन्त के कब्जे मे रहें।

"अच्छा दद्दा, पहली लड़ाई के दिनो मे बाबा ने भी क्या हिन्दुस्तानियो के सेना में भर्ती होने का कभी विरोध किया था?"

"नही, मेरी जान मे हमारे किसी नेता ने यह काम नही किया। तिलक महाराज ने नहीं किया। गाधीजी नये-नये हिन्दुस्तान मे आए रहे। वो भी उस बखत बृटिश सरकार की मदद करने की बात ही करते रहे। तुमरे बाबा भी इसी मत के रहे।"

बुढ़ापे मे बोलना कुछ अधिक बढ जाता है, फिर जब अपने प्रियतम के सम्बन्ध मे चर्चा होने लगे तब तो बात ही क्या। मनोरमाजी जयन्तजी के ध्यान मे वही तो बाढ के पानी की तरह निर्बाध रूप से आगे बढती ही चली गई। जयन्त जब-जब किसी मुकद्दमे के सम्बन्ध मे इलाहाबाद आते तो फुर्सत के समय मन्नो से जिन-जिन विषयो पर बातें किया करते थे, करीब-करीब वे सारी बातें स्मृति के आकाश

में कटी पतंगों-सी मंडरातीं, भटकतीं हुई उनकी जबान पर आ गईं। युधिष्ठिर के लिए रेकार्ड करना भी दूभर हो गया। कैसेट का एक रुख भर जाने पर दूसरा रुख बदलने के लिए भी अपनी बातों का तार तोड़ना उन्हें असह्य था। एक-आध बार अपनी ओर से कैसेट की ओर ध्यान जाने पर उन्होंने नन्हा का हाथ झटक दिया था, तब से वह केवल सुनता ही रहा। वह समय दादी की बातों से अंकित होकर उसके सामने आ रहा था···

सुनते-सुनते ही सोचने लगा कि बाबा ने अपनी प्रिया को जानकारियों का कोष बना दिया था। या यों कहा जाय कि प्रिया अपने प्रियतम में इतनी तन्मय हो जाती थी कि उसकी ताजगी इतने वर्षों के बाद आज भी वैसी-की-वैसी ही बनी हुई है। पूरे आदर के साथ भी यह कहना ही पड़ता है कि युधिष्ठिर के बाबा अपने बौद्धिक और राष्ट्रीय चिन्तन तथा सार्वजनिक जीवन के व्यस्त क्रिया-कलापों के बावजूद आरम्भ से ही व्यभिचारी मनोवृत्ति के भी रहे। उसमें भी विशेष रूप से परकीया नारियों के साथ ही उनका रस सम्बन्ध अधिक बैठता था। उधर मनोरमा खन्ना भी रिश्ते से खन्ना बनकर शुरू से ही अपने पति की कभी न बन पाईं। एक तो वह साधारण घर से आई थीं दूसरे उनकी 'स-नाप' पढ़ाई कुल जमा सातवें दर्जे तक ही हुई थी। किन्तु 'अ-नाप' पढ़ाई उनकी बहुत काफी हो चुकी थी और होती रहती थी। इसीलिए जमींदार रईस के घर की राजरानी बनकर भी वे रईस और विलासी पति के लिए उनकी अनेक भोगांगनाओं में से एक थीं। मन्नोजी का स्वाभिमान यह कभी न सह पाया। उन्होंने पति से एक पुत्र होने और उसके गर जाने के बाद कभी सम्बन्ध ही न रखा और जयन्त से घनिष्ठता बढ़ जाने के बाद पति के जीवनकाल में ही उन्होंने अपने पति को यह भी जतला दिया था कि वह उनकी अपेक्षा जयन्त को ही प्यार करती हैं। जूली गोल्डस्मिथ से राष्ट्रीय स्वाभिमान भरा विरोध होने पर ऐसी बाहर से सूखी किन्तु मन से भरी-भरी स्त्री से जयन्त टण्डन का मिलना भी एक संयोग बन गया। मनोरमाजी जयन्त टण्डन की पत्नी मनोरमा और प्रेमिका जूली गोल्डस्मिथ के समान सुन्दर न थीं। देखने में आज भी यही लगता है कि वह अपने जमाने में साधारण सुन्दरी ही रही होंगी, किन्तु जयन्त टण्डन को उनका अन्तःसौन्दर्य ही दिनों-दिन अधिक आकृष्ट करता गया। घर की अति सुन्दर मन्नो के आगे बाहर की यह मन्नो ही उन्हें लुभाती चली गई। विशेष रूप से सन् बीस-इक्कीस के आन्दोलन से बयालीस के आन्दोलन तक यह मन्नो ही युधिष्ठिर के बाबा की मनोसंगिनी, कर्मसंगिनी, जीवनसंगिनी रहीं।

चलते समय युधिष्ठिर ने दद्दा से साहसपूर्वक एक ठेठ सवाल किया लेकिन अपना प्रश्न उजागर करने से पहले उसने भूमिका बांधी। उनके सोफे पर बैठकर उन्हें अपनी बांहों से बांधकर अपना सिर उनके सिर पर टिकाते हुए बोला : "दद्दा, आज मैंने तुम्हें ही नहीं अपने बाबा को भी सजीव पा लिया। लेकिन एक बात

जानना चाहता हूँ, उनके लिए दिमाग नहीं खुल पाता।"

मालू की तरफ मुंह उठाकर देखते हुए दादी बोली : "अवश्य दखल के कोई थे दिमाग की कमी। अरे, उन्होंने पानी पर तो ले काई की लादी भी था सकती हूँ।"

"आपके बाद बाबा ने किसी और स्त्री से भी सम्बन्ध रखा?"

"बहुत कम, यों कहो कि कम-से-कम। लेकिन मैंने कभी दूसरी औरतों की तरह उनसे इस बात को लेकर झगड़ा तो क्या, शिकायत तक भी नहीं किया। लेकिन मेरा ख्याल है, ऐसे मौके उन्होंने भी कम-से-कम ही लिए। हाँ, एक बात याद आई, बड़ी मजाक से वहाँ उन्होंने किसी एक बड़ी भारी बेगम का दुपट्टा पकड़ा था। यह तब की बात है जब हम लोग इलाहाबाद में ही रहते थे। उस बेगम से भी इनकी कुछ गहरी दिलचस्पी हुई नहीं थी। तब मुन्नी ने कुछ तमाशा मचाया रहा। दोनों एक-से-एक बढ़कर। बेगमियत ने बेगिनती के ऊपर जादू-टोने चलाए। अरे, बड़ी-बड़ी कथा है बेटा। हर बार में इन्होंने ही जाने किसी किस्म से सुलझाया रहा। इनके मुंशी एक अजायबराम रहे। सो सचमुच ही अजायब रहे। उन्होंने अपनी बुद्धिमानी बुद्धि से इनको बेगम के फंदे से बचाया रहा।"

"मुंशी अजायबराम का नाम तो दो-एक जगह बाबा की डायरियों में आता है। मगर जो घटना आप बता रही हैं उसका कोई जिक्र उनमें नहीं हुआ। क्या, बाबा के शहीद हो जाने के बाद भी आपको कभी मुंशी अजायबराम मिले थे दादी?"

"हाँ बाबू। एक बार उनकी मुकदमे पैरवी के लिए आए थे। दूसरी बार शादी के पास नहीं था, इसके पास आए फिर आठ-दस दिन के बाद एक बार फिर आए। तुम्हारे बाबा की सोने की जेबघड़ी थी जो उन्होंने लन्दन से खरीदी थी। उसके भीतर उन्होंने खुदवा रखा था— 'टु डियर [illegible]।' जाने के एक दिन पहले उन्होंने वह घड़ी मुंशीजी को दी थी कि भाभी (हमसे कहते रहे) उन्हें दे आओ। उन्हें अपनी मौत आने पहले से ही ध्यान हो गई थी, बेटा!"

"वह मुंशी अजायबराम कहाँ रहते थे दादी?"

"अरे, वे तुम्हारे लखनऊ के चौक के नीचे [illegible] में [illegible] हुए थे। अभी वे उनका पुश्तैनी घर है। एक बार आशा देर के [illegible] बड़ी मदद दिख दी थी। उनके अजायबघर [illegible] दिखा रहा तुम्हारे बाबा से। तभी हम तुम्हारे बाबा के साथ उनके घर कुछ दिन [illegible] थे। दोनों ही एक-दूसरे को बहुत मानते रहे। अजायबराम का बेटा, क्या नाम है उसका, [illegible], जो तुम्हारे [illegible] का मुंशी रहा, अब भी शायद वहीं काम करता है। अजायबराम [illegible] इनको [illegible] एक बड़ी लम्बी [illegible] लिखी रही। [illegible] के बीच [illegible] गुजर जाता है। एक बार हम और [illegible] को भी सुनाई रही। आज भी उसकी याद आती है तो [illegible]। अच्छा अब जाओ बेटा, हमारा मन बहुत

खराव हुई गया है।"

रास्ते-भर युधिष्ठिर के मन में तरह-तरह के विचार आते ही रहे। दिन-भर दद्दा की बातों ने युधिष्ठिर के सामने उसके बाबा को जीवन्त रखा था, काश कि वह मुंशी अजायवलाल भी जिन्दा होते। परन्तु होते कैसे? दद्दा की बातों से तो लगता है कि वह मेरे बाबा से भी आयु में बड़े थे। शायद वह मसिया मुंशी नौवत-लाल को याद हो। अनन्तू भैये के कमरेवाली तिजोरी में मिले कागज़ात में उसके पड़बाबा के हाथ की लिखी एक नोट-बुक का ध्यान आया। वह भी शायद अपने पिता की तरह ही अपनी जीवनी लिखना चाहते थे लेकिन केवल दो-ढाई पृष्ठ लिखकर ही वह काम उनसे छूट गया। उसमें एक बहुत मज़ेदार बात लिखी थी जो सहसा युधिष्ठिर के ध्यान में आ गई।

लाला मुसद्दीमल के पिता लाला सद्दीमल और उनके पिता लाला मटरूमल दोनों ही विलासी थे। लाला मुसद्दीमल के सम्बन्ध में ऐसी कोई बात नहीं सुनी गई। उनकी सन्तानों में भी किसी में परस्त्रीगमन अथवा सस्ती स्त्रियों के साथ खिलवाड़ करने की आदत नहीं थी। हां, रायसाहब बंसीधर अवश्य ही एक विदेशी स्त्री के प्रलोभन में आ गए थे। लेकिन वह भी अन्य किसी चक्कर में नहीं पड़े, प्रायः सदाचारी ही रहे। उसके बाद डॉ० देशदीपक का अपने सम्बन्ध में लिखा गया एक वाक्य युधिष्ठिर को आज भी याद है—'परमात्मा और ऋषिजी की कृपा है कि मेरा मन शुरू से लेकर अब तक एकपत्नीव्रतधारी ही रहा, किसी अन्य स्त्री का स्वप्न में भी ध्यान नहीं किया।' बाबा अपने पिता से बिल्कुल उल्टे कैसे चले? इस खानदानी खून का असर! पिताजी ने दो विवाह अवश्य किए परन्तु उनके चरित्र पर कोई दोष नहीं लगाया जा सकता। मैं भी अभी तक करीब-करीब 'राजा बेटा' ही रहा हूं। मेरी समझ में नहीं आता कि अच्छा जीवन-साथी मिल जाने के बाद भी किसी के मन में अन्य स्त्रियों की चाह आखिर क्यों होती है? आन्तरिक सौन्दर्य-बोध की दृष्टि से ऐब्सर्ड।

राजाबाज़ार के चौराहे पर जाकर पूछताछ की। दो-तीन गैर जानकारों के बाद एक जानकार भी मिल गये—"हां-हां-हां, नौवतलाल रहते इसी गली में हैं। आगे बाएं हाथ शिवाले के पास किसी से भी पूछ लीजिएगा तो बतला देगा। मगर नौवतलाल वहां आपको अपने घर में मिलेगा नहीं।"

"तब कहां मिलेंगे?"

बतलानेवाले हंसे, कहा: "वो इस वक्त अपनी यार घोसिन के साथ उनके घर में चुक्कड़ पी रहे होंगे।"

"उस घोसिन का घर कहां है, आप यह बतलाने की कृपा करेंगे।"

"हां-हां, सामने सीधे गली में चले जाइए। बाएं हाथ पर एक पुराना मन्दिर है और दाएं हाथ पर उसका घर।"

युधिष्ठिर हताश न हुआ। अम्बरी दरवाजे के पास विलायती शराबों की एक दूकान थी, याद आते ही स्कूटर उधर बढ़ा दिया। उम्दा व्हाइटहार्स ली और स्कूटर फिर नौबतलाल की माशूका की गली की तरफ मोड़ दिया।

वह गली क्या थी, उसे लगा कि वह किसी मध्यकालीन भूल-भुलैया में बसे हुए बाजार में आ गया है। गली में इतने गड्ढे थे कि चन्द्रलोक में भी न होंगे। स्कूटर चलाना मुश्किल था और स्कूटर बन्द करके साधारण साइकिलों की तरह उसका हैण्डिल पकड़कर ले चलना और भी मुश्किल। काले बुर्कों में आती-जाती हुई नारियां उस तंग गली में भीड़-सी लगती थीं। दो-एक धक्के भी उसके कन्धों को गुलाबी स्पर्श के साथ लगे। अगल-बगल जरदोजी का काम करनेवालों की दो दूकानें। पानवाला, दही पकौड़ीवाला। एक चबूतरे पर चार-पांच मियांजी मिल-कर क्लब हाउस चला रहे थे।

आगे तिमंजिला पक्का मकान, उसके बाद खण्डहर। एक खण्डहर में चार भैंसे बंधी हुई थी। तहमद पहने हुए काली दाढ़ीवाले धोती से दुलारी मोमिन का पता युधिष्ठिर ने पूछा। उसने बेरुखी से जवाब दिया: "हमें नहीं मालूम, और किसी से पूछ लीजिए।"

आगे दो नालियां, एक साबुत, एक टूटी हुई। किनारे की नाली पर बैठे हुए दो बच्चे अपना प्राकृतिक कर्त्तव्यपालन कर रहे थे। एक नाली के बाहर फैले बदबू-दार पानी से गली का उतना हिस्सा पार करना दूभर हो गया। आगे एक जवान गाता हुआ मिला: "इन्हीं लोगों ने छीन लीना दुपट्टा मेरा।"

युधिष्ठिर ने पूछा, "क्यों भाई, यहां दुलारी मोमिन····"

"वो क्या आगे बाएं हाथ पे जहां भैंसें बंधी हैं।"

लम्बा खण्डहर जहां लगभग आठ-दस भैंसें और चार मोटी-मोटी गायें बंधी हुई हैं। सीढ़ियां चढ़कर खण्डहरवाले हिस्से में पहुंचा। खण्डहर के ही एक हिस्से में बाएं हाथ पर एक पट्टीनुमा लम्बा-सा मकान बना था। युधिष्ठिर ने दुलारी मोमिन के दरवाजे की कुण्डी खटखटाई, भीतर से आवाजें आने लगीं: "अरे कौन आय मरा निगोड़ा।"

"अरी जाय के देख तो सही। पहले से ही मरा निगोड़ा कहने लगी। बेवकूफ कहीं की।"

कुण्डी खुली, दरवाजे का आधा पल्ला खुला। मोटी, अधगोरी और बूढ़ी दुलारी का चेहरा धुंधली रोशनी में चमका। युधिष्ठिर ने ह्विस्की की बोतल और नानखताइयों का झोला आगे बढ़ाया और कहा: "मुन्नीजी तशरीफ़ रखते हैं?"

बुढ़िया ने सिर हिलाया। "ये बोतल उनके लिए लाया हूं। कह दीजिएगा कि बैरिस्टर जयन्त टण्डन साहब का पोता हाजिर हुआ है।"

भीतर से मर्दानी आवाज हुल्लड़ मचाती हुई आई - "ओ हो, ओ हो, आइए-

आइए, तश्रीफ़ लाइए, जनाब टण्डन साहब। वाह-वाह-वा। वो गालिब का एक शेर याद आया कि कभी हम उनको और कभी अपने घर को देखते हैं।" दरवाज़ा पूरा खोलकर मुंशी नौबतलाल युधिष्ठिर को भीतर ले गए।

कोठरी में चारपाई बिछी थी। उसी पर बैठाया। फिर दुलारी की तरफ़ देखकर बोले: "देखती क्या है? बहुत बड़े आदमी के चरन तेरे घर पर पड़े हैं। आपको यहां का पता किसने बतला दिया?"

"यहीं राजाबाज़ार में एक साहब मिल गए थे।"

"खैर होगा, यह क्या ले आए, व्हिस्की? वाह-वाह-वाह। बकौल एक शायर के 'मुद्दत हुई है यार को गले से लगाए हुए।' बड़ी तकलीफ फरमाई आपने, आखिर इसकी क्या ज़रूरत थी?"

"किसी बड़े आदमी के यहां कोई खाली हाथ थोड़े ही जाता है भला।"

"हें-हें-हें, यह तो ज़र्रानवाज़ी है आपकी (दुलारी की तरफ़ देखकर) इनके वालिद चीफ़ मिनिस्टर थे—चीफ मिनिस्टर। मगर ऐसे सन्त कि गद्दी छोड़कर अजुध्या जाकर बस गए। और इनके बाबा-ए-आज़म, अजी सीने पे गोली खाई थी अंग्रेज़ों की और तब भी हाथ बढ़ाकर कहा, कि 'मुर्दा भारत को जिला जाएंगे मरते-मरते'। वाह-वाह-वाह, क्या शख्सियत थी उनकी।"

"आपने उन्हें देखा था मुंशीजी?"

"अजी कई बार, बल्कि आपसे क्या कहूं, हमारे बप्पा मरहूम, परमेशुर उन्हें जन्नत बख्शे, कहा करते थे कि सुमन्त बाबू बैरिस्टर बनेंगे तो तुम्हें उनका मुंशी बना दूंगा। मगर होता वही जो मंजूरे खुदा होता है। सुमन्त बाबू बैरिस्टर के बजाय मिनिस्टर हो गए। अब बतलाइए कि क्या खातिर की जाय आपकी।"

"उसकी ज़रूरत नहीं मुंशीजी साहब, मैं तो आपके आराम के वक्त में खलल डालने आ गया।"

"अजी आराम कहां, अभी तो अपनी इन मलिकाए मोअज्जिमा जनाब दुलारी बेगम साहिबा के दूध का हिसाब लिख रहा था।"

मोटी दुलारी बेगम साहिबा के कुप्पी की रोशनी में चमकते हुए चेहरे पर लाज का निखार आ गया। सुहागिन की तरह गुमानभरी आंखें नचाती हुई बोली: "पराए आदमी के सामने बांदी को मलिका कह रहे हैं, अकेले में तो ये बूढ़ा निगोड़ा मुझे गालियां देता है। इनके लिए दूध की चाय बनाऊं?"

"अमां चाय-वाय तो यह रोज़ ही पीते रहते हैं। कहिए हुज़ूर, आप अपनी इस बोतल में हमारे साथ शिरकत फ़रमाएंगे।"

"जी नहीं, मैं तो खाली आपसे मुलाकात करने और आगे के लिए टाइम तय करने के वास्ते आया था।"

"अब आज तो आप मेरे और इसके मिजाज को बिठलाने के लिए तख्तेताऊस

ले आए हैं और हमारे साथ शिरकत भी नहीं फ़र्माएंगे, इसलिए कल शाम को पांच बजे तकलीफ़ फ़रमाइएं तो बेहतर होगा। वैसे क्या मैं यह जान सकता हूं कि आप इस नाचीज़ को आखिर किस मकसद से यह इज़्ज़त बख़्श रहे हैं?"

"मैं अपने बाबा के सम्बन्ध में एक किताब लिख रहा हूं मुंशीजी, उसी के लिए कुछ जानकारी आपसे चाहता हूं। और मैंने सुना है कि आपके पिता मुंशी अजायबलालजी ने मेरे बाबा की शहादत पर एक मर्सिया भी···"

"हां-हां-हां, अरे बड़ी पुरानी बात आपने याद दिला दी। ये किसने बतलाया आपको?"

"मेरे बाबा के साथ आन्दोलन में काम करनेवाली एक मोहतरिमा ने···"

"ओ हो, *तब वह यकीनन रायबहादुर खन्नाजी की बाज़ाप्ता और टण्डन* साहब की बेज़ाप्ता बीवी ही रही होंगी। जैसे यह दुलारी मेरी है। ख़ैर, वह मर्सिया तो हुज़ूर अब मुझे याद नहीं। और ये हमारी दुलारी जो है वह कमबख़्त अपनी भैंसों को शायरी से बेहतर और अनमोल समझती है। ख़ैर, कल सुबह जब *'अजायब मंज़िल' जाऊंगा तब तलाश करूंगा, शायद पुराने कागजात में मिल जाय।* अब मेरी उम्र सत्तर साल की हुई, बैरिस्टर मिसरा साहब भी फ़रमाते हैं कि मुंशी नौबतलाल तुम्हारी अक्ल को अब तुम्हारी माशूका की भैंसें चर गई हैं। मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर नालायक हो गया हूं तो पेन्शन दे दीजिए। मिसरा साहब बोले, *'अमां, पेन्शिन ही तो पा रहे हो मगर तुम्हारी याददाश्त का फ़ायदा तो उठाना ही* पड़ेगा।' बतलाइए हुज़ूर, ये बड़े कानूनदां की मालिक हैं। एक तरफ़ तो मेरी अक्ल को दुलारी की भैंसों से चरवाते हैं और दूसरी तरफ़ मेरी याददाश्त को खूबियों को खुद ही चरा करते हैं यानी बकौल गुसाईंजी 'हसब ठठाय फुलाउब गालू।' *हः हः हः। कल तशरीफ लाइए, आपको अपनी नौजवानी के दिनों की* पुरानी-पुरानी बातें सुनाऊंगा। अजी पहली लड़ाई के ज़माने की, जब सिपहसालारे जर्मनी जनाब हिन्डनबर्ग साहब ने इन लाले लाल मुंहवालों के लण्डन का मुण्डन कर दिया था। वह-वह-व! ये व्हिस्की की बोतल में तासीर होते हैं कि तुक में तुक *मिलते चले गए।"*

"हाः हाः हाः हाः!" छाती से व्हिस्की की बोतल चिपकाए हुए हंसते-हंसते मुंशी नौबतलाल को खांसी का दौरा आ गया। तभी मोटी कमरवाली दुलारी हाथ में चांदी का गिलास लिये आई। मलाई की दो मोटी परतें पड़ा हुआ खूब औटा हुआ दूध *जनाब युधिष्ठिर टण्डन वल्द चीफ मिनिस्टर सुमन्त टण्डन वल्द जनाब जयन्त टण्डन साहब को बूढ़े आशिक-माशूक की पूरी ज़िद के साथ कसमें* दे-देके पिलाया गया।

बहाने-चहाने से दो-चार बातें और भी रबड़ के गेंद-सी उछल पड़ीं। युधिष्ठिर *ने तय किया कि पहले महायुद्ध के समय को बांधना बहुत ज़रूरी है।* पश्चिमी

गोलार्द्ध में तोपें गरज रही हैं और पूर्वी गोलार्द्ध के भारत देश में भी दिमागी गोलों के उत्तेजक गोलियों की सनसनाहट सुनाई दे रही है। लौटते समय उसे यह विचार आया कि पहले महायुद्ध और भारतीय जनजागरण के किस्से बतलाने में न तो जग्गो बाबा ही अच्छी तरह से काम आएंगे क्योंकि वह उस समय कुल जमा चौदह वर्ष के थे, पिताजी और मुश्ताक मामू भी बहुत अधिक कारगर साबित नहीं हो सकते क्योंकि उनकी आयु तो बड़ों की गोद में खेलने योग्य ही रही होगी, मगर यह मुंशी नौबतलाल भी उस ज़माने के दूध-पीते बच्चे ही हैं—याद आया, पिताजी ने एक बार बड़ी महत्त्वपूर्ण बात यह बतलाई थी कि उस समय में घटनाएं तो कम होती थीं, परन्तु उन घटनाओं के चर्चे बरसों तक वैसे ही हुआ करते थे जैसे कि आज की ही बात हो। पिताजी की सुनाई हुई एक बहुत पुरानी रूसी कहानी की याद भी उसे आ गई। कहानी मजेदार थी। याद आते ही उसके चेहरे पर मुस्कुराहट आ गयी। मुंशी नौबतलाल का बोतल को छाती से चिपकाना भी उसे गुदगुदा रहा था।

अम्मा और पिताजी उस समय अपने परबाबा की चन्द्रिकोजी स्थित 'बंसी काटेज' में जग्गो बाबा और चाचो से मिलने गए थे। अंशुमान दादा-दादी के साथ ही गया था इसलिए शकुन अकेली ही थी। युधिष्ठिर सीधे अपने कमरे में चला गया। शकुन भी पति के पीछे-ही-पीछे नीचे से ऊपर गई : "आज तो बड़े प्रसन्न हो, कहीं जेब-वेब तो गर्म नहीं हुई ?"

"जेब से कहीं ज्यादह मूल्यवान दिमाग गर्म हुआ है डार्लिंग, उसे ठण्डा करने के लिए आज तो 'शीवाज़ रीगल' निकालो यार। देखो, बोतल में आज का काम निकालने लायक मसाला है कि नहीं।"

"बहुत है, अभी घण्टा-भर पहले ही तो मैंने तुम्हारी अलमारी झाड़ी-पोंछी है। यह बताओ कि इसके साथ खाओगे क्या। अम्मा और पिताजी वगैरह तो आज चन्द्रिकोजी से खा-पी के लौटेंगे या शायद आज न आएं, कल आएं।"

यह सुनकर पत्नी के गाल पर मीठी चुटकी लेकर कहा : "तब तो आज तुमको अनोखे आशिक-माशूक की ऐसी बातें सुनाऊंगा कि हंसते-हंसते लोट-पोट हो जाओगी।"

'शीवाज़ रीगल' की तलब प्रियतमा की उपस्थिति में शाही नखरों की तरह बुलंद हो गई थी इसलिए पत्नी के नाश्ता बना लाने तक मुनैको बिस्कुट और 'चीज़' के टुकड़ों से ही काम चलाना शुरू किया। खयालों के परिन्दे फड़फड़ाने लगे। मूड बना तो एकाएक उठ बैठा और कागज, कलम सम्हाल लिया।

शाम का समय है। दुलारी बीवी के नौकर भैंसों का दूध काढ रहे हैं। एक बड़े-से चौकोर तख्त पर अधगोरी और मोटी दुलारी घोसिन अपने गल्ले की सन्दूकची लिये गाहकों को दूध नाप रही है। गाहकों से साथ-ही-साथ झगड़े भी होते चलते हैं। "कल और परसों के पैसे भी देओ तभी दूध मिलेगा।"

"अरे, तो तुम्हारे पैसे कभी मैंने खाए हैं भला? ये लेओ अठन्नी, दो आने वापिस करो—मानो लूट है। दो आने सेर दूध। हमने सोलह सेर का पिया है, इकन्नी में सेर-भर आता था। अब ये दुअन्नी लेती है।" पास ही खड़े हुए दूसरे साहब ने चुटकी ली . "अरे भई इकन्नी इनकी, इकन्नी मुंशी नौबतलाल की जो इनकी नौबत बजाते हैं।" लोगों का सामूहिक ठहाका भी लगा जिससे दुलारी चिढ़ गई।

नपना दूध की बाल्टी में ही पटककर हाथ बढ़ाके बोली . "ऐ हा-हा-हां, क्या किसी की चोरी है? क्या किसी से छिपाके कोई ऐब करती हूं? वा-वा-वाह, आए बड़े हमारे मुंसीजी को कोसने।"

"अमा भई, ये ब्रिटेन और जर्मनी यहा भी गर्मा रहे हैं।"

"अमां भई, वाह-वाह कन्धई बाबू, खूब आए। ये बताओ कि आज मैदाने-जंग मे किसकी तोपें ज्यादह गर्जी?"

"जलवे तो जर्मनी के ही हैंगे मिर्जा साहब। कैसर विलियम के सिपहसालार हिन्डनबर्ग ने फ्रांस और ग्रेट ब्रिटेन को पिद्दी बना रखा है! अब तो रूस भी आ गया न, लड़ाई मे।"

"अमा, उससे होता क्या है, कल हमारे दफ्तर के सुपरिन्टेण्डेण्ट साहब ने एक बहुत उम्दा बात कही है। कहने लगे—कि जब से साइन्स की तरक्की हुई और सब छोटे-बड़े मुल्क बड़े-बड़े कारखाने लगाने लगे तो दुनिया के बाजार को अपनी मुट्ठी में करने के लिए कम्पटीशन भी जोरदार हुआ और जर्मनी इन सबमे तेज रहा। जनाब उनके यहा इतने हथियार हैं कि पूरा योरोप और ग्रेट ब्रिटेन चार घण्टे मे तबाह कर सकते हैं।"

"अरे बिरजू बाबू, ये हमारी देओबानी संसकृत भाखा का परताप हैगा। अच्छी से अच्छी किताबें रद्दी मोल ले गए। उसी से ये हथियार बनाए हैं।"

"भई, बात तो तुम्हारी हम भी मानेंगे, मगर एक बात है चुन्नू पण्डित! इन्होंने हमारी किताबें देख-देखकर हमारे पुराने जमाने के बड़े-बड़े बिरहमास्त्र तो बना लिये। मगर सालो के पास मन्तर नहीं है और उधर सीताजी को त्रिजटा ने वरदान दिया था कि तुम्हारी औलाद से कोई जीत नहीं सकेगा।"

"अमा, ये साइस के जमाने मे क्या पोगा-पंथी की बातें करने लगे बाकेलाल।"

"ये पोंगापंथी नहीं है जनाव मिर्जा साहव, ये हमारे एनशन्ट इस्किरिप्चर्स की सीक्रेट वातें हैं जनाव। मैंने एक वार हरद्वार में निरगूसंहता देखी थी एक साधू के पास। उसमें साफ-साफ लिखा था कि कलजुग में मल्काटूरिया त्रिजटा का अवतार होगी और उसके पोते के जमाने में रावन का पोता और मेघनाद का वेटा पच्छिम में अवतार लेगा। सो ये विलियम कैसर वही आपका मेघनाद का वेटा है। अव वतलाइए आप कि जिसके वाप ने राजा इन्दर को पकड़के कैदखाने में डाल दिया था उसका वेटा कैसर विलियम जार्ज पंजुम की दाढ़ी नहीं हिला सकेगा? हमारे इस्किरिप्चर्स की एनसेन्ट वातें "

"अमां, क्या अन्ट-शन्ट वक रहे हो वांकेवावू।" एक हाथ मे छड़ी और दूसरे में कलई की ढकनेदार वाल्टी लिये हुए मुंशी नौवतलाल आते हुए पीछे से वोले: "अमां, जिरा मेघनाद के वेटे की तुम हवाएं वांध रहे हो उसी के वाप साले रावन को सुगरीव के भाई वाली ने छः महीनों तक अपनी वगल में दवाकर कैद रखा था। साला, दस मुंह वीस हाथों वाला वाली की कांख में दवा-दवा छटपटाता ही रहा, ये कैसर क्या असर करेगा। यह भी हमारे एन्शन इस्किरिप्चर्स में लिखा है कि नहीं, वताइए विरिज विहारी वावू।"

"अमां वा भई मुंशी नौवतलाल, क्या नौवत वजाई है तुमने वांके वावू की खोपड़ी पर कि मजा आ गया।"

तव तक मुंशीजी तखत पर छड़ी रखकर दुलारी घोसिन के पास ही विछी हुई गद्दी पर इतमीनान से वैठ गए और फिर टेंट से एक चवन्नी निकालकर दुलारी के गल्ले की सन्दूकची खोलकर उसमें रखी और कहा: "वावू विरिज-विहारी साहव, आपको एक तकलीफ और करनी होगी।"

विरजू वावू मुस्कुराकर वोले: "मैंने आपकी तारीफ कर दी तो आप मुझे तकलीफ देंगे।"

मुंशीजी ने अपनी पतली सफेद वुर्राक मूंछों के वागीचे में मुस्कुराहट के फूल खिला दिए, कहा: "मेरी तारीफ़ के लिए आपकी जर्रानवाजी का शुक्रिया। मगर यह तो एक पड़ोसी के नाते तकलीफ़ दे रहा हूं। जरा दो सेर दूध मेरे घर पर भी कुण्डी खटखटाके मेरी घरवाली को दे दीजिएगा, लड़कों को नहीं।" फिर दुलारी की तरफ़ देखकर वोले: "अवकी जो दूध कढ़के आवे उसमें पहले हमारा और विरजू वावू का दूध निकाल देना। चवन्नी मैंने गल्ले में डाल दी है, सुना?"

"सुन लिया भई, सुन लिया, इस वखत जान न खाओ।"

पास-पड़ोस की चार गलियों के गाहक निपटाते-निपटाते दीया-वत्ती का समय आ गया। मुंशीजी उठे, भीतर गए और एक खुशनुमा लैम्प उठाके वड़े प्यार से उसकी चिमनी साफ कर वत्ती सुधार और रौशन करके और उसे रखने के लिए खासतौर से लाई हुई नक्काशीदार सुन्दर चौकी को उठाकर वाहर आए।

रोज के हलवाई गाहक के लिए बीस सेर दूध की नपान करते हुए जो रौशनी का सहारा मिला तो नापने का काम करते हुए भी दुलारी ने चाहत-भरी नजरें उठाकर एक बार अपने प्रियतम को देखा और कहा : "ये लम्प चौकी यहां क्यों ले आए मुंशीजी। अरे मौसम बदल रहा है, जरा से में सर्दी-जुकाम हो तो आफ़त तो मेरी ही आएगी। जाओ, भीतर बैठके अपना हिसाब-किताब जोड़ो। उठो-उठो भाई, जाओ, हम इस दूध की नपान करके आते हैं।"

"ये लम्प यहीं छोड़े जाता हूं सुना, पैसे ठीक से गिनना, आंखें यों ही धुंधला गई हैं।" मुंशीजी चौकी उठाके फिर भीतर ले गए और वहां का लैम्प जलाकर हिसाब तथा पुराने दिनों का खाता देखने में दत्तचित्त हो गए।

थोड़ी देर में दुलारी गल्ले की सन्दूकची बगल में दबाए अन्दर आई। उनकी पीठ से अपनी छाती सटाए बैठते हुए बोली : "कल तो तुमने हुसैनी की इल्लत सदा के लिए मेरी खोपड़ी से उतार दी, हाय मैं कित्ती बलैयां लूं तुम्हारी।"

"बलैयां-बलैया बाद में लेना, पहले हिसाब लिखाओ।"

"ए, तो गुस्सा काहे होत हैं हजूर।"

"पहले रोज़ के गाहकों की पर्चियां दो।"

हिसाब-किताब का चरखा पूरा हुआ, बोतल खुली, आशिक-माशूक फिर इत्मीनान से पास-पास बैठकर हुसैनी मियां के चर्चे में लगे।

दुलारी घोसिन और मुंशी नौबतलाल वल्द मुंशी अजायबलाल के इश्क का अफसाना बड़े अजीब तरह से शुरू हुआ था। दुलारी के पति गफूरे की मौत हुई तो उसके देवर हुसैनी ने हिसाब-किताब के लिए रोज जबानी मार-काट मचानी शुरू कर दी। सुबह-शाम गाहकों का जमावड़ा, दुलारी के काम-काज का वक्त और उसी समय हुसैनी मियां, झगड़ा-फसाद, गाली-गलौज करते थे। अब हुसैनी का बेटा नसीरा भी बाप का साथ देने के लिए बड़ी कल्लेदराजियां दिखाता था। बहुत दिनों की बात है, एक दिन दुलारी तप गई थी। तखत से उठकर दोनों हाथ चढ़ा-चढ़ाकर गाली-गलौज करने पर आमादा हो गई "निगोड़ा घसियारी मण्डी के घसियारे की जुरुआ को जबर्दस्ती उसके घर से निकाल लाया और तब तो अब्बा भी ज़िन्दा थे। वह बोले तो गड़ांसा लेकर खड़ा हो गया। बोला—ये अब घसियारिन नहीं घोसिन है, मेरी बीवी है। जबर्दस्ती वो कोनेवाला मकान का पूरा हिस्सा बाप के जीतेजी ही दबोच लिया। मेरे मरद ने तब भी कुछ न कहा। मेरा मरद बोला—दुलारी, कुछ न बोलो। अपने कोई आस-औलाद तो है नहीं। मकान का जादा हिस्सा ले गया, ले जाने दो। तब भी इस हरामी ने और इसकी रखैल घसियारिन ने हमारे घर दो-दो बार चोरियां करने की कोशिश की‥"

बस, इस पर हुसैनी तमक उठा और भावज को गन्दी गालियां देते हुए धक्का मारकर जमीन पर गिरा दिया। गाहकों ने "हैं-हैं" मचाई, दूध लेने के लिए आए

हुए मुंशी नौवतलाल हुसैनी की लात की मार से दुलारी को बचाने के लिए जो आगे बढ़े तो वह लात उन्हें ही पड़ी। इससे दूसरे गाहक हुसैनी और नसीरे से तप गए। सवने मिलकर कहा—आज से इनके यहां कोई दूध नहीं लेगा। छाछू कुओं के नन्हे या बुलाकी के यहां से लिया करेंगे। इस साले का मोहल्ले-भर का वाईकाट। नसीरा कुछ कहना चाहता था मगर महल्लेवालों की इस धमकी से हुसैनी के होश ठिकाने आ गए। पांव पड़ने लगा, गऊ माता की कसमें दिलाने लगा और अन्त में झगड़ा इस वात पर खत्म हुआ कि दूध का हिसाव कल से मुंशी नौवतलाल लिखा करेंगे और वही देवर-भाभी दोनों की साझा गाय-भैंसों के आमद और खर्च का हिसाव भी रखेंगे और देवर-भौजाई दोनों को उनकी ईमानदारी पर भरोसा रखना पड़ेगा। इसी सिलसिले में दुलारी के यहां नौवतलाल की नौवत वजने लगी। अच्छे नामी वैरिस्टर के मुंशी थे। आमदनी उम्दा थी। घर में अव लड़के-वहुओं, पोते-पोतियों से कोई लगाव नहीं रह गया था। सिर्फ अपनी वीवी राधेरानी को उनकी हज़ार वातें सुनकर भी वहुत प्यार करते, सोने के गहने गढ़-वाते। शहर में ही कुण्डरी में एक वनिये की वनवाई धरमशाला में इनका सगा साला मैनेजर था। सो उस धरमशाला का एक हवादार छोटा-सा कमरा इन्होंने अपने कब्ज़े में कर रखा था। महीने-दो महीने में पन्द्रह-वीस रोज अपनी मुसम्मात राधेरानी के साथ वह वहीं हनीमून विताया करते थे। दुलारी से भी अपने रिश्ते की वात उन्होंने अपनी पत्नी से छिपाई नहीं थी। मुंशियाइन के हज़ार कोसने दुम दवाकर सुनते रहे मगर चुक्कड़ का संग दुलारी के साथ ही किया। अव तो रखैल और घरैतिन में समझौता हो गया है। दुलारी सौत के लिए मलाई और दूध भिजवाती है। जव पति-पत्नी धरमशाला में पिकनिक मनाते हैं तो दुलारी वहां अकसर मुंशियाइन की सेवा में पहुंचती है। दोनों खूव वतियाती हैं।

हुसैनी और नसीरे फैसले के वाद कुछ दिन तो चुप रहे मगर दुलारी से मुंशी की इश्किया रिश्तेदारी जुड़ने के वाद ही झगड़ा फिर शुरू हो गया था। नसीरे की शादी होनेवाली थी इसलिए पैसों की मांग उस तरफ़ से वहुत वढ़ गई थी। एक दिन दुलारी जव कुण्डरी की धरमशाला में अपनी सौत मुंशियाइन से गप्पें लड़ाने गई थी तव दुलारी के घर में सेंध लगाकर उसके कुछ गहने भी चुरा लिये गए। दुलारी घर लौटी तो हाय-तौवा मचाया। मगर मुंशी वोले कि चुप रहो। इसका वदला मैं ले लूंगा। मुंशी ने वदला भी मुंशियाना तलवार से ही लिया। चौकी के छोटे दारोगा से याराना तो पहले ही का था, अव शराव की वोतलों में और भी गरमा गया। हुसैनी की दीवार से लगा हुआ ही लाला रग्घूमल रस्तोगी की हवेली का पिछवाड़ा था। उनके वेटे झब्बूलाल एक मुकद्दमे के दौरान मुंशी नौवतलाल से मिल गए। नौवत ने अपने दिमाग की रौशनचौकी में नौवत वजाकर झब्बूलाल का विगड़ता केस वनवा दिया था इसलिए झब्बूलाल उन्हें वहुत मानते थे। रंगीन-

मिजाज भी थे, यारबाज भी। छोटे दारोगा, झब्बू और नौबत की गहरी घुटने लगी।

एक दिन दरोगा और झब्बू की सोहबत में मुंशी ने कहा : "अमां झब्बू, तुम्हारे पडोस में तो ज़मीन पर पूनों का चांद उतर आया है मेरी जान कि देखो, तो अपना सब काम-धाम भूलकर आहें ही भरते रहो।"

"अमां, मुंशीजी क्यों ललचाते हो, खुलासा कहो न यार।" छोटे दारोगाजी ने हुमकाया।

"यह नसीरा साला अभी निकाह पढाके लाया है। अमां, माहरू है माहरू। देखो तो गश खाके गिर पडो और यही कहते फिरो कि लैला-लैला पुकारूं मैं बन मे, प्यारी लैला बसी मेरे मन में।"

झब्बूलाल की जवानी तडप उठी : "अमां, तुमने कैसे देखा मुंशी ?"

"अरे भई, इनके देखने में क्या अड़चन आ सकती है भला। उस लौंडिया की चचिया माम के आशिकेजार हैं हमारे मुंशीजी।"

लालच इतना बढा कि झब्बू, डब्बू हो गए। छोटे दारोगाजी की साजिश से झब्बू के घर की दीवार में हुसैनी के घर की तरफ सेंध खुदवाई गई। झब्बू ने रिपोर्ट लिखवाई, पुलिस के सिपाही आए। झब्बू के गहने हुसैनी के घर में घसियारिन के सन्दूक की तलाशी लेते हुए कैसे बरामद हुए यह या तो पुलिसवाले जानते होंगे या मुंशी और या फिर सबके भाग्य लिखनेवाले विधाता। बहरहाल, हुसैनी पकडा गया, घसियारिन मारी-पीटी गई, बेइज्जत हुई, नसीरा उस वक्त घर में नहीं था इसलिए बच गया। मगर सांप को पकडा देने के बाद अपनी माशूका की रक्षा के लिए मुंशी सपोले को भी नहीं छोडना चाहते थे। सात-आठ दिनों के बाद नसीरा भी पड़ोस के गांव में एक ससुराली रिश्तेदार के यहां पकड लिया गया। नसीरे की नई नवेली की क्या दशा हुई यह केवल उसका भाग्य ही जानता है। दारोगा, झब्बू और दो पुलिस के सिपाहियों की सोहबत में कुछ दिन बिताए। फिर एक चकलेवाली के हाथ बिककर न जाने वह कहां गई और उसका क्या हुआ। हुसैनी की घसियारिन तो इतनी डर गई थी कि उसके बाद लौटकर ही न आई, अपनी बहन की शरण में बाराबंकी चली गई।

हुसैनी ने अपनी भावज को धमकाने के लिए अपने मरहूम वालिद की एक वसीयत भी बनवा रखी थी, जिसमें यह लिखा था कि जब तक मैं रहूं तब तक मैं, मेरे बाद मेरा बड़ा बेटा गफूर खां और उसके बाद मेरा छोटा बेटा रसूल खां उर्फ हुसैनी पूरे घर का मालिक होगा। गायें, भैंसें, कपडे, जेवरात, बरतन, भाडे वगैरह जो कुछ भी गृहस्थी का सामान है, सबका मालिक रसूल खां उर्फ हुसैनी ही होगा, औरतों को सिर्फ रोटी-कपडे का ही हक होगा। जेल से लौटकर हुसैनी ने अपनी भावज को फिर उसी वसीयत को दिखलाकर धमकी दी, उसने आम को मुंशीजी

से कहा। मुंशीजी बोले : "अमां, तुम भी किस चुगत की धमकियों पर टेसुए बहा रही हो, उसका इन्तज़ाम भी माकूल हो जाएगा।"

रात को जब मुंशी झूमते हुए घर जाने के लिए निकले तो हुसैनी चबूतरे पर ही बैठा हुआ था, उन्हें देखकर बोला : "मुंसीजी, आपने तो मुझसे जेल में चक्की पिसवा ली पर अब मैं आपकी माशूक को नाकों चने चबवा दूंगा।"

मुंशीजी नर्म जबान से उसके कन्धे पर हाथ फेरते हुए बोले : "भई, अगर लड्डन मियां ने वाकई तुम्हारे नाम वह वसीयत लिख दी है तो मैं तुम्हारी भावज को तुरन्त यहां से हटा दूंगा। तुम्हारे लड़के कम्बख्त ने चोरी करी और जेल तुम्हें काटनी पड़ी, मुझे बड़ा अफसोस है। मैं तुम्हारा साथ दूंगा, तुम मुकद्दमा लडो। मगर एक ख्याल रखना दोस्त कि अगर वह वसीयत जाली निकली तो तुम्हें फिर पांच बरस चक्की पीसनी पड़ेगी। मुझे मुंशी करामत हुसैन ने एक बार खुद बातों-बातों में बताया था कि तुमने उनसे जाली वसीयत लिखवाई और उन्होंने ही अपनी गली के नाबीना फकीर का अंगूठा तुम्हारे वालिद की जगह लगवाया। लड़ के देख तो लो मेरे भाई, तुम्हारी किस्मत में पांच बरस की चक्की और लिखी है। और यहां चबूतरे पर न बैठो। अभी आध-पौन घण्टे में पुलसिया आयगा। फिर ढलती उमर में उसके जूते खाकर ही उठोगे मियां।"

"तो फिर मैं कहां जाऊं, आखिर यह घर मेरा भी तो है।"

"अमां जब था तब था, जाओ, बाराबंकी चले जाओ। तुम्हारी घसियारिन वहीं गई है। अब रिश्ता-इश्ता तो मुझे मालूम नहीं, हां अपने किसी रिश्तेदार के यहां है। जाओ, उसके लहंगे में मुंह छिपाके बैठ जाओ।"

हुसैनी तब भी न उठा। उधर मुंशीजी अपने घर जाने से पहले चौकी में दीवानजी को अठन्नी टिका गए थे, कहा : "दीवानजी, वो साला हुसैनी जेल से छूट आया है, कहीं अपनी भावज पर हमला न करे। साले को पकड़कर रात-भर के लिए हवालात में बन्द कर दो और सबेरे चूतड़ पे दो लातें लगवा के निकाल देना।"

चबूतरे पर बैठे-बैठे जोर-जोर से भावज दुलारी और मुंशी नौबतलाल को मल्लाही गालियां देकर कोसते हुए हुसैनी को दो सिपाही मारते-पीटते पकड़ लाए और लाकर हवालात में बन्द कर दिया। उसके बाद फिर हुसैनी की हिम्मत फना हो गई। सुबह निकला तो लौटके ही न आया।

युधिष्ठिर टण्डन की केबिन में जावेद आरामकुर्सी पर लेटा हुआ टण्डन की टाइप की हुई पाण्डुलिपि के छुट्टे पन्नों को पढ़कर पास रखी हुई मेज़ पर बेतरतीबी से डालता जा रहा था। युधिष्ठिर ने केबिन में घुसते ही जो यह देखा तो त्योरियां

चढ़ गई, बोला : "साले, मैं तो रात-रातभर मर-खपके टाइप करता हूं।"

"अरे मेरी जान, तेरा एक-एक लफ्ज गुलाब की तरह चूम-चूमकर सहेज दूंगा बेटा, उम्दा लिख रहा है तू। मुंशी नौबतलाल खूब आए, मजेदार कैरेक्टर है। किसने सुनाया इनका किस्सा ?"

कुर्सी पर बैठते हुए युधिष्ठिर की त्योरियां फिर चढ़ीं, डपटकर कहा : "व्हाट डू यू मीन ? अपने बाबा के इस पोते को मैंने खोजा है। अमेरिका की खोज में साले कोलम्बस के जहाज ने भी इतना पानी नहीं लांघा होगा जितना मुंशी नौबतलाल की खोज में मैंने पुराने शहर की गलियों को अपनी स्कूटर से नापा है।"

"शाबाश, यानी हिस्टारिकल कैरेक्टर है।" मेज पर और एकाध जमीन पर गिरे कागजों को उठाते हुए जावेद ने कहा "बहरहाल, अब तुझे सर्टिफिकेट दे सकता हूं कि तू नौवेलिस्ट बन जाएगा।"

दफ्तर से निकलकर जब दोनों दोस्त सड़क पर आए तो जावेद बोला : "यार, बीवी को बहाने से छुट्टी दिलाकर कुछ ऐश कराने को जी चाहता है।"

"ख्याल अच्छा है, मेरा जी भी यही चाहता है।"

"तो तू पार्क रोड जा, सबको को छुट्टी दिला, मैं करामत हुसैन जाकर प्रिंसिपल को यह समझाऊंगा कि अमा, कुछ भी समझा दूंगा। गुलबैंक की अम्मा सीढ़ी से बैंगन की तरह लुढ़कती हुई नीचे आ गई हैं। मुंह के दो-दो, ऊपर-नीचे के दांत पहले ही से गायब थे, दो और शहीद हो गए।"

"अमा, क्यों बिचारी बुढ़िया का बुरा सोचते हो, बड़ी हंसमुख हैं, बड़ी भोली, बल्कि आइडिया दूसरा आ गया यार। तुम पार्क रोड जाओ, शकुन का प्रिंसिपल से कहो कि युधिष्ठिर के स्कूटर का एक हल्का-सा ऐक्सीडेन्ट हो गया है और मैं करामत हुसैन जाकर तेरे ऐक्सीडेन्ट की बात कहकर शबाना को लिये आता हूं।"

"अमा नहीं, दोनों की दोनों बहुत नाराज होंगी।"

"अमा होंगी तो मना लेंगे। तीन बजेवाला शो दिखाएंगे, क्वालिटी की आइसक्रीम खिलाएंगे। नारी के क्रोध के अंगारे पर भी शृंगार की राख जम जाती है बेटा।"

अन्त में यही तरकीब की। जावेद तो शकुन को पार्क रोड से जल्द ले आया, किन्तु शबाना को करामत हुसैन से निकलने में देर लगी। शकुन घबराहट में थी कि युधिष्ठिर का कहा ऐक्सीडेन्ट हुआ है और जावेद उसे ले जाकर क्वालिटी में बिठा देता है। "ये क्या मजाक करते हैं बन्ने भाई। वह किस हास्पिटल में हैं ? पहले वहीं चलिए।"

"अरे भई, शबाना मुझे फोन कर चुकी है कि टण्डन अस्पताल से भाग आया

है, पुलिस उसके इन्तजार में है। शायद यहीं आ जाय।"

थोड़ी देर में श्रीमती शबाना जावेद भी चेहरे पर घबराने की फकफकाहट लिये टण्डन के साथ क्वालिटी में दाखिल हुईं। पत्नियों के क्रोध और पतियों के हास्य का संगम मज़ेदार रहा जिससे नाश्ता कुछ ज्यादह ही हो गया। सिनेमा का वक्त भी बातों-बातों में निकल गया। तय हुआ कि अब दोनों अपने-अपने घर जाएं और छह बजे तक शकुन और युधिष्ठिर अंशू को लेकर जावेद के घर पहुंच जाएं, खाना वहीं होगा। मुश्ताक साहब और दोनों पुरानी नौकरानियों से बातें करके पुराने ज़माने को अंज़ सरे-नौ देखा जाएगा।

घर आकर युधिष्ठिर अपने बाबा की डायरियों में अंकित स्मृतियों को फिर से उलटने-पलटने लगा। प्रथम महायुद्ध से सम्बन्धित कुछ पढ़ी हुई पुस्तकों के नोट्स भी उलटे।

तभी अंशू एकाएक कमरे में घुस आया : "पापा, हमाली चाकलेट मम्मी खा गई।"

तभी शकुन आई : "अरे, ये यहां चला आया।"

"शक्को, तुम मेरे अंशू की चाकलेट क्यों खा गई जी ?"

"ले, मैं तेरे लिये और लाई हूं भई।"

"नईं-नईं-नईं, मैं तो वही चाकलेत लूंगा जो तुम खा गई हो।"

युधिष्ठिर अंशू को प्यार से गोद में बिठलाकर बोला : "भैये, इस वक्त तो तू यही चाकलेट खा ले, कल मैं तेरी मम्मी के मुंह से वही चाकलेट उगलवा लूंगा।"

"कैसे पापा ?"

"सवेरे धूप निकलेगी, कहो—हां।"

"हां।"

"बस, मैं तेरी मम्मी का घर धूप में बना दूंगा और मम्मी पेट से तेरी चाकलेट तुझे निकालकर दे देगी। अच्छा, अब मुझे तू एक प्यारी-प्यारी पप्पी तो दे और जा, काम करने दे। नहीं तो मुझे मास्टरजी मारेंगे। बहुत लिखना है।" समझा-बुझाके बेटे को विदा किया, एक सिगरेट सुलगाई और कलम कागज पर चल पड़ी।

इकतीस

पहला महायुद्ध अपनी पूरी गर्मी पर चल रहा था। मित्र राष्ट्रों की सेनाएं जर्मनी की सेनाओं से लगातार हार रही थीं। भारतीय जनता में जर्मनी की जीत और

अंग्रेजो की पराजय की खबरो पर बहुत उत्साह फैल रहा था। इधर श्रीमती एनी बीसेन्ट के द्वारा चलाए गए होमरूल लीग के आन्दोलन ने देश-भर मे बड़ा जोश फैला दिया था। श्रीमती बीसेन्ट भारतीय जनो मे अंग्रेज सरकार से स्वायत्त शासन प्राप्त करने के लिए गहरा उत्साह जगा रही थी, शिक्षित नवयुवकों की बढ़ती हुई बेकारी इस भुस मे आग लगाने के लिए पिछले कुछ वर्षों से क्रमशः भड़क रही थी। श्रीमती बीसेन्ट के आन्दोलन चलाने के कुछ ही दिनों के अन्दर कानपुर, इलाहाबाद, बनारस, मथुरा, कालीकट, अहमदाबाद, मद्रास आदि भारत के प्रमुख नगरो मे इसकी शाखाएं खुल गईं। भारत-भर मे थियोसोफिकल सोसाइटी की जितनी शाखाए थी, वह भी इस कार्य के लिए सक्रिय हो उठी। बाईस सितम्बर सन् पन्द्रह की डायरी मे बैरिस्टर टण्डन ने यह लिखा—"श्रद्धालु भारतीय जनता मिसेज बीसेन्ट को अब बसन्ती देवी कहकर पुकार रही है। कल मैं चौक गया था तो कइयों ने बड़ी श्रद्धा से यह कहा कि यह सीताजी के वरदान से भारत का उद्धार करने के लिए अवतरित हुई हैं। खैर जो हो, मगर इसमे शक नही कि मिसेज बीसेन्ट आज़ादी के मस्त झोको-भरी बसन्ती बहार लेकर ही आई हैं। मैं सोचता हूं इस आन्दोलन मे मुझे गहरा हिस्सा लेना चाहिए, इलाहाबाद जाकर बैरिस्टर नेहरू से एक लम्बी मुलाकात के लिए आज ही पत्र लिखकर समय मागूंगा। एम० ऑफ० इलाहाबाद भी बसन्ती झोको-सी अकसर मेरी यादो मे नशीली और गुलाबी सिहरन भर जाती है। रईस की पैसो और पैसो से खरीदी हुई विलासिनी सहचरियो के साथ समय बितानेवाले पति से उसकी नही बनती। सोचता हू कि इलाहाबाद मे इस बार एम० को नेहरू परिवार की महिलाओं से मिलवा दू'' "

उपन्यास का नया अध्याय लिखने के लिए नोट्स और बाबा की डायरी का अंश निकालकर युधिष्ठिर अपने घर के लेखनकक्ष मे बैठा हुआ पुराने दिनो की कल्पनाओ के चित्र सिगरेट के धुए के छल्ले उड़ाता हुआ बना रहा था। आज की चहल-पहल-भरी सड़को को देखकर सत्तर-पचहत्तर वर्ष पहले की खाली-खाली-सी लगनेवाली सड़को का अनुमान ही नही लगता था। मरियल घोड़ो से जुती हुई बन्द दरवाजेदार बग्घिया, दो-चार तागे-इक्के, इनी-गिनी चार-पाच बाईसिकलें और नादिर-शादिर बदबूदार पेट्रोल का धुआ छोड़ती रईस या अंग्रेज अफसर की मोटर निकल जाती थी। पुराने महल्लो मे डोलियों-पालकियो और तामझामो की रियासतभरी सवारियां भी नजर आ जाती थी।

बाबा की डायरी से यह भी पता चला कि उन्हें अपनी पत्नी एम० ऑफ० लखनऊ से यह खुशखबरी मिल चुकी थी कि वह अगले वर्ष किसी समय पिता बन जाएंगे। पिता बनने की खबर मन को सुहाती है किन्तु मा बननेवाली 'एम० ऑफ लखनऊ' से उनकी प्रायः अनबन ही रहती है। इसमे कोई शक की बात नही कि वह बहुत सुन्दर है, मगर जितनी ही सुन्दर है उतनी ही घमण्डी भी है। कुछ सास,

कौशल्याजी ने भी उन्हें अपने सिर चढ़ा लिया है। जयन्त की पत्नी मन्नो उन विकृत स्वाभिमानी स्त्रियों में थीं जो अपने पति के अंकुश से बचने के लिए घर की बड़ी-बूढ़ी को अपनी सेवाओं से सन्तुष्ट रखती हैं। छोटी-छोटी-सी बातें गृहस्थी में कैसा ज़हर घोल देती हैं, यह युधिष्ठिर के लिए इस समय इन चरित्रों को लेकर अपनी निजी परेशानियों के मकड़जाल से निकल रहे हैं। 'एम० ऑफ लखनऊ' और 'एम०ऑफ इलाहाबाद' उसके उपन्यास की दोनों ही नायिकाएं उसकी सगी रिश्तेदार भी हैं। एक सगी दादी मगर उसे कभी देखा नहीं, दूसरी नायिका नायक की प्रेयसी होने के कारण पराई होकर भी युधिष्ठिर की नितान्त अपनी बन गई है, बल्कि 'एम० ऑफ इलाहाबाद' ही उसे अपनी सगी दादी-जैसी लगती है।

युधिष्ठिर के मन में एक बहुत खयाल आया कि मान लो शकुन के रहते मैं भी किसी दूसरी शकुन से—नहीं-नहीं, यह असम्भव है। बाबा और दद्दा के रिश्तों में अन्तर आ जाने के जो कारण थे वह उसके जीवन में संयोग से नहीं आए। युधिष्ठिर और शकुन एक-दूसरे में इतने घुल-मिल गए थे कि कभी गृहस्थी की चकल्लस में दस-पांच मिनट की थोड़ी-सी मुंह फुलव्वल भले ही होती रहती हो पर वह एक-दूसरे के अलावा किसी और को चाह नहीं सकते थे।

बैठे-बैठे ही सहसा ध्यान गया कि वह अपने पिता की तरह ही एकस्त्री, एकपत्नीव्रती ही रहा। युधिष्ठिर की सौतेली मां स्वर्गीया श्रीमती लड़ैतो टण्डन जब तक जीवित रहीं, सुमन्त ने राजनीतिक और प्रभावशाली वातावरण में रहते हुए भी कभी दूसरी स्त्री की चाह नहीं की। उनके देहान्त के बाद ही उनके सूने जीवन में युधिष्ठिर की सगी मां शारदाजी ने प्रवेश किया था। इस दृष्टि से युधिष्ठिर, सुमन्त और देशदीपक एक-से ही रहे किन्तु लकड़बाबा रायसाहब बंसीधर के बारे में क्या कहा जाय? पड़बाबा देशदीपक तथा स्वयं रायसाहब के उल्लेखों से यह तो साफ नजर आता है कि रायसाहब अपनी पत्नी श्रीमती चम्पकलता के प्रति आग्रहशील होते हुए भी अवसर के लोभवश नैन्सी जैसी स्त्रियों के फन्दे में फंस गए थे और सुविचारक होते हुए भी कभी-कभी पद-प्रतिष्ठा पाने की महत्त्वाकांक्षा में वह कायर की तरह अपने जीवन में समझौते भी कर लिया करते थे।

इस तरह रायसाहब बंसीधर से लेकर स्वयं अपनी पांचवीं पीढ़ी तक के व्यक्तियों के सम्बन्ध में सोचते हुए युधिष्ठिर ने अपने सौतेले भाइयों—अनन्त, हेमन्त और बलवन्त के सम्बन्ध में भी सोचा। अनन्त जोरू का गुलाम है, बुद्धिहीन और अहमभाव से पूरित। हेमन्त बहुत तेज है। प्राचीन मूर्तियों की सुन्दरता, शिल्प, कौशल और गुण आदि का बखान करते हुए उसने अब तक हिन्दी और अंग्रेजी में लगभग बीस-बाईस लेख लिखे हैं, अपने क्षेत्र में थोड़ा-बहुत नाम भी कमाया है, लेकिन मदिरा और मदिराक्षियों का प्रलोभन उसे सताता है। अपने विभाग में बहुप्रशंसित होकर भी दबी जबान से लोग डॉ० हेमन्त टण्डन की इस बदनामी की

चर्चा किया ही करते हैं। छोटा बलवन्त दोनों भाइयों में अपेक्षाकृत कम बुद्धि-शाली है, पढ़ा भी कम, पिता के उपमन्त्रित्व काल के समय नगरपालिका में काम करनेवाले एक द्वितीय श्रेणी के अफसर की कन्या से उसका विवाह हुआ था। नौकरी चूंकि ससुर ने दिलवाई, पिता ने नहीं, इसलिए सास-ससुर का अनन्य भक्त था। एक घर में रहते हुए भी उसका घरवालों से कोई खास लगाव न था। पैसा बटोरने की नीयत तो खूब थी लेकिन शाम को कीर्तनियों में शामिल होकर हरिचर्चा करने के अलावा उसे कोई शौक न था। हां, रसीली भक्तिनियों से अक्सर आंखें लड़ा-गर्मा लिया करता था।

मेरा परिवार औसत ढंग से कोई बहुत खराब रेकार्ड नहीं रखता। कभी बहुत पैसेवाले खानदान के होने के कारण बुरे दिनों के झटके खाकर इस वंश में फिर से ऊंचा चढ़ने की महत्त्वाकांक्षा तो किसी-न-किसी रूप में हरेक में ही है, पर आमतौर से बौद्धिक क्षेत्र में इस घराने के कम लोग ही आए। लाला मुसद्दीमल के पांच बेटों में एक युधिष्ठिर के ही वृद्ध पितामह तो व्यापार की पारिवारिक लीक तोड़कर बाहर निकले। फारसी से अंग्रेजी परिवर्तन का नया जमाना था। उन्होंने पद-प्रतिष्ठा पाकर औरों के मन में नई-नई चाहनाएं जगा दीं। देशदीपक का चरित्र अपने पिता की दृष्टि से ऊंचा था। उनका राष्ट्रीय स्वाभिमान भी पिता से अधिक उन्नत था। सफल और यशस्वी सर्जन होने के कारण उन्होंने अपने पिता से कुछ अधिक धन तो अवश्य कमाया पर उसे बेईमानी की कमाई नहीं कहा जा सकता। पैसा जयन्त ने भी खूब कमाया और लाला हसराज टण्डन के खानदान में तो इस समय लक्ष्मीजी बाढ़ के पानी की तरह दिन-रात आती रहती हैं, करोड़ों में खेल रहे हैं हमो बाबा के लड़के और पोते।

अपने पितामह जयन्त के सम्बन्ध में उसका यह मत पुष्ट हुआ कि वह मूल-रूप से व्यभिचारी वृत्ति के नहीं थे। परिस्थितियों ने उनका वैसा रूप बना दिया। मन्नो दद्दा से एक बार उसने यह भी जाना था कि उनसे सम्बन्ध प्रगाढ़ होने के बाद बाबा फिर अधिकतर परस्त्री-लोभी नहीं रहे। नौजवानी में उनका अनबूझा मदनाग्रह उद्दाम और उन्मत्त हो उठा था। उन्होंने अपनी बुद्धि को स्वयं छला। अनारो-घटना उनके जीवन की सबसे भयानक लापरवाही वाली घटना मानी जा सकती है। विलायत में जो कुछ स्त्री-प्रसंग हुए वह मात्र उनके भारतीय संयम की विरोधी प्रतिक्रिया में हुए थे। हर शेर आदमखोर नहीं होता लेकिन संयोगवश चाट लग जाने पर वह हो ही जाता है। लेकिन रुचि का साथ मिल जाने पर यह स्वयं आरोपित आदत स्वयं ही विलुप्त भी हो जाती है। रायसाहब बंसीधर में भी ऐसी ही कमजोरी आ गई थी मगर वह होशियार थे। उनकी उन्नति करने की महत्त्वा-कांक्षा और अपनी अनजानी अनदेखी बाराबंकी में पड़ी पत्नी के प्रति उनका न्याययुक्त आग्रह उन्हें बचा ले गया। बंसीधर आर्थिक स्थिति से जूझते

हुए फेरीवाले के बेटे थे और जयन्त रायसाहब के पोते और प्रतिष्ठित धनी-मानी चिकित्सक के बेटे होने के कारण पोतड़ों के रईस थे, दोनों के मिजाजों में बहुत फर्क आ चुका था।

खैर, तो अब चैप्टर कहां से शुरू करोगे मिस्टर युधिष्ठिर टण्डन ? युधिष्ठिर अपने मानसिक चिन्तन का बिखराव समेटकर आगामी अध्याय के मूलबिन्दु पर केन्द्री-भूत होने के लिए भीतर-ही-भीतर मचलने लगा। तभी कमरे का दरवाज़ा खुला और आगे-आगे अंशुमान, पीछे उसकी मां दिखलाई दी। युधिष्ठिर मेज़ से अपनी टांगें उठाकर ज़मीन पर रखते हुए एकाएक बोला : "अमां, बर्खुदार तुम ? ये रात के सवा-ग्यारह बजे क्या आफत आ पड़ी आखिर।" कहते हुए उसने उठकर अंशू को उठा लिया।

"अरे सोते-सोते जाग पड़ा। बाबू कहां हैं, बाबू कहां हैं, बाबू पास सोएंगे।"

"अरे इसको परसाद का लड्डू खिला दो, इसकी दादी लाई थीं।"

"उसके लिए भी कहता है कि आपके हाथ से ही खाऊंगा।"

"चल मेरे यार, तू आखिर लाला मुसद्दीमल की सातवीं पीढ़ी में है न। सबकी सोची थी, तेरी ही रह गई तो तू खुद आ गया। शको डार्लिंग, तुझे एक तकलीफ दूंगा दोस्त, अंशू के आने के साथ-ही-साथ नये चैप्टर की ओपनिंग भी माइण्ड में आ गई।"

"तुम इसे सुलाओ, मैं कॉफ़ी बनाती हूं।"

अंशू को सुलाकर युधिष्ठिर जब लिखने की मेज पर बैठा तो घड़ी में बारह-दस थे। सिगरेट सुलगाई, एकाएक सर्जक मन अचानक महायुद्ध की पृष्ठभूमि में अपनी रचना के लिए सूत्र खोजने लगा।

सन् पन्द्रह में जर्मनी ने पोलैण्ड जीत लिया, बृटिश सेनाओं को तुर्की फौजों से मात खानी पड़ी। इटली जो शत्रु राष्ट्रों से गठजोड़ करके भी अब तक युद्ध में तटस्थ रहा था, अब मैदान में कूद पड़ा। जर्मन की शक्तिशाली पनडुब्बियां सक्रिय हो गईं। बारह सौ यात्रियों का बृटिश जहाज़ डुबा दिया गया। सन् सोलह भी अंग्रेज़ों के पक्ष में पहले तो सफलता प्रदान नहीं कर सका, पर बाद में मित्र राष्ट्रों के पांव भी जमने लगे। फिर भी भारतीय प्रजा अपने गली-कूचों और बाज़ारों में जर्मन सेनाओं के ही गुणगान कर रही थी : "हिण्डनबर्ग बड़ा प्रतापी सेनापति है भैया, हमें बड़ी गुप्त जानकारी मिली है। काशी में गंगाघाट पर कौनो बड़ा सन्यासी रहा। उसके पांव में घाव और सैकड़ों लोग उसके पास आवैं। किसी को कोई बीमारी, किसी को कोई। पर वो बाबाजी किसी को फूल या लौंग या चुटकी-भर भसम दे दें, सब ठीक हो जाय। एक गोरा रहा। लोग समझे कि अंगरेज़ होगा। वह अपनी

संसकृत भाखा मे बोला कि कैसे साधू हो तुम, दूसरो की बीमारी तो ठीक कर देत हो पर अपने घाव ठीक नही कर पात हो। बाबा ने सिर उठाकर देखा। उनकी त्योरिया चढी और वो भी संसकृत में ही बोले कि तुम साले नास्तिक, हमरा परताप क्या जानो, यह देखो। कहकर अपने हाथ के नाखूनो से घाव को कसके खुरच दिया और घाव गायब—"

"अमा, सच्ची कहते हो पुद्दन गुरु।"

"अरे जोगी जती की बात और सवेरे अपने ब्रह्ममुख से हम बखान रहे हैं सो गलत कैसे होगा जी।"

"अच्छा तो फिर हुआ क्या, यह तो बताओ महाराज?"

"वह भैया गोरा जो था उसने अपने कपड़े फाड़ डाले और कहा—बाबा मैं साधू हुई गवा, अब तुम्हरे चरनो मे बैठा हू, तुम्हरा ही चेला हू। असल मे वह जर्मनी का जासूस था और उसने बाबाजी की खूब सेवा की। बाबा उसकी सेवा से खुस हुई गए और अपना घाव खोल दिया और कहा—जाओ, तुम जीतोगे, सो वह जीत रहा है।"

"घाव खोल दिया न बाबा सो वह नही जीतेगा, समझ लो। ये राजा, जोगी, अगिन, जल, इनकी उल्टी रीत होती है, तुम क्या जानो।"

"अरे हम नही जानेंगे तो क्या तुम्हरे जैसे अढाई-पढाई लोग जानेंगे। ब्राह्मन कुल मे जनम लिया, अफीम खाते हो और नहाते नही। तुम क्या समझोगे जोगियों की बात। बाबा पहुंचे हुए थे। उन्होने पहले ही जान लिया कि यह साला जासूस है। फिर इसको उल्टी विद्या पढ़ाऊं। पहले घाव बन्द कर दिया, फिर जितने दिन बन्द रहा, हिण्डनबर्ग जीतता रहा और जब घाव खोल दिया तो साला हारने लगा। हमको शास्त्र पढ़ाते हैं ये चुन्नू अफीमची, ससुर ओना मासी धम तक तो पढ़े नही, जोगियो की बात बताएगे।"

पुद्दन और चुन्नू गुरुओ मे गाली-गलौज का शास्त्रार्थ गरमा उठा। उस समय तीन-चार व्यक्तियो के साथ बिलैत पास बालिस्टर जयन्त बाबू साहब अपने मुंशी अजायबलाल के साथ फूलवाली गली से चोनढ़ी टोले की ओर जाते हुए अचानक दिखलाई पड़े।

पिछली शाम जयन्त को अपने दफ्तर मे 'एम० ऑफ अल्ला' (मनोरमा ऑफ इलाहाबाद) का संक्षिप्तीकरण का रुक्का मिला. "आदर्णीय, सिरिफ आपसे मिलने के लिए आई हू। चोपड़ी टोले मे अपने ममेरे भाई साला शिवदास की हवेली में हू। कब मिलेंगे? मन्नो।"

एक बहुत बड़े मुकद्दमे मे बैरिस्टर साहब का मन उलझा हुआ था। 'एम० आफ अल्ला' का यह छोटा-सा पत्र भी उन्हे बड़ी तरावट दे गया। मुंशीजी को बुलाया, कहा: "अजायबलाल, वो जो रुक्का लेकर आया है वो है या चला गया।"

"नहीं, वह हुजूर से जवाब पाने के एन्तजार में खड़ा है।"

"तो आप उनके साथ चोपड़ी टोले चले जाइए, रास्ता देख आइए। कल सुबह मुझे वहां ले चलना होगा।"

"जी बहुत खूब, मगर वो नवाब साहब के सिकेटरी···"

"ठीक है, उनको भेज दो और शिवप्रसाद से कह दो मेरे ड्रिंक्स का सामान लगा दें। तुम जाओ, रात को लौट के आने की जरूरत नहीं। सुबह आधा घण्टे पहले आना।"

भारत की एक बहुत बड़ी रियासत के हिज़हाइनेस दो बरस पहले लखनऊ की एक कोकिलकण्ठी वारवधू पर मुग्ध हो गए थे। उन्होंने उन बाईजी को फिर अपनी रियासत से बाहर निकलने न दिया। गायिका की मां और सब साज़िन्दे वगैरह रियासत से निकाल दिए गए। वह गायिका हिज़हाइनेस को बहुत प्रिय थी मगर हिज़हाइनेस गायिका को कतई पसन्द नहीं आते थे। दो बरस में लाखों के जेवरात और कपड़े भेंट में दिए और फिर भी वह उन्हें धोखा देकर उनके ही एक खास मुसाहब मीरबाकर के साथ लखनऊ भाग आई थी। हिज़हाइनेस यह खबर पाकर आगबबूला हो गए और उसी वक्त अपनी मोटरकार में ड्राइवर और एक खास नौकर को साथ लेकर चल दिए। रात को आठ-सवा आठ बजे के लगभग उनकी गाड़ी उक्त गायिका के दरवाजे से थोड़ी दूर पर जाकर खड़ी हो गई। कोठे पर अपनी माशूका और मुसाहब को पीते-पिलाते देखा तो खून चढ़ गया। जबान की गालियों से ज्यादह उनकी रिवाल्वर ने दोनों के प्रति अपनी घृणा का प्रदर्शन किया। रियासती ड्राइवर और खिदमतगार दोनों ही बहुत चतुर थे। हिज़हाइनेस को वहां से हटा ले गए। रात में कहां जाएं कि पकड़ाई में न आएं—एकाएक ड्राइवर को याद आया कि एक बार लखनऊ के नामी बैरिस्टर जयन्त टण्डन साहब रियासत के मेहमान बने थे। उसने पीछे की सीट पर निढाल पड़े हुए अपने मालिक से पूछा : "बैरिस्टर साहब के यहां चलिएगा ?"

"ले चलो, 'चम्पक मैन्शन,' नजरबाग।"

हिज़हाइनेस से बैरिस्टर टण्डन की मुलाकात लण्डन में हुई थी। टण्डन साहब का याराना मिजाज उन्हें बहुत माकूल लगा और हिन्दुस्तान लौटने पर एक बार उन्होंने उन्हें अपनी रियासत में बुलाया भी था। तब वह जूली के साथ वहां हफ्ते-भर रहकर आए थे। रात के दस बजे जब जयन्त ने सब किस्सा सुना तो पहले यही कहा : "आपको फौरन से पेश्तर कल सुबह तक अपनी रियासत में पहुंच ही जाना चाहिए, अपनी 'रोल्सरायस' यहीं छोड़ दीजिए। मैं दूसरी गाड़ी का इन्तजाम किए देता हूं।"

हिज़हाइनेस अपनी रियासत में पहुंच गए और उनसे नाराज बृटिश सरकार उन्हें पकड़ने की कोशिशों में असफल रही। वही मुकद्दमा चल रहा है और

हिज़हाइनेस के सेक्रेटरी उसी की अगली पेशी के सिलसिले में कुछ सलाह-सूत करने आए हैं। वैरिस्टर साहब का एक मन अपने पेशे में जुड़ा हुआ है और दूसरा मन अपने नये आकर्षण एम० ऑफ अल्ला के साथ।

मुंशी अजायबलाल उस रात लाला शिवदास की हवेली जब देखने आए थे तभी उन लोगों को मालूम हो गया था कि सुबह बैरिस्टर साहब इधर आनेवाले हैं। उनकी खातिरदारी के लिए पूरे प्रबन्ध किए गए थे। नाश्ता करते हुए लाला शिवदास ने कहा "बैरिस्टर साहब, आप तो सातों विलैतें घूमे हुए हैं, सबकी ताकत का अन्दाजा होयगा। कान जीतेगा?"

"फिलहाल कुछ कहा तो नही जा सकता शिवदासजी, मगर लगता यही है कि कैसर और उसके साथी अन्त में पैदली मात खाएंगे।"

"अच्छा यह मजाख हमरी समझ मे नही आता हैगा बैरिस्टर साहब कि एक तरफ तो हमरे सब लीडर लोग तिलक महाराज, मोतीलालजी और मालवीयजी सब जने कह रहे हैं कि अंग्रेजो की मदद करो, फौजों में भरती हो, पैसा दो, लड़ाई जिताओ और दूसरी तरफ होमरूल, होमरूल कह-कहके सरकार की खिलाफत भी करते हैं। ये कैसी दोधारू चाल है।"

"दोधारू कुछ नही शिवदासजी, लड़ाई मे इसलिए अंग्रेजों को जिताना चाहते हैं कि बृटिश खजूर से गिरकर हम जर्मनी के बबूल के कांटो में नहीं फंसना चाहते। क्योंकि अंग्रेजो से तो जूझते हुए हमें काफी बरस हो गए, उनसे हमारा समझौता होना आसान है।" इधर-उधर की बातचीत के बाद शिवदासजी से जयन्त ने कहा "मैं आपकी बहन साहबा को लिये जाता हूं, शाम तक पहुंचा दूंगा।"

सुबह का समय था। चौक बाजार में गाड़ियां और सवारियां दिन में दो बजे तक चूंकि जा-आ सकती थी इसलिए बैरिस्टर साहब की गाड़ी फूलवाली गली के नुक्कड़ पर ही खड़ी थी।

जयन्त ने यह भेंट अपने दफ्तरवाले बंगले में रखी थी और मुंशी अजायबलाल को यह आदेश दिया था कि "कोई भी आए तो उनसे मिलने न दिया जाय। और किसी हलवाई वगैरह का भी इन्तजाम कीजिए, यही दफ्तर के पीछेवाली कोठरी में वह हमारे लिए खाना बनाएगा। इन्तजाम बहुत अच्छा हो। और देखिए, इन मुसम्मात का यहां रात में सोने का इन्तजाम भी कीजिए। लेकिन ध्यान रहे, न 'चम्पक मैन्शन' में यह खबर पहुंचे और न चोपड़ी टोले में।"

"हुजूर खातिरजमा रखें, ट्रिको का भी इन्तजाम कर लूं।"

"नहीं, लेकिन हां शाम तक ये जहां ठहरी हुई हैं वहां यह खबर पहुंच जाय कि आज रात वह 'चम्पक मैन्शन' में ही ठहरेंगी।"

मुंशी अजायबलाल खुद ही यह सन्देश लेकर चोपड़ी टोले गए थे कि "बैरिस्टर साहब की मां और उनकी शरीके जिन्दगी ने उन्हें रोक लिया है।"

लालबाग में इलाहाबाद का अल्प-परिचित जोड़ा तन और मन के नातों से प्रगाढ़ हो चला।

रायबहादुर रघुनन्दनप्रसाद खन्ना नये रईस थे। उनके बाबा कमसरियट में गल्ला बेचते थे, उसी में दो पैसे बने। उनके बेटे ने सराफी की दूकान खोली और रघुनन्दनप्रसाद पुराने विलासी रईसों-नवाबों के बहुमूल्य गभूषण और जमींदारियां रेहन रखकर अपनी दौलत बढ़ाने लगे। इसके अलावा कुछ विलायती मशीनों और विलासिता की सामग्रियों की बड़ी-बड़ी एजेन्सियां भी ले रखी थीं। उस दौलत का कुछ-न-कुछ हिस्सा तोहफे के तौर पर अंग्रेज हाकिमों के पास भी पहुंचता रहता था। सन् चौदह में लड़ाई शुरू होते ही उन्होंने बृटिश सेना में जवानों की भर्ती के लिए अंग्रेजों की बड़ी मदद की। उन्हें सेना के लिए अनाज का ठेका भी मिल गया। लक्ष्मी हवाई जहाज़ की तरह ऊपर चढ़ने लगी। सन् पन्द्रह की पहली जनवरी को अखबारों में देखा कि रघुनन्दनप्रसाद खन्ना रायसाहब हो गए, सोलह में रायबहादुर। तब बड़े जश्न मने थे। बैरिस्टर जयन्त टण्डन, जो तब रायबहादुर के वकील और उनके घर में भी घनिष्ठ हो चुके थे, वह घरेलू घनिष्ठता आज लालबाग में अपने चरमबिन्दु पर पहुंच गई। रायबहादुर रघुनन्दन अपनी अन्य प्रेयसियों के बीच में पत्नी मन्नो को भी अक्सर बुला भेजते थे जो उनके स्वाभिमान को अच्छा नहीं लगता था। इसी में पति-पत्नी में टक्कर हुई और अब दो महीनों से बोलचाल भी बन्द हो गई है। वह चाहती है कि पति पर खाने-खर्चे का दावा ठोक दिया जाय, वह अब उनके साथ नहीं रहेगी। सोने से पहले जयन्त ने मन्नो से कहा: "देखो, तुम्हें रग्घो बाबू से ऊपरी मेल-मिलाप बराबर रखना होगा। मैं यह नहीं चाहता कि तुम खाने-खर्चे का दावा उनके खिलाफ करो।"

"मगर मैं अब उनके साथ रह नहीं सकती। आज के बाद तो और भी नहीं।"

"मैं समझता था कि तुम्हारे पास कुछ अकल-वकूल भी होगी। देखो, मैं तुम्हें पब्लिक लाइफ में ले आऊंगा। मिसेज़ खन्ना होकर तुम मेरे साथ इज्ज़त कमाओगी और मेरी प्रेमिका या रखैल बनकर बेइज्ज़त होगी। मैं कल ही तुम्हारे साथ इलाहाबाद चलूंगा। रग्घो को दोस्ताना तौर पर समझा दूंगा और तुम्हें पब्लिक ऐक्टिविटीज़ में बढ़ा दूंगा।"

"मैं कैसे बढ़ूंगी, न पढ़ी न लिखी, न कुछ अकल न सहूर।"

"गुलाब की क्यारी में मिट्टी के ढेले भी खुशबूदार हो जाते हैं माई डियर। और तुम तो खुद गुलाब हो। तुम्हें सिर्फ अच्छे खाद-पानी की ज़रूरत थी जो अबसे बराबर मिलेगी।"

जयन्त ने इलाहाबाद में रायबहादुर साहब को समझाया: "रग्घो बाबू,

मन्नो बीबी आपकी इज्जत हैं। आप महज चार-छः नहीं, भगवान कृष्ण की तरह सोलह हजार एक सौ आठ माशूकों से भले ही घिरे रहें मगर वह आखिर आपकी धर्मपत्नी हैं। और फिर इधर गोद के बच्चे के जाने की वजह से दुखी और चिड़-चिड़ाई हुई भी हैं।"

"वह सब ठीक है जयन्त बाबू, मगर मैं उनका घमण्ड और गुस्सा बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

"तब तो एक ही काम हो सकता है जिससे आपको भी फायदा होगा और उनका दिल भी बहला रहेगा।"

"क्या?"

"मैं उनको अपने साथ पब्लिक लाइफ में लगा लूं।"

"अच्छा है, मेरे सिर से बला भी टलेगी, मगर आप उसे कौन-सी पब्लिक लाइफ दे सकेंगे क्योंकि आपके पास एक तो पोलेटिकल पब्लिक लाइफ है और दूसरी वकालत।"

"मैं उनको अपने साथ होमरूल लीग की ऐक्टिविटी में लगाऊंगा।"

रायबहादुर सुनते ही चौंक उठे, चेहरे पर कुछ घबराहट सी झलकी जो जयन्त की बारीक दृष्टि से छिपी न रही। मौका देखकर जयन्त तुरन्त बोल उठे: "घबराइए मत, अंग्रेज हाकिम आपके साथ ही रहेंगे। बदनाम मुझे कीजिएगा कि मैंने आपकी बीवी को आपके खिलाफ बना दिया है। मतलब यह है कि घर में दावे मुकद्दमे की बदनामी से बेहतर यह बदनामी होगी क्योंकि मैं तो अंग्रेजों में अपने जब तब के कन्टैक्ट्स से बदनाम हो ही चुका हूं।"

रायबहादुर कुछ देर चुप रहे, फिर कहा : "आबरूदारी की नजर से देखता हूं तो आपकी सलाह मुझे ठीक ही लगती है, मगर जयन्त बाबू बुरा न मानिएगा, फिर आप मेरे यहां···"

"अरे कतई नहीं उतरूंगा यार, मैं खुद समझता हूं। या कहोगे तो तुम्हारे केसेज करना भी छोड़··· "

"नहीं-नहीं, यह हो ही नहीं सकता जयन्त बाबू। मेरे वकील तुम ही रहोगे। अरे डिप्टी-इप्टी कमिश्नर जैसे छोटे-मोटे ओहदेदार अंग्रेज हाकिम तुमसे जरूर कुढ़ते होंगे, मगर बड़े-बड़े अंग्रेजों में मैंने देखा तुम्हारी बड़ी इज्जत है। हमसे लाट-साहब के सेक्रेटरी गुडनसाहब बोले—'रायबहादुर टुम्हारा डोल्ट बहुत ब्रिलियण्ट आडमी हाय, हम उसकी इज्जट करटे हैं।"

"अच्छे अंग्रेज अब भी मेरी इज्जत करते ही रहेंगे और मैं मन्नोजी को पब्लिक लाइफ में उतार दूंगा। अरे मैं गली-मुहल्ले की औरतों के बीच में इनका लेक्चर कराऊंगा। ठोक-बजाके तुम्हारी बीवी को बँदराज बना दूंगा, यार। तुम अपने हाकिमों में उनकी और हमारी दोनों की बुराई किया करो। इससे हमारी इज्जत

को कोई आंच नहीं आएगी और पब्लिक लाइफ में तुम्हारी यह इमेज भी वन जाएगी कि रायवहादुर अंग्रेजपरस्त अवश्य हैं मगर अपनी औरत के आजाद मिजाज का आदर करना जानते हैं।"

मुकद्दमे होने पर जयन्त वावू इलाहावाद जाते ही रहते थे। वह आवाजाही इधर होमरूल लीग की मीटिंगों के कारण और भी वढ़ गई थी। जयन्त वावू ने एक काटेज इलाहावाद के जार्ज टाउन में भी ले ली। उसे सजाया, सुव्यवस्थित किया और मनोरमा के जिम्मे यह काम भी सिपुर्द किया कि जव वह इलाहावाद में न रहें तो उनकी काटेज की देखभाल वही करेंगी और पढ़ी-लिखी औरतों में होमरूल का प्रचार किया करेंगी।

मन्नो जव तव लखनऊ भी आती थीं और आने पर वह 'चम्पक मैन्शन' में ही ठहरती थीं। जयन्त की मां कौशल्याजी को तो उनका आना-जाना न खला, मन्नो खन्ना का पर्दा-प्रथा विरोध भी कौशल्याजी के लिए अनोखा नहीं था, वल्कि उन्होंने ही अपने वड़े वेटे के कहने से मन्नो ऑफ अल्ला के लिए सम्भ्रान्त महिलाओं की दो सभाएं भी आयोजित कराई थीं। युद्ध के लिए चन्दा और सैनिकों के लिए ऊनी स्वेटरों की वुनाई के आन्दोलन में भी सहायता की थी। जयन्त ने अपनी मां से यह घोषित करने की प्रार्थना की कि सर्वश्रेष्ठ वुनाई करनेवाली को स्वर्णपदक तथा सर्वाधिक स्वेटर वुनकर लानेवाली महिला को 'मनोरमा खन्ना पदक' के साथ सोने की दोलड़ी माला भी पुरस्कार में दी जाएगी।

'मन्नो ऑफ लक' (मनोरमा ऑफ लखनऊ का संक्षिप्तीकरण) को अपने और 'मन्नो ऑफ अल्ला' के सामने ही पति के द्वारा सास को कही जानेवाली इस वात ने गहरी चुभन दी। उन दिनों उसके गर्भ का नवां महीना भी पूरा हो चुका था। कौशल्याजी ने अपने भोले और भले विश्वास के साथ वेटे की इस वात की सराहना की और मन्नो ऑफ अल्ला को भी वहुत-वहुत आसीसा: "ऐसी ही औरतें देश और समाज का भला कर सकती हैं। यह लड़की वहादुर सिपाहियों की मदद के साथ-ही-साथ अपने देश की होमरूल की भी वात करती है, यह भी मुझे वहुत अच्छा लगता है। अपने यहां ऐसे खुले दिल से और जोर से वातें करनेवाली लड़कियां वहुत कम हैं, भैये!"

"नहीं माताजी, अव तो पढ़ाई का चलन पहले से वहुत वढ़ गया है। खत्रियों में भी अपने माधोप्रसाद खन्ना की लड़की प्रेमा फर्स्ट डिवीजन में एण्ट्रेन्स पास कर चुकी है।"

मनोरमा खन्ना वोलीं: "मैं तो माताजी, जव से यह वैरिस्टर साहव हमारे यहां आने-जाने लगे तभी से इन्होंने ही मुझे गुरुमंत्र दिया कि अव परदे में वैठे रहने से काम नहीं चलेगा, उठो, काम में लगो।"

"अरे हां, मैंने कहा तुम्हारे मियां रायवहादुर और तुम कामवहादुर वनो।

वह अपना नाम करते हैं, तुम अपना नाम करो। मैं तो तुम्हारी बहू से भी कहता हूं, पर यह तो मेरी सुनती ही नहीं, मैं क्या करूं।"

यह बात गर्भिणी मनोरमा टण्डन को सुई-सूजे की तरह नहीं, पैनी बरछी की तरह भीतर तक गहरा घाव कर गई। उसी दिन जयन्त के दफ्तर जाने से पहले 'एम० ऑफ नर्क' पति के पास आई : "सुनिए, मैं किसी बुरी नियत से नहीं कहती। लेकिन इन वख्त मैं अपने घर में किसी और स्त्री को नहीं सह सकती।"

"अरे, पागल हुई हो, वो बेचारी मेहमान की तरह आती है।"

"वो कुछ भी हो, इस घर में एक ही मन्नो रहेगी।" कहते हुए मन्नो टण्डन का चेहरा तमतमा उठा, स्वर भी इस्पात-सा कड़ा हो गया।

जयन्त गुस्से को पी गया, पत्नी का सिर प्यार से थपथपाते हुए कहा : "तुम जैसे खुश रहोगी, मैं वैसा ही करूंगा।"

दूसरे दिन से ही 'एम० ऑफ अन्ना' लालबाग के दातरखानी काटेज में रहने लगीं। इस पर कौशल्याजी को भी आश्चर्य हुआ वह स्वयं पुत्र के साथ लालबाग में मन्नो की व्यवस्था देखने गईं, मन्नो से कहा "तू यहां क्यों चली आई बेटी। इत्ता बड़ा तो घर है हमारा। अब ईश्वर की दया से, घर में नई चहल-पहल आने वाली है।"

मन्नो खन्ना बोलीं "नहीं माताजी, मेरा एक बेटा मर भी चुका है। मुझ मनहूस को वहां रहना भी न चाहिए। मैंने मन्नो बहन की बात का बुरा भी नहीं माना है।"

कौशल्याजी कुछ बाहर मन्नो की सुनी और कुछ भीतर अपनी सुनी बातों से मह्मन होकर चुप हो गईं।

जयन्त उन दिनों होमरूल लीग के प्रबल समर्थक और उत्साही कार्यकर्ता थे। पहले महायुद्ध तक भारतीय नगरों में बेकार ग्रेजुएटों की एक आवारा फौज-सी बनने लगी थी। उनका असन्तोष विद्रोह की भट्टी का ईंधन बना। अंग्रेजों के विरुद्ध बेकार प्रबुद्ध जनमानस इतनी तेजी से शहरों में विद्रोह की आग फैला रहा था कि अब तो गांवों में भी अवतारी बसन्ती देवी की महिमा बखानी जाने लगी थी। भारत के प्राय: सभी प्रान्तों में तिलक और एनी बीसेन्ट के नाम लोगों के दिलों और दिमागों को इतना गरमा गए कि भारत सरकार को श्रीमती बीसेन्ट और उनकी पट्टशिष्या श्रीमती रुक्मिणी अरुंडेल तथा वाडिया साहब को नजरबन्द करना पड़ा। और अब तो महामना मालवीयजी भी होमरूल लीग के समर्थक बन गए थे। जिस पर अकबर इलाहाबादी ने एक शेर लिखा—

"कहते हैं मालवीजी हम होमरूल लेंगे।
दीवाने हो रहे हैं गूलर का फूल लेंगे।"

अपने लोकप्रिय तीन नेताओं की नजरबन्दी से होमरूल लीग का आन्दोलन

भारत-भर में एक अनोखा और ताजा प्रभाव डाल गया। अंग्रेज सरकार किसी हद तक घबरा उठी। देश की स्थिति बड़ी विकट थी, लेकिन विलायत के साहबेअजी-मुश्शानो के कानों में जूं तक न रेंग सकी। हालांकि मिस्टर माण्टेग्यू को अपनी डायरी में एक हिन्दू पौराणिक कथा का उल्लेख करते हुए यह लिख... पड़ा—"शिव ने अपनी पत्नी के बावन टुकड़े कर दिए थे परन्तु अन्त ... चला कि उनमें एक नहीं, बावन पार्वतियां मौजूद हैं। वास्तव ... सरकार पर घटी जबकि उसने श्रीमती ... को

होमरूल लीग का आन्दोलन ... मात्र था।

अनुज श्री वारीन्द्र घोष ने 'भवानी मन्दिर' पुस्तिका लिखी, जिसने बंगाल के युवकों में चण्डीशक्ति जगा दी। 'मुक्ति कोन पथे' (मुक्ति किस पथ पर) अंग्रेजों को निकालने के लिए भारतीय युवकों मे फिर से छापेमारी को उत्साहित कर रही थी। स्वदेशी आन्दोलन और बायकाट के दिनों में बंगाल के आध्यात्मिक निष्ठापूरित साथ ही स्वतन्त्रता का वह व्यापक बोध जो उन्हें पश्चिमी गोलार्द्ध से प्राप्त हुआ था, उनमें आगे चलकर एक विश्वप्रख्यात योगी और एक महान कवि हुआ। इन दोनों ही प्रान्तों के प्रतिभाशाली और कर्मनिष्ठ नेताओं के विचार करीब-करीब सारे भारत के तत्कालीन युवकों को एक उद्देश्य में बांध रहे थे।

सुविधावादी विचारक माडरेट नेता हों या गर्म विचारों के प्रबुद्ध जन, सभी भारत की मुक्ति प्राप्ति के लिए अपने-अपने ढंग से आतुर हो उठे थे। प्रथम महायुद्ध के कठिन दिनों मे उत्तरदायी शासन की माग रखकर उनके स्वप्न को यथार्थ रूप दे दिया था। 'कर्मयोग' के महान लेखक सुपण्डित और मन-वचन-कर्म से लोकहित में काम करनेवाले बालगंगाधर तिलक उन दिनों भारतीय युवकों के लिए प्रेरणा के स्रोत बन गए थे। उनके प्रति उपजी हुई श्रद्धा ने भारत के लाखों-करोड़ो युवकों के मनों में वही भाव पा लिया था जो एकलव्य में अपने न देखे हुए गुरु के प्रति जागा था। प्रोफेसर, पत्रकार, नई-नई बौद्धिक फौज की तरह बढ़ते हुए वकील, कुछ डॉक्टर, इंजीनियर वगैरह भी तिलककृष्ण के अनजाने ग्वालबाल बन गए थे। अंग्रेज भले ही तिलक को दबाना चाहें पर वह तो लोकमान्य होते जा रहे थे।

पन्द्रह की लखनऊ कांग्रेस में तिलक जब आए तो यहां के युवकों में इतना जोश था कि बग्घी के घोड़े खोलकर वे स्वयं लोकमान्य की सवारी खींचने लगे। जयन्त को उल्लास के साथ याद आया कि तिलक की गाड़ी खींचनेवालों में आगे वाला घोड़ा वही बना था···। कर्मवीर मोहनदास कर्मचन्द गांधी भी उस कांग्रेस में पधारे थे। भारतीय राजनीति में यद्यपि अभी वे ताज़े-ताज़े ही उतरे थे किन्तु उनके सुदृढ़ आध्यात्मिक व्यक्तित्व का प्रभाव धीरे-धीरे पड़ने लगा था। दक्षिण अफ्रीका मे सत्याग्रह आन्दोलन का अनोखा प्रयोग सिद्ध कर दिखलानेवाले कर्मवीर भारतीय राजनीतिज्ञों में अपना अलग ही व्यक्तित्व रखते थे। सीधी-सीधी काठियावाड़ी पोशाक और बड़े-बड़े नेताओं की तरह अपने महत्त्व को जतलाए बिना ही किसी सभा मे पहुंच जाते। कभी-कभी सभा के मंच पर स्थान न पाकर दर्शकदीर्घा में ही मध्यवर्गीय बाबुओं की तड़क-भड़क से वह इतनी दूर रहते थे कि लोगों को अक्सर धोखा हो जाता था। नाम की चमक पर बड़े आग्रह से बुलाए गए कर्मवीर मोहनदास जब उस नगर में पहुचते तो स्वागतार्थ आए हुए कार्यकर्ता उन्हें ढूंढ़ते ही रह जाते थे। नेता लोग फर्स्ट या सेकण्ड क्लास से उतरते

हैं। अपना झोला या थैला खुद हाथ में उठाकर थर्ड क्लास से कौन नेता चलता है। गांधी ट्रेन से उतरते और पूछते हुए ठहरने के स्थान पर स्वयं ही पहुंच जाते थे।

एक बार उसी ट्रेन से कोई अन्य नेता और कर्मवीर मोहनदास अलग-अलग श्रेणियों से स्टेशन पर उतरे। नेताजी को कोई कुली न मिल सका, एक पगड़ीधारी देहाती से कहा—मेरा सामान उठा ले चलो, मैं तुम्हें पैसे दूंगा। वह पगड़ीधारी देहाती तुरत राजी हो गया। जब बाहर जाकर नेता पैसे देने लगे तो देहाती बोला—उसकी जरूरत नहीं, मैंने तो आपकी सहायता-भर की है। गांधी की यही सादगी और सेवा-भाव उन्हें भारतीय जनमानस में दिनों-दिन ऊंचा उठाता चला गया। महामना लोकमान्य जैसी श्रद्धासूचक उपाधियां देनेवाले कर्मवीर मोहनदास करमचन्द गांधी का व्यक्तित्व जब ऊंचाइयों पर उठा तो जन-मन श्रद्धापूरित होकर उन्हें एक मुख से महात्मा कहने लगा। कांग्रेस में सम्मिलित होनेवाले अनेक सुप्रतिष्ठित लोग उनकी सादगी और सुस्पष्ट विचारों से प्रभावित हो चले थे। ऊपर से विलासी, मद्यप-मस्त और महादम्भी मोतीलाल नेहरू के सनातन आस्था-मूलक संस्कार कर्मवीर मोहनदास के सामने जाग उठते थे। वह मोतीलाल जो सब संन्यासियों और संन्यासी वेष रखनेवाले सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को भी अपने सामने बैठने के लिए कुर्सी तक नहीं देते थे, गांधी के आगे श्रद्धानत हो गए। और उनसे भी अधिक उनके एकमात्र बैरिस्टर पुत्र जवाहरलाल भी गांधी के प्रति अनुरक्त हुए।

क्रान्तिकारी आतंकवादियों की विचारधारा ने इस देश के अनेक प्रान्तों को प्रभावित किया था। उड़ीसा, पटना, भागलपुर, बनारस, इलाहाबाद, लखनऊ और पश्चिमी भागों के अनेक नगरों में भी उग्र विचारधारा के अनेक युवकों में बृटिश शासन से मुक्त होने की व्याकुलता भर दी थी। युवकों के लिए अपनी बेकारी का दर्द पराधीन देश की पीड़ा बन जाता था। पंजाब में भी ऐसी हलचलें लगभग उसी समय से बढ़ चली थीं जब बंगाल में युवकों ने यह तय किया कि हम अंग्रेज सत्ताधीशों पर बम फेंक-फेंककर उनका दिल दहलाएंगे। हम उनके और उनके परिवारों के लिए, साथ ही उनके पिट्ठू भारतीय हाकिमों के लिए भी ऐसा आतंक उत्पन्न कर देंगे कि वह डरकर भाग जाएं। बंगाल में अरविन्द बारीन्द्र के अलावा प्रफुल्लचन्द्र, खुदीराम बोस आदि ऐसे अनेक युवक प्रकट हो गए थे जो बृटिश शासन को चैन की नींद नहीं सोने देते थे। पंजाब में भी यही रंग शुरू से बढ़ने लगा था। सहारनपुर के किसी युवक ने वहां आकर पंजाबी युवकों में प्राण फूंके। देश को आजाद कराने के लिए तुम्हारे प्राण भले ही जाएं पर तुम्हारा कर्तव्य-भाव देश को सदा ऊंचा ही उठाता रहे। लाला हरदयाल, सरदार अजीत सिंह, सूफी अम्बाप्रसाद आदि अनेक पंजाबी नवयुवकों ने उस संस्था की उद्देश्य-पूर्ति के लिए अपना विचार-मार्ग प्रशस्त करना शुरू कर दिया था। लाला लाजपत-

राय, लाला मुंशीराम, लाला हंसराज जैसे आर्यसमाजी प्रभाव के नेता यद्यपि विचारों में तो गरमी रखते थे, उनमें आत्मविश्वास और साहस की कमी भी न थी किन्तु बम बनाने की क्रान्तिकारिता उन्हें अपने वास्ते बहुत रुचिकर न लगी।

बरसों पहले महाराष्ट्र में वासुदेव फड़के क्रान्ति का शंखनाद करके शहीद भी हो चुके थे। तपस्वी स्वाभिमानी पण्डित और पत्रकार बालगंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले जैसे तेजस्वी कर्मवीर तो थे ही, प्रतिभाशाली नवयुवक सावरकर बन्धु भी इस सदी के आरम्भ में ही मैदान में आ चुके थे। इस शती के प्रारम्भिक दिनों में ही उन्होंने पूना में 'अभिनव भारत' नाम की एक क्रान्तिकारी संस्था स्थापित की। धीरे-धीरे सारे महाराष्ट्र में इस संस्था का कार्यक्षेत्र बढ़ने लगा। अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे ऐसे विचारक युवाओं की कहीं भी कमी नहीं थी जो अंग्रेज़ी शासन से दुखी होकर उसमें परिवर्तन लाने के लिए उत्कण्ठित न थे। श्री विनायक-दामोदर सावरकर तो बैरिस्ट्री पढ़ने के लिए विलायत चले गए किन्तु उनकी संस्था की सरगर्मियां पूरे महाराष्ट्र में दिनोदिन अधिकाधिक सक्रिय होती गईं। सावरकरजी भी इंग्लैण्ड में रहकर चुप नहीं बैठे थे। उन्होंने भारतीय पैसे और भारतीय युवकों की मदद से ही उम्दा पिस्तौलें खरीद-खरीदकर अपनी संस्था को भेजना शुरू कर दी। मिर्ज़ा अब्बास, सिकन्दर हयात और चतुर्भुज भारत लौटते समय अपने सन्दूकों में भीतर नकली तले लगवाकर उसमें पिस्तौलें और ऊपर अपने कपड़े-लत्ते आदि रखकर लाया करते थे। यह रहस्य नासिक षड्यन्त्र काण्ड में खुला। महाराष्ट्र के बापट हेमचन्द्रदास और मिर्ज़ा अब्बास आदि छिपे हुए क्रान्ति-कारी युवक पेरिस में रूसियों से बम बनाने की कला सीखने के लिए भेजे गए थे।

सारा देश इन सरगर्मियों की अकुलाहट से भर उठा था। अंग्रेज़ी दैनिक और हिन्दी के साप्ताहिक पत्रों के द्वारा बढ़-चढ़कर देश के दूरदराज के गांवों में भी जन-मानस के भीतर एक नई चेतना जाग उठी थी।

लिखते-लिखते अचानक व्यवधान पड़ा। मैनेजिंग डायरेक्टर साहब के आदेश से युधिष्ठिर और जावेद दोनों को लखनऊ से बाहर जाना पड़ा जिससे युधिष्ठिर का उपन्यास लेखन-कार्य कुछ दिनों के लिए स्थगित ही रहा।

एक दिन जग्गो बाबा के मतब में एक वृद्ध देहाती पगड़ीबाज़ आकर बैठ गया। सबेरे मरीज़ों की भीड़ भारी होती है। इधर-उधर पूछताछ करके उसे पता चला कि डॉक्टर साहब अब बहुत बूढ़े हो गए हैं, पहले पर्ची बनवाओ फिर छोटे डॉक्टर साहब को दिखलाओ, फिर ज़रूरत पड़ी तो बड़े डॉक्टर साहब भी तुम्हें देख लेंगे, जाओ पर्ची बनवाओ।

किन्तु बूढ़े ने न तो पर्ची बनवाई और न छोटे डॉक्टर को दिखलाया। मौक़ा देख और डॉक्टर टण्डन के बैठने के स्थान की टोह लेकर वह सीधा उनके कमरे में आ गया। उस समय जग्गो बाबा युधिष्ठिर से बातें कर रहे थे। वर्तमान राजनीतिक घटनाओं पर गम्भीर चर्चा चल पड़ी थी। दिल्ली में वहां के एक प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता की हत्या कर दी गई थी। "यह क्या हो रहा है भैये, कैसे खत्म होगी यह औंधी खोपड़ीवालों की क्रान्ति।"

"बाबा, हम रिएक्शन से रिएक्शन में नाच रहे हैं। इन्दिरा गांधी ने 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' किया। जवाब में बेअन्त और सतवन्त वगैरह बेवकूफों ने उनका अन्त किया। बदला लेने के जोश में हिन्दू सिखों को मारने लगे और सिख आतंकवादी अब यों बदला ले रहे हैं। फिलहाल यह सिलसिला बे-अन्त लगता है।"

एक गहरी ठण्डी सांस छोड़कर जग्गो बाबा कुछ पल सिर झुकाए बैठे रहे। फिर आगन्तुक वृद्ध व्यक्ति की ओर देखकर पूछा : "क्या तकलीफ है भाई?"

वृद्ध सज्जन वैसे ही गम्भीर स्वर में शुद्ध अंग्रेजी भाषा में बोले : "मैंने अपना एक पुराना दोस्त खो दिया है डॉक्टर साहब। उसी की फिक्र में बीमार हूं।"

युधिष्ठिर और जग्गो बाबा दोनों ही उस बुड्ढे को गौर से देखने लगे। पतली सुतवां नाक, छोटी-छोटी सफेद मूंछें, बूढ़ा होने पर भी शरीर स्वस्थ था। जग्गो बाबा बड़ी देर तक उन्हें देखते रहे, फिर सिर झुका लिया, बोले : "मुझे याद नहीं पड़ता भाई। आपने तो अपने खोए हुए दोस्त को मुझमें पा लिया मगर मैं अभी आपमें अपने उस खोए हुए दोस्त को नहीं पा सका जिसकी याद आप मुझे दिलाना चाहते हैं।"

"आपके साथ एक मिडिल पास इटौंजा निवासी चर्च मिशन स्कूल में एथं क्लास में पढ़ने आया था।"

"अऽरे, तुम रामलोचन पाण्डे हो?"

"पहचान लिया।"

"नहीं, अभी नहीं पहचाना, अपना यह कुतुबमीनार जैसा साफा उतार, कान देखूंगा तुम्हारे। (कुश्ती की रगड़ से कान में पड़े हुए ढट्टों को देखकर) अब पहचाना तुम रामलोचन हो। मगर क्या अजीब वेष-भूषा बना रखी है तुमने। मैंने तो सुना था कि तुम कहीं डिप्टी कलेक्टर हो गए थे। एक बार सुमन्त जब मिनिस्टर था तब मेरे पास अपनी तरक्की के लिए आए भी थे। बरसों पहले जब तुम मिले थे तब तो सूट-बूट पहनते थे।"

"अरे तब सरकारी हाकिम था। दिन में सूट-बूट, मगर घर में इसी पोशाक में रहना शुरू कर चुका था। अपनी वेष-भूषा में रहने की प्रेरणा तो हमें सन् सोलह में कर्मवीर मोहनदास कमंचन्द गांधी से मिली थी।"

जग्गो बाबा के गोरे गम्भीर चेहरे पर घृणा की कुछ सिकुड़नें उभर आईं :

"हां, गांधी की नकल में एक सज्जन और भी आगे बढ़े थे। आगे के दो दांत तुड़वा लिये, कमर में घड़ी खोंसने लगे। बिल्कुल वही लिबास मगर वह क्या है तुलसीदास की लाइन—'विष रस भरा कनक घट जैसे'। अरे नन्हा बेटे, जरा अपनी दद्दा से पूछ तो आओ कि घर में फोन किया था। तुम्हारी चाची की तबियत अब कैसी है?"

युधिष्ठिर उठा, फिर दरवाजे से लौटकर बाबा के कान में मुंह लगाके पूछा : "इनके लिए कुछ नाश्ता-वाश्ता मंगवाना है?"

"नहीं।" युधिष्ठिर चला गया। डॉ० जगदीशनारायण ने अपने मित्र से रूखे स्वर में पूछा : "इतने दिनों बाद आए हो, कोई नई स्कीम तो जरूर ही होगी तुम्हारे मन में।"

"नहीं, नई तो कुछ बात नहीं। अब तो मेरे छियानवे के पूरे हो रहे हैं, अगले सावन में सत्तानवेवां लग जाएगा। सब माया-मोह छोड़ चुका हूं मैं तो। चार मकान बनवाए और चारों लड़कों का हिस्सा बांट कर दिया। एक बिचारी अनारो मेरी प्रौढ़ावस्था में मेरी शरण में आई थी, साथ रहने लगी बिचारी तो उसकी पुत्री के लिए भी एक घर अलग बनवा दिया है, उसीके पास रहता हूं। उसी बिचारी की चिन्ता के कारण तुम्हारे पास आया था।"

डॉ० टण्डन के सफेद चेहरे पर गुस्से की लाली चमक उठी, कड़े स्वर में बोले : "रामलोचन, आई नो यू वेरी वेल। तुमने अनारो के बूढ़े हज़बैन्ड को शराब में ज़हर घुलवाकर मार डाला और उसकी बीवी को घर में डालकर उसकी जायदाद हड़प ली।"

रामलोचन ने गम्भीर भाव से सिर झुका लिया, फिर एक क्षण बाद बोले : "जगदीशनरायन, मैं गांधीवादी आदमी हूं इसलिए उपकार में किए गए कामों पर भी अगर कोई उंगली उठाता है तो मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि दीनबन्धो, उन्हें क्षमा करो क्योंकि यह सत्य को नहीं जानते।"

"रामलोचन, तुम उम्र में मुझसे बड़े हो, मेरे सहपाठी भी रह चुके हो, चले जाओ यहां से और फिर कभी मेरे पास मत आना।"

रामलोचन मुस्कुराए, उठ खड़े हुए और जाते-जाते बोले : "जाता हूं भाई परन्तु तुम हमारे मित्र हो और तुम्हारे भाई जयन्तजी की शताब्दी मनाई जाएगी, इसलिए एक सत्य का उद्घाटन करने आया हूं···अभी अकस्मात पुराने कागज़ों में कुछ चिट्ठियां निकल आईं। अपनी मृत्यु से कोई साल-भर पहले ही जयन्त और अनारो में फिर से प्रेम-व्यवहार हो गया था, वह बहराइच भी गए और ये लड़की भी वहीं अनारो के गर्भ में आई। अब उसके पिता की शताब्दी होनेवाली है, उसे कुछ तो मिलना चाहिए भाई।"

युधिष्ठिर ने आते-आते बरामदे में बातें सुनीं और वहीं ठिठककर खड़ा हो

गया। जग्गो वावा का क्रोध भरा स्वर सुनाई दिया, रामलोचन को जाने को कहा और रामलोचन ने जो वातें जवाव में कहीं वह सव उसने सुनीं। रामलोचन की वात पर जग्गो वावा किसी हद तक चीखकर वोले : "नाउ गेट आउट यू ब्लैकमेलर स्काउन्ड्रल।"

युधिष्ठिर पहले तो रामलोचन पाण्डे की ओर लपका पर वाद में कुछ सोच-कर वावा के कमरे में चला गया : "चाची ठीक है वावा, खाली अभी कमज़ोरी है। वैसे दद्दा आपको घर में बुला रही हैं। और मैं भी अव घर जाऊंगा वावा। दफ्तर का थोड़ा ज़रूरी काम याद आ गया है।" युधिष्ठिर ने वावा के पैर छुए और तुरती-फुरती में वाहर आकर अपना स्कूटर सम्हाल लिया।

फाटक से वाहर निकलकर रामलोचन पाण्डे सड़क पर आ गए थे। युधिष्ठिर ने अपना स्कूटर रोका और पाण्डेजी से कहा : "आइए पण्डितजी, मैं..."

"हें-हें, मैं तो सेवक हूं, सेवा करना जानता हूं, सेवा लेना नहीं।"

"अरे आइए जी।" युधिष्ठिर ने घसीटकर उन्हें अपने साथ बैठा लिया।

स्कूटर चलाते हुए युधिष्ठिर ने पूछा : "अव तो आपकी भी जन्मशताव्दी आ रही होगी पण्डितजी ?"

"नहीं, अभी चार वर्ष वाकी हैं, चार क्या तीन ही समझिए, किन्तु मैं अभी तक पैदल ही चलता-फिरता हूं। इटौंजे से यहां तक आने-जाने में अभी मुझे कोई कष्ट नहीं होता है।"

इटौंजा वाज़ार आ गया। वाएं हाथ वनी कई दूकानोंवाली दो मंज़िली इमारत के सामने वाहन रुका।

"अच्छा, यहां रहते हैं ?"

अपनी छोटे-छोटे पूरे दांतों की वत्तीसी खिलाकर वोले : "यह एक साधारण-सा घर अपनी जीविका के लिए वनवा लिया है। सम्मानपूर्वक जीवन-निर्वाह हो जाता है। वैसे यहां वाज़ार में दस दूकानें और चार मकान और भी हैं लेकिन वह सव लड़के-बच्चों के नाम लिख दिए। आस-पास कई वीघे खेत हैं। आइए, थोड़ी देर हमारे भी घर को पवित्र कीजिए। आपको आपके यशस्वी शहीद पितामह की प्रेमिका की पुत्री के हाथों से चाय पिलवाऊंगा।"

वावा के कमरे में दोनों पुराने सहपाठियों की रहस्यवादी वातों का भेद अव खुला। लेकिन इसके साथ ही उसका छठा इन्द्रियवोध भी जाग उठा, उसने कहा : "फिर आऊंगा पण्डितजी !"

किर्मिच के जूते पहने ऊंची धोती और फतूहीधारी ऊंचे साफेवाले पण्डित रामलोचन पाण्डे युधिष्ठिर को तनिक भी प्रभावित नहीं कर रहे थे। अपने इतने पुराने सहपाठी से मिलने के वावजूद जग्गो वावा के चेहरे पर आनन्द के बजाय कड़वाहट ही अधिक दिखाई दी। कुछ खटाईवाली वात ज़रूर है। कल फिर आकर

बाबा से इन कर्मवीर की जनमपत्री टटोलूगा।

उस दिन संयोग से शाम को चाय पीते समय पिताजी से बातों के प्रसंग में पाण्डेजी का ज़िक्र भी चला।

"अरे, वह बड़ा निकृष्ट व्यक्ति है नन्हा। जब मैं गृह और वित्त विभाग का मन्त्री बना तब यह मुझे भी एक्सप्लाएट करने आए थे।"

"क्या चाहते थे आपसे?"

"कहने आए थे कि श्रीमती अनारो आपसे मिलना चाहती है।"

"आप उनसे मिले थे?"

"नही भाई, मुझे तब तक अपने पिता के पूर्व इतिहास के सम्बन्ध में यह सब जानकारियां नही थी। कहने लगा—मैं आपके चाचा का सहपाठी हूं, चर्चमिशन मे साथ-साथ पढ़ता था।"

"आपके जमाने में तो यह सरकारी पदाधिकारी भी रहे होगे।"

"हां, नायब तहसीलदार था, जग्गो चाचा के कहने से ही मैंने इसको तहसील-दारी दिलवा दी थी। यह सब कर तो दिया मगर इस व्यक्ति का मुझ पर कोई अच्छा प्रभाव नही पड़ा था। मुझे तो वह स्विन्डलर लगा।"

"अच्छा पिताजी, आपने अनारोजी से मिलना स्वीकार क्यों नही किया?"

"अरे भई कहा तो, मुझे यह व्यक्ति कुछ जमा नही और फिर सच तो यह है कि एक-आध बार जग्गो चाचा के मुंह से धोखे से ही यह नाम निकल गया था। बस इतना ही इशारा मिला कि पिताजी की नौजवानी की वह कोई अल्पकालीन संगिनी रही थी। उस मुस्लिम महिला का बाद में विवाह भी हो गया था और वह अपने पति के साथ मिलकर चिकन का धन्धा चलाती रही। वह महाशय इन पाण्डेजी के साथ मिलीभगत से बहुत-से धन्धे किया करते थे। उनका अकस्मात देहान्त हुआ। यह कहते हैं कि इसी पाण्डे ने उनको धोखे से विषपान करा दिया था। अफ़नर मियां शराब बहुत पीते थे। बाद में इन्होंने श्रीमती अनारो को अपने चगुल मे फंसा लिया। उससे एक लड़की भी इनको हुई थी जिसे आर्यसमाज पद्धति से शुद्ध करके इन्होंने हिन्दू बना लिया। उस समय भी इन्होंने पिताजी के सम्बन्ध में कुछ अनर्गल बातें कही थी, जग्गो चाचा ने ही इन्हें किसी प्रकार डांट-डपटकर ठण्डा कर दिया था। अब उनकी जन्मशताब्दी का अवसर आया है तो फिर कुछ लूट-खसोट की योजना बना रहा होगा।"

युधिष्ठिर के मन में पिता की बातें गहरे मे जम गईं। बाबा की जन्मशताब्दी के मौके को पाण्डे जरूर एक्सप्लाएट करना चाहता है तभी उसने अनारो की लड़की को बाबा की लड़की प्रूव करने की कोशिश की है। कहता है कि लेटर्स भी हैं। उन्हें देखना चाहिए। मगर खुद जाने के बजाय उसने जावेद को भेजना अधिक उचित समझा। जावेद से बातें हुईं, वह राज़ी हो गया।

खादी की रेशमी साड़ी और कंघी-चोटी से टिप-टाप कुमारी सरस्वती शर्मा उस समय संयोग से अपने घर पर अकेली थी। नौकरानी से जब 'ईवनिंग स्टार' के संवाददाता के आने का समाचार पाया तो फड़क उठी, कहा : "उन्हें लाकर यहां कमरे में बिठाके पंखा खोल दे और चाय का पानी चढ़ा। मैं तब तक साड़ी बदल-कर आती हूं।"

सरस्वती का रंग भले ही सांवला रहा हो किन्तु नाक-नक्शा बहुत ही आकर्षक था। जावेद के सामने आने से पहले उसने अपना मेकअप किया, सुर्मा लगाया, बिन्दी लगाई, लिपस्टिक का प्रयोग भी किया और नई रेशमी साड़ी पहनकर पांच मिनट तक अपने कद्देआदम आईने के सामने घूम-घूमकर अपना हुस्न निहारती रही। हिन्दी के दो-एक देहाती पत्रकार तो उससे भेंट कर चुके थे पर एक अंग्रेजी पत्रकार आज उससे पहली बार भेंट कर रहा था। इसे वह अपने लोकसेवी जीवन की श्रेष्ठ उपलब्धि मान रही थी।

ड्राइंग रूम में आई। जावेद सामने ही बैठा था, गोरा खूबसूरत गबरू जवान, देखते ही खड़ा हो गया। "मुझे हसन जावेद कहते हैं, 'ईवनिंग स्टार' का करेस्पान्डेन्ट हूं।"

"बहुत खुशी हुई आपसे मिलकर। मेरी अम्मीजान भी मुझे यास्मीन कहकर ही पुकारती थीं। अब ये पिताजी ने मेरा हिन्दुआनी नाम रख दिया।"

"आपको यह बुरा लगता है?"

"अब बुरा-भला तो मैं मामूली पढ़ी-लिखी औरत क्या जानूं, बहरहाल, आप मुझे यास्मीन कहकर पुकारेंगे तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा।" रसभरी तीखी कनखी से देखकर यास्मीन उर्फ़ सरस्वती ने कहा।

"आपकी वालिदा मोहतरिमा मैंने सुना है कि कभी हमारे प्रसिद्ध नेता जयन्त टण्डन साहब की रूहेअफजा "

"जी हां, मरने से पहले उन्होंने एक बार मुझे सब हाल बतलाया था कि वही मेरे पिता थे।"

"हैं! वह आपके पिता होते तो मेरे ख्याल में आपकी उम्र भी इस वक्त पचपन-साठ की होती?"

"जी नहीं, मैं सन् बयालीस में पैदा हुई। जब वह शहीद हुए तब मैं गर्भ में थी। उस ज़माने में वर्षों बाद मेरे मां-बाप में फिर से रिश्ता कायम हो गया था। मगर मेरे गर्भ में आने के बाद दोनों दिलों में फिर दरार पड़ गई।"

"आपके पालक पिता या गार्जियन जो भी हैं, क्या उन्होंने आपके बर्थ-सर्टिफिकेट की कापी भी रखी है?"

चेहरे पर अनख भरे हाव-भाव दिखाकर होंठ मिचकाती हुई बोली: "यह सब मैं नहीं जानती, मगर, अम्मी के एक खत में उनके हामिला होने का ज़िक्र जरूर

है और उसके जवाब में टण्डनजी का एक खत भी आया था, वह भी है। इसी खत से अम्मी उनसे बहुत नाराज हो गई थीं, जब शहीद हुए तो उन्होंने अपने घर में चिरागा किया था, जिरजी बाटी थीं, कहती थीं अंग्रेजों ने शवाब का काम किया। "

यास्मीन उर्फ़ सरस्वती द्वारा कही गई दोनों ही बातों का विचार जावेद के मन को चकराने लगा। एक तरफ़ यह अपने बाप को महान कहती है दूसरी तरफ़ अपनी मां के लफ्ज़ों में ऐसी हिकारत भी जाहिर कर रही है, क्या बात है।

उसी समय पगड़ी-पनहीं और घुटनों तक धोती पहने, गले में खादी का अंगोछा, हाथ में सुभाष छाप खादी का झोला लिये रामलोचन पाण्डे आए। जावेद को शक से देखा, सरस्वती उर्फ़ यास्मीन ने कहा : "ये अंग्रेज़ी के 'ईवनिंग स्टार' से आए हैं।"

"अरे, जहां हमारे जयन्त टण्डन साहब का पोता काम करता है?"

"जी हां, जी हां, लेकिन हम दोनों ही एक-दूसरे से बहुत इत्तफ़ाक नहीं रखते।"

"खैर, यह तो आपकी अपनी बात है, मगर मेरा अनुमान यही है कि स्वर्गीय जयन्तजी बहुत बड़े नेता जरूर थे मगर उनका चरित्र काफ़ी संदिग्ध था। अब चूंकि वह बड़े आदमी थे और देश के नाम पर शहीद भी हो चुके इसलिए लोग समझते हैं कि वो बड़े दूध के धोए थे। अरे पुत्री सरस्वती, मेहमान के स्वागत-सत्कार का भी कुछ प्रबन्ध किया है?"

"लीजिए, आपके कहते ही बन्नो प्लेट लेकर आ गई।"

इटौंजे की उम्दा से उम्दा बर्फी, समोसे और फलों की तश्तरियां जावेद के सामने सजा दी गईं। सरस्वती उर्फ़ यास्मीन ने एक खाली प्लेट लेकर उसमें बर्फी रखी और जावेद के पास आई। पाण्डेजी की तरफ़ पीठ करके ऐसे खड़ी हुई कि उसका चेहरा उन्हें न दिखलाई पड़े। मस्ते सेण्ट की खुशबू से मुअत्तर मुस्कान के साथ झुककर वह प्लेट देते हुए बोली : "यह हमारे इटौंजे की मशहूर कलाकन्द है। ऐसी आपको लखनऊ में भी नहीं मिलेगी।"

"पास बैठकर खिलाइए तो तारीफ़ करूं।"

लम्बे सोफ़े पर जावेद बैठा था। प्यार का इशारा पाकर सरस्वती उर्फ़ यास्मीन पास ही बैठ गई। कलाकन्द चखते हुए जावेद ने कहा : "है तो वाकई लाजवाब। अब लखनऊ में ऐसी कलाकन्द मिलती नहीं मगर मिठास जरा जरूरत से ज्यादह है।"

कनखियां गुप्त संकेतों में कुछ ए. बी. सी. डी. पढ़ रही थीं। तभी रामलोचन अपना ककहरा पढ़ाते हुए बोले : "मैं आपको एक बात बतलाता हूं जो अभी तक किसी को नहीं मालूम।"

जावेद उनकी तरफ़ देखने लगा : "यह आपके महान देशभक्त की निशानी है।"

"हां, यह बात इन्होंने भी आपके आने से पहले बताई थी मगर तस्कीन नहीं होता। जयन्त साहब से अगर इनकी वालिदा का कुछ अफ़ेयर हुआ भी होगा तो उनके विलायत जाने से पहले यानी सन् आठ-नौ की बात होगी।"

"जी नहीं जावेद साहब, सन् चालीस या इकतालीस में बहराइच के मेले से जयन्त बाबू अनारो बीबी को उड़वा ले गये थे, चार दिन तक गायब रहीं। इसी गम में उसके शौहर अफसर मियां ढह गए।"

"आपके पास इसके कोई सबूत हैं ?"

"सौ फीसदी पक्के प्रमाण।"

"जी हां, इन्होंने उनके कुछ लेटर्स का ज़िक्र भी मुझसे किया था। मैं तो खुद तलाश में था कि ऐसे कोई डाकूमेन्ट्स मिल जाएं।"

शेर की तरह छाती फुलाकर कर्मवीर पण्डित रामलोचन पाण्डे बोले : "सर्रो, मेरे सिरहाने रखी काठ की सन्दूकची है न बेटी ! वह ले आओ।" सरस्वती उर्फ़ यास्मीन भीतर गई। कर्मवीर पाण्डेजी कहने लगे : "मुझे स्वर्गीय टण्डनजी से कोई व्यक्तिगत द्वेष नहीं है रिपोर्टर साहब। वह बहुत बड़े महापुरुष थे। मैंने तो उनकी कारगुजारी का ज़माना देखा, उनसे सिर्फ चार बरस ही छोटा हूं। मगर संयम और तपस्या का जीवन ऐसा होता है कि देखिए मेरे एक दांत को छोड़कर बाकी इकतीस अभी बर्करार हैं। यह नौकरी के झमेले में सन् छियालीस से पढ़ने का चश्मा अवश्य लगाने लगा लेकिन अभी दूर की बहुत साफ देख लेता हूं।"

सरस्वती उर्फ़ यास्मीन काठ की सन्दूकची लेकर बाहर आई। अपने जनेऊ में लटकते हुए तालियों के गुच्छे से एक छांटकर उन्होंने सन्दूकची खोली। ऊपर एक दस्तावेज था। अपनी फतूही की जेब से चश्मे का केस निकालकर उन्होंने चश्मा लगाया और बोले : "स्वर्गीया अनारकलीजी के गांव को, जो उन्हें आमिना बेगम साहब ने दान दिया था, मैंने सन अट्ठावन में पैंसठ हज़ार का बेचा था, उससे लखनऊ में क्लाइड रोड पर एक कोठी खरीदी। और सन् साठ में उस कोठी और ज़मीन को बेचकर मैंने इस लड़की के नाम से यहां बाज़ार में तीन पुख्ता इमारतें खरीदीं। इस लड़की की आमदनी आज पौने-दो हज़ार रुपया महीना है और पूछ लीजिए इस सरस्वती से, मैंने कभी इसकी अमानत में खयानत की है।"

सोफे पर जावेद के साथ बैठी हुई यास्मीन उसके और करीब खिसक आई। काया से काया धूप-छांव की तरह खिली।

बिक्री के कागज़ात, रसीदें और तीन-चार छोटे-मोटे पर्चे-पर्चियों के बाद वह लिफाफा मिला जिसमें बैरिस्टर जयन्त टण्डन बार ऐट ला के छपे हुए लेटर पेपर

पर उर्दू लिपि में लिखे हुए चार पत्र थे।

छपे हुए लेटर पेपर को ही देखकर जावेद की आंखें सवालिया निशान बन गईं। कागज़ निहायत सस्ता और छपाई से लगता था कि किसी देहाती, कस्बाई प्रेस में छपवाई गई थी। जयन्त साहब ऐसे बेहूदा लेटरहेड छपवा ही नहीं सकते। ख़ैर, यह सब देख लिया जाएगा। मन को छिपाते हुए हसन जावेद ने बड़े तपाक के साथ उठकर घुटनिया खादी की धोती और लम्बे पगड़धारी छियानवे वर्षीय धर्मवीर पाण्डेजी के पैर छुए, कहा "आपने तो वाकई कमाल कर दिया। इसका इस सेन्टेनरी के अवसर पर इस्तेमाल करके आप रातों-रात अपने को हमारी इन यास्मीन साहिबा को दुनियाभर में मशहूर कर देंगे।"

पाण्डेजी के चेहरे पर सन्तोष-भरी चमक आ गई। सांवले रंग की नाक-नक्शेदार यास्मीन अपने मशहूर हो जाने की खुशी में कुछ-कुछ छुई-मुई-सी सीमें निराली हुई जावेद की जांघ पर हाथ रख देती है जिसे वह सरका देता है।

जावेद कह रहा था: "लेकिन एक बार आपको मुझे यह इजाज़त देनी होगी कि मैं इस करेस्पाण्डेन्स को अपने साथ दफ़्तर ले जाकर फोटोस्टेट करा लूं। अपने ही दफ़्तर के फोटोग्राफ़र से यास्मीन साहिबा का एक उम्दा फोटोग्राफ भी खिंचवा लूंगा और इन्हीं की मार्फ़त लौटा भी दिया जाएगा।"

पाण्डेजी कुछ जवाब देने की फ़िक्र में तर्क-वितर्क, मगर सरो उर्फ़ यास्मीन पहले ही बोल उठी "ठीक बात है जावेद साहब, मैं आपके साथ चलने के लिए पांच मिनट में तैयार हो जाऊंगी मगर वादा कीजिए कि मुझे वापस लौटा ले आइएगा।"

जावेद मुस्कुराकर बोला "आप इस वक्त एक वी. आई. पी. मेहमान होकर मेरे दफ़्तर जा रही हैं। इतमिनान रखिए, पूरे आराम और इज्ज़त के साथ अब - आप शाम तक अपने दौलतखाने को फिर से रौनक बख़्शने लगेंगी।"

बन-सँवरकर हसन जावेद के स्कूटर पर सवार होकर सरस्वती शर्मा उर्फ़ यास्मीन बानो लखनऊ की ओर चल दी। स्वर्गीय जयन्त टण्डन साहब के तथाकथित सारे पत्र और इटौंजा स्थित यास्मीन के चारों मकानों की अदालती रजिस्ट्रियों के नम्बर लेकर चली थी। जावेद पहले उसे अपने दफ़्तर ही ले गया। शिवदीन से युधिष्ठिर का केबिन खुलवाया और यास्मीन को बिठाकर कहा: "शिवदीन, यह साक्षात सरस्वतीजी आई हैं तुम्हारे दफ़्तर में। इन्हें पहले अच्छे से रसगुल्ले, चमचम खिलाओ और चाय पियें तो चाय, नहीं तो कॉफ़ी। क्यों, क्या पियेंगी?"

"एनीथिंग, जो आप लाइक करें।"

"मेरे दोस्त युधिष्ठिर कहीं बाहर गए हुए हैं वो आए तो बतला दीजिएगा कि मैं आपको यहां बिठला गया हूं।"

"अरे ई मुसम्मात बिचरीनी का वतलैंहैं। हमैं वतलाय देव।"

"अरे, ये वहोत ऊंची इन्सान हैं शिवदीन, मामूली न समझना। कॉफ़ी से कम बात मत करना और उसमें भी क्रीम डलवा देना।"

यास्मीन उर्फ़ सरों के श्यामाभ कपोल सुर्खाब वन गए थे। प्यार-भरी नज़रों से जावेद को एक बार देखा और फिर एक बार शिवदीन की उपस्थिति का ध्यान करके दृष्टि फुर्ती से झुका भी ली। घण्टे-भर वाद ही जावेद युधिष्ठिर और सरस्वती एकसाथ निकले। उस समय ऐसा लगता था कि हसन जावेद और यास्मीन सरस्वती अपनी हथेलियों और आंखों की छुअन से दिली तौर पर काफ़ी नजदीक आ चुके हैं।

पत्रकार शफ़ीक उन्हीं के साथ नीचे कैण्टीन में जाने के लिए लिफ्ट में साथ हो लिया। वह वहुत गौर से यास्मीन को देख रहा था, टण्डन वोला : "क्या देखते हो यार ! यह वावरी मस्जिद भी है और रामजनम भूमि भी। चार दिनों के वाद तुम्हारे ही अखवार में इनके जलवे नुमाया होंगे और दुनिया हैरत से देखेगी।"

नीचे आकर युधिष्ठिर वोला : "तुम इन्हें अपने घर लिये जा रहे हो या···?"

"हां, वहीं माकूल प्राइवेसी मिलेगी।" फिर यास्मीन के कन्धे पर प्यार से हाथ रखते हुए जावेद ने कहा : "तुम मेरे और इनके वास्ते अवधजिमखाना से नाश्ते का सामान लेकर फौरन पहुंचो।"

"वह तो लाऊंगा ही यार, वावा के पुराने प्रिन्टेड लेटरपेपर और उनके हिन्दी-इंग्लिश हैण्डराइटिंग्स के नमूने···"

"उर्दू के भी !"

"हां-हां, वह भी लाऊंगा।"

दो घण्टे में यास्मीन के आगे वहुत-से पर्दे साफ हो चुके थे। जयन्त टण्डन का सिरनामेवाला कागज़ काफ़ी मोटा, छपाई भी साफ-सुथरी और उभरे अक्षरोंवाली, सन् उन्नीस सौ आठ-नौ में विलायत के छपे लेटरपेपर का नमूना, सन् उन्तालीस, चालीस और इकतालीस के नमूने यह स्पष्ट प्रमाणित कर रहे थे कि जयन्त टण्डन के सिरनामेवाले कागज़ मोटे और कीमती थे। इंग्लैण्ड के पते से लेकर चंपक मैन्शन के पतेवाले कागजों तक में वीच में अग्निकुण्ड के सामने एक यज्ञकर्ता ऋषि का रेखाचित्र भी लाल स्याही से छपा था जिसके नीचे यह संस्कृत वाक्य भी छपा था—'तमसो मा ज्योतिगमय।'

"यह चिट्ठियां जाली हैं डार्लिंग ! तुम जितनी गुडिया-सी खूवसूरत हो उतना ही तुम्हारे पालनेवाले ने तुम्हें वेवकूफ़ भी वनाया है। यह खत पूरी तरह से जाली है। अव तुम्हारे मकानों के कागजातों को कोर्ट से वेरीफाइ करवा लूं कि इस छियान्नवे वरस के धूर्त ने तुम्हें और तुम्हारी मरहूमा अम्मीजान को भी खासा

उल्लू बनाया है।"

यास्मीन के गदबदे बदन और सांवले गोल चेहरे पर पहली बार बेनावट नहीं दिखाई दी। वह गम्भीर थी उदासी की हद तक।

युधिष्ठिर उन दिनों अपनी पुस्तक का नया अध्याय लिखने में जुटा हुआ था इसलिए खाने के बाद यास्मीन को जावेद के पास छोड़कर ही चला आया था।

तैंतीस

रौलेट बिल की घोषणा होते ही कर्मवीर गांधी ने वाइसराय को पत्र लिखा कि अगर इस बिल को वापस न लिया गया और हमें होमरूल (स्वराज्य) के अधिकार न दिए गए तो हम सत्याग्रह आरम्भ करेंगे। हां, यह अवश्य स्वीकार करते हैं कि हम फौज में जवानों की भर्ती का कोई विरोध नहीं करेंगे।

गांधी अपने वचन के अनुसार ही कार्य कर रहे थे और उनके आवाहन ने देशवासियों के भीतर अंग्रेजों के प्रति विद्रोह के लिए एक सोई आग जगा दी थी।

जयन्त की इस बात पर अक्सर उनके समानधर्मा मित्र चिढ़ जाया करते थे। आप कांग्रेस-कांग्रेस क्या करते हैं? कांग्रेस का बौद्धिक वर्ग तब भी हां और न के बीच में त्रिशंकुवत लटका हुआ था, असली योद्धा था गांधी। उसने निकम्मी होती जा रही देश की चिन्तन ऊर्जा को जगाने के लिए स्वयं अपनी कर्मयोगी संस्थाएं बनाईं।

विलायत से लौटा हुआ करीब-करीब विलायती दृष्टि से ही भारत के प्रति असीम चिन्तना करनेवाले युवक जयन्त टण्डन का वह सोया संस्कार भी गांधी की आवाज पर जाग उठा कि बिना कुछ किये कुछ भी सिद्ध न होगा। इधर की शक्ति में देश के अनेक विचारकों ने क्रमशः नये युग के अनुकूल प्रबुद्ध होते जा रहे पाठकों पर भी इसका अनुकूल प्रभाव छोड़ा था। बृटिश शासन के सुप्त-सुप्त नवप्रबुद्ध जनमानस में स्वानुभव बनकर भट्ठी में लकड़ियां बनकर इकट्ठा तो हो ही चुके थे सिर्फ स्वामी रामदास के शब्दों में आग पेटाने भर की आवश्यकता रह गई थी। खरे यथार्थवादी वैश्यगुण से यह ऊर्जा भारतीय चेतना को फिर मिल रही थी। कपड़े के व्यापारियों का पुराना वंश रक्त कहीं जयन्त टण्डन की नसों में अब भी बोल रहा था। रौलेट बिल पर गांधी का सत्याग्रह प्रस्ताव जयन्त को इसीलिए वैसा ही युक्तिसंगत लगा जैसा कि गांधी को लगा होगा।

उन्हीं दिनों संयोग से तुर्की के प्रति अंग्रेजों के व्यवहार ने भारतीय मुसलमानों को गहरी ठेस पहुंचाई थी। हर वर्ग, हर सम्प्रदाय का मुसलमान क्रोध से बौखला

लखनऊ में गोलागंज के रिफा-ए-आम क्लब में अंग्रेजी भक्तों की अमन सभा होती थी। वहां कांग्रेस के खिलाफ हंसी-मज़ाक के नारे उठते थे। कांग्रेस मेम्बर बनाए जाने पर कहा जाता कि चील बिलाउर अण्डे-बच्चे मारी आओ। यह मज़ाक भी उड़ता कि बोल गई चरखे की चरैया सूं, जनता ने इसी के जवाब में नारा लगा दिया—बोल गई माई लार्ड की गुनकई सूं। इसी अमन सभा में एक बार डिप्टी कमिश्नर ने आने का फैसला किया।

शाम को जयन्त के यहां बैठक हुई। चौधरी खलीकुज्जमा और पण्डित हरकरननाथ दोनों ही मौजूद थे। जयन्त ने बात छेड़ी : "भाई, इस सरकारी नौटंकी का नगाड़ा फाड़ देने का वक्त अब तो आ गया है।"

हरकरननाथजी ने भी इसका समर्थन किया। चौधरी साहब ने फ़रमाया : "इसका तरीका आसान है। अब तो कांग्रेस कमेटियों के दफ्तर खुल गए हैं। मलीहाबाद के कांग्रेस चेयरमैन ख्वाजा अहमद खां साहब···"

ख्वाजा साहब का नाम सुनते ही दोनों व्यक्ति फड़क उठे। जयन्त बोले : "कमाल के आदमी हैं ख्वाजा साहब। मैं कल सवेरे ही हरकरन को साथ लेकर मलीहाबाद जाता हूं।"

चौधरी साहब बोले : "मेरी बात तो सुन लीजिए जनाब।"

"हुजूर चौधरी साहब, जब बात बन जाए तब कहियेगा कि मैंने आपकी बात पूरी सुनी थी या नहीं।"

मलीहाबाद से जत्थे-के-जत्थे आने लगे। लोक विक्टोरिया पार्क में इकट्ठे होकर बड़ा भारी जुलूस निकला। कई रास्तों का लम्बा चक्कर लेकर जुलूस जब रिफा-ए-आम क्लब पहुंचा तो 'इन्कलाब जिन्दाबाद' और 'भारतमाता की जै' के नारे लगने लगे जिससे डिप्टी कमिश्नर की अमन सभा में 'माई लार्ड की गुनकई सूं' बोल गई। डिप्टी कमिश्नर के आदेश से पण्डित जगतनारायण मुल्ला और शेख शाहिद हुसैन ने ख्वाजा अहमद खां से पूछा कि आप लोग यहां क्यों आए हैं। जवाब मिला कि आपने अमन सभा का नोटिस दिया था। हम लोग उसी में आए हैं।

फिर तो दोनों प्रतिष्ठित साहबान की ऐसी तकल्लुफ़ आमेज़ हज़ों की गई कि दोनों बोले—हम लोग अमन सभा के साथ नहीं हैं। अपने घर जाते हैं, हमें माफ कीजिए। चौधरी साहब ने चलते हुए दोनों के सिरों पर गांधी टोपियां पहना दीं।

दिल्ली में सत्याग्रहियों का जुलूस निकला जिसका नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द कर रहे थे। उन्हें कुछ गोरे सिपाहियों ने गोली मारने की धमकी दी। इस पर उन्होंने अपनी छाती खोल दी और कहा—"लो, मारो गोली।" लेकिन दिल्ली के रेलवे स्टेशन पर गोली चल गई जिसमें कुछ मरे, अनेक घायल हुए। अस्पताल में, बृटिश नर्सों ने घायलों का उपचार करने से इन्कार कर दिया। कहा कि हम

विद्रोहियों का इलाज नहीं करेंगे। जो लोग हताहत हुए, उनमें हिन्दू भी थे और मुसलमान भी। जब हिन्दू शहीद की अर्थी निकली तो उसे हकीम अजमल खां साहब ने कन्धा दिया और जब मुसलमान शहीद का जनाजा निकला तो उसके साथ स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में हिन्दुओं की भीड़ कब्रिस्तान तक गई। हिन्दू और मुसलमान मिलकर घी-शक्कर हो गए। 'हम' शब्द की नई व्याख्या की जाने लगी—'ह' से हिन्दू और 'म' से मुसलमान।

अमृतसर में भी उत्तेजना भड़क चुकी थी। नेताओं ने गांधी को अपने यहां आमन्त्रित किया किन्तु सरकार ने उन्हें पंजाब न जाने दिया और दिल्ली के पास ही एक स्टेशन से ट्रेन में बिठलाकर बम्बई भेज दिया। गांधी की गिरफ्तारी के समाचारों ने बम्बई की भीड़ को उत्तेजित कर रखा था। अहमदाबाद में यह खबर कुछ बढ़-चढ़कर पहुंची कि गांधीजी के साथ-ही-साथ अनसूया बहन भी गिरफ्तार कर ली गई हैं। विरोध के जुलूस में बहुत उत्तेजना थी। कहा जाता है कि पत्थर-बाजी में दो अफसर मारे गए। इस पर गोली चली, अट्ठाईस आन्दोलनकारी मारे गए व एक सौ तेईस घायल हुए। कई घरों एवं दूकानों पर पुलिस के गुण्डों द्वारा लूटपाट और आगजनी भी हुई। चौदह स्थानों पर टेलीफोन के तार तोड़ डाले गए। आगजनी और लूटपाट में अनुमानतः साढ़े-नौ लाख रुपये की सम्पत्ति का नुकसान हुआ। वीरम गांव एवं नदियाड में भी उपद्रव हुआ। कलकत्ते में भी उत्तेजित भीड़ पर गोली चलाई गई जिसमें पांच व्यक्ति मारे गए और अनेक बुरी तरह से घायल हुए। बम्बई में गांधीजी ने आन्दोलनकारियों को भरसक शान्त रखा, किन्तु गांधी तो सत्याग्रह की शक्ति दिखलाना चाहते थे लेकिन उपद्रव-कारियों के क्रोध ने सैद्धान्तिक रूप में उनके मन को पराजित कर दिया। एक सभा में भाषण देकर गांधीजी ने लोगों को यह समझाया कि सत्याग्रही कभी हिंसा का मार्ग नहीं लेता है और हिंसा के मार्ग से हम कभी अपनी न्याय की लड़ाई जीत न सकेंगे। जनता के द्वारा किए गए इस जघन्य पाप के लिए मैं बहुत ही दुखी हूं और प्रायश्चितस्वरूप अनशन करूंगा।

लखनऊ में खिलाफत-असहयोग आन्दोलन साथ-साथ चला इसलिए शहर में एकता की लहर दौड़ रही थी। सबसे पहली गिरफ्तारी मौलाना जफरुलमुल्क अलीहाबादी की हुई। बस आग लग गई। दूसरे ही दिन अब्दुलरज्जाक मलीहा-बादी ने गिरफ्तारी के विरोध में जुलूस निकाला। आगे-आगे दो ऊंट चल रहे थे। एक पर मौलाना अब्दुलरज्जाक सवार थे और दूसरे ऊंट पर बन्दी हो जानेवाले मौलाना जफरुलमुल्क का कुर्ता टांगा गया था। यह जुलूस बहुत से रास्तों से गुजरा। शहर में अंग्रेजों के प्रति क्रोध की भावना तेजी से भर उठा। छ. सितम्बर सन् उन्नीस सौ उन्नीस को लखनऊ कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चौधरी खलीकुज्जमा और सेक्रेटरी बाबू मोहनलाल सक्सेना के नामों से एक पर्चा छपा और वितरको

की योजना से आनन-फानन ही शहर-भर में बंट भी गया। पर्चे में कांग्रेस के वालंटियर बनने की अपील की गई थी। इस पर्चे से गोरी सरकार चौकन्नी के बजाय अठकन्नी हो गई, धड़ाधड़ गिरफ्तारियां शुरू हो गईं और इसी अचानक हुई धड़ाधड़ी के कारण ही गोरा शासन नाम चतुरानन पै चूकता चला गया।

देशभक्ति और आत्मबलिदान की भावना जन-जन के मन में छोटे-मोटे तूफ़ान जगाने लगी।

संयोगवश जवाहरलाल नेहरू भी इलाहाबाद से लखनऊ आए थे। चौधरी खलीकुज्ज़मा, बाबू मोहनलाल सक्सेना आदि से कुछ गुप्त वार्ता होनेवाली थी परन्तु इलाहाबाद और लखनऊ की सी० आई० डी० को सम्भवतः इसकी खबर लग गई थी। इसलिए इलाहाबाद से जवाहरलाल का वारंट भी लखनऊ के लिए चल पडा। गाड़ी पहुंचने के पहले ही पुलिस कर्मचारी जवाहरलालजी का स्वागत करने के लिए तैनात थे, यह नेहरू की पहली गिरफ्तारी थी। नेहरूजी की गिरफ्तारी के साथ बाबू मोहनलाल सक्सेना एवं चौधरी खलीकुज्ज़मा तो गिरफ्तार किए ही गए और इनके साथ ही पण्डित बालमुकुन्द बाजपेयी, शेख शौकतअली तथा मोहम्मद अब्दुलवाली आदि भी गिरफ्तार कर जेल भेज दिए गए।

हालत पंजाब में भी काफ़ी बिगड़ चुकी थी। जलियांवाले बाग की डायर-शाही के घाव एकदम हरे थे। इन्सान के आसुरी दमन की ऐसी कहानी जो दुनिया के इतिहास में अनोखी है। जनता अंग्रेज़ों से विशेष रूप से वहां के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर से बहुत नाराज़ थी। दस अप्रैल सन् उन्नीस सौ उन्नीस को पंजाब की जनता काफ़ी उत्तेजित थी, डॉक्टर सत्यपाल और डॉक्टर किचलू के नेतृत्व में एक विशाल जुलूस निकला। उत्तेजित भीड़ ने अनेक सरकारी इमारतों को ध्वस्त किया, आग लगाई। उस समय लाला बंसीधर अमृतसर की इलाहाबाद बैंक शाखा के अध्यक्ष थे। लोगों ने उन्हें सूचना दी। लालाजी ने तुरन्त बैंक और खजाना बन्द करवा दिया तथा यह आदेश दिया कि बड़े-बड़े कण्डालों में शर्बत बनाया जाय और बैंक के फाटक पर उन्हें तुरन्त रख दिया जाय। हाथ में टोपी लेकर अपने पूरे कर्मचारी मण्डल के साथ लालाजी बैंक के फाटक पर खड़े हो गए। जुलूसवाले आए किन्तु लालाजी की विनय और सत्कार ने उनका मन क्षण-भर के लिए लूट-पाट से विमुख कर दिया। हाथ जोड़कर कहा: "बैंक तो आपका ही है और भारतीय पैसा ही इसमें जमा है। इसका नुकसान क्यों करते हैं।"

शर्बत की मिठास ने और बदलते मौसम की तृष्णा ने भीड़ की उत्तेजना का रुख बदल दिया। भीड़ आगे बढ़ गई। सामने ही 'नेशनल बैंक' था। उत्तेजित भीड़ ने एक बैंक छोड़ा तो दूसरे पर धावा बोल दिया। बहुत लूटमार हुई और एक अंग्रेज अफ़सर भी मारा गया। इस नग्न भीड़ ने पांच अंग्रेज़ों को मारा और बैंक,

रलवे गोदाम एवं सार्वजनिक इमारतें जलाकर खाक कर दीं। अमृतसर की क्रुद्ध जनता ने उस दिन उसे अंग्रेजों के लिए 'विषसर' बना दिया। उस दिन शासक कुछ न बोले। बाद में, जिलाधिकारी ने कांग्रेस के दो बड़े नेताओं डॉक्टर किचलू और सत्यपालजी को अपने यहां बात करने के लिए बुलवाया। किन्तु यह नाटक-भर था, दोनों ही नेता तत्काल गिरफ्तार करके किसी अज्ञात स्थान को भेज दिए गए। खबर बिजली की तरह फैली, केवल अमृतसर में ही नहीं, वरन् देश-भर में फैल गई।

वर्ष प्रतिपदा का प्रथम दिन सनातनी हिन्दू और सिख दोनों ही इसे सोल्लास मनाते हैं। उस दिन अमृतसर के जलियांवाला बाग में एक विराट सभा की गई। आयोजकों ने कुछ सोचके ही यहां सभा का आयोजन किया था। यह स्थान बस्ती के बीच में है। चारों तरफ से घिरा हुआ, इसमें प्रवेश के लिए एक ही द्वार था जो बहुत ही सकरा था। लगभग बीस-पच्चीस हजार की भीड़ उस मैदान में जमा थी। त्योहार का दिन था इसलिए बच्चे भी बड़ी संख्या में उसमें सम्मिलित हुए थे। अचानक ओडायर बाग में प्रवेश करता है, उसके साथ ही गोरे और काले सिपाही भी आते हैं।

उस समय सभा को हंसराज नामक एक व्यक्ति उद्‌बोधित कर रहे थे। सौ हिन्दुस्तानी और पचास बन्दूकधारी गोरों के आने से जनता आशंकित अवश्य हो गई थी। किन्तु उत्तेजित न हुई। हंसराज का भाषण चलता रहा, अंग्रेज शासक की उत्तेजना भड़की, आदेश दिया गया कि दो मिनट के अन्दर ही मैदान खाली हो जाय वर्ना गोली चलेगी। उस सकरे द्वार से इतनी भीड़ का दो मिनट में निकलना प्रायः असम्भव ही था। दो मिनट के बाद घड़ी देखकर फायर का हुक्म हुआ। और गोलियां अन्धाधुन्ध दगने लगीं। कुछ अपनी जान बचाने के लिए बाग की चहार-दीवारी फांद रहे हैं, कुछ घरों के लोग खिड़कियों से फायरिंग का दृश्य देख रहे हैं। गोरों की गोलियों से एक भी न बचा। गोलियां तब तक चलती रहीं जब तक सारे कारतूस खत्म न हो गए। हत्यारा डायर बड़े शान से अपने साथियों समेत लाशों को रौंदता चला गया। सबसे बड़ी बात यह थी कि मृतकों और घायलों का त्योहार की रात उसी बाग में सिसकने और सड़ने के लिए छोड़ दिया गया था। किसी में यह हिम्मत न थी कि वह बाग में घुसकर अपने प्रियजनों की तलाश कर सकें।

इस अमानुषिक हत्याकाण्ड ने सारे देश में विद्रोह की लहर जगा दी। ओडायर ने इस गोली काण्ड के प्रति अपना यह वक्तव्य दिया कि, "चूंकि शहर फौज के कब्जे में दे दिया गया था और इस बात की डोंडी पिटवा दी गई थी कि कोई भी सभा करने की इजाजत नहीं दी जाएगी तो भी लोगों ने उसकी अवहेलना की, इसीलिए मैंने लोगों को सबक सिखाना चाहा जिससे लोग उसकी हंसी न उड़ा सकें।"

रात-भर मृत व्यक्तियों और बच्चों के शव यों ही पड़े रहे और घायल बेहोश या अर्धबेहोश प्यासे सिसकते रहे। कोई जलियांवाला बाग के अन्दर प्रवेश तक नहीं कर सकता था। अमृतसर के घरों में सबके प्राण अपने प्रियजनों की खोज में सिसकते ही रहे। जलियांवाला बाग के नृशंस हत्याकाण्ड की इतिहास में दूसरी मिसाल नहीं मिलती। रात-भर सियार और गिद्ध मृतकों और घायलों की चीर-फाड़ करते रहे किन्तु डायर की सरकार को उनकी कोई चिन्ता नहीं थी। डायर की आज्ञा से शहर की पानी की व्यवस्था भी समाप्त कर दी गई। सारा नगर, स्त्री, पुरुष और बच्चे एक ओर आत्मीय जनों के विछोह से कराह रहे थे और दूसरी ओर प्यास से। कितने ही प्रजाजनों को गोरी पुलिस सड़क पर रेंग-रेंगकर चलने के लिए मजबूर कर रही थी और ऊपर से बन्दूक के कुन्दों से उन्हें मार भी रही थी। रलियाराम और अब्दुल्ला जैसे कितने ही प्रजाजनों की उस गली में दुर्दशा हुई किन्तु ओडायर की नृशंसता का अन्त नहीं था। दिल्ली में कभी नादिरशाह ने भी भारतीय प्रजाजन का कत्लेआम करवाया था किन्तु ऐसा भयंकर अत्याचार पहले शायद नहीं हुआ था।

उसी समय एक भारतीय (पंजाबी) रियासत में इस बात की चिन्ता हो रही थी कि वहां के बीस मन मोटे युवराज की सुहागरात उनकी नवोढ़ा पत्नी के साथ किस प्रकार मनवाई जाए। युवराज इतना मोटा था कि किसी स्त्री के साथ सहवास कर ही नहीं सकता था और हिज़हाइनेस महाराजाधिराज इस बात पर तुले हुए थे कि उनका एक पौत्र होना ही चाहिए। दिल्ली, लखनऊ आदि से अनेक अनुभवी वेश्याएं इसलिए बुलाई गई थीं कि ये मोटे आदमी के साथ सहवास करने की कोई तरकीब बतलाएं। मुन्नाजान नामक एक वेश्या ने यह तरकीब सुझाई कि जिस प्रकार से हाथी-हथिनी का सहवास होता है उसी प्रकार से युवराज और युवरानी का सहवास कराया जाए। एक स्प्रिंगदार विशेष पलंग बनवाया गया और मुन्नाजान की बतलाई तरकीब सफल हुई। राष्ट्रीय शोक और कराहों के बीच में इस तरकीब की सफलता से रियासत में शादियाने बजने लगे तथा मुन्नाजान को हिज़हाइनेस ने इनाम में एक गांव और पैरों में सोना तथा अनेक अलंकार उपहार में दिए।

जयन्त टण्डन उन दिनों अपने ममेरे भाई के विवाह में सम्मिलित होने के लिए लाहौर गए थे। जलियांवाला बाग के इस नृशंस हत्याकाण्ड की सूचना पाकर वे वहां ठहर न सके, येन-केन प्रकारेण अमृतसर पहुंच ही गए। अमृतसर पहुंचते ही उन्होंने सुना कि श्री मनोहरलाल बार एट लॉ जो कभी कलकत्ता यूनिवर्सिटी के मिण्टो प्रोफेसर भी रहे थे, उनकी अपाहिज पत्नी और बच्चों को उनके कमरे से बाहर घसीटकर निकाला गया और उन्हें नौकरों के क्वार्टरों में ले जाकर पटक दिया गया। मनोहरलालजी इंग्लैण्ड में कभी जयन्त के परिचित भी रहे थे। जयन्त

ने उनसे मिलने का बहुत प्रयत्न किया किन्तु उन्हें अवसर न दिया गया, तथा ढकेलकर बाहर निकाल दिया गया। हरदोई जिले के लाला बेनीराम कपूर को तेईस अन्य साथियों के साथ बारह फिट लम्बी और पच्चीस फिट चौड़ी एक कोठरी में जबरदस्ती बन्द कर दिया गया। उनके पाखाने-पेशाब की व्यवस्था भी उसी तंग कोठरी में थी। मिस्टर वाम्बवॉल्स नामक एक अंग्रेज हाकिम उस कोठरी में गया और स्त्रियों के घूंघट उठा-उठाकर उन्हें गन्दी-से-गन्दी गालियां दीं। अनेक दुःखद घटनाओं की सूचना एकत्र करके उन्होंने एक बड़ा ही कारुणिक लेख अंग्रेजी के अखबार में लिखा था। कांग्रेस के अध्यक्ष-पद से लाला लाजपतराय ने भी इस अन्याय के विरुद्ध निन्दा की। अंग्रेज सरकार ने न्यायदेवता के आंसू पोंछने के लिए मिस्टर हण्टर के नेतृत्व में एक कमीशन बिठलाया जिसकी रिपोर्ट ने आग में घी छोड़ने का काम किया और कांग्रेस ने भी पण्डित मोतीलाल नेहरू के नेतृत्व में एक ऐसा ही कमीशन बिठलाया। सारे देश में अंग्रेजों के विरुद्ध क्रोध की ज्वालाएं भड़क उठीं।

उसी समय महायुद्ध में सहायता करने के लिए अवध के एक ताल्लुकेदार राजा साहब को अंग्रेजों की तरफ से एक हवाई जहाज उपहार में मिला। अवध के सारे रजवाड़ों में धूम मच गई। एक रियासत के राजा की चहेती रखैल ने अपने प्रियतम से हठ किया कि तुमने भी लाखों रुपया सरकार की मदद में दिया था इसलिए तुम भी उनसे एक हवाई-जहाज मांगो। मैं उसमें अपनी सुहाग सेज बिछाऊंगी। त्रियाहठ के आगे राजहठ मुलायम पड़ गया। राजा साहब ने अपने दीवान और वकील से बातचीत की। उन्हें समझाया गया कि राजा साहब हवाई जहाज तो नहीं मिलेगा। आपको एक गांव इनाम में मिल ही चुका है, अपनी प्यारी को प्रसन्न करने के लिए कोई और उपाय करें।

"तब हम हवा गाड़ी लेब।"

"हां, यू हुई सकत है।" राजा साहब ने हुकुम दिया कि प्रजा पर मोटरावन टैक्स लगाओ। रियासत की प्रजा लगान देने में करीब-करीब उजड़ चुकी थी, प्रार्थना की गई कि हुजूर साल-भर और ठहर जाएं, प्रजा फकीर हो चुकी है।

"हम कुछ नहीं जानते, मोटर चाहिए, मोटरावन का टिकस वसूल करो।"

कारिन्दा हुकुम सिंह दस-पांच लठैतों को लेकर गांव-गांव मोटर का खर्च वसूल करने के लिए प्रजा की मार-पीट करने लगा। हाहाकार मच गया। जिस प्रजा के पास अपने बच्चों का पेट भरने के लिए एक समय का अन्न भी मयस्सर नहीं था वह राजा की रखैल की इच्छापूर्ति के लिए मोटर के पैसे कहां से लाए।

"हम कुछ नहीं जानते, हमें मोटर चाहिए, पैसा लाओ।"

गांव-गांव पुरुषों को मुर्गा बनाकर बैठा दिया गया। उनकी स्त्रियों के फटे कपड़े-लत्ते उतारकर उन्हें नंगी करके कोठरियों में बन्द रहने के लिए बाध्य किया

गया। किसान धड़ाधड़ पीटे जाने लगे।

गांव के पण्डित अमोल शर्मा उत्तेजित हो उठे। उन दिनों बावा रामचन्द्र की सभाएं आरम्भ हो चुकी थीं, लोगों की भीड़ इकट्ठा होने लगी थी किन्तु वे उस समय संयुक्त प्रान्त से बाहर छोटा नागपुर में किसानों का संगठन कर रहे थे। गांव के पण्डित अमोल शर्मा ने बावा जानकीदास से सम्पर्क किया। अमोल शर्मा, बावा जानकीदास और गोरखपुर के पण्डित गौरीशंकर मिश्र ने रियासत के किसानों की एक बड़ी भाड़ी सभा संगठित की। चार-पांच हजार आदमी इकट्ठा हो गए, आवाज़ लगी, "जिसकी रखैल के कुत्तों के लिए रोज पसेरी-भर जलेबियां और दस सेर दूध मंगाया जाता हो, जिसकी साड़ियों के लिए बनारस के कारीगर बुलाकर महलों में कारखाने लगाए जाते हों और जिसकी गरीब प्रजा की स्त्रियों के कपड़े उतरवाकर उन्हें नंगी रहने के लिए बाध्य किया जाता हो, जिसके राज्य में दीन-हीन प्रजा खाने के नाम पर कोड़ों और डण्डों की मार खा रही हो वह हमसे मोटरावन का टैक्स लेगा। हम नहीं देंगे, नहीं देंगे नहीं देंगे। आओ चलो, हम सब अंग्रेज़ बहादुर से अरदास करेंगे कि उनके राज में ऐसे अन्यायों पर रोक लगाई जाय।"

चार हज़ार किसानों की भीड़ 'जय-जय सीताराम' के नारे लगाती हुई अंग्रेज जिलाधिकारी के बंगले की ओर बढ़ चली। नगर की सीमा पर बैलगाड़ियों का बांध बनाकर उस जनरोष की बाढ़ को रोकने का प्रयत्न किया गया। रायबरेली कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष ने उत्तेजित जनता को यह सलाह दी कि कानून को अपने हाथ में न ले, हम पण्डित मोतीलाल नेहरू को तार देते हैं। जिस समय तार इलाहाबाद पहुंचा उस समय पण्डित मोतीलाल नेहरूजी वहां उपस्थित नहीं थे लेकिन उनके बेटे पण्डित जवाहरलाल नेहरू बार-एट-लॉ मौजूद थे। तार पढ़ते ही उनका क्रोध प्रचण्ड हो उठा।

संयोग से किसी मुकद्दमे के काम से जयन्त टण्डन इलाहाबाद आए हुए थे। जवाहरलालजी ने उन्हें बुलवाया और सब स्थिति समझाई, कहा : "जयन्त, तुम जाओ और सही स्थिति का जायजा लो, इन लोगों से यह भी कह देना कि मैं परसों सुबह रायबरेली पहुंच जाऊंगा।"

उसी रात मनोरमा खन्ना की गाड़ी पर जयन्त टण्डन रायबरेली की ओर चल दिए किन्तु फाफामऊ पर ही उनकी गाड़ी रोक ली गई। पुलिस के साथ रायबहादुर बाबू रघुनन्दनप्रसाद के दो-तीन खास आदमी भी वहां उस समय उपस्थित थे। उन्होंने मन्नोजी से कहा : "मालिक की तबियत एकाएक खराब हो गई है, उन्होंने गाड़ीसमेत तुरत आपको बुलाया है।"

"मैं नहीं जाऊंगी, मैं बैरिस्टर साहब के साथ काम से जा रही हूं।"

"हुजूर को जाना तो पड़ेगा ही। मालिक का हुकुम है कि मोटर तुरत

इलाहाबाद की ओर लौटाई जाय। आप भी साथ चलें।"

मनोरमा खन्ना नाराज हो गई, "मेहमान को छोड़कर मैं हरगिज-हरगिज नहीं जाऊंगी।"

जयन्त ने स्थिति पर विचार किया, कहा: "मन्नो, पति की यह अवज्ञा कई नये प्रपचो में हमें फंसा देगी, तुम चली जाओ।"

"और तुम?"

"मेरी चिन्ता मत करो, मुझे जवाहरभाई का यह काम करना है। मैं कोई और तरकीब निकाल लूंगा। लेकिन तुम घर जाने से पहले आनन्द भवन में जवाहर भाई से सारी स्थिति बतला देना।"

जवाहरलाल यह सब बातें सुनकर और भी रोष मे आ गए। रात में कलकत्ते से आती हुई एक ट्रेन रायबरेली की ओर जाती थी, वह उसी पर सवार होकर चल दिए।

सुबह तक व्यवस्था काफ़ी बिगड़ चुकी थी, बैलगाड़ियो का बाध तोड़कर जनता आगे बढ़ी।

"फ़ायर," पुलिस कप्तान का हुक्म हुआ।

वैद्यजी और मुंशी कालिकाप्रसाद ने अमोल शर्मा को किसी तरह समझा-बुझाकर रोका, कहा: "क्यो हत्याए कराते हो मेरे भाई, सवेरे तक इलाहाबाद से कोई-न-कोई बड़े नेता आ ही जाएगे।"

प्रिंस ऑफ वेल्स की यात्रा उन्ही दिनो हो रही थी और भारत सरकार इस बात के लिए कटिबद्ध थी कि इस अचानक उभरे हुए किसान आन्दोलन को किसी भी हालत मे बढ़ने न दिया जाए।

जवाहरलाल नेहरू ट्रेन से उतरे। इस बात की कडी व्यवस्था की गई कि स्टेशन पर नेहरू को कोई सवारी न मिलने पाए और इस आज्ञा के अनुसार ही दूर-दूर तक बैलगाड़ी, इक्का, मोटर, तागा आदि कोई सवारी ही नही दिखाई देती थी। मुन्नन इक्केवाले को कही से यह खबर लगी कि नेहरू आ रहे है और सरकारी हुकुम से उनके लिए स्टेशन से सवारिया हटवा दी गई हैं। बैठा हुआ बीड़ी पी रहा था, ताव खा गया - "सा' ले! वाह, मेरा बादशाह आ रहा है और हुकुम देते है कि कोई सवारी टेशन पर न रहे। इनके बाप की मजाल नही जो मुन्नन को रोक सकें।" घोड़ा-इक्का लैस किया और खबड़खबड़ चल पड़ा। जवाहरलाल स्टेशन से बाहर करीब एक फर्लांग दूर आ चुके थे, उसने घोड़े की लगाम खीची और फौरन नीचे उतरकर झुककर सलाम किया: "हुजूर तशरीफ रखें, और जहा हुकुम करें वहा ले चलू। इन उल्लू के पट्ठो मे ताकत कहा कि मुन्नन को रोक सकें।"

जवाहरलाल खुश हो गए।

भारत युवा हृदय-सम्राट् किसानों के बीच में आ चुका था। यह खबर बिजली की तरह दूर-दूर तक फैल गई। जुलूस बढ़ने लगे, पुलिस ने जनता में आतंक उत्पन्न करने के लिए बाजारों की लूटपाट कराई, गोलियां चलीं, सैकड़ों घायल, अनेकों मृत। मगर आजादी का जोश किसानों में उत्साह जगा रहा था।

नगर-नगर में गांधीजी के दौरे होने लगे थे। उनके भाषणों में कुछ विशिष्ट बातें ही बार-बार दोहराई जाती थीं। (1) विद्यार्थी विदेशी शिक्षा का बहिष्कार करें। (2) वकील वकालत छोड़ें और असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भाग लें। (3) विदेशी वस्तुओं का उपयोग न किया जाए और विदेशी वस्त्रों की होलियां जलाई जाएं। (4) चरखा भारत की भावी स्वतन्त्रता का प्रतीक है।

गांवों में गीत गाए जाने लगे—

"हम तो चरखे से लेवे सुराज हमार कोऊ का करिहै।"

बड़े-बड़े नगरों में योरोपियन क्लब खुले हुए थे जिनमें वही भारतवासी प्रवेश कर सकते थे जो विदेशी वेष-भूषा धारण करते हों तथा जिन्हें क्लब का मेम्बर बनने के लिए अंग्रेज हाकिमों के संस्तुति पत्र प्राप्त हों। बदायूं जैसे छोटे-छोटे नगरों में भी ऐसे क्लब थे जिनमें अंग्रेज हाकिम और भारतीय अभिजातवर्ग के लोग वकील-डॉक्टर इत्यादि समान रूप से भाग ले सकते थे। छोटे शहरों में चूंकि अंग्रेज जाति के लोग कम ही होते थे इसलिए ऐसी व्यवस्था की गई थी। जब भारतीय सदस्यों ने खुल्लमखुल्ला असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भाग लेना शुरू कर दिया और खद्दर की किश्तीनुमा टोपी लगाने लगे तो डिस्टिक जजों और पुलिस कप्तानों जैसे अंग्रेज हाकिमों को आपत्ति होने लगी। दिल्ली के प्रसिद्ध हकीम और राष्ट्रीय नेता हकीम अजमल खां की किश्तीदार टोपी देखकर चूंकि गांधीजी भी वैसी ही खादी की टोपी लगाने लगे और अपनी गुजराती पगड़ी उतार दी तो लोगों ने उसे गांधी कैप अथवा गांधी टोपी कहना आरम्भ कर दिया। गांधी टोपियों का प्रचार तेजी से बढ़ा।

छोटे शहरों के सम्मिलित क्लबों में जब पढ़े-लिखे युवा भारतीय गांधी कैप लगाकर आने लगे तो अंग्रेज हाकिमों ने इसका विरोध करना आरम्भ किया। ऐसे क्लबों में अंग्रेज पुलिस कप्तानों और जजों की इच्छानुसार यह प्रस्ताव भी पास कराए गए कि जो लोग असहयोग आन्दोलनों में सहयोग देकर राष्ट्रविरोधी कार्य कर रहे हैं उन्हें क्लब की सदस्यता से हटा दिया जाए। इस प्रकार के प्रस्ताव पास किए जाने तथा असहयोग आन्दोलन में भाग न लेने के प्रतिज्ञा पत्रों पर जब दस्तखत कराए जाने लगे तो अनेक शिक्षित भारतीयों ने उसका खुला विरोध किया।

एक जगह जब कलक्टर साहब ने क्लब के अध्यक्ष-पद से यह भाषण दिया कि चूंकि चन्द शरारतपसन्द लोगों के क्लब में होने के कारण क्लब का वातावरण

दूषित हो गया है, इसलिए उनको किसी भी हालत में क्लब में रखा नहीं जाएगा। तो क्लब के एक गांधी कैपधारी युवा वकील ने खड़े होकर यह कहा कि : "अपने देश को प्यार करना और उसके प्रति किए जानेवाले अन्यायों व अत्याचारों का विरोध करना न्याय की दृष्टि से सर्वथा उचित है। क्या इंग्लैण्ड में अंग्रेज अपने देश के प्रति किए जानेवाले अनाचारों को सह सकेंगे। यदि वहां इसे ग़लत काम नहीं माना जा सकता तो यहां कैसे माना जाएगा। हम अपने देश को प्यार करने वाले भारतवासी ऐसे अनुचित प्रस्तावों को स्वीकार करने के बजाय क्लब की सदस्यता से त्यागपत्र देना अधिक उचित मानते हैं। हम गांधीजी के मतानुसार अंग्रेज़ों के दुश्मन नहीं हैं बल्कि एक तरह से देखा जाय तो अपने राष्ट्र को प्यार करने की उचित सलाह देकर हम स्वाभिमानी अंग्रेज अथवा किसी भी जाति के मित्र ही अधिक हैं, लेकिन न्याय के आसन पर बैठकर जो हमें देशहित से दूर रहने का पाठ पढ़ाएगा, हम उसका सविनय विरोध करेंगे और उसकी आज्ञाओं को हरगिज-हरगिज नहीं मानेंगे। देश की स्वाधीनता के लिए हम हर प्रकार की कुर्बानी करने को तैयार हैं और आपके हुकुम होने के पहले ही हम ऐसे क्लबों की सदस्यता से बड़ी खुशी के साथ त्यागपत्र देने को भी तैयार हैं जो हमें राष्ट्रविरोधी सबक सिखाते हों।"

युवा बुद्धिजीवियों में इस भाषण से तहलका मच गया। क्लब के चार-पांच खुशामद बहादुरों को छोड़कर और सभी युवा वकील, डॉक्टर और प्रोफेसर स्वयं ही बाहर चले आए। *लाल मुंहवाले अंग्रेज हाकिमों के चेहरे क्रोध से तमतमा उठे।*

अपनी राष्ट्रीय पोशाक का अपमान न सहनेवाले लोगों में केवल भारत का मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी व्यक्ति ही न था बल्कि सरकारपरस्त लोग भी इसे बर्दाश्त न कर पाए। लखनऊ के योरोपियन क्लब के एक बड़े ताल्लुकेदार सदस्य को जब चूड़ीदार पायजामा और शेरवानी पहनकर क्लब में आने से रोका गया तो उन्होंने बिना मुखर हुए ही इस अपमान का बदला लेने के लिए दूसरी तरकीब अपनाई। उन्होंने अन्य भारतीय रईस सदस्यों को योरोपियन क्लब की सदस्यता छोड़कर अपना क्लब बनाने के लिए उकसाया और इस तरह 'रिफा-ए-आम' नामक एक नई संस्था को जन्म दिया।

इलाहाबाद में जब यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों से विदेशी पढ़ाई का बहिष्कार करने को कहा गया तो उसके समर्थन में अनेक छात्रों ने अपने हाथ ऊपर उठा दिए। कविवर सुमित्रानन्दन पन्त उस समय बी० ए० के प्रथम वर्ष में पढ़ रहे थे। उनके बड़े भाई देवीदत्त पन्त कानून की अन्तिम वर्ष की पढ़ाई पूरी कर रहे थे। उन्होंने सोचा—मेरी नाव तो अब किनारे आ लगी है, पढ़-लिखकर वकील बन जाऊंगा तो इसकी सहायता भी कर दूंगा। यह सोचकर उन्होंने कविवर पन्त का हाथ भी ऊंचा उठा दिया। कवि पन्त ने पीछे मुड़कर अपने भाई को देखा तो बड़े

पन्तजी छोटे पन्तजी से बोले : "तू कविताई में नये ज़माने का प्रचार कर। मैं तेरा खाना-खर्चा चला दूंगा। मैं तुझे अंग्रेज़ों की गोलियों से मरने नहीं देना चाहता। ये हत्यारे तो अब मुझे जेल में ठूसेंगे, गोलियों से मारेंगे।"

उधर मुंशीगंज में फायरिंग शुरू हो गई थी। कवि के शब्दों में—

"हियां की बातैं हियनै छोड़ो, मुंशीगंज का सुनो हवाल।
फैलि खबरिया गै बंगलन मा, आवत वीर जवाहरलाल॥
उसुकि पुसुकि मन सोचन लागे, कुसमय आय गयो यह लाल।
हाय विधाता अब का होइहै, अब हम कसक बजाउब गाल॥
यक हरकारा धावत आयो, आय बतायो यहै हवाल।
नोटिस-फोटिस मानिस नाहीं आवत वीर बजावत ताल॥
झुके सूरमा सेना दल के, जिनके हस्त बसत है काल।
दूजी ओर निहत्थी जनता सच्चे भारत मां के लाल॥
गोली चलतै परलै होइगै सूझत नाहीं अपन पराव।
जैसे लरिका टिड्डी खेदैं, तैसे सैनिक करें प्रहार॥
पंचम पासी पहिले जूझे समुहे खाय सीस का घाव।
बालक बेड़िया नन्हू नाऊ, सुक्खी दुक्खी दूनो भाय॥
कितनेउ वीर परे धरती मां जिन नै खाये समुहे घाव।
घैलन की कछु गिनती नाहीं, यह है कलजुग केर नियाव॥
सरदारौ की है बनि आई, उनहू लिहेव पुरानै दांव।
गोरी हकूमत कारी होइगै, है जग जाहिर उलटा न्याव॥
शान्ति उपासक वीर अहिंसक, जूझे खाय करारे घाव।
हाय विधाता का करनी है, का है यही तुम्हारौ न्याव॥

न्याय मांगने के लिए सारे भारत में एक आक्रोशभरी लहर उठ आई थी। संयुक्त प्रान्त के अनेक नगर आत्माभिमान के प्रचण्ड तेज़ से तप उठे थे। नगर-नगर में बड़े-बड़े देहाती चरखे चलने लगे। जो चरखा-प्रेमी नहीं थे, वह स्वदेशी वस्त्र पहनने का व्रत लेने लगे। सरकारी आज्ञाओं का निषेध अब भारतीय प्रजा को कम डराने लगा। गांधीजी के आदेशानुसार तिलक स्वराज्य फण्ड के लिए धन एकत्र किया जाने लगा। बहुत-से अंग्रेज़ी के अखबार राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रचार करने के लिए जुट गए। इलाहाबाद का 'इंडिपेन्डेन्ट', कलकत्ते की 'अमृतबाज़ार पत्रिका', मद्रास का 'हिन्दू' आदि कितने ही पत्र ज़ोर-शोर से असहयोग सम्बन्धी आन्दोलन का प्रचार करने लगे, गिरफ्तारियों की धूम मची थी। बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन, डॉ० मुरालीलाल, डॉ० जवाहरलाल, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', बाबू गनपतसहाय, बाबू रघुपतिसहाय, पं० द्वारिकाप्रसाद मिश्र, सेठ गोविन्ददास, सुभाषचन्द्र बोस, आचार्य कृपलानी, पण्डित कमलापति त्रिपाठी, मोतीलाल नेहरू

जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, देवदास गांधी, महादेव देसाई आदि न जाने कितने बड़े-बड़े लोग जेल जाने के लिए अपनी गिरफ्तारियां देने लगे। जिस देश में जेलयात्रा कभी कलंक की बात समझी जाती थी उस देश में जेल को श्रीकृष्ण जन्मभूमि कहकर उसका महत्त्व बढ़ाया जाने लगा। छोटे-छोटे बालक भी महात्मा गांधी, भारतमाता की जय, कहकर जेल जाने के लिए हौसले से निकल पड़े। सरकार ऐसे बच्चों को पुलिस-गाड़ियों में भर-भरकर शहर से बाहर छोड़ आती थी ताकि वे भटकें, भूख-प्यास से तड़पें और फिर जेल का नाम भी न ले सकें। परन्तु बनारस में एक ऐसा ही युवक जब बारम्बार विद्रोही स्वर उठाने लगा तो उसे जेल में बेंत मारने की सजा दी गई, नवयुवक का नाम था चन्द्रशेखर। पुलिस पूछती—पिता का नाम, वह कहता—आजाद, माता का नाम—आज़ाद, शहर का नाम—आज़ाद। हर सवाल के जवाब में एक ही शब्द उसके मुख से निकलता—आज़ाद, आजाद, आजाद। हर बेंत पड़ने पर चन्द्रशेखर आज़ाद जोर से चिल्लाता—"भारत माता की जय।"

उसके साहस को देखकर बेंत लगानेवाले भी शर्म से झुक-झुक जाते थे।

प्रभात फेरियां निकलतीं, गली-गली गीत गूंजते 'मुर्दा भारत को जिला जाएंगे मरते-मरते' या 'भारत न रह सकेगा हरगिज गुलामखाना, आजाद होगा—होगा, आया है वह जमाना।'

कहां गए वे दिन, कहां गया वह जोश। यह सब लिखते-लिखते अपने सामने फैली सामग्री को देखकर युधिष्ठिर स्वयं ही बोल उठा : "आज की इस नैतिक गिरावट में नैतिकता का वह उच्चस्तर क्यों नहीं दिखलाई पड़ता। कहां हैं हम, कहां हैं वह हमारे पुरखों का जोश?" विचलित हो उठा युधिष्ठिर।

छुट्टी का दिन था, इतवार का रोज। सोचा था, बहुत लिख डालूंगा, पर कलम रुकी सो रुक ही गई। शकुन अंशू को साथ लेकर अपनी मौसेरी बहन के यहां गई हुई थी। उसके बेटे के मुण्डन के अवसर पर देवकाज होनेवाला था। वह होती तो कॉफ़ी बना देती, गाड़ी शायद फिर चल पड़ती। मगर मन उखड़ा सो उखड़ ही गया। घड़ी में देखा, सवा-नौ बज रहे थे, सोचा—पिताजी अपने ध्यान-कर्म से छुट्टी पा चुके होंगे। उन्हीं से बातें करें, उसके बाद शायद मन फिर लिखने लायक बन सके।

नीचे आया। मां, पिताजी के सिर पर तेल की मालिश कर रही थीं, उसे देखकर बोलीं : "अरे, जल्दी कैसे उठ आया? रामदीन तो कह रहा था, भैया लिख रहे हैं, शायद चाय की तलब लगी होगी तुझे, बनवा दूं।"

"नहीं मां···अच्छा, बनवा ही दो।" कहकर वह बाहर लॉन में चला गया।

टहलते-टहलते ही उसकी स्मृति में न जाने कहां से एक लालाजी साहव के बंगले पर अर्दली की चिरौरी करते हुए झलक उठे। चौक में पुराने लोगों से उसने वृटिश राज में साहवों के यहां लालाओं को डालियां ले जाने की वात सुनी थी। साले अर्दलियों की खुशामदें करते थे। मन का दृश्य उपन्यास के प्रसंग से जुड़ा। वह स्फूर्तिवन्त हो उठा : "अम्मा, कॉफी ऊपर भिजवा देना···"

फरवरी का दिन, ठण्डक भी ज्यादह थी। रुई की बण्डी पहने, धुस्से में विलायती शराव की वोतल छिपाए और नौकर के हाथ में मेवों की डोलची लिये हुए लाला जी शाम के समय अंग्रेज पुलिस कप्तान की कोठी पर पहुंचे। रुपया अर्दली की नजर किया, बगल से वोतल निकालकर दिखलाई, कहा : "भैया, किसी तरह साहव से हमारी भेंट करवाय दो।"

अर्दली अकड़कर वोला : "आज पार्टी होनेवाली है, साहव इस टाइम किसी से नहीं मिलेंगे।"

"अरे हुजूर, अर्दली साहव, लालबेटवा होए तुम्हरे, हमरी तो जान-माल और इज्जत का सवाल है। दुई मिनट का काम है। कल भोरहे ससुर गांधी वावा के चेले हमरी दुकान पर धरना देएवारे हैं, कहत हैं विलैती माल न वेचौ, हमरा तो नुकसान हुई जैहै।"

फर्जदअली अर्दली वोला : "वा लाला, तुम तो दिन-भर में तीस-चालीस कमा लोगे और हमें देने को साला रुपैय्या।"

"अरे हुजूर माई-वाप, तुमरे गोड़ छुएं, पांच मिनट का काम है। तुमरी खुसामद करत हैं, हाथ जोड़त हैं। लेओ, अठन्नी और लेओ।" लाला ने टेण्ट खोलकर एक अठन्नी और निकाली।

"अठन्नी से काम नहीं चलेगा वनिए, एक रुपया लाओ। साहेव को तो विलैती पिलाओगे और हमें ससुरा महुआ भी नसीव न हो।"

"लेओ माई-वाप।" किसी तरह कांख-कांखकर एक कलदार और निकाला।

"अमां, चत्रौती के लिए अठन्नी और दो लाला, तव काम वने।" लाला ने एक अठन्नी और नजर की, तव,अर्दली भीतर गया। थोड़ी देर वाद वाहर निकलकर कहा : "जाओ लाला, साहव वहुत खुश हैं, मेम साहव का चुम्मा ले रहे थे। वरन्डी की वोतल देखकर खुस भये। जाओ, जाओ। मेवा रखके साहव के वूटों पे सिर रख देना वेटा, काम वन जायगा।"

भीतर जाकर लाला ने अपनी अर्दास पेश की। गांधी महात्मा की टोली का नाम सुनकर साहेव की त्योरियां चढ़ गई। घण्टी वजाई : "फर्जंड, चौरीचौरा के दरोगा को फोन करो।"

दरोगा साहब लाइन पर हाजिर हुए। साहब अकड़कर बोले : "वेल डरोगा, लाला टुम्हारे पास आटा है। ऐण्ड माइन्ड यू कोई पिकेटिंग वगैरह न होने पाए इसकी दूकान पर। अगर वो लोग न हटें तो शूट देम। मैं अपने इलाके में ऐसा कोई टमाशा नेइ होने डेना चाहता, स्काउन्ड्रल।"

पांच फरवरी। तीन-चार रोज की बदली-बूंदी के बाद आज सूरज निकला है। नेता द्वारकाप्रसाद पाण्डे दस-बारह वल्लमटेरों को लेकर जल्दी ही लाला की दूकान पर पहुंच गए थे और तालों में गाढ़े के थैले बांध-बांधकर लाख से कांग्रेस की मोहर लगाने लगे। लाला भी तब तक पहुंच गए : "अरे भैया, बोहनी का वखत है। का करत हौ पांडेजी। कब की दुसमनी का बदला लै रहे हो महराज।"

"हमारी-तुम्हारी कोई शत्रुता नहीं है लाला। वैसे गांधी महात्मा का हुक्म है, विदेशी वस्त्र नहीं बेचने देंगे।"

"अरे पांडेजी, हम गरीब आदमी मर जाइंगे। खाइंगे का?"

"देशी वस्त्र बेचिए। हमारा-आपका कोई झगड़ा तो है नहीं। बोलो—भारतमाता की जय, महात्मा गांधी की जय, मोतीलाल नेहरू की जय।"

नारे लगे तो पहले से ही छिपे हुए बन्दूकधारी सिपाही आ धमके। "दूकान से हट जाओ तुम लोग, यहां धरना-वरना नहीं चलेगा, साहब का हुकुम है।"

"हमें भी महात्माजी की आज्ञा है दरोगाजी, विदेशी माल नहीं बेचने देंगे।"

"आखिरी बार कहता हूं, दूकान से हट जाओ, लाला को ताले खोलने दो।"

"हम नहीं हटेंगे, दरोगाजी।"

आने-जानेवालों की भीड़ भी दूकान के पास आ लगी। धरना देनेवाले जोश में आ गए, गांधी और अन्य राष्ट्रीय नेताओं के जय-जयकारे बोलने लगे। दरोगा ने अपने आदमियों को इशारा किया और पट-पट-पट गोलियां चल पड़ीं। लोग गिरने लगे, धरना देनेवालों और तमाशाइयों की भीड़ में कोई अन्तर नहीं किया गया। बन्दूकें इधर-से-उधर गोलियों की बौछारें करती थीं मानो होली की पिचकारियां रंग छोड़ रही हों। देखते-ही-देखते पच्चीस-छब्बीस लाशें गिर पड़ीं, न जाने कितने घायल हुए। गोलियां तब तक चलती रहीं जब तक सिपाहियों के पास कारतूस रहे।

पाण्डेजी के कन्धे में गोली लगी थी। मारो सालों को इनकी—बिटिया। मां-बहनों की गालियां बरसने लगीं। अहिंसा हिंसा में बदल गई। मारो-मारो-मारो, ईंट-पत्थर, लाठियां क्रोध के बवंडर में जो जिसके हाथ आया, मारने लगा। सिपाही-दरोगा भागे, दो-चार सरकारी बन्दूकें भी छीन ली गईं और उनके कुन्दों से धड़ाधड़ सिपाहियों की कुटाई होने लगी। "आग लगा दो चौकी में, मारो सालों को। एक भी भाग न पाए।"

जनता के उन्मत्त क्रोध की प्रचण्ड लपटों-सा चौरीचौरा का थाना जल उठा।

दरोगा मारा गया. पुलिस के सिपाही बन्दूकों के कुन्दे से इतने मारे गए कि उनकी जान ही निकल गई। चौरीचौरा के थाने के भस्मीभूत होने के साथ ही उस क्षेत्र में गांधीजी के अहिंसा का मन्त्र भी जलकर राख हो गया।

सारे देश में सनसनी मच गई। मोतीलाल, जवाहरलाल, लाजपतराय आदि अनेक नेता उस समय जेलों में बन्द थे और गांधीजी गुजरात में दौरे पर थे। उनकी अन्तरात्मा कराह उठी : "यह क्या हो गया, यदि इसी प्रकार देश के अन्य भागों में भी अहिंसा हिंसा में परिवर्तित होने लगेगी तो यह आन्दोलन शीघ्र ही इस तरह से कुचल दिया जाएगा कि फिर वर्षों तक कोई आन्दोलन उठ ही न सकेगा।"

जो नेता तब तक जेलों से बाहर थे और कांग्रेस वर्किंग कमेटी के इने-गिने जो लोग गांधीजी को मिल सके, उनसे सलाह-मशविरा करके गांधीजी ने आन्दोलन को तत्काल स्थगित करने की घोषणा कर दी। जेलों में बन्द नेताओं को इससे गहरा धक्का लगा। देश के अनेक भागों में तमाम सक्रिय कार्यकर्त्ता इस घोषणा से अपाहिज हो गए। यह क्या किया महात्माजी ने? इतने ज़ोर से आगे बढ़ते हुए जनोत्साह को एकाएक ठोकर मारकर गिरा दिया…।

युधिष्ठिर की कलम फिर थम गई। क्या महात्माजी ने यह अच्छा किया था? चौरीचौरावालों की गलती का दण्ड क्या पूरे देश को देना न्याय-संगत बात थी?

दिन में दफ्तर गया। सम्पादकीय विभाग के पुराने चट्टे-बट्टे उसे देखते ही अपनी वैचारिक गोटियों की चौसर बिछाने लगे।

विनोद पाण्डे चहके : "आइए टण्डन साहब, आप ही का इन्तज़ार था।"

"थिंक आफ़ दि डेविल एण्ड ही इज़ देअर।"

"डेविल आप नहीं, आपके जाने-माने पुराने शत्रु हैं। दिल्ली के 'पोलेटीशियन' में आपने उनका लेख आज पढ़ा?" जगदीश अरोड़ा ने पूछा।

साथ ही विनोद पाण्डे भी अपनी पतलून की जेब से चूने-तम्बाकू की डिबिया निकालकर बोले : "हज़ार हरामियों का पलोथन लपेटकर भगवान ने इस साले को बनाया होगा।"

"अमां, किसकी बातें कर रहे हो। ज़रा पहेली तो बुझाओ यार। तुम लोग तो आते ही बमगोले की तरह बरसने लगे। 'पोलेटीशियन' में किसने क्या लिखा है? ज़रा पेपर तो दो जगदीश।"

"शफीक के पास था, वह उसे लेकर ही कहीं चला गया है। आता ही होगा, साला।"

"कोई आर्टिकिल है उसमें?"

"हां, आपके परम शुभचिन्तक श्रीमान बी० पी० वर्मा महोदय ने आपके

यशस्वी पितामह के संस्मरण लिखे हैं और आपके परम मित्र मिस्टर हसन जावेद पर छींटे भी कसे हैं।"

"कहा है पेपर, देखूं।"

तब तक विनोद की टेबुल पर रखे टेलीफोन की घण्टी घनघना उठी। विनोद ने उठाया : "विनोद पाण्डे दिस साइड। गुड मार्निंग सर। जी हां, आ गए हैं टण्डन साहबजी, जी, उसी आर्टिकिल का जिक्र हो रहा था उनसे अभी। बहुत अच्छा, अभी कहता हूं।" टेलीफोन रखकर पाण्डे ने टण्डन से कहा : "एडीटर साहब बुला रहे हैं, जाओ। नम्बरी बदमाश है यह साला भैंरू वर्मा। जावेद के फादर तो इसके बचपन के दोस्त हैं।"

युधिष्ठिर ने जगदीश से पूछा : "जग्गो यार, तुम बतलाओ, पाण्डे साला तो सवेरे से ही भांग पीकर दफ्तर आता है।"

"कोई खास बात नहीं, आर्टिकल अच्छा है, मगर उन्होंने उसमें कम्यूनल कलर भी दे रखा है। आप देख लीजिए पहले फिर बातें होंगी।"

"देखूं कहां यार, अखबार तो है ही नहीं।"

और वह उठकर ऊपर एडीटर के कमरे में चला गया।

"गुड मार्निंग सर!"

"टण्डन, तुमने कल के 'पोलिटीशियन' का मैगज़ीन सेक्शन देखा है?"

"जी अभी तो नहीं, हां, नीचे उसका जिक्र जरूर सुन आया हूं।"

"लो, यह ले जाओ, सावधानी से पढ़ना, जावेद को भी पढ़वा देना। जावेद बी० पी० के पैसे खा गया।"

प्रश्न-पहेली का मानसिक तनाव जावेद के पैसे खाने की बात सुनकर अपने मन की हंसी से हल्का हुआ। "ऐसी कोई बात नहीं सर, हां, उसने थोड़ा मजाक जरूर किया था। पहले मैं पेपर देख लूं।"

"पर मैं चाहता हूं, इसका माकूल जवाब फौरन से पेश्तर लिखो और जावेद से भी कहना कि इसके खिलाफ अपना स्टेटमेन्ट दे। कमबख्त ने इसके साथ ही हमारे पेपर को भी बदनाम करने की कोशिश की है।"

'पोलेटीशियन' का मैगज़ीन सेक्शन लेकर युधिष्ठिर अपने केबिन में आया और बी० पी० वर्मा का लेख पढ़ने लगा।

लेख का आरम्भ अपने बचपन के सहपाठी और घनिष्ठ मित्र जनाब मुश्ताक अहमद साहब के स्वच्छ, निर्मल व्यक्तित्व की प्रशंसा से किया गया था। अपनी गरीबी के दिन और मुश्ताक अहमद के पिता का विरोध होने पर भी मुश्ताक साहब ने किस तरह उनसे दोस्ती रखी, इसका बी० पी० ने बहुत शानदार वर्णन किया था और युधिष्ठिर के स्वर्गीय नाना पुराने स्वतन्त्रता सेनानी बाबू कौशल किशोर खन्ना तथा लगे-हाथों उनकी पुत्री शारदा और दामाद सुमन्त टण्डन का

भी वहुत ही प्रशंसा-भरा संक्षिप्त वर्णन किया गया था। लेकिन उसके वाद ही वी० पी० वर्मा ने उच्चतर मानवीय मूल्यों और मानों का किस तरह ह्रास हुआ है इसका उल्लेख करते हुए उन्होंने जावेद के द्वारा ठगे जाने का वहाने-भरा उल्लेख भी किया। युधिष्ठिर के सम्वन्ध में भी लिखा कि कुसंगति में पड़कर वह विवेक-शून्य हो चुका है। वी० पी० यह उम्मीद करते थे कि उनकी मुंहवोली वहन और न्यायप्रिय सुमन्तजी का वेटा तथा शहीद जयन्त टण्डन का पोता कम-से-कम अपने पिता, दादा और नाना के चरण चिह्नों पर चलकर देश और काल को आगे वढ़ाएगा।

इसके वाद ही वी०पी० वर्मा ने जयन्त टण्डन के राजनीतिक कार्यों का विशद् उल्लेख किया। उनकी कार्यकुशलता एवं संगठन क्षमता के विपय में खूव भक्ति-भाव से लिखा। विश्वपूज्य नेहरू से उनकी घनिष्ठता का उल्लेख भी उन्होंने किया और अन्त में लिखा: "चूंकि यह जयन्त टण्डन का शताब्दी वर्ष चल रहा है इस-लिए उनकी कुछ कमज़ोरियों का उल्लेख भी करना मैं उचित समझता हूं। मैंने टण्डन साहव से वहुत कुछ सीखा है। हमारे गुरु समान हैं, पर स्त्रियों से सम्वन्ध में वे वहुत कमज़ोर थे। उनके अनेक विदेशी स्त्रियों से भी सम्वन्ध रहे, साथ ही कुछ भारतीय स्त्रियों से भी। इसमें भी एक वात जो मुझे नज़र आती है वह यह है कि वे मुसलमानों के प्रति साम्प्रदायिक दृष्टिकोण रखते थे। भारत में अपनी काम-तृष्णा वुझाने के लिए उन्होंने अनेक भोली और भली मुस्लिम औरतों को अपने फन्दे में फंसाया। एक को वह इंग्लैण्ड जाने से पहले ही तवाह कर चुके थे और संयोगवश उसी महिला के पास उनके कुछ पत्र देखकर मुझे यह अनुमान भी लगा कि अपनी मृत्यु से एक-दो वर्ष पहले उन्होंने फिर समझा-वुझाकर उससे सम्पर्क स्थापित कर लिया था। उससे उन्हें एक पुत्री भी हुई थी। सन् वयालीस में जव वह मेरे एक मित्र के यहां उनके गांव के घर में छिपकर कुछ महीनों रहे थे तव भी उन्होंने एक मुस्लिमधर्मी घोसिन कन्या का शीलहरण किया था। जिससे भयभीत होकर उसकी मां उसे लेकर उस घर से भाग गई। उस लड़की को भी उन्होंने मातृत्व प्रदान किया था। इस प्रकार की और भी घटनाएं वखानी जा सकती हैं। यह देखा जाता है कि अक्सर महापुरुषों में कामजनित कमज़ोरियां भी होती हैं जिन्हें नई पीढ़ी के युवकों के सामने प्रकाश में अवश्य लाना चाहिए ताकि वे उन घृणित कमज़ोरियों से वच सकें।"

पूरा लेख पढ़कर युधिष्ठिर टण्डन खौल उठा, जावेद भी तव तक दफ्तर में आ चुका था। घण्टी वजाकर शिवदीन को वुलाया: "अरे, ज़रा जावेद को वुला लाओ और नीचे से दो कप कॉफ़ी लाने को भी कह देना।"

जावेद आया: "कहो मेरी जान, नावेल कैसा चल रहा है तुम्हारा?"

"अमां मेरे नावेल की फ़िक्र छोड़ो, यह आर्टिकिल पढ़ो अपने भोंपू वर्मा का।"

"क्यों, कोई खास बात है।"

"एडीटर साहब ने कहा है कि मैं या तुम कोई भी इसका जवाब देकर इस भेड़िये के दांत तोड़े। क्या समय आ लगा है यार, जमाने-भर की गन्दगी बटोरे *यह आदमी जीवन के मूल्यों और मानो की बात करता है।* एक था गांधी जिसने हिंसा और अहिंसा के प्रश्न पर अपना आन्दोलन बन्द कर दिया था और एक यह है कमबख्त, मेरा मुंहबोला कंस मामा।"

जावेद बी० पी० का लेख पढ़ने लगा। युधिष्ठिर अपने विचारों में खो गया। कितनी जल्दी बदला है यह समय। हिंसा हर व्यक्ति में सहज ही भड़क उठती है और अहिंसा धर्म का पालन करने में मनुष्य को आत्मशक्ति लगानी पड़ती है। कितने साहसी थे गांधी जो उन्होंने हारकर भी हार नहीं मानी। इसी देश के लोग गांधी की शिक्षा पर बाद में छाती खोलकर अंग्रेजों की गोलियां खाने के लिए तैयार हो जाते थे। घोड़ों से रौंदे गए, लाठियां और गोलियां खाईं मगर अहिंसा पथ को न छोड़ा। यह गांधी के साहस का ही परिणाम था। दूसरे महायुद्ध की बढ़ती हुई महंगाई और मुनाफाखोरी की वृत्ति से गांधी के द्वारा पाई गई भारतवासी की इस आत्मशक्ति ने इस मुनाफाखोरी के आगे आखिरकार घुटने टेक दिए।'' लेकिन किसने टेके? गरीब तो गरीब से गरीबतर हो गए, घुटने गांधी के धनवान चेलों ने ही टेके। और उनके साथ राजनीति का प्रपंच करनेवाले महत्वाकांक्षी लेखक भी जुट गए। नैतिकता, अनैतिकता में परिवर्तित होने लगी। और कितना घिनौना है यह रूप!

कॉफी आ गयी। जावेद बी० पी० के लेख का करीब-करीब अन्तिम हिस्सा पढ़ रहा था।

"नम्बरी हरामी है यह साला भोंपू का बच्चा। लेकिन इस बार इसका फन इस तरह रगड़ूंगा कि साला कभी उठ ही न पाएगा। जान पड़ता है यह पगला पाण्डे और बी० पी० वर्मा ने मिलकर यह साजिश की है।"

"वह तो की ही है। तुम उस यास्मीन को फौरन से पेश्तर अपने काबू में करो। कल तुम कह रहे थे कि यास्मीन बी० पी० के लड़के से भी···"

"ठहर जाओ, यह आर्टिकिल पूरा पढ़ लूं तो तुम्हें और भी बातें बतलाऊंगा।" *लेख की समाप्ति करने पर बची-खुची ठण्डी कॉफी हलक में उंडेलते हुए* जावेद बोला - "तुम्हें मालूम है, वह लौंडिया आजकल मुझसे इश्क कर रही है।"

"धत्तेरे की, अबे तू भी अमानत में ख्यानत करने के लिए तुल गया। मैं शब्बो को साउण्ड कर दूंगा, बताए देता हूं।"

"कर दो बर्खुरदार, अच्छा एक सिगरेट दो, फिर बाद में बतलाऊं। शब्बो सब कुछ जानती है, सुनो टण्डन, आज दफ्तर को गोली मारो? एडीटर साहब से कहे आता हूं कि भोंपू के इस आर्टिकिल को एक्सपोज करके मैं उसे सदा के लिए

पालिटिकल लाइफ़ से हटवा दूंगा। अभी आता हूं।"

जावेद एडीटर के कमरे में चला गया और युधिष्ठिर अपने कागज़-पत्र समेटने लगा।

चौंतीस

दफ्तर के बाहर निकलकर जावेद ने युधिष्ठिर से कहा : "नन्हे, आज तेरी कार मैं ले जाऊंगा।"

"कहां ?"

"पहले शब्बो के स्कूल और फिर उसे लेके इटौंजे, यासमीन को लाना है।"

"तो अकेले क्यों नहीं जाता ?"

"बिचारी शब्बो ! अकेले मेरे जाने से वह पग्गल पाण्डे शायद एतराज करे।"

"और मैं इतनी देर क्या करूंगा ?"

"तू भी साथ चल। शक्को को भी ले ले। बख्शी टिपड़चन्द के ताल पर बैठकर तुम दोनों मियां-बीबी ताल बजाना, बेटा तब तक हम मियां-बीबी उस पग्गल पांडे की लौंडिया को लेकर आते हैं। अरे साली धाकड़ शराब पीने वाली है यार। बी० पी० के प्रिन्स आफ वेल्स हरपरकाश के साथ जाने कितनी रातें बिता चुकी है वह।"

"तो इसके माने यह है कि अपनी गाड़ी निकालूं।"

"निकालनी ही पड़ेगी।"

"पेट्रोल कौन देगा ?"

धोते हुए बात कर रहे थे : "उई कहावत सुने हो ना रामबचन ? 'ता यू सोंही ऐसा नर, पीर बवरची भिश्ती खर।' सो पांडेजी वही करत हैं, आजकल।"

"अरे हरामी है साला, बाप-दादे कैसे-कैसे पण्डित रहे कि इटौजा के राजा की सवारी रोज उनके दरवज्जे पर खड़ी रहे और एक यह घुमीरमुआ है साला, न पढ़ा न लिखा। जब लग बाप रहे, जवानी ठल्लेनवीसी में बीत गई और अब बेटा समसेरबहादुर ऐडूकेट के बूटन पर पालिस करत है सगुरा।"

"है! घुमीराम पाड़े तो बड़ी भारी नाक रखता है कि हम बड़े ऊंचे बाम्हन हैं।"

"अरे ब्राह्मण वही होत है रामबचन जो ब्राह्म मुहूर्त में उठके गीता-पाठ करत है, ब्रह्मविद्या का पण्डित होत है, वेद-शास्त्र पुराणन का ज्ञाता होत है। घुमीरमुआ सार हाल यू आय कि पितरन के सराध का दिन आवै सो सलाइन हुकुम दें कि घुमीराम आज तुम्हें पण्डित बनना है, लेकिन घर में खाना बनानेवाला आज कोई नहीं है इसलिए खाना तुम्हें ही बनाना है और हम लोगों का भी बना देना। अच्छा मालकिन कहिके घुसीराम दुई लोटा खुपड़ी पर डारिके रसोइया या बवरची बन जाता है। वकील साहब का कागज-पत्तर का गट्ठर लादकै उनके पीछे-पीछे कचहरी जात है सगुर और उनके बूटन पै पालिस करत है। हम तो अपनी आंखिन से देखा है रामबचन, तुमसे झूठ न बोलब।"

"सुन लिया शक्को, अब तुम्हें मुसलमानी के हाथ की पकौड़ियां खाकर कोई ब्राह्मण जात से बाहर नहीं निकाल सकता।"

शक्को बोली : "अरे अब ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि का भेद ही कहां रहा। चारों वर्ण शूद्र वर्ण हो गए। मैं समझती हूं कि हजारों वर्ष पूर्व कभी वर्णाश्रम धर्म की रेल चलती होगी, अब तो क्या कहा जाय।"

"समय बदलता है डियर, कम-से-कम अकबर, तुलसीदास के जमाने में वर्णाश्रम की मिट्टीपलीद होने के प्रमाण तो हम सभी लोग पाते हैं। धर्म तब टिकता है जब समाज में तेजस्विता होती है, शक्ति होती है। मुझे तुलसीदास की वह कविता याद आती है—

> खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि,
> बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी
> जीविका-विहीन लोग सीद्यमान सोच बस
> कहै एक एकन सों, कहां जाई का करी?
> वेद हूं पुरान कही, लोकहू बिलोकियत
> साकरे सबै पै राम रावरे कृपा करी।
> दारिद दसानन दबाई दुनी दीनबन्धु
> दुरित दहन देखि तुलसी हहाकरी।"

"अरे यह तुलसीदास ने लिखा है? नहीं, तुम मज़ाक करते हो जी। यह तो किसी आज के जमाने के पुराने स्टाइल के कवि ने लिख दिया होगा।"

"वेवकूफ हो तुम। तुलसी सच्चे रामभक्त थे, अपने जमाने की कैसी सच्ची तस्वीर दी है। मगर देखने की बात तो यह है शक्को कि उस जमाने से लेकर आज तक समाज की दशा करीव-करीव वैसी ही बनी हुई है। हमारे नैतिक मूल्यों में गिरावट आने की यही तो कहानी है। पहले सामन्तशाही ने समाज को कुचला, कमवख्त खेतों को घोड़ों से रौंदवाते हुए एक-दूसरे पर चढ़ाइयां करते थे। उनकी सेनाओं को इस वात की चिन्ता नहीं थी कि जिस खड़ी फसल को हम रौंदते चले जा रहे हैं वह इस देश में कितने अकाल लाएगी। भूखे पेट न ब्राह्मण ही रह सकता है और न क्षत्रिय। अरे हमीं लोगों को देख लो, पुरखे अलाउद्दीन खिलजी के जमाने तक सिपहसालार थे और अव उन्हीं के वंशज यानी कि हमारे वावा के वावा के वावा लोग वनिये वक्काल हो गए, वजाजा करने लगे। वस, एक हमारे वावा के वावा रायसाहव वंसीधर वी० ए० पास होकर नौकरी में लगे वर्ना सारा खानदान वही करता है। हां, यह वात ज़रूर है कि व्याह के वखत हम लोग भी कमर में तलवार खोंस लेते हैं। और वैश्य भी वैश्य न रहे। वह छप्पन करोड़ की हवेली पर ध्वजाएं फैलानेवाले वैश्य विधर्मी और विदेशी आक्रमणकारियों के भय से अपने वड़े-वड़े उद्योगधन्धे समाप्त करने को मजवूर हुए। सातसमुद्रों को पार करके आनेवाली लक्ष्मी के द्वार भारत में वन्द हुए। यही नहीं वल्कि अवसरवादी ब्राह्मण समुद्र की यात्रा को ही पाप वताने लगे। जीवन के मूल्यमान ऐसे ही खत्म होते हैं रानी। ये रिटायर्ड तहसीलदार रामलोचन पाण्डे साला नकल तो गांधीजी की करने लगा और रुपये के लिए मुसलमानी को मजवूर करके अपनी रखैल वना लिया। हद है गिरावट की।"

शकुन वोली: "गलती तो हमारे वावासाहव ने भी की है, भले ही वह कितने वड़े महापुरुष ही रहे हों···"

"ओ वेवकूफ मास्टरनी, वड़े और महापुरुष एकसाथ वोलती है।"

"मेरी वात को यह अपना ढोंग करके मत टालो जी। घर हो या वाहर, कमज़ोरी सवकी वखानी जाएगी। अनारो को तो तुम्हारे वावा साहव ने ही खराव किया!"

"ठीक है, कामवासना उनकी कमज़ोरी थी। वहुत वड़े-वड़े आदमियों में यह कमज़ोरी रही है।"

"वड़े आदमी हों या छोटे, पर वुराई या पाप भी नैतिक मूल्यमानों में गिरावट लाता ही है।"

"मानता हूं रानी, मगर तुमको भी यह मानना पड़ेगा कि तुम्हारा यह दास, दासानुदास, कभी इस चक्कर में नहीं पड़ा। न मैं, न मेरे पिता।"

गाड़ी पर जावेद—शबाना और अनारोनन्दिनी यास्मीन उर्फ सरस्वती को लेकर आ पहुंचा। सड़क पर गाड़ी रुकी और शब्बो-जावेद उतरने लगे तो यास्मीन बोली : "अरे यहा क्यों उतर रहे हैं?"

"अरे एक नादान कबूतरो का जोड़ा यहां बासी हनीमून मना रहा है। आइए, उसको भी साथ पकड़ ले चलें।"

"ओक्खो, तो यह हमारे टण्डन साहब और मिसेज टण्डन बासी हनीमून मना रहे थे, हाः हाः हाः।"

युधिष्ठिर उठते हुए बोला : "आपकी ताजादिली को देखते हुए हमारा हनीमून भी ताजा हो गया यास्मीनजी।"

"अरे तो इनके साथ हमारे यहा क्यों नही आ गए थे।"

शकुन ने दरी समेटते हुए बहाना बनाकर कहा : "हमे क्या मालूम था बहन कि ये मरी शब्बो और बन्ने भाई आपके यहा गए हैं।"

"जी हा, मुझसे तो कह गया था कि इटौजे से कलाकन्द लेकर आऊंगा।"

"साला, हमारे हिस्से की भी इमरतिया और दहीबड़े चट करके हमे ही उल्लू बना रहा है, देखा तुमने यास्मीन। यह शक्को और शब्बो अगर यहा नहीं होती तो पचास चप्पलें उतारकर मारता।"

यास्मीन उर्फ सरस्वती के पाउडर-पुते खुशबूदार और कुछ-कुछ फैले हुए बदन से सटकर शकुन को बैठना खल जरूर रहा था मगर बैठना ही पड़ा। सीट की तंगी में युधिष्ठिर को बैठने के लिए कम जगह मिली थी इसलिए वह यास्मीन से मन-ही-मन बहुत नाराज था। और बीच-बीच मे बदन से सटकर बैठी शकुन की पीठ मे चुटकिया भी काट लेता था। जिससे शकुन की नाक चढ़-चढ़ जाती थी।

शब्बो को शकुन के घर छोड़ा और जावेद गाड़ी से उतरकर अगड़ाइया लेने लगा। युधिष्ठिर बोला : "शब्बो भई, आज तुम्हे गाड़ी से तो घर छोड़ नही सकूगा।"

"वह मैं समझती हूं। लेकिन हमारी यास्मीन साहबा को बिल्कुल तकलीफ न दीजिएगा। यह बहुत ही शरीफ, शरीफुलशरीफ औरत है।"

"बेखुश क्या खूब नसीहत दे रही है मुझे, जैसे मैं निरा बेवकूफ ही होऊ।"

"वह तो खैर हैं ही आप।" शबाना ने मुस्कुराकर पति से कहा।

उसकी पीठ थपथपाकर युधिष्ठिर ने कहा : "शाबाश, क्या सच्ची बात कही है तुमने।"

"अच्छा खैर, तुम अब्बू मिया को फोन जरूर कर देना। अपनी जनानी चेंचा-मेची को मुख्तसर बनाकर बराए मेहरबानी जल्द ही घर पहुच जाना, बेचारा शौकत···"

"हा-हां, तुम अपने काम से जाओ।"

इस बार युधिष्ठिर कार ड्राइव करने लगा और जावेद, यास्मीन के पास सट-कर बैठ गया। जिस इश्किया रिश्ते के बीज उसने अपनी पिछली मुलाकातों में रोप दिए थे उनके अंकुर इस वक्त सहलाने लगा। युधिष्ठिर बोला : "किधर चलू ?"

"भई, हमारी राय है अमीनाबाद चलो, वहां मेरे एक दोस्त का शानदार होटल है। उसी के किसी शानदार कमरे में तुम्हारे नाम से दफ्तर के एकाउंट से खरीदी गई असली स्कॉच व्हिस्की पिलाऊंगा इस मलिकाए हुस्न को।"

जावेद ने यास्मीन का बदन दबाते हुए उसकी आंखों में आंखें डालीं, यास्मीन की आंखों में भी कोई एतराज़ न झलका बल्कि होंठों पर मुस्कुराहट और आंखों में लज्जा का भाव आ गया।

"आज मैं तुम्हें दुनिया की मशहूर औरत बना दूंगा मेरी जान। इंग्लैण्ड की क्रिस्टीनकीलर ने भी वह नाम न पाया होगा, जो मैं तुम्हें दूंगा।"

युधिष्ठिर मन-ही-मन मुस्कुराता हुआ कार ड्राइव करता रहा। वह जावेद के समान ऐसा शृंगारिक अभिनय कभी नहीं कर सकता था।

शानदार होटल के खूबसूरत सजे कमरे में प्रवेश करते हुए यास्मीन के कन्धे पर हाथ रखकर जावेद ने कहा : "डार्लिंग, आज तुम्हें असली स्कॉच पिलाऊंगा। उस (भद्दी गाली), हरपरसाद ने तुम्हें जब भी पिलाई होगी तो मोहन मीकिंग की ही। बाप हरामज़ादे ने लाखों कमाए मगर बेटा साला दमड़ी दांतों में दबाकर तुम्हारी जैसी हसीना का बोसा लेता है।"

"हटिए जी, मेरा-उनका कोई वास्ता नहीं है।"

"वास्ता तो है मेरी जान, मगर खैर, इस वक्त खुशी में उस मनहूस का नाम भी न लो। बेटा नन्हे !"

"जी हां, बापजान फ़र्माइए।"

"बर्खुरदार, हमने यह मान लिया कि यास्मीन तेरे बाबा की औलाद नहीं मगर उनकी एक ज़माने की माशूका की बेटी तो है ही, और आज यह मुझसे इश्क लड़ाएगी।"

"बड़े बत्तमीज हो गए हो जावेद।" युधिष्ठिर ने नाराज होकर कहा।

"खैर, वह तो बाद की बात है, इस वक्त तुम ज़रा असगर मियां के यहां चले जाओ। पहले तो कुछ अच्छे टिट्बिट्स भेजने को कहो और रात के लिए मुर्ग-मुसल्लम का आर्डर भी देना। कहना, मैंने कहा है खाना शाही होगा, खर्च जो भी आए, परवाह न करना।"

यास्मीन यह समझ रही थी कि वह उन प्रतिष्ठित पत्रकारों का दिल जीत रही है, उनमें भी खासतौर से हसन जावेद को तो उसने अपना मुर्गा बना लिया है। लेकिन बात कुछ और ही थी। युधिष्ठिर यह देखकर आश्चर्यचकित था कि जावेद

ऐसा शृंगारिक अभिनय भी कर सकता है लेकिन शबाना के लिए वह इस कुलटा में जावेद को बचाने के लिए भी मन-ही-मन सन्नद्ध हो चुका था। मित्र के प्रेमाभिनय को झटका देकर जेब से सिगरेटकेस निकालने के बहाने उसने अपना जेबी टेपरेकार्डर भी निकाल लिया। प्रेमीयुगल को सिगरेट देने के बाद टेपरेकार्डर उसने मेज पर ऐसे ही रख दिया जैसे भूल में रखा हो। रेकार्डर 'ऑन' था। यास्मीन कह रही थी : "इसमें तो कोई शक ही नहीं कि यह पाण्डेजी ही मेरे वालिद हैं। अम्मी को एक बार मैंने यह कहते भी सुना कि अल्लाह मैंने क्या गुनाह किया था जो इस काफिर के फन्दे में फंसी। यह बुड्ढा बड़ा चार सौ बीस है। मगर क्या करूं, बेसहारा हूं और यही अब मेरी देखभाल करता है।" आंचल पर दो मोटे-मोटे आंसू ढलक पड़े, फिर जो टूटी तो हिचकियां बांधकर रोने लगी।

जावेद उसके पास आया और रूमाल से उसकी आंखें पोंछी, गाल थपथपाए और कुर्सी के नीचे फर्श पर उसके साथ बैठकर उसकी बांह सहलाते हुए बोला : "मैं खूब समझता हूं, तुम पर क्या-क्या मुसीबतें आई होंगी। मैं कल तुम्हें ही सेन्टर बनाकर अपना आर्टिकिल लिखूंगा। सुनो, तुम्हें एतराज तो न होगा अगर मैं इस बदमाश और तुम्हारी वालिदा के जरिया किए गए नाजायज···?"

"वह तो थे ही। अम्मी अकेले में या मेरे सामने इनको सैकड़ों गालियां देती थीं। जयन्त साहब को शरीफ डाकू और इन्हें कमीना टिकियाचोर कहती थीं।"

दिल जल्दी-जल्दी खुलने लगा। रिपोर्टर हसन जावेद पूरा सपेरा था, सवालिया बीन बजा-बजाकर उसने यास्मीन का मन नचा लिया। रामलोचन पाण्डे उन दिनों मलीहाबाद का नायब तहसीलदार था यानी मुसम्मात अनारो का गांव उसी के इलाके में पड़ता था। आमिना बेगम ने जब अनारो का निकाह तय करवाया था तब आमिना बेगम की ड्योढ़ी के दारोगा गुलामअली तीन बीबियों का शौहर पहले ही बन चुका था। अनारो चौथी निकाही थी। बेपढ़ी-लिखी, गंवार रियाया के हाकिम बनकर दारोगाजी के नाम से मशहूर हवलदार गुलामअली को दर्रे और महुए की महकवाली औरतों की कमी न थी। काया और पद की शक्ति ही उनकी मृत्यु का कारण हुई। दारोगाजी इतने चालाक थे कि अनारो का गांव भी अपनी मिल्कियत में दर्ज करवा लिया था। तीन सौतों और बेटों ने उसे धक्के दे-देकर निकाल दिया। किसी रसूक से नायब तहसीलदार पाण्डेजी के यहां पहुंची। किस्मत ने उसे खजूर से गिराकर बबूल में फंसा दिया।

आमिना बेगम की ड्योढ़ी से निकाले जाने के बाद पाण्डे ने ही उनकी मदद की और तीनों सौतेले बेटों से अनारो की जायदाद मुकद्दमे लड़-लड़कर निकलवाई, बाद में शादी कर ली। फिर इनकम टैक्स का डर दिखलाकर बीवी अनारो के सौतेले बेटों यानी अपने पुत्रों के नाम कर दी और एक मकान अपने और अनारो के वास्ते खरीद लिया। रामलोचन के इसी चक्कर में फंसकर अनारो यास्मीन

की मां वन गई। उनके रहने और अपने चिकन का उजड़ा कारखाना फिर से आवाद करने के लिए एक और मकान किराए पर दिलवा दिया था, जो वाद में खरीदा और फिर वेचा गया। सरकारी नौकरी से अवकाश प्राप्त होने के वाद जव से पाण्डेजी ने कर्मवीरता का जामा पहन लिया है तव से नेताओं से काम निकालने के लिए वह प्रायः यास्मीन को ही भेजा करते हैं। चार मकान उसके नाम से कर देने का वहुत लाभ कर्मवीर पाण्डेजी ने स्वतन्त्र भारत में उठाया है। अभी एक वरस पहले जव जयन्त टण्डन की शताब्दी की खवरें समाचारपत्रों में छपीं और उसके वाद ही सुमन्त टण्डन घायल होकर लखनऊ आए, फिर वी० पी० वर्मा के विरुद्ध युधिष्ठिर के सनसनीखेज़ लेख प्रकाशित हुए तो कर्मवीर गांधी की नकल में कुकर्मवीर रामलोचन के दिमाग की षड्यन्त्रकारी नसें भड़क उठीं। वी० पी० वर्मा के यहां दौड़े-धूपे, अनारो का किस्सा वताया, उसकी लड़की भी करीव-करीव उसी वक्त पैदा हुई जव जयन्त शहीद हुए। यह सुनकर भैरोंप्रसाद वर्मा के मस्तिष्क का 'स्कीमी कारखाना' भी गर्मा उठा। अनारो को जयन्त की पुत्री वनाने का सारा षड्यन्त्र भी उसी समय वना था। वी० पी० वर्मा के पुत्र हरपरसाद का भी इस स्कीम में पूरा हाथ था और उसी दौरान यास्मीन भी हरपरसाद के हत्थे पड़ गई थी।

जावेद वोला : "कमीना कहीं का, कब्र में पांव पड़े हैं और साला अपनी वेगुनाह वेटी की दौलत हड़पने के लिए उसे और भी गुनाहों के दलदल में धंसा रहा है। तुम अगर मदद दो यानी तुम अगर खुद अपनी ही दुश्मन न वनी हो तो मैं तुम्हें इस पागल के चंगुल से छुड़ा सकता हूं।"

नशे में मखमूर यास्मीन जावेद के गले में अपनी दोनों वांहें डालकर रोते हुए वोली : "तुम्हारा ही सहारा है मेरी जान। मैं तो जहाज़ में एक टूटे हुए तख्ते से चिपकी हुई भयानक समुन्दर की लहरों में डोल रही हूं।"

युधिष्ठिर यह दृश्य अधिक न देख सका, उसे टोककर वोला : "यास्मीनजी आप तो जानती ही हैं, मेरा दोस्त शादीशुदा है, एक वेटे का वाप भी है। वह आपके साथ वैसे रिश्ते नहीं रख पाएगा जैसे आपके हरपरसाद के साथ थे या हैं। कम-से-कम मेरे रहते यह न हो सकेगा।"

हसन जावेद जो अभिनय करते-करते कहीं अपनी भी मानसिक कमज़ोरी के घेराव में आ गया था, एकाएक सावधान हो गया। गले से यास्मीन की वांहें हटाते हुए वह वोला : "टण्डन सच कह रहा है यास्मीन ! तुम्हारे नमकीन हुस्न के जादू ने मेरे मन को किसी हद तक लुभा जरूर लिया था मगर···। खैर, माफ करो। पहले कुछ काम की वातें कर लें, साथ ही खाना भी खाते चलें। नन्हे, घण्टी वजाओ, खाना मंगवाओ यार। तुमने मेरी एक भूख दवाकर दूसरी भड़का दी है। खैर, तो यास्मीन उर्फ सरस्वती देवी साहवा, एक वात पूछूं आपसे ?"

यास्मीन का नशा इस पहेली-भरे तमाशे में काफी उलझ गया था। रूखे और थके स्वर में बोली : "पूछिए।"

"मैं चाहता हूं, आप एक इज्जतदार और आज़ाद ज़िन्दगी बिताएं। यह युधिष्ठिर अगर चाहे तो आपको हमारे अखबार में रिपोर्टर बनवा सकता है। घूम-घूमकर औरतों की मुसीबतों के किस्से लाइए, उनकी प्राब्लम्स यानी कि समस्याएं लाइए और हमारे मैगज़ीन सेक्शन की 'विमेन्सवर्ल्ड' में आर्टिकिल्स लिखिए। आपका नाम भी होगा और उस बदमाश पाण्डे, वर्मा और हरपरसाद से छुटकारा भी पा जाएंगी।"

युधिष्ठिर बोला : "इस काम में मैं ज़रूर आपकी मदद कर सकता हूं।"

"मैं यह पसन्द करूंगी। लेकिन मेरा वह काफिर वालिद मुझे आसानी से···"

"अमां, उसकी फिक्र छोड़ो। तुम मज़े से यहां शहर में रहो, फिलहाल तुम्हारे लिए एक घर का इन्तज़ाम मैं कर दूंगा।"

युधिष्ठिर बोला : "मगर इससे पहले इन्हें अपनी माता के ओरिजनल कागजात उस रामलोचनवे से निकालने होंगे। जब तक वो इनके हाथ में नहीं होंगे तब तक उस रावणलोचन से इनको छुटकारा नहीं मिलेगा।"

"बात तो तुम ठीक कहते हो यार, वह कैसे निकाले जाएं? बुड्ढा बड़ा घाघ है।"

"अमां उसकी फिक्र न करो, अदालतों के रेकार्ड रूम सलामत, शमिना बेगम की वसीयत की नकल मलीहाबाद की अदालत से मिल जाएगी फिर वह अपने उस रावणलोचनवाले वालिद से—क्या खूब नाम रखा है उसका से छुटकारा मिल जाएगा। और रिश्वत लेने-देने के चक्कर में जो खर्च आएगा, हम लोग झेल लेंगे।"

"तो क्या यह आज यहीं रहेंगी?"

"मेरी राय यही है। मैं असगर मियां से अभी बात किए लेता हूं बल्कि इनको अगर···। ऐ सुनो, टण्डन तुम नीचे से ज़रा असगर मियां को बुला लाओ।" टण्डन के कमरे से बाहर जाने पर जावेद ने धीरे से कहा - "सुनो यास्मीन, अखबारी नौकरी के साथ अगर तुम्हें आज़ाद ज़िन्दगी ही बितानी हो तो इस असगर से दोस्ती कर लो। इस शानदार होटल का मालिक है, पांच-छः लाख रुपये भी हैं। बीवी मर चुकी, औलाद कोई है नहीं। भतीजे साले इसकी रकम चाटे जा रहे हैं। अगर तुम कहो तो इससे दोस्ती करवाए देता हूं तुम्हारी, बाद में तुम चाहो तो शादी भी कर लेना इसी से।"

"मैं तो ईमान से तुम पर मरमिटी हू जानेमन। हाथ बढ़ाके फिर खींचते क्यों हो?"

"वह मेरी गलती थी यास्मीन, मुझे माफ करो। एक इन्सानी कमज़ोरी की गिरफ्त में आ गया था। खैर, इस असगर से मिलकर भी तुम खुश होगी।"

टण्डन, असगर मियां को लेकर कमरे में आया। जावेद ने अपनी लच्छेदार बातों से असगर को यास्मीन का मेजबान बनने के लिए बाखुशी राज़ी कर लिया, बोला : "तुम इन मोहतरिमा से इनकी दास्तान सुनोगे तो अस-अस करने लगोगे। मैं इनकी वालिदा के ओरिजनल कागजात निकालने में दो-तीन दिन और लूंगा फिर इनके वास्ते किराए की और जगह तलाश कर दूंगा। यह अब हमारे अखबार में शायद जल्द ही नौकरी भी पा जाएंगी। हमारा दोस्त युधिष्ठिर टण्डन उसके लिए इन्तज़ा...

प्रसाद वर्मा पुत्र हरपरसाद का भी जिक्र किया और यह कहा कि : "उन्होंने मेरे साथ बाजारू स्त्री की तरह व्यवहार करने की कोशिश की जिसे मैं मशहूर'''होटल के मालिक जनाब असगर हुसैन साहब की मदद से ही नाकामयाब कर सकी हूं। मैं उनकी बहुत-बहुत शुक्रगुजार हूं और 'ईवनिंग स्टार' के रिपोर्टर जनाब हसन जावेद साहब की भी बेहद शुक्रगुजार हूं जिन्होंने मेरी बड़ी मदद की है।"

कुमारी यास्मीन के इस वक्तव्य तथा आवश्यक दस्तावेजों के फोटो छपने से एक नया तहलका फिर मचा। पण्डित रामलोचन पाण्डे बहुत बौखलाए। हसन जावेद के प्रति पुलिस में रिपोर्ट लिखवाई कि मेरी लड़की को जबर्दस्ती भगा ले गए हैं। बहुत-बहुत तमाशे हुए। माननीय भैरोप्रसाद वर्मा के खिलाफ़ भी सम्पादक के नाम अनेक पत्र निकले, असगरमियां के पैसे की बदौलत यास्मीन ने अपने तथाकथित पिता से मुकद्दमेबाजी भी की। रामलोचन बेहद बदनाम हुए। बी. पी. वर्मा पहले ही अपनी प्रतिष्ठा खो चुके थे, इस बार और भी कुख्यात हुए।

उन दिनों युधिष्ठिर का उपन्यास प्रति रात्रि अबाध गति से चल रहा था।

चार फरवरी सन् बाईस ईस्वी को गोरखपुर के पास चौरीचौरा में पुलिस के दमन-चक्र और जन-आक्रोश की एक ऐसी घटना हुई जिसने सारे देश को दहला दिया। अत्याचारों की अनेक कठिन आंचों में लगातार तपती जनता अपने मन्त्रदाता का सहनशीलता और अहिंसा का मन्त्र त्यागकर एक थाने पर हमला कर बैठी। थाना इस तरह जलाया गया कि उसके अन्दर मौजूद थानेदारसहित बाईस सिपाही भस्मीभूत हो गए। पहले गांधीजी ने, बाद में कांग्रेस ने भी असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया। कामोन्मत्त हाथी जैसे अपनी पूर्ण उत्तेजना के समय अपनी इच्छाएं पूरी होने से बलात् रोक दिया गया हो। आन्दोलन रोक देने से उत्पन्न निराशा बहुत से लोगों को कुण्ठित होने के बजाय आगे की लड़ाई जारी रखने की प्रेरणा देने लगी। मण्डीला का मदारी पासी उन्हीं अनाम जननायकों में से एक था। उसने मण्डीला, उन्नाव, हरदोई तथा फर्रुखाबाद के किसानों को संगठित करके एक नया आन्दोलन चला दिया। जिसका नाम था—'एका आन्दोलन।' गांव-गांव में सुपारी बंटती और न्योता दिया जाता कि सत्यनारायण की कथा में जरूर आना, हर्बे-हथियारों के साथ आना और दो-दो पैसे भी लेकर आना।

कथा के मण्डप में एक ऊंचा मंच बनाकर श्रीमद्भगवतगीता और कुरान शरीफ़ की प्रतियां रखी जातीं। हर किसान दो-दो पैसे उन धर्मग्रन्थों के आगे चढ़ाता फिर मदारी भाषण देता कि हमारी कथा सत्यनारायण भगवान की कथा है। और सत्य बात यह है कि हम सब हिन्दू-मुसलमान एक हैं। यह हमारी रोजी-रोटी की लड़ाई है। कथा में जैसे व्रत किया जाता है वैसे तुम सब लोग भी यह

कसम खाओ कि जी-जान से लड़ाई में एक रहेंगे, अपना बरत छोड़ने का पाप हरगिज़ नहीं करेंगे। मदारी के कहने से किसानों ने लगान देना बन्द कर दिया। इस पर ज़मींदारों से लड़ाई छिड़ी। लेकिन मर्ज़ बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की। मदारी के तमाशे-सा यह स्वतःस्फूर्त किसान आन्दोलन तेज़ी से ज़ोर पकड़ता चला गया। असहयोग आन्दोलन की आग ठण्डी न हो पाई। बृटिश नौकरशाही के पास बस एक ही कारगर हथियार बचा था—हिन्दू-मुस्लिम दंगे।

एक दिन जावेद आया। उसने यास्मीन कथा का नया सूत्र दिया किन्तु युधिष्ठिर तुरन्त ही झटककर बोला : "जावेद भाई, इस झगड़े से तुम मुझे दूर ही रखो। बन्ने मियां यह कांटों का ताज तुम्हीं अपने सिर पर रखो। इसके कांटे तुम्हारे लिए यश के फूलों का सेहरा बनें, इस कपटी भैंरू के साथ यह लम्पट रामलोचन खूब जुड़ा साला। इन बदमाशों ने हमारे जन-जीवन का स्तर कितना घटिया कर दिया है। एक तरफ़ पुराने क्रान्तिकारियों के वैल्यूज़ को देखता हूं, गांधी के सिद्धान्तों पर नज़र जाती है तो इन नर-पिशाचों के लिए मन में गालियां-ही-गालियां भर जाती हैं। मेरा क्रियेटिव मूड ही साफ़ हो जाता है।"

"उस मूड को न बिगाड़ मेरीजान, तू अपने नावेल को लिखे जा बच्चे। इस बार इन सालों को बकरीद का बकरा बनाकर ही अपनी प्लेट में रखूंगा। तू नावेल लिख।"

युधिष्ठिर सचमुच अपने उपन्यास के रचनात्मक तार को नहीं तोड़ना चाहता था, बोला : "परसों सण्डे है और सोमवार को बकरीद, मैं कल शाम से तुझसे या किसी से भी नहीं मिलूंगा।"

युधिष्ठिर का नया अध्याय आरम्भ हो गया···

दाहिने हाथ अच्छा-खासा मैदान, जिसमें गांव से आए हुए साग-सब्जीवाले वालियों की भीड़ के साथ सुबह के गाहकों की चेंचा-मेंची से लू के बवण्डरों से भी ज्यादह सनसनाहट-भरी हुई थी। और दाहिनी ओर गली में घुसते ही अविनाश का घर था जिसकी एक खिड़की सब्ज़ी बाज़ार की ओर ही खुलती थी। छोटा-सा कमरा, चार-पांच आदमियों के मजमे से ऐसा भरा-भरा लगता था जैसे सब्ज़ी-फरोशों का मैदान। भेद इतना ही था कि बाज़ार की तरह उस कमरे में शोर-शराबा न था। शाहजहांपुरी वसीम ने अविनाश से कहा : "कहां है बेटा तुम्हारे वो गंजू दादा जो गया सराध करके लौटे हैं।"

अविनाश हंसा, कहा : "आता ही होगा, साले को इक्के के पैसे शायद न मिल

पाए हो, पैदल आता हो।"

"तुमने अपने लेटर में देवू का नाम गंजू दादा और उसके कलकत्ते से लौटने की खबर को गया सराध से लौटना बतलाकर कहानी खूब बनाई यार।" लखीमपुर से आए हुए मोहसिन ने हंसकर कहा। ब्रह्मादीन भी हंस पड़ा।

"वसीम के लिए जनेऊ के पैसों की बात तुम्हारे क्रियेटिव माइन्ड की अनोखी सूझ है। मैं तुम्हें अपने हिस्से की दो जलेबियां इनाम के तौर पर दे दूंगा।"

गर्मी की छुट्टियों के दिन थे, अविनाश, श्रीकिशन तो लखनऊवासी ही थे, मगर मन-मिले दोस्तों में तीन बाहर थे। देवेन चटर्जी कुछ सलाह-मशविरे के लिए कलकत्ते गया था, मोहसिन और ब्रह्मादीन लखीमपुर में अपने-अपने घरों में थे और वसीम शाहजहांपुर में। देवू के कलकत्ते से लौटने पर नए समाचार मिले, नया जोश आया और अविनाश ने श्रीकिशन की सलाह से ब्रह्मादीन को पत्र लिखा: 'गंजू दादा गया सराध करके लौट आए हैं। दलाली की दौलत लुटाने के जोश में हैं, ब्रह्मभोज करेंगे, तुम्हें और तुम्हारे भाई को बुलाया है। इस बार हमने वसीम को भी ब्राह्मण बनाने का इरादा कर लिया है। उसके लिए जनेऊ तुम खरीद देना, चन्दन और धोती का प्रबन्ध मैं यहां कर लूंगा।'

वसीम ज़ोर से हंसा: "मेरे रेल-भाड़े के लिए जनेऊ खरीदने की मुशाहबत मुझे मजा दे गई यार। इस पर तुम्हें एक लतीफा सुनाए बिना नहीं रहा जाता।"

"सुनाओ भाई, जब तक शरबत और जलेबियां नहीं आतीं, तब तक तुम्हारे लतीफ़े से ही मन मीठा किया जाए।"

वसीम बोला "समझ लो कि आज से सात-आठ सौ बरस पहले का ज़माना है, तुर्कों ने हिन्दुस्तान के काफी हिस्से पर कब्ज़ा कर रखा है। एक इस्लाम कुली तुर्क सिपाही था, किसी गांव से गुज़र रहा था। वहां एक जगह बाम्हनों की पंगत लगी हुई देखी, फूली-फूली पूरियां परोसी जा रही थीं। तुर्क ने नान और चपातियां तो बहुत देखीं और खाईं भी थीं मगर ये गेंद-जैसी फूली-फूली पूरियां देखकर उसका मन डोल गया और इस ज़िद पर ठन गया कि मैं भी खाऊंगा। लोगों ने हाथ जोड़कर बहुत गिड़गिड़ाकर कहा कि हुज़ूर, यह धरम का मामला है, इस पंगत में सिर्फ बम्हन ही बैठ सकते हैं। इस्लाम कुली तन गए, बोले, मैं तो पंगत में बैठकर खाऊंगा। खैर, लोगों ने समझाया-बुझाया, कुछ रुपयों की रिश्वत दी और कहा कि आप कल आइएगा, आपको ऐसी ही पूरियां बनवाकर खिलाएंगे। मगर इस्लाम कुली तो पूरी के इश्क में मखमूर थे, बाजार गए, धोती खरीदी, माला खरीदी, जनेऊ खरीदा, माथे पर चन्दन भी लगाया और फिर आकर बोले: 'धोती बिम्बी माला बिम्बी और बिम्बी जुन्नार, इस्लाम कुली पाण्डे मनम पूरियां बियार।' इसी तरह आप लोगों ने मुझे भी रेल-भाड़े को जनेऊ बनाकर इस बरह्म भोज में शामिल कर लिया।"

ज़ोरदार हंसी के साथ ही नये झज्झड़ के ठण्डे पानी में केवड़ा बसे ओलों का शर्बत आ गया और आधा सेर जलेबियों की चंगेर भी। अभी जलेबियों पर हाथ साफ़ ही हो रहा था कि गंजा देबू चटर्जी भी आ पहुंचा। सभी एक साथ बोल उठे : "अरे आओ, आओ दादा, तुम्हारी ही याद कर रहे थे।"

देबू बोला : "तुम शाला लोग हमारा ऐब्शेन्स में जिलबी खाने लगा और बोलता है, हमको याद कर रहा था, स्काउन्ड्रल्स।"

अविनाश बोला : "अरे नहीं दादा, बस अभी-अभी आए हैं। ये बसीम बड़ा चटोरा है। देखते ही चीलझपट्टा मार दिया।"

बसीम बोला : "मैं क्यों चटोरा चाटूजी, यही होगा गंजा।"

"अबे चाटूजी नहीं, चाटुज्जे। अंग्रेज़ लोग शाला होमारा उच्चारोन भ्रष्ट करके चाटोर्जी बना दिया। एइ ब्रिटिश लोग को तो झांटा मार-मारके बाहोर निकाल देना होगा।"

ब्रह्मादीन बोला : "अमां, कोई स्कीम भी है तुम्हारे पास कि ख़ाली ढपोरशंख की तरह इक्कीस के इक्यावन नापते रहोगे।"

"वोई बतलाने के लिए तुम लोग बुलाया गया है। ए ओविनाश, ये नीचे का दरवाज़ा बन्द कराओ और ये मण्डी की तरफ की खिड़की भी बन्द करो, एण्ड बी क्वाइट। आई विल टेल यू ए मोस्ट इम्पोर्टेन्ट न्यूज़।" फिर आगे झुककर धीरे-से कहा : "जोगेश दा इज़ डियर इन यू० पी०।"

"कौन जोगेशचन्द्र चटर्जी ?"

"यस, आमार जोगोश दा। बनारस आ गया है। शोचीन दा से भी मिल्न लिया।"

"रियली।"

"इतना ही नहीं, श्री शोचीन्द्रनाथ सान्याल के साथ उनका ये बात भी पक्का हो गया कि शोचीन दा और जोगेश दा मिलकर यूनाइटेड प्रॉविन्सेज़ में भी एक ज़ोरदार रेवाल्यूशनरी पार्टी ऑर्गनाइज़ करेगा।"

"यह तो अच्छी ख़बर है। हमारे शाहजहांपुर में पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल और अशफ़ाक उल्ला खां..."

"जोगेश दा उनसे मिल लिया। उनसे मिला, राजेन्द्रो लाहिड़ी मोन्मोथनाथ गुप्तो, रोशन सिंह सोबसे मिला, ऐण्ड दे आर गोइंग टू डू ए वेरी-वेरी बिग थिंग इन अवर यू० पी०।"

कमरे में सन्नाटा छा गया, यहां तक कि जलेबियां उठाते हुए हाथ और उन्हें चबाते हुए मुंह भी जहां-के-तहां चुप होकर रह गए। देबू आगे बोला : "जोगेश दा हमसे बोला जे देबू तोमरा मित्रो मण्डली हमारा साथ देगा ?"

श्रीकिशन जोश में आ गया : "जी-जान लगाकर साथ देंगे यारो ! हम लोग

तो न जाने कब से इस बात के लिए व्याकुल हो रहे हैं कि यहां भी जगन्नियन्ता की कृपा से कुछ काम ···"

अविनाश ने टोका : "ए यार श्रीकिशन, अपनी बातों में ये जगन्नियन्ता वगैरह को न लाओ वर्ना ये वसीम भी अपने अल्लाहताला को ले आएंगे।"

"तो लाने दो, हर्ज क्या है। हम अल्लाह और ईश्वर में भेद नहीं मानते। शक्ति तो एक ही है और हम शक्ति के उपासक हैं। क्यों वसीम, मेरे लिए कोई फर्क नहीं पड़ता यार। मैं तो सिर्फ़ यह कहता हूं कि जो कौम के लिए लड़ता है, देश को आज़ाद कराना चाहता है, वही ईश्वर या अल्लाह को ईमानदारी के साथ मानता है। ये साले बृटिश लोग हमारे अल्लाह-हो-अकबर और हर-हर महादेव को लड़ा रहे हैं, दे मस्ट बी टाट ए गुड लेसन। ये अहिंसा-वहिंसा से काम नहीं चलेगा।"

"हां यार, यहां तो मैं भी तुमसे सहमत हूं। हिंसा-अहिंसा के नाम पर चौरी-चौरा में कांच खोलकर भागा।" ग़्यादीन बोला। फिर जोश में आकर दो जलेबियां एक साथ मुंह में भरकर चबाने लगा।

"ताज्जुब तो यह है दोस्तो कि उसने मोतीलाल, सी० आर० दास जैसे बड़े-बड़े इण्टलेक्चुअल्स को किस मोहिनीमन्त्र से बांध दिया था।"

"मगर वह लोग भी अब गांधी से डिसऐग्री करने लगे हैं।"

"भई, मैं तो समझता हूं कि हमारी ज़बान में इस नये मुहावरे का चलन ही यह साफ़ गवाही देता है कि मजबूरी का नाम महात्मा गांधी। अंग्रेज़ों के साथ लड़ने के लिए कोई कारगर तरीका चाहिए था इसलिए यह सत्याग्रह मूवमेन्ट चल पड़ा मगर अन्यायियों और अत्याचारियों के खिलाफ़ समाज को गुस्सा आना आवश्यक ही था। इसे हम हिंसा किसी भी तरह नहीं कह सकते, गांधी भले ही कुछ कहा करे।"

"कलेजा जला दिया यार इस गांधी के नाम ने, लाओ शर्बत लाओ, उसे ठण्डा करें।"

"गांधी की इसी बेवकूफ़ी से ही तो अंग्रेज़ों को यह मौक़ा मिल गया कि जगह-जगह हिन्दू-मुस्लिम रायट शुरू करवा दिए और देख लेना, अभी तो अपनी डिवाइड एण्ड रूल पालिसी के लिए इस तरह के और भी बड़े-बड़े रायट करवाएंगे। ये साले लाल मुंहवाले बनियों की कौम हमारा खून, हमारा जमीर तक अपने वास्ते सोना बनाकर थैलियों में बन्द कर लेंगे। मेरे हाथ में बन्दूक होती तो एक-एक साले को भूनके रख देता।"

"अमां, बन्दूकों के लिए ही तो पैसा चाहिए, वह कहां से आए? इसके लिए पैसा मांगोगे तो यह लाला-लूली कांच खोलकर भाग जाएंगे।"

"लूटो इन्हीं सालों के घर, पैसा इन्हीं का लेंगे।"

ज़ोरदार हंसी के साथ ही नये झज्झड़ के ठण्डे पानी में केवड़ा बसे ओलों का शर्बत आ गया और आधा सेर जलेबियों की चंगेर भी। अभी जलेबियों पर हाथ साफ़ ही हो रहा था कि गंजा देबू चटर्जी भी आ पहुंचा। सभी एक साथ बोल उठे: "अरे आओ, आओ दादा, तुम्हारी ही याद कर रहे थे।"

देबू बोला: "तुम शाला लोग हमारा ऐब्शेन्स में जिलबी खाने लगा और बोलता है, हमको याद कर रहा था, स्काउन्ड्रल्स।"

अविनाश बोला: "अरे नहीं दादा, बस अभी-अभी आए हैं। ये बसीम बड़ा चटोरा है। देखते ही चीलझपट्टा मार दिया।"

बसीम बोला: "मैं क्यों चटोरा चाटूजी, यही होगा गंजा।"

"अबे चाटूजी नहीं, चाटुज्जे। अंग्रेज लोग शाला होमारा उच्चारोन भ्रष्ट करके चाटोर्जी बना दिया। एइ ब्रिटिश लोग को तो झांटा मार-मारके बाहोर निकाल देना होगा।"

ब्रह्मादीन बोला: "अमां, कोई स्कीम भी है तुम्हारे पास कि खाली ढपोरशंख की तरह इक्कीस के इक्यावन नापते रहोगे।"

"वोई बतलाने के लिए तुम लोग बुलाया गया है। ए ओविनाश, ये नीचे का दरवाज़ा बन्द कराओ और ये मण्डी की तरफ की खिड़की भी बन्द करो, एण्ड बी क्वाइट। आई विल टेल यू ए मोस्ट इम्पोर्टेन्ट न्यूज।" फिर आगे झुककर धीरे-से कहा: "जोगेश दा इज़ डियर इन यू० पी०।"

"कौन जोगेशचन्द्र चटर्जी?"

"यस, आमार जोगोश दा। बनारस आ गया है। शोचीन दा से भी मिल लिया।"

"रियली।"

"इतना ही नहीं, श्री शोचीन्द्रनाथ सान्याल के साथ उनका ये बात भी पक्का हो गया कि शोचीन दा और जोगेश दा मिलकर यूनाइटेड प्रॉविन्सेज़ में भी एक जोरदार रेवाल्यूशनरी पार्टी ऑर्गनाइज़ करेगा।"

"यह तो अच्छी खबर है। हमारे शाहजहांपुर में पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल और अशफ़ाक उल्ला खां..."

"जोगेश दा उनसे मिल लिया। उनसे मिला, राजेन्द्रो लाहिड़ी मोन्मोथनाथ गुप्तो, रोशन सिंह सोबसे मिला, ऐण्ड दे आर गोइंग टू डू ए वेरी-वेरी बिग थिंग इन अवर यू० पी०।"

कमरे में सन्नाटा छा गया, यहां तक कि जलेबियां उठाते हुए हाथ और उन्हें चबाते हुए मुंह भी जहां-के-तहां चुप होकर रह गए। देबू आगे बोला: "जोगेश दा हमसे बोला जे देबू तोमरा मित्रो मण्डली हमारा साथ देगा?"

श्रीकिशन जोश में आ गया: "जी-जान लगाकर साथ देंगे यारो! हम लोग

तो न जाने कब से इस बात के लिए व्याकुल हो रहे हैं कि यहां भी जगन्नियन्ता की कृपा से कुछ काम --"

अविनाश ने टोका : "ए यार श्रीकिशन, अपनी बातों में ये जगन्नियन्ता वगैरह को न लाओ वर्ना ये वसीम भी अपने अल्लाहताला को ले आएंगे।"

"तो लाने दो, हर्ज क्या है। हम अल्लाह और ईश्वर में भेद नहीं मानते। शक्ति तो एक ही है और हम शक्ति के उपासक हैं। क्यों वसीम, मेरे लिए कोई फर्क नहीं पड़ता यार। मैं तो सिर्फ़ यह चाहता हूं कि जो कौम के लिए लड़ता है, देश को आज़ाद कराना चाहता है, वही ईश्वर या अल्लाह को ईमानदारी के साथ मानता है। ये साले बृटिश लोग हमारे अल्लाह-हो-अकबर और हर-हर महादेव को लड़ा रहे हैं, दे मस्ट बी टाट ए गुड लेसन। ये अहिंसा-वहिंसा में काम नहीं चलेगा।"

"हां यार, यहां तो मैं भी तुमसे सहमत हूं। हिंसा-अहिंसा के नाम पर चौरी-चौरा में कांच खोलकर भागा।" ग्रहादीन बोला। फिर जोश में आकर दो जलेबियां एक साथ मुंह में भरकर चबाने लगा।

"ताज्जुब तो यह है दोस्तो कि उसने मोतीलाल, सी० आर० दास जैसे बड़े-बड़े इण्टलेक्चुअल्स को किस मोहिनीमन्त्र से बांध दिया था।"

"मगर वह लोग भी अब गांधी से डिसएग्री करने लगे हैं।"

"भई, मैं तो समझता हूं कि हमारी ज़बान में इस नये मुहावरे का चलन ही यह साफ गवाही देता है कि मजबूरी का नाम महात्मा गांधी। अंग्रेज़ों के साथ लड़ने के लिए कोई कारगर तरीका चाहिए था इसलिए यह सत्याग्रह मूवमेन्ट चल पड़ा मगर अन्यायियों और अत्याचारियों के खिलाफ समाज को गुस्सा आना आवश्यक ही था। इसे हम हिंसा किसी भी तरह नहीं कह सकते, गांधी भले ही कुछ कहा करे।"

"कलेजा जला दिया यार इस गांधी के नाम ने, लाओ शर्बत लाओ, उसे ठण्डा करें।"

"गांधी की इसी बेवकूफ़ी से ही तो अंग्रेज़ों को यह मौक़ा मिल गया कि जगह-जगह हिन्दू-मुस्लिम रायट शुरू करवा दिए और देख लेना, अभी तो अपनी डिवाइड एण्ड रूल पालिसी के लिए इस तरह के और भी बड़े-बड़े रायट करवाएंगे। ये साले लाल मुंहवाले बनियों की कौम हमारा खून, हमारा ज़मीर तक अपने वास्ते सोना बनाकर थैलियों में बन्द कर लेंगे। मेरे हाथ में बन्दूक होती तो एक-एक साले को भूनके रख देता।"

"अमा, बन्दूकों के लिए ही तो पैसा चाहिए, वह कहां से आए? इसके लिए पैसा मांगोगे तो यह साला-लूली कांच खोलकर भाग जाएंगे।"

"लूटो इन्हीं सालों के घर, पैसा इन्हीं का लेंगे।"

देवू चटर्जी बोला : "पोण्डित रामप्रोशाद बिस्मिल का पार्टी यही सोचता है। इससे कम-से-कम दंगों की उत्तेजना से भारतीय प्रजा के दिल-दिमाग को मुक्त करके सही दिशा में ले जाएंगे।"

जिस देश में अंग्रेज़ों ने हिन्दू-मुस्लिम दंगे भड़का दिए थे उसी देश में युवकों का एक ऐसा दल भी क्रमशः उदय हो रहा था जो देशसेवा को ही अपना सच्चा धर्म मानता था। आस्था से यह युवक सच्चे हिन्दू और सच्चे मुसलमान थे लेकिन देश के नाम पर वह एक थे। प्रतिदिन हवन करनेवाले कट्टर आर्यसमाजी पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल और रोजे-नवाज़ के पावन्द अशफ़ाकउल्ला खां अपने-अपने धर्म की दीवारें तोड़कर एक थाली में खाना खाते थे और राष्ट्र की आज़ादी के लिए दीवाने बने डोलते थे।

उत्तर भारत में दंगों की सनसनी बहुत तेजी से फैल रही थी। घरों में लाल मिर्च का पाउडर, मुहल्ले के खण्डहरों में पड़ी हुई लखौड़ी ईंटों के ढेर, हर घर में पहुंच चुके थे ताकि दुश्मन आएं तो उनके ऊपर लाल मिर्च का घुला हुआ पाउडर पिचकारियों से छोड़ा जाय जिससे कि उनकी आंखें जल उठें। छतों से गुम्मों की मार की जाय। पैसेवाले घरों में मिट्टी का तेल भी इफरात से भर लिया गया था ताकि छतों से उसके पिचक़ारे छोड़े जाएं और छोटी-छोटी मशालों से उनके शरीर में आग लगा दी जाए। हर घर में भाले-वल्लम और ज़ंगलगी तलवारों पर फिर से सान लगवाई जा रही थी। अल्लाह-हो-अकबर और हर-हर महादेव के जयनाद आसमान में गूंज रहे थे। ईश्वर स्वयं अपने से ही लड़ रहा था। पुराने मुहल्लों में फाटक लगे हुए थे। उनके आसपास जोशीले और पहलवाननुमा जवानों की भीड़ हथियारों से लैस पहरा दे रही थी। ऊंची छतों पर बैठे भेदिये दुश्मन के आने की खबर देने को मुस्तैदी से जाग रहे थे। कलकत्ते में देवपूजा के लिए गाती जाती हुई महिलाओं के जुलूस पर आक्रमण हुआ, उनकी बड़ी बेइज्ज़ती भी हुई। दंगे के लिए जोश भड़क उठा। कलकत्ते से धुरसरहद के शहर कोहाट तक मारकाट मची हुई थी। सदियों के इतिहास की मार से हिन्दू कहलानेवाला ईश्वर कायर हो चुका था, गांवों में कहावत प्रचलित थी कि 'राम मांगे दाना अल्ला मांगे रेवड़ी' और 'अल्ला की रेवड़ी चुक जाय तो राम का दाना झपटके छीन लेंय'। एक कहावत और भी प्रचलित थी 'अल्ला ने मारी लात वो जाय परे गुजरात।'

कांग्रेसनिष्ठ तथा हिन्दूसभाई हिन्दू अपने हिन्दू सम्प्रदाय को बचाने के लिए बड़े उत्साह से संगठित हो गए। मुसलमानों में तजलीम और तन्ज़ीब संस्थाएं भी प्रबल रूप से संगठित हो चुकी थीं। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही अपनी राष्ट्रीयता को भूलकर अपने-अपने सम्प्रदायों को प्रबल करने के लिए जुट पड़े थे। सनसनी लखनऊ में भी थी। गणेशगंज और कसाईबाड़े के बीच एक दिन आपस में तलवारें तुल गई। गणेशगंज आर्यसमाजियों का गढ़ था, हिन्दू जनता का संगठन

प्रबन हुआ और कसाईबाड़े के कसाई जब खुद गायों की तरह कटने लगे तो वे ठहर न सके। प्रशंसा में लखनऊ के हिन्दुओं ने कुछ दिनों गनेशगंज का नाम बहादुरगंज रख दिया था। राजा बाज़ार के आदि की महक आग़ामीर की ड्योढ़ी में अनेक ऐशपसन्द खानदानी मुसलमानों ने अपने शानदार जीवन के खोखले मूल्य-मानों तथा अति विलासप्रियता के कारण हिन्दू महाजनों से कर्ज़ ले-लेकर अपनी बहुत-सी जायदादें खो दी थीं जिन्हें झगड़े का बहाना लेकर उबाल आने लगा। हिन्दू यहां भी संगठित सेनाओं से लैस थे। गलियों-गलियों में अंग्रेज़ घुड़सवार दौरा कर रहे थे। दूकानें सब बन्द, घरों के दरवाज़े बन्द, आवारा फिरनेवाली गायों को भी हिन्दू संगठनों ने किस-किसके अहातों में धर्म की दुहाई देकर बन्द करवा दिया था। गलियों में सिर्फ़ कुत्ते ही नज़र आ रहे थे या फिर कभी गोरे घुड़-सवारों की आनेवाली टोलियां।

अविनाश से घर पर बैठा ही न जा रहा था, श्रीकिशन मालवेवाली गली में ही रहता था। वह दोनों भी एक रोज़ पूरा दिन आपस में नहीं मिल पाए। दूसरे दिन राष्ट्रकर्मियों और समझदार मुसलमानों के सम्मिलित शान्तिपूर्ण जुलूस निकले। उनका प्रभाव भी हुआ। डेढ़ दिनों तक लगातार चलता हुआ दंगा किसी तरह शान्त हुआ। श्रीकिशन उसी दिन शाम को अविनाश के घर आया। दोनों में बातें होने लगीं "यार गांधी ने हिंसा-अहिंसा का नाम लेकर यह आन्दोलन बन्द करके मयानक आग लगवा दी है सारे देश में।"

"कुछ न पूछो दोस्त। मुझे तो लगता है कि यह गांधी भी रूसी रासपुटीन की तरह बना हुआ साधु है। इविन आल द कांग्रेस लीडर्स मोतीलाल, जवाहरलाल तक बेहद नाराज़ हैं। इन सबको जेलों में बन्द करवा-करवा के फिर आन्दोलन स्थगित कर दिया, स्काउंड्रल।"

"अमा, इसको गालियां देने के लिए तो सारी उम्र पड़ी है। पहले किसी तरह इस हिन्दू-मुस्लिम तनाव को देखते हुए कोई कारगर कदम उठाना चाहिए। श्रीकिशन बग़ैर देवू से मिले हम किसी नतीजे पर पहुंच ही न सकेंगे। हमारे सह-धर्मियों का भेद उसी से मिल सकता है, शायद लाइन ऑफ़ ऐक्शन भी हमें देवू से ही मिले।···इस वक्त तो थोड़ा सन्नाटा है, चलो, हम लोग हीवेटरोड चलें।"

"अमा, अभी बहुत टेन्शन फैला है शहर में।"

"सुनो, इस शान्ति जुलूस में किसी तरह शामिल हो जाओ। यह गनेशगंज तो शर्तिया आएगा ही। न्यू ग्रेन मार्केट से जुलूस का साथ छोड़कर हम लोग गलियों से निकल लेंगे। फिर भी यार, कुछ गुप्ती-सुप्ती वग़ैरह भी ले लें।"

"अमां, ले नहीं जा सकते, कैसे पागल हो। छड़ी-डण्डा सब छिन जाएगा। बेफ़िक्र होकर निहत्थे चलो।"

मछली मण्डी तक गलियों-गलियों चक्कर काटकर अकबरी दरवाज़े पहुंचे।

जुलूस वहीं से मुसलमानी महल्लों में जा रहा था, भीड़ में शामिल हो गए। जुलूस नखास, अहियागंज, रकावगंज, पाण्डेगंज होता हुआ दुविजयगंज की सराय के पास पहुंचा। जुलूस के नेता महल्ले के नेताओं से बातचीत करने के लिए थमे। अविनाश श्रीकिशन उन्हें छोड़कर श्रीराम अनाथालय के किनारे-किनारे बुद्ध विहार तक पहुंच गए। सड़कें सूनी थीं, एक बाहर निकल आनेवाली आवारा गाय को लाठियों से खदेड़कर हिन्दू पुलिसवाले उसे गलियों में ले गए। श्रीकिशन और अविनाश भी उन्हीं के पीछे-पीछे चले। एक सिपाही ने चिल्लाकर कहा : "ये किसकी गऊमाता निकल आई है भाई, इसको अन्दर करो।"

अविनाश भी समर्थन में बोल उठा : "हां-हां, अन्दर तो करना ही चाहिए। अभी कोई सड़क पर काट-पीट डाले तो नये सिरे से वावेला मच जाए। सिपाहियों बेचारों ने बड़ा अच्छा काम किया है।"

"तुम लोग कौन हो जी? छुटे सांड से कैसे बाहर निकल आये।" एक सिपाही घुड़का।

"अरे सिपाहीजी, क्या बतायें, हमारे दोस्त को टाइफाइड हो गया है। डॉक्टर कहते हैं इस दंगे में दो सौ रुपया फीस लेंगे तब नुस्खा लिखेंगे, लेकिन घर से बाहर नहीं जाएंगे।"

"इस कसाई ससुरे को पहले काटना चाहिए। असली कसाई तो यही हैं साले। जाओ, भाग जाओ।" एक सिपाही ने धीरे-से कहा।

दोनों सचमुच भागे और सुन्दरबाग में देबू के घर जाकर ही दम लिया। देबू ने कुण्डा खोला : "ओ-हो ओवीनाश। तुम शाला लोग कैंशे आ गया? भेंतर आओ-भेंतर आओ, जल्दी शे।"

अविनाश देबू को कलेजे से चिपकाकर उसके गाल का एक चुम्बन लेकर बोला : "ओह माई डियर गंजू दादा, साला मजनूं और फरहाद भी अपनी शीरी-लैला से मिलने के लिए इतने व्याकुल नहीं हुए होंगे जितने हम लोग तुमसे मिलने के लिए थे।"

"अरे तुम लोग क्या, मैं तो तुम्हारे लिये शाला मजनूं-फरहाद का बाप बन रहा था। आई हैव सच ए गुड न्यूज़ फ़ार यू कि तुम लोग खुशी के मारे हवा में उछल-उछल पड़ेगा।"

"अरे वाह, मेरे मिट्टी के शेर। मगर पहले एक गिलास पानी ठण्डा पिला दो।"

"ओह सॉरी, खुशी का मारे हम तो बिल्कोल भूल गया था।"

देबू जल्दी से भीतर चला गया। दो बच्चोंवाली बंगाली नौकरानी चूंकि विधवा और बेसहारा थी, इसलिए दंगे के भय से अपने घर में न रहकर इन दिनों देबू के यहां ही रह रही थी। पानी भरा लोटा और दो गिलास लेकर आई। पीछे-

पीछे दो कटोरों में रसगुल्ले लिये हुए देबू।

देखकर श्रीकिशन बोला : "वाह भाई डियर, यह जादू कैसे कर सके तुम ? आज तो दूकानें बन्द हैं।"

"अरे हमारी इस मेडसर्वेन्ट का हसबैन्ड कालिका भन्डार में रोसोगुल्ला ही बनाता था। आज ये शाला दंगे का मुनादली तोड़ने का वास्ते इस बोन (बहन) ने ढेर सारा रोसोगोल्ला बना दिया। इसको थैंक्यू बोलो।"

"अरे, बहनें तो भाइयों का खयाल रखती ही हैं। बहुत-बहुत धन्यवाद, सुखिया बहन।"

सुरबालादासी मुस्कुराती हुई भीतर चली गई और तुरन्त ही एक कटोरी में देबू के लिए भी रसगुल्ले ले आई। देबू कुछ कहने ही जा रहा था कि सुरबाला-दासी के आने-जाने में बात खिसक गई। जब वह दोबारा पानी का गिलास भी देकर चली गई तब भीतर के दरवाज़े बन्द कर कुण्डी चढ़ाते हुए लौटा और कहा : "तुमको मालूम है बेटा लोग, पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल आया था।"

अविनाश और श्रीकिशन की आँखें चमक उठीं। वे भौंचक्के-से हो गए।

"क्या बोला, धीरे-धीरे बोलो।"

"पण्डितजी हैज ऑर्गनाइज़्ड ए वेरी ग्रेट रेवोल्यूशनरी पार्टी। जोगेश दा उनका साथ है। इसमें बोला गया द रेवोल्यूशनरी पार्टी ऑफ इंडिया ऑर्गनाइज़ किया है। पण्डितजी नार्थ इण्डिया में ऑल इम्पारटेन्ट स्टेशन्स में घूम आया। जोगेश दा ने कैलकटा रंगून तक ऑर्गनाइज़ कर लिया है।"

अविनाश थाली पीछे कर बोला : "आह, सुनकर जान आई वरना हम लोग तो समझे थे कि अब इस देश में सिर्फ़ हिन्दू-मुस्लिम दंगे ही..."

देबू जोश में और पास खिसक आया और बोला : "पण्डितजी हमसे बोल गया है के पन्द्रह-बीस रोज़ में पार्टी का घोषणा पत्र छप जाएगा और उसको एक ही डेट में सारा हिन्दुस्तान का बड़ा-बड़ा नगर जो है, वितरित किया जाएगा। अरे ब्रिटिश गवर्नमेन्ट ये सारा हिन्दू-मुस्लिम पॉलिटिक्स भूल जाएगा। उसका खोपड़ा पर 'द रेवोल्यूशनरी पार्टी ऑफ इण्डिया' का भूत चढ़ बैठेगा।"

अविनाश और श्रीकिशन के चेहरे पर सन्तोष की अपूर्व आभा चमक उठी। देबू बोला : "पण्डितजी हमसे बोला के जितना पम्फलेट तुम अपने टाउन में दे सकते हो। हम बोला के आठ-दस युवक तो विश्वसनीय घर से दे सकता हूँ मगर पम्फलेट्स ऑल इण्डिया में एक पर्टिकुलर डेट को ही वितरित किया जाएगा।"

श्रीकिशन ने कहा : "ठीक है, इसी तरह से हम अंग्रेज़ों के दिल में दहशत पैदा कर सकते हैं। देबू, तुम पण्डितजी से कह दो कि हम उनकी आज्ञा का पालन करेंगे।"

दंगों का दौर एक तेज़ आँधी की तरह आम लोगों की बुद्धि में धुन भोंककर

चला गया। उस समय उन्हीं युवकों ने भारत के बिखरते जोश को अपनी कार-गुजारियों से सम्हाला। अहिंसक आन्दोलन गांधीजी के जेल जाने के बाद समाप्त-सा हो गया था। कुछ तो पुराने स्वतन्त्रता सेनानियों ने सम्हाला और बहुत कुछ सनसनी यह क्रान्तिकारी युवक दौड़ा रहे थे। यूनिवर्सिटी खुल चुकी थी, पढ़ाई शुरू हो गई थी, शाहजहांपुर का होने के कारण वसीम पण्डित रामप्रसाद और लखनऊ के मित्रों के बीच में एक महत्वपूर्ण कड़ी बन गया था। एक दिन वसीम ने कहा : "यार, पार्टी के लिए पैसा वसूल करना है, कैसे किया जाए।"

"जैसे अब तक किया जाता है। गणेशशंकर विद्यार्थी दिलवाएंगे, रामरक्ष सिंह सहगल दिलवाएंगे—बहुत से पावरफुल रिसोर्सेज हैं।"

"नहीं चलता भैया, इतना पैसा मिल नहीं पाएगा।"

ब्रह्मानन्द ने कहा : "मैंने तो पिछली बार पण्डितजी से कहा था कि हम लोगों से डकैतियां डलवाइए। हमारे किसानों का खून चूस-चूसकर गांवों के बनिए बहुत मोटे हो गए हैं?"

"तो क्या कहा पण्डितजी ने?"

वसीम बोला : "भाई, वह तो किसी हद तक राजी भी हो गए मगर अशफ़ाक भाई नहीं मानते। वह कहते हैं कि डकैती वगैरह काम शुल्फा लोगों के नहीं हैं।"

"मैंने पूरी इज्जत के साथ यह बात सुन तो ली मगर मानने के लिए तैयार नहीं। यह तो देश का काम है। हम डाकू बनने के लिए डकैती थोड़े डाल रहे हैं। ठीक वैसे ही जैसे शचीन्द्र दा, योगेश दा कहते हैं कि हम आतंकवादी बनने के लिए आतंक नहीं फैला रहे हैं। अरे तय करो तो यहीं आस-पास के दो-चार गांवों से हम लोग दस-बीस हजार तो लूट ही लाएंगे। साहूकारों की औरतें सालियां पाव-पाव भर सोने के गहने बनवाती हैं। इस बुर्जुवा क्लास को एक्सप्लाएड करो और खतम करो।"

दो-तीन दिनों में बात पक्की हो गई। लालीगंज के आगे दो बनिए भाई साहू-कारी में चांदी काट रहे थे, गांव में हरेक उनसे नफरत करता है। एक की औरत भी बदचलन है। गांव में प्राइमरी स्कूल के अध्यापक मेवालाल इन लोगों से मिल गए थे। छोटे भाई की कुलटा पत्नी जब गहनों से लदकर अपने यार के घर गई तो उसे और उसके मुस्लिम प्रेमी को दबोच लिया गया। वाह, जिस स्थिति में थे उसी स्थिति में उन्हें एकसाथ बांधकर मोहसिन ने छोटे साहूकार के घर की कुण्डी खट-खटाई : "कौन है?"

"अरे बुरी खबर लाए हैं, कल्लू मियां ने तुम्हारी बीबी के गहने लूट लिए और जहर देकर मार डाला।"

घर की कुण्डी खुली, चार नकाबपोश जवान पिस्तौलें दिखाते हुए घर में घुस गए। एक ने घर का दरवाज़ा बन्द किया। साहूकार को नग्न करके उसी की धोती

से उसके हाथ-पैर और मुंह बांधा और घर की तलाशी लेने लगे।

काम बहुत सावधानी से किया जा रहा था, फिर भी न जाने कैसे बड़े साहूकार भाई के यहां खबर पहुंच ही गई। यह लोग जितना बटोर सके थे उतना ही लेकर भागे। दूसरे रोज़ आस-पास के गांवों में इस खबर से तहलका मच गया। दो-एक छोटी-मोटी डकैतियां और भी डालीं, लगभग पांच-छः हज़ार रुपया बटोरा। फिर एक गांव के ज़मीदार की ब्याहने जाती हुई बारात पर हमला किया। दो-चार फायर इधर से हुए और उधर से भी बन्दूक की गोलियां गरजीं। अविनाश की बांह में गोली लगी। उसके हाथ से पिस्तौल गिर गई, ब्रह्मानन्द ने लपककर उसकी पिस्तौल उठाई और उसे सम्भालकर भागे। बमुश्किल तमाम अविनाश की कलाई से गोली निकाली गई। घरवालों से छुपके इलाज कराना बहुत कठिन था। अविनाश कम्बाइन्ड स्टडी का बहाना करके ब्रह्मानन्द के साथ लखीमपुर भाग गया। वहीं चुपचाप उसका इलाज भी हुआ। इन डकैतियों से पुलिसवालों के कान भी खड़े हो गए थे, ऐसा कौन-सा दल है जो अपनी लूट में लालपगड़ीवालों का हिस्सा नहीं लगाता। इससे उनमें भी सतर्कता फैली।

वसीम खबर लाया कि पण्डितजी इन छोटी-मोटी डकैतियों के खिलाफ हैं। वह कहते हैं कि लूटना है तो सरकारी खजाना लूटो। तब तक 'द रिवोल्यूशनरी पार्टी ऑफ इण्डिया' का घोषणापत्र छपकर आ गया। घोषणापत्र में मुख्य बात यही थी कि 'भारत के क्रान्तिकारी न तो आतंकवादी हैं और न अराजकतावादी। उनका उद्देश्य मातृभूमि पर अराजकता फैलाना नहीं है। अतः उन्हें किसी भी तरह से अराजकतावादी नहीं कहा जा सकता। आतंक उनका उद्देश्य नहीं है। उन्हें कभी भी आतंकवादी नहीं कहा जा सकता। यद्यपि वे इस समय आतंक का प्रयोग विरोध के अत्यन्त प्रभावशाली साधन के रूप में कर रहे हैं। क्रान्तिकारी इसे कभी नहीं भूलेंगे कि किसी भी राष्ट्र का निर्माण उन हज़ारों अज्ञात देशवासियों के बलिदान से होता है जो अपने सुख स्वार्थ, जीवन और प्रियजनों से अधिक अपने देश के हित की परवाह करते हैं।'

यह घोषणापत्र भारत से दूर रंगून नगर में भी एक दिन एकसाथ जनता में वितरित हुआ। रातोंरात घर-घर के दरवाज़े में यह पर्चा डाल दिया गया ताकि सवेरे उठते ही तहलका मच जाए। बृटिश सरकार अपनी दंगों की राजनीतिक शतरंजी चाल भूलकर एकाएक चौंक उठी। यह कौन-सी संस्था है जो सारे हिन्दुस्तान में एक दिन एकसाथ इतना सशक्त प्रचार कर सकी। कितने क्रान्तिकारी उसने संगठित कर लिए होंगे। अंग्रेज़ सरकार की पुलिस और जासूस मन्दिरों, मस्जिदों में गाय-सुअर कटवाने की बात भूलकर 'द रिवोल्यूशनरी पार्टी ऑफ इण्डिया' की सरगर्मी से टोह-पड़ताल में लगे और हिन्दुस्तान की प्रबुद्ध जनता मन-ही-मन उल्लसित हो उठी। कालीजी के बाज़ार में जगन्नाथ तम्बोली के

चबूतरे पर बैठे मुंशी इमरितलाल ने मन्नो बाबू के हाथ से पर्चा लेकर देखना चाहा। मन्नो बोले: "पर्चा मैं किसी को न दूंगा, मैटर कान्फिडेन्सियल है साला। पुलिस के हाथों पकड़ा गया तो मेरी ही फ़जीहत मच जाएगी।"

"खैर न दीजिए। मगर बात एकदम साफ़ है, यह क्रान्तिकारी आतंकवादी हैं भी और नहीं भी।"

बगलवाली चाट की दूकान पर दही-बड़ों पर मिर्चों की भुकनी छिड़कते हुए चन्दन महराज बोले: "कुछ भी कहो भाई, बड़े जीवट का काम दिखलाया है इन क्रान्तिकारियों ने। मतलब यह है कि हम लोगों पर कोई बम-बन्दूक नहीं चलाएंगे। इन ससुरे लाल मुंहवालों का ही मुंह रायता बनेगा। जय हो महात्मा गांधी की।"

"अरे भैये, आसान नहीं है लाल मुंहवालों का मुंह लाल करना। अमां, हमारे दही-बड़ों में मिर्चा जादा न कर देना, ज़रा चुटकी सम्हाल के।"

चन्दन गुरु हंसे, दही-बड़ों पर दही छिड़कते हुए कहा: "घबराओ मत लाला। हम न बम पार्टी वाले हैं न गम पार्टी वाले, फिर भी ये लेओ।" एक को दही-बड़े देते हुए दूसरे गाहक से चन्दन गुरु ने पूछा: "हां, तुमको क्या चाहिए भैया?"

उधर जगन्नाथ की दूकान पर मन्नो बाबू गली में पान की पीक थूकते हुए ललकार रहे थे, "अच्छा है जी, इस हिन्दू-मुस्लिम दंगे से छुट्टी तो मिली। कम-से-कम, ससुर जगन्नाथ की दूकान पर बैठके आज़ादी से पान तो खाय सकत हैं, नहीं तो साला कर्फ़ू-कर्फ़ू-कर्फ़ू।"

"अमां, हमारा शहर तो दो ही तीन दिन कर्फ़्यू में बन्द रहा, बाकी और बड़े-बड़े शहरों में देखो। इस बृटिश सरकार ने सैकड़ों-हज़ारों पब्लिक की गर्दनें कटवा दीं। साथ में कित्ते गाय-सुअर बिचारे नफ़रत की वेदी पर बलिदान किए गए।"

मुंशी इमरितलाल बोले: "पर तुम क्या समझते हो मन्नो बाबू, ये क्रान्ति-कारी अंग्रेज़ों से सक्सेज़फुल हो जाएंगे?"

दही-बड़े खाते हुए बाबू इकबाल नरायन बोले: "अमां, महात्मा गांधी जैसे औतारी सन्त भी इनसे हार गए। बिचारे मोतीलाल जैसे शहंशाह आदमी जेल में पड़े। जिनके लड़के जवाहरलाल प्रिंस ऑफ़ वेल्स के साथ हर इतवार को बकिंघम पैलेस में चाय पीते थे, कोई मामूली बात है महराज। क्यूइन मेरी अपने हाथ से उनके प्याले में सक्कर डालती थी, ऐसा चमत्कारी जवान जेल में पड़ा है बिचारा।"

"अमां, इन क्यूइनों की कुछ न पूछो, इकबालनरायन। यह साले पंचम जार्ज की दादी कुइन विक्टोरिया हमारे नोबुल प्राइज़ विनर पोएट, रवीन्द्रनाथ टैगोर के ग्रैण्ड फादर से इशक लड़ाती थी। इनसे कहे कि डियर प्रिंस मेरा बस चलता तो तुम्हारी इण्डिया को एक मिनट में आज़ाद कर देती, मगर क्या कहें हमारी गौरमिन्ट मानती ही नहीं। मिन्ट-मिन्ट पर गौर करती है।"

"अमा, क्या बेपर की उडा रहे हो श्यामकिशोर। अगर पुलिसवाले ने सुन लिया तो झूठी अफवाह फैलाने में तुम भी क्रान्तिकारियों के साथ पकड़ लिए जाओगे।"

"इतना आसान नहीं है मुंशी इमरितलाल। मुझे छापेखानेवाले पण्डितजी ने कुइन विक्टोरिया की साडी पहिने हुए फोटू दिखलाई थी। कहती थी कि डियर इण्डियन प्रिन्स तुम्हारे लिए मैं तख्त और ताज भी छोड़ सकती हूं, मगर क्या करूं, अपना क्रिश्चियन धरम नहीं छोड सकती।"

"अमा, धरम न हमारा है न तुम्हारा और न इन आशिक-माशूको का। सच्चा धरम तो हमारे इन क्रान्तिकारियों का है जो छाती ठोक के जार्ज पंचम की सरकार से लडने के लिए तुल गए है।"

काकोरी स्टेशन पर गाडी रोककर क्रान्तिकारियों ने सरकारी खजाना लूट लिया। रेल के हर डिब्बे में पिस्तौलधारी शाहजहांपुर से ही चुपचाप सफर कर रहे थे। काकोरी स्टेशन आते ही रेल की जंजीर खींच ली और यात्रियों से कहा कि आप लोग न घबराएं, न रेल से उतरें। हम देश को आजाद कराने के लिए सरकारी खजाना लूटेंगे। खबरदार, जो कोई डिब्बे से नीचे उतरा। वह हमारे न चाहते हुए भी हमारी गोली का निशाना बनेगा।

उस दिन रात में ही लखनऊ शहर में यह खबर सनसनी-सी फैल गई कि काकोरी में क्रान्तिकारियों ने लोहे की तिजोरी तोडकर सरकारी खजाना लूट लिया और गायब भी हो गए। घर-घर में यही चर्चे चल रहे थे, दूसरे दिन देश के सारे अखबारों में इस समाचार ने तहलका-सा मचा दिया···।

युधिष्ठिर लिखने की धुन में अपनी सिगरेट की डिबिया खोजने लगा। शकुन उसके पीछे आ खड़ी हुई। "बस, अब लिखना बन्द करो भाई। हाय, तुम्हारी आंखें कैसी गूलर-सी लाल-लाल हो गई हैं? चलो उठो, अब लिखने न दूंगी।"

"अरे डियर, अब थोड़ा-सा और लिख लेने दो।"

"नहीं-नहीं, अब न तो एक शब्द लिखने दूंगी, न एक सिगरेट पीने दूंगी, गेट अप।"

"अरे, बहुत इम्पोर्टेन्ट सीक्वेन्स है, यार!"

"मैं कुछ नहीं सुनूंगी समझे, चलो लेटो। तुम्हारे सिर में तेल मालिश करूंगी।"

कुर्सी से उठते हुए युधिष्ठिर बोला: "अफ्फो, तुम तो बृटिश गवर्नमेन्ट से भी

ज्यादह सख्त हो।"

शकुन ने स्वयं ही आगे बढ़कर पति के द्वारा लिखे हुए कागज समेटे और फाइल में बन्द करके युधिष्ठिर को पलंग पर ले गई।

छत्तीस

उन दिनों देश की युवा चेतना काफी हद तक मुखर और सक्रिय हो उठी थी। वे लोग स्वाधीनता संग्राम का अन्तिम लक्ष्य पूर्ण स्वाधीनता से कम और किसी चीज को मानने के लिए तैयार नहीं थे, लेकिन गांधी और अन्य बुजुर्ग नेता औपनिवेशिक स्वराज्य से सन्तुष्ट हो जाने को तैयार थे। 1928 के अन्त में कलकत्ता में होनेवाली कांग्रेस में समझौते का मार्ग यह निकाला गया कि बृटिश सरकार यदि 1929 के अन्त तक औपनिवेशिक स्वराज्य नहीं प्रदान कर देती तो भारत उसके विरुद्ध एक तीखा आन्दोलन फिर से आरम्भ कर देगी। युवा पीढ़ी सौदेबाजी की इस मुद्रा से सन्तुष्ट नहीं थी। आन्दोलन के उबाल को एक ठण्डा छींटा देने के लिए ही बृटिश सरकार ने साइमन कमीशन गठित किया। अंग्रेजों ने कहा कि यह कमीशन इस बात की जांच करेगा कि भारत किस हद तक आजादी पाने के योग्य हो गया है। कमीशन के सभी सदस्य अंग्रेज रखे गए थे। कांग्रेस को अंग्रेज सरकार का यह रवैया बुरा लगा, उसने यह तय किया कि हम कमीशन का बायकाट करेंगे।

कांग्रेस की इस घोषणा से सारे देश में सनसनी फैल गई। सरकार ने सूबों की धारासभाओं से भी साइमन कमीशन के स्वागतार्थ प्रस्ताव पास कराने की कोशिश की लेकिन उसमें भी एक चमत्कार हुआ। यू० पी० में एक भूतपूर्व ताल्लुकेदार मन्त्री राय राजेश्वरबली की देशनिष्ठा जाग उठी। उन्होंने बड़े साहस, लगन और राष्ट्रनिष्ठा के साथ यह निश्चय किया कि यू० पी० में यह प्रस्ताव पास नहीं होगा। उन्होंने यू० पी० की धारासभा के एक-एक सदस्य से इस बात की कनवेसिंग की कि साइमन कमीशन का प्रस्ताव पास न होना चाहिए। सरकार, लाट गवर्नर, सबकी जोरदार कोशिशें नाकाम रहीं और सारे भारत में अकेली यू० पी० की धारासभा ने ही इस प्रस्ताव को पास न होने दिया। यू० पी० सरकार इससे बेहद चिढ़ी हुई थी। जब लखनऊ में साइमन कमीशन आया तो कांग्रेस ने उसका विरोध करने के लिए एक अभूतपूर्व विशाल जुलूस निकाला। पण्डित जवाहरलाल नेहरू और पण्डित गोविन्दवल्लभ पन्त उसका नेतृत्व कर रहे थे। दूसरी पंक्ति में मनोरमा, जयन्त टण्डन तथा मोहनलाल सक्सेना आदि स्थानीय नेता थे। जुलूस

का एक छोर चारबाग स्टेशन के निकट ए० पी० सेन रोड और कान्यकुब्ज कॉलेज के आस-पास था और दूसरा छोर कौंसिल भवन के निकट। उससे पहले लखनऊ की जनता ने लगभग डेढ़-दो मील लम्बा ऐसा जोरदार प्रदर्शन कभी देखा ही न था। 'साइमन गो बैक, साइमन गो बैक' के उन्मादी नारों से शहर का आसमान लरज रहा था।

नेहरू और पन्त के नेतृत्व में जुलूस चारबाग स्टेशन की ओर नारे लगाते हुए बढ़ रहा था, पुलिस ने रोक लिया परन्तु तूफान भला रोके रुकता है? और तूफान जबकि मूर्तिमान तूफानी नेता जवाहरलाल नेहरू का नेतृत्व पा रहा हो! लाठीचार्ज का हुक्म हुआ। दनादन पुलिस की लाठियां स्टेशन की ओर बढ़ते जुलूस पर बरसने लगीं, धक्के-से अचानक जवाहरलाल झुक गए। उनके अभिन्न मित्र और सहयोगी पण्डित गोविन्दवल्लभ पन्त ने तुरन्त झुककर जवाहरलाल का शरीर ढक लिया। अधिकांश लाठियां उन्हीं पर बरसीं किन्तु जवाहरलाल भला यों मान सकते थे। बड़े जोश के साथ पन्त को सम्हालते हुए वे उठे और चिल्लाए—'साइमन गो बैक'।

पुलिस की लाठियों और घुड़सवारों के घोड़े दौड़ाने के कारण भीड़ पीछे हटी किन्तु भीड़ इतनी थी कि अन्तिम छोर पर आनेवाले लोगों को आगे की इस घटना का पता ही न चला। आगेवाली भीड़ पीछे खिसक रही थी और पीछेवाली भीड़ आगे बढ़ रही थी। छितवापुर के आस-पास दोनों भीड़ें टकराईं, कितने लोग उस भीड़ में कुचले और गिरे, इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। एक तेरहवर्षीय बालक के पैर जमीन से उठ गए थे। दाएं-बाएं, आगे-पीछे की भीड़ के धक्कों से उस बालक के पैर धरती से लगभग सात-आठ इंच ऊपर उठ गए थे, एक जूता पैर से निकल गया। दम घुट रहा था। भीड़ इस कदर हड़बड़ी और उन्मादी जोश के दौर से गुजर रही थी कि किसी को किसी का खयाल ही न था। संयोग से वह बालक धक्के खाता हुआ एक गली के मुहाने पर छिटककर गिर गया, गिरने से चोट तो आई मगर भीड़ से निकलने की राहत भी महसूस की। अब तक घुड़सवार भीड़ को पीछे ढकेलते हुए वहां तक पहुंच चुके थे। मोच खाया हुआ बालक घोड़ों की टापों से बचने के लिए गली में भागा और भी न जाने कितने लोग आस-पास की गलियों में छितरा गए। लगभग आधे-पौन घण्टे में सड़क वीरान हो गई। नेहरू और पन्त गिरफ्तार हो चुके थे, सारे शहर में मुर्दनी का-सा वातावरण छा गया। धधकते अंगारे बिखरकर बुझ गए थे मगर उनकी राख अब भी बहुत गर्म थी।

भारत के हर बड़े नगर में साइमन कमीशन का लगभग ऐसा ही स्वागत हुआ था।

अंग्रेजों ने इस पर दो और कानून बनाकर हमारे देशवासियों को चिढ़ा

दिया --एक का नाम था ट्रेड डिस्प्यूटस बिल जो मजदूरों को हड़ताल के हक से वंचित करता था और दूसरा पब्लिक सेफ्टी बिल था, जिसका मकसद था आजादी की बढ़ती हुई लहर को कुचलना। एसेम्बली में तब तक इन बिलों को पास नहीं कराया जा सका था क्योंकि उन्हें पास करने के लिए अध्यक्ष की रूलिंग की आवश्यकता थी।

आठ अप्रैल सन् उन्नीस सौ उन्तीस को एसेम्बली के स्पीकर श्री विट्ठलभाई पटेल इन दोनों बिलों पर अपनी रूलिंग देनेवाले थे, एसेम्बली का हाल खचाखच भरा हुआ था। दर्शकदीर्घा में स्वयं लार्ड साइमन तक बैठे हुए स्पीकर की रूलिंग की प्रतीक्षा कर रहे थे। पहले 'ट्रेड डिस्प्यूट्स बिल' पर बहस हुई और वह पास हो गया। सरकारी सदस्यों ने ज़ोरदार तालियां बजाईं। अब 'पब्लिक सेफ्टी बिल' पर अपनी रूलिंग देने के लिए श्री पटेल उठे। वह कुछ शब्द ही बोल पाए होंगे कि एसेम्बली की पीछेवाली खाली बेंचों पर एक ज़ोरदार धमाका हुआ। 'बम-बम' करके बहुत-से लोग घबराहट के मारे उठ खड़े हुए और अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर छिपने का प्रयास करने लगे। थोड़ी देर बाद दूसरा धमाका हुआ। इस धमाके के बाद दोनों क्रान्तिकारियों ने इन्कलाब जिन्दाबाद के नारे लगाए और इन्कलाबी इश्तहार फेंके। फिर पिस्तौल से फ़ायर किया लेकिन एक गोली चलने के बाद ही वह जाम हो गया।

यह आतंक मचानेवाले दो युवक क्रान्तिकारी दर्शकदीर्घा में खड़े बटुकेश्वर दत्त और भगतसिंह थे। उन्होंने एसेम्बली में पर्चे भी फेंके। यह पर्चे 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी' के गुलाबी रंग के लेटरपैड पर टाइप थे। शीर्षक था—'बहरों को सुनाने के लिए।'

" 'बहरों को सुनाने के लिए बहुत ऊंची आवाज़ की आवश्यकता होती है।' प्रसिद्ध फ्रांसीसी अराजकतावादी शहीद वेलियां के यह अमर शब्द हमारे काम के औचित्य के साक्षी हैं।

"पिछले दस वर्षों में बृटिश सरकार ने शासन सुधार के नाम पर इस देश का जो अपमान किया है उसकी कहानी दोहराने की आवश्यकता नहीं और न ही हिन्दुस्तानी पार्लियामेंट पुकारी जानेवाली इस सभा ने भारतीय राष्ट्र के सिर पर पत्थर फेंककर उसका जो अपमान किया है उसके उदाहरणों को याद दिलाने की आवश्यकता है। यह सर्वविदित और स्पष्ट है। आज फिर जब लोग 'साइमन कमीशन' के कुछ सुधारों के टुकड़ों की आशा में आंख फैलाए हैं और उन टुकड़ों के लोभ में आपस में झगड़ रहे हैं, विदेशी सरकार 'सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक' और 'औद्योगिक विवाद विधेयक' के रूप में अपने दमन को और भी कड़ा कर लेने का प्रयत्न कर रही है। उसके साथ ही आनेवाले अधिवेशन में समाचार पत्रों द्वारा राजद्रोह प्रचार रोकने का कानून जनता पर थोपने की धमकी दी जा रही है। सार्व-

जनिक काम करनेवाले मजदूर नेताओं की अन्धाधुन्ध गिरफ्तारी से सरकार का रवैया स्पष्ट हो जाता है।

"राष्ट्रीय दमन और अपमान की इस उत्तेजनापूर्ण परिस्थिति में अपने उत्तरदायित्व की गम्भीरता को महसूस कर 'हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातन्त्र संघ' ने अपनी सेना को यह कदम उठाने का आदेश दिया है। इस कार्य का यह प्रयोजन है कि कानून का यह अपमानजनक प्रहसन समाप्त कर दिया जाय। विदेशी शोषक और नौकरशाही जो चाहे करे परन्तु उसकी वैधानिकता की नकाब को फाड़ देना आवश्यक है।

"जनता के प्रतिनिधियों से हमारा आग्रह है कि वे इस पार्लियामेंट के पाखण्ड को छोड़कर अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्रों में लौट जाएं और जनता को विदेशी दमन और शोषण के विरुद्ध क्रान्ति के लिए तैयार करें। हम विदेशी सरकार को यह बतला देना चाहते हैं कि हम देश की जनता की ओर से 'सार्वजनिक सुरक्षा' और 'औद्योगिक विवाद' के दमनकारी कानूनों और लाला लाजपत राय की हत्या के विरोध में यह कदम उठा रहे हैं।

"हम मनुष्य के जीवन को पवित्र समझते हैं। हम ऐसे उज्ज्वल भविष्य में विश्वास रखते हैं जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण शान्ति और स्वतन्त्रता का अवसर मिल सके। हम इन्सान का खून बहाने की अपनी विवशता पर दुखी हैं। परन्तु क्रान्ति द्वारा सबको समान स्वतन्त्रता देने और मनुष्य के शोषण को समाप्त कर देने के लिए क्रान्ति में कुछ-न-कुछ रक्तपात अनिवार्य है।

"इन्कलाब जिन्दाबाद!"

काकोरी षड्यन्त्र केस हो अथवा मेरठ षड्यन्त्र केस—देश के बदलते हुए मानस में युवाओं का एक ऐसा वर्ग था जो स्वभावतः ही आज के युवा मानसों का प्रतिनिधित्व करता है। देश में एक ऐसी लहर आई थी जो जन्मजात सन्यासी के मन-जैसी हो गई थी। हमें कुछ नहीं चाहिए, केवल देश की आजादी चाहिए। इस आजादी के लिए हम सब कुछ कुर्बान कर सकते हैं। क्रान्तिकारी आन्दोलन वस्तुतः जनमानस का आन्दोलन था।

गांधी के आन्दोलन ने भी अनेक निष्काम देशव्रती-सेवाव्रती युवकों की हरी-भरी फसल सारे देश में उगाई थी और उसके प्रभाव को भी नकारा नहीं जा सकता।

सैंतीस

चौरीचौरा काण्ड के बाद स्थगित किया गया सत्याग्रह आन्दोलन का विचार महात्मा गांधी के मन में फिर नये सिरे से उत्साह भरने लगा था। पिछली बार सन् बीस में ख़िलाफ़त के साथ जुड़कर असहयोग आन्दोलन ने ऐसी हवा पकड़ ली थी कि यदि चौरीचौरा काण्ड का गहरा मानसिक आघात गांधी को न लगा होता तो उन्होंने उसे स्थगित न किया होता। गांधी इस बार उसे फिर से आरम्भ करने के लिए शुद्ध अहिंसाव्रत पर फिर ज़ोर दे रहे थे। कांग्रेस ने प्रस्ताव पास किया कि सविनय अवज्ञा आन्दोलन का कार्य करनेवाला हर देशसेवक पूरी धार्मिक भावना के साथ अहिंसाधर्मी होगा और बराबर ऐसा ही बना रहेगा।

कठिन व्रत था। बहुत-से पुराने देशभक्त जो राजनीतिक उठापटक करने के साथ-ही-साथ ईमानदार भी थे, वह गांधीजी के इस आध्यात्मिक हठ को अपने मन से स्वीकार करने में हिचक रहे थे। अपनी मित्रमण्डली में एक दिन यह प्रसंग उठ पड़ने पर कई योग्य विचारक महानुभावों ने जब यह कहा कि आन्दोलन के वक़्त कब क्या स्थिति हो जाय उसकी गारंटी हम नहीं ले सकते। दमन से हिंसा भड़कती है। जनता में कब, कहां और कैसे हिंसात्मक वृत्ति भड़क उठ सकती है इसके बारे में भला क्या कहा जा सकता है। फिर कोई चौरीचौरा हो जाएगा तो गांधीजी पानी की बाल्टी लेकर दौड़ेंगे कि आग बुझाओ--आग बुझाओ, आन्दोलन बन्द करो। फ़क़ीरों का भला क्या भरोसा।

जयन्त जो अब तक चुप थे, एकाएक सिर उठाकर बोले : "आप लोग इजाज़त दें तो मैं भी कुछ अर्ज़ करूं।" लोगों के सहमति प्रकट करने पर जयन्त ने कहा : "अगर मनुष्य ने शुरू में ही यह मान लिया होता कि वह पानी पर तैरकर नदी पार नहीं कर सकता तो आज भला तैरने की कला इतनी विकसित हो पाती? गांधी का ज़ोर काम के साथ इन्सान की रूहानी कद्रों को भी जोड़ देना है, क्या बुरा है। आइए, यों भी तैरना सीखिए। हिन्दुस्तान की पुरानी कल्चर की शान इससे दोबाला-चौबाला ही होती है।"

इस बार के सविनय अवज्ञा आन्दोलन का रूप नमक सत्याग्रह को लेकर विकसित हुआ। भारत में विलायती नमक की बिक्री बढ़ाने के लिए अंग्रेज़ों ने देशी नमक पर कर लगा दिया था। 'नोन-रोटी' का मुहावरा बोलने-बरतनेवाले देश में नमक का कितना महत्व था इसे तब के अनेक बौद्धिक समझ ही न सके, मजाक उड़ाने लगे। किन्तु जादू वह जो सिर पर चढ़कर बोले। कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने भी नमक कानून तोड़ो सत्याग्रह का प्रस्ताव पास किया। प्रदेश की कांग्रेस कमेटियों से भी कहा कि अपने-अपने प्रान्तों में नमक कानून का विरोध करो। 'पढ़े-लिखे' देशभक्त जो तब तक गांधी के इस बौड़मपन का मज़ाक उड़ाते थे, अब

गिरफ्तारियों का बन्टा बहाना समझकर स्वयं भी नमक सत्याग्रह करने लगे। इलाहाबाद में जवाहरलाल और उनके परिवार की स्त्रियों ने भी जब गैरकानूनी नमक बनाकर अपनी गिरफ्तारियां दीं तो हर शहर में यह बहार आ गई।

एक दिन मन्नो बोली : "सुनो, शहर में बड़ी-बड़ी औरतें अब तो इस काम में कूद पड़ी हैं।"

जयन्त पूरी बात सुने बिना ही बोल उठे : "तो जाओ न। धनराजवती बख्शी और मिसेज मित्रा की तरह कल से अखबारों में मिसेज मनोरमा खन्ना की भी खबर छपेगी, बल्कि जहां तुम नमक कानून तोड़ोगी वहां मैं फ़ोटोग्राफ़र भी भिजवा दूंगा ताकि लोग देखें कि नमकीन सन्नमटेरनी भी नमक कानून तोड़ती है।"

मन्नो ने हंसकर 'चलो हटो' के साथ जयन्त के कन्धे पर थपकी दी।

लखनऊ में भी नमक तोड़ो आन्दोलन अपनी चरम सीमा पर था। उसके लिए प्रतिदिन गूंगे नवाब पार्क में एक सभा आयोजित की जाती थी। सर्वप्रथम कांग्रेस के प्रचारक बनवारीलाल दुबे को पुलिस ने गिरफ्तार किया और सिटी मजिस्ट्रेट ने उन्हें एक वर्ष का कारावास दण्ड दिया। तेरह अप्रैल को लखनऊ में नमक कानून के विरोध में सभा हुई। उस दिन जयन्त टण्डन सहित लखनऊ के अनेक प्रतिष्ठित नेता—मोहनलाल सक्सेना, चन्द्र भानुगुप्त, जयदयाल अवस्थी, श्यामसुन्दर कैसर, हरिश्चन्द्र बाजपेयी एव इम्तियाज अहमद आदि गिरफ्तार हुए।

मगर नमक कानून तोड़ो तो अब घर-घर के बच्चों का खेल बन गया था। पुराने खण्डहरों की दीवारों से लोनी लगी पर्तें उखाड़कर कड़ाही में पानी डालकर उबालते हैं, जब पानी सूख जाता तो लोनी से नमक बन जाता था। बच्चों में यह नमक बनाओ खेल बहुत ही लोकप्रिय हुआ। चन्द्रभूषण नामक एक विद्यार्थी उस समय हाईस्कूल की परीक्षा देकर लौटा था। पुलिस नमक बनाने की गर्म कड़ाही उससे छीनने लगी तो उसने कड़ाही अपने सीने से लगा ली और छोड़ी नहीं। जब सीना जलने लगा तो बेहोश होकर गिर पड़ा। तब पुलिस ने कड़ाही छीन ली और उसे गिरफ्तार कर लिया।

नमक के इस चमत्कारी आन्दोलन की बढ़ती हुई सफलता देखकर बहुत से लोग गांधी को जादूगर मानने लगे किन्तु सावधानी से इतिहास देखने पर रहस्य की कानूनी जड़ पकड़ाई में आई। सन् अट्ठारह सौ छत्तीस में एक नमक कमीशन बैठा था और उसने भारत में अंग्रेजी नमक की बिक्री की खातिर नमक पर कर लगाने की सिफ़ारिश की थी। अंग्रेज हमारा ही नमक अपने देश में पिसवाकर और उसे जहाज़ों का आवश्यक भार बनाकर यहां लाने और बेचने लगे। तब तक कलकत्ते की चौरंगी सड़क बन गई थी जो, पहले हुगली से कालीघाट के मन्दिर तक नहर ही थी।

नमक क़ानून तोड़ो आन्दोलन ने सारे देश को अपने माया-जाल में लपेट लिया था। देश के बड़े-बड़े शहरों में विराट सभाएं हुईं। करांची, पूना, पेशावर, कलकत्ता, मदरास और शोलापुर की दमनकारी घटनाओं ने दिखा दिया कि इस सभ्य सरकार का एकमात्र आधार हिंसा है। पेशावर में अमानुषिक गोली काण्डों में कितने ही आदमी मारे गए। सरहदी गांधी के नेतृत्व में वीर पठानों ने अहिंसा-व्रत पालन का प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किया। गढ़वाली सैनिकों ने निहत्थे सत्याग्रहियों पर गोली चलाने से इन्कार कर दिया। मदरास में भी गोली चली। गांव में जनता को डराने के लिए घुड़सवार पुलिस जब-तब गश्तें लगाया करती थी, हर तरफ आतंक का राज था। लन्दन में पहली गोल मेज़ कान्फ्रेंस हुई, पर बेअसर सिद्ध हुई।

सभी बड़े-बड़े नेताओं के बन्दी हो जाने के बावजूद सविनय अवज्ञा आन्दोलन जारी रहा। नमक कानून तोड़ने से तो आन्दोलन की शुरूआत हुई थी, किन्तु उसके साथ ही विदेशी कपड़ों का बहिष्कार और विदेशी शराब की दूकानों पर धरनों का कार्यक्रम हर जगह इतनी ज़ोर से चालू था कि बृटिश सरकार की दमन-चक्की बहुत पीसकर भी आम जनता के हृदय से पूर्ण स्वराज्य की भावना को न पीस सकी। गांधी-इरविन में पत्र-व्यवहार हुआ, भेंटें हुईं, कार्य समिति के बन्दी सदस्य छोड़े गए, बाद में क्रान्तिकारियों के अलावा सभी सत्याग्रही छोड़ दिए गए। गांधी और वायसराय दोनों की तरफ़ से रस्साकशी होते-होते अन्त में समझौता हो गया और सरकार ने यह भी कह दिया कि भारतीय कुछ स्थानों पर नमक बना सकते हैं। बारडोली के किसानों से ज़ब्त की गई ज़मीनें भी वापस कर दी गईं और आगे किसी की ज़मीन ज़ब्त न करने का वचन भी दिया गया।

गांधी-इरविन पैक्ट तो हुआ, बड़ी-बड़ी अखबारी चर्चाएं भी रोज होती रहीं, मगर स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास प्रतिदिन अपने वर्तमान जीवन के असन्तोष में घुटता और उससे संघर्ष करता हुआ आगे बढ़ता ही रहा। सविनय अवज्ञा आन्दोलन के सत्याग्रही सिद्धान्त अगर एक ओर भारी पड़ रहे थे तो दूसरी ओर क्रान्तिकारी भावना का मानसिक दबाव भी कुछ कम नहीं था। यह सच है कि काकोरी केस में अनेक नेताओं के बन्दी तथा फांसियों पर चढ़ जाने के कारण उत्तर प्रदेश के क्रान्तिकारी संगठन को एक बड़ा भारी झटका लगा लेकिन देश में उत्साह जगाने के लिए मानो यह कालकूट-सम झटके अमृत बन गए थे। भारत की युवा पीढ़ी सक्रिय और उत्तेजित थी। उधर असहयोग आन्दोलन की रोकथाम के लिए 'गांधी-इरविन पैक्ट' हुआ। केवल क्रान्तिकारी ही नहीं, कांग्रेस के युवा पीढ़ी के विचारक और नेता भी इस समझौते से प्रसन्न नहीं थे। वह जानते थे कि यह गांधी की सहृदयता से लाभ उठाने के लिए खूबसूरत बृटिश चाल है। कांग्रेस का अगला अधिवेशन करांची में होने वाला था। सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रपति

के आसन पर आसीन होनेवाले थे और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता इस बात के लिए ज़ोर दे रहे थे कि अधिवेशन में एक प्रस्ताव पारित करके इस समझौते का सम्मान किया जाय।

एक तरफ़ कांग्रेस का यह प्रस्ताव बूढ़े-जवान दलों के बीच दनदन पैदा कर रहा था और दूसरी तरफ़ असेम्बली हाल की सूनी सीटों पर एक हल्के बम का धमाका करनेवाले भगतसिंह, सुखदेव, और राजगुरु की फांसी होने की सम्भावना पर देश-मानस उबल रहा था। जवान तो खैर अपनी जवानी के जोश में ही खुले-आम सरकार के खिलाफ़ बोल रहे थे किन्तु अच्छे-अच्छे सरकारपरस्त रायसाहबों और रायबहादुरों की भी दबी जबान यह राय होती थी कि इन लड़कों ने नालायकी तो बहुत की मगर इनकी जवानी को देखते हुए इन्हें फांसी की सज़ा न दी जाय तो अच्छा होगा। कांग्रेस की युवा पीढ़ी के विद्रोह-भरे आग्रह को किसी हद तक स्वीकार करने के लिए मजबूर होकर अहिंसा के कट्टर पुजारी महात्मा गांधी ने वाइसराय को पत्र लिखकर उन्हें फांसी न देने की प्रार्थना की थी। वाइसराय के यहां से भी तराशे हुए पत्थर की तरह दो टुकड़ों में यह उत्तर आया कि—"अभियुक्तों की फांसी हम फिलहाल स्थगित करते हैं। इस मामले पर फिर से विचार किया जाएगा।" बड़े-बड़े ही नहीं, बल्कि कुछ समय के लिए जवान भारत भी इस भुलावे में आ गया कि भारत का असन्तोष देखते हुए अंग्रेज़ सरकार शायद फांसी स्थगित कर दे।

बैरिस्टर जयन्त टण्डन की पत्नी श्रीमती मन्नो देवी बहुत बीमार हो गई थीं। जयन्त उस समय जेल में था, बन्दी जीवन बिताते हुए उन्हें लगभग एक वर्ष हो चुका था। सुमन्त पन्द्रह वर्ष का था और नवें दर्जे में पढ़ रहा था। रुग्णा मां की सेवा में उसने दिन-रात एक कर दिए। शहर के हिन्दी दैनिकों 'आनन्द' और 'वीर भारत' में श्रीमती मनोरमा टण्डन की बीमारी के हाल प्राय: रोज़ ही प्रकाशित होते थे। कानपुर के 'प्रताप' और इलाहाबाद के अंग्रेज़ी दैनिक 'लीडर' में भी उनकी बीमारी की खबरें अक्सर निकला करती थीं। सरकार ने जयन्त को इसी-लिए अचानक जेल से रिहा कर दिया। जयन्त जेल में काफ़ी दुर्बल हो गए थे किन्तु उनकी रुग्णा पत्नी के स्वास्थ्य में पति को अपने निकट पाकर धीरे-धीरे सुधार होने लगा।

मन्नोजी अस्पताल से घर ले आई गईं। जयन्त बाबू तब तक किसी राज-नैतिक कार्य में नहीं जुड़े थे और ताज़ा आए हुए मामले-मुकद्दमों के कागज़ात सम्हालने शुरू कर दिए थे। कहते थे कि कराची कांग्रेस से लौटकर फिर से धन्धे के कामों में कुछ समय देना आरम्भ कर दूंगा।

अविनाश, देवू घोष और वसीम, श्रीकिशन आदि मित्रों ने एक दिन जयन्त टण्डन साहब से मिलने का समय मांगा और यह मीटिंग खुफ़िया रहेगी, इस बात

को भी तय कर लिया। जयन्त के दफ्तर में पीछेवाले हिस्से में ही उनकी यह मीटिंग हुई थी। आदमी अलग-अलग आए और विभिन्न समयों पर आए इसलिए पुलिस की नज़र से ओझल रहे। जयन्त ने खाने-पीने, नाश्ते-सिगरेट आदि का चौकस प्रवन्ध कर दिया था। रात में सभा हुई।

"आप करांची कव जा रहे हैं टण्डन साहव ?"

"कल।"

"वहां आप गांधी-इरविन पैक्ट का समर्थन कीजिएगा ?"

जयन्त कुछ देर चुप रहे, फिर कहा : "जवाहर भाई पहले तो वहुत खिलाफ़ थे मगर लगता है कि अव वे गांधीजी की वातों में आ गए हैं। वहरहाल, ये तो आप लोग भी शायद जानते हैं कि मैं जवाहरभाई की इच्छा का विरोध नहीं कर सकता।"

"क्या आप लोग यह महसूस नहीं कर रहे हैं कि इस पैक्ट की ताईद करके हम अपने-आपको धोखा तो नहीं दे रहे हैं ?" वसीम ने सवाल किया।

जयन्त फिर रुक गया और कहा : "भई, तुम्हारे सवाल का जवाव देना मेरे लिए इस वक्त वहुत मुश्किल है। फिर भी समझता हूं कि शायद हम लोग अपने आपको धोखा नहीं दे रहे हैं।"

"यह आप कैसे कह सकता है ? वृटिश जाती का असत्य वोलने का सोभाव तो आप जानता ही है।"

"जानता हूं, लेकिन कभी-कभी झूठ को भी सच्च मानकर चलना पड़ता है, वर्ना इन्सानियत के मूलभूत सिद्धान्त से ही हमारा विश्वास उठ जाएगा।"

"वह तो हो ही रहा है टण्डन साहव। क्या वृटिश गवर्नमेन्ट भगतसिंह वगैरह की फांसी रोक देगी, मैं कहता हूं, नहीं रोकेगी।"

"मैं भी यही समझता हूं।" श्रीकिशन वोला। "इस वक्त चूंकि कांग्रेस का सेशन होनेवाला है और गवर्नमेन्ट भी जानती है कि अगर इधर से भी कोई आन्दोलन छिड़ गया, तो उनकी परेशानी वढ़ जाएगी। वाइसराय का यह कहना कि फांसी की वात पर फिर विचार किया जाएगा, साफ़ धोखा है।"

वसीम वोला : "हमको गाफिल नहीं रहना चाहिए। हमें इसी वक्त से ही तैयार हो जाना चाहिए कि अगर गवर्नमेन्ट ने ऐसा नहीं किया तो हम क्या करेंगे।"

जयन्त हंसे : "क्या आप लोग यह समझते हैं कि वृटिश गवर्नमेन्ट इतनी नादान है ? आपकी तैयारियों को भी चुटकी में मसल देने की तरकीव उन्होंने पहले से ही सोच ली होगी...और मुझे शक है..." कहते-कहते जयन्त चुप हो गए।

पांच चेहरों की नज़रें टण्डन साहव के चेहरे को टकटकी वांधकर देखने लगीं।

टण्डन साहब अपनी सिगरेट ऐश ट्रे में झाड़ रहे थे, मात्र तकिये का सहारा लेकर खामोश बैठ गए।

"आपका शक क्या है, टण्डन साहब ? हम उससे जूझने के लिए भी तैयार हो जाएं।"

"मुश्किल है दोस्तो ! मुझे शक है कि जिस तरह सन् बाईस-तेईस में इन्होंने हिन्दू-मुसलमान के भाई-भाई के नारे को उन्हीं के खून से डुबोया था उसी तरह भगतसिंह वगैरह की शहादत से पैदा हुए जोश को बिखेरकर दंगों में बहा ले जाएंगे।"

जयन्त टण्डन का अनुमान सच निकला। हिन्दू-मुस्लिम दंगे का पहला फोड़ा कानपुर की छाती पर फूटा। 'प्रताप' के सम्पादक गणेशशंकर विद्यार्थी मार्च के पहले या दूसरे हफ्ते में जेल से छूटे थे, साल-भर पहले कानपुर में ही प्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलन में अंग्रेजों के खिलाफ तीखा और सत्य से अभिन्न भाषण दिया। उस जमाने की आम धारणा यही थी कि विद्यार्थीजी अपने पत्र में भारतीयजन का पक्ष लेकर ऐसी बेलाग बात लिखते हैं कि अंग्रेज तिलमिला जाते हैं। जनता ने उन लोगों का बड़ा स्वागत किया था। भगतसिंह आदि की फांसी को रोकने के लिए विद्यार्थीजी की कलम अब कोई कसर न उठा रखेगी। सारे बाजार—सराफा, बजाजा और कानपुर के तमाम गली-मुहल्ले इन्हीं तमाम बातों की गूंज से भरे हुए थे। हर शहर की सनसनाहट कानपुर के गली-बाजारों में भी फैल रही थी। जवानों में जान की बाजी खेल जाने का उन्माद चढ़ा हुआ था। गलियों में रोज प्रभातफेरियां निकलती और गीत गाए जाते

क्या हुआ गर मर गए अपने वतन के वास्ते,
बुलबुलें कुर्बान होती हैं चमन के वास्ते,
तरस आता है तुम्हारे हाल पे ऐ हिन्दियो,
गैर के मोहताज हो अपने कफ़न के वास्ते।

सन् तीस के दशक का भारत राजनीतिक ज्वालामुखी की तरह धधक रहा था। यह सच है कि इस विद्रोह की ज्वाला को आगे बढ़ानेवालों में अहिंसाव्रती महात्मा गांधी और उनके असंख्य अनुयायियों का बड़ा हाथ था पर उसके साथ ही यह भी न भूलना चाहिए कि क्रान्तिकारी आतंकवादियों ने भी इस विद्रोह को फैलाने में ऐतिहासिक कार्य किया था।

इसीलिए भारतीय जनमानस में आमतौर से इन दोनों ही प्रकार के आन्दोलनों का समान प्रभाव पड़ा। हम स्वतन्त्रता के ऐसे उन्मादी दौर से गुजर रहे थे जहां शत्रु को पराजित करने में जो नीति काम में आए, वही लो। अंग्रेज हाकिमों, वाइसरायों के ऊपर बम मारनेवालों को जितना बड़ा देशनायक समझती थी उतनी ही बड़ी छाती खोलकर गोली खानेवाले शहीदों को भी—जनमानस में

एक ही प्रकार की श्रद्धा मिलती थी। गणेशशंकर विद्यार्थी एक तरह से इसके सच्चे प्रतीक कहे जा सकते थे। वह असहयोग आन्दोलन के अहिंसाव्रतीकर्मी होते हुए भी इन क्रान्तिकारियों की बड़ी सहायता करते थे।

गणेशजी करांची कांग्रेस में न जा सके। तभी अंग्रेज़ी ऐलान की तोप दगी : "भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु को फांसी।"

स्थिरचित्त गणेशजी भी इस खबर से अस्थिर हो उठे। कानपुर में हड़ताल की घोषणा हुई। 'प्रताप' के प्रस्ताव का नगर के हर वर्ग ने स्वागत किया। सराफा बाजार, कपड़े के व्यापारी, मज़दूर सभी अपना शोक-भरा विरोध व्यक्त करने के लिए सहमत थे।

अविनाश, जो उन दिनों अपनी बहन और भांजों को ससुराल छोड़ने के लिए कानपुर आया था, इस खबर से एकाएक थर्रा उठा, कि कुछ गुण्डों ने उन वालंटियरों पर एकाएक खूनी हमला बोल दिया जो मुसलमानों की दूकानें बन्द कराने आए थे। फिर हत्याओं का सिलसिला शुरू हुआ, दुकानों की लूटपाट मची, मन्दिर, घर जलाए गए। हर महल्ले में, हर घर में, हर दिल में यही सनसनी समाई थी कि कब उत्पाती गुण्डे हमारे घर में आग लगा दें। हर घर में यथासम्भव खौलता पानी बराबर रखा जाता था कि दुश्मन आएं तो ऊपर से फेंकेंगे। जल्दी-जल्दी में दंगा हुआ तो बहुत-से लोग मिर्चा का पाउडर नहीं पिसवा सके थे और जो ऐसा कर सके उनके यहां डेगचियों और पतीलों में घुला हुआ मिर्चौना पाउडर और होली में काम आनेवाले बड़े-बड़े पिचकारे रखे थे, आग लगानेवाले दुश्मनों की आंखों में पिचकारों से मिर्चें झोंकेंगे। रातों-रात, छतों-छतों पर 'वन्देमातरम्' के नारे और पहरा। जो घर ऐसे महल्लों में आबाद थे जिनमें हिन्दू-मुस्लिम सम्मिलित सम्प्रदाय रहते थे, उनके घरों की लूट-पाट, स्त्रियों के साथ बलात्कार और हत्याएं सभी तरह के राक्षसी कुकर्म हुए। ऐसी बस्तियों के हिन्दू-मुसलमानों को एक-दूसरे की वहशत से बचाने के लिए नगर के जाने-पहचाने लोगों की स्वयं-सेवक टोलियां निकल पड़ीं। गणेशजी ने कुछ मुस्लिम दीन-हीन परिवार बचाए, इसी तरह मुसलमान आततताइयों के चंगुल से हिन्दुओं की रक्षा की, "मेरे भाइयो, ये लड़ाई हमारे हिन्दू-मुसलमान की नहीं, यह अंग्रेज़ सरकार ने किराये के गुण्डे भेजकर लूटपाट शुरू करवाई है। हम शरीफ़ लोगों को इससे बचना चाहिए। आखिर इतना तो अब हम लोग समझने ही लगे हैं कि भगतसिंह वगैरह की फांसी का अपना बड़ा जुल्म, छिपाने के लिए हमारी कौमियत को बांट देने के लिए इन्होंने यह जाल रचा, मैं अगर गलत कहता हूं तो आप मेरा सिर कलम कर दें।"

कई मुसलमानों ने गणेशजी की बातों का समर्थन किया, कुछ जोशीलों ने 'हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई' के नारे भी लगा दिए। अपने उस दिन के काम से सन्तुष्ट होकर गणेशजी घर लौटे। लेकिन उनकी इस सफलता से रातों-रात दंगों की आग

और भड़का दी गई।

"यह अंग्रेजों की कारस्तानी है। हमें इससे टक्कर लेनी होगी।" माँ ने समझाया, पत्नी ने समझाया पर इन्सानियत के पुजारी विद्यार्थी का सेवाव्रत भला कहीं रुक सकता था। विद्यार्थी जी बोले : "मेरी चिन्ता मत करो, मैं बहुत बड़ी भीड़ लेकर भी नहीं चलना चाहता। बस दो हिन्दू और दो मुसलमान स्वयंसेवक हमारे साथ रहेंगे।"

घर से निकले। पटकापुर, बंगाली मोहाल और इटावा बाजार तक वह हिन्दू-मुसलमानों को यही समझाते आ रहे थे कि दंगा हिन्दू-मुसलमानों से नहीं, अंग्रेजों की साजिश से हो रहा है। एक तरफ़ तो हमारे भगतसिंह जैसे बहादुर नौजवानों को सच बोलने के लिए फाँसी की सजा देते हैं और दूसरी तरफ ये दंगे की कुल्हाड़ी देकर हमें अपनी ही टाँगें अपने ही हाथों से काटने का उकसावा दे दिया ताकि हम चल ही न सकें। वह हमेशा हमारे ऊपर हुकूमत करते रहें। भाइयो, अंग्रेजों के इस षड्यन्त्र से आप लोग बचिए। ये हमारी कौम को तबाह कर रहे हैं।"

गणेशशंकर विद्यार्थी की जबान पर जादू था। हिन्दू-मुसलमान दोनों ही वर्गों के लोग उनका आदर करते थे। उसके बाद गणेशजी की चार निहत्थे सिपाहियों वाली अमन सेना बिसातखाने, मछनिया बाजार और नई चौक की ओर बढ़ी। जैसे ही विद्यार्थीजी ने लोगों को समझाना शुरू किया कि अचानक एक भीड़ उन पर टूट पड़ी। चूंकि वह महल्ला मुसलमानों का था इसलिए साथ के मुसलमान स्वयं-सेवकों ने आगे बढ़कर चिल्लाकर कहा . "हां, खबरदार। यह वह हस्ती है जिसने बिना किसी तरह के भेदभाव के सैकड़ों हिन्दू-मुसलमानों की जानें बचाई हैं।"

मगर हत्या का उन्माद बहरा हो जाता है। किराये के गुण्डों को वह सच्ची जबान बन्द करनी ही थी। सुकरात को जहर पिलाया जाता है, ईसा को सूली पर चढ़ाया जाता है, सच बोलनेवाले सरमद की जान भी ले ली जाती है। सच का गला घोटनेवाले जालिमों का इतिहास राम-रावण की लड़ाई की तरह कभी खत्म नहीं होता। यह चलता रहा है, चलता रहेगा।

चालीसवर्षीय गणेशशंकर विद्यार्थी ने अपने साप्ताहिक 'प्रताप' के द्वारा जाने कितने युवकों को अपनी ही जैसी चेतना-ज्वाला से आलोकित कर दिया था। इसीलिए वह देश की स्वतन्त्रता के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर सकते थे। क्रान्तिकारियों और बढ़ते हुए कम्युनिज्म का स्वागत करनेवालों में भी विद्यार्थीजी अगुआ थे। वह नये विचारों को एकाएक अपनी अहम्मन्यता भरी फूंकों से उड़ा नहीं देना चाहते थे। कर्मवीरता में वह गांधी द्वारा दिखलाए गए मार्ग पर इतने

आगे निकल चुके थे कि उन्हें कोई शक्ति पीछे नहीं लौटा सकती थी। हिन्दू-मुस्लिम एकता का सिद्धान्त उनका राष्ट्रीय व्रत था और मानवीय दृष्टि से भी वे उसे बहुत ऊंचा स्थान देते थे। उन्होंने एक कांग्रेसजन की तरह अपने नगर-समाज में सर्वजनहिताय कार्य किया था। हिन्दू-मुसलमान, ईसाई आदि के फिरके उनके मन में भेदभाव नहीं डाल पाते थे और इसीलिए कानपुर के पूरे समाज पर उनका असर था।

अड़तीस

मन्नो टण्डन अब लगभग स्वस्थ हो चली थीं। जयन्त अपने दफ्तर जाते तो थे लेकिन कोई नया काम न लेने से वहां अधिक बैठते न थे। कचहरी का दौरा भी कभी-कभी लगा लिया करते थे और कांग्रेस दफ्तर का भी एकआध फेरा जहां तक होता था, लगा ही आते थे। जयन्त मानसिक रूप से उद्विग्न थे। मनोरमा खन्ना उन दिनों जेल में ही थीं इसलिए मन को ताज़गी देनेवाला कोई न था, अतः कुछ तो कर्तव्यवश और कुछ अपनी पत्नी के साथ थोड़ा-बहुत औपचारिकताभरा समय बिताने के लिए भी वह प्रायः 'चम्पक मैन्शन' के लाइब्रेरीवाले कक्ष में अपना समय गुज़ारा करते थे।

सुमन्त का सोलहवां जन्म-दिवस पड़ा, मन्नो की बड़ी इच्छा हुई कि बहुत दिनों से घर में कोई खुशी का उत्सव नहीं मनाया गया, इसलिए सुमन्त के जन्म-दिन पर कोई विशेष उत्सव मनाया जाना चाहिए। चार बरस पहले कौशल्याजी ने सुमन्त का यज्ञोपवीत बड़ी धूम-धाम से किया था और इसी के नौ-दस महीने बाद वह कुछ दिनों की बीमारी भोगकर पति-लोक चली गई थीं। तब से आन्दोलन की गर्मी बढ़ी, जयन्त का कामकाज बढ़ा। कभी-कभी संगठन कार्य को करते हुए वह चार-चार, छः-छः दिनों तक घर नहीं आ पाते थे। तब श्रीमती मनोरमा टण्डन के मन में इस ईर्ष्या के कण्डे सुलगते ही रहते थे कि वह निगोड़ी नामरासिन 'सौत' तो आठों पहर उनके पति के साथ रहती और वह इतने-इतने दिनों तक उनका चेहरा भी नहीं देख पातीं। मन की घुटन को क्रोध के उबाल में वह अपने बेटे के सामने ही प्रकट करती थीं कि तुम कभी अपने बाप-जैसे न होना।

श्रीमती मनोरमा खन्ना अपने पति रायबहादुर रघुनन्दनप्रसाद से अपने और जयन्त के सम्बन्धों को लेकर काफ़ी खुल चुकी थीं। अपने काम के बाद न राय-बहादुर साहब को अपनी रंगरेलियों से ही फ़ुर्सत थी और न उनकी धर्मपत्नी को जयन्त के साथ देश-कार्यों से ही अवकाश मिल पाता था। पति-पत्नी के इस

अलगाव के बावजूद और यह जानते हुए भी कि किशन उनका औरस पुत्र नहीं है, उन्होंने किशन को अपना पूरा स्नेह दिया था। वह ताल्लुकेदार स्कूल में पढ़ता था। अवध के दूसरे राजकुमारों की तरह उसके भी 'गार्डियन' शिक्षक थे। उसके खाने-पीने की देखभाल के लिए भी रायबहादुर की एक भूतपूर्व अंग्रेजप्रिया नियुक्त थी। किशन मिसेज कानिन्स को ही मम्मी कहकर पुकारता था। वह अपनी सगी मां का आदर तो करता था क्योंकि वह एक प्रसिद्ध राष्ट्रसेविका थीं। अखबारों में उनका नाम छपता। कभी-कभी हिन्दी के दैनिक पत्रों में अथवा 'चांद' जैसी सामाजिक-साहित्यिक पत्रिकाओं में उनके चित्र भी छपते थे, परन्तु इससे अधिक सगी मां से उसका घनिष्ठ नाता कभी नहीं जुड़ पाया। हां, रायबहादुर रघुनन्दन प्रसाद ने खाली समय या छुट्टियों के दिनों में किशन को अपने काम में अवश्य जोड़ रखा था जिसमें उसने अपनी रुचि भी दिखलाई।

तभी एक दिन अनहोनी घट गई। रायबहादुर रघुनन्दनप्रसाद एक रात शराब की बेहोशी में अपनी माशूको की महफिल से उठाकर पलंग पर ले जाए गए। यों तो यह कोई नई बात न थी मगर उस दिन जो वह सुलाए गए तो फिर कभी नहीं उठे।

सबेरे यह खबर लगभग आम खास में फैल गई। जयन्त गाउन पहने ही मोटर खुद ड्राइव करके रायबहादुर साहब की कोठी पर पहुंचे, तब तक दस-बारह लोग इकट्ठे हो चुके थे। जयन्त को देखते ही किशन एकाएक भावुक होकर उनसे चिपक गया। जयन्त ने उसे सान्त्वना दी और घर में काम-काज की व्यवस्था के सूत्र अपने हाथ में ले लिये। रिश्तेदारों और बिरादरीवालों को सूचित करने की व्यवस्था करवाई—गवर्नर और होम सेक्रेटरी को सूचना दी। साथ ही, कृष्णचन्द्र खन्ना की ओर से यह आग्रह भी किया कि उनकी माता श्रीमती मनोरमा खन्ना को ऐसे दुःसमय में तुरन्त जेल से मुक्त करने की कृपा की जाए।

लगभग दस बजे श्रीमती खन्ना जेल से छूटकर आ गईं। बाहरी रूप से सहचर किन्तु भीतर अभिन्न नाते से जुड़े हुए जयन्त और मन्नो ने एक-दूसरे से आंखें मिलाईं, बेटा पास ही खड़ा था, फिर उससे चिपक गई। "रोने के लिए उम्र पड़ी है मन्नो, भीतर जाओ, काम होने दो।"

सूर्यास्त से पहले ही भैंसाकुण्ड के श्मशान में रायबहादुर रघुनन्दनप्रसाद खन्ना की नश्वर देह अग्नि को समर्पित हो गई। दूसरे दिन इलाहाबाद, कानपुर, लखनऊ, बनारस आदि के दैनिक पत्रों में रायबहादुर की मृत्यु के समाचार छपे। हिन्दी दैनिक पत्रों में यह खबर प्रायः इस तरह छपी थी कि, "सुप्रसिद्ध देशसेविका तथा कांग्रेस की नेता श्रीमती मनोरमा खन्ना के पति के रूप में ही रायबहादुर उद्योगपति को अधिक प्रतिष्ठा मिली ।" अंग्रेजी पत्र भी श्रीमती मनोरमा खन्ना की कीर्ति का लाभ उनके स्वर्गीय पति को देने में बहुत कंजूस तो नहीं रहे, फिर

भी यह सत्य अधिक सफ़ाई से उजागर नहीं किया गया। कृष्णचन्द्र खन्ना के पास संवेदना प्रकट करनेवालों का तांता लगना शुरू हो गया। कुछ अंग्रेज़ अधिकारी, मित्र और महिलाएं भी वंदनार्थ पधारीं। गवर्नर आदि बड़े हाकिमों ने मातम-पुर्सी की चिट्ठियां लिखकर ही यादे-रायबहादुर की इज़्ज़त अफ़ज़ाई कर दी।

जयन्त की पत्नी को 'सौत' मन्नो के यहां उनका आना-जाना फूटी आंखों नहीं सुहाता था। आजकल तो खुलेआम सवेरे से रात तक 'रघुनन्दन लॉज' में ही रहने का बहाना मिल गया था, यह मन्नो टण्डन को और भी चिढ़ाता था। वह मन्नो खन्ना से आखिर किस बात में कम है। दोनों मन्नो अगर साथ-साथ खड़ी कर दी जाएं तो मन्नो खन्ना, मन्नो टण्डन के पैर की धोवन भी न लगे। हां, नई चाल की औरतों की तरह वह अपना पर्दा नहीं छोड़ सकीं। उन्हें यह अमाज-समाज के काम करना अच्छा नहीं लगता। इन्हें लुभाने के लिए ही वह निगोड़ी नेतानी बनी है। उसी के गम में रघुनन्दनप्रसाद मर गए। अपनी नामरासिनी के प्रति घोर ईर्ष्या रखने के कारण मन्नो टण्डन को स्व० रायबहादुर रघुनन्दन के चरित्र-दोष बुरे नहीं लगे। अरे, यह तो मर्दों का काम ही होता है। पैसेवाले हुए, बड़े आदमी हुए, वह तो रण्डी-रखैल रखेंगे ही। जो दोष स्वर्गीय रायबहादुर में होते हुए भी दोष नहीं थे, जो उनको प्रसन्न रखनेवाली स्त्रियों में होते हुए भी नहीं थे या कम-से-कम नज़रअन्दाज़ करने के काबिल थे, वही दोष एक अकेली मन्नो खन्ना और जयन्त टण्डन में भरपूर समाए हुए थे। अपने प्रति यह न्याय दर्शन लेकर चलनेवाली सौभाग्यवती मनोरमा टण्डन को जब कोई और उपाय न सूझा तो उन्होंने सुमन्त को खदेड़ना शुरू किया : "जा, तू भी आजकल वहीं रहा कर और इस बात पर नज़र रख कि वह जादूगरनी तेरे पिताजी पर कोई टोना न करने पाए।"

सुमन्त को अपनी मां की यह बातें अच्छी नहीं लगती थीं फिर भी मां के बार-बार कहने से उसे जाना ही पड़ा। मन्नो खन्ना और जयन्त टण्डन के प्रेम-सम्बन्ध की कुछ भनक तो उसे अपनी मां की बातों से मिली थी और कुछ बाहर दो-एक बार सुनी हुई ऐसी ही अफवाहों से भी। वह अपने मन के भीतर अपने पिता और एक भद्र महिला के प्रति एक तरह की कड़ुवाहट भी अनुभव करता था। खासतौर से पिता के सम्बन्ध में अपनी यही कड़ुवाहट उसे खलती भी थी। सुमन्त को अपने पिता पर बड़ा अभिमान था। वह प्रदेश के एक बहुत बड़े कांग्रेसी नेता माने जाते थे। देश के अनेक नेता उनकी बातों का मान करते थे। उसे सन् बीस-इक्कीस के आन्दोलन की गतिविधियों की याद तो कम है, किन्तु आन्दोलन को जगह-जगह प्रबल बनाने के लिए जयन्त टण्डन की संगठन-शक्ति का लोहा मानते हुए उसने बहुत लोगों से उनकी प्रशंसा सुनी थी। सुमन्त भी सन् तीस में 'वानर सेना' का सदस्य बनकर प्रभात-फेरियों और 'चुटकी भण्डार' के आन्दोलन में सक्रिय रूप से

भागीदार हुआ था। नवयुवकों की वैचारिक गोष्ठियों को संगठित करने में भी उसने बड़ा काम किया था। उस समय वह सुमन्त टण्डन नहीं, बल्कि जयन्त टण्डन के बेटे की तरह हर जगह बड़ा मान पाता था। और श्रीमती मनोरमा खन्ना का नाम भी अपने पिता के साथ उसे छपा हुआ देखने को मिलता ही रहता था। इस-लिए इन दोनों नामों के प्रति उसके आदर्शयुक्त मन में कड़ुवाहट से अधिक मिठास ही अनुभव होती थी।

'रघुनन्दन लॉज' की भव्य कोठी में प्रवेश करके उसके विशाल और भव्य ड्राइंग रूम में लगभग अपनी ही उम्र के युवक कृष्णचन्द्र खन्ना को सिर मुड़ाए हुए एक अलग कम्बल बिछी हुई चौकी पर बैठे हुए सुमन्त ने देखा। दो-चार लोग आस-पास कुर्सियों पर बैठे हुए थे। दो अनुचर किस्म के आदमी उनके कान के पास खड़े हुए कुछ सुन रहे थे। सहसा किशन ने सुमन्त को देखा, नौकर से कहा: "जाओ, इनको ले आओ, टण्डन साहब के साहबज़ादे लगते हैं।"

सुमन्त आयु में कुछ छोटा होने हुए भी बड़े आदर के साथ लाकर बिठलाया गया। "आप तो शायद जयन्ती चाचा के "

"जी हां, मैं उनका पुत्र हूं, सुमन्त।"

"आप तो खुद भी इन दिनों अपना नाम रोशन कर रहे हैं।"

"मैंने तो अम्मा से भी दो-एक बार कहा था कि आपसे मुझे ज़रूर मिलवाएं। लेकिन वह अवसर आज आपके इस बुरे समय में आया। मेरी मां मुझे ज़ोर देने लगीं कि तुम्हारे पिताजी जाएंगे तो वह किशन की माता के लिए जाएंगे, मगर तुम्हें किशन के पास जाना चाहिए।"

"नहीं, जयन्ती चाचा ने उस दिन मुझे बहुत बल दिया था। उन्होंने ही हिज़ एक्सिलेन्सी और होम सेक्रेटरी के नाम मेरी तरफ़ से चिट्ठियां लिखीं और अम्मा को तुरन्त छोड़ देने की रिक्वेस्ट की। वह न होते तो मैं अपने को बिल्कुल अंधेरे में पाता। उन्होंने ही रिश्तेदारों को, बिरादरीवालों को खबरें भिजवाईं, जगह-जगह टेलीफ़ोन किए। कल रात मुझसे अपनी एस्टेट के सम्बन्ध में ऐसे सवालात किए कि मेरी आंखें खुल गईं। आप क्या उनसे मिलेंगे?"

"मैं तो आप ही से मिलने के लिए आया था और वह भी अपनी माताजी की आज्ञानुसार। लेकिन मैं समझता हूं कि पिताजी और चाचीजी से भी मिल लेना ज़रूरी होगा।"

"रामचरन, सुमन्त साहब को अम्मा के कमरे में ले जाओ!"

बगल का कमरा शोक संवेदनायियों से भरा हुआ था। "आओ सुमन्त!" जयन्त बी एम० ऑफ़ अल्ला ने उनके एम० ऑफ़ लक के बेटे को पुकारा। नौकर को इशारा किया, एक कुर्सी भी उनके पास ही आकर लग गई। "तू क्यों आया रे?"

"माताजी ने कहा कि तेरे पिताजी के वहां रहते हुए भी तेरा जाना फ़र्ज़ है।

मैं अभी चलने-फिरने काबिल नहीं हुई हूं। तू मेरी तरफ़ से मेरी नामरासिन बहन को दुख करा आ।"

एम० ऑफ अल्ला ने पास ही, किन्तु फिर भी कुछ दूर बैठे हुए बैरिस्टर जयन्त टण्डन को कनखियों से देखा, फिर सुमन्त के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा : "मेरी मन्नो बहन बड़ी लायक है और क्यों न हो। हमारी कुशलो नानी जैसी सास के साथ उन्होंने रहने, सीखने का मौका पाया। मैं अभागिन यह भाग न पा सकी।"

अपनी माता की तरफ़ से झूठी बात कहकर भी मन्नो चाची की यह बात सुनकर सुमन्त को सुख मिला। बैरिस्टर टण्डन संवेदनार्थियों की ओर मुंह करके बोलने लगे : "हमारे रघो बाबू ऐसे समझदार थे कि जब इन्होंने यानी हमारी इन मनोरमा खन्ना ने मेरी बातों के प्रभाव में आकर देशसेवा करने का हठ ठाना तो मुझसे बोले कि जयन्त बाबू राजहठ बालहठ, त्रियाहठ मशहूर है। यह औरत न मानेगी। मैं तो आबरूदारी और रुपया कमाने के लोभ में अंग्रेजों की ठकुरसुहाती करता रहा, मगर दिल से देशभक्त हूं। मेरी वाइफ़ को आप देशसेवा के कारज में लगा दीजिए। तो जाहिरा तौर पर रायबहादुर और अंग्रेजपरस्त वग़ैरह-वग़ैरह होते हुए भी रघो बाबू कितने देशभक्त थे, यह या तो अब तक मैं जानता था या आज से आप सब लोग भी जानने लगे। और इनका (मन्नो की तरफ़ हाथ बढ़ाकर) त्याग, बलिदान सब एक नजर से मैं स्वर्गीय रघो बाबू का पुण्य ही मानता हूं।"

संवेदनार्थियों में वाह-वाह हो उठी। किशन ने नौकर से कहलाया : "सुमन्त भैये, जाने से पहले एक बार मुझसे मिल जरूर लें।"

"अरे, अभी जाएगा कैसे। खाना-वाना खाके जाएगा। किशन को बहुत टाइम मिल जाएगा।"

संवेदनार्थी उठकर जाने लगे। सूनी कुर्सियों का कमरा मकान-मालकिन की बातों से भरने लगा। उन्होंने सुमन्त से पूछा : "तू अब किस दर्जे में आया ?"

"यह छुट्टियां खतम हों तो अबकी हाईस्कूल की कक्षा में बैठूंगा।"

"कितने लड़के अब हमारे हाईस्कूल परीक्षा में बैठने लगे होंगे ?"

"पिछले साल साढ़े-आठ हजार थे···" जयन्त टण्डन बीच में बोले थे।

"इस बार दस हजार एपियर हुए थे, पिताजी।"

"हां, अब धीरे-धीरे एजूकेशन बढ़ रही है। तुम जानती हो मन्नो, हमारे ग्रैण्ड फादर जो थे—रायसाहब बंसीधर, वह कलकत्ते से अंग्रेज मिशनरियों के कहने से यहां मिडिल तक का स्कूल खोलने के लिए आए थे।"

"हां, हमारी घरेलू औरतें तो अब भी घरों में ढोलक पर यह गीत गाती हैं—सैयां हमारे मिडिल पास अंग्रेजी बिगुल बजाते हैं। हः हः हः।"

सुमन्त उस दिन जितनी देर स्वर्गीय रायबहादुर की कोठी पर रहा उतनी देर मन्नो चाची का अपार स्नेहवर्षण होता ही रहा। भोजन के समय किशन सूतक के कारण अलग बिठलाया गया था किन्तु उसके आग्रह से सुमन्त उससे कुछ अलग हटकर भी पास ही बैठा। किशन बोला : "सुमन्त भाई को देखने के लिए मैं कितना व्याकुल था···"

"अरे ये तो भैये जाने कितनी बार मुझसे कह चुका था कि अम्मा सुमन्त भैये को देखने की बड़ी इच्छा है, उन्हें मुझसे मिला दो, पर सच पूछो किसनू, ये तुमरे चाचा का कसूर हैगा, मेरा नहीं। मैंने भी इनसे कित्ती बार कहा।"

जयन्त, जो आज बरसों बाद पटरे पर बैठकर खाना खा रहे थे, मन्नो की बात चुपचाप सुनते रहे। मन्नो जयन्त की चौकी के ही सामने बैठी उन्हें और बच्चों को खाना खिला रही थी, कहने लगी : "ये तुमरे चाचा बैरिस्टर साहब हैं ना इनको कोई दोस थोड़ी लगाय सकता हैगा। मैंने सैंकड़न बार कहा होगा कि दोनों भाइयों को कभी-कभी मिलाय दिया करो, पर ये तो 'हूं-हां' करके हमेशा टाल देते थे। ये कहो कि आज हमरी बहन ने जोर देके सुमन्तू को यहां भेजा है। दोनों लड़के साथ खाय रहे हैं, कैसा अच्छा लग रहा है मुझे। अरे इनका तो नाता ही ऐसा है कि दूध-चीनी की तरह इन्हें··· "

"मन्नो, अपने ड्राइवर को कहला दो कि मुझे मेरे आफिस में छोड़ आए।"

मन्नो खन्ना बनावटी क्रोध के तेवर चढ़ाकर बोली : "जैसे हमरे ही कहने से ड्राइवर जाएगा ना? कभी-कभी ऐसी बेतुकी करते हैंगे आप कि हमरा जिव कुढ़ जाता हैगा।"

"अम्मा सही कहती हैं चाचा, पापा के बाद अब इस घर में आप ही का हुक्म चलेगा, आप ही हम सबके बड़े हैं।"

"हां-हां बेटे, बड़ा तो हूं लेकिन मालकिन तो तुम्हारी अम्मा ही हैं। तुम्हीं बताओ बेटे, मैंने क्या गलत कहा, अरे कोठी इनकी है, मोटरकार इनकी है, ड्राइवर इनका है। तुम्हारी अम्मा तो जब से लीडर हो गई हैं, इनके मिजाज ही नहीं मिलते।"

मन्नो खन्ना के चेहरे से बनावटी क्रोध की कसावट न उतरी। जयन्त उनके इस मान का आनन्द लेते हुए भोजन करते रहे। कनखियों से एक तेज नजर अपने औरस और अवैध पुत्रों पर डाली। फिर प्रेयसी को देखा, और किशनू से बोले : "किशनू बेटे, अब तुम बड़े हो गए हो और तुम्हारे ऊपर अब बहुत बड़ी-बड़ी जिम्मेदारियां भी आ गई हैं। यह बतलाओ कि तुम अपनी मदर के कहने पर चलोगे या अपने लेटफादर के ट्रेडीशन को बरकरार रखोगे?"

किशनू कुछ रुककर बोला : "चाचा, पापा के वक्त से ही मैं अपना मन साफ़ कर चुका हूं। पापा जमींदार थे, बिज़नेसमैन थे, इस बात में तो मैं सेण्ट-परसेण्ट

उन्हीं के पक्ष में हूं। लेकिन जहां तक ये अंग्रेजों की ठकुरसुहाती है और उनकी दूसरी रईसी कमजोरियां थीं, उनके मैं सख्त खिलाफ़ हूं।"

"और अपनी मदर की किन बातों को तुम लाइक या डिसलाइक करते हो?"

"मुझे अपनी मदर पर अभिमान है, लेकिन मैं उनकी या आपकी तरह देशसेवा के काम में पूरी तरह से नहीं जा सकता, इस बात के लिए मुझे माफ़ कीजिएगा चाचा। लेकिन मैं पैसे की हैसियत में विलीव करता हूं। क्यों सुमन्त भैये, आपका क्या खयाल है?"

किशन के पूछने पर सुमन्त एकाएक अचकचा उठा, फिर सम्हलकर बोला: "मुझे बहुत ज्यादह पैसा कमाने की चाह नहीं और यह भी स्पष्ट है कि मैं अपने पिताजी के चरित्र से बहुत अधिक प्रभावित हूं। मुझे लगता है कि अपने देश के लिए प्राणोत्सर्ग करनेवाले युवकों की आज बहुत जरूरत है। चाची ने पिताजी के आदर्शों को अपनाया, यह मुझे बहुत अच्छा लगता है।"

"लेकिन बेटे, जिन्दगी की गाड़ी चलाने के लिए तुम्हें कोई जरियाएमाश तो देखना ही पड़ेगा। सिर्फ बाप-दादों की कमाई पर देश-सेवा का व्रत लेने से भी काम नहीं चल सकता।"

"पण्डित जवाहरलालजी कौन-सा काम कर रहे हैं, पिताजी? वह अपने पिता की कमाई पर ही देश सेवाव्रती बने हैं।"

"वट डोन्ट फारगेट कि उन्होंने खुद भी अपनी प्रैक्टिस शुरू की थी।"

"बहुत थोड़े दिन पिताजी, बाद में वह इलाहाबाद म्यूनिस्पिल्टी के चेयरमैन हो गए और फिर पालिटिक्स में ही जमे रहे।"

"तो इसे ही कौन-सी कमी हैगी। बाप-दादा बहुत कमाकर रख गए हैं। और फिर इसका भाई किशनू कमाएगा।"

सुमन्त ने बात का कोई उत्तर न दिया, पर इस बात का कीड़ा जो दिल-दिमाग में घुसा तो 'रघुनन्दन लॉज' से निकलने के बाद भी वह काटता ही रहा। पिताजी ने साफ़ नहीं कहा फिर भी शायद वह यही चाहते हैं कि मैं उनकी तरह ही अपने पैरों पर खड़ा होऊं। देश-सेवा भले ही करूं पर देश-सेवा के नाम पर किसी व्यक्ति पर आर्थिक रूप से आश्रित न हो जाऊं। पिताजी खुद भी इसी नीति पर चले, मेरे बाबा और पड़बाबा की सम्पत्ति होते हुए भी उन्होंने स्वयं काफी कमाया है और अब भी वह नए मुकद्दमे हाथ में लेना चाहते हैं। लेकिन क्या वह अब जीविकार्थ काम कर सकेंगे? पुराने देशसेवियों से सुमन्त ने सुना है कि गांधी-इरविन पैक्ट टिकाऊ नहीं होगा। आन्दोलन फिर चलेगा। होनेवाली राउण्ड-टेबुल कान्फ्रेन्स से कोई भी नतीजा नहीं निकलेगा। और आन्दोलन के दिनों में पिताजी क्या पूरी तरह से अपनी वकालत के काम में मन लगा सकेंगे? सुमन्त के मन-दर-मन को यह बात विश्वसनीय नहीं लगी। मन्नो चाची का उनके व्यक्तित्व

पर अब ऐसा प्रभाव जम गया है कि जिधर वह जाएंगी, उधर ही पिताजी भी बाध्य होकर चलेंगे। क्या स्त्री-पुरुष के प्रेम का प्रभाव ऐसा होता है। पिताजी क्या चाची से सचमुच इतना गहरा प्रेमभाव रखते हैं? यह स्त्री-पुरुष का प्रेम हो कैसे जाता है? माताजी जब भी पिताजी के सम्बन्ध में ऐसी बातें कहती हैं तब-तब सुमन्त को कुछ ऐसा ही आभास हुआ है कि पिताजी केवल वासना के भूखे रहे हैं, प्रेम के नहीं···कुछ समझ में नहीं आता है सुमन्त को कि उसके पिता का चरित्र सच्चा है या झूठा? क्या वह मन्नो चाची के प्रति भी इसी दृष्टि से आकर्षण रखते हैं? कुछ समझ में नहीं आता। सुमन्त ने स्त्री-पुरुष के प्रेम के सम्बन्ध में कुछ सोचने-समझने लायक होश जब से पाया है तब से चाची के अलावा किसी अन्य स्त्री से पिताजी के प्रेम-व्यवहार के सम्बन्ध में उसने कोई भी उलटी या सीधी बात नहीं सुनी। बल्कि किसी हद तक वह यह कह सकता है कि अपनी जन्मदायिनी मां को छोड़कर किसी अन्य व्यक्ति से उसने अपने पिता और श्रीमती खन्ना के प्रेम-सम्बन्धों के विषय में भी कोई बुरी बात नहीं सुनी।

जयन्त तात्कालिक रूप से चल रही राजनीतिक हलचलों के भंवरजाल में न फंसे। स्वर्गीय रायबहादुर रघुनन्दनप्रसाद के समय से चले आ रहे कुछ मुकद्दमों के दर्द सिर से किशन को बचाने के लिए उन्हें सक्रिय राजनीति से कुछ समय निकालना ही पड़ा। एक जमींदार से बड़ा मुकद्दमा चल रहा था, विपक्ष के बैरिस्टर भी योग्य और नामी थे। किशन ने अपनी अम्मा के सामने ही कहा : "चाचा, यह केस तो आप ही को करना पड़ेगा। मैं चाहता हूं कि कम-से-कम हाईस्कूल तो कर ही डालूं।"

मन्नो बोली : "मैं भी चाहती हूं भैये, कि इता तो तुम पढ़ ही डालो। अब तुमरे पापा की जगह यही हैं।"

जयन्त ने एक बार मन्नो की ओर सख्त नजरों से देखा, परन्तु उसकी प्रतिक्रिया दूसरी तरह हुई, मन्नो शान्त किन्तु दृढ़ स्वर में बोल उठी : "समय रहते लड़कों को मां-बाप की भूलों का पता लग ही जाना चाहिए।" कहकर उठी, कमरे का दरवाजा बन्द किया, फिर लौटकर जयन्त और किशनू के बीच खड़ी हो गई। जयन्त की ओर न देखते हुए किशनू से कहा : "तुम्हारे पापा भले चले गए हों पर असली बाप ये बैठे हैं।'

"क्या बकती हो मन्नो?"

"अपने बेटे से झूठ कब तक निभाऊंगी? तुम्हारे पापा यह जानते थे किशनू कि मेरी-उनकी कभी नहीं बनी, इन्हीं से मुझे नयी राह, नया ज्ञान और नया सम्बन्ध मिला।"

युवक कृष्णचन्द्र एकटक मानो पत्थर की मूर्ति बना मां की ओर देख रहा था, फिर उसने सिर झुका लिया। जयन्त और मन्नो की निगाहें मिलीं। मन्नो बोली :

"मैंने कोई पाप नहीं किया है। लड़का अब जवान है, बराबर का हुआ···"
जयन्त बैठे-बैठे ही अंग्रेज़ी में बोले : "तुम्हें सत्य का ज्ञान हो गया, चलो, अच्छा भया। लेकिन इस दुनियावी सच्चाई को भी न भूलना कि लोग तुम्हें रग्घो बाबू का बेटा मानते हैं। इसको बरकरार रखना तुम्हारा फर्ज़ है। तुम लाखों के मालिक हो किशनू और मैं चाहता हूं कि तुम्हारी इस हैसियत में कोई फर्क न आए।"

"मैं भी यही चाहता हूं जयन्ती चा···"

"हां, चाचा ही कहो। खैर, अब इस बात को यहीं पर अपने-अपने मनों में दफना दो तो अच्छा है। मैं हरगिज़ नहीं चाहता कि यह बात कोई लम्बा तूल खींचे और आगे मुझे फिर कभी सुनाई दे, समझ गए किशनू बेटे!"

"मैं आपसे एग्री करता हूं, लेकिन मैं एक बार अपने पिता के पैर भी छूना चाहता हूं।"

पैरों पर झुकते हुए किशनू को जयन्त ने छाती से कस लिया, कुछ देर तक यह स्थिति बनी रही, फिर उसका गाल चूमते हुए बोले : "तुम्हारी अम्मा इस गलती के बावजूद पवित्र हैं और दिल की बहुत अच्छी हैं। तुम्हारे पापा से इनका दिल क्यों न मिल सका इस बात को दोहराने की ज़रूरत नहीं, तुम खुद जानते हो। अपनी अम्मा के पैर छुओ बेटे, ऐण्ड हैव नो काम्प्लेक्स इन योर हार्ट एण्ड माइण्ड। एक व्यावहारिक आदमी की तरह इस समस्या को समझना और मंजूर करना। ज़्यादह से ज़्यादह इसका सबक यही लेना कि अपनी होनेवाली पत्नी को रग्घो बाबू की तरह कभी रईस का खिलौना मत समझना।"

रामजन्म भूमि और बाबरी मस्जिद को लेकर फिर से विवाद तीव्र हो गया था। दोनों पक्ष के नेता यह कह रहे थे कि हम अपने निश्चय पर कायम हैं कि मन्दिर बनेगा, मस्जिद नहीं रहेगी या फिर मस्जिद बरकरार रहेगी और मन्दिर कभी नहीं बनेगा। दोनों ही समाजों के नेता इस बात का एलान कर रहे थे कि अगर सरकार इस पर हाईकोर्ट में मुकद्दमा चलाकर भी कोई फैसला कराती है तो हम उसे नहीं मानेंगे। लखनऊ में चौपटियों से लेकर अब्दुलअजीज़ रोड, भोलानाथ कुंआ, झंवाई टोला आदि मुसलमानी बस्तियों में बड़ी उत्तेजना फैली थी। यह प्रस्ताव किया जा रहा था कि मुसलमान हिन्दुओं की इस ज़्यादती के खिलाफ एक बहुत बड़ा प्रदर्शन करेंगे। सड़कों पर केसरिया और काले दोनों ही रंगों की झण्डियां खूब लगाई गई थीं। इलाहाबाद में दंगा हो चुका था, अब यहां के मुसलमानों में भड़काया जा रहा था।

'ईवनिंग स्टार' के सम्पादकीय विभाग में इसी बात की चर्चा हो रही थी।

विनोद पाण्डे बोला : "अरे, यह झंवाई टोले और चौपटियों की खबरें लेने कौन गया है ?"

"टण्डन ही गए होंगे और कौन जाएगा भला। टण्डन गए हों या जावेद जाएं। सुना है कि संघियों की केसरिया झण्डियों से आठ गुना ज्यादह काली झण्डिया मुसलमानों ने लगाई हैं। यों फैलाया जा रहा है मुस्लिम कम्युनलिज्म।"

शफ़ीकुर्रहमान तप गया, बोला : "मुस्लिम कम्युनलिज्म को क्यों कोसते हो पाण्डे, सच पूछो तो पी० ए० सी० की वर्दी में हिन्दू कम्यूनलिस्टों को शह दी जा रही है। यही इलाहाबाद में हुआ और अब यहां भी होगा, देख लेना।"

उसी समय टेलीफ़ोन पर सूचना मिली कि एक मुसलमान ने अपने मकान की छत से पी० ए० सी० पर गोलियां दागना शुरू कर दिया है, बड़ी हड़कम्प मची है।

"सुन लिया न आपने, ज्यादती पी० ए० सी० ही कर रही है और बेचारे गरीब मुसलमान बदनाम किए जा रहे हैं।" जोश के साथ शफ़ीक बोला।

जगदीश अरोड़ा ने अपनी बीड़ी सुलगाते हुए मुस्कुराकर कहा : "भई, इस बात की तस्दीक कर ली है तुमने कि वह मुसलमान पी० ए० सी० का था और वह किसी तरह ऊपर चढ़कर पी० ए० सी० वालों पर ही गोली दागने लगा।"

शफ़ीक चिढ़ गया, झुंझलाकर कहा : "मैं आप लोगों से बात नहीं करना चाहता। मगर यह भी साफ कह देना चाहता हूं कि इधर शहर में अच्छे-अच्छे सिक्यूलर कहलानेवाले हिन्दूज भी कम्यूनलिस्ट हो गए हैं।"

जगदीश बिगड़ गया, बोला : "आप पूरे हिन्दू समाज को कम्यूनलिस्ट बना रहे हैं, इसे क्या आपका इन्साफ कहा जाएगा, शफ़ीक साहब ?"

पाण्डेजी भी उबल पड़े, कागजों पर रखा पेपरवेट उठाकर एक बार फिर उसे ज़ोर से पटका और बोले : "जनाब शफ़ीकुर्रहमान साहब, माफ कीजिएगा, मैं भी साफ-साफ कहूंगा कि सच पूछा जाय तो सिक्यूलर शब्द ही मुसलमानों की डिक्शनरी में नहीं है। और आप हिन्दुओं को कम्यूनल बतलाते हैं। ये दंगे-फसाद का माहौल जब से जन्मभूमि और मस्जिद का झगड़ा बढ़ा है तब से मैं कह सकता हूं, सेन्ट-परसेण्ट मुस्लिम कम्यूनल नेताओं ने फैलाया है। पढ़े-लिखे दोमुंही बातें करते हैं। बनते हैं सेक्यूलर, पर हैं सबके सब कम्यूनल-कम्यूनल-कम्यूनल।"

शिवदीन मशीन से कागज लेकर पाण्डे की मेज़ पर आए थे और यह बातें सुन रहे थे। विनोद पाण्डे खुले 'भाजपाई' हैं। उनके छोटे भाई तो संघ के सक्रिय सदस्य भी कहे जाते हैं। जगदीश अरोड़ा 'कांगाई' के समर्थक कुछ-कुछ 'माकपाई' विचारधारा के जनवादी हैं। झों-झों बढ़ते देखकर शफ़ीक तो चुप हो गया, किन्तु 'भाजपाई' और 'माकपाई' अपनी तलवारें भाजते ही रहे। बहस जातियों पर उतर आई, जगदीश बहस के कनकउए को नीचे उतारते हुए भुनभुनाया : "ये

ब्राह्मण साले अपने आपको अल्लामियां का खास बेटा समझते हैं। जूते की दूकान खोलेंगे, धोबी, पंसारी जाने कितने-कितने काम करते हैं ये लोग और कहते हैं कि हम ब्राह्मण हैं।"

पाण्डे बोला : "मैं तुम्हारी बात से सहमत हूं। वर्णाश्रमों का विभाजन अब नई औद्योगिक दृष्टि से, एकदम नए सिरे से होना चाहिए। मगर सवाल फिर वहीं-के-वहीं आता है कि हमारे हिन्दू मानस को तो समयानुसार बदलते हुए अब एक सदी या उससे अधिक समय हो गया, लेकिन हमारे दोस्त शफ़ीकुर्रहमान साहब आलीजनाब का समाज अब भी अपने कठमुल्लों के हांके हंकता है·· देखो-देखो, बुरा न मानना शफ़ीक। हमारे-तुम्हारे दिल एकदम साफ़ हैं मगर एक बार ठण्डे दिमाग से मेरी बातों पर भी ध्यान देना। हिन्दू रामजन्मभूमि पर कम्यूनलिस्ट नहीं हुआ है। वह साईकलॉजिकली अपने कुचले हुए स्वाभिमान को फिर से जिलाना चाहता है, उसे स्वस्थ करना चाहता है। मुसलमान अगर रामजन्मभूमि हमें लौटा देंगे तो विश्वास मानो कि हिन्दू सदियों का वैर भूलकर मुस्लिम समाज को अपने गले लगा लेगा। एक नया एन्कलाब आएगा एन्कलाब।"

इतनी देर में चूने-तम्बाकू को हथेली पर रगड़कर चुटकी भर पाण्डेजी की ओर बढ़ाकर शिवदीन ने 'जयसियाराम' कहा और बाकी मसाला अपने निचले होंठ में जमाकर चलते हुए बोला : "आप लोगन की इत्ती मगजखोरी से हमारे मन में ये बात आई पाण्डेजी कि एक बार किरान्ति जरूर आवै का चही। ई पुरनिया ढंग से रामजी का नवा न्याव सोचा नहीं जाय सकत है।"

दफ़्तर में साथ आते हुए टण्डन और जावेद से शिवदीन ने यह बात कही, साथ में यह दोहराने से भी न चूका कि पढ़े-लिखे लोग पुराने ढंग से सोचते हैं, रामजी का नवा न्याव नहीं समझते।

"हां यार, हम दोनों साथ ही तुम्हारे रामजी का न्याव देखने के लिए झंवाई टोले से चौपटियों तक होकर आ रहे हैं। अच्छा, अब दो कॉफ़ियां ले आओ। जावेद, तू मेरे केबिन में चल, आज की रिपोर्ट फटाफट टाइप कर डाल, मैं ये निगेटिव फोटो डिपार्टमेन्ट में देकर आता हूं।"

"ठीक है, मगर तेरी कॉफ़ी ठण्डी हो जायगी, यार।"

"अरे, उस मगजखोर को पिला देना। तुम्हारी रिपोर्ट कम्प्लीट होते ही हम लोग यहां से चल देंगे।"

सीढ़ियों की ओर बढ़ते हुए जावेद ने पलटकर कहा : "कहां?"

"बाबूजी और मां तो आज सुबह अयोध्या गए।"

"अरे, अभी उन्हें कुछ दिन और रोक लेना था।"

"माने नहीं, मैं क्या करूं। उन्होंने कहा, मुझे अयोध्या से ज़्यादह फ़ैज़ाबाद की चिन्ता है। मैं नहीं चाहता कि यह जबर्दस्ती बाहर से लाई जानेवाली बीमारी

का असर हमारे इलाके में हो।"

"खैर, इस पर फिर बातें होंगी। तुम जल्दी से जाकर ये निगेटिव दे आओ, मैं तब तक जितनी रिपोर्ट टाइप कर सका, कर रखूंगा, बाकी तुम टाइप कर लेना। हम दोनों के नाम से यह रिपोर्ट चली जायगी।"

उन्तालीस

अबकी पिताजी और मां कई महीनों तक लगातार इस घर में रहे थे इसलिए आज उनके अयोध्या चले जाने से घर में बड़ा सन्नाटा महसूस हो रहा था, युधिष्ठिर ने जावेद के साथ घर में प्रवेश करते ही यह बात महसूस की तभी जावेद भी सहसा यही उद्गार प्रकट कर उठा, फिर पूछा: "कहां बैठेंगे, नीचे या ऊपर, तेरे ड्राइंग रूम में?"

"अमां, नीचे ही बैठेंगे, न मां न पिताजी।"

"शक्को कहां है यार, अंशू भी नहीं दिखाई देता।"

अंशू का रखरखाव करनेवाली आया ने कमरे में प्रवेश किया। "क्यों आया, ये तुम्हारी मालकिन साहब कहां हैं? उन्हें खबर करो कि हम लोग आए हैं।"

"वो तो सरकार अंशू बाबा को लेकर मोटर पर अमीनाबाद गई हैं।"

"मोटर क्या अयोध्याजी से लौट आई?"

"वो तो हुजूर एक-डेढ़ बजे ही आ गई थी. मालकिन तो अभी-अभी गई हैं, आपके आने के कोई घण्टा भर पहले।"

"अच्छा, खैर, तुम्हीं रसोईदारिन से कह दो "

"वो भी सरकार माजी के साथ अजुध्याजी गई। मुझे हुकुम करें सरकार, चाय बनाऊं कि कॉफी?"

"कॉफी बनाओ और देखो, बड़े थर्मस में गर्मागर्म पानी भी ले आओ, हम लोग पीने के मूड में हैं। (जावेद की ओर देखकर) आज बेटा 'रम' ही है और वो भी अपने पैसों की।"

"अमा, अपने पैसे की 'रम' कहीं से मांगी गई 'शीवाज रीगल' से ज्यादह नशा देती है।"

ऊपर के कमरे से जावेद के पढ़ने के लिए अपने लिखे हुए परिच्छेद लिए, युधिष्ठिर नीचे आया और जावेद से कहा - "तुम खुद पढ़ोगे या मैं खुद सुनाऊं?"

"मैं खुद पढ़ लूंगा। तुम्हें कोई काम है?"

"हां, एक बार सूने घर का राउण्डअप लेना चाहता हूं। कॉफी के साथ भी

कुछ नाश्ता मंगवाऊं जावेद ?"

"हां यार, भूख तो महसूस हो रही है। तुम्हारी आया अगर आमलेट बनाना जानती हो तो···"

"वो सब बना लेती है। पहले इनकी प्रिंसिपल के घर में काम करती थी एक दिन प्रिंसिपल साहब के शौहर ने कुछ छेड़-छाड़ की तो उसने उनकी प्रिंसिपल से जाकर शिकायत की और कहा, मैं अब यहां काम नहीं करूंगी। प्रिंसिपल ने ही इन्हें शकुन के हवाले कर दिया, अंशू तब शायद महीने-भर का रहा होगा। कहा ये लड़के का काम भी अच्छा कर लेगी, बड़ी शरीफ औरत है और मेरे हस्बैण्ड की कुटिल दृष्टि से भी बच जाएगी। अब तो तीन बरस हो गए उसे हमारे यहां। शी इज ए वेरी गुड लेडी।"

आया को आदेश देकर युधिष्ठिर पिताजी की पूजावाली कोठरी में गया। पिताजी के श्रीराम की चौकी सूनी पड़ी थी, उनका सिंहासन अयोध्या चला गया था। छोटी-सी अलमारी में करीने से रखी जानेवाली दार्शनिक, धार्मिक पुस्तकें भी चली गई थीं। पिताजी का शयनकक्ष भी बिस्तर व सामानविहीन सूना था, युधिष्ठिर को बहुत अखरा। पिछले कई महीने से पिताजी और मां बराबर यहां रहे। उनका अकस्मात् अयोध्या चला जाना युधिष्ठिर को चौराहे पर छूट जाने-वाले बच्चे की तरह अनाथ महसूस कराने लगा। लौटकर एक बार पत्र-पेटी में नजर डाली, पिताजी के नाम फैजाबाद से नियमितरूप से आनेवाली पत्रिका 'दैनिक जनमोर्चा' का एक अंक था। फैजाबाद में दंगे की सम्भावना पर एक विस्तृत लेख था, वह उसे लिये हुए ड्राइंगरूम में आया। "लो, ताज़ा फैज़ाबादी खबर यह है कि वहां दंगा होनेवाला है।"

"अमां, होने दो। हिन्दुस्तान की आबादी बहुत बढ़ गई है। कुछ रामजी और बाबर बादशाह के नाम पर कम हो जायगी। अच्छा है।"

"अमां, तुम तो खासे सिनिक हो गए हो जावेद। तुम जानते हो कि दंगे करवाते हैं ये साले पालीटीशियन और तबाह होते हैं गरीब-गुरबे।"

आया आमलेट की प्लेटें, सॉस, कच्ची स्लाइसें, नमक-मिर्चदानी हर चीज करीने से रख गई, फिर कॉफ़ीपाट और प्यालों की ट्रे लाई। आमलेट की प्लेट अपनी ओर सरकाते हुए जावेद ने कहा : "तुम्हारे बाबाजान ने गणेशशंकर विद्यार्थी की डेथ पर हिन्दू-मुस्लिम प्रॉब्लम पर कुछ रिमार्क्स अपनी डायरी में लिखे थे। तुमने उनका इस्तेमाल नहीं किया टण्डन ?"

"हां, उस बलिदान की करुणा से हटकर वैचारिक क्षेत्र में आना तब मुझे कुछ अच्छा नहीं लगा था और बात भी कुछ समझ में नहीं आई।"

"उसमें ऐसी बात ही क्या है जो समझ में नहीं आए। तुम्हारे बाबाजान ने 'इब्नेबतूता' की किताब पढ़ी थी। जो मुसलमान सेन्ट्रल एशिया से, ईरान वगैरह

से यहां आते थे उनको यहां के मुसलमान बादशाह अजीज कहते थे। उनको बड़ी-बड़ी जागीरें देते थे। इन विदेशी जागीरदारों को हमारे लोगों से कोई खास दिलचस्पी तो थी नहीं, रियाया का सब कुछ उनकी ऐशोइशरत का सामान था। वे तन से यहां रहते हुए भी मन से तुर्की, ईराक, ईरान वगैरह में ही रहते थे।

युधिष्ठिर बोला : "तुमने सही एनालिसिस की। अब मेरा भी ध्यान इस बात पर गया है। जाहिर है कि यह सल्तनत के अजीज हिन्दुस्तानी प्रजा के अजीज बिल्कुल नहीं बने। वे यहा के लोगों को हिकारत की नजर से देखते थे। इनमें एक खुसरो उठा—पिता तुर्क, मा व्रज की सुनारिन। किस जोश और विद्रोह के साथ में उसने अपने हमजोली तुर्क अमीरों की विदेशी तारीफें सुनकर हिन्दुस्तान की हर चीज़ की महिमा बखानी है। उसने अपनी मातृभूमि की महिमा के आगे अपने पितृ-देश की महिमा बखाननेवाले तुर्क, ईरानी, उज्बेकिस्तानी आदि के गुणगानों को फीका बना दिया है। मैं खुसरो को प्यार करता हू।"

आमलेट खाते हुए जावेद बोला : "हां, खुसरो, रहीम खानखाना वगैरह कुछ बड़े लोग हुए हैं जिन्होंने इस देश को अपना देश माना वर्ना आमतौर पर विजेता मुसलमानों ने अपने गुलाम हिन्दुस्तानियों को अपने से नीचा ही माना। तुमको एक असलियत की बात बताता हूं टण्डन, हमारे जो अशराफ मुस्लिम खानदान के लोग हैं वह तुम्हारे बड़े-से-बड़े ब्राह्मण को अपने से हकीर मानते है।"

"मैं जानता हूं। एक बार पिताजी ने भी मुझसे कहा था, बल्कि उन्होंने सर सैयद अहमद की ..."

"माफ करना दोस्त, यह ताज़ातौर से अलगाव के कांटे हमारे बुजुर्गवार सर सैयदअहमद ने ही बोए थे। उनके अलीगढ मूवमेंट की सारी बुनियाद हिन्दू और मुसलमान को एक ही कौम मानने पर नहीं, बल्कि अलगाव पर थी। वे उन्हीं मुसलमानों के तरफदार थे जो गुजरे जमाने में जागीरदार, मनसबदार वगैरह, वगैरह रहे थे और अंग्रेज़ी हुकूमत में अपना पुराना रौब-दाब खो बैठे थे। सैयद साहब इन्हीं अशराफ मुसलमानों के लीडर थे।"

"तुम्हारे अशराफ शब्द से मुझे उन्नीस सौ एक के सेन्सस की एक बात याद आई। एक बार पिताजी ने हो बाबा की बातों के सिलसिले में मुझे बतलाया था। उस सेन्सस में मुसलमानों के तीन वर्ग किए हैं—(1) अशराफ, (2) अजलाफ, (3) रियाजिल ■। ऐसा ही कोई शब्द था। अशराफ तो शरीफ का बहुवचन हुआ और अजलाफ यानी नीचे तबके के लोग और तीसरे नम्बर के मुसलमान जो कंगलों की श्रेणी में आते थे।"

जावेद तीखा होकर बोला . "तेरे यहा तो चार-चार वर्ण हैं। समाज के एक बड़े भाग को शूद्र की श्रेणी में रख दिया गया है। सूप बोले तो बोले, चलनी क्या बोले जिसमें बहत्तर छेद।"

युधिष्ठिर भी सहमत स्वर में बोला : "मैं तुम्हारी बात से सहमत हूं। जब तक यह ऊंच-नीच का तमाशा खत्म नहीं किया जाता तब तक समाज में यह विषमता बनी ही रहेगी। नेशनल एण्ट्रीग्रेशन नहीं हो पाएगा। कंगले हिन्दू-मुस्लिम अशराफ़ के पैसों पर हिन्दू-मुसलमान की पोलिटिकल शतरंज के मोहरे बनते रहेंगे। उत्तेजित कर दिये जाने पर उनकी दौलत लूटेंगे, आगज़नी करेंगे, औरतों की इज्ज़त को खाक में मिलाएंगे, खून-खराबा करेंगे।" दो मिनट गहरे सन्नाटे में बीते। कॉफ़ी का आखिरी घूंट एक झटके में हलक के नीचे उतारकर युधिष्ठिर ने फिर कहा : "जावेद, मैंने तेरे जैसे फ्रैंकली बात करनेवाले मुसलमान कम ही देखे हैं। तेरे जैसे मुसलमान अगर सब हों तो देश में फिर हिन्दू-मुसलिम प्राब्लम ही खत्म हो जाय।"

"अमां, सच पूछो तो अब ऐसा होना ही चाहिये। मुझे एक बात हमेशा से बहुत अखरती रही कि तुम हिन्दू लोग अपने समाज और धर्म के गुण-दोषों को तो अर्से से काफ़ी बेलाग होकर सोच रहे हो और हम लोग कमबख्त अभी अपनी धर्म की चूहेदानी से बाहर नहीं निकल पाए।"

कमरे में फिर से सन्नाटा छा गया। कॉफ़ी का आखिरी घूंट एक झटके में हलक के नीचे उतारकर युधिष्ठिर ने कहा : "तुम्हें एक राज़ की बात बताऊं। अपनी शहादत के आठ-दस दिन पहले मेरे बाबाजी जो लखीमपुर में संगठन करते हुए अन्डरग्राउण्ड जिन्दगी बिताते हुए एक बार मुसलमानी भेष बनाकर 'चम्पक मैन्शन' में आ गए। उस दिन रात में मेरे बाबा और पिताजी की बड़ी अन्तरंग बातें हुई थीं।" कहते-कहते युधिष्ठिर एकाएक चुप हो गया।

"क्या कोई खास बात थी?"

"खास बात क्या, पिताजी बतलाते थे कि उनके पिता उस दिन कुछ-कुछ डिलीरियस मूड में थे। मेरे पिताजी से वह आमतौर पर कभी ज्यादह बातें नहीं करते थे। पर उस दिन बाबा ने अपने हिसाब-किताब के कागज़ और अपने फ़ादर, ग्रैण्डफ़ादर के लिखे हुए कुछ लेख, नोट्स और अपनी डायरियां वगैरह सब चीजें दिखलाई ही नहीं, सौंप भी दीं। बल्कि मेरे पिताजी ने बाबा से पूछा भी कि आप आज मुझे यह सब हैण्डओवर क्यों कर रहे हैं। बाबा बोले, जीवन का कोई भरोसा नहीं, तुम्हें अपने घर का भार अब सम्हालना ही चाहिए। अब भगवान की दया से छब्बीस बरस के हो गए हो। उसी दिन मेरी दादी ने मेरे पिताजी की शादी तय होने की बात भी शायद मेरे बाबा को बतलाई थी। मेरी दादी इतनी हठीली थीं कि उन्होंने मेरे पिताजी की इच्छा या अनिच्छा की परवाह न की। बाबा को भी इतना ही बताया था कि उनकी होनेवाली बहू लड़ैतो गरीब घर की होते हुए भी चांद का टुकड़ा है।"

"यानी यह तुम अपनी फ़र्स्ट मदर की बात कर रहे हो?"

"ठीक कहते हो, मेरी मदर का तो नाम शारदा है। खैर, तो उसी दिन पीने के बाद उन्होंने पिताजी को फिर बुलाया और कमरे का दरवाजा बन्द करने को कहा। फिर बोले—मुमन्नू, यह मत समझना कि मैं तुम्हारी मा को प्यार नही करता। दरअस्ल मैंने देश-विदेश की किसी भी औरत से प्यार नही किया, सिर्फ उनकी काया का लोभ-भर ही मुझे लुभाता रहा। मैंने तुम्हारी मां को पसन्द किया मगर उनकी बेवकूफियां को पसन्द न कर सका। उनसे बात करना, ज्यादह संग-साथ करना मुझे अच्छा नही लगता।"

"यह तुम्हारे बाबा ने तुम्हारे फादर से कहा था?"

"हा, वह उस दिन इतनी साफगोई के मूड मे थे कि मैं भी पिताजी से सुनकर दंग रह गया। असल मे वह मेरे पिताजी से बगैर पूछे ही उनकी शादी तय करने की बात को लेकर ही इस साफगोई के मूड मे आए थे। कहने लगे—मेरी वासना ने मुझसे एक भयकर पाप भी करवाया है।"

"यानी अनारो की बात।" जावेद ने पूछा।

"उन्होंने पिताजी को बतलाया था कि अगर वह इग्लैण्ड न चले गए होते और यहीं रहते तो वह उस स्त्री से अवश्य शादी कर लेते।"

"तुम्हारे बाबाजान की इसी खूबी का पुजारी हू दोस्त। एक जगह उन्होंने अपनी डायरी में लिखा है कि जहा तक मैं जानता हू, मेरे वश मे विलासी पुरुष भी हुए हैं और सच्चरित्र भी। खुद मेरे पिता और बाबा भी सच्चरित्र थे। पिता और मा दोनों ही की सच्चरित्रता के बावजूद मुझमे यह काम-विकार आया।"

युधिष्ठिर बोला "अनोखी बात है कि मेरे कानपुरवाले बाबा हसराजजी के करेक्टर मे भी ऐसी कोई बात देखने मे नही आई। मेरे पिताजी बतलाते थे कि उनके हसो चाचा केवल दो चीजों के गुलाम थे, अपनी जोरू के और दौलत के। खुद पिताजी भी दो शादियों के बावजूद निष्कलक चरित्र के हैं।

"और तेरे लिए तो मैं शक्को का भाई बैठा हू कि साले तेरी नज़र इधर-उधर जाय तो मैं पाच जूते मारू।"

"किसको जूते लगाएगे जावेद अकल?" अशू ने कमरे मे घुसते हुए प्रश्न किया।

युधिष्ठिर और जावेद दोनो खिलखिलाकर हस पड़े। पीछे खड़ी हुई शकुन ने पति से कहा. "ड्राइवर को छुट्टी दे दू या कही जाओगे।"

"अरे तुम बाजार हो आई महरानी तो अब मैं जाकर क्या करूगा। इस साले को साथ लाया हू। कुछ रम-सम पिलाओ भाई। अब आ गई हो तो कुछ खाना वगैरह भी "

"अरे आया को बतला क्यों नही दिया।"

"बतला तो दिया है मगर मैंने सोचा न जाने वह कैसा बनाती हो, इसलिए

मैंने सोचा कि कुछ अच्छा खाना अपने भैया को खिलाओ। बहाने से मुझे भी मिल जायगा।"

"तुम मेरी आया को समझते क्या हो जी, नानवेज में तो एक्सपर्ट है। यहां तो अम्मा-पिताजी के डर से मैंने उसे कभी बनाने नहीं दिया।"

बोतल की बहार में रामजी और बाबरजी फिर याद आए। जावेद बोला : "इन दोनों की वजह से अब तक कई शहरों में दंगे हो चुके हैं।"

"अयोध्या में तो मैं सुन आया था कि जब से मन्दिर तोड़कर उस जगह मस्जिद बनाई गई है तब से यह दंगे वहां बराबर होते रहे हैं। लेकिन दो बातें गौर तलब हैं। एक तो यह कि मुसलमानी बादशाहों के ज़माने में भी उस स्थान पर रामजी की पूजा की मनाही नहीं हुई। दूसरे यह कि वहां नमाज कभी नहीं पढ़ी गई।"

"हां, नमाज़ तो अदा नहीं हुई मगर मुझे यह भी शक है कि बाबर-जैसा सिक्यूलर विचारों का आदमी कभी मन्दिर तोड़ सकता था।"

"मैंने वह मस्जिद देखी है जावेद। उसमें दो जगह पत्थर लगे हैं और उनमें भी बाकीबेग का नाम है, बाबर का नहीं। मेरा खयाल है कि बाबर के साथ आई हुई विदेशी मुसलमानी फौज़ों को किसी फ़कीर ने भड़का दिया होगा और बाबर के सिपहसालार बाकीबेग ने सेना के विद्रोह को शान्त करने के लिए ही वह मन्दिर तुड़वाया।"

"लेकिन तुम यह कैसे कह सकते हो कि उसी जगह वह महल था जहां भगवान श्रीराम ने जनम लिया था ?" जावेद ने तड़पकर पूछा।

"हां, तुम्हारी इस बात से मैं सहमत हूं। यह मंदिर तो चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने बनवाया था और उनके पास भी कोई प्रमाण नहीं था कि यह स्थान रामजी की जन्मभूमि का ही स्थान है।"

"तब फिर हिन्दू मस्जिद तोड़ने पर क्यों अड़े हैं ?"

'भई बन्ने, तू तो खालिस मुसलमान की तरह हुज्जत कर रहा है। यार, यह नही सोचता कि जो मन्दिर टूटने से पहले हज़ार-डेढ़ हज़ार बरस तक जन-भावना में जन्मस्थान का मन्दिर माना गया हो उसे तोड़ने से लोगों को कितना जबरदस्त धक्का लगा होगा।"

"तुझे एक बात बतलाऊं टण्डन। जब यह अमेठीवाले मौलवी अमीरअली ने जेहाद की बात ठानी और यहां के राजपूत राजे, महराजाओं ने मिलकर मौलवी अमीरअली ही को नहीं बल्कि वाजिदअली शाह की किंगडम की फौजों को भी पछाड़कर कहा कि जब हमारी तलवार में धार थी तब तो तुम लोग हार गए और अब टूटी तलवारवालों को खड़ा करके भी क्या पाओगे ?"

"यह बात तुमने कहीं पढ़ी है ? प्रामाणिक है ?"

"उतनी ही जितनी कि विक्रमादित्य के बनवाए हुए मन्दिर को रामजन्म भूमि का मन्दिर कहना। बट आई फ़ील टण्डन कि पहले यह तय हो जाना चाहिए कि उस ज़मीन पर कही दो हज़ार बी० सी० के निशानात भी मौजूद हैं जिससे हम कह सकें कि वह जगह राम के ज़माने की अयोध्या है भी या नही।"

शराब के नशे मे यह बहसिया झक-झक कुछ और तेज हो गई। शकुन जो खाने के लिए पूछने आई थी, कुछ देर यह सुनती रही, फिर एकाएक बोली : "सूत न कपास कोरियो मे लट्ठम्-लट्ठा। खाना खाओ। बन्ने भाई, शब्बो का फ़ोन आ चुका है। आपने उसे यहा आने की कोई खैर-खबर भी न दी।"

"ऐसी-तैसी इन बीवियो की'''मतलब यह कि तुम्हारे बारे मे नही कह रहा शक्को।"

"बीवियो की बात कह रहे हो तो मैं भी शामिल हो गई बन्ने भाई। नशे मे ईश्वर और अल्लाह का भी बटवारा करने लगे आप लोग। अरे, रामजी का मन्दिर हो सकता है तो क्या रामजी की मस्जिद नही हो सकती। पढ़े-लिखे सोचने वाले लोग इस तरह झगड़ा-फ़साद कर रहे हैं, चलिए, खाना खाइए।"

"देख री, आज मैं ज़रा ज्यादह पी गया हू। तेरे घर मे सोने के लिए काफ़ी जगह हो गई है। शब्बो को फोन कर दे, अब कल सुबह ही आऊंगा।"

सुबह चाय-नाश्ते के समय शकुन बोली . "बन्ने भाइ, शब्बो से कह दीजिएगा कि शनीचर की शाम शौकत को लेकर वह यहा आने के लिए तैयार रहे। मैं साढे चार बजे गाड़ी भेज दूगी।'

"शक्को, इस शनीचर को अपनी भावज को न बुलवाओ। उसे लेकर मुझे मलीहाबाद मे एक रिश्तेदार के यहा मातमपुर्सी के लिए जाना है। उस दिन मैंने उससे छुट्टी लेने को कह दिया है।"

"तो क्या हुआ? मलीहाबाद कोई लण्दन या न्यूयार्क के पास तो है नही। और न कोई आम का सीजन ही है जो आप वहा रह जायेंगे। शाम तक तो लौट ही आएगे आप लोग।"

जावेद ने सिर हिलाते हुए कहा "हा, यह तो ठीक है। तब तो सुबह नौ बजे ही गाड़ी मेरे यहा भिजवा दो। उसी पर मलीहाबाद चले जाएगे, ज्यादह से ज्यादह एक-दो बजे तक लौट भी आएगे। शबाना के मामूजात भाई ने अगर खाने के लिए इसरार किया तो शायद तीन बज जाय।"

"मुझे घड़ी का हिसाब न बतला बन्ने भाई, उस दिन आधे दिन की छुट्टी ले लूगी। फिर इतवार की शाम तक शब्बो यही रहेगी।"

युधिष्ठिर बोला : "अकेली शब्बो ही क्यो, यह उल्लू की दुम फ़ाख्ता भी यहीं आ जायगा। आफ़िस से किसी उल्लू के पट्ठे का नाम लेकर एक व्हिस्की ले आना जावेद, या मैं ही ले आऊंगा। उस दिन तुझे कुछ चैप्टर्स भी सुनाऊंगा और इधर

के नक्सलाइट मूवमेन्ट पर भी थोड़ी चर्चा हो जाएगी।"

"यही ठीक है, व्हिस्की तू ही आफिस से ले आना भाई। मुझसे वह साला श्यामनाथ आजकल छत्तीस हो रहा है।"

"क्यों ?"

"अरे, दो वार उससे व्हिस्की ला चुका हूं, अव न देगा मुझे।"

"ठीक है, मैं उसके और अपने मालिक को पटा के ले आऊंगा। आजकल शहर में एक अमेरिकन इण्डोलाजिस्ट आए हुए हैं, वैसे मैं उनसे आज शाम को इन्टरव्यू लेने जा रहा हूं और उन्हीं की व्हिस्की पिऊंगा। लेकिन वहाना अच्छा है, तेरे लिए व्हिस्की का इन्तजाम झूठा वहाना वनाके इस वक्त आसानी से कर सकता हूं, इंटरव्यू मण्डे को आफिस में दे दूंगा।" जावेद जाने लगा, युधिष्ठिर ने रोककर कहा : "और सुन वेटा, दफ्तर में कह देना कि पिताजी ने किसी ज़रूरी काम से आज मुझे अयोध्या वुला रखा है।"

"अवे, क्यों वेकार में छुट्टी ले रहा है।"

"वेकार में नहीं यार, आज एक चैप्टर लिख डालूंगा तो मेरा काम हल्का होगा। वत्तीस-तैंतीस के आन्दोलन का चैप्टर है। दो रोज़ पहले पिताजी से मैंने उस समय की वहुत-सी वातें सुनी थीं। गलती से न उन्हें नोट किया है और न टेपरेकार्ड ही। भूल जाऊंगा तो नुकसान होगा।"

जावेद के जाने के वाद शकुन वोली : "तो तुम आज दिन-भर घर ही में रहोगे ?"

"हां दोस्त, और अगर तुम छुट्टी ले लो तो वजाए लिखने के तुमसे रोमांस लड़ाऊंगा।"

"मुझे आपसे रोमांस लड़ाने की फुर्सत नहीं, वैठके काम कीजिए। तुम्हें ऊपर के ही कमरे में वैठना होगा, समझे। नीचे आया से कह जाऊंगी कि कोई फ़ोन आए या और कोई आए तो कह दे, हैं नहीं। तुम्हें एक वजे खाना मिल जायगा, समझे।"

"ओफ्फो, तुम तो अंग्रेज़ सरकार से भी ज्यादह ज़ालिम सावित हो रही हो।"

"क्या करूं, तुम्हारे जैसे कामचोर से इसी तरह काम लेना पड़ता है।"

युधिष्ठिर ऊपर अपने लिखने के कमरे में चला गया। मेज़ पर रायसाहव वंसीधर से लेकर सभी पुरखे-पुरखियों की तस्वीरें करीने से रखी थीं। जिस तरह पिता के चित्र के साथ उनकी दोनों पत्नियों के चित्र रखे थे वैसे ही वावा के चित्र के अलग-वगल उसकी वैध और अवैध दादियों के चित्र भी रखे थे। युधिष्ठिर को अपनी सगी दादी से जयन्त टण्डन की 'एम० ऑफ अल्ला' से अधिक लगाव महसूस

होता था। उनका और बाबा का चित्र देखते ही युधिष्ठिर के मन को आन्दोलन काल की स्मृतियो के झोंके आने लगे।

सन् बत्तीस-तैंतीस का आन्दोलन भारतवासियों के लिए कठिनतम तपस्या का समय था और बृटिश सरकार के कठोरतम यन्त्रणा-भरे शासन का। लाठिया गोलियां, घोड़े दौड़ाकर लेटे हुए सत्याग्रहियो की छातियो को कुचल देना, ऐसा कौन-सा अन्याय था जो बृटिश सरकार ने नही किया। जयन्त टण्डन आन्दोलन को सगठित करने के लिए जहां तक बन पड़ता था, जेल जाने से बच रहे थे और गिरफ्तारी न हो इसलिए खुफिया जीवन बिता रहे थे। उन्होंने इसी तरह लुक-छिपकर लखनऊ, कानपुर, बनारस, आगरा आदि कई नगरों में आग लगा दी। उनमे सगठन शक्ति प्रबल थी, काम करनेवाले आदमियों को उनकी नजर चट से पकड़ लेती थी। धरने, लाठीचार्ज, जेल-भराई तथा गाधी-जवाहरलाल की जय-जयकारों से वे उन्माद-भरे दिन गूंज रहे थे। लगभग सभी प्रमुख कार्यकर्त्ता और स्त्री-पुरुष जेलो मे बन्द हो चुके थे। धरना देनेवाले सत्याग्रही ढूढे नही मिलते थे। पति के देहान्त के बाद श्रीमती मनोरमा खन्ना अधिक मुक्त हो गई थी, इसलिए जब जेल जाने का मौका आता तो जयन्तजी मनोरमाजी को आगे करके श्रीकृष्ण मन्दिरवासिनी बना दिया करते थे।

शहर मे सन्नाटा था, जयन्त बोले : "बड़ा सन्नाटा है यार, ये विलायती कपडे बेचनेवाले अब फिर से मुटमर्दी दिखलाने लगे है। इन हरामजादो को फिर से काबू मे लाना चाहिए।"

"क्या किया जाय टण्डन साहब, हमारे पास कोई ऐक्टिव वालेंटियर हैं ही नही, न औरतो मे न मरदों मे।" एक कार्यकर्त्ता ने कहा।

"नही हैं तो पैदा करो। बृटिश सरकार को यह घमण्ड न हो जाय कि हमने हिन्दुस्तानियो की ताकत कुचल दी है।"

"मगर क्या किया जाय।"

"सुनो," जयन्त कुछ सोचकर बोले "सुनो, तुम्हारे चौक मे रण्डिया तो बहुत रहती हैं, उनको भी देशभक्त बनाओ।"

"वो हरामजादिया नही बनेंगी टण्डन साहब।

"अमा कैसी बातें करते हो, बनारस मे गाधीजी ने उनकी तवायफ सभा मे जाकर उन्हे कैसे भुनाया था। वही बनियागीरी तुम भी यहा खेलो। मैं सौ-सौ रुपये दूगा, दो गानेवालिया पकड लाओ। वह राष्ट्रीय गीत गाएगी तो भीड इकट्ठी ही होने लगेगी।"

"मगर कहा ?"

"भैरोंप्रसाद-बनवारीलाल की दूकान पर और कहां। वही सबसे बड़ा स्टाकिस्ट है विदेशी माल का।"

"मगर उनके यहां से तो अभी आपने पांच सौ रुपये वसूले हैं।"

"तो उससे क्या होता है, 'मियां की जूती मियां का सर'। खूब जोशीले गाने गवाओ। चार-पांच अपनी वालेंटियरस खड़ी कर देना, भीड़ आने लगेगी।"

"मगर टण्डनजी, रण्डियां जेल नहीं जाएंगी बल्कि वह हमारा सीक्रेट ही खोल देंगी।"

"आप बेवकूफ हैं जनाबेआला, इस बार मौके पर मैं भी गिरफ्तारी देने पहुंच जाऊंगा, बहुत दिनों से बच रहा हूं। सी० आई०-डियों की आंखों में कब तक धूल झोंकूगा, गानेवालियों को मेरी गिरफ्तारी के समय ही भगा देना, यह सब काम तुम लोगों का है।"

"यह काम बड़ी चालाकी का है टण्डन साहब, शायद हम लोग न कर पाएं।"

"कर कैसे नहीं पाएंगे, जब स्वराज हो जाएगा तो इतने बड़े देश को कैसे सम्हालेंगे? मैं कुछ नहीं जानता शहर में एक बार गर्मी तो लानी ही होगी और भैरों बनवारी दूकान जैसी सेन्ट्रलप्लेस की दूकान है वैसी कोई नहीं। तमाशा यहीं होगा।"

अमीनाबाद बाजार उन दिनों शहर का नया आकर्षण बन चला था। विलायती कपड़ों के बड़े व्यापारी भैरोंप्रसाद बनवारीलाल की पांच दरोंवाली बड़ी दूकान लगभग वहीं थी जहां इक्के-तांगेवाले अपनी सवारियां उतारते-चढ़ाते थे। सुबह नौ बजे दूकान खुलने से पहले ही कांग्रेसवालों की छोटी-सी भीड़ वहां जुड़ने लगी। दो मीठे सुरीले जनाने गलों से यह पुरानी गजल फूट निकली—

"तूने गर ठान लिया जुल्म ही करने के लिए,
हम भी तैयार है अब जी से गुज़रने के लिए।
अब नही हिन्द वह जिसको दबाएं बैठे थे,
जाग उठे नीद से, हां हम तो सम्हलने के लिए।"

संगीत से लबरेज़ लखनवी दिल वाह-वाह कर उठे, भीड़ इकट्ठी होनी शुरू हो गई। गानेवालियों ने दो-तीन जोशीले राष्ट्रीय गीत सुनाए, फिर वे गायब कर दी गई और जयन्त टण्डन सामने आ गए। उनका जोशीला भाषण शुरू हुआ: "सीमान्त गांधी हमारे खान अब्दुल गफ्फ़ार खां पुकार-पुकार के कहते है कि कोई सल्तनत, कोई सरकार पैंतीस करोड़ गधों को भी अपने काबू में नहीं ला सकती, उन्हीं की तरह मैं भी आपसे पूछता हूं कि क्या आप गधे से भी बत्तर है।"

जोशीले भाषण ने इन्कलाब ज़िन्दाबाद, भारतमाता, महात्मा गांधी और जवाहरलाल की जै-जैकारों से आसमान गुंजा दिया। जब मालिक लोग दूकान खोलने दूकान पर आए तो उन्हें घंसने का मौका भी न मिला। मालिकान पुलिस

ले आए। ऐसे मौकों पर पुलिस बिजली की-सी फुर्ती से आती थी। दूकान के सामनेवाली भीड़ का अन्दाज लेकर चार घुड़सवार और पच्चीस लाठीधारी आ पहुंचे। जनता इतने जोश में आ गई थी कि उसे हटाने के लिए लाठियां चलीं, भीड़ के बीच से घोड़े दौड़ाए गए, जयन्त टण्डन और कुछ वल्लमटेरों-टेरनियों की गिरफ्तारी हुई। संयोगवश घोड़े दौड़ाने से भीड़ का एक आदमी उसकी लपेट में आ गया, वह गिर पड़ा, बहुत घायल हो गया। उसे अस्पताल में ले जाया गया। टण्डन आदि अनेक लोगों की गिरफ्तारी की चर्चा फैली और यह अफवाह भी उड़ी कि घोड़े से जो आदमी कुचला वह मर चुका है। भैरों बनवारी की दूकान के बुरे दिन उसी क्षण में आ गए। लोग कहते कि जिस दूकान के आगे देशभक्तों का खून बहा है उसका बाईकाट करें। विलायती कपड़ों के खिलाफ जल रही पुरानी होली में एकाएक नई लपटें उठने लगीं।

इसी समय अंग्रेजों ने एक और चाल चली। मुसलमानों की तरह अछूतों को भी पृथक् निर्वाचन का अधिकार दे दिया। सवर्ण हिन्दुओं से दलित वर्ग को इस तरह अलग करना गांधीजी को असह्य हो उठा। सत्य का पुजारी जेल में भी निष्क्रिय नहीं बैठ सकता था। उन्होंने इस कम्यूनल एवार्ड के विरोध में अपनी अन्तरात्मा की आवाज पर आमरण अनशन करने की घोषणा कर दी। यह आमरण अनशन की घोषणा देश का जागरण मन्त्र बन गई। गांधी ने कहा था कि—"जहां तक हिन्दू जाति का सम्बन्ध है, पृथक् निर्वाचन उसका अंगभंग और विच्छेद ही करेगा।" उन्होंने अछूतों को नया नाम हरिजन दिया जो सारे देश में प्रचलित हो गया।

शहर-शहर में सत्यनारायण की कथाएं हुईं और प्रसाद तथा भगवान का चरणामृत हरिजनों के हाथ से दो-दो आने में सवर्णों के हाथ बेचा गया, यह भी एक अभूतपूर्व दृश्य था। झण्डेवाले पार्क में सैकड़ों सवर्ण विशेष रूप से नवयुवक मौजूद थे, उनमें बहुतों को न सत्यनाराण की कथा में दिलचस्पी थी और न भगवान के प्रसाद से ही। वह तो हरिजनों के हाथों से भगवान का प्रसाद ग्रहण करके रूढ़िवादी समाज की जड़ों को हिलाने के लिए वहां आए थे। बाद में जेल में रहते हुए ही गांधी ने 'हरिजन सेवक संघ' की स्थापना की और उनके अनुयायियों ने भी हरिजनोद्धार के काम को सारे देश में तेजी से आगे बढ़ा दिया।

अगस्त सन् तैंतीस में गांधीजी के फिर उपवास करने के कारण उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया। उसी साल माता स्वरूपरानी नेहरू की कठिन बीमारी और उनके इलाहाबाद से लखनऊ के किंगजार्ज मेडिकल कालेज में लाए जाने के कारण जवाहरलाल नेहरू भी मुक्त कर दिए गए। आगे-पीछे अनेक कांग्रेसी नेता जेलों से मुक्त हुए जिनमें जयन्त टण्डन और मनोरमा खन्ना भी थीं। मनोरमा पहले मुक्त हुईं, फिर जयन्त। स्टेशन पर उनका स्वागत करने के लिए दोनों मन्नो आई थीं

और उनके साथ ही उनके वैध और अवैध पुत्र सुमन्त टण्डन और कृष्णचन्द्र खन्ना भी। नगर के और भी कई कांग्रेसी कार्यकर्त्ता रेलवे प्लेटफ़ार्म पर उपस्थित थे। जयन्त के कम्पार्टमेन्ट से बाहर निकलते ही उनकी एम० ऑफ अल्ला (जो अब अनेक वर्षों से लखनऊ निवासिनी हो चुकी थीं) ललककर आगे बढ़ीं। जयन्त उन्हें और सुमन्त को देखकर खिल उठा। स्वागत में आई भीड़ की परवाह न करते हुए जयन्त ने मन्नो खन्ना, फिर सुमन्त टण्डन को छाती से लगा लिया। सौभाग्यवती मन्नो टण्डन को इससे बहुत पीड़ा हुई किन्तु जयन्त ने तत्काल परिस्थिति को भांप-कर मन्नो टण्डन की ओर कदम बढ़ाए, पीठ थपथपाकर पूछा : "कैसी हो मन्नो ?"

किन्तु मन्नो के मन की आग इस औपचारिक छींटे से न बुझी। आए हुए स्वागतार्थी मित्रों और भक्तों से छुट्टी पाकर जयन्त, मन्नो टण्डन और सुमन्त के साथ गाड़ी से 'चम्पक मैन्शन' आए। मन्नो खन्ना और उनका पुत्र 'रघुनन्दनदास लॉज' चले गए। घर आकर पति-पत्नी में हल्की-सी झड़प भी हो गई, जयन्त बोले : "तुम पागल हो गई हो मन्नो, बहुत ईर्ष्यालु हो गई हो। यह मेरा सुमन्त मेरे सामने है। मैं उसकी मां का भला अपमान कर सकता हूं। वह तो एक रस्मिया मिलन था और दूसरे कांग्रेसियों से भी गले लगकर मिला था या नहीं ? इन्हीं बातों से मेरा दिल खट्टा हो जाता है।"

मन्नो के मन का घाव कुछ और खुला, लेकिन सुमन्त बीच में आ गया : "माताजी, यह क्या कर रही हो ? इतने दिनों बाद पिताजी घर आए हैं, अरे, उनके चाय-नाश्ते का इन्तज़ाम करो। चलो हटो, किचेन में जाओ। मेरा और पिताजी का नाश्ता तैयार करवाओ। मुझे उनसे बहुत-सी बातें करनी हैं।"

देश की फिज़ां बदल रही थी। चौधरी खलीकुज्ज़मा उस समय लखनऊ नगरपालिका के अध्यक्ष और पण्डित रमाशंकर गुलेरी उपाध्यक्ष चुने गए थे। खलीक साहब उस समय कांग्रेसी थे। कुछ समय के बाद ही लखनऊ में कांग्रेस का अधिवेशन होने की बात तय हुई और शहर के सारे महत्त्वपूर्ण कांग्रेसी नेता उसकी तैयारियों में जुट गए। जयन्त ने चौधरी खलीकुज्ज़मा से पूछा : "चौधरी साहब, पण्डाल कहां बनेगा ?"

"उसके लिए मेरे वाइस चेयरमैन गुलेरी साहब ने बहुत अच्छी जगह सुझाई है, मैं कमेटी से पास भी करा चुका हूं। चारबाग स्टेशन के पास नहर के किनारे बहुत खाली जमीन पड़ी हुई है। वहीं कांग्रेस का नया शहर बनेगा। और चूंकि जवाहरभाई इस बार प्रेसीडेण्ट हो रहे हैं इसलिए उस जगह का नाम मोतीनगर रखा जायगा।"

"वाह चौधरी साहब, अच्छा आइडिया है, लेकिन वहां पानी वगैरह की बड़ी किल्लत…"

"नहीं होगी यार। इस वक्त तुम्हारा खलीक यहां की म्युनिसिपल्टी का

फेयरमैन है, मैं पहले ही इन्तजाम कर चुका हूं। पाइप लाइन वहां तक दौड़ा दी जायगी। कोई तकलीफ नहीं होगी।"

जयन्त खुश होकर बोले : "अच्छा इन्तजाम है। बाद में यहां एक नया शहर आबाद हो जायगा।"

लखनऊ की मोतीनगर कांग्रेस बड़ी शानदार हुई। भारत भूषण पण्डित जवाहरलाल नेहरू इस बार भी उसके अध्यक्ष बने थे। उन दिनों योरप में युद्ध के बादल घहरा रहे थे। देश को अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से देखने और दिखाने वाले नेहरू ने अपने अध्यक्षीय भाषण में इसका जिक्र किया और कहा कि—"भारत साम्राज्यवादी युद्ध में हिस्सा नहीं लेगा। जब तक उसे पूर्ण स्वराज्य नहीं मिलता और उसे अपनी सत्ता नहीं मिलती तब तक वह सम्भावित योरपीय महायुद्ध की साम्राज्यवादी ताकतों से सहयोग नहीं करेगा।"

सन् उन्नीस सौ छत्तीस के दिसम्बर में नए शासन विधान के अन्तर्गत पहले आम चुनाव हुए। उन दिनों आचार्य नरेन्द्र देव प्रान्तीय कांग्रेस के अध्यक्ष थे। जीतनेवालों में जयन्त टण्डन भी यू०पी० विधान सभा के सदस्य चुने गए। यू०पी० के चुनाव में कांग्रेस शान से जीती। विधानसभा के दो सौ अट्ठाईस स्थानों में से कांग्रेस को एक सौ सैंतीस स्थान मिले। आचार्य नरेन्द्रदेव की अध्यक्षता में पण्डित गोविन्दवल्लभ पन्त को संयुक्त प्रान्तीय विधान मण्डल में कांग्रेस संसदीय दल का नेता चुन लिया गया जिसके कारण वे संयुक्त प्रान्त के पहले प्रीमियर (जो बाद में मुख्यमन्त्री कहलाने लगे) बने और पुरुषोत्तमदास टण्डन विधानसभा के अध्यक्ष। जब गवर्नर ने उन्हें मन्त्रि-परिषद के गठन के लिए बुलाया था तो यह बात उठी कि गवर्नर मन्त्रियों के कामकाज में हस्तक्षेप नहीं करेगा, पर लाटसाहब ने उसे नहीं माना। इस पर पन्तजी ने मन्त्रिमण्डल का गठन करने से इन्कार कर दिया। लाटसाहब भी न झुके, उन्होंने नवाब छतारी को अस्थायी प्रीमियर बना दिया। इस घटना से लन्दन तक हलचल मच गई। अन्य कई प्रान्तों में भी, जहां कांग्रेस विधानसभा के चुनाव में बहुमत में आई थी, यही हुआ। इस पर गांधीजी ने वाइसराय से बात की। अन्त में वाइसराय ने बहुत-सी शंकाओं का समाधान कर दिया और नवाब छतारी की जगह पन्त मन्त्रिमण्डल बना।

वह दिन संयुक्त प्रान्त में बड़ी ही खुशी और जोश का दिन था। देश का मनोबल ऊपर उठा, क्योंकि भारत के अनेक प्रान्तों में कांग्रेस सरकारें बनी थीं। यू० पी० में मुस्लिम लीग ने फिर मुर्दे की देह टांग जाहिर करने का प्रयत्न साधा।

कांग्रेस और मुस्लिम लीग में भेद दिनोंदिन बढ़ने लगे। संयुक्त प्रान्त में मन्त्रिमण्डल के लिए सदस्यों का चुनाव करने के लिए कांग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्ड के अध्यक्ष मौलाना आज़ाद यहां आए थे। कांग्रेस अध्यक्ष नेहरू भी उस समय

लखनऊ में ही थे। जयन्त टण्डन ने पन्तजी से कहा : "इस अवसर पर नेहरूजी को भी मौलाना आज़ाद के साथ कांग्रेस विधान मण्डल दल की बैठक में तकरीर करने के लिए बुलाना चाहिए।"

पन्तजी ने जयन्त टण्डन की बात पर अपनी कांपती हुई गर्दन हिलाकर कहा : "जो बात मेरे मन में आ रही थी वह आपकी जबान पर आ गई। ऐसा ही होगा।"

विधान-मण्डल कांग्रेस दल की बैठक में मौलाना के भाषण के बाद भारत-युवक हृदय सम्राट बोलने को खड़े हुए। उन्होंने कहा : "हम हर तरह से आपकी तथा मन्त्रियों की सहायता करेंगे, आपकी ओर कड़ी निगाह से देखते भी रहेंगे। हमने आपको मन्त्री बनाया है। अब समय आ गया है कि आप कांग्रेस के वायदों को पूरा करें। करोड़ों नर-नारी आपकी ओर देख रहे हैं। यदि आप ठोकर खाते तथा ठहरकर आफिस का आनन्द लेते दिखाई देंगे तो हम आपसे सख्ती से पेश आएंगे। चाबुक हमारे हाथ में है।"

किसी ने उसी मौके पर विधान-भवन की बाउण्ड्री में कांग्रेस का झण्डा ऊंचा और 'यूनियन जैक' को नीचा कर दिया।

लखनऊ में एक ओर जहां नेहरू अपनी राष्ट्रीय सत्ता का गौरवबोध करा रहे थे, उसी लखनऊ में दूसरी ओर लालबाग में मुस्लिम लीग का वह ऐतिहासिक सम्मेलन हो रहा था जिसमें कभी के राष्ट्रवादी मोहम्मदअली जिन्ना अब हिन्दू-मुसलमानों के अलगाव के पैगम्बर बनकर बोल रहे थे: "पिछले दस सालों में हिन्दुआनी कांग्रेस की पालिसीज ने भारत के मुसलमानों को अलग-थलग कर दिया है और जिन छः प्रदेशों में उनका बहुमत है वहां अपनी सरकारें खड़ी करके उन्होंने अपने शब्दों, नीतियों और कार्यों से हमें बार-बार यह जताया और दिखाया है कि मुसलमान इनके हाथों किसी न्याय और बराबरी की आशा नहीं कर सकते हैं। जहां-जहां कांग्रेस का बहुमत है एवं उसे सत्ता प्राप्त है, वहां-वहां उसने मुस्लिम लीग के साथ मिलकर काम करने से इनकार कर दिया है और हमें बिना शर्त अपनी मांगों के आगे झुकने को मजबूर कर रहे हैं। कांग्रेसी कैबिनेटों को मुसलमान प्रतिनिधियों का विश्वास और सम्मान कतई प्राप्त नहीं है। समय को देखते हुए जो पाठ मैं मुसलमानों को सीखने के लिए कहूंगा वह यह है कि बहुत देर हो जाने से पहले हमको अपनी राह चुन लेनी चाहिए। अब वह वक्त आ गया है जब हम अपनी सारी शक्तियां बटोरकर अपना संगठन बनाएं और उस शक्ति को विकसित करने में सब कुछ छोड़कर जुट जाएं।"

प्रान्तों में कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलों के गठन के बाद जिन्ना ने अपने धुआंधार कांग्रेस विरोधी प्रचार से मुसलमानों की राजनैतिक मानसिकता को बदल दिया। लखनऊ मुस्लिम कान्फ्रेंस के दो-तीन महीनों बाद लीग की एक सौ सत्तर नई

शाखाएं देश में स्थापित हो गईं जिनमें नब्बे यू० पी० में थीं एवं चालीस पंजाब में, और एक लाख सदस्य अकेले यू० पी० में ही बन गए।

इधर जिन्ना के नेतृत्व में मुसलमान राष्ट्र में अपने को अलग कर रहे थे, उधर हिन्दू महासभा उनकी पृथक्‌वादिता पर अपना रोष प्रकट कर रही थी। जिन्ना कहते थे कि कांग्रेस और हिन्दू महासभा एक है। उधर कांग्रेस और हिन्दू महासभा के धर्मनिरपेक्षता और धर्म-सापेक्षता के स्वर अधिकाधिक स्पष्ट होते जा रहे थे। हिन्दू महासभा के वीर सावरकर ने कहा: "समान भाव में बंधे हुए भारत की परिकल्पना मृगतृष्णा के समान है। हिन्दू-मुस्लिमों के बीच की दरार एक कड़वा सत्य है। हिन्दुस्तान हिन्दुओं का राष्ट्र है, उनकी भूमि है, भारत में सिर्फ़ एक देश हो सकता है, वह है हिन्दू देश। मुसलमान यहां अल्पसंख्यक हैं और उन्हें भारत के एक प्रदेश में ही शरण लेनी होगी, जहां वे धर्म और जाति की समस्त बेड़ियों से मुक्त होकर स्वतन्त्र नागरिकों की तरह जीवनयापन करेंगे।"

अपने स्वर्गीय बाबा के देशकाल से सम्बन्धित सामग्री सजोते हुए युधिष्ठिर टण्डन को बड़ी चुभन के साथ यह महसूस होने लगा कि इस देश की हिन्दू-मुस्लिम समस्या क्या कभी नहीं सुलझेगी? इस देश में मुसलमान भी हैं, ईसाई और यहूदी भी रहते हैं। *यहूदी तो लगभग भगवान बुद्ध के समय के आस-पास ही यहां आ* गए थे। मोपला मुसलमान भी ईसा की छठी-सातवीं शताब्दी में यहां आकर बस गए। ईसाइयों का पहला पड़ाव तो केरल में ईसा की मृत्यु के लगभग छप्पन-सत्तावन वर्ष बाद ही पड़ा। इनमें से किसी के साथ ऐसा अलगाव का बोध न हो सका जैसा इन मुसलमानों के साथ हुआ है।

उस दिन लिखने के बहाने दफ्तर से बिना बाकायदा छुट्टी लिए ही उसने छुट्टी मना ली थी। लिखते-लिखते दिन के ढाई बज गए थे, अशु सो रहा था, आया 'मेमसाहब' भी उसके पास ही लेटी घुर्र-घुर्र कर रही होगी। उसे कॉफ़ी के साथ कुछ नाश्ता करने की तलब जागी। एक बार जी चाहा कि आया 'मेमसाहब' को जगाकर उससे कॉफ़ी-कटलेट बनाने के लिए कह दे, मगर इस विचार के आने के साथ-ही-साथ मन में हिचक भी उठी। भले ही नौकरानी हो, मगर पराई औरत को जगाकर काम कराना उसे अच्छा नहीं लगा। मधुन होती तो बात दूसरी तरह से सोचता। यह अपने परायेपन का अन्तर कैसा अजीब होता है। मधुन सोती हो तब भी युधिष्ठिर उसे जगाकर अपनी इच्छा पूरी कर सकता है। थकी-मांदी कहीं से आई हो तब भी अपनी पत्नी से मन का काम कराने में उसे तनिक भी झिझक नहीं होती। अनखकर एक सिगरेट सुलगाई। भूखा पेट धुएं से भरा तो आतें उमड़ने-घुमड़ने लगीं, अच्छा नहीं लगा। तुरन्त सिगरेट बुझाकर ऐशट्रे में

डाल दी और···शकुन सचमुच ही जादू की तरह उसके कमरे में आकर खड़ी हो गई : "हाय-हाय डार्लिंग, तू कमबख्त याद करते ही कैसे आ गई ?"

"अरे, दो पीरियड खाली थे, एक मिसेज़ लाल से कह दिया तुम पढ़ा देना, मुझे काम है। यह जानती थी कि तुम आज घर में हो इसलिए कॉलेज में मेरा जी नहीं लग रहा था।"

युधिष्ठिर अपनी कुर्सी से उठकर शकुन की कुर्सी के पास आया और बड़े लाड़ से उसका मुंह उठाकर दो-तीन चुम्बन लिए। शकुन झुंझलाई : "हटो-हटो, यह क्या सूझी तुम्हें दिन में।"

अलग हटते हुए उंगली हिलाकर पत्नी से कहा : "नो सेक्स, कोई वैसी चाह नहीं जागी डियर, शुद्ध प्रेम—हण्ड्रेड परसेण्ट शुद्ध। असल में अभी कुछ भूख लगी, कॉफ़ी की तबियत भी हुई, आया को जगाने को जी न चाहा, यही सोचा कि मेरी शक्को होती तो उससे बेझिझक कह देता कि कॉफी-कटलेट बना दे शकुन।"

बिजली की-सी फुरती से उठते हुए शकुन बोली : "अभी बनाते हैं। तुमने आज खाना क्यों नहीं खाया ?"

"उस वक्त भूख नहीं थी, इतिहास से मन भरा हुआ था।" युधिष्ठिर शकुन के साथ-ही-साथ रसोईघर की ओर चला।

गैस के चूल्हे में आग लगाते हुए शकुन ने पूछा : "किस समय के इतिहास का ?" पानी गर्म करने के लिए केतली चढ़ाई, फिर पति को देखा।

"यही, हिन्दू-मुस्लिम प्रॉब्लम यार। इन कौमों का अलगाव कभी हटता ही नहीं। अभी सावरकर का एक वाक्य लिखते हुए सोचने लगा कि क्या उनका बतलाया हुआ हिन्दू राष्ट्रवाला हल ही समस्या का हल है।"

बेसन के डिब्बे के पास जाते हुए शकुन एकाएक रुकी, बोली : "सुनो, तुम कॉफी के साथ ये कटलेट की धुन छोड़ दो। मैं बेसन के 'चीले' बनाए देती हूं, झटपट बन जाएंगे। तुम्हारे बहाने मैं भी···"

"अरे, जो बनाना हो, बनाओ।" युधिष्ठिर ने पीछे से आकर फिर उसका गाल चूम लिया और कहा : "कटलेट तो उस समय मेरे मुंह से कॉफ़ी की धुन में शायद निकल गया।"

शकुन थाली में बेसन निकालते हुए बोली : "हां, तो वीर सावरकर की तुम क्या बात सुना रहे थे।"

"उन्होंने नागपुर में कहा था कि मुसलमान हमसे कभी मिल नहीं सकते। इन्हें एक प्रान्त में समेट दिया जाय। वहां जो चाहें अपनी मनमानी करें, हमारा राष्ट्र तो हिन्दू राष्ट्र रहेगा। यह देश के बंटवारे से पहले की बात है।"

पानी डालकर बेसन फेंटते हुए शकुन बोली : "क्या हिन्दू राष्ट्र कभी सम्भव हो सकता है जी ? हिन्दुस्तान हिन्दुओं का जितना वतन है उतना ही मुसलमानो

का भी। क्या धर्म के भेद से कौम बदली जा सकती है?"

"यह आवाज कई तरफ से उठ रही है : शकुन, यह आवाज कहीं हमारे देश का फिर से बंटवारा न करा दे।" युधिष्ठिर गम्भीर भाव से सोचते हुए किचेन में टहलने लगा फिर एकाएक बाहर निकल गया। वह सोच रहा था कि हर प्रान्त के मुसलमान वहीं की भाषा बोलते हैं। धर्म-कर्म और पोशाक में अलगाव रखते हुए भी वे वहां के हिन्दू जीवन से इतने घुले-मिले हैं कि मुसलमान होने के बावजूद वह किसी तरह अलग नहीं लगते। मन में एकाएक यह विचार कौंधा, मेरी और बन्ने की कैसे पटती है। मुश्ताक मामू मेरे बाबा, नानाजी और अम्मा के प्रति जैसे एका रखते हैं वैसे और हिन्दू मुसलमान" वह भी रखते हैं। अंग्रेजों के आने से पहले मुसलमानी शासन में विदेशी मुसलमानों के मनों में अलगाव भले ही रहा हो मगर देशी हिन्दू-मुसलमानों में कहीं-न-कहीं एका भी बना रहा। वैसे मुसलमान विजेताओं ने क्या कम अत्याचार किए हैं हमारे ऊपर? कितने मन्दिर तोड़े और उन्हीं के टूटे पत्थरों से नई मस्जिदें बनवाईं। दिल्ली में सत्ताईस मन्दिर तोड़े थे। हिन्दुओं के द्वारा पूजित मूर्तियों को तोड़-तोड़कर नमाजियों की राहों में लगाया गया था ताकि मस्जिदों में आने-जानेवाले नमाजी उन पर अपने जूते रखते हुए मस्जिदों में जायें। मूर्तियों के टुकड़े इस तरह से तोड़े कि वह सेर-पसेरी या ढाई सेर माप के बटखरे बने और कसाई लोग उन्हीं से तौल-तौलकर गाय का मांस बेचा करें। हमारे लखनऊ में ही लछमण टीले की मस्जिद से लेकर अयोध्या की रामजन्मभूमि वाली मस्जिद तक बाबरी मस्जिद कहलाती है। कम अत्याचार नहीं किया इन धर्मांध आक्रमणकारियों ने। हमारी स्त्रियां लूटीं, धन लूटा, धर्म लूटा। लेकिन इसके बावजूद जनसाधारण में फिर भी काफ़ी हद तक एका ही बना रहा। हिन्दू काल के कंगले मुसलमान बनाए जाकर भी वे बेचारे कंगले ही रहे। वे कैसे दो होते? मगर उनमें भी यह 'अशराफ़' कहलानेवाले शरीफ लोग हमारे भद्रजनों के यहां तरह-तरह की लूटपाट करवाते ही रहे।"

युधिष्ठिर मन-ही-मन इस समस्या का समाधान खोजने के लिए छटपटाता ही रहा। मेरा और जावेद का कभी ऐसा अन्तर प्रकट ही नहीं हुआ, शकुन-शबाना भी काफ़ी हद तक एक-दूसरे से घुली-मिली हुई हैं। पर मुझे यह लगता है कि हमारे अन्दर भी भेद है। मेरे पिताजी मुझसे अधिक उर्दू के शब्द बोलते हैं, कहते हैं कि मेरे बचपन और नौजवानी में लखनऊ शहर का हिन्दू-मुसलमान अधिकतर उर्दू ही बोलता था। लेकिन जावेद ने तो आजादी के बाद हिन्दी ही पढ़ी है फिर भी उसकी बोलचाल का लहजा उर्दू ही होता है। यानी उर्दू मुसलमानों की जबान हो गई पर बंगाल, महाराष्ट्र या गुजरात के मुसलमानों की भाषा न बदली। अभी चार दिन पहले ही कानपुर के विश्वेश्वरनाथ मेहरोत्रा बतला रहे थे कि उनके पास हाजी यूसुफ़ अल्लारक्खा पटेल का लिखा हुआ खत्री जाति का एक इतिहास

है। गुजरात के जो खत्री सदियों पहले मुसलमान बनाए गए थे उन्होंने न तो अपनी मातृभाषा ही छोड़ी और न अपनी जातीयता के संस्कार ही दबा सके। हमारे हिन्दीभाषी क्षेत्र के लोग अपने मूल संस्कारों को आखिर क्यों भूल गए !

शकुन प्लेट में चीले, अचार और कॉफ़ी लेकर आ गई, युधिष्ठिर चहककर बोला : "तुम हाजी युसूफ़ अल्लारख्या पटेल साहब को जानती हो ?"

"ये कौन हैं ? मैंने इनका नाम नहीं सुना।"

"अरे, अपने खत्री भाई थे बेचारे। उन्होंने सब हज-वज करने के बावजूद खत्री जाति का इतिहास लिखा—पुराणों से लेकर राजकपूर, राजेश खन्ना तक।"

"यह होती है राष्ट्रीयता की भावना, यह चेतना क्यों हटती चली गई हमारे यहां के हिन्दू-मुसलमानों में ? इन्होंने ही अपने इतिहास में यह भी लिखा है कि जब अरब में मोहम्मद साहब का इस्लाम आन्दोलन चला तो बहुत-से चन्द्रवंशीय शिवपूजक खत्री परिवार अरब से भागकर हिन्दुस्तान चले आए थे। लो बैठो, तुम भी खाओ।"

"नहीं, अभी थोड़ा-सा बेसन का घोल और पड़ा है। उसके चीले बना लूं, फिर आऊं।"

किचेन में कुछ खटपट की आवाज़ सुनकर आया की नींद खुल गई। वह अंशू के पास ही सो रही थी। हड़बड़ाकर उठी और यह सोचकर किचेन में आई कि शायद साहब अपने वास्ते कुछ खाना-वाना निकाल रहे होंगे, मगर देखा कि मेम-साहब खुद मौजूद थीं। "अरे मेमसाहब, आप कब आईं ? लाइए, मैं बना दूं, क्या बना रही हैं।"

"तुम रहने दो, मैं बना लूंगी।"

तब तक चीले की प्लेट लिये, खाते हुए युधिष्ठिर भी वहीं आ गया : "सुनो शकुन, तुम शब्बो को उसके कॉलेज में ही टेलीफ़ोन कर दो। कह देना, मैं गाड़ी भेज दूंगी, शौकत और अपने नालायक मियां को भी ले आना। मियां-बीबी की दावत आज यहां ही होगी। आया आज लजीज़ नानवेज़ डिशेज़ बनाएगी, क्या समझीं आया मेमसाहब ?"

आया झेंपकर बोली : "अरे हुजूर, हम तो गरीब आदमी हैं, मेमसाहब कहां। खाना आप जो कहेंगे या मेमसाहब से पूछकर बना दूंगी।"

शाम करीब छः-साढ़े छः बजे युधिष्ठिर की गाड़ी पर जावेद अपनी पत्नी और बेटे के साथ चम्पक मैन्शन आ गया। शब्बो और शकुन जिसे शब्बो शक्को कहती थी, दोनों ही अपने बेटों को लेकर शहर के नये जनपथ बाज़ार में लगी मशीनी खिलौनों की प्रदर्शिनी देखने चली गईं।

युधिष्ठिर बोला : "कुछ चाट-वाट न खाके आइएगा मेमसाहबो, आज घर में ही अच्छा खाना बना है।"

"तबियत आई तो बाजार में भी खाएंगे साहब, घर में तो खाएंगे ही। आप बोलनेवाले कौन होते हैं? चल शबको, और आप लोग भी न इतनी पी बैठिएगा कि हमसे बात करने काबिल ही न रहें।"

यारों का दौरे-जौक शुरू हुआ और बातें भी। युधिष्ठिर बोला : "तुमको एक मज़े की बात सुनाऊं। आज संयोग से शकुन कॉलेज से ज़रा जल्दी चली आई। मैंने बातों के दौर में कह दिया कि यह हिन्दू-मुस्लिम प्रॉब्लम मानी हल क्यों नहीं होती। तो शकुन बोली—आपमें और वन्ने भाई में तो कोई प्रॉब्लम नहीं उठी। एक साथ खाते-पीते हैं, एक ख़याल के हैं।"

जावेद बोला : "हममें और दूसरे हिन्दू-मुसलमानों में फ़र्क़ है बेटे। वो साले माइनारिटी और मैजारिटी के अण्डे फोड़कर अभी बाहर ही नहीं निकले और हम इस प्रॉब्लम में कभी फंसे ही नहीं। ये साली प्रॉब्लम तो मैनारिटी-मैजारिटी की मेन्टैलिटी से उठती है।"

"ठीक कहते हो, मेरे ख़याल में एक बात और भी इम्पॉर्टेन्ट है। यह समस्या अशराफ़ वर्ग के मुसलमानों ने उठाई है। उनको लगता था कि पहले जिन पर हम हुकूमत करते थे वे अब हम पर हुकूमत कर रहे हैं। यह बात तो आज़ादी के बाद बढ़-चढ़कर सामने आई। तुम्हें मालूम है, गदर के बाद हमारे मुसलमान उलेमाओं ने अंग्रेज़ों के एण्टी मुस्लिम रुख़ को देखकर यह सोचा कि क्यों न हम इन अंग्रेज़ों के खिलाफ़ जेहाद करें क्योंकि दारुलहर्ब में ग़ैरमुसलमानों के खिलाफ़ यह किया जा सकता है। तब सर सैयद ने कहा कि नहीं, अंग्रेज़ हमारे सरपरस्त हैं, इनके खिलाफ़ जेहाद नहीं किया जा सकता। सर सैयद शुरू से ही अंग्रेज़परस्त थे।"

"मगर हिन्दुस्तान के आम मुसलमान यहां के हिन्दुओं की तरह ही अंग्रेज़ों से नफ़रत करते थे।"

"बिल्कुल ठीक, तुमने हण्टर रिपोर्ट नहीं पढ़ी। हण्टर साहब सौ-सवा-सौ बरस पहले के बड़े एजूकेशनलिस्ट थे। उन्होंने अपनी सरकार को सलाह दी कि नवाबों और ज़मींदारों को गवर्नमेंट अपने साथ मिलाए। तब मुसलमान रिआया भी अंग्रेज़ों के कहने से आ जायगी। तुम्हें याद है न टण्डन, कि पार्टीशन ऑफ़ बंगाल के वक्त ढाका का नवाब भी पहले तो नेशनलिस्ट लोगों के साथ था, बाद में अंग्रेज़ों ने कर्ज़ वग़ैरह के रूप में उसे बहुत पैसा-वैसा देने का इकरार किया तो झट से अंग्रेज़परस्त हो गया। और सर सैयद तो गदर के बाद से ही तमाम शहज़ादों और शहज़ादियों की बर्बादी पर टेसुए बहाते हुए अंग्रेज़ परस्त हो गए थे। ये टू-नेशन की हवा अंग्रेज़ी हुकूमत के चकाबू में फंसकर इन्हीं ऊंचे तबकेवाले मुसलमानों ने उठाई और इसके लिए अंग्रेज़ों की शह उन्हें बराबर मिलती रही। मैं बहुत कोशिश करता रहा जावेद, मगर यह न ढूंढ सका कि जिन्ना से पहले पाकिस्तान की आवाज़ पहलेपहल कब उठी और मुझे यह भ्रम भी है कि इस नारे

को सबसे पहले महाकवि इक़बाल ने ही उठाया था ?"

"गलत सोचते हो। इस नारे को सबसे पहले इंग्लैण्ड में रहनेवाले एक डॉ० लतीफ़ ने सन् बत्तीस या तैंतीस में उठाया था। कैम्ब्रिज में ही रहनेवाले रहमत अली ने उसे, मेरा मतलब है कि···"

"विस्तार दिया।"

"हां, रहमत अली ने पाकिस्तान नेशनल मूवमेन्ट की बात उठाई जिसमें ईस्ट बंगाल यानी बंगिस्तान, निज़ाम हैदराबाद स्टेट यानी उस्मानिस्तान और राजस्थान एवं सिन्ध के बार्डर पर म्यूनिस्तान तथा बाकी सब पंजाब, सिन्ध वग़ैरह को मिलाकर पाकिस्तान बनाने की बात थी। इकबाल भी उन दिनों इंग्लैण्ड में ही थे और वह भी इस मूवमेंट के साथ हो गए।"

युधिष्ठिर बोला : "बाबा ने एक जगह अपनी डायरी में इकबाल के लिए बड़ी पीड़ा और व्यंग के साथ···"

"मैंने पढ़ा है, इक़बाल का एक शेर कोट करते हुए उन्होंने लिखा है कि क्या यह वही शायर है जो कल 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' लिखता था। वह शेर जिस पर यह कमेन्ट किया, मुझे याद नहीं।"

"मुझे याद है, इकबाल ने लिखा था कि—या रब दिले मुस्लिम को वोह जिन्दा तमन्ना दे, जो कल्ब को गरमा दे जो रूह को तड़पा दे।"

हलक में बर्फ से ठण्डी की गई गर्मी को हलक के नीचे उतारकर जावेद ने गिलास रखते हुए कहा : "ये सब नजरिये नफ़रत के काबिल हैं और मज़े की बात यह है कि इकबाल दो-दो, चार-चार पुश्तों पहले हिन्दू से मुसलमान बने थे।"

"यह सच है जावेद कि जिन्होंने खुशी से या मजबूरी से अपना धर्म बदला, वह बाहर से आए हुए मुसलमानों से भी अधिक क्रूर और हिन्दू-विरोधी साबित हुए। बंगाल में कालापहाड़ नाम से मशहूर एक ब्राह्मण ने ही मुसलमान बनकर हिन्दुओं पर कहर ढाया था। मलिक काफ़ूर भी पहले कपूर खत्री ही था। ऐसे कितने ही उदाहरण दिए जा सकते हैं।"

"सिर्फ़ मुसलमानों को ही मत देखो टण्डन, आज की इस बर्निंग प्रॉब्लम यानी पंजाब में हिन्दू-सिखों के झगड़े पर भी गौर करो। हिन्दू-मुस्लिम मसला तो इसे देखते हुए काफ़ी पुराना पड़ गया है। ये कमबख्त नई-नई सिखों की प्रॉब्लम, असम की प्रॉब्लम, ये तरह-तरह के अलगावों की प्रॉब्लम जो हमें इस वक्त परेशान कर रही हैं आखिर इनका अंजाम क्या होगा।"

सवाल के बाद दोनों तरफ़ से जवाब की एक लम्बी चुप्पी सध गई।

दफ्तर में शिवदीन जब मशीनों से नई खबरों की कतरनें लाया तो एक खबर पढ़कर पाण्डे नाटकीय ढंग से बोल उठा : "ओ हो, क्या बुरी खबर आयी है यार।"

सारा स्टाफ चौंककर देखने लगा। युधिष्ठिर जो पाण्डे के पास ही बैठा था, पूछने लगा : "क्या हुआ ?"

"शिब्बनलाल सक्सेना गए, पुरानी पीढ़ी का एक जुझारू नेता चला गया।"

स्टाफ में शिब्बनलालजी के लिए तरह-तरह के उद्‌गार फूटने लगे। युधिष्ठिर पुराने दिनों की याद में खो गया। इधर उसने सन् उन्नीस से लेकर सन् बयालीस तक की अनेक घटनाएं पढ़ी हैं। चौबीसों घण्टे मन उन्हीं में दौड़ा करता है, कैसा त्याग, तप और बलिदानों-भरा साहसिक युग था। आज नहीं जागता वह भारत, ऐसा लगता है कि नये और पुराने वक्त में कितना विरोधाभास आ गया है। दूसरा महायुद्ध जिसे तब कम्युनिस्ट पार्टी के लोग जनयुद्ध कहते थे, भारत के लिए नैतिक रूप से बहुत पतनकारी सिद्ध हुआ।

"अरे मेरे प्यारे धर्मराज युधिष्ठिर, तू मेरा एक उपकार कर दे भैया! शिब्बन-लाल सक्सेना पर एक राइटअप लिखता जा। तू ही लिख सकता है मेरे दोस्त।" पाण्डे बोला।

"अरे यार, किसी और से लिखवा लो, मैं बहुत बिज़ी हूं। शफ़ीक से लिखवा ले।"

युधिष्ठिर चट से शफ़ीक के पास उठकर गया : "अरे, तेरी दाढ़ी में हाथ फेरूं प्यारे, लिख दे, लिख दे। मैं बहुत बिज़ी हूं, तेरी जान की कसम। असल में मेरे ग्रैण्ड फ़ादर बहुत बीमार हैं, उन्हें देखने जाना है।"

"तुम्हारे ग्रैण्ड फादर तो सन् बयालीस में शहीद हो गए।"

"उन्हीं के कज़िन हैं। सदी के साथ पैदा हुए थे, अब पच्चीसी बरस के हैं। ले। पाण्डे, ये मेरा दोस्त शफ़ीक लिख देगा। लिखोगे न ?"

"लिखूंगा क्यों नहीं, आखिर मैं भी गोरखपुर का हूं।"

युधिष्ठिर ने शफ़ीक के दाढ़ी भरे गाल को छूकर जेब से एक सिगरेट निकालकर शफ़ीक के मुंह में लगा दी।

"जग्गो बाबा को टाइफाइड हो गया था। उन्हें चन्द्रिकाश्रम से अब शहर में ही ले आया गया है।"

"कहां ?" पाण्डे ने फिर पूछा।

जगदीश अरोड़ा बोला : "अरे, डॉक्टर ओ० पी० टण्डन के फादर हैं भाई, जगदीश नारायण टण्डन।"

युधिष्ठिर ने कुछ जवाब नहीं दिया, ब्रीफकेस उठाया और चल दिया। जग्गो

बाबा का स्वास्थ्य आज काफ़ी ढलान पर था। बीच-बीच में बेहोशी आ जाती थी। ओ० पी० (ओमप्रकाश टण्डन) स्वयं प्रसिद्ध डॉक्टर थे, और भी कई जाने-माने विशेषज्ञों की राय भी यही थी कि डॉक्टर जगदीश नारायण का बचना अब मुश्किल है।

युधिष्ठिर पहुंचा, बाबा होश में थे, दादी (उनकी पत्नी), बड़ी पुत्रवधू और स्वयं ओ० पी० भी पलंग के पास बैठे थे। युधिष्ठिर को देखकर बाबा की आंखों में चमक आई, अपने पास बुलाया, उसका दाहिना हाथ अपने हाथ से दबा लिया और धीमे स्वर में बोले : "इन सबसे कह दो, मैं जयन्ती भैये की बर्थ सेन्टनरी मना कर ही जाऊंगा, इससे पहले नहीं।"

युधिष्ठिर बोला : "पिताजी का फ़ोन आया था। वो और माताजी आनेवाला हैं।"

"कोई जरूरत नहीं।" जग्गो बाबा ने कहा।

बाबा फिर गफ़लत में आने लगे, युधिष्ठिर उनके पलंग से उतर आया और उनके बेटे के पास ही कुर्सी खींचकर बैठ गया। धीरे-से पूछा : "चाचा, बाबा क्या सर्वाइव कर जाएंगे?"

"मुश्किल है, लेकिन कहा नहीं जा सकता है। आज की रात क्रिटिकल है, देखो।"

घर जाने पर देखा, अंशू फोन पर अपनी दादी से बातें कर रहा था, शकुन पास खड़ी उससे टेलीफ़ोन लेने के लिए हाथ बढ़ा रही थी। "दद्दा, पापाजी आ गए।"

"अरे, चल, ला, फ़ोन मुझे दे।" कहकर युधिष्ठिर ने फ़ोन उसके हाथ से ले लिया : "कहो अम्मा, कैसी हो, पिताजी कैसे हैं? हां, अभी बाबा को देखकर ही आ रहा हूं। ओमी चाचा तो कहते हैं कि आज की रात नहीं बच पाएंगे। मगर बाबा कहते हैं कि वे हमारे बाबा की शताब्दी मनाकर ही जाएंगे। अम्मा, पिताजी से पूछ लीजिए···प्रणाम पिताजी। जी, बाबा का हाल तो मैंने अम्मा को बतला दिया है। वह कहते हैं कि इस बीमारी को शर्बत की तरह पी जाएंगे और हमारे बाबा की जन्मशताब्दी मनाए बिना नहीं मरेंगे। क्या आप लोग यहां आ रहे हैं? ठीक है। कार कल तड़के ही रवाना कर देंगे।"

फ़ोन-सम्पर्क कट गया। युधिष्ठिर ने शकुन से कहा : "अम्मा और पिताजी कल दिन में यहां आ जाएंगे, खाने की चिन्ता तुम्हें नहीं करनी है, अम्मा वहां से आलू के परांठे बनवाकर ले आएंगी।"

रात में ग्यारह बजे डॉक्टर ओमप्रकाश के यहां से फ़ोन आया : "जग्गो बाबा स्वर्गवासी हो गए।" उन्होंने चौक के घर में सन्देश देने को भी कह दिया।

दूसरे दिन सुमन्त टण्डन और उनकी सौभाग्यवती के आ जाने पर ही लगभग

दो-ढाई बजे डॉक्टर जगदीश नारायण टण्डन की शवयात्रा आरम्भ हुई। चौक के सभी रिश्तेदार आ गए थे, चन्द्रिकोजी से भी काफी देहाती भीड़ आई थी। डॉक्टर जगदीश नारायण वहा अधिकतर डॉक्टर साहब के नाम से नही, वरन बाबा के नाम से विख्यात थे।

जगो बाबा की अन्त्येष्टि क्रिया और उत्तर कर्म आर्यसमाजी पद्धति से ही हुए और चौथे दिन शान्ति हवन। घरवालो तथा इष्टमित्रों का भोज हो जाने के बाद सुमन्त नन्हा से बोले : "अब हम अयोध्या जाएगे बेटा।"

"अरे आज ही ? अब आज तो दोपहर हो गई है ? कल जाइएगा पिताजी, आज आपसे मुझे एक महत्त्वपूर्ण पहेली सुलझानी है।"

तभी शारदा आई, कहा : "सुनते हैं, अभी चार-छ: दिन मैं यही अपने अंशू के पास ही रहूंगी।"

"लेकिन मैं तो कल सवेरे चला जाऊगा, शारदा।"

शारदा स्तब्ध हो गई, फिर कहा : "तब मैं भी आपके साथ ही चलूगी।"

"अरे, दो-चार दिन रुक जाओ, फिर आ जाना।"

"नही, अब मैं आपको छोड़ूगी नही। (खुशामद करके) अरे, दो-चार दिन रुक जाइए न। ये माया-मोह, मरा नही मानत हैगा, क्या करें। और ये अंशू भी मेरा ऐसा चिपका हैगा कि इसे छोड़कर जात नही बनत हैगा।"

सुमन्त दृढ़ निश्चय के साथ बोले : "मेरा कार्यक्रम निश्चित है, शारदा। हा, तुम्हारा जी चाहे और ये लोग भी राजी हो तो तुम अशू को दो-चार दिन के लिए ले चल सकती हो।"

बात खत्म हो गई, शारदा कमरे में चली गई। सुमन्त ने कहा : "तुम कुछ पूछना चाहते थे, नन्हा ?"

"हा पिताजी, बाबा की डायरी में सन् सैंतीस के सात-आठ और फिर दस अगस्त को हमारी दद्दा का नाम लेकर कुछ बडी अजीब-सी बातें लिखी है।"

"अजीब तो नहीं, हा, उन्होंने माताजी के चरित्र की व्याख्या की है, मैंने भी पढे है वो अश।"

"हा, पिताजी, जो व्याख्या की है तो कोई घटना भी होगी।"

सुमन्त मुस्कुराए, कहा : "हा, मेरे पहले विवाह को लेकर तेज कहा-सुनी हुई थी।" वह लेट गए, फिर लम्बी कहानी आरम्भ हुई।

दूसरे दिन शकुन तो कॉलेज से छुट्टी लेकर बाबा के स्यापे में गयी और युधिष्ठिर पिता से सुनी हुई बातों को कागज पर उतारने की धुन में रम गया।

जयन्त और उनकी पत्नी मन्नो कटारी टोले के लाला बनारसीदास के यहा उनके

पुत्र के विवाह के अवसर पर भोज में गए थे। लौटकर अपनी कीमती साड़ी तहाते हुए मन्नो ने बहुत खुश होकर कहा : "आज हमने अपने सुमन्तू के लिए एक लड़की देखी है। अरे, ऐसी सुन्दर है कि अंधेरे में खड़ी करो तो उजाला हुई जाय।"

"अरे, कुछ पढ़ी-लिखी भी है या खाली बैटरी की तरह अंधेरे में उजाला ही करती है.?"

"पढ़ी-लिखी क्यों नहीं, दसवें तक पास हैगी, अपने बनारसीदास के साले की लड़की। हम आपसे क्या कहें, हम तो लुट-लुट गए।"

जयन्त बोले : "खाली-शरीर की सुन्दरता ही सब कुछ नहीं होती। सुमन्त बी० ए० पास कर चुका है। पक्के राष्ट्रीय विचारों का है, ऊंचे विचारों का। तुम्हारे लुटने से उसका जीवन कहीं लुट न जाय ?"

मन्नो बुरा मान गई, कहने लगीं, "तो क्या हम अपने लड़के का बुरा चाहेंगे। हमरे एकै ही एक तो लड़का हैगा।"

"यह मैं मानता हूं, पर तुम्हारी इन बातों से मुझे खयाल आया कि अभी पिछले ही महीने मैं आगरे गया था। मीटिंग के बाद माईथान के कपूर साहब मुझे अपने यहां खाना खिलाने ले गए थे। वहीं रात में सोने का इन्तजाम भी था। उनकी एक लड़की ने भी इसी साल बी० ए० पास किया है। काफ़ी सुन्दर और बातचीत में बहुत सलीकेवाली लगी मुझे। बल्कि कपूर ने मुझे इशारा भी दिया था रिश्ते का। मैं सोचता हूं, तुम और सुमन्तू उस लड़की को देख आओ, तब कहीं बात तय करो।"

मन्नो पलंग पर लेटते हुए झनझनाकर बोलीं : "हमें सब मालूम है, वो उस निगोड़ी खन्नावाली के मैके के रिश्तेदार हैं न, मैं नहीं करूंगी वहां। मेरा एकै ही एक तो लड़का हैगा, दुश्मनों के घर की बहू नहीं लाऊंगी।"

दूसरे दिन सवेरे अपने लालबाग के दफ्तर जाते हुए उन्होंने सुमन्त से कहा : "तुम्हारी मदर ने तुम्हारे लिए एक लड़की तय की है।"

"लेकिन मैं अभी शादी नहीं करना चाहता पिताजी। मैं भी आपकी तरह ही एक बार इंग्लैण्ड जाना चाहता हूं।"

"मेरा खयाल है बेटे, कि तुम फ़िलहाल कुछ वर्षों तक इंग्लैण्ड और योरोप की तरफ़ न जा पाओगे। युद्ध के बादल मंडरा रहे हैं।"

"मगर मैं अभी विवाह बन्धन में नहीं फंसना चाहता, पिताजी।"

"यह अपनी मां को समझाओ, मुझसे कोई मतलब नहीं।"

दिन में कुमारी लड़ैतो बीबी अपनी मां के साथ आई। मन्नो ने इक्यावन रुपये लड़की के हाथ में रखे और कहा : "रोक की रसम के लिए चौमासे के बाद किसी दिन सण्डीले आऊंगी।"

श्रीमती मनोरमा टण्डन बहुत प्रसन्न थीं। शाम को सुमन्त आया तो माताजी-

बोलीं : "सुमन्त, मैंने तुमरी खातिर बहू खोज ली है।"

"लेकिन मैं तो अभी विवाह नहीं करूंगा, माताजी।"

"अरे, अभी कहता है, देखेगा तो रीझ पड़ेगा, चांद-जैसा टुकड़ा है।"

"तो तुम कर लो विवाह, तुम्हें ही दूल्हा बना के घोड़े पर सवार कर दूंगा।"

मन्नो क्रोध में दुर्वासा हो गईं, कहा : "मैं जबान दे चुकी हूं, तू ब्याह नहीं करेगा तो मैं कुएं में कूदकर अपनी जान दे दूंगी।"

रात में पिताजी से बातें हुईं, पिताजी ने कहा : "वे मुझसे कल ही से कह रही हैं। वह अपने हठ के आगे किसी की सुनती नहीं। खैर, मैं एक बार आज फिर कहूंगा।"

जयन्त के कहने का असर उल्टा हुआ। सुमन्त की माता ज़ोर-ज़ोर से मनोरमा खन्ना को कोसने पर आ गईं। जयन्त खामोश रहे लेकिन सुमन्त अपने कमरे से निकल आया और मां से हुज्जत करने लगा। सुमन्त का क्रोध मां की क्रोधाग्नि में घी-सा ही पड़ा। मन्नो बोली : "अब या तो इस घर में सिम्भू की लड़की लड़ैतो बहू बनकर आवैगी या फिर अपनी जान ही दे दूंगी।"

दूसरे दिन सबेरे जयन्त ने अपने कपड़े और कुछ कागज़ सहेजकर दो सन्दूकों में रखे और नौकरों को आदेश दिया कि उन्हें गाड़ी में रख दिया जाय। उसी दिन से जयन्त टण्डन ने अपना शेष जीवन लालबाग के कॉटेज में ही बिताया। दो दिन बाद माता और पुत्र में तेज़ कलह हुई और माता को मरणोद्यत देखकर नतशिर हो गया। उसने अपनी माता की इच्छा स्वीकार कर ली।

मन्नो खन्ना उस दिन शाम को लालबाग आईं, बोली : "तुमने तो आज कमाल कर दिया। अच्छा, तुम्हें यह मालूम कैसे हुआ कि हिज़हाइनेस उस ऐक्ट्रेस को लेकर फीरोज़ाबाद की तरफ़ भागेंगे?"

"हिज़हाइनेस के लिए दूसरी कोई राह ही नहीं थी। मैंने थियेटर कम्पनीवालों से कह दिया कि धौलपुर से फीरोज़ाबाद आनेवाले हर रास्ते घेर लिए जाएं, इनकी कार में पथराव कर दिया जाय। एस० पी० हिज़हाइनेस को रोकने के लिए पूरी तैयारी के साथ गए थे।"

"अब क्या होगा?"

"कुछ नहीं, ऐक्ट्रेस थियेटरवालों को सौंप दी जाएगी और हिज़हाइनेस खुद अपनी गद्दी पर बैठेंगे। फीरोज़ाबाद के एस० पी० ने मेरी बड़ी मदद की, उसने कार में बैठी ऐक्ट्रेस व हिज़हानेस की तस्वीर ले ली। ऐक्ट्रेस ने कहा—यह ज़बर्दस्ती मुझे अपने रनिवास में डालना चाहते थे। जब सरकार ने महलों की घेराबन्दी की तो ये मुझे रातोरात भगाकर इस तरफ़ ले आए। मैं क्या करूं। एस० पी० ने हिज़हाइनेस की पिस्तौलें पहले ही अपने कब्ज़े में कर ली थीं। पट्ठे बेटा चक्कर में।"

कुछ इधर-उधर की बातें हुईं। जयन्त पी रहे थे। मन्नो ने जिक्र छेड़ा : "आज सुमन्तू अभी मेरे पास आया था। मैंने कहा—घर की इज्जत बचाने के लिए बेटा अपनी मां का कहना ही मान लो, दूसरा कोई उपाय नहीं। मुझे तो इस वक्त तुम्हारे पिताजी का खाना बनाने के लिए एक अच्छी रसोईदारिन की आवश्यकता है।"

जयन्त सुनते रहे। दुखी स्वर म बोले : "अब तक हर केस जीतता रहा पर तुम्हारी नामरासिन को नहीं जीत पाया। बड़ी हठीली और मूर्ख है। न जाने किस आसमानी पनिशमेन्ट की वजह से मेरी माताजी ने मुझे इस उल्लू की पट्ठी के साथ बांध दिया और वो उल्लू की पट्ठी अपने लड़के के लिए एक नई उल्लू की पट्ठी ला रही है। कमबख्त ! समझ में नहीं आता, भारतीय नारियों की यह मूर्खता कब खतम होगी।"

"अरे, जब होगा तब होगी, अब आओ, खाना खा लो। मैंने भी अभी खाया नहीं है, तुम्हारे साथ ही खाऊंगी।"

सुमन्त की शादी माघ यानी अंग्रेजी महीने के हिसाब से दिसम्बर के अन्त में हो रही है। मन्नो दिन-रात अपने पुत्र की खुशामद और खातिरदारियों में लगी रहती थीं कि वह 'ना न कह दे। दशहरे के दिन रोक की रसम करने के लिए पुराने घर से आशू भैये और उनकी बौटी सण्डीले गई। 'चम्पक मैन्शन' में ढोलक बजी, घरवालों का खाना-पीना हुआ। फिर सण्डीले से सुमन्त के लिए बेटी का भाई रसम की वस्तुएं लेकर आया। सब आए, केवल जयन्त ही 'चम्पक मैन्शन' में नहीं आए। पुत्र के इस सम्बन्ध को लेकर पति-पत्नी के रिश्ते में जो गांठ पड़ी थी वह अब इस मौके पर उजागर हुए बिना न रह सकी। सुमन्त भी इस सम्बन्ध से सन्तुष्ट नहीं, यह बात भी पारिवारिक जनों और सगे-सम्बन्धियों से छिप न पाई। उस दिन रात में सुमन्त जब अपने पिता के पास गया तो मन्नो खन्ना भी वहीं मौजूद थीं। सुमन्त पिता से लिपटकर रो पड़ा।

उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए जयन्त बोले : "नानसेन्स, अरे मजबूरियों को भी आखिर सहा ही जाता है, मैं अपनी मां के जोर-दबाव से फंसा था। तुम अपनी मां को आत्महत्या से बचाने के लिए यह बलिदान कर रहे हो। तुम्हारी तो पोलिटिकल एक्टिविटीज़ भी अब इतनी बढ़ती जा रही हैं कि मेरी तरह घर से बहुत नज़दीकी रिश्ता निभाए बगैर भी तुम्हारी ज़िन्दगी शान से कट जाएगी। ये देखो, हमारे मेहरबान मोहम्मद अली जिन्ना ने क्या-क्या सगूफ़े छोड़े हैं। अरे मन्नोजी, आज तुम्हारी नामरासिन ने इसकी सगाई की है यार, अब तुम बेटे का मुंह मीठा नहीं करोगी। मेरा मुंह भी मीठा कराओ भाई, आखिर बेटे का बाप···"

"मैं पहले ही तुम्हारा और अपना मुंह भी मीठा करने का इन्तज़ाम करके चली हूं। सुमन्तू का मुंह तो हमारे-तुम्हारे बहाने यों भी मीठा होता और तुम्हारे

कहने से और भी मीठा हो जाएगा।" मन्नो खन्ना भीतर कमरे में गई और दौड़ते हुए लौटकर आई,—"लो आई हैं इनकी मां, मैं पीछे बगीचे में चली जाती हूं।"

मन्नो टण्डन एक बड़े झावे में बहुत-से लड्डू, मिठाइयां और पति के लिए भोजन सामग्री लेकर आई थी। जयन्त ने उनके आने के पहले ही सुमन्त से अपनी बोतल और गिलास मंगवाकर पास रखवा लिया था और सुमन्त आइसबाक्स से ठण्डा सोडा निकाल रहा था। मां ने बेटे को देखा तो चौंकी, तभी जयन्त ने ऊंची आवाज़ में कहा: "मुबारक हो मन्नोजी! भई, मैं इसलिए न आ सका कि आज एक रियासती केस के फैसले का दिन था, दूसरे ये लीग-कांग्रेस के मसले पर एक मीटिंग में जाना जरूरी था। खैर। खुशी के दिन बेटा मेरे पास आ गया और उसकी मां भी आ गई, मैं बहुत खुश हूं।"

किन्तु मन्नो टण्डन खुश न हुई। उनके जनाने होश ने कहीं सौत का सुराग पा लिया था। कोने में रखे स्टूल के ऊपर आधा बन्द, आधा खुला कटोरदान, फलों की डोलची और स्टूल के किनारे रखे जनाने जूतों की जोड़ी। मन्नो खन्ना घरेलू स्लीपरें पहनकर ही निकल गई थीं। मन्नो टण्डन पति की बात के उत्तर में बोलीं: "यह बड़ा सयाना है, अपने बाप को खुश करने के लिए सौतेली मां के चरन छूने के लिए आया होगा, मेरे आने की खबर सुनकर भाग गई निगोड़ी।"

जयन्त ने झावा टटोलते हुए समधी के यहां से आए हुए लड्डुओं में से एक निकालकर कहा "सुमन्तू तुम्हारी मां की सगाई में आया हुआ पहला लड्डू मेरे पिताजी के मुंह में मेरी माताजी ने रखा था। मैं भी वही याद दोहराना चाहता हूं।" कहकर जयन्त ने वह लड्डू सुमन्त के मुंह की ओर बढ़ा दिया। सुमन्त पहले 'आप-आप' करता ही रह गया परन्तु जयन्त ने बेटे को लड्डू खिलाकर ही दम लिया। और बोले "मैं तो अभी पियूंगा भाई। हां, तो जिन्ना साहब ने नया शिगूफा क्या छेड़ा है, जानते हो?"

"हां, पिताजी।"

"उन्होंने कहा मुस्लिम लीग को मुसलमानों की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था स्वीकार किया जाए एवं मुसलमानों को कांग्रेस में शामिल करने से रोका जाए।"

"वाह-वाह, इसके माने तो यह है कि वह कांग्रेस को हिन्दुओं और लीग को मुसलमानों की एकमात्र संस्था मानते हैं।"

अपना गिलास उठाते हुए मन्नो की ओर बढ़ाकर कहा: "तुम्हारी अम्मीजान की खुशी के लिए -" एक घूंट पीकर फिर बोले - "ये जिन्ना नहीं बोल रहे हैं बेटे, उन्हें खुफिया तौर पर दिया गया चर्चिल का मन्त्र बोल रहा है। आगे हिन्दी-उर्दू की प्रॉब्लम भी भड़काई है। हमसे कहते हैं कि अगर तुम सिक्यूलर हो तो हिन्दी को भी अपने दफ्तर से निकालो।"

सुमन्त जोश में आ गया, कहा: "यह क्यों नहीं कहते कि हिन्दू मात्र को कांग्रेस

से निकाल दो।"

आधुनिक राजनीति पर पिता-पुत्र की बातें इतनी लम्बी छिड़ गईं कि मन्नो टण्डन कमरे में अकेली पड़ गईं, झुंझलाकर बोलीं : "हम इतने मन से खाना लाए हैं, पहले खा लो, फिर···"

नशे की झोंक में जयन्त झुझलाकर बोला : "मैं खा लूंगा भई, जब मेरी मर्जी होगी। हर जगह अगर अपनी मर्जी को लादोगी, तो मैं बर्दाश्त नहीं करूंगा।"

मन्नो टण्डन झुंझलाकर उठ खड़ी हुई : "हमसे तो तुम बाप-बेटन का बात करला ही नहीं अच्छा लगता हैगा। करो बातें, अपनी लाडली को भी बुलाय लेओ जहां छुपा रखा है, मैं जाती हूं।"

मन्नो टण्डन तेजी से कमरे के बाहर चली गई। उनका तांगा फाटक से बाहर निकल जाने के बाद कुछ देर में मन्नो खन्ना ने कमरे में प्रवेश किया।

"अरे, तुम कहां थीं ?"

"बाहर अंधेरे में पेड़ के पास खड़ी थी। बादल बहुत घिर रहे हैं भाई, सुमन्तू, न हो तो तुम मेरी गाड़ी पर घर चले जाओ बेटा। मैं बाद में चली जाऊंगी।"

सुमन्त अभी रुकने का बहुत आग्रह करता रहा मगर मन्नो ने बहुत आग्रह करके उसे विदा कर ही दिया।

एक ओर हिन्दू महासभा के लोग पाकिस्तान का दृढ़ता से विरोध कर रहे थे तो दूसरी ओर मुस्लिम लीगी नेता बलपूर्वक पाकिस्तान स्थापित करने की बात कह रहे थे। जयन्त और मन्नो टण्डन भी इसी प्रकार दो खेमों में बंटे हुए थे।

बरात चलने का दिन आ गया किन्तु जयन्त की इच्छा जाने की नहीं थी। एक दिन आशू आए : "आओ माई डियर आशू भैये, मैं तो आजकल कामों में इतना फंसा हुआ हूं कि तुम लोगों से मिल ही नहीं पाता।"

"ठेठरवालों के बाद कोई नया केस तो लिया नहीं है तुमने ?"

"ऐक्ट्रेस तो बचा ली पर वो महाराजा साला उल्लू की दुम फाख्ता बन गया। अब तुम्हारा बकस, बिस्तर कहां है। आशू भैये, तुम तो बड़े हो। ये बारात और जनवासे की घिसघिस मुझसे अब बर्दाश्त नहीं होती।"

आशू बोले : "भई, बनारसी मेरे पास आए थे। मैंने उनसे कह दिया कि जयन्तू हमरा अब मामूली आदमी नहीं है। कल बनारसी और सुमन्तू के होनेवाले ससुर दोनों हमरे पास आए थे और उन्होंने कहा कि जयन्त बाबू के ठहरने के लिए हमने एक बंगले में इन्तजाम कर रखा है। रही चलने की बात, सो अपनी गाड़ी पर जाओगे। लड़का तुमरे साथ जाएगा, हमरा नन्दू भी उसी गाड़ी पर बैठ जायगा, दिक्कत क्या है। बाकी बरात के लिए दो लारियों का इन्तजाम कर लिया है मैंने।"

"आशू भैये···"

"मैंये-वैये, मैं कुछ नहीं सुनूंगा, तुम्हें चलना ही पड़ेगा।"

जयन्त को हार मानकर आशुतोष टण्डन की बात स्वीकार करनी ही पड़ी।

मण्डीला-जैसी छोटी-सी जगह में ख्यातनामा नेता श्री जयन्त टण्डन का पहुंचना एक बड़ी बात थी। सुमन्त टण्डन और कुमारी लड़ैतो रानी के विवाह की बात उस छोटे-से कस्बे के लिए बहुत ही बड़ी बात बन गई। बिरादरी में खासी चहल-पहल थी। जयन्त की इच्छा थी कि विवाह सादगी से हो किन्तु यह सम्भव न हो सका। लड़ैतो के पिता ने यद्यपि सादगी ही साधी किन्तु दो-तीन जोशीले और धनी बिरादरीवालों ने अपनी तरफ से बहुत से उपहार दिए। सुमन्त की बरयात्रा में भी काफी भीड़ इकट्ठी हो गई थी।

दूसरे दिन जब बरात की विदाई होनेवाली थी, एकाएक मन्नो खन्ना की कार मण्डीले पहुंच गई। जयन्त मन्नो को देखकर चौंके : "तुम कैसे आईं?"

"रास्ते में बतलाऊंगी। तुम मेरी गाड़ी पर आ जाओ। तुम्हारी गाड़ी पर बहू-बेटे लखनऊ चले जाएंगे।"

"और हम लोग?"

"चलो तो, रास्ते में बतला दूंगी।"

यों तो जयन्त और मनोरमा खन्ना के आपसी सम्बन्धों की चर्चा किसी हद तक बिरादरी में फैली हुई थी ही, किन्तु मन्नो के आने से औरतों में काफी कनफुसकियां होने लगी।

"ए रानी, सुना है कि समधीजी बिदाई से पहले ही जा रहे हैं।"

"कहां जाय रहे हैं?"

"अब ई हम का बतावें। दोनों में पिरेम तो हैगा ही। लड़के के विहाव से आसिक-मासूक भी कहीं अपना बिहाव न करने जा रहे हों। जयन्तू बाबू ने फून किया होय कि आओ, हम तुम भी गनी विधवा बिहाव कर लें।"

"अरे ई मसखरी का वखत नहीं हैगा, रानी।"

"मसखरी न करें तो और क्या करें, बतावो। बड़े आदमियन के मन की बात हम क्या बताय सकत हैं, बस भगाय लिए जाय रही है समधी साहेब को।"

रास्ते में मन्नो ने बतलाया, "पण्डितजी की माता मर गई हैं।"

"पण्डितजी कौन, जवाहर भाई?"

"हां।"

क्षण-दो-क्षण चुप रहकर जयन्त बोला : "शेर की मां भी शेरनी ही थी। मुझे याद आ रहे हैं सन् बत्तीस के वो दिन जवाहर भाई, मिसेज पण्डित, कृष्णाजी और कमलाजी सभी जेल में थे और मुझे याद है कि उन दिनों राष्ट्रीय सप्ताह मनाया जा रहा था। इलाहाबादियों को चिन्ता थी कि जुलूस का अगुवा कौन बनेगा। माता स्वरूपरानी जी की तन्दुरुस्ती बहुत अच्छी नहीं थी फिर भी जब

उन्हें यह मालूम हुआ तो बोलीं—जवाहर जेल में है तो क्या हुआ, मैं चलूंगी तुम लोगों के साथ। उनकी बात सुनकर लोगों में भी बड़ा जोश आ गया और बहुत बड़ा जुलूस निकाला गया। 'इन्कलाब जिन्दाबाद,' गांधी जवाहर की जै के नारे गूंज रहे थे। माता स्वरूपरानीजी बहुत कमज़ोर थीं, ज्यादह चल भी नहीं सकती थीं इसलिए उन्हें कुर्सी पर बिठाया गया था। पुलिस अपने पूरे फ़ोर्स के साथ जुलूस रोकने के लिए तैनात थी, लाठियां बरसने लगीं। भीड़ तितर-बितर होने लगी। जिस कुर्सी पर नेहरू-माता ले जायी जा रही थीं उसे उठानेवालों की टांगों पर भी पुलिस के बेंत चले। बेंतों की मार से लड़खड़ाए हुए स्वयंसेवकों के हाथ से कुर्सी छूटकर गिर गई। बेचारी नेहरू-माता भी गिर गईं। लेकिन अन्धाधुन्ध मार के जुनून में पुलिसवालों ने इस पर कोई ध्यान ही न दिया। बेचारी बुढ़िया पर भी कई बेंत पड़ गए। उनके सिर में भी चोट आई। बाद में उन्हें पुलिस द्वारा उठाकर 'आनन्दभवन' पहुंचाया गया। जवाहरभाई बहुत ही बेकरार हो उठे थे, बेटे को सान्त्वना देने के लिए स्वरूपरानीजी खुद बरेली जेल गईं। जब वे वहां गईं तब भी उनके सिर में पट्टी बंधी हुई थी, कैसी बहादुर औरत थीं। वाह-गम-अ-महफिल देख ले यह घर का घर परवाना है।"

जयन्त और मन्नो दोनों ही इलाहाबाद पहुंच गए, सारा नगर शोकग्रस्त था।

जयन्त को देखकर जवाहरलाल मुस्कुराए: "आओ टण्डन।"

"मांजी के जाने की बात सुनकर बहुत अफ़सोस हुआ जवाहर भाई।"

"उम्र पूरी करके हरेक को जाना होता है, टण्डन! शी वाज़ ए ग्रेट लेडी।"

कुछ क्षण मौन रहकर जवाहरलाल फिर बोले: "जमाना बड़े नाजुक दौर से गुजर रहा है। हमें हर कदम तौल के बढ़ाना होगा। खैर···। फिर बातें होंगी।"

परिस्थितियां एक बार फिर भारत की आज़ादी के लिए बृटिश शासन से अन्तिम टक्कर लेने के वास्ते कांग्रेस को मजबूर कर रही थीं। द्वितीय महायुद्ध के छिड़ने पर ब्रिटेन ने राष्ट्रीयवादी भारत की सम्मति लिए बिना ही उसे युद्ध में सम्मिलित घोषित कर दिया। विरोधस्वरूप प्रान्तों के कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलों ने इस्तीफे दे दिए और व्यक्तिगत सत्याग्रह आरम्भ करने की घोषणा कर दी गई।

लखनऊ में व्यक्तिगत सत्याग्रह औपचारिक रूप से शुरू होने से पहले ही राष्ट्रीय सप्ताह के दौरान से गिरफ्तारियां शुरू हो गई थीं। व्यक्तिगत सत्याग्रह में बैरिस्टर जयन्त टण्डन ने ही नहीं, उनके युवा पुत्र सुमन्त टण्डन ने भी भाग लिया। दोनों को नौ-नौ महीने की सजा हुई। किन्तु सुमन्त सजा की अवधि पूरी होने से कुछ पहले ही जेल में गम्भीर रूप से बीमार पड़ गया। संयोग से उसकी मां मन्नो

अपनी बहू सईंतो को लेकर मुलाकात के लिए जेल गई। पता लगा कि सुमन्त जेल के अस्पताल में हैं। मन्नो वहां पहुंचीं। बेटे की हालत चिन्तनीय देखकर मां और पत्नी दोनों ही घबरा उठीं। जेल के अंग्रेज डॉक्टर, हिन्दू जेलर, और अंग्रेज सुपरिन्टेन्डेन्ट के पास दौड़-धूप कर मन्नो ने अपने पुत्र की रिहाई के लिए आदेश जारी करवा ही लिया किन्तु अपने पति को जो दो दिन पहले जेल से छूटकर आए थे, एक बार भी फोन पर सूचना तक न दी।

शाम को तबियत और बिगड़ गई। जग्गो भैया के बेटे डॉ० ओ० पी० टण्डन को बुलाया। ओ० पी० सिविल सर्जन को लाए। उन्होंने दवाइयां ठीक बतलाईं, एक-आध दवा का सुझाव भी दिया और कहा : "देखभाल के लिए एक नर्स बुलवा ली जाय।"

सिविल सर्जन के जाने के बाद डॉ० टण्डन ने मन्नो से कहा : "चाची, नर्स बुलवाए देता हूं।"

मन्नो बोली : "वो मरी क्या करेगी, बहुरिया सब सम्हाल लेगी। उसे जो-जो करना है, सब बताए जाओ।"

"तुमने जयन्त चाचा को खबर कर दी है।"

दोनों हाथों के टोंटे उठाकर मुंह बनाते हुए मन्नो बोली : "मुझे क्या गरज पड़ी है। हियन सम्हालनेवाले बहुत हैंगे।"

"फिर भी उन्हें फोन तो करना ही चाहिए, चाची।"

"उन्हें क्या गरज पड़ी होगी जो फोन करें। वो बोतल पी-पिलाके अपनी महरानी को लिए सेज पे पड़े होयगे।"

ओ० पी० मन्नो चाची के हठीले स्वभाव को जानते थे, उठकर चले आए। 'चम्पक मैंशन' से अपने घर जाते हुए उन्होंने लालबाग में जयन्त को यह सूचना दे दी। उस समय उनके कमरे में कांग्रेस जनों की एक मीटिंग चल रही थी। ओ०पी० ने अलग से जाकर उन्हें सुमन्त का हाल बतलाया, जयन्त गहरे सोच में पड़ गए। मन में अपनी पत्नी को हरामजादी कहा, फिर बोले : "मेरी गाड़ी तो उन्होंने मुलाकात के लिए जेल जाने के दिन से ही मंगा ली थी। खैर, मैं किसी और…"

"आप अगर अभी चल सकते हों तो मैं आपको पहुंचाके फिर घर जाऊं।"

जयन्त घर पहुंचे। सास-बहू दोनों ही सुमन्त के पास थीं।

जयन्त को बहुत समय बाद अचानक कमरे में देखकर मन्नो के चढ़े तेवर सहसा उतर गए, चेहरे पर बेसाख्ता ऐसी खुशी चमकी कि वह छिपा न सकीं। सईंतो ने ससुर को पहली बार देखा था, वह घूंघट काढ़कर जाने लगी। जयन्त ने कुछ डपटते हुए कहा : "भई, इसका घूंघट हटाओ मन्नो! मैं यह पसन्द ही नहीं करता।"

इस समय पति को लगभग डेढ़-दो वर्षों के बाद घर में देखकर मन्नो जाने

किस जादू से जयन्त की आज्ञाकारिणी बन गई थीं। मालिक को घर में देखकर रामलोटन कुर्सी ले आया। जयन्त ने पूरे हाल-चाल पूछे, थर्मामीटर से सुमन्त का टैम्प्रेचर लिया। बुखार उतर रहा था, जयन्त का मन हल्का हुआ। एक बार पुत्र को दूसरी बार पुत्रवधू को देखा। फिर वातावरण को हल्का बनाते हुए अपनी पत्नी से कहा : "घबराने की कोई बात नहीं है, तसल्ली रखो। तुम्हारी बहुरिया का मुंह पहली बार देख रहा हूं मन्नो, तुमने मेरे बेटे की पत्नी अपने से ज़्यादह खूबसूरत तलाश की है।"

अपनी प्रशंसा की मीठी ठसक के साथ मन्नो मुस्कुराकर बोलीं : "चलो, हमरी पसन्द को अच्छा तो माना और हम तो बुरे हय हैं।"

"क्यों बहू, मैंने तुम्हारी सास को बुरा कहा था ?"

बहू ने मुस्कुराकर ज़रा-सा घूंघट और खींच लिया।

"मन्नो, कल सवेरे जब श्यामकिशोर दफ्तर में आए तो उससे कह देना कि मेरी चेकबुक ले आए। क्या दूं अपनी बहूरानी को, बोलो ?"

"अब हम क्या बतावैं, पूछो अपनी बहुरिया से, क्या लेगी।"

बहू चुप रही, सिर झुका लिया।

"ईश्वर चाहेंगे तो कल सुबह तक हमारा सुमन्तू आज से बेहतर होगा। मन्नो, रामलोटन को साइकिल पर दफ्तर भेज दो और वहां से मेरी चीज़ ले आए, तब खाना खाऊंगा। अंग्रेज़ी कहां तक पढ़ी है बहूरानी ?"

बहुत झिझकते हुए लड़ैतो ने कहा : "नाइन्थ में पढ़ती थी, तभी यहां आ गई।"

"खैर, तुम्हारी पढ़ाई की बाबत बातें फिर होंगी, मैं ऊपर अब आराम करने जाता हूं। अरे मन्नो सुनो, रामलोटन को भेजने के बजाय दफ्तर में फ़ोन कर दो और शिवनाथ से कहो, लेता आय। क्या समझीं ?"

"समझ गई, अकेले वही नहीं समझती हैं।" कहकर सुहाग-भरे ठसके के साथ मन्नो टण्डन ड्राइंगरूम में चली गईं।

तभी सुमन्तू ने आंखें खोलीं, चेहरे पर मुस्कान आई : "पिताजी।"

जयन्त ने उसके सिर पर हाथ रखते हुए कहा : "आराम करो, आराम करो, यू शैल बी आल राइट विद इन टू डेज़ माई ब्वाय।"

"पानी !"

"एक चम्मच ग्लूकोज़ डालकर देना, बहू।"

दो-तीन रोज जयन्त 'चम्पक मैन्शन' से बाहर ही न निकला। उस दिन मीटिंग में सुमन्त की बीमारी की खबर फैल ही चुकी थी, अनेक नेता-नेतानियां देखने आने लगीं। सुमन्त पहले से अधिक स्वस्थ था। एक दिन शाम को प्रान्तीय कांग्रेस के सक्रिय नेता और रफ़ी अहमद किदवई के अनन्य साथी जगनप्रसाद

रावत देखने आए।

जयन्त ने अपनी सौभाग्यवती बहूरानी की मुंह-दिखाई के निमित्त से दस हजार रुपयों की चेक काटी थी। मन्नो हीरे का सेट लाई थी। रावतजी के जाने के बाद सन्नाटे मे पति को दिखाया।

"अच्छा है, बहू को पहनाके साथ लाओ।"

"तब मुझे क्या दोगे। सुना है, उस निगोड़ी को तो तुमने बड़े-बड़े जेवर दिलवाए हैं।"

"पागल हो मन्नो, बेकार की बातें सोच-सोच के अपना दिमाग खराब करती हो और मेरा भी।"

मन्नो पति से चिपट गई, गिड़गिड़ाकर बोली : "मैं कुछ नही चाहती, अब अकेले रह-रहके बहुत सह चुकी।"

पत्नी का एक चुम्बन लेकर जयन्त बोले : "मैं वचन देता हूं कि खाली रहने पर घर में ही रहूंगा, लेकिन तुम्हे यह समझना ही होगा मन्नो कि देश के दिन कठिन आ रहे हैं। मुझे अक्सर बाहर रहना पड़ता है और आगे भी रहना पड़ेगा।"

मन्नो की आंखों में आंसू आ गए, बोली. "इसी का तो डर लगता है मुझे।"

मन्नो की बांह पकड़कर पलंग पर बैठते हुए जयन्त बोले : "देखो, तुम अब यह बातें छोड़ दो, मेरे काम मे वह इतना साथ देती है कि मैं उसे छोड़ नही सकता।···देखो तुम फिर नाराज होने लगी। इसी वजह से तो मैं तुम्हारे साथ रहने से घबराता हूं।"

"मैं तुम्हारे पैरों पड़ती हूं जी, अब फिर ऐसा नही कहूंगी।"

"जाओ, बहू को गहने पहनाकर ले आओ और तुम जो चाहो वह भी ले लो। जित्ते की चेक कहो, काट दूं।"

मान और मनउवल की रस्साकशी मे बात खत्म हुई, दिन बीतने लगे। घटनाएं तेजी से घट रही थीं। जापान के युद्ध मे कूद पड़ने तथा सिंगापुर, मलाया तथा बर्मा में जापानी सेनाओ के पहुंच जाने और ब्रिटिश सेनाओं के वहां से हट आने से युद्ध भारत की सीमाओं के निकट आ गया। गांधीजी ने कहा : "मेरा दृढ़ मत है कि अंग्रेजो को अब व्यवस्थित ढंग से भारत छोड़कर चले जाना चाहिए और जिस तरह उन्होंने सिंगापुर, मलाया और बर्मा को जापानियो के हाथ सौंप दिया, वह किस्सा यहां नहीं दोहराना चाहिए। मेरा अंग्रेजों से कहना है कि भारत को जापानियो के हाथ में न सौंपकर व्यवस्थित रूप से भारतीयो के हाथ मे सौंप दो।"

इकतालीस

सात अगस्त सन बयालीस के दिन बम्बई में कांग्रेस का अधिवेशन आरम्भ हुआ। लोगों में अपार जोश था। जयन्त टण्डन ने बड़ा ही गर्म भाषण दिया। वे बोले : "जो अपनी स्वतन्त्रता के लिए लड़ता है, वह हमारी स्वतन्त्रता को छीनता क्यों है। हम लोकतन्त्र के पोषक हैं पर पहले हमें अपने यहां लोकतान्त्रिक शासन चलाने का अधिकार तो मिल जाना चाहिए।"

खूब तालियां बजीं।

आठ अगस्त को कांग्रेस का यह प्रस्ताव पास हुआ कि जनता अहिंसात्मक आन्दोलन के लिए तैयार हो और अंग्रेजों के लिए यह ललकार उठी कि 'अंग्रेजो भारत छोड़ो'। तरह-तरह के भाषणों में यह भी कहा गया कि हमें शायद अंग्रेज अब बाहर न रहने दें लेकिन हम भले ही जेल में बन्द हों पर जनता को देश की आजादी के लिए अहिंसात्मक आन्दोलन चलाने की पूरी छूट है। एक शहर, एक प्रदेश की ही बात न थी, सारा देश जोश की बारूदी सुरंग में ही सांस ले रहा था—'क्विट इण्डिया'। अब हम किसी भी शर्त पर अंग्रेजों की गुलामी बर्दाश्त नहीं करेंगे। एक तरफ से जापानी सेनाएं बढ़ रही हैं, दूसरी तरफ से हिटलरी तूफान जोश पकड़ रहा था। भारत की हुकूमत अगर भारतीयों के हाथ में न सौंपी गई तो उसकी इस तैंतीस करोड़ आबादी को कौन बचा सकेगा। नहीं, अब हम अंग्रेजों को बाहर निकाल करके ही रहेंगे चाहे कुछ भी हो जाए। सारा देश मानस एक ही प्रकार से सोच रहा था, वातावरण इतना गर्म और गुप-चुप योजनाओं से भरा हुआ था कि यह कहा नहीं जा सकता था कि कल क्या होगा।

आठ अगस्त की रात को ही गांधी और अन्य वरिष्ठ नेता बन्दी बनाकर अनजानी जगहों पर भेज दिए गए थे। चलते समय बापू ने कहा था "करो या मरो।"

नौ अगस्त को 'क्विट इण्डिया' का नारा बम्बई के बच्चे-बच्चे की जबान पर था।

सरकार ने अखबारों पर प्रतिबन्ध लगा रखा था। बम्बई की खबरें किसी को ठीक-ठीक पता ही न चल पा रही थीं कि वहां क्या हो रहा है। अखबारों में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, मुस्लिम लीग के मोहम्मद अली जिन्ना, हिन्दू महासभा के वीर सावरकर, दलित वर्ग के नेता अम्बेडकर आदि के बयान जरूर छप रहे थे।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने कांग्रेस को आन्दोलन स्थगित करने की सलाह दी थी।

मुस्लिम लीग के जिन्ना ने कहा कि : "आन्दोलन का लक्ष्य आजादी नहीं

बल्कि हिन्दू साम्राज्य की स्थापना है और इसी के कारण देश का मुसलमान इसमें कैसे शिरकत कर सकता है।"

हिन्दू महासभा के नेता वीर सावरकर ने खुलेआम हिन्दुओं से अपील की कि वे आन्दोलन में सहयोग न करें।

दलित वर्ग के नेता डॉ० अम्बेडकर ने आन्दोलन को गैरजिम्मेदाराना और पागलपन बतलाया।

सारे देशवासी इन नेताओं को देशविरोधी और अंग्रेज़ों को खुलेआम गालियां दे रहे थे।

देश की जनता पागल हो उठी थी। हीराबाग के पास एक बड़ा जुलूस उठा जिसे पुलिस ने रोका। पत्थरबाजी शुरू हो गई, जगह-जगह सवारियों को उतारकर उन्मत्त भीड़ बसों में आग लगा रही थी, टेलीफोन के तार तोड़े जा रहे थे, रेल की पटरियां जगह-जगह उखाड़ दी गई थीं।

जयन्त टण्डन बम्बई से लोकल ट्रेन पर घाटकोपर स्टेशन तक तो सही-सलामत पहुंच गए किन्तु आगे की पटरी उखड़ी हुई थी, ट्रेन रुक गई। घाटकोपर स्टेशन पुलिस वालों से भरा हुआ था और वह लोगों को, खासतौर से खादी पहने लोगों को सन्दिग्ध दृष्टि से देख रही थी। उनको पकड़-पकड़ कर तुक-बेतुक की पूछताछ कर रही थी। खादीधारी जयन्त ने सोचा कि अगर मुझे घेरा तो मैं सालों को मारे बिना नहीं छोड़ूंगा और मुफ्त में गिरफ्तार हो जाऊंगा। जयन्त गिरफ्तार नहीं होना चाहता था। झटपट कुर्ता उतारकर फेंका, पाजामा और बनियान पहने ही दूसरी ओर से उतर गया। पुलिस उस ओर भी लाठियां लिये मौजूद थी और सन्दिग्ध लोगों की ओर चौकन्नी होकर नज़र डाल रही थी। घाटकोपर पर रहनेवालों की भीड़ हड़बड़ाई हुई उतरी। उन्हीं के बीच में जयन्त भी जा मिला। एक पुलिसवाले ने बनियान खींचकर उसे पकड़ा, "कोण आय कुठे जात आहे।"

"अरे, मैं कोठे-बोठे पर नहीं जाता यार। माणिकलाल सेठ का कारिन्दा हूं। क्यों मुझे पकड़ता है, चल हट। अंग्रेज सरकार की जय।"

बनियान फट गई लेकिन वह भाग निकला। फटी बनियान पहने सड़क पर आया। सड़कों पर सन्नाटा था। कोने में एक चायवाले की दुकान का एक पल्ला खुला हुआ था। वह उसी में घुस गया। "अरे-अरे क्या करता है, इधर कूं घुस आया?"

"ए भाई, खाली-पीली बोम मत मार, पुलिसवाले सालों ने मेरे कपड़े फाड़ दिए। तू मुझे चाय पिला दे, मेरे यार।"

दुकानवाले ने पुलिस को दो गालियां दीं : "ये साला लोग बहुत जुलुम करता है।" यह कहकर उसने पहले दरवाज़े का आधा पल्ला बन्द किया, "धोबीतलाव

का क्या खबर मिला ?"

'धोबीतलाव क्या यार, पूरे शहर में पुलिसवाले धोबीपाट मार रहे हैं। यह वतलाओ यहां से थाने कैसे जाएंगे। मैं पुलिसवालों की नज़र में नहीं पड़ना चाहता।"

"अच्छा-अच्छा, चहा पियो, तुम देशभक्त है, हमारा मित्र है, लेकिन तू कम्यूनिष्ट तो नहीं है ?"

"नहीं-नहीं, वावा कम्युनिस्ट होता तो सैन्डर्स रोड के राजभवन में होता, वाहर क्यों निकलता।"

"देशद्रोही शाला लोग वोलता, हमारा वाप रूस लड़ रहा है, अंग्रेज़ों से मत लड़ो।" चायवाला बड़बड़ाता हुआ चाय वनाने लगा।

पाजामे के नीचे जांघिए की जेव से पर्स निकाला, चायवाला वोला : "न को—न को, मैं तुमसे पैशा नहीं लेगा।"

जयन्त ने चाय पी। चायवाले ने सहानुभूति के साथ वतलाया कि "आगे चले जाओ, तिकड़े लोकल ट्रेन चालू आहे, तुमको मिल जाएगा।"

चायवाले की हमदर्दी से जयन्त भावुक हो गया। चलते-चलते उसे छाती से लिपटा लिया।

दुकान से वाहर निकलने से पहले पुलिस से वचने के लिए उसने अपना एक तरफ का पाजामा घुटने तक फाड़ लिया। सड़कों पर तब तक सन्नाटा हो चुका था। एक टैक्सी जा रही थी। उससे थाने का किराया पूछा, वोला : 'थ्री हण्ड्रेड रुपी।"

"अरे वावा, किसी सेठिया से मांग। मेरे पास इतने पैसे कहां हैं ?"

अगले स्टेशन पर भी गाड़ी न मिली, रेल-पटरी के सहारे-सहारे जयन्त आगे बढ़ने लगा। किसी तरह रात के साढ़े-नौ वजे थाने जा पहुंचा। उसके एक परिचित कानपुर के फूलचन्द अग्रवाल ने वहां ग्लास फैक्ट्री लगा रखी थी। फैक्ट्री वन्द, सारा नगर-उपनगर भांय-भांय कर रहा था। फैक्ट्री के चौकीदार से फूलचन्द के घर का पता पूछा। नंगे वदन, आधा पैर फटा पाजामा पहने व्यक्ति को पहले तो उसने पागल समझा, पर वाद में समझकर वतला दिया।

फूलचन्द जी के नौकर ने दरवाजा खोला। उनकी धजा देखकर वह विना कुछ कहे ही दरवाजा वन्द करने लगा तो जयन्त ने दरवाजे को हाथ से दवा दिया और कहा : "सेठजी से कह दो कि लखनऊ से वैरिस्टर टण्डन आए हैं। जाकर वोलो, मेरी सूरत मत देखो।" जयन्त ने डपटकर कहा।

फूलचन्द ड्राइंगरूम में ही वैठे थे, वहीं से नौकर को आदेश दिया : "शंकर, आने दे।" ड्राइंगरूम में पहुंचते ही फूलचन्द जयन्त को पहचान गए, सोफे से उठते हुए वोले : "यह क्या हाल वना रखा है वैरिस्टर साहव ?"

"अरे पूछो मत यार, धोबीतलाव से आ रहा हूं इसीलिए मेरा धोबीपाट हो गया है। फूलचन्दजी, पहले मैं एक बार नहाऊंगा। मेरे कपड़े एस्टोरिया होटल में ही छूट गए, भागदौड़ में उधर जाने का मौका ही न मिला।"

"उसकी चिन्ता न कीजिए, कपड़े आपको मिल जाएंगे।"

नहा-धोकर फूलचन्द की धोती-कमीज पहन जयन्त बाहर निकले। फूलचन्द बोला : "अभी-अभी मैसेज मिला है—गांधीजी और तमाम लीडर्स पकड़ लिये गए।"

"यह तो मैं समझता ही था। किस जेल में रखे गए हैं?"

"किसी को कुछ पता नहीं बैरिस्टर साहब, आपके लिए खाना बन रहा है। इस बार तो गवर्नमेन्ट बुरी तरह से कस कर रही है आन्दोलन को।"

"यह आशा तो की ही जा रही थी। फूलचन्द, मुझे यहां से जल्द-से जल्द लखनऊ जाना होगा।"

"ठीक है, ठीक है, अभी तो खाना-वाना खाओ भाई। सबेरे 'एस्टोरिया' से सामान-वामान लाकर तीन बजे पंजाब मेल में रवाना कर दूंगा।"

रात में जयन्त को नींद न आई। गुदगुदे पलंग पर इधर-से-उधर करवटें बदलते ही समय बीता। सुबह फूलचन्द की पत्नी और उनके बेटे से बातचीत हुई, जलपान हुआ। दोनों मित्र कार पर बैठकर एस्टोरिया होटल गए। लौटते हुए जयन्त ने कहा : "दोस्त, यह मेरा अटैचीकेस तुम अपने ही घर में रख लो। मैं तुम्हारे ये मिलवाले कपड़े पहनकर जाऊंगा। और सुनो, मेरा थर्ड क्लास का टिकट लेना, कितने रुपये दे दूं।"

"यह सब चिन्ता न कीजिए! आप गाड़ी में बैठ जाएंगे मगर बहुत तकलीफ़ होगी बैरिस्टर साहब।"

"यह सब चिन्ता मत करो यार। तुम्हारी उस लखनऊवाली प्रापर्टी का क्या हुआ, जिसका केस मैंने लड़ा था?"

"अरे, वह तो कब की बेच दी अब तो पूरी तरह से यहीं सेटिल कर गया हूं।"

जयन्त रास्तेभर यात्रियों की बातें सुनता रहा। जयन्त के मन में न जाने कितनी पुरानी बातें स्मृति के दृश्य बन-बनकर आती रहीं। स्वदेशी आन्दोलन, बंगाल में होनेवाले सन् आठ-नौ के बमकाण्ड, इंग्लैण्ड की यादें, जलियांवाला बाग का अत्याचार, असहयोग के दिन, हिन्दू-मुस्लिम दंगे, सन् तीस-बत्तीस का आन्दोलन, जेल के दिन, कितना उत्साह था लोगों में। सोचने लगा, गांधीजी के आन्दोलन ने हमें दिशा तो दी पर देश को सुस्थिर गति से आगे न बढ़ा सके। अब क्या होगा। कहां ले गए इन नेताओं को। रेल के यात्री आपस में बातें कर रहे थे कि अब की से सब-के-सब नेताओं को भून डालेंगे। नहीं, अंग्रेज ऐसा हरगिज नहीं करेंगे।

कानपुर स्टेशन पर गाड़ी रुकी। सुमन्त फर्स्ट, सैकण्ड और इण्टर क्लास के डिब्बे-झांक-झांककर परेशान हो गया। जयन्त की नजर अपने बेटे पर पड़ी, आवाज़ दी : "सुमन्तू!" सुमन्त चौंक गया। फिर दूसरी आवाज़ दी।

पिता को देखकर पुत्र की आंखें चमक उठीं : "यहीं उतर पड़िए पिताजी। आपका लखनऊ जाना ठीक नहीं होगा। पुलिस घर और लालबाग के दफ्तर की चौकसी कर रही है और एक तरह से तो कानपुर के प्लेटफार्म पर भी शायद आपकी निगरानी हो रही हो।"

जयन्त गहरे सोच में पड़ गए, फिर बोले : "अच्छा, कम्पार्टमेन्ट से बैग तो उठा लूं फिर आगे का प्रोग्राम बनाऊंगा।"

सुमन्त हंसकर बोला : "बैग तो आप अपने हाथ में लिये हैं पिताजी!" जयन्त ने अपने बायें हाथ के बैग को उठाके देखा और फिर खुद भी हंस पड़े। सुमन्त बोला : "मौसी भी आई हुई हैं।"

"कौन मन्नो! कहां है?"

"मैं उन्हें सेकेण्ड क्लास वेटिंगरूम में बिठला आया हूं।"

"चलो।"

मनोरमा जयन्त को देखते ही खिल पड़ी, कहा : "सुमन्तू, तुम्हें ले ही आया।"

जयन्त बोले : "बेटे, हमारी राय में एक तांगा कर लो। हंसो के यहां इत्मीनान से बैठकर बातें करेंगे।"

हंसराज टण्डन भाई और भतीजे को देखकर खुश हुए किन्तु मनोरमा के प्रति केवल औपचारिक शिष्टाचार ही दिखलाकर रह गए। "आप तो बम्बई से आ रहे हैं भइए?"

"हां, और लखनऊ जा रहा था कि इन लोगों ने मुझे यहां उतार लिया।"

"अच्छा किया। तो पहले नहाइए-निबटिएगा कि चाय मंगवाऊं?"

"पहले चाय मंगवाओ और कमरे का दरवाज़ा बन्द करो, मैं इन लोगों से बातें करूंगा।"

जयन्त ने सब हाल-चाल सुने और कहा : "कुछ भी हो, मैं एक बार लखनऊ ज़रूर जाऊंगा।" सुमन्त और मनोरमा ने समझाने की बहुत कोशिश की किन्तु जयन्त ने डांट दिया : "जो कहता हूं सुनो, मुझे गिरफ्तार करने के लिए अभी हमारे पुलिस विभाग को बहुत कुछ सीखना होगा।"

निबटे-नहाए, भोजन किया, तब तक हंसो के एकाउन्टेन्ट एक मिस्त्री से बात कर आए थे जो पुरानी मोटरों की मरम्मत करके उन्हें चलने-लायक बना देता था। कहां तो तीस रुपये भाड़े पर लखनऊ से कानपुर तक मोटरें चला करती थीं और कहां इस वक्त दो सौ रुपये आवाई-जावाई में सौदा तय हुआ। रास्ते में

सुमन्त से बातें हुईं, जयन्त ने कहा : "तुम मवैया पर उतरकर किसी इक्के-तांगे पर घर चले जाना और मैं एक बार लखनऊ में हलचल मचाकर गायब हो जाऊंगा।"

"कहां जाओगे ?" मन्नो ने जयन्त के हाथ पर हाथ रखकर पूछा।

"यही तय नहीं करपाया, लखनऊ में अण्डरग्राउण्ड होना खतरे से खाली नहीं होगा। सुनो, बरेली चलें तो कैसा रहे ?"

'वहां कुशलो भैये कुछ दूर के रिश्ते से हमारे ममेरे भाई हैं।"

"कौन कौशल किशोर खन्ना ?" मन्नो ने सिर हिलाया। "उन्हें मैं जानता हूं। ठीक है, मैं वही चला जाऊंगा। लेकिन तुम भी लखनऊ में ही रुक जाओ, मेरे साथ जाने की जरूरत नहीं।"

मन्नो अड़ गईं, बोलीं : "बरेली तक मैं तुम्हारे साथ अवश्य चलूंगी।"

लखनऊ में भी तेज सरगर्मियां तो पहले से ही शुरू हो गई थीं लेकिन इस समय जोश की तेज आंधियां उठने लगी थी। पुलिस भी दूसरी ओर बहुत सतर्क थी। नौ अगस्त को सवेरे ही शहर कांग्रेस और नगर की सभी मंडलीय कांग्रेस के दफ्तरों पर भी छापे पड़े। सब जगह के कागज-पत्र पुलिस उठा ले गई। जहां-जहां राष्ट्रीय-कर्मियों के आने-जाने और छिपने की जगह हो सकती थी वहां भी सी० आई० डी० तैनात कर दी गई। अमीनाबाद का महावीर होटल राष्ट्र-कर्मियों की चहल-पहल से प्रायः भरा ही रहता था। होटल के मालिक पण्डित रामप्रसाद मिश्र सजग राष्ट्रीयकर्मी थे। सी० आई० डी० का जो व्यक्ति उनके यहां तैनात किया गया था वह मिश्रजी का हितैषी तथा मन-ही-मन में देशभक्त भी था। उसने मिश्रजी को आते ही सूचना दे दी—आपके होटल पर सरकार की शनि-दृष्टि पड़ चुकी है। कृपा करके कुछ दिनों कांग्रेसवालों को अपने यहां न ठहरने दें।

शहर में कांग्रेस के प्रमुख नेता चन्द्रभानु गुप्त अपने भतीजे के यहां से गिरफ्तार कर लिये गए थे। महेशनाथ शर्मा, त्रिलोकी सिंह, पुलिनबिहारी बनर्जी, राजनारायण खन्ना, गोपालनारायण सक्सेना, ठाकुरप्रसाद सक्सेना आदि नजर-बन्द कर लिये गए थे। केवल नगर के एक प्रमुखतम नेता मोहनलाल सक्सेना उनकी पकड़ाई में न आए। वह सात अगस्त को होनेवाली बम्बई कांग्रेस में भाग लेने गए थे, वहां से लाहौर, पेशावर और फिर सीमान्त गांधी के गांव पहुंच गए। पुलिस से बचते-कतराते वह एक सितम्बर को लखनऊ के पास काकोरी स्टेशन पर गुप्त रूप में उतरे। उनके ऊपर दस हजार का इनाम था लेकिन इस समय वह पुलिस की पकड़ाई में नहीं आना चाहते थे और न आए। लखनऊ में कई मित्रों और सम्बन्धियों के यहां निरन्तर घर बदलते हुए रहे और आन्दोलन को सक्रिय किया।

लेकिन लखनऊ तो पहले ही से आग का गोला बना हुआ था। दस अगस्त को आलमनगर और सिटी स्टेशन पर जवानों के हमले हुए। तोड़-फोड़, आगजनी हुई, बड़ा तहलका मच गया था। नगरभर के स्कूलों और कॉलिजों के छात्र जुलूस निकालकर अमीनाबाद के झण्डेवाले पार्क में झण्डा फहराने की योजनाएं बना रहे थे लेकिन गोरी फौज ने अमीनाबाद के झण्डेवाले पार्क पर कड़ा प्रतिबन्ध लगा रखा था। इसी छात्रान्दोलन में चर्च मिशन कॉलिज के शफ़ीक नकवी और खलीक नकवी भी गिरफ्तार हो गए।

दस अगस्त को विश्वविद्यालय से छात्रों का जुलूस निकलकर अमीनाबाद की ओर चला था। उस पर पुलिस ने हवाई फायर किया। गोलियों की बौछार के नीचे से पांच-छः सौ विद्यार्थी पुराने मोतीमहल पुल पर से होते हुए निकल आए। एक दक्षिणी छात्र वेंकटेश्वर राव गोली से घायल भी हो गया। उस समय के विक्टोरिया पार्क (अब बेगम हज़रत महल पार्क) में विभिन्न स्कूल-कॉलिजों के तथा विश्वविद्यालय के भी प्रायः दो हज़ार विद्यार्थी जिन्हें पुलिस ने पुल पार कर विश्वविद्यालय के अन्दर नहीं जाने दिया था, उन लोगों के साथ जुड़ गए। जुलूस हज़रतगंज, विधानसभा मार्ग, विश्वेश्वरनाथ रोड, कैसरबाग, नज़ीराबाद होते हुए अमीनाबाद की ओर बढ़ा। इस बीच पुलिस ने आठ बार लाठी.चार्ज किया। लेकिन विद्यार्थी थे कि मौत को चुनौतियां देते हुए आगे बढ़ते ही रहे। यद्यपि पुलिसवालों से अधिक सिविक गार्डों ने, जिनमें शहरभर के गुण्डे भरती कर लिये गए थे, छात्रों को बर्बरता से पीटा। लेकिन आज़ादी के दीवाने जवानों का जोश भला गुण्डों से कब हार मान सकता था। झण्डेवाले पार्क में गोरों की फौज का पड़ाव था इसलिए विद्यार्थी उस ओर न जाकर घण्टाघर पार्क में चले गए। हरिकृष्ण अवस्थी ने उस सभा की अध्यक्षता की और 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' का प्रस्ताव पास किया।

जोश और नारों से भरी हुई सभा पर अचानक पुलिस की लाठियां बरस पड़ीं। गिरफ्तारियां शुरू हो गईं। हरिकृष्ण अवस्थी, रामकृष्ण सिन्हा, सुबोध मुकर्जी, नगर के प्रसिद्ध धनी-व्यवसायी कृष्णजी के पुत्र आनन्दनारायण, सेठ रामजस के पौत्र किशोरीलाल अग्रवाल, गोपालनारायण कक्कड़, रजनीकान्त मिश्र, हरिचरन निगम, काजी जलीलअब्बासी आदि सभी प्रमुख छात्र नेता तुरन्त गिरफ्तार कर लिये गए।

छात्र उत्तमचन्द ने कैसरबाग स्थित पार्क में मलका विक्टोरिया की संगमरमरी मूर्ति की नाक क्रोध में आकर तोड़ डाली। अमीनाबाद चौकी पर बम फेंका गया। श्रीराम रोड स्थित कलकत्ता कमर्शियल बैंक लूटा गया। काल्टर्न होटल, गणेशगंज और ह्वीवेट रोड के डाकखाने लूटे गए। चौक सब्जीमण्डी में लाला लक्ष्मणदास रस्तोगी की हवेली में भी लूट-पाट हुई। जिससे चौक, अशर्फाबाद और राजा-

बाजार के महाजनों के यहां सनसनी फैल गई। हर धनी-महाजन ने अपनी हवेली को किराये के प्राइवेट लठैतों से सुरक्षित कर लिया। लेकिन धनियों के मोहल्ले में सभी धनप्रेमी नहीं, कुछ देशप्रेमी युवक भी थे।

उसी क्षेत्र के रामकिशोर रस्तोगी और बरेली के बृजगोपाल शर्मा साथ मिलकर शहर का प्रमुख पाक्षिक 'जन्मभूमि' प्रकाशित कर रहे थे। उन्होंने यहियागंज के एक मकान में गुप्तरूप से एक हैण्डप्रेस लगा लिया था और पाक्षिक 'जन्मभूमि' ऐसी रीति से निकाल रहे थे कि पुलिस महीनों प्रेस का पता न लगा सकी। पाक्षिक 'जन्मभूमि' नियमित रूप से प्रान्त के अनेक क्षेत्रों में अचानक कैसे पहुंच जाया करता था इसको भी पुलिसवाले भांप न सके। एक दूसरे उत्साही युवक शिवकुमार द्विवेदी गुप्त रूप से साइक्लोस्टाइल पर छापकर साप्ताहिक 'आज़ादी' निकाल रहे थे, जिसे बेचते हुए चौपटियों के श्री उमानारायण बाजपेई तो गिरफ्तार हो गए लेकिन शिवकुमार द्विवेदी अन्त तक पुलिस की पकड़ाई में न आए। मलीहाबाद में पुलिस ने बलपूर्वक अब्दुलवहाब अंसारी के घर का ताला तोड़कर तलाशी ली और घर की वस्तुएं उठाकर ले गई। डण्डे के प्रहारों से उनके दांत तोड़ डाले और हवालात में बन्द कर दिया। गांवों में पुलिस बड़ी कठोरता से अपना दमन चक्र चला रही थी।

लाटूश रोड पर श्रीराम आफनेज के मैदान में युवकों ने डेढ़-दो सौ की भीड़ जुटा ली थी और जोशीला भाषण चल रहा था। जयन्त ड्राइवर से बोले : "भइया भोलेनाथ, यहीं-कहीं होशियारी से गाड़ी खड़ी कर लो। ध्यान रखना, पुलिस की नज़र इन बहूजी पर न पड़े।"

घुटे सिर, कसरती बदन और खिचड़ी मूंछोंवाले भोलेनाथ बोले : "जयन्त साहब, हम आपको पहचान गए। क्या करें, बाल-बच्चेदार हूं। नौकरी से छुट्टी नहीं मिलती मगर रोम-रोम मेरा देशभक्त है। इस सड़क से निकालकर पीछे खड़ी करते हैं गाड़ी, आप तुरंत वहीं भाग आना।"

मैदान में घुसते ही कुछ युवकों की नज़र जयन्त पर पड़ गई। 'जयन्त टण्डन ज़िन्दाबाद' के नारे लगने लगे, पीछे से किसी ने कहा : "पुलिस की गाड़ियां हीवेट रोड के चौराहे तक पहुंच गई हैं।"

'जयन्त टण्डन ज़िन्दाबाद' के नारे सुनकर सभा की भीड़ जयन्त की ओर दौड़ी। भीड़ के बीच में तेज़ी से गुज़रते हुए जयन्त उत्तेजित स्वर में कहता चला गया : "सरकारी दफ्तरों में आग लगाओ, थाने जलाओ, पुलिस पर पथराव करो, मरो या मारो। बेकार में पुलिस की पकड़ाई में मत आओ, कुछ करके दिखाओ।" मैदान-भर में भीड़ छितराने लगी।

मैदान की चहारदीवारी लांघकर जयन्त पिछवाड़े की गली में कूद पड़े। पचपन-छप्पन वर्ष की आयु में भी अभी उनके शरीर में फुर्ती बहुत थी। जब पुलिस

मैदान में पहुंची तो वहां चिरई का पूत नज़र नहीं आ रहा था। मैदान के फाटक में घुमते ही पुलिस की गाड़ी का टायर तेज़ आवाज़ के साथ फट गया। फाटक पर पड़ा हुआ मिट्टी का कुल्हड़ दरअसल कुल्हड़ नहीं था बल्कि देसी फूहड़-सा बम था। पुलिस गाड़ी से उतर पड़ी। जब तक वहां हलचल मचे तब तक जयन्त और मन्नो बहुत आगे जा चुके थे। जयन्त ने भोलेनाथ की पीठ पर हाथ रखकर कहा "दोस्त या तो कानपुर ले चलो और वहां से किसी नई गाड़ी का इन्तजाम कर लेंगे या फिर ...।"

"जाओगे कहा सरकार, यह बताओ ?"

"बरेली जाएंगे दोस्त, तुम्हारी यह खटारा गाड़ी क्या इतनी दमदार है ?"

"अरे बाबूजी, देखै-भर की खटारा है। आप हुकूम देओ तो सीधे लन्दन जाकर दम लेगी।"

"तो फिर बरेली की तरफ कूच करो, पैसा तुम्हें मुंह-मांगा दूंगा।"

"हमें इस समय पैसे की भी परवाह नहीं बाबू साहेब, आप हमारे देस की इत्ती सेवा कर रहे हो तो क्या हम नहीं करेंगे।"

गाड़ी जब बरेली की राह पर थी तो सारे लखनऊ शहर में यह शोर मच गया था कि जयन्त टण्डन लखनऊ आ गए हैं और यहीं-कहीं अण्डरग्राउण्ड हो गए हैं। पुलिसवाले भी यही सोच रहे थे। रास्ते में एक जगह गाड़ी बिगड़ी भी मगर भोलानाथ ने आधे-पौन घण्टे में उसे फिर दुरुस्त कर लिया। रात के दस बजे वह दोनों बरेली में बाबू कौशलकिशोर खन्ना की बैठक में थे।

बाबू कौशलकिशोर के घर में कुछ कांग्रेसियों की भीड़ बैठी विचार-गोष्ठी कर रही थी। दो युवक भी थे मुश्ताक हुसैन और भैरोंप्रसाद वर्मा। बरेली पहुंच-कर कुशलो बाबू के यहां ही यह सूचना मिली कि गांधीजी आगा खां पैलेस और नेहरू, आजाद, आचार्य नरेन्द्रदेव आदि वर्किंग कमेटी के नेता अहमदनगर फोर्ट में कैद किये गए हैं। और आप लोग यहां क्या करेंगे – सिर्फ बातों का ही जोश दिखलाएंगे ?"

"नहीं-नहीं, हम लोग भी कल जुलूस निकालनेवाले हैं।"

"अकेले जुलूस ही निकालने से काम नहीं बनेगा जनाब। मैं रास्ते में ही सुन आया हूं कि गवर्नमेन्ट ने तिरंगे झण्डे लगाने पर सख्त रोक लगा रखी है। हमें इसका जवाब देना ही चाहिए। यहां के हर स्कूल और कॉलेज के ऊपर कल जुलूस निकालने के साथ ही तिरंगा झण्डा भी दिखलाई देना चाहिए। क्या समझे ?"

"मगर स्कूलों पर तो बड़ी सख्त निगरानी है, टण्डन जी ?"

"क्या यहां के जवानों का खून पानी हो गया है ?"

कौशलकिशोर खन्ना बोले : "नहीं, ऐसी बात नहीं है जयन्त बाबू। लेकिन

हम लोग रफी साहब और जगनप्रसादजी रावत के आदेशों की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"कौन गया है आदेश लेने ?"

"हल्लो सेठ।"

"वह जब तक न आएं तो आप लोग चुप बैठे रहेंगे और मान लो, वह लखनऊ में या रास्ते में गिरफ्तार हो जाएं तो…"

भैरोप्रसाद जोश में आकर खड़े हो गए, बोले : "नहीं साहब, आप जो आदेश देंगे उसका पालन होगा। जुलूस भी निकलेंगे और झण्डे भी फहराए जाएंगे।"

"लेकिन सिर्फ यहां ही नहीं, हर गांव, हर तहसील, हर कस्बा बस से आग का शोला बन जाय।"

मीटिंग समाप्त हुई। मुख्तार और भैरो को छोड़कर सभी लोग चले गए। घर के दरवाजे बन्द हुए।

बीस-इक्कीस वर्ष की एक खुले गेहुए रंग की तेजस्विनी नवयुवती कमरे में आई। जयंत ने उसे देखा, मन अतल्प में उसकी ओर सहसा खिचने लगा। लड़की कौशलकिशोर से बोली : "बाबू खाना तैयार है, आप लोग खा लीजिए।"

मन्नो बोली : "अरे, ये लड़की बड़ी होशियार है, क्या नाम है तुम्हारा बिटिया ?"

"जी, शारदा।"

"ले आओ, जो रूखा-सूखा बनाया हो। इनको जानती हो, यह हैं जयन्त टण्डन और ये हमरी बहिन हैंगी मनोरमा।"

शारदा ने आगे बढ़कर दोनों के पैर छुए और चली गई। कौशलकिशोर कहने लगे : "इसकी मां बड़े ही जड़विचारों की औरत थी। मैं जेल गया था। उन्होंने इसकी शादी तय कर दी, ब्याह हुआ और बेचारी सत्रहबरस की उमर में विधवा भी हो गई। बड़ी तेज लड़की है जयन्त बाबू…मुझे तो लगता है कि दो-एक दिन से ज्यादह मैं भी बाहर नहीं रह पाऊंगा। पुलिस इस घर की तलाशी लेगी, इसका क्या होगा।"

"इसे मन्नो अपने साथ लखनऊ ले जाएगी।"

भैरो जोश में आ गया, बोला : "शारदा हमारी बहन है बाबू, इसका इन्तजाम हो जाएगा, आप चिन्ता न करें।"

"नहीं, इसे मन्नो अपने साथ लखनऊ ले जाएगी कुशलो बाबू। घर का जो और सामान आप हटाना चाहें, वह भी मन्नो ले जाएगी।"

"हां-हां, ई हमरे पास रहिए कुशलो भैये, ई ठीक कहत हैं।"

"लेकिन मेरा भी कुछ इन्तजाम होना चाहिए कुशलो बाबू।"

अगले दिन सुबह चार बजे ही भैरो एक गाड़ी का प्रबन्ध कर लाया, शारदा और मन्नो तथा खन्नाजी के घर का आवश्यक सामान उस पर रखवाकर उन्हें लखनऊ रवाना कर दिया। ड्राइवर अपना आदमी था चिन्ता की कोई बात न थी। चलते समय मुश्ताक से कहा: "मैं इन्हें लखनऊ छोड़कर आता हूं। तुम जुलूस के बाद टण्डनजी को कहां ले जाओगे।"

"फिक्र मत करो, मैंने सब सोच लिया है।"

दूसरे दिन बड़े बाजार में जुलूस निकला। लगभग तीस हजार व्यक्ति उस जुलूस में सम्मिलित थे। ऐसा लगता था कि मानो समुद्र में तूफान आ गया हो। मुश्ताक हुसैन और भैरो वर्मा ने छात्रों में ऐसा जोश भरा कि हर स्कूल और कॉलेज पर तिरंगे झण्डे लहराने लगे। विशाल जुलूस के भय से पुलिस और सरकारी अमले दुम दबाकर पीछे भाग गए थे। किसी की हिम्मत न थी कि तिरंगे को हटा सके।

कुतुबखाने पर पहुंचकर जुलूस ने एक विशाल सभा का रूप ले लिया। सभा के समाप्त होते ही हाकिम अमले सजग हुए। पुलिस जयन्त टण्डन को तो न पकड़ सकी पर बाबू कौशलकिशोर सभा के बाद ही गिरफ्तार हो गए। तब तक मुश्ताक जयन्त टण्डन का हाथ पकड़कर आड़े-तिरछे रास्तों से निकलकर लगभग डेढ़ मील दूर नगर की सीमा में पहुंच गया। एक बैलगाड़ी शहर की ओर जा रही थी, मुश्ताक बोला: "कहां जा रहे हो भइयन, अरे बरेली में तो गोलियां चल रही हैं, मर जाओगे तो बीवी रांड हो जाएगी।"

गाड़ीवान बोला: "अरे, लमड़े-लंमडियन पैदा करैं ते तो भला है रांड हो जाए। हम न जाव तो हमरा काम को करिहै?"

"अबे, काम आज ही करना है। वहां झगड़ा हो रहा है, पुलिस की गोली लग गई तो तू भी मरेगा और तेरे बैल भी—खाना कहां से खाएगा?" समझा-बुझाकर मुश्ताक ने पचास रुपये का लालच देके उसे दस-बारह कोस अपने गांव चलने के लिए राजी कर लिया। पचास रुपये तब बहुत बड़ी रकम थी, गाड़ीवान मान गया।

मनोरमाजी लखनऊ चली गईं। मुश्ताक हुसैन के गांव के घर पहुंचकर जयन्त ने कहा: "यह जगह काफी सेफ है, तुम अब शहर जा सकते हो, लेकिन ध्यान रखना कि कचहरियों और बाजारों में हड़ताल बराबर जारी रहे। कोशिश यह भी करो कि जवान तुम्हारे साथ ही रहें, एक-आध रेल पर भी कब्जा करो। बी० पी० के आते ही उसे मेरे पास भेज देना, मैं अण्डरग्राउण्ड तो हूं लेकिन इस हालत में भी बी० पी० के साथ आता-जाता रहूंगा, यह ध्यान भी रखना।"

छोटे-छोटे स्टेशन फूंक डाले गए, पटरियां उखाड़ दी गईं, कचहरियों में कागजात जला दिए गए, टेलीफ़ोन के तार उखाड़ दिए गए। जहां पुलिस शक्ति

कम होती वहा छात्र-दल भस्मासुर हो जाता था।

बलिया, आजमगढ, वस्ती, मिर्जापुर, फैजाबाद, सुल्तानपुर, बनारस, जौनपुर तथा गोरखपुर में विद्रोह की आग धधक उठी थी। ई० आई० आर० (ईस्ट-इण्डियन रेलवे) तथा बी० एन० डब्लू० आर० के रेलो की पटरियां कई जगह से इस तरह उखाड़ी गई कि इन पर गाड़ियों का चलना ही ठप्प हो गया था।

बलिया में भीड़ के उन्माद ने दस अगस्त के दिन से ही ऐसा जोर पकड़ा कि हर पुलिसथाने और चौकियों पर जनवल के आगे पुलिस वल को दवना ही पड़ा और नगरभर के पुलिस थानो व चौकियो पर तिरंगे झण्डे लहराने लगे। एक थाना घेरा गया, भीड़ के क्रोध को देखकर थानेदार हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाया, बोला : "देखिए, हम तो अब आप लोगो के तावेदार हैं। जो हुक्म करेंगे वही हमको करना होगा। आप झण्डा लगाना चाहते हैं, जरूर लगाइए। महात्मा-गाधी की जय, भारत माता की जय।"

क्रुद्ध भीड़ मे से एक जन बोले : "झण्डा तो लगेगा ही पर पूरे थाने का चार्ज हमे दीजिए। अब हमारा राज है।"

"हजूर माई-बाप, राज आपका है, थाना आपका है और मैं भी आप ही का सेवक हूं। क्रोध न करें, थाने के कागज-पत्तर सहेजकर आपको चार्ज देने के लिए मुझे दो दिन की मोहलत दें फिर थाना छोडकर चला जाऊगा। 'भारत माता की जय' 'इन्कलाब जिन्दाबाद'।"

थानेदार की यह चाल चल गई, भीड़ लौट आई। थानेदार ने हेडक्वार्टर से तुरन्त ही कुछ नई फोर्स बुलवाई और पुलिसदल के आते ही काले थानेदार ने गोरी सरकार की फर्माबर्दारी दिखलाते हुए थाने पर फहराते हुए तिरंगे झण्डे को उतारकर नोच-फाड़कर फेंक दिया। शीघ्र ही यह खबर शहर भर मे फैल गई। नेताओ ने तय किया कि इसका जवाब देना ही होगा।

अट्ठारह अगस्त को दोपहर होते-होते लगभग पच्चीस हजार आदमियों की भीड़ थाने पर एकत्र हो गई। इसमे श्रीमती धनेश्वरी देवी तथा श्रीमती राम-झरिया देवी समेत चौव्वन महिलाएं भी थीं। सभी के हाथ में तिरंगे झण्डे थे। महिलाएं लोकगीतों के माध्यम से जुझारू गीत गा-गाकर जनसमूह का उत्साह-वर्धन कर रही थीं। तो दूसरी ओर युवावर्ग, 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजु-ए-कातिल मे है' गा-गाकर चुनौतिया दे रहा था। जनसमूह का नेतृत्व भूपनारायण सिंह, सुदर्शन सिंह, राजकुमार मिश्र कर रहे थे। अन्य उपस्थित नेताओ में जंग बहादुर सिंह, शिवपूजन, देवनारायण आदि थे। बाद मे क्षेत्र के नेता बाबा लक्ष्मणदास, व्रजविहारी सिंह तथा जगदीश-नारायण तिवारी भी वहा पहुंच गए।

नेताओं ने थानेदार से थाना खाली करने और उन्हे उनके अधिकार दे देने

की मांग की। थानेदार उस समय थाने के कमरों को वन्द करके चौदह सिपाहियों समेत थाने की छत पर जा बैठा था और वहीं से वार्तालाप भी कर रहा था। बढ़ते दवाव को देखकर थानेदार फिर झण्डा फहराने को राजी हो गया किन्तु जनसमूह विश्वासघाती थानोदर की बातों में आने को तैयार न था। वह आज स्वयं झण्डा फहरा, थानेदार को गिरफ्तार कर और थाने पर अधिकार कर पिछली भूल का परिमार्जन करने के साथ-साथ थानेदार से झण्डे के अपमान का वदला लेने पर तुला हुआ था। थानेदार तथा सिपाहियों से हथियार छीन लेने के वाद ही जनता वहां से हटने को तैयार थी, हालांकि ऐसे जोरदार अभियान के लिए पर्याप्त तैयारी न थी।

नेताओं ने थानेदार के सामने यह शर्त रखी कि वह अपने सिपाहियों सहित नीचे उतर आए और रेल पटरी उखाड़ने आदि कार्यक्रमों में अपना सहयोग दे। वह भय से राजी न हुआ और कहने लगा कि जिन लोगों पर उसने दफा एक-सौ-दस चला रखा है वे इस भीड़ में मौका पाकर उसे मार डालेंगे। थानेदार ने छत पर फेंकी गई गांधी टोपी पहन ली और तिरंगे को चूमने लगा। पर भीड़ उसकी इस तरह की मक्कारी में आज नहीं आई। उसी समय कुछ लोगों ने अस्तवल से थानेदार का घोड़ा खोल दिया और अस्तवल को गिरा भी दिया, वगल के एक छप्पर को भी नष्ट कर दिया। करीब तीन-चार सौ व्यक्ति थाने का फाटक फांदकर थाने में घुस भी गए। सभी व्यक्तियों में एक ही ललक थी कि जल्दी से जल्दी राष्ट्रीय झण्डे को थाने के ऊपर फहरा दें। उन्मत्त थानेदार ने भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। पहली गोली सुदर्शन सिंह की जांघ में लगी जो आर-पार हो गई थी। गोलियां रुक-रुक के दगती रहीं, जनता आड़ लेकर अपना वचाव करने लगी और कभी-कभी ढेलेवाजी भी करती थी। क्रान्ति के दीवाने गोली खा-खाकर गिरते जा रहे थे किन्तु भीड़ हटने का नाम ही न ले रही थी। संयोग से उसी समय तेज वर्षा होने लगी, ऐसा लगता था मानो इन्द्रदेव भी गिरे हुए शहीदों पर अपनी अश्रुअंजलियां चढ़ा रहे थे।

उस समय गाजीपुर में भी ऐसा ही जवर्दस्त विप्लव हो रहा था। वहां के भी सभी थानों पर तिरंगे फहरा रहे थे। दो-तीन दिन तो यह स्थिति रही कि गाजीपुर जनपद से वृटिश शासन मानो समाप्त ही हो चुका था और वलिया भी उसी दिशा में तेजी से आगे वढ़ रहा था। वहां तो स्थिति उस कहावत के अनुसार हो गई थी कि जोगी अपना कम्वल छोड़ना चाहता था किन्तु कम्वल जोगी को छोड़ नहीं रहा था। जनता उन्मत्त हो उठी। जेलों में वन्दी सभी राजनीतिक नेता और कार्यकर्ता जवर्दस्ती छुड़ा लिए गए। भीड़ और भी जोश में आ गई। वह मुक्त किए गए नेताओं से यह मांग करने लगी कि अव शासनतन्त्र पर पूरा कब्जा करो। नेताओं ने टाउनहाल में भाषण किये, कहा कि : "घवराइए नहीं,

यह भी होगा, समय आने दीजिए।"

भीड़ चिल्लाई : "समय अब आ गया है, हमें अपनी बलिया पर अपना राज चाहिए।"

अत्यन्त लोकप्रिय और प्रभावशाली नेता चित्तू पाण्डे ने भी आकर लोगों को समझाया मगर अब कोई उनकी भी सुनने को तैयार न था। 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है'। थाने पर थाने लूटे गए, जलाए गए, बहुत से थाने-चौकियों के सिपाही तो ताले बन्द कर-करके भाग खड़े हुए थे, जनता ने उन्हें लूटा, जलाया। बलिया स्टेशन पर भी कब्जा हो गया। हारकर कलक्टर ने चित्तू पाण्डे से कहा : "महाराज, हम चार्ज देते हैं। अब आप ही सम्हालिए।" तीन-चार दिन तक बलिया भी आज़ाद रहा।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय परिसर में केवल छात्रों का ही राज्य था। छात्रों के ही गार्ड और पुलिस तैनात थे, हर चीज़ पर उन्हीं का अधिकार था। पांच दिन तक शासन पंगु रहा।

जयन्त खामोश होकर मुश्ताक हुसैन के गांव में ही नहीं बैठे रहे, बी० पी० वर्मा को साथ लेकर वह कई नगरों, कस्बों और गांवों के तूफानी दौरे बराबर करते ही रहे। लखनऊ की खबरें भी बराबर उनके पास पहुंचती ही रहती थीं।

जयन्त यह खबरें पाकर जोश में आते थे। उनकी दाढ़ी तब तक काफी लम्बी हो गई थी, बाल भी बढ़ आए थे, देखकर पहचाने ही नहीं जाते थे कि यह बैरिस्टर जयन्त टण्डन हैं। उनके साथ साहसिक दौरों पर आने-जाने के कारण बी० पी० वर्मा ने भी अपना हुलिया बदल डाला था।

पन्द्रह अगस्त को खबर मिली कि सुमन्त टण्डन गिरफ्तार करके जेल भेजे जा चुके हैं। इसके दो दिन बाद ही मुश्ताक हंडिया भर गुलाबजामुनें लेकर गांव पहुंचे, बोले : "चचा साहब, मुबारक हो, आप दादा बन गए हैं।"

जयन्त के चेहरे पर खुशी की चमक आ गई : "वाह, यह तो तुमने उम्दा खबर सुनाई मुश्ताक।" फिर चुप हो गए। एक गुलाबजामुन उठाकर खाने लगे, अचानक बोले : "भैरो, मैं लखनऊ जाना चाहता हूं।"

"अरे, अभी न जाइए चचा साहब।"

"नहीं, एक बार तो जाना ही होगा बेटे, घर में सुमन्त भी नहीं। मेरी वाइफ थोड़ी परेशान होंगी। सुनो भैरो, एक काम करो बेटे। फकीरों-जैसी एक काली कम्बली लाओ मेरे लिए और अपने लिए भी लाना। दो डफलियां भी लेते आना। हम लोग गाते-बजाते अपने दरवाज़े पर पहुंचेंगे।"

इसी फकीरी वेश में जयन्त और बी० पी० वर्मा 'जयन्त मैन्शन' पहुंचे थे। पुलिस बाहर बैठी ज़रूर थी मगर उसने इन फकीरों पर कोई ध्यान न दिया। नौकर ने दरवाज़ा खोला, जयन्त ने ज़ोर से आवाज़ लगाई, "घर मालकिन को

पोता मुबारक हो, फकीर की मांग पूरी की जाए। वह आज हलवा-पूरी खाकर जाएगा।"

नौकर दो रुपये लेकर आया, जयन्त धीरे से बोला : "बेवकूफ कहीं का, अलग हट, मैं आया हूं। भीतर जाने दो।"

मन्नो नीचे उतर आई, पति को पहचान न पाईं। पति सहज स्वर में बोले : "मुबारक हो भाई, दादी बनी हो।"

आवाज़ पहचानी गई, मन्नो की आंखों से दाढ़ी-वालों भरा असली चेहरा भी छिपा न रह सका, "हाय राम, तुम···!" एकाएक पति से चिपक गईं, "खूब आए, खूब आए। हमरे सुमन्तू को भी पकड़ ले गए मरे।"

"हां, वह सुन चुका हूं।"

"अब तुम थोड़ी देर बैठ जाओ, पानी-आनी पिओ। हम जच्चा-बच्चा का नहान डलवाय आवैं। हाय बड़ा गोरा है तुमरा पोता, देखके खुस हुई जइहो।"

"अरे, हम तो तुमको देखकर ही खुश हो गए और हम तो पोते के खातिर ही इतनी मुश्किलें सहकर आए ही हैं।"

जयन्त अपने घर में थे लेकिन सारा देश भी उनका अपना घर था। लखनऊ-बनारस का रेल रास्ता ठप्प हो गया था। ग्राण्ड ट्रंक रोड भी जगह-जगह से ऐसी नष्ट कर दी गई थी कि सेना और पुलिस के ट्रक उस पर चल ही न पाएं। गढ़वाल में भी काफी दिनों तक आन्दोलन चला। फर्रुखाबाद, आगरा, मुरादाबाद, कानपुर तथा हरदोई में बम-विस्फोट हुए। स्वतन्त्र बलिया को दबाने के लिए वायुयानों से बम बरसाए गए, गोरी पुलिस ने बलिया में घुसकर फिर से स्वतन्त्र लोगों को परतन्त्र बना दिया। आशा और निराशा भरी सूचनाएं 'चम्पक मैन्शन' की दीवारों को भेदकर जयन्त के कानों में पहुंच रही थीं।

दमन अनन्त था, जनोत्साह अनन्त था, जयन्त ने अपने पोते का नाम भी अनन्त रखा।

परन्तु इतने कठिन और तनाव-भरे दिन बिताते हुए भी जयन्त के मन में अपनी यह गार्हस्थिक सुख की तृप्ति भी कम न थी। अपने इन विगत छप्पन वर्षों के जीवन में ऐसा गार्हस्थिक सुख कभी नहीं मनाया था, मन्नो तो इस सुहाग-सुख की अनुभूतियों में मगन, प्रौढ़ा होते हुए भी नवोढ़ा बन गई थीं। जयन्त ऊपर-वाले कमरे में थे, जच्चा घर नीचे के जनाने ड्राइंगरूम अर्थात् जयन्त की दादी स्वर्गीया चम्पकलता के कमरे में था। घर की पुरानी किताबों में से कोई एक पढ़ते-पढ़ते जब अचानक नीचे से 'कुआं-कुआं' की आवाज़ आती तो जयन्त टण्डन विचारक, देशानुरागी संगठनपटु या क्रान्तिकारी नेता न रहकर केवल बाबा हो जाता है। अपना यह नया सम्बोधन स्वयं अपनी ही दृष्टि में उनका गौरवानन्द बढ़ा देता था। मन्नो अधिकतर अपनी बहू और पोते के पास ही रहती थीं। फिर

भी दिनभर में न जाने कितने फेरे अपने पति के कमरे में लगा जाती थी। इन दिनों दोनों में एक क्षण के लिए भी मनमुटाव या उसका भाव तक नहीं आता था।

मन्नो आई, काम कुछ नहीं है पर कमरे में ऐसी घुसी जैसे किसी वस्तु की तलाश हो। किताब हटाते हुए जयन्त मुस्कुराकर कहते हैं : "कहो दद्दा तुम्हारे पोते का क्या हाल है ?"

मन्नो ठसकके कहती हैं, "हम दद्दा-उद्दा पुराने चाल का नही कहलावेंगे।"

"ओफ्फो, तेरे तो बड़े नखरे हो गए हैं यार, तो क्या अंग्रेजी मे ग्रैण्ड मा कहलाएगी ?"

"नहीं, हमरी सास इत्ती बड़ी आरसमाजी रही, ससुर जी रहे—हमे कोई देसी नाम बताओ।"

"शब्द हमारे पास हैं मगर तुम कहोगी, गंवारू हैं।"

"क्या ?"

"तुम अपने को आजी कहलाओ, आजी आर्या का हिन्दी रूप है। और सुनो, जरा उसको नीचे से गोदी मे उठा तो लाओ।"

"हाय, तुम तो गजब करते हो, अभी सौरी में है बच्चा। सवा महीने के नहान के बाद सब शुद्ध होत है।"

"अरे, मैं सवा महीने तक भला थोड़े यहां रह पाऊंगा, किसी दिन भी पुलिस मुझे धर दबोच सकती है।"

"तुम हमरा जी दुखात हौ, भगवानजी ने यह सुख का दिन हमे दिखाया पर एक तरफ लड़के का बाप जेल मे और दूसरी तरफ बाबा···"

आंखें आंसुओं के लबालब कटोरे जैसी बन गईं, "सुमन्तु के अभी हाल मे तो छूटने के आसार नही, मैं भी बच रहा हूं पर जब जाऊंगा तो···क्या कहूं···ए जा, अनन्तू को ले आ, ओ बहू को खूब ताकत की चीजें खिलाती रहना।"

एक तरफ आंसू पोंछती और दूसरी ओर बनावटी क्रोध के तेवर चढ़ाकर मन्नो बोली : "तुम क्या बताओगे, सुमन्तु की जचकी के बखत माता जी हमे सब बताय गई हैं।"

जयन्त भी चारपाई छोड़कर बाहर छत पर निकल आया। ढलती दोपहर का आसमान कितना मनहूस नजर आ रहा था। सड़क पर लस, बेल, फीता की आवाज फेरीवाले ने लगाई। आसमान की मनहूसियत मे डूबे हुए सन्नाटे भरे मन मे सुनाई दिया—लाठी, जेल, जूता। जयन्त एकाएक कांप उठे, आसमान का सन्नाटा टूटा, एक चील उड़कर जाती हुई दिखलाई दी। मन को इस बहाने से फिर चैन महसूस हुआ। नीचे की सीढ़ियों से मन्नो अपने पोते को लेकर ऊपर आती हुई दिखलायी दी—जीवन आ गया। पत्नी, पोते को लेकर कमरे मे घुसी।

पति भी सब भूलकर पत्नी के पीछे-पीछे कमरे में। "लेओ।"

क्रान्तिकारी नेता वैरिस्टर जयन्त टण्डन अपने पोते को गोद में लेकर आत्म-विस्मृति के तल में डूब गया। चारपाई पर बैठकर अनन्तू को हाथ के झूले में हल्का-सा झुलाते हुए जयन्त ने कहा: "परमात्मा को लाख-लाख धन्यवाद कि मुझे अपने पोते का मुख दिखला दिया।"

मन्नो बोलीं : "इसकी आंखें तो हूबहू तुमरे जैसी हैं और होंठ-नाक इ सब सुमन्तू जैसे।"

"अरे बाप-दादे का हिस्सा तो बखाना। कुछ अपना भी तो बखानो भाई, खोपड़ी तेरी जैसी है। बस, गनीमत यही कि तुम्हारी जैसी औंधी नहीं है।"

"तो हम क्या औंधी खोपड़ी की हैं? चलो हटो, हम नहीं बोलते तुमसे।"

"अच्छा मत बोलो, मगर एक बात पर सुलह कर लो, पोते का एक गाल अजिया चूमेगी, दूसरा बाबा।"

"हम अजिया-फजिया नहीं कहलावेंगे, हमरी बहू बिगड़त है। दादी कहलायेंगे, दादी। बल्कि हमरी लड़तो तो कहत रही कि माताजी इससे बड़ी माताजी कहलाना।"

"सुनो, सुमन्तू जब जेल से छूट आए तो उससे कहना कि इसे खूब पढ़ाए। मैं अपने कुलदीपकों को तरक्की करते देखना चाहता हूं, चाहे यहां से देखूं चाहे ऊपर से।"

"काहे बुरी-बुरी बात अपने मुंह से निकालत हैं। अरे, जैसा तुम चाहोगे वैसा तुमरा लड़का करेगा। ये खूब पढ़ेगा—खूब पढ़ेगा, बाबा की तरह बैरिस्टर बनेगा।" कहकर सोते हुए अनन्तू के गाल को चूम लिया।

अनन्तू को थोड़ी देर बाबा को सौंपकर मन्नो अपने पति के लिए जलपान लाने नीचे चली गईं। जयन्त एकटक अपने पोते को देखने लगा। उसे अनुभव हुआ कि जैसे उसकी पीढ़ी-दर-पीढ़ी-दर-पीढ़ी के बाबा उसके रूप में अपनी वंश-बेल को बढ़ते हुए देख रहे हैं। यह बेल और फैलेगी, अनन्त होगी। रस्सी को आसमान में उछालकर सीढ़ी बना देनेवाला जादूगर इंसान जीवन के यथार्थ को सूक्ष्म-से-सूक्ष्म स्तर पर देखते हुए भी इस सनातन और चिरनूतन भाव-गंगा को कभी सुखा नहीं सकेगा। इसी तत्परता में प्राणिमात्र का जीवन तैरता है।

बच्चे ने टांगें चलानी शुरू कर दीं। बाबा भावमुग्धता में तल्लीन थे, बच्चे ने अधिक तेजी से टांगें चलानी शुरू कीं और चेहरे की मुद्राएं भी बिगड़ने लगीं। एकाएक बाबा को ख्याल आया कि कहीं बच्चे ने गीला तो नहीं किया है। झटपट उठकर उसका पोतड़ा देखा, सचमुच गीला था। जयन्त झटपट उसका गीला पोतड़ा उतार और गद्दी का गीला हिस्सा हटाकर उसे फिर से थपथपाने लगा।

मन सोच रहा था, हाय, जो अभी रो पड़ता तो इसकी दादी आके मुझे खा जातीं। एक मन्नो से दूसरी मन्नो की याद आई। याद तेज थी मगर जयन्त ने इस समय उस मन्नो को भुलाए रखना ही भला माना। यह इस मन्नो के सुमन्त का लड़का है, उस मन्नो के किशनू की बहुरिया के भी दिन चढ़े हैं, एक ही पुरुष दोनों का बाबा होगा फिर भी कितना अन्तर है। किशनू के बेटे का बाबा बनकर भी वह खन्ना नहीं बन सकता, मन्नो खन्ना का पोता रायबहादुर रघुनन्दनप्रसाद खन्ना का पोता कहलाएगा। उस मन्नो का पोता मेरा होकर भी मेरा नही कहलाएगा, और यह मेरा है—जयन्त टण्डन और मन्नो टण्डन का पोता अनन्त टण्डन। क्या विधि का विधान है। जयन्त का मन अपने पोते को देखकर अच्छा भी हो रहा था और बुरा भी।

रात में लगभग आठ बजे का समय, पानी बरस रहा था, मनोरमा खन्ना की कार 'चम्पक मैन्शन' के फाटक में प्रवेश कर रही थी। सी० आई० डी० के आदमी ने आगे बढ़कर पूछा : "आपको किससे मिलना है?"

"मिसेज टण्डन से, उनके पोता हुआ है न? इसलिए बधाई देने आई हूं। घबराओ मत, किसी राजनीतिक काम से नही आई हूं।"

गुप्तचर झेंप गया, बोला : "नहीं माताजी, मुझे बड़ी शरम आती है कि इतने बड़े नेता के लिए ···"

"मगर वह आजकल यहां हैं कहां भाई। तुम भी जानते हो, मैं भी जानती हूं।"

बृटिश सरकार का गुप्तचर कार की खिड़की में अपना सिर घुसाकर बहुत धीमे स्वर में बोला : "आज हमारे अफसरों को यह पक्की खबर मिली है कि जयन्त साहब लखनऊ में हैं। आपके यहां भी निगरानी की जा रही है माताजी। कल शायद इस घर की भी जबर्दस्ती तलाशी होगी।"

"होगा बेटे, पर इस वक्त तो मुझे अपनी सहेली को बधाई दे आने दो, तुम्हारा उपकार होगा। लो, तुम भी अपना मुंह मीठा करो और··· ।"

"नहीं-नहीं, आप जाइए। मुझे माफ कीजिएगा माताजी।"

"कोई बात नही बेटे, तुमने एक ऐसी खबर मेरे कानों में डाल दी जिसका मुझे पता न था।"

गाड़ी अन्दर चली गई, नौकर ने दरवाजे खोले, न जाने कितने बरसों के बाद मन्नो खन्ना, मन्नो टण्डन के घर में आई। ड्राइंगरूम में आकर नौकर से कहा : "अपनी मालकिन को यहां बुलाओ।"

मन्नो आई, स्वर में कुछ रुखापन लिए हुए बोलीं : "पधारिए। बरसों बाद···"

मन्नो टण्डन की बात को काटकर दूसरी मन्नो बोलीं : यह मन मैला करने

का बखत नहीं है बहन, पोते की खुशी में पहले अपना मूं मीठा करो, हमारा कराओ।"

मोटर ड्राइवर छिकनिया भर मोती चूर के लड्डू लाकर कमरे में रख गया। "दरवाजा बन्द करो और चौकस बैठना जी, मैं थोड़ी देर में आती हूं।"

दोनों ने ही दोनों के मुंह एक लड्डू के दो टुकड़ों से भरे, फिर मन्नो खन्ना ने मन्नो टण्डन से कहा: "मन्नो बहन उनसे मिलना है। उन्हें अब यहां से तुरन्त कहीं चले जाना चाहिए। आज बरेली से मुश्ताक आया रहा। सरकार बड़ी सरगर्मी से उनकी तलाश कर रही है।"

"तो अपने यहां ले जाओगी।" मन्नो टण्डन की आवाज़ में फिर रुखाई आई।

"मेरे यहां तो पहले ही से निगरानी हो रही है। वहां जाना तो बिलकुल ही ठीक नहीं है और यहां किसी भी दिन पुलिस तलाशी लेने के लिए जबर्दस्ती घुस सकती है। तुम एक बार किसी तरह से उनसे मिला दो।"

मन्नो टण्डन के स्वर में अब रूखापन नहीं, घबराहट थी। दोनों मन्नो जयन्त के कमरे में पहुंचीं। गिलास का रंगीन पानी अभी खत्म नहीं हुआ था। सिगार फूंकते हुए जयन्त आंखें मींचे किसी ख्याल में डूबे थे। आहटों से आंखें खोलीं: "अरे, तुम इतनी रात में ?"

मन्नो खन्ना ने कहा: "रात तो इतनी नहीं हुई है। हां, पानी बरसने से अंधेरा अधिक गाढ़ा हो गया है। आज बरेली से मुश्ताक आया था, कुशलो भैये का साथी।"

"क्या कह रहा था ?"

"उसके गांव का घर जाना जा चुका है। वहां जाते ही पकड़ लिए जाएंगे, मेरे घर पूरी निगरानी है। आपका बंगला भी पुलिसवालों से घिरा हुआ है।"

"यह मैं जानता हूं।"

"मगर ताजी सूचना यह है कि कल-परसों में इस घर में घुसकर तलाशी ली जाएगी। बड़ा अत्याचार कर रही है गवर्नमेन्ट। अरी मन्नो बहन, तुम्हें क्या बताऊं 'आस्टीचिमूर' नाम के एक गांव में तो गोरों ने घरों के दरवाजे तोड़-तोड़ के औरतों को बाहर निकाला और फिर एक-एक पे आठ-आठ, दस-दस। हे राम, क्या-क्या सहना पड़ा होगा।"

"खैर मन्नो, अब तुम जाओ। मुश्ताक बरेली चला गया।"

"नहीं, आज तो शायद लखनऊ में ही होंगे, वो और भैरों दोनों आए हुए हैं। भैरों कहता तो था कि किसी-न-किसी दिन आपसे मिलेगा तो ज़रूर। आपको बचाके निकाल ले जाने की पूरी योजना बना रखी है उन लोगों ने। तो मैं चलती हूं।" इतने परायेपन और इतनी दूरी से प्रियतम से बातें करना मन्नो खन्ना को

चल रहा था।

दरवाजे से बाहर जाते हुए जयन्त ने मन्नो खन्ना को अपनी ओर इस तरह रखा कि शरीर से शरीर सट जाए। भावभीनी दृष्टि से दोनों ने एक-दूसरे से विदा ली। उस रात जयन्त सजग रहा। पीछे के भंगीवाले दरवाजे से रात के साढ़े ग्यारह बजे एकाएक भैरों ने घर में प्रवेश किया। "ओह, तुम आ गए ?"

"अब रुकिए मत चचा, तुरन्त भागिए। रात में भी यहां तलाशी हो सकती है।"

"मुझे भी यही डर है। भीतर से कोई कहता है कि इस बार ऐसी जगह भागना होगा जहां कोई पुलिसवाला मुझे पकड़ ही न सके। कल रेडियो बर्लिन से आर्स्टाचिपूर की खबरें तुमने सुनी थी बी० पी० ?"

"सुनी तो नहीं थीं पर मुझे बतलाया जरूर गया। आज श्रीमती खन्ना उस खबर से बहुत बेचैन नजर आयीं मुझे।"

"खैर चलो।" कमरे को भावभीनी दृष्टि से देखा, मन्नो घबराई हुई दृष्टि से देख रही थी : "कहां जा रहे हो ?"

"जाना ही होगा डार्लिंग। वो जमदूत तुम्हारे यहां तलाशी लेने आ रहे हैं।"

फटी कमीज, फटा पाजामा पहनकर हाथ-पैर और चेहरे को धूल से मैला करके बाल बिखेरे हुए बैरिस्टर साहब पिछले दरवाजे से निकलने के लिए उद्यत हुए। फिर एकाएक रुककर मन्नो से बोले : "अपनी बहुरिया को हमारा आशीर्वाद देना और अनन्तू को···क्या कहूं, देखने को बहुत जी चाहता है मगर जाने दो, अब देखो ईश्वर हमें कहां कब मिलाता है। या फिर यह अन्तिम भेंट ही हो रही हो हमारी-तुम्हारी।"

बात सुनकर भय से भरी मन्नो एकाएक पति से लिपट गई, बोली : "ऐसा न कहो। जैसे पीठ दिखला रहे हो वैसे ही मुंह भी दिखलाना।" पति-पत्नी दोनों की आंखों में अनायास ही आंसू भर आए।

पिछवाड़े का दरवाजा खोलकर बी० पी० वर्मा निगरानी करने गया था, आकर धीरे-से बोला : "आ जाइए। कोनेवाले सिपाही सोए पड़े हैं।"

जयन्त ने एक बार फिर मुड़कर पत्नी को देखा और बाहर निकल गया। चोर की तरह चहारदीवारी, फाटी, गली-गली घूमते हुए घसियारी मण्डी की तरफ बढ़े। जयन्त बनावटी लंगड़ेपन के साथ चल रहे थे। गलियां अधिकांश अंधेरे में ढकी हुई, कहीं-कहीं बिजली के खम्भे धरती पर प्रकाश के गोले बना रहे थे। जगह-जगह कुत्तों का भौंकना मन को चौंका-चौंका देता था। पिछवाड़े से घूमते—केसर बाग की तरफ आए, एक पुलिस कांस्टेबुल सामने से गुजरा। जयन्त ने उसकी ओर देखकर भी अनदेखा किया और आगे बढ़ गए।

लाटूश रोड की तरफ ताड़ीखाने से झगड़ा करते हुए दो शराबी निकले।

के बीच में ही मारपीट और गाली-गलौच कर रहे थे। दूर से आता पुलिस वाला उन्हें भद्दी गाली देकर चुप कराने के लिए गरजा। सामने से एक आदमी दौड़ता हुआ आ रहा था और पीछे चोर-चोर की आवाजें भी। जयन्त और बी० पी० सहमे, मछली मोहाल की गली में तेजी से चलकर घुस गए। जयन्त हांफ गए, धीरे-से बोले : "कहां ले जा रहे हो भैंरो ?"

"मेरी जान-पहचान के दो घर हैं। हीवेट रोड पर एक लड़का बोका भट्टाचार्जी रहता है। अगर वह मिल गया और उसके यहां जगह मिल गई तो ठीक है वर्ना गूंगे नवाब के फाटक में एक रिश्तेदार का घर है, वहां चलेंगे।"

जयन्त बहुत पैदल चलने के आदी न थे, हांफने लगे। सन्नाटा देखकर लंगड़ाना छोड़ शीघ्र चलने लगे। बोका घर में न था, बाराबंकी गया हुआ था। फिर आगे बढ़े, गलियां-सड़कें पार करते हुए रात के एक बजे के लगभग निश्चित स्थान पर पहुंचे। भैंरों की मौसेरी बहन का घर था, जगह मिल गई, बैठक में ही डेरा डाल दिया। जयन्त बेहद थके हुए थे, सुरक्षा की दृष्टि से उचित स्थान पाकर उन्हें जल्दी ही नींद भी आ गई।

सवेरे दस बजे ज़ोर-ज़ोर से कनस्तर पीटता हुआ ढिढोरिया निकला। वह कनस्तर तो पीट रहा था मगर कह कुछ भी न रहा था। बाहर गली में किसी ने टोका : "अरे खुनखुन, काहे कान फाड़ रहा है बे ?'

खुनखुन धीरे से बोला : "पांच बजे यहीं सामने वाले मैदान में भांसड़ होएगा। मराठों के गांव में गोरों ने बड़ा अत्याचार किया हैगा। भांसड़ होएगा, ज़रूर आना।'

ज़ोर से कनस्तर पीटता और धीमे से लोगों को समझाता हुआ खुनखुन ढिंढोरिया आगे बढ़ गया। कनस्तर के शोर से जयन्त की नींद खुल गई, बात भी कानों में पड़ी। भैंरों से बोले : "बी० पी० पेपर ला बेटा, और दो पाव रोटी ले आना और मक्खन की दो टिकियां भी। हम लोग यही खाकर गुजारा कर लेंगे।"

दिन का सन्नाटा, बीच-बीच में फेरी वालों की आती-जाती आवाजें। समय सूली पर टंगा हुआ पीड़ादायक गुजर रहा था। बी० पी० ने जयन्त से कहा : "मैं अभी आता हूं चाचाजी, आप दरवाजा बन्द करके बैठिए। आज रात को ही मौका देखकर हरदोई निकल चलेंगे, अभी बरेली जाना तो ठीक न होगा।"

जयन्त कुछ न बोला। जेब में रखे सिगार भी चुक गए थे। चाय की तलब भी बेचैन बना रही थी मगर आराइशों में पले बैरिस्टर साहब के मन को किसी तरह का सुकून देने के लिए भी कोई सुविधा न थी। आठ-दस बरस का एक लड़का घर से बाहर जाने लगा, जयन्त ने आवाज दी, "ए बेटे, सुनो, तुम्हारा क्या नाम है ?"

"सकटू परसाद।"

"ए, हमारा एक काम करेगा बेटे। मेरे लिए एक कैंची सिगरेट की डिबिया ले आ और एक दियासलाई। और ये दुअन्नी लो तुम्हारा इनाम।"

सकटू पैसे लेकर बाहर चला गया। राह-देखते एक घण्टे के लगभग समय गुजर गया, बड़ी देर बाद सकटू आया। जयन्त ने इत्मीनान से सिगरेट सुलगाई, दो-चार कश लिए। पास ही मैदान से शोर सुनाई पड़ने लगा: "भाइयो और बहनो, गोरी सरकार ने महाराष्ट्र के एक गांव आस्टीचिमूर में घुसकर कैसे-कैसे अत्याचार किए हैं, इसको सुनाने के लिए हमारे नौजवान नेता सुन्दरलाल आ गए हैं। मैं पण्डित सिरीनाथ जी को अधक्ष बनाता हूं, भाषण सुनिए और पुलिस आने से पहले इधर-उधर भाग भी जाइएगा। ये साले सरकारी कुत्ते, खाली भौंकते ही नहीं, काटते भी हैं।"

सुन्दरलाल का भाषण शुरू हुआ। आवाज जोशीली जरूर थी मगर बात कहने का ढंग बहुत उखड़ा-उखड़ा-सा था। जयन्त घर के दरवाजे उढ़काकर गली में निकल आए थे, थोड़ी देर इधर-उधर टहलकर पीछे उस छोटी-सी भीड़ में ही चुपचाप बैठ गए।

जयन्त के मन में चिढ़ हुई। पिछले तीन-चार आन्दोलनों में हम भारतवासियों में भाषण करने की हिचक तो अब जरूर मिट चुकी है मगर बात कहने का ढंग और शऊर अभी तक विकसित नहीं हुआ। अच्छे और प्रभावशाली वक्ता सभाओं को सम्बोधित करके अब नाम भी कमाते हैं। यही नाम कमाने की उत्कट चाहना उन्हें भी छोटी-मोटी जगहों पर, जहां कोई बड़ा वक्ता न हो, भाषण करने की प्रेरणा देती है। वह अनर्गल तो होगा ही। बेवकूफ कह रहा है हम अंग्रेजों को उखाड़ फेंकेंगे, लेकिन कैसे। आस्टीचिमूर में गोरों ने क्या बर्बरता दिखाई, कैसा आतंक फैलाया, इसका कहीं जिक्र नहीं। जयन्त ने यह भी देखा कि बैठी हुई जनता भाषण से उखड़ रही है, लोग पुलिस आने के भय से भी भागने की जल्दी में हैं। जयन्त के मन में भीतर-ही-भीतर रोष और जोश दोनों ही उबल रहे थे। भीड़ को ऐसा भाषण चाहिए जिसे सुनते-सुनते जनमानस की भय-भावना ही लुप्त हो जाए। उनके मन में गुस्सा जागा, दीवानगी जागी, मन के भीतर-ही-भीतर होने वाली खौलन ने उसे बेसाख्ता खड़ा कर दिया। वह अपने-आपको रोक न सका और तेजी से उस तख्त की ओर बढ़ा जिस पर सुन्दरलाल खड़े थे और दो-चार कार्यकर्त्ता बैठे थे। एक अनजाने मैले-कुचैले दढ़ियल व्यक्ति को तख्त की ओर बढ़ते हुए देख भीड़ की आखें उससे बंध गईं। जयन्त की आवाज सुन्दरलाल की आवाज की तरह इतनी ऊंची तो न थी कि बहुत दूर तक जा सके मगर उनकी वाणी में यह आकर्षण जरूर था कि वह सुनने वाले को मन्त्र मुग्ध कर देता था। माइक्रोफोन और लाउडस्पीकरों का

चलन तब तक चल तो चुका था मगर बयालीस में होने वाली इन छोटी-छोटी पानी के बुलबुलों की तरह फूट जाने वाली सभाओं में लाउडस्पीकरों और तखत आदि का झंझट नहीं मोल लिया जाता था क्योंकि पुलिस के साथ उनकी बिल्ली-चूहे जैसी लपक-झपक भी लगातार चल रही थी। बयालीस के जोशीले कार्यकर्त्ता इन झटपट आयोजित की जाने वाली सभाओं में मन्त्र फूंकते और भाग जाते थे। यह केवल संयोगमात्र ही था कि सुन्दरलाल को उस मैदान में महल्ले वालों की चौपाल-जैसा तखत खड़े होकर बोलने के लिए मिल गया था।

जयन्त मंच पर आए, सुन्दरलाल की पीठ पर हाथ रखा, सब लोग चौंक कर उन्हें देखने लगे। जयन्त ने पहला बम गोला फेंका : "भाइयो, मैं जयन्त टण्डन हूं।"

सब लोग चौंककर उस दाढ़ी वाले वक्ता में, अपने कई बार के, कई सभाओं में देखे और सुने हुए वक्ता में, अपने प्रिय नेता जयन्त टण्डन को ढूंढने या पहचानने की कोशिशें करने लगे। नाम ने जनता में जय-जयकार करने की इच्छा जगाई किन्तु जयन्त अपनी नाक के सामने तर्जनी उठाकर सबको शान्त करते हुए बोलने लगे : "अभी हमारे ये भाई जिस अत्याचार की कहानी बता रहे थे, उसे सुनकर मेरा खून खौलने लगा है, आप लोगों का खून क्या पानी हो गया है जो आप अब तक गुस्से से उबल नहीं सके ? आप जानते हैं कि इस गोरी सरकार की फौजों ने वहां क्या-क्या अत्याचार किए हैं—घरों के दरवाजे तोड़-तोड़ कर घर में घुस गए। हमारी कुलीन और पवित्र मां-बहिनों पर उन्होंने ऐसे-ऐसे सामूहिक अत्याचार किए कि जिन्हें बखानते हुए भी मुझे शर्म आती है। गांव का जो आदमी उनका विरोध करने के लिए आगे बढ़ता उसे वे गोलियों से भून देते थे। उनकी बेबस बेपर्दगी बखानते हुए मेरी ज़बान हिचकती है, शर्म आती है। ये बर्बरों का अत्याचार बतलाइए, हम कब तक सहेंगे ? कल को इन्हीं गलियों में रहनेवाली हमारी मां-बहनों पर भी ऐसा अत्याचार हो तो बतलाइए, हमें कैसा लगेगा ? सीमान्त गांधी जो इस समय जेल में बन्द हैं, कभी अपने भाषणों में ललकारा करते थे कि अरे नामर्दो, तैंतीस करोड़ गधों पर भी कोई हुकूमत नहीं कर सकता, तुम क्या गधों से भी बदतर हो ? क्या इस अपमान का बदला नहीं लोगे ? तुम्हें शर्म से मर जाना चाहिए या फिर अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए इन अत्याचारियों से लड़ो। मरो या मारो। इन आततायियों की सरकार को उखाड़ फेंको···।"

भीड़ जोश में आ गई थी, तब तक घुड़सवार पुलिस भी सड़क पर आ गई थी। 'जयन्त टण्डन जिन्दाबाद', 'भारतमाता जिन्दाबाद', 'इन्क्लाब जिन्दाबाद।' जनता खड़ी हो गई, एक तरफ लोगों के मनों में उमड़ा हुआ अपार जोश और दूसरी तरफ पुलिस को देखकर प्राण बचाने की कायरता भी उन्हें विकल बना

रहीं थीं। जयन्त का भाषण घुड़सवारों को देखकर और भी जोरदार हो गया। एक बात कहते और फिर 'मरो या मारो' का नारा लगा उठते थे। पहली गोली उठे हुए हाथ के पंजे को आर-पार कर गई और उससे खून की धार बहती हुई उठी हुई बांह पर गिरने लगी। मगर साहस जब सिमटने लगता है तो वैसे ही ठोस हो जाता है जैसे पानी बर्फ बनने के बाद। मगर वह बर्फ ठण्डी नहीं होती है, आग का गोला बन जाती है। अपने लिए संयम और धैर्य का अनुशासन रखते हुए भी वाणी और उबल पड़ी : "भागो मत, मारो-मारो। भाइयो, ये खून तो कुछ खून नहीं, उन मा-बहनों की दुर्गतों को याद करो जिनके ऊपर इनसे कहीं ज्यादा जुर्म हुए हैं।" कायर जनता उठते-उठते बैठने लगी। "एक बार सब साथ बोलिए मरो या मारो।"

ऐन जबड़े पर गोली लगी। गोलियों की बरसात होने लगी। उस भीड़ में भागने की खलबली मच गई। जयन्त का शरीर लड़खड़ा रहा था, टूटे हुए जबड़े से खून का कुल्ला-सा किया मगर दूसरा हाथ अब भी ललकार रहा था। एक गोली सीधे छाती पर लगी और जयन्त लाश बनकर गिर पड़ा, टांगें तख्त के ऊपर, सिर और धड़ जमीन पर। एक व्यक्ति घर की खिड़की से फोटो ले रहा था, गोलियां मैदान के चारों ओर बसी हुई बस्ती की खिड़कियों की ओर लपकीं। चौमुखी स्थिति लेने के लिए घोड़ों की खबड़-खबड़ हुई। कैमरे ने फोटो तो खींच ली, मगर खींचने वाला मारा गया। खिड़कियां चारों ओर बन्द, गलियों में घरों के दरवाजे फटाफट बन्द, मैदान खाली—उस देह-सा शून्य जिसमें अभी प्राण न्याय के लिए विद्रोह का शंख फूंक रहे थे।

वातावरण में मृत्यु न दिखलाई पड़ने वाले प्रेत-सी नाच रही थी। जीवित थे केवल चार गोरे घुड़सवार और उनका हाकिम। तब तक देसी घुड़सवारों की एक छोटी-सी टोली भी गोरों में आ मिली थी। थोड़ी देर पहले गूंजने वाला वह 'मरो या मारो' का स्वर घरों में बन्द भारतीय जनमानस में अब भी गूंज रहा था।

मौत के गहरे सन्नाटे में प्रत्यक्ष न होकर भी साक्षात जीवन्त जयन्त का स्वर—'मरो या मारो।'

बयालीस

स्व० जयन्त टण्डन का जन्मशताब्दी समारोह सरकारी तौर से उसी मैदान में किया गया जो अब 'शहीद जयन्त पार्क' बन गया है तथा मैदान की दक्षिण दिशा

में जहां गोलियों की बौछारों से उनका शरीरपात हुआ था, उनकी संगमरमरी आदमकद मूर्ति कई वर्षों से स्थापित है। सरकारी व्यवस्था भव्य शामियाने से सजा वह पार्क जहां अब तक केवल आस-पास के दो-चार मौहल्ले वाले ही जाड़े में दिन की धूप और गर्मियों में शाम की हवा खाने के लिए पड़ी हुई टूटी तिपाइयों पर बैठ जाते थे, वह आज बड़े-बड़े नेताओं और आला सरकारी अफसरों से भरा है। शहीद जयन्त टण्डन की मूर्ति पर फूलों का कलात्मक चंदोवा लगा था और मूर्ति के पास ही वह मंच भी था जिससे माननीय मुख्यमंत्री, अन्य मंत्री तथा प्रसिद्ध एवं अप्रसिद्ध नेतागण जयन्त जी की स्मृति में कुछ ताजे किन्तु अधिकतर मुर्झाए हुए शब्द-पुष्पों की वर्षा कर रहे थे। जनता का आदमी आज सरकारी सम्मान के आडम्बरों से घिरा हुआ था। स्वर्गीय जयन्त टण्डन के पुत्र और भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री सुमन्त टण्डन इन दिनों ज्वरग्रस्त होने के कारण अयोध्या से नहीं आ सके थे। शारदा जी भी अपने पति की देखभाल करने के लिए वहीं रुक गयी थीं फिर भी मुख्यमन्त्री जायसवाल जी के व्यक्तिगत आग्रह से जयन्त जी की अनन्य सहयोगिनी और प्रसिद्ध देशसेविका श्रीमती मनोरमा खन्ना और जावेद के पिता वयोवृद्ध मुश्ताक हुसैन साहब भी आए थे। युधिष्ठिर के तीनों सौतेले भाई और उनके पारिवारिक जन भी उपस्थिति थे।

मनोरमा जी ने भाषण न दिया, हाथ जोड़कर भरे कण्ठ से केवल इतना ही कहा: "मैं आज कुछ न कह सकूंगी, आपसे क्षमा मांगती हूं।"

किन्तु मुश्ताक हुसैन साहब ने बड़े भाव से जयन्त जी के साथ बिताए हुए सन बयालीस के दिनों की बातें सुनायीं। उस समय वह अण्डरग्राउण्ड रहकर भी मुश्ताक या भैरोंप्रसाद वर्मा के साथ दूर-दूर के दौरे किया करते थे उसकी कथाएं भी सुनाईं। युधिष्ठिर उन्हें पहले ही उनसे सुनकर टेपबद्ध बाद में कागज पर लिपिबद्ध भी कर चुका था। प्रायः दो-ढाई घण्टों तक सभा में जितने भाषण हुए थे उनमें मुश्ताक साहब के संस्मरण ही सुनने वालों को सबसे अधिक प्रभावित कर सके। मुख्यमन्त्री जी, जो जयन्त कालीन कांग्रेस के उत्साही कार्यकर्त्ता भी रहे थे, और उन्होंने जयन्त टण्डन को कई बार देखा भी था, बहुत श्रद्धा के साथ बोले। बाकी सब तो महज तमाशा भर ही रहा।

सभा खत्म हुई। पहले मुख्यमंत्री ने मनोरमा जी के पैर छूकर उनसे और मुश्ताक साहब से विदा मांगी फिर धीरे-धीरे पण्डाल सद्यः विधवा की चूड़ियों रहित कलाइयों जैसा सूना हो गया। पुलिस वाला वी० आई० पी० लोगों की गाड़ियों को लाउडस्पीकर पर बुलाता रहा, गाड़ियां आतीं गयीं, वी०आई०पी० लोग जाते रहे। उनके पीछे उनके अफसर और परिवार भी गये। पत्रकार मण्डली भी युधिष्ठिर और शकुन से नमस्कार करके चली गयी थी, जावेद अपने पिता को घर छोड़ कर श्रीमती खन्ना के यहां आने के लिए कहके उनके साथ युधिष्ठिर की

गाड़ी पर घर चला गया था। किशन खन्ना ने आज समस्त टण्डन परिवार, साथ ही जावेद और शबाना को भी अपने यहां रात्रि भोजन के लिए आमन्त्रित किया था। तीन गाड़ियां तो स्वयं खन्ना जी की अपनी ही थीं और चार गेस्वेज की टैक्सियां भी मंगा ली थीं। सब लोग आराम से गाड़ियों पर बैठ गये। किशनू की निजी एम्बेसडर गाड़ी पर उसकी और युधिष्ठिर की पत्नियों के साथ पीछे मन्नो जी बैठी थीं और आगे ड्राइवर के पास उनके एकमात्र पुत्र कृष्णनन्द खन्ना बैठे थे। युधिष्ठिर शबाना को साथ लेकर अपने स्कूटर पर चल रहा था।

अमीनाबाद, कैसरबाग, विशेश्वरनाथ रोड क्रमशः पार होती गयीं। आम दिनों की तरह जनसंकुल सड़कें, व्यक्तियों और सवारियों की आवाजाही—इस चलती फिरती व्यस्त दुनिया में कहीं भी शहीद की शहादत की कोई छाप नहीं पड़ी थी। युधिष्ठिर सोचने लगा जिन बाबा की सच्ची-झूठी तारीफों से जब शहर का एक हिस्सा गूंज रहा था तब भी यह शहर, यह दुनिया उन्हें भूलकर इस मंहगाई और तनावों भरी अपनी ही चिन्ताओं में लगी थी। मरने के बाद फिर किसी को जाने वाले की चिन्ता नहीं रहती। कहावत मशहूर है—'आज मरे कल दूसरा दिन।' किसी शायर ने सच ही कहा है—'दुनिया के जो मजे हैं हरगिज वो कम न होंगे, चर्चे यही रहेंगे, अफसोस हम न होंगे।'

क्वीन्स कालेज के पास वाली गली से एक कार पर लाउडस्पीकर लगाकर खाद की किसी नयी दवा का प्रचार हो रहा था फिर बेसुरा फिल्मी गाना शुरू हो गया। दाहिने हाथ पे एक सिनेमाहाल था जो अब तोड़ा जा रहा था, सिनेमाहाल के मालिक को उस जगह पर एक बहुखण्डीय इमारत बनवाने से अधिक लाभ होगा, जगह वही है जो आज खण्डहर है मगर कल नयी होगी। न जाने क्यों यह विचार तेजी से मन में आया—पंजाब वही है आजादी के बाद प्रतापसिंह कैरों के जमाने में जो देश का समृद्धतम भाग बन चला था आज उग्रवादियों के आतंक के कारण मसान सा मनहूस लेकिन कल शायद कुछ और ही जायगा। दुनिया वही रहती है रंग बदल जाते हैं, ढंग बदल जाते हैं, मानव चेतना नये स्तर पर पहुंच जाती है।

'रघुनन्दन लॉज' पहुंच गया। संयोग से जावेद भी मुश्ताक मियां को घर छोड़कर उसी समय आया था। खन्ना और टण्डन परिवारों के बच्चे थोड़ी ही देर में एक हो गये। जवान औरतें अपनी बातों में मशगूल हुईं। मन्नो रहीं अपने कमरे में और किशनू की पत्नी हेमा अपनी अधेड़ वय के गोरे थुलथुल शरीर को अपनी भव्य आलीशान कोठी में इधर से उधर फिर पति के कमरे में बार-बार आ जाकर मानों अपना महत्व जतला रही थी। मन्नो दद्दा सभा में और सभा समाप्ति के बाद अब तक प्रायः मौन ही रहीं। जावेद और युधिष्ठिर किशनू चाचा के साथ बाहर बैठे थे तभी जग्गो बाबा के बड़े पुत्र डा० ओ० पी० टण्डन

अपनी पत्नी के साथ आये। किशनू ने चौक वाले टण्डन परिवार में और किसी को नहीं बुलाया था। ओ० पी० टण्डन को देखकर खन्ना खिल गये। हमउम्र साथी मिला तो किशनू बोले : "भई नन्हा हम लोग तो अब चले, तुम दोनों अपने आपको इन्टरटेन करो।"

जावेद बोला : "तुम्हारे ये खन्ना साहब भी शानदार रईस हैं, क्या शानदार कमरा है, देखकर ही नशा आ जाता है।"

"अरे भई रायबहादुर बाबू रघुनन्दन प्रसाद खन्ना एम० बी० ई० की दौलत उस पर चौगुनी इन्होंने बढ़ाई। पचास-साठ करोड़ के आसामी हैं।"

नन्हा के पास सरककर जावेद ने उसके कान में पूछा : "इनको अपनी असलियत मालूम है।"

उसी समय कमरे में एक सुन्दर नेपालिन दासी प्लेट में व्हिस्की-सोडा और गिलास लेकर आयी। छोकरे-सा नौकर बर्फ के क्यूब की बाल्टी ले आया और रखकर चला गया। दासी ने मुस्कुराकर पूछा : "सर्व कर दूं सर।"

"शुक्रिया, आपके खूबसूरत हाथों को यह तकलीफ नहीं देना चाहता।" जावेद ने उठकर बोतल उसके हाथ से ले ली, हाथों की छुअन गर्म नाजुक थी।

दासी के जाने के बाद युधिष्ठिर ने कहा : "मन्नो दद्दा ने इनसे कुछ भी नहीं छिपाया और शायद इसी कारण उन्हीं की इच्छा से आज हम दोनों का खाना-पीना एक साथ रखा गया है।"

"खैर छोड़, तेरी किताब पूरी हो गई।"

"हां, जयन्त के लाश बनकर गिरने तक।"

"बस वहीं खत्म कर दिया।" व्हिस्की सोडा बर्फ के दो गिलास बन गये। एक बैठे हुए दोस्त की ओर बढ़ा कर जावेद बोला : "तुमने जो एक बार अपने बाबा साहब की लाश पर जाने पर दोनों 'एम्स' के मिलने की बात सुनायी थी!"

"उसे रखना मुझे कुछ अच्छा नहीं लगा। शहीद मैदान में ही छोड़कर किताब पूरी कर ली।"

"तुम्हारे पिताजी से मिलने का जी चाहता है टण्डन, उन्हें जेल में जब बाबा साहब की शहादत की खबर मिली होगी।"

"अजीब बात है जो तुम इस वक्त सोच रहे हो वही बात मेरे मन में भी उठी। मगर जावेद यह देखो कि आज जयन्त टण्डन सेन्टनरी का जो यह उत्सव हुआ वह बेहद शानदार होने पर भी कितना मुर्दा था। झूठी शान, झूठे अल्फाज, सब कुछ नकली। एक हमारे मासू की आवाज में ही वह सच्चाई देखी जो मन को छू जाती थी। एक बात और भी अजीब है।"

"क्या।" सिप करते हुए जावेद ने पूछा।

"हमारे भाग्य हुए या तुम हुए, तुम लोगों में हिन्दुओं से जो मन का मिलाप देखता हूं वह अकसर औरों में कम नजर आता है।"

जावेद ने बड़ा-सा घूंट हलक के नीचे उतार कर कहा। "अबे हम लोग पठान हैं। बादशाह खां अपनी आटोबायोग्राफी में शान के साथ लिख गये हैं कि हमारे पुरखों ने भेद रखे थे और ये हिन्दू मुस्लिम प्राब्लम में अधिकतर उन्हीं मुसलमानों ने हिस्सा लिया है जो हमारे देश में आकर 'अजीज' कहलाये जिन्होंने बड़ी-बड़ी जागीरें पायीं।"

"अबे तू भी तो पुश्तैनी जमींदारी के गुलछर्रे उड़ा रहा है, तेरे बाबा जमींदारी को कोई अफगानिस्तान से थोड़ी लाये थे।"

"वह तो पठानों की हिस्ट्री का एक हिस्सा है मगर यह मत भूलो कि दसवीं सदी तक हमारे ही राजा त्रिलोकचन्द्र ने हिन्दोस्तान को बाहरी हमले से बचाया। हमारे ही एक अफगान खत्री मुसलमान शेरशाह सूरी ने यह ग्रैण्ड ट्रंक रोड बनवाई, तुम्हारे शहर की टकसाल को फिर से जमाया।"

युधिष्ठिर सोचने लगा—इतिहास के पृष्ठ कितने अनोखे हैं। हिन्दू-हिन्दू भी पहले लड़ते थे, आपस में दुश्मनियां भी करते थे मगर जब उनमें से बहुत से हिन्दू मुसलमान हुए तबसे वह दुश्मनी भी साम्प्रदायिक बन गयी। हिन्दू आत्मघाती है यह अपने को अपने से अलग करता रहा, यही उसका इतिहास है।

नेपाली नौकरानी ने फिर कमरे में प्रवेश किया। दोनों नजरें अपने गिलासों से हटकर मदभरे नैनों के गिलासों से जा टकरायीं. "साहब आपको डिनर टेबुल पर बुलाते हैं।"

"ठीक है, आ रहे हैं।"

दोनों ने गिलास एक घूंट में खाली किये फिर उठते हुए जावेद ने मुस्कुराकर धीरे से कहा : "खन्ना साहब ने यह ट्रंकलाइजर अच्छा पाला है।"

युधिष्ठिर भी धीमे स्वर में बोला : "इनके यहां एक नेपाली नौकर था वही तराई के बाजार से इसे खरीद लाया था। खन्ना साहब ने इसे अपने छोटे बच्चे की आया बनाकर रख लिया, बोलने-बात करने की ट्रेनिंग दिलवायी, इसके बाद आगे न पूछो।"

कमरे से निकलते हुए जावेद ने पूछा : "अमां तुम्हारे फादर की तबियत अब कैसी है।"

"उनके माथे में दर्द रहता है, पिछले बीस बाईस रोज से बुखार भी एक सौ एक या सौ बना ही रहता है। वैसे वह अपने आपको अस्वस्थ नहीं कहते, पढ़ते रहते हैं। सुबह और रात में उनका ध्यान करना भी नहीं छूटा, रोज नहाने का हठ करते हैं मगर अम्मा भी कम हठीली नहीं वह केवल उन्हें गरम पानी से बाथ करा देती हैं। दूध, मुसम्मी का रस और सुबह एक सेब लेते हैं, अन्न छोड़ दिया है

मुस्कराकर बोले : "तो अब तो तुम्हारी रामजी की मस्जिद का ताला खुल गया देवनाथ, सुना है भक्तों की अपार भीड़ होती है। जनभावना दो हिस्सों में बंटी हुई है। मगर समझ में नहीं आता कि किसको दबाएंगे किसको उठाएंगे।"

"हमारे नेहरू जी तो कहते थे कि बहुमत को अल्पमत का ध्यान रखना ही चाहिए।" देवनाथ ने कहा।

"ठीक कहते थे किन्तु हर जगह अल्पमत के कारण बहुमत को दबाया नहीं जा सकता है।"

"यह सब तो ठीक है परन्तु देश के मुसलमानों में इस समय बड़ा क्षोभ व्याप्त है टण्डनजी। भगवान उनकी मस्जिद में घुसके कब्जा किये बैठे हैं···।"

सुमन्त ठठाकर हंस पड़े बोले : "अरे भई, मन्दिर-मस्जिद-गिरजाघर तो रामजी मानो ईश्वर के कानूनी घर हैं ही, बैठ गए तो क्या हर्ज है···खैर मजाक छोड़ो, यह हिन्दुओं की धार्मिक कट्टरता का आग्रह था। और हमें हिन्दुओं की इस धार्मिक कट्टरता को भी एक जगह देखना ही चाहिए। उस समय आक्रान्त और आक्रान्ताओं में राष्ट्रीय युद्ध हो रहा था, वह साम्प्रदायिक नहीं था। उन्हीं के तप ने हिन्दुओं के हजारों वर्ष के दर्शन-साहित्य और चिन्तन को बचा लिया, यह छोटी बात नहीं है। देवनाथजी, यह बात दूसरी है कि अंग्रेजों ने अपनी नीति से इस कट्टर पक्ष को साम्प्रदायिक बना दिया।"

देवनाथजी बोले : "हमारे समय में बौद्धिक हिन्दुओं की जड़ता की बहुत ही कटु आलोचना किया करते थे, अब भी करते हैं।"

"गलत करते हैं देवनाथजी, उन्हें इतिहास का सही ज्ञान नहीं है।"

"यह शक्ति है सहसा गाली देने की वस्तु नहीं। लेकिन इस शक्ति को अंग्रेजी रणनीति ने भड़काया। सामन्ती वर्ग के आभिजात्य मुसलमानों ने भी धर्म को देश से बड़ा माना। इसलिए उनमें भी अलगाव की दुर्भावना तो थी ही, अंग्रेजों ने इन दोनों की ही कमजोरी को भुनाया और आज हम उसकी सजा भुगत रहे हैं। असल में हमें पूरे देश-मानस का सही ढंग से इलाज करना होगा। समझौते की राजनीति से नया प्रगतिशील समाज बन ही नहीं सकेगा, यह मेरा दृढ़ मत है।"

सुमन्त उत्तेजित होकर बोल रहे थे। शारदा ने पति की उत्तेजना को महसूस कर देखा। पास आई, झिड़ककर बोलीं : "अच्छा अब तुम लेट जाओ। देवनाथ जी इनको ज्यादा बोलने मत दीजिए।"

देवनाथजी कुर्सी से उठते हुए बोले : "मैं भी यही अनुभव कर रहा हूं शारदा जी। अच्छा अब चल रहा हूं, कल मिलूंगा सुमन्तजी आपके विचारों ने मुझे दिन-भर की मानसिक खुराक दे दी है, धन्यवाद।"

"एक बात और कहूंगा देवनाथ, शारदा भले ही नाराज हों साम्प्रदायिकता दोनों ही वर्गों की घृण्य है। इसके विरुद्ध समान रूप से ही लड़-लड़,···ओह-

ओह···।" छाती में पीड़ा उठ आई थी, सुमन्त ने दोनों हाथों से अपनी छाती दबाकर सिर तकिये पर निढाल डाल दिया।

"मैं डाक्टर को बुलवाती हूं। देवनाथजी, डाक्टर मुकर्जी का मतब आपके रास्ते में ही पड़ेगा, उन्हें भेजते जाइए। मैं इनके पास से हट नहीं सकती।" कहकर शारदा हल्के-हल्के सुमन्त की छाती सहलाने लगीं।

"ग्लूकोज, एक घूंट पानी तो दो शारदा।" शारदा ने नौकरानी सियादुलारी को आवाज देकर पानी मंगवाया। ग्लूकोज पास ही था।

डॉक्टर मुकर्जी का मतब दूर नहीं था इसलिए उन्हें अपने स्कूटर पर पहुंचते देर न लगी। सुमन्त जी के स्वास्थ्य का परीक्षण किया, फिर कहा: "चिन्ता की बात नहीं, शायद यह एक्साइटेड बहुत रहे। इन्हें बोलने मत दीजिए, कम्प्लीट रेस्ट दवा वही चलेगी। इन्हें नींद लाने के लिए एक दवा और दिए जाता हूं।"

शारदा नींद के लिए गोली देने लगी, सुमन्त बोले: "सुनो, एक बार सब बच्चों को फोन कर दो, देखना चाहता हूं।"

' ठीक है किए देती हूं, तुम आराम करो। मन में किसी प्रकार की चिन्ता न करो।"

सुमन्त मुस्कुराकर शारदा के हाथ पर हाथ रखकर स्नेह से बोले: "मुझे कोई चिन्ता नहीं, मेरा चिन्ताहरणयन्त्र तो तुम्हीं हो।"

धीरे-धीरे नींद आ ही गई। शारदा ने उस दिन पति का सिरहाना न छोड़ा।

दूसरे दिन सुबह यथासमय नींद खुल गई। शारदा को भी आंख खोलते देर न लगी, पूछा: "कैसी तबियत है?"

"पहले से बहुत अच्छा हूं, अब कोई दर्द-वर्द नहीं है। एक बार निबटूं—नहाऊंगा, फिर ध्यान करूंगा।"

"अब आज रहे देओ न।" शारदा ने गिड़गिड़ाकर कहा: "एक दिन पड़ रहोगे···।"

"नहीं शारदा, यह तो नहीं मानूंगा, मां के चरणों में मन लीन किए बिना सन्तोष नहीं होगा।" स्वयं ही दोनों हाथों का सहारा लेकर उठ बैठे, बोले: "गुरु गोविन्द सिंह की एक पंक्ति है—जागति जोत जपै निसि बासर, एक बिना मन एक न मानै। मेरे नहाने का प्रबन्ध करो, घबराओ मत।'

शारदा को पति के हठ के आगे झुकना ही पड़ा। कुछ देर बाद ही सुमन्त कमरे से लगी अपनी छोटी-सी सहनचीनुमा कोठरी में गए। दीवार पर किसी अच्छे मूर्तिकार के द्वारा संगमरमर पर दो चरण अंकित थे, बिछुए-गहनों से युक्त। सुमन्त ने माथा टेका, सरयूजल के गीले कपड़े से संगमरमर का पत्थर पोंछा। मां के दाहिने अंगूठे के नख पर टीका लगाया, पुष्प अर्पित किए और

फिर पटरे पर आसन मारकर बैठ गए। सुमन्त भाव-योग करते हैं। अंगूठे पर अंकित कुंकुम टीके पर अपने संकल्पित बिम्ब का आवाहन करने लगे परन्तु आज वह उभर नहीं रहा था। उन्हें ऐसा लगा कि गोल टीके के चारों ओर आग की लपटें उठने लगी हैं। सुमन्त अपने अन्तराग्रह से इच्छित बिम्ब लाने के लिए हठपूर्वक प्रयत्नशील हुए। अंगूठे के आस पास का हिस्सा तेजोमय ही होता जाता है। अंगूठे के नख पर लगा हुआ गोल टीका धीरे-धीरे काला गोला बन जाता है जिसके चारों ओर लपटें उठ रही हैं। सिन्दूरी-लाल-सुनहरी लपटें जो मन में चमक भरे भाव जगाती हैं और कुछ-कुछ धुंध भरे भी उस ज्वाला चक्र से ध्यान सिमटकर ध्यान उस काले गोले पर आ जाता है। गोला लाल है लेकिन ध्यान जब केन्द्रित होता है तो रंग कृष्ण हो जाता है लेकिन उस कालेपन में भी कहीं ऐसी चमक भरी हुई है जो आंखों को चौंधिया देती है। सुमन्त दो-एक बार गीले अंगोछे से अपनी आखें पोंछ तो लेते हैं पर ध्यान नहीं हटाते। कालेपन में निहित वह प्रकाश पुंज सिमटता है।

जहां भावना है वहां कल्पना भी अनिवार्य रूप से रहती ही है। कल्पना का रूप वहां सूक्ष्म होकर कुछ और ही हो जाता है। वह सूक्ष्म भाव से नितान्त अलिप्त होती है। शांत नदी से निरन्तर गतिशील अन्तरसलिला के उस रूप से कल्पना के स्थूल रूपों को किसी प्रकार से जोड़ा ही नहीं जा सकता। सुमन्त का मन स्थिर हो गया। अचानक उन्हें एक ऐसा दृश्य दिखलाई देता है जहां बाईं ओर से झर रहे एक ऊंचे प्रपात से कल-कल करती नदी दाहिनी ओर वेग से जा रही है। उस कल-कल नाद में भी कितनी लयात्मकता है कि मन भाव-विभोर हो जाता है।

ध्यान में आंखें खुली हैं, अपने लक्ष्य पर टिकी भी हैं पर कितना सूनापन कि कुछ भी दिखलाई नहीं देता। न मा के चरण, न नख पर अंकित कुमकुम बिन्दु··· कुछ भी नहीं। सब सूना है, सब निराकार है···आकार है, प्रपात है, नदी भी है, सब कुछ फिर यथावत दिखलाई देता है। आकाश में, ठण्डी हवा की आंधियां अकस्मात् उभर पड़ती हैं। लगता है आकाश में विशालकाय—अति विशाल-काय गरुड़ उड़ता हुआ उस प्रपात के निकट आ गया है—आंधियां इतनी तेज कि दृश्य देखनेवाले सुमन्त के पांव धरती से ऊपर उठ जाते हैं। वह गरुड़ के पंखों की हवा से खड़े-खड़े ही ऊपर उड़ता चला जाता है। कहां ले जाएगा यह गरुड़। यह चतुर्भुज का वाहन। आकाश तारों भरा, निकट से तारे इतने चमक रहे हैं कि सुमन्त का मन आनन्द-मुग्ध हो चला है। सुमन्त की ध्यान प्रक्रिया में निरन्तर चलने वाला शब्द भी पुलकित तारों की तरह ही आनन्द निर्झर में नहा रहा है। गरुड़ के पंखों के हवा के झोंके कहीं दूर हैं फिर भी अपने आन्दोलन का स्पर्श दे रहे हैं।

फिर सहसा अन्धकार का रेगिस्तान अनन्त—जहां समय की पहचान गायब हो जाती है। उस अनन्त विस्तार में बड़ा भय लग रहा है। वह अनन्त विस्तार मानो अन्धेरे को समेटकर गोला बन गया है घूम रहा है। सुमन्त का भय और गाढ़ा हुआ, सीना धड़कने और सिर चकराने लगा। सम्हाला और मानो भय के विस्फोट से ही धधकते हुए दाग सुमन्त के चारों ओर लपलपाते हुए बढ़ते चले आ रहे थे। कोढ़ से घिनौने और ज्वालाओं से घिरे हुए दाग सुमन्त के पास सिमटते चले आ रहे थे। भयानक दुर्गन्ध, भयानक जलन जिसे दिल की धड़कनें बहुत सह न सकीं, चक्कर आ गया। सुमन्त अचेत होकर पटरे से गिर गए। आसन सरका, पटरा सरकने की आवाज हुई और गिरने का धमाका भी।

शारदा भीतर आईं। गोद में पति का सर रख लिया। पंचपात्र से पानी लेकर मुंह पर छींटे दिए—सिर हिलाने लगीं। सुमन्त की आंखें खुलीं। "कैसा जी है।" शारदा ने पूछा।

"ठीक है, थोड़ी कमजोरी है, मुझे बिठलाओ।"

शारदा ने सहारा देकर पति को सीधा बिठलाया। सामने मां के चरण थे कुमकुम बिन्दु रंजित नख। सुमन्त ने श्रद्धापूर्वक हाथ फिर जोड़े। शारदा ने हल्के हाथ से झिझोड़ा और कहा: "उठो-उठो।"

सुमन्त चौंके: "हां-हां।" फिर झुककर आगे सरके, पटरे पर अपना मत्था टेक दिया, कुछ बुदबुदाते भी रहे।

शारदा क्षण-दो क्षण रुकीं, फिर कहा: "उठो, मेरे कन्धे पर हाथ रखो, चलो, बाहर चलें।"

सुमन्त कुछ बोले नहीं, चुपचाप खोए अनमने से पत्नी का सहारा लेकर लड़खड़ाते हुए खड़े हो गए। बाहर आए। तख्त पर गाव-तकिए के सहारे अध-लेटे-से बैठ गए। उनका चेहरा राख जैसा फीका और सफेद हो गया था। आंखों में चमक थी, मगर ऐसा लगता था कि दूर जैसे जंगल की झोपड़ी में दो दीए टिमटिमा रहे हैं। शारदा उनकी सूरत देखकर धक्का खा गई। सम्भलकर उनके पास बैठकर सर पर हाथ फेरने लगीं। कुछ-कुछ झुंझलाहट भरे दुःखी स्वर में बोलीं: "तुम हमरा कहा नहीं मानत होगे। अभी बुखार से उठे हो। कुछ दिन आसन-बासन छोड़ के माला जपा करो न। जानकी मैया ऐसे ही तुम पर कृपालु हैं।"

"हां, मगर आज तो उन्होंने अपना काली रूप दिखलाया। अभी तक समझ नहीं पाया, मां का अर्थ क्या था···लगता था पृथ्वी के शरीर पर कोढ़ के घिनौने दाग उभर आए हैं और वह भी जल रहे हैं और वो सारे दाग, सारी ज्वालाएं मेरे पास सिमटती चली आ रही हैं।"

शारदा कुछ उत्तर न दे पायीं। मन में हलचल हुई मगर दबा गईं, बोलीं:

"भीतर से और तकिए मंगाती हूं, लेट जाओ। मैं डॉक्टर को फोन करके आती हूं।"

शारदा अन्दर गई। उनके आदेशानुसार सियादुलारी तकिए लेकर आ गई, थोड़ी देर बाद शारदा भी लौट आई।

शारदा की बांह दबाकर सुमन्त बोले : "सुनो शारदा! भय से प्रेम करना चाहिए। जैसे कर्म के अभ्यास से जीवन सुन्दर बनता है वैसे ही मृत्यु भी अभ्यास से ही संवरकर आनी चाहिए।"

"बेकार की बातें न करो, पड़े रहो।"

तब तक डाक्टर मुखर्जी आ गए। परीक्षण करके शारदा को अलग ले जाकर कहा : "आप इनको फैजाबाद के हॉस्पिटल में तुरन्त ले जाइए। वैसे चिन्ता की कोई बात नहीं माता जी, बुढ़ापे का शरीर है। हार्ट थोड़ा वीक तो हो ही गया है। मैं एम्बुलेन्स के लिए फोन कर देता हूं।"

न सुनते हुए भी जाने कैसे सुमन्त के कानों में बात गूंज गई, तुरन्त बोले : "क्यों बेकार एम्बुलेन्स मंगाते हो, मैं यों ही ठीक हो जाऊंगा।"

डॉक्टर के आने के कारण घर के दरवाजे खुले ही थे, सहसा देवनाथ जी ने प्रवेश किया। उन्हें देखते ही सुमन्त खिल उठे : "अरे आओ यार! तुम्हें देखकर आनन्द हुआ।"

डॉक्टर चले गये थे, शारदा फोन करने गई। देवनाथ पास आ गए, पूछा: "कैसा जी है आपका?"

सिरहाने खड़े देवनाथ का हाथ छूकर सुमन्त धीरे से मुस्कराकर बोले : "जी की बात भूलो, तुम्हारी यह दुनिया जीर्ण हो चुकी है, इसे नये रूप में आना होगा। बैठ जाओ मेरे पास।"

"नहीं, अभी शारदा जी आयेंगी, मैं कुर्सी खींच लेता हूं।"

"देवनाथ तुम्हें गुसाईं जी की वो पंक्तियां याद हैं?"

"कौन-सी?"

"भये प्रगट कृपाल दीनदयाल···।"

देवनाथ पालथी मारकर कुर्सी पर बैठ गए और सस्वर पाठ करने लगे। सुमन्त ने शान्तिपूर्वक आंखें मीच लीं।

देवनाथ जी तन्मय होकर सुना रहे थे—

"लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुज चारी।

भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभा सिंधु खरारी॥"

बाहर से धीरे-धीरे बेहोश होता मन अपने भीतर के होश में एक रूप देख रहा है। रूप क्या है ज्योति का लहराता समुद्र जिसकी स्वर्णिम लहरों के साथ ही कहीं कोसों दूर से देवनाथ का स्वर भी लहरा रहा है।

सुमन्त तन्मय थे, उनके सम्मुख पीड़ा सहने लायक एक संत वर्णित रूप था उसी में डुबकी लगा गये। कब ! किसी को पता न चला। देवनाथ तो तन्मय होकर आंखें मींचे रामजन्म की कथा सुना रहे थे। और सुमन्त सारथी पहले ही अपना रथ हांक चुका था।

शारदा ने कमरे में प्रवेश किया। उन्हें शक हुआ, सीने पर हाथ रखा। नाड़ी टटोलने लगीं, देवनाथ जी अपनी भावनिद्रा से जाग उठे थे।

"क्या हुआ भाभी ?"

"कुछ ठीक नहीं लगता, क्या कहूं।"

देवनाथ उठे, नब्ज टटोली, नाभि पर हाथ रखा, सीने की धड़कनें टटोलने की कोशिश की। थोड़ी देर बाद डॉक्टर ने आकर आंखें खोलकर और देखीं—देखने को अब काया मात्र थी। शारदा ने कलेजे पर पत्थर रख लिया। दूसरे कमरे में गईं और पति के शरीर पर एक चादर लाकर डाल दी। और मन को गम्भीरता से सम्भाले हुए युधिष्ठिर से फोन पर सब हाल कहा और बोलीं : "नन्हा तुम अपने साथ अनन्तू को जरूर लहियो···नहीं, नहीं वह सब नहीं चलेगा। सरयू तट पर ही उनकी अन्त्येष्टि होगी। जावेद के जिम्मे यह काम सौंप दो और तुम लोग जल्दी से आ जाओ। नहीं, नहीं मैं घबराती नहीं, नन्हा, तू भूलता क्यों है मैं वीर की पुत्री और वीर की पत्नी हूं। (शब्द सुबकियों से कसे जा रहे थे) हां बेटे, जहां तक बने सब जने आओ। उनकी यह इच्छा भी थी···नहीं-नहीं मैं अकेली नहीं हूं, देवनाथ जी भी हैं।

दूसरे दिन भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री सुमन्त टण्डन हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी के अखबारों में छपी अपनी प्रशस्तियों में जी उठे थे।

▭▭▭

मुद्रक : रुचिका प्रिण्टर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

09422